



श्री विजयलक्ष्मीसूरि विरचित.

श्री

# उपदेश प्रासाद भाषान्तर.

विभाग ५ मो.

स्थंभ २०-२१-२२-२३-२४

( व्याख्यान २८६ थी ३६१.)

तपनार, वीर्याचार, पूर्ण मम स्थिरादि अष्टक सूचित विषयो, प्रत्येक  
दुदे, होलिका, पावली तिगेरे अनेक विषयोपर  
द्वांत युक्त विवेचननो संग्रह.

जैन वंधुओने स्वास उपयोगी होवाथी गच्छपद्यात्मक संस्कृत  
ग्रंथनुं शुद्ध गुजराती भाषामां भाषान्तर करावी  
प्रयासपूर्वक संशोधन कर्नाने

प्रसिद्ध कर्ता

श्री जैनधर्मप्रसारक सभा

भावनगर.

विक्रम संवत् १९९९ वीर संवत् २४३६ घके १८३२

भावनगर 'आनंद' प्रीन्टोंग प्रेस तथा मुंबई 'जगदीश्वर' प्रेस.  
खंड हाल स्वार्थीन.

प्रिया.ना.सोहनी मुंबई ]

किमत रु २-०-० [ पल्लिशर श्री ज. स. भावनगर.



## प्रस्तावना.

परमात्मानी कृपाधी उपदेश प्रासाद ग्रंथनुं भापांतर आ भागमा संपूर्ण करी शक्या छीये. आ ग्रंथ बनावीने श्री विजयलक्ष्मीं सूरिए महान् उपकार कर्यो छे. तेनो पूरेपूरो अनुभव जेओ आ ग्रंथ साचंत वांची तेनुं मनन करे तेने थई शके तेम छे. शावक भाईबोने माटे तो आ ग्रंथ अपूर्व शृंगार तुल्य छे. आ ग्रंथने प्रासादनुं नाम आप्युं छे ते वास्तविक आपेलुं छे. तेनी सिद्धि ग्रंथकर्त्ताए प्रान्ते ३६१ मां व्याख्यानमां करी बतावी छे. अने तेज निमिते श्रीसिद्धाचल पर रहेला आदीश्वर प्रभुना प्रासादनुं पण वर्णन आपीतेनी साथे घटाव्युं छे. ग्रांते गुरु पट्टावक्त्री पण श्रीसुधर्मां स्वामीधीं प्रारंभीने पोता सुधी आपी छे. तेनी अंदर हाल वर्तना तपगच्छनां जुदाँ जुदाँ छ नाम कथा कथा आचार्यधी थयां ते पण बताव्युं छे. तेमज जैनशासनमां प्रभावक जेवा थयेला श्रीहीरविजय सूरिनुं चरित्र पण आपवामां आव्युं छे. ते सरेसर वांचवा लायक छे.

आ उपदेश प्रासादमां २४ स्थंभ आपवामां आव्या छे. अने दरेक स्थंभने १५—१५ हाँश होय तेम आमां दरेक स्थंभमा १५—१५ व्याख्यान आपेलां छे. जेधी एकंदर ३६० व्याख्यान आपेलां छे. छेलुं ३६१ मुं व्याख्यान आ ग्रंथनी प्रासादपणानी सिद्धि माटे छे. वर्षेना दिवस प्रमाण (३६०) आमां व्याख्यानो छे. आ ग्रंथनी टीकानुं नाम “उपदेश संग्रहा” राखेलुं छे. ते स्वोपज्ञ छे. प्राये तमाम व्याख्यानोमां कथाओ आपेलीज छे. केटलांक व्याख्यानोमां एकधी वधारे कथाओ छे. तमाम कथाओनी अक्षरानुक्रमे अनुक्रमणिका आ विभागना पाछला भागमां आपेली छे. उपरांत आ ग्रंथमां सर्व पर्वतिथिओनां व्याख्यानो पण समावेलां छे. तेनी अनुक्रमणिका पण जुदी आपवामां आवी छे. ते अनुक्रमणिका वांचवाधी पण कर्त्ताए करेला उपकारनुं स्मरण थई शके तेम छे.

आ पांचमा विभागमां २० माथी २४ मा सुधीना पांच स्थंभो आ वेला छे. तेमां २८६ थी ३६१ सुधीना (७६) व्याख्यान छे. तेनी अंदर प्रथम चोथा विभागमां अपूर्णे रहेला पांच आचारो पैकी तपाचार उपर १४ व्याख्यानो आपेलां छे. अने १५ मुं व्याख्यान वर्धिचार संबंधी छे. ए रिते पांच आचारनुं स्वरूप २० मा स्थंभमां पूर्ण करेलुं छे. तेनी अंदर प्रायश्चित्त नामना सातमा तपाचारमां पांचे आचार अने शावकनां वारे व्रतमां लागता दोप संबंधी तमाम मकारनां प्रायश्चित्तो २८८-८९-९० मा व्याख्यानमां आपेलां छे. ते सास लक्ष्मां राखदा लायक छे.

२१ मा स्थंभना प्रारंभधी कर्त्ताए श्रीमद्यशोविजयजी महाराजाने पगले चाली तेमना करेला ज्ञानसार ग्रंथमाहेना पूर्ण, मग, स्थिर, मोह, शम, इंद्रिय-

जय विग्रेर ३२ अष्टक उपर ३८ व्याख्यानों लखेला छे. अने तेमा पण दरेक विषय पर कथाओ आपेली छे. आ तमाम व्याख्यानों लक्षणवेक वाचवा पोग्य छे. तेमा पूर्वोक्त ३२ अष्टकोमार्थी दरेक व्याख्यानमां अनुकूलता अनुसार १-२-४ श्लोको लीयेला छे. महा पुरुषोने पगले चालवानुं अने ते हकीकतने ज पुह करवानुं आर्थी सारुं शिक्षण मब्बी शके तेम छे.

पाँचली २२ व्याख्यानोमा अनेक पत्तुरण विषयो समावेला छे. सेमा व्याख्यान ३४८-४९-५० मां पेहला, बीजा ने चोपा प्रत्येकद्विद्वनी कथा आपेली छे. बीजा प्रत्येकद्विद्व नमि राजपूतं चरित्र ५२ मा व्याख्यानमां आर्थी गयेल होवार्थी अहीं आपेलुं नथी. ३४९ मां व्याख्यानमां हुसाशिनी पर्व जेनार्थी प्रचलित थयुं छे ते होलिकानी कथा आपेली छे. रोहिणी तप करनार माटे रोहिणीनी कथा ३३७ मा व्याख्यानमां आपेली छे. बीजी पण दरेक कथा वाचवालायक छे. तेनो विस्वार लसवा जतां आसी अनुक्रमणिकाज लसवी पढे तेम छे. पांते वे व्याख्यानमां गुरु पटावडी अने वे व्याख्यानमां परम उपकारी श्रीहीरविजय सूसिनुं चरित्र आपी २४ मो स्थंभ पूर्ण कयों छे. देवठे ३६१ मा व्याख्यानमां संक्षिप्त प्रशस्ति पण आपी छे.

आ प्रभाणे आ पांचमा विभागनी संक्षिप्त प्रस्तावना छे. परंतु आ ग्रंथ आ विभागमां पूर्ण थतो होवार्थी २४ स्थंभना ३६० व्याख्यानमां एकंदर मुख्य मुख्य थुं थुं विषयो आपेला छे ते संक्षेपमा जणावदानी जद्धर छे, के जेथी आसा ग्रंथनो सामटो चोध थई शके अने ते वाचवानी अभिलापा विशेष जाग्रत थाप.

पारंभना चार स्थंभ समकितना संबंधमाज लखेला छे. तेनो ६१ व्याख्यान छे. तेमाना पहेला व्याख्यानमां भगवंतना अतिशयोनुं वर्णन छे. पछीना त्रण व्याख्यानमां सम्पत्तना भेद संबंधी विवेचन छे. त्यार पछीना ५७ व्याख्यानोमां समकित ना ६७ वोलनुं विवेचन अने ते उपर कथाओ छे. देवठनी त्रण व्याख्यानमां समकितना त्रण चार पांच विग्रेर श्रकारोनुं वर्णन छे. अहीं प्रथम संड पूर्ण थाप छे.

पांचमार्थी अग्यारमा सुरीना ७ स्थंभमां श्रावकनीं चार ब्रत संबंधी विचेचन अने कथाओ छे. आ ७ स्थंभमां १०४ व्याख्यानो छे. तेमा धारे ब्रत उपर अनुक्रमे १३-५-५-२१-४-४-१७-७-७-४-१३-४ व्याख्यानो छे. तेमा आठमा ब्रत उपरना ९ व्याख्याने नवमो स्थंभ पूरो थवार्थी बीजो विभाग पूरो थयो छे. अने अग्यारमा स्थंभनी प्रते आ ग्रंथनो बीजो संड पूरो थाप छे. आ वार ब्रत उपरना व्याख्यानोमां चोपा ब्रत उपर बीजों ब्रतों करता वधारे व्याख्यानो छे. ते वधां सास वाचवा लायक छे. दशमा ब्रतना चार व्याख्यानमां एक अठाई संबंधी व्याख्यान छे अने एक श्रावकना वार्षिक कुत्यो संबंधी,

व्याख्यान छे. अग्निरथा ब्रतना॑ १३ व्याख्यानमाँ वचे पांच व्याख्यान प्रतिक्रिया॒ जना आठ पर्याप्त उपर दृष्टिवो सहित छे अने एक व्याख्यान इरियाबहि॑ संबंधी छे.

बारमा स्थंभना॑ प्रारंभना॑ १२ व्याख्यानो पण श्रावकना॑ ब्रतादिकना॑ संबंधवार्डीज छे अने ३ व्याख्यानमाँ त्रण वाचवा॑ लायक कथाओ॑ छे. तेरमा॑ स्थंभना॑ प्रारंभमाँ मध्य मंगलाचरण करेलु॑ छे. ते स्थंभमाँ जिनपूजा॑, तीर्थयात्रा॑, जिनचैत्य, जिनविव अने देवद्रव्य तथा॑ नवकारना॑ जाप॑ संबंधी॑ हकी॑-कते॑ कथाओ॑ साथे॑ समावी॑ छे.

चौदमा॑ स्थंभना॑ प्रारंभना॑ दश व्याख्यानो तीर्थकरना॑ पांच कल्पाणक संबंधे॑ सास वाचवा॑ लायक लख्या॑ छे, अने छेवटना॑ पांच व्याख्यानोमा॑ काळ्नु॑ स्वरूप, बार आराना॑ भाव अने छेवट दर्पितसंवीना॑ पर्व॑ संबंधी॑ व्याख्यान छे.

१५-१६-१७ आ॑ त्रण स्थंभमाँ अनेक परचुरण विषयो॑ समावयो॑ छे. तेमा॑ सास करीने बेसहु॑ वये॑, ज्ञानपंचमी॑, कार्त्तकी॑ पूर्णिमा॑ ने भौम अग्निरथा॑ ए॑ चार पर्वना॑ चार व्याख्यान छे. दान ने शीलधर्मे॑ उपर चार॑ व्याख्यानो॑ छे. पांच कारण उपर चार व्याख्यान छे. दश पञ्चसाण उपर वे॑ व्याख्यान छे. क्रोधादि॑ चार कथाप उपर पांच व्याख्यान छे. अने ते॑ चारे॑ प्रकारना॑ पिंड उपर त्रण व्याख्यान छे. उपरांत ७-८-९-३-६-५-४ आ॑ सात निन्हवोनी॑ कथावार्डी॑ सात व्याख्यान छे. तेमा॑ बाकी॑ रहेला॑ पहेला॑ बीजा॑ निन्हवनी॑ कथाऽ॑ मा॑ ने १९ मा॑ व्याख्यानमाँ प्रथम भागमाँ आवी॑ गयेल होवाथी॑ अही॑ कहेल नर्थी॑. सत्तरमा॑ स्थंभनी॑ प्राते॑ एक व्याख्यान मिथ्यात्व विषे॑ अने वे॑ व्याख्यान गोशालानी॑ कथावार्डी॑ छे. आ॑ प्रमाणे॑ ते॑ त्रण स्थंभ पूर्ण करेला॑ छे.

अढारमा॑ स्थंभना॑ प्रारंभयी॑ ज्ञानाचारनु॑ स्वरूप शरु करेल छे. ज्ञानाचारादि॑ पांच आचार उपर अनुक्रमे॑ १३-१०-५-१७-१ व्याख्यानो॑ छे. तेमा॑ तपाचारना॑ त्रण व्याख्यान आपत्ता॑ १९ मो॑ स्थंभ ने चोपो॑ विभाग पूर्ण थाये॑ छे. तपाचारना॑ बाकीना॑ १४ व्याख्यान आ॑ पांचमा॑ विभागना॑ प्रारंभमाँ आपेला॑ छे. त्यार पछी॑ एक व्याख्यान वीरोचार उपर आपने॑ २० मो॑ स्थंभ पूर्ण करवामो॑ आवेल छे.

२१ मा॑ स्थंभना॑ प्रारंभयी॑ ज्ञानसार अष्टकपर व्याख्यान आपेलाँ॑ छे. २१-२२-२३-२४ ए॑ चार स्थंभना॑ ६० व्याख्यानमाँ ३८ व्याख्यान ३२-अष्टक उपर अने॑ २२ व्याख्यान परचुरण अनेक विषय संबंधी॑ छे. तेनो॑ विस्तार उपर लखवामा॑ आवेल होवाथी॑ अही॑ फरीथी॑ लखवामा॑ आवतो॑ नर्थी॑.

आ॑ प्रमाणे॑ २४ स्थंभमाँ अनेक विषयो॑ समावेश करवामो॑ आव्यो॑ छे. दुङ्कार्मा॑ कहीए॑ तो॑ प्रथमना॑ ४ स्थंभ सम्पर्क विषे॑, ७ स्थंभ देशविरति॑ विषे॑ अने॑ त्यार पछीना॑ १३ स्थंभो॑ अनेक विषयोथी॑ भरेला॑ छे. सेमा॑ मुख्य पांच आ॑ चार उपर ४५ व्याख्यान, वर्तीश अष्टक उपर ३८ व्याख्यान अने॑ बाकीना॑ व्याख्यानो॑ परचुरण अनेक विषय परत्वे॑ लखेला॑ छे.

आ ग्रंथनी अंदर दीपोत्सवी, बैततुं वर्षे, ज्ञानपञ्चमी, कार्त्तकी पूर्णिमा, मौनएकादशी, रोहिणी, होलिका, अष्टाद अने चोमासी संवंधी अनुक्रमे २१०-२१-२१५-२२५-२९१-३३७-३४५-१४७-१०४ ए व्याख्यानों छे. तेम-ज वार्षिक कृत्यो विषे १४८ मुँ अने पर्वाराथत अवश्य करवा विषे १५१-१२ मुँ ए वे व्याख्यान छे.

आ ग्रंथनी उपर कोई मुनिए टबो पूरेलो छे. ते केटलेक स्थाने अपूर्णे छे, केठलीक जग्याए पूर्णी विनानो ज्ञानाप छे. तेमज लखनाराढीआओना प्रमादधीं दिवसानुदिवस बहुज अशुद्ध पई गयेल छे. तंथी आ भाषांतर करता तेनापर बहुज अल्प आधार रात्रवार्षी आव्यो छे. मूळ पण शुद्ध यच्ची शक्तुं नथी. वे चार मतो एकठी कर्या छतो मूळ शुद्ध मझी शक्त्युं नथी. तो पण तेने शुद्ध करीने एकलुं मूळ छपाववानी अमारी इच्छा छे. प्रयत्न शारू छे.

आ ग्रंथतुं भाषांतर करावीने ते मूळ साथे बरावर मेड्डी शुद्ध करवामा ३६० उपरात दिवसो लाग्या छे. अर्थात् तेने भूलविनानुं करवा माठे यततो प्रपत्न करवामा आव्यो छे. उत्ता तेमर्ता जे काई अशुद्धता अथवा विपरीतता मत्तिरोपादि कारणधी रही गई होप तेने माटे मिच्छामिदुक्कड देवा साथे तेवी भूलो अमारी तरफ लसी मोकल्हानी विनंति करवामा आवे छे. जेपी चीजी आहूचिने प्रसंगे अथवा सास जुदी ते शुद्धि जाहेर करवा इच्छा वर्ते छे.

आ ग्रंथना कर्त्ताना संवंधमा वधारे हकीकत मेलववा माटे विशेष प्रयास करवानुं बनी शक्त्युं नथी अने जे काई प्रयास करवामा आव्यो छे तेने परिणामे वधारे मेववी शकायुं नथी. मात्र तेओ कपट्वणज तरफ विवरेला छे तेढलुं ज्ञानवामा आव्युं छे. त्पां तेमनी करेली चेत्य प्रतिष्ठा विद्यमान छे. आ ग्रंथ संवत् १८४३ ना कांतिक शुद्धि पूर्णिमाए पूर्ण करवामा आव्यो छे. कर्त्ता तपगच्छदां थपा छे. अने तेजो श्री विजयसोभाग्य स्मृतिना शिष्य छे. तेमना गुह भाई श्रीमेमविजय-जीना आशहधी आ ग्रंथनी रचना करवामा आवी छे. इत्यादि हकीकत मती आपेल पट्टावधी तेमज प्रशस्ति उपरथी जाणी शकाणी छे. विशेष ज्ञानवामा आवे तेमणे अमने लसी मोकल्हातसदी लेवी, जेथी आ ग्रंथना प्रथमना चार स्थंभना भाषांवावाबो प्रथम भाग इवे पछी अमारा तरफथी बढाव पडवानो छे तेमो प्रगट कराउं.

ग्रति परम कृपालु परमात्मानी कृपाधी आ ग्रंथतुं भाषांतर पूरेपूर्ण प्रकट करवा शक्तिवान् घेला होवाधी तेमना परम उपकारातुं स्मरण करी आ प्रस्तावना समाप्त करवामा आवेछे.

श्री जैनधर्मप्रसारक सभा.  
भावनगर.

# श्री उपदेश प्रासाद भाषांतर भाग ५ मो.

स्थंभ २० थी २४

व्याख्यान २८६ थी ३६१

**स्थंभ २० मो.**

**व्याख्यान २८६ मुं.**

रसत्वाग चोथो तपाचार ...	...	...	...
मंगु सूरिनु दृष्टि ...	...	...	...
कायफैश पांचमो तपाचार ...	...	...	...

**व्याख्यान २८७ मुं.**

संलीनता छडो तपाचार ...	...	...	...
अवगमाप्राही तपापनु दृष्टि ...	...	...	...
चार प्रदाना संलीनता तपयुक स्कन्दक साधु-			
मुं दृष्टि ...	...	...	...

**व्याख्यान २८८ मुं.**

प्रायवित्त सातमो तपाचार ...	...	...	...
आलोयण कोनी पासे लेवी ?	...	...	...
आलोयणना गुण ...	...	...	...
ज्ञानाचारनी आलोयण	...	...	...
दर्शनानार्ती आलोयण	...	...	...
मातुंग पुग्नु दृष्टि ...	...	...	...

**व्याख्यान २८९ मुं.**

पांच अग्रम रंगेपी प्रायवित्त ...	...	...	...
प्रियुद्धिइ सूरिनु दृष्टि ...	...	...	...

**व्याख्यान २९० मुं.**

गुणवत तथा दिशावतना प्रायवित्त ...	...	...	...
मुनिर तो रात्रे भोगननी हृष्णा पण करवी			
नहीं तो उपर घोखर पूरिनु दृष्टि ...	...	...	...

प्रह्लोपत रंजी प्रायवित्त ...	...	...	...
-------------------------------	-----	-----	-----

**व्याख्यान २९१ मुं.**

पर्वेहर्ष्यां दग्नो त्याग करवा उपर मुख्यि-	...	...	...
रिनी क्या ...	...	...	...

तदंतर्गत री ने स्वन्ना साधीनो रंगेप ...	...	...	...
---	-----	-----	-----

**व्याख्यान २९२ मुं.**

विनय आठमो तपाचार ...	...	...	...
----------------------	-----	-----	-----

पंचाल्य भारवाह कनी क्या	...	...	३९
पांच महावतोनी २५ भावना	...	...	४०

**व्याख्यान २९३ मुं.**

१ विनय तपनुंज वर्णन ...	...	...	४१
२ अहंसक मुनिनु दृष्टि ...	...	...	४७
५			

**व्याख्यान २९४ मुं.**

६ वेयाल्य नवमो तपाचार ...	...	...	५२
७ विपुलमतिनी क्या ...	...	...	५३
८			

**व्याख्यान २९५ मुं.**

९ स्वाध्याय दशमो तपाचार ...	...	...	५०
१० एक वणकरनो प्रवेष	...	...	५१
११ सुभ्रद्रानी क्या ...	...	...	५४

**व्याख्यान २९६ मुं.**

१२ च्यान अग्यारमो तपाचार ...	...	...	५५
१३ वसुमूर्तिनी क्या ...	...	...	५६
१४			

**व्याख्यान २९७ मुं.**

१५ कायोसर्ग बारमो तपाचार ...	...	...	५३
१६ सुस्थित मुनिनु दृष्टि ...	...	...	५३
१७ दिवसाधुए कहेली पोतानी क्या ...	...	...	५७

**व्याख्यान २९८ मुं.**

१८ सुस्थित मुनिनु दृष्टि चालु ...	...	...	७३
१९ वीजा व्रण साधुओए कहेली पोतानी क्या	...	...	७३
२०			

**व्याख्यान २९९ मुं.**

२१ तपनी प्रधानता उपर हरिकेशी मुनिनी क्या	...	...	८५
२२ व्याख्यान ३०० मुं.	...	...	८६
२३			

**व्याख्यान ३०० मुं.**

२४ वीजाचार ...	...	...	९१
२५ मुख्यं धेष्ठीनी क्या ...	...	...	९४
२६			

**स्थंभ २१ मो.**

२७ व्याख्यान ३०१ मुं.	...	...	९५
२८ पूर्णांग विवे ...	...	...	९७
२९ जयपोष द्विजनी क्या ...	...	...	९९

व्याख्यान ३०२ मुं.	व्याख्यान ३१३ मुं.
ब्रह्मता शुण विषे ... ... ... १०१	लेप अने अलेप विषे ... ... ... १
शोभापुरी कथा ... ... ... १०३	शुणपूद्दीनी कथा ... ... ... १
व्याख्यान ३०३ मुं.	व्याख्यान ३१४ मुं.
स्त्रियों शुण विषे ... ... ... ११०	मंत्रीपणानी निशा विषे शक्ताल मंत्रीनी कथा ... १
राजीमर्तीनुं दद्यत ... ... ... ११२	व्याख्यान ३१५ मुं.
व्याख्यान ३०४ मुं.	निःसूहता विषे ... ... ... १५
मुनिना स्त्रियों शुण विषे शक्ताल चक्रीनी कथा ... ... ... १११	कालवीक्ष कुनिनी कथा ... ... ... १५
व्याख्यान ३०५ मुं.	स्थंभ २२ मो.
मोह तजया विषे ... ... ... १२४	व्याख्यान ३१६ मुं.
बहौपतीनी कथा ... ... ... १२५	धर्य ने मुनियानी एकता विषे ... ... ... १७१
व्याख्यान ३०६ मुं.	अरदतीनी कथा ... ... ... १७१
शत तथा अहान विषे शाल महाशालनी कथा ११०	व्याख्यान ३१७ मुं.
व्याख्यान ३०७ मुं.	विदा भविदा विषे स्मृदपालनी कथा ... १७२
शमशुण विषे ... ... ... १२६	व्याख्यान ३१८ मुं.
सुगापुरीनी कथा ... ... ... १२७	विषेक शुण विषे ... ... ... १८१
व्याख्यान ३०८ मुं.	अमणमदनी कथा ... ... ... १८१
पांच इन्द्रियोंना स्वस्त्र विषे ... ... ... १२९	व्याख्यान ३१९ मुं.
शुभदनी कथा ... ... ... १२०	माघस्य शुण विषे अहेनिमित्रनी कथा ... १८६
ते काचवानी कथा ... ... ... १२१	व्याख्यान ३२० मुं.
व्याख्यान ३०९ मुं.	निर्मयता शुण विषे स्कन्दकाचार्यनी कथा ... १९०
इन्द्रियोंनु स्वस्त्र ( शह ) ... ... ... १२७	व्याख्यान ३२१ मुं.
शुभमारिदा शार्चीनी कथा ... ... ... १२८	आरम्भरांसा विषे ... ... ... १९३
व्याख्यान ३१० मुं.	मारीचि कुमारनी कथा ... ... ... १९४
इन्द्रियों जय करवा विषे शुभानु कुमारनी कथा ... ... ... १२९	व्याख्यान ३२२ मुं.
व्याख्यान ३११ मुं.	तत्त्वदृष्टि विषे ... ... ... १९६
शुभमुख किया फड़वारी छे ... ... ... १४४	एक आचार्येनुं दद्यत ... ... ... १९८
रति-सुंदरीनी कथा ... ... ... १४५	व्याख्यान ३२३ मुं.
चुदिसुंदरीनी कथा ... ... ... १४६	धंपतीनी शशभंगुरता विषे भूमिपाल राजानी कथा ... ... ... २०१
व्याख्यान ३१२ मुं.	व्याख्यान ३२४ मुं.
ऐस ने अदुर्घट रसह ... ... ... १५८	कर्मनी विवित्रता विषे ... ... ... २०५
उद्धिंश्वरीनी कथा ... ... ... १५९	कदंब विप्रनी कथा ... ... ... २०५
व्याख्यान ३१३ मुं.	व्याख्यान ३२५ मुं.
कर्मना फल विषे दंडण कुमारनी कथा ... ... ... २०८	कर्मना फल विषे दंडण कुमारनी कथा ... २०८

## व्याख्यान ३२६ मुं.

वित्तनी एकाप्रता विषे ...	२१४
शुद्धीराज मुनिनी कथा ...	२१५
व्याख्यान ३२७ मुं.	
लोकसंहा विषे ...	२१७
मेत स्थाम प्रांशुदानी कथा ...	२१८

## व्याख्यान ३२८ मुं.

चपुस्तक ...	२२१
भायरदित सूर्तीनी कथा ...	२२२
व्याख्यान ३२९ मुं.	
मूळों तजवा विषे ...	२२३
संघट मुनिनी कथा ...	२२४

## व्याख्यान ३३० मुं.

भनुमय विषे ...	२२५
शाभिरिंचक विगिकनी कथा ...	२२६

## स्थंभ २३ मो.

## व्याख्यान ३३१ मुं.

योगनी चपद्धतानो त्याग करवा उपर उहिजत कुमार मुनिनी कथा ...	२३३
--	-----

## व्याख्यान ३३२ मुं.

यज्ञ विषे ...	२३४
रविगुप्त आद्याणनी कथा ...	२३५

## व्याख्यान ३३३ मुं.

इष्ट पूजा-भावपूजा ...	२४१
धनसार विगिर्चनी कथा ...	२४२

## व्याख्यान ३३४ मुं.

ध्यान विषे... ...	२४४
धेपक मुनिनी कथा... ...	२४५

## व्याख्यान ३३५ मुं.

दुध्योनां ६३ स्थानोनु खल्प ...	२४६
( दृक् दुध्योन ध्यानारना नामो चहित )	

## व्याख्यान ३३६ मुं.

तप विषे ...	२५
मंदन कविर्नी कंधा ...	२५

## व्याख्यान ३३७ मुं.

रोहिणी प्रति विषे ...	२५८
रोहिणीनी कथा ...	२५९

## व्याख्यान ३३८ मुं.

सप्त नय विषे ...	२६४
एक पोपटनी कथा ...	२६५

## व्याख्यान ३३९ मुं.

शाल इडता विषे ...	२६६
स्थूलमद मुनिनी कथा ...	२६७

## व्याख्यान ३४० मुं.

मनुष्यमध्यनी दुलंभता विषे ...	२७५
पाशानु द्वांत ( चाणाक्यनी कथा ) ...	२७६

## व्याख्यान ३४१ मुं.

उत्पातिकी बुद्धि विषे रोहकनी कथा ...	२८८
--------------------------------------	-----

## व्याख्यान ३४२ मुं.

वे प्रकारानी आयुष्य ...	२८८
सोफकमी आयुपर द्वांतो ...	२८९

## व्याख्यान ३४३ मुं.

सीजी अशारणमावना विषे ...	२९७
सागरचक्रिना पुत्रोनी कथा ...	२९८

## व्याख्यान ३४४ मुं.

संसारनी असारता विषे ...	३०३
धीदत्त घेटीनी कथा ...	३०३

## व्याख्यान ३४५ मुं.

हृताशिनी पर्व विषे ...	३११
हृताशिनी ( होलिचर ) नी कथा ...	३१२

## व्याख्यान ३४६ मुं.

गत ...	३२४
--------	-----

<b>व्याख्यान ३४९ मुं.</b>		<b>व्याख्यान ३५६ मुं.</b>	
धीजा प्रसेकतुद दिसुख राजानी कथा	३४०	धमेन माहात्म्य विषे मंगलकुभीनी कथा	३८१
<b>व्याख्यान ३५० मुं.</b>		<b>व्याख्यान ३५७ मुं.</b>	
चोया प्रत्येकसुद नगराति राजानी कथा ...	३४५	पुश्पदत्ती... ... ... ... ...	३८६
<b>व्याख्यान ३५२ मुं.</b>		सुधमो स्वामीयी आरंभीने तपागच्छ नाम	
केटवक हजारीं प्रहण होला बतने पाण तजता नर्था ते उपर भवेद्वती कथा ...	३५१	पउंसु त्या सुधीना पाठी ... ...	३८६
<b>व्याख्यान ३५२ मुं.</b>		<b>व्याख्यान ३५८ मुं.</b>	
जबू स्वामीनी कथा ... ... ...	३५४	तपागच्छ नाम पड्या पढीना आचार्यानी पढा-	
<b>व्याख्यान ३५३ मुं.</b>		वली ... ... ... ...	३९२
भाववदनना फळ विषे सांग दुमारनी कथा	३६१	<b>व्याख्यान ३५९ मुं.</b>	
<b>व्याख्यान ३५४ मुं.</b>		धीरोरविजय सूरिनु सुधिस चरित्र ... ...	३९६
भव्यप्राणी प्रयत्न वडे श्रतिवेध पामे छे ते उपर श्रेणिक राजानी कथा ... ...	३६९	<b>व्याख्यान ३६० मुं.</b>	
<b>व्याख्यान ३५५ मुं.</b>		धीरोरविजय सूरिनु चरित्र ( चालु ) ...	४०२
तर्थ स्तवना विषे ... ... ...	३७४	<b>व्याख्यान ३६१ मुं.</b>	
शास्त्रिजय तीर्थना प्रभाव संवधी एड कथा ...	३७६	सिद्धाचलपर रहेला प्राप्तादनु वर्णन ...	४०४
चैत्रनो भग चत्नारे दुं करु ? ... ...	३७७	उपदेश हप प्राप्तादना अवयवोमु वर्णन ...	४०७
प्रह्लादन राजानी कथा ... ...	३७८	प्रशस्ति ... ... ... ...	४०८
प्रतिमा भेगादिकना प्रायवित्तो ... ...	३७८		

### उपदेश भोसाद ग्रंथ संपूर्ण.

इन्द्रियोनो जय ४  
कथा ...

व्या

अनन्तुक किया ५  
रत्तिसुदर्दीनी कथा  
स्वदिसुदर्दीनी कथ

व्या

हस ने अद्वानु ६  
सुदिसुदर्दीनी कथा



# श्री उपदेश प्रासाद ज्ञापांतर

## विभाग ५ मो.

स्तंज ३० मो. 

व्याख्यान २८६ मुं.

रसत्याग नामना चोथा तपाचार विषे.

विकृतिकृञ्जसानां यत्यागो यत्र तपो हि तत् ।

युर्वाङ्गां प्राप्य विकृतिं, यहणाति विधिपूर्वकम् ॥ १ ॥

जावार्थ—“विकार करनारा रसोनो जे त्याग करवो ते रसत्याग नामनु तप कहेवाय डे, तेमां पण गुरुनी आङ्गा लङ्घने विधि पूर्वक विकृति (विगङ्ग) ग्रहण कर्वी।”

दूध, दही, घी, तेज, गोल तथा पकवान विंगेरे ड जड्य अने मध, मांस, मदिरा तथा मारवण ए चार अजड्य मळी दश विकृति (रस) कहेझा डे, ते सर्व रसोनो अथवा तेमांथी कटझाएकनो जीवन पर्यंत अथवा अमुक वर्षे सुधी, अथवा पर्व तिथि, ड मास, चार मास विंगेरें अवधिर राखीने त्याग करवो; केम्को ते सर्वे विकासनां कारण डे. कोइ वस्त कारणे लङ्घने विकृति रस देवानी जहर पर्ने, तो मुनिए गुरुनी आङ्गा लङ्घने विधि पूर्वक ग्रहण करवा. ते विषे श्री निशीष चूर्णिमां कहुं डे के:—

“ विणयपुर्वं गुरुं वंदित्तण जणइ, इसेण कारणेण इसं विगङ्ग  
एवझ्यं पमाणेण इत्तियं कालं तुझेहिं अणुन्नाए. जोत्तुमि-  
च्छामि, एवं पुच्छिए अणुन्नाए पच्चा निरुकं पविट्ठो  
गहणं करोति.”

एव्वे विनयपूर्वक गुरुने वांदीने कहे के “अमुक कारणे लीथे आङ्गा  
पमाणवाला अमुक विकृतिने आङ्गा काल सुधी आपनी आङ्गाथी खावा इच्छुं

हुं. एम पूर्वी गुरुनी आङ्गा हाइने पड़ी निझा माटे जाय, अने ते विग्रह ग्रहण करे." रसत्यागनो निर्वाह जीवन पर्यंत थइ शके भे, अने उपवास विग्रे तो अग्रुक काल पर्यंत थइ शके भे; बढ़ी उपवासादिक तो यणा द्वोको करे भे, अने रसत्याग तो तत्त्व जाणनाराज करे भे; तेथी उपवासादिक करतां पण रसत्यागर्दु अधिक फल भे, अने तेथी करीनेज अनेक मुनिजनो विहृतिनो त्याग करे भे. श्रीकृष्ण स्वामीनी पुर्वी मुन्दरीए सात्र हजार वर्ष मुथी आंचित तप करीने सर्व विहृतिनो त्याग कर्या हुतो, तेमज ओगणीशमा पाटे श्रीमानदेवसूरिने ज्यारे सूर्सि-पदे स्थापन कर्या ते समये तेना बन्ने खजा उपर तेना निःसृहादिक गुणोद्यी प्रसन्न घयेही सरस्वती तथा द्वाक्षी देवीने साकात् जोझे "आ (मानदेवसूरि) कोइ चतुर चारित्रियी ब्रह्म धरे" एवी विचारणायी गुरुनु चिच खेद पाय्युं. ते जाणेनि मानदेवसूरिए रागी श्रावकोना घरनी निझानो तथा सर्व विहृतिनो त्याग कर्या, ते तपना प्रज्ञावद्यी "नहुद्वपुरमां पद्मा, ज्या, विजया अने अपराजिता ए चार देवीओ मानदेवसूरिनी सेवा करवा छागी. ते जोझे "आ सूरि स्त्रीओद्यी परवेह्ना केम भे ?" एवी कोइ मुम्भने झाँका थइ, तेने ते देवीओएज शिझा आपी, पड़ी ते देवीओए सूरिने कर्युं के "हे स्वामी ! अमने कांइ पण कार्य वतावो," सूरि वोद्या के "हुं संघनो उपद्व निवारण करवा पाटे तमारा नामोदी गर्नित लघुशांति स्तोत्र रखुं हुं, तेनुं अधिष्ठातापायुं तपारे स्वीकारवुं." आ प्र-माणेना गुरुना वाक्यने ते देवीओए अंगीकार कर्युं.

हबे व्यतिरेक मुक्तिवर्ण कहे भे के "जे मुनि रसत्याग करता नवी ते मंगुसूरि विग्रेनी जेम पोटी हानिने पाये भे. "

### मंगुसूरिनु दृष्टांत.

मयुरा नगरीमां मंगु नामना आचार्य पांचसो साथु सहित रहेता हुता. तेना उपदेशायी रागी घयेहा द्वोको तेने युगपथान तरीके मानता हुता, अने बीजां सर्व कामो पदतां मूर्कीने तथा बीजा सर्व मुनिओनो अनादर करीने जाणे जक्कि-चेमे वजा थया होय तेम यणा द्वोको ते सूरिनेज सेवता हुता. ते द्वोको हमेशां स्नान अने मयुर आहारादिकवर्मे सूरिनी सेवा करता हुता. अनुकमे कर्मना

<sup>१</sup> राणकपुरजीवाली पचतीर्थीमां नाहेल आवे छे ते.

वशथी सूरि रसमां द्वोद्युप धया, तेथी एक स्थानेज वास अंगीकार कर्या पडी अधिक सुख मळवाथी ( साता गौरवाथी ) विहार तथा उपदेश आपवामां पण आल्सु थया, क्रद्धिगौरवना वशपणाथी मिथ्याज्ञिमानी थया, अने यथायोग्य विनयादि क्रियामां पण मन्दादरवाळा थया; अने रसमां द्वोद्युप धवाथी क्वेच, कुळ विगेर स्थापन करीने गोचरीनी गवेषणा करवामां पण आल्सु थया. अनुक्रमे ते आचार्य मृत्यु पापीने तेज नगरनी खाइ पासे आवेद्धा कोइ यक्कना मंदिरमां तेना अधिष्ठायक व्यन्तरपणे उत्पन्न थया. त्यां विज्ञंग झानवी पोतानो पूर्व जब जाणीने पश्चात्ताप करवा लाग्या. पडी हमणां तो “आम करवृंज योग्य डे” एम विचारीने ते मंदिर पासेथी जता आवता सायुओने यक्क प्रतिमाना मुखमांथी मोटी जिहा वहार काढीने देखादवा लाग्यो. ए रीते हमेशां करवाथी एकदा कोइ साहसिक सायुए तेने पृथुं के “तुं कोण डे ? अने आ जिहा वहार काढीने शामाटे वतावे डे ? ” ते सांचलीने ते यक्के प्रत्यक्ष घड्जे खेद सहित सर्वे दृच्छांत कही वताव्यो के “हुं धर्मरूपी मार्गमां पंगु ( लंगको ) धयेद्वा तपारो गुरु मंगु नामनो आचार्य प्रमादथी मूद्दोत्तर गुणनो धात करीने महावतनो नंग करवाथी आ नगरनी खाईमां यक्क थयो छुं, माटे तपारे रसमां द्वोद्युप थवृं नहां. हुं जिहाना स्वादथी द्रष्ट थयो छुं, तेवृं जणाववाने माटे जिहा वहार काढीने वतावृं छुं.” आ प्रमाणे सांचलीने ते सर्वे सायुओ रसत्याग रूपी तपमां तत्पर थया, अने सर्वे द्वो-कोने उपदेश करवा लाग्या के “हे जब्य माणीओ ! पुरुषोने इन्द्रियजय महा संपत्तिनुं कारण थाय डे, कर्हुं डे के—

**इन्द्रियाण्येव तत्सर्वं, यत्स्वर्गनरकाबुन्नौ ।**

**निष्ठदीतविसृष्टानि, स्वर्गाय नरकाय च ॥१॥**

जावार्य—“ स्वर्ग अने नरक ए वेनी जे शान्ति धवी, ते सर्वे इन्द्रियो-वमेज डे; केमके इन्द्रियोनो निश्रह करवाथी स्वर्ग मळे डे, अने तेमने दूर्या मूकवाथी नरक प्राप्त थाय डे.”

संग्राममां जय मेलवनारा धणा जोवामां आवे डे, पण इन्द्रियोनो जय करनारा दुर्जने होय डे. कर्हुं डे के—

**शतेषु जायते शूरः, सहस्रेषु च पंनितः ।**

(४)

उपेशप्रासाद चापांतर-चाग ५ मो-संतत ४० मो-

वक्ता शतसहस्रेषु, दाता ज्ञवति वा न वा ॥ १ ॥

**नावार्थ—**“ सो माणसोमां कोइ एकज शुरो होय डे, हजार माणसोमां एक पंकित निवने डे, बाख माणसोमां कोइ एकज वक्ता होय डे, अने सर्व मनु-  
षोमां दातार तो कोइ होय डे, अथवा नद्यो पाण होता. ” कारण के—

न रणे निर्जिते शुरो, विद्यया न च पंकितः ।

न वक्ता वाकूपदुत्त्वेन, न दाता धनदायकः ॥ २ ॥

**नावार्थ—**“ युद्धमां जीत मेलववार्थी कांइ शुरो कहेवाय नहीं, विद्या  
उपार्जन करवार्थी कांइ पंकित कहेवाय नहीं, वाणीनी चतुराश्वी कांइ वक्ता कहे-  
वाय नहीं, अने धन आपे तेज्ज्वापरवी कांइ दाता कहेवाय नहीं. ” त्यारे ?

इन्द्रियाणां जये शुरो, धर्म चरति पंकितः ।

सत्यवादी ज्ञवेद्वक्ता, दाता जीताज्जयप्रदः ॥ ३ ॥

**नावार्थ—**“ जे इन्द्रियोनो जय करे तेज शुरो कहेवाय डे, जे धर्मनुं आ-  
चरण करे तेज पंकित कहेवाय डे, जे सत्य वोझे तेज वक्ता कहेवाय डे, अने ज्य  
पामेझाने जे अज्जयदान आपे तेज दातार कहेवाय डे. ”

समग्र इन्द्रियोनो जय करवातुं मूळ कारण रसनेन्द्रियनो जय करवो ते डे.  
ते रसनेन्द्रियनो जय जीजन तथा वचननी व्यवस्थावर्त थाय डे. माटे निर्देष क-  
र्मधी दोपरहितपणे प्राप्त थयेझो परिमित आहार शुज कियानो प्रश्निति घोट ग्र-  
हण करवो. अर्पत आहार करवार्थी नवा नवा मनोरथीनी वृद्धि थाय डे, प्रदक  
निदानो उदय थाय डे, निरंतर अपवित्रपणं प्राप्त थाय डे, शरीरना अवपदो पुष्ट  
थाय डे, अने तेथी करीने सर्व क्रियाओमां प्रयाद थाय डे, तेमज थाणुं करीने निरं-  
तर-रोगीपणं प्राप्त थाय डे; माटे हमेशां रसनेन्द्रियने अतृप्तिवाळीज राखवी. एक  
रसनेन्द्रियने अतृप्त राखीए, तो वीजी सर्व इन्द्रियो योत्पाताना विषयोथी जिहृत  
थद्देन तृप्ति पापे डे, अने रसनेन्द्रियने तृप्त राखीए, तो वीजी सर्व इन्द्रियो योत-  
प्रोताना विषयोमां उत्सुक रहेवार्थी अतृप्त रहे डे. जुओ रसनेन्द्रियर्मा ल्लोल्लुप  
थयेझा मंगुस्तुरि अनेक झुर्गतिनां झुळो पास्या; तथा कंद्रसिक मुनि पाण जिहा-  
नीज ल्लोल्लुपतार्थी हजार वर्ष मुची पाज्जन कोर्डु संयम हाती गया. माटे साहुओए  
। शावकोए अवद्य रसत्याग तप करवो.

हवे कायद्वेश नामना पांचमा तपाचार विषे कहे छे—

बीरासनादिना क्लेशः, कायस्यागमयुक्तिः ।

तनुवाधनरूपोऽत्र, विधेयस्तत्पः स्मृतम् ॥ १ ॥

जार्वार्थ—“आगममां कहेढी युक्ति प्रमाणे बीरासन विगेरे आसनोवमे शरीरने वाघ पमानवा रूप जे कायद्वेश सहन करवो ते कायद्वेश तप कहेवाय रे.”

अहीं मूळ श्लोकमां ‘बीरासनादि’ शब्दमां आदि शब्द मूर्क्यो डे, तेवी उग्रासन विगेरे आसनो जाएवां तथा केशद्वंचन जाएवूं. ते विषे कहुं डे के—

बीरासण उकुम आसएाइ, दोआइउ अ विन्नेउ ।

कायद्वेशसो संसारवासनिवेद्र हेउन्ति ॥ १ ॥

जार्वार्थ—“बीरासन, उत्कटासन विगेरे तथा केशद्वोच विगेरे कायद्वेश संसारवासमां निर्वद ( खेद ) करवाना हेतुनृत जाएवा.”

केशद्वोच विषे वीजा जात्यमां पण कहुं डे के—

पश्चात्कर्म पुरःकर्म, जीवहिंसा परिग्रहाः ।

दोपा ह्येते परित्यक्ताः, शिरोद्वोचं प्रकुर्वता ॥ १ ॥

जार्वार्थ—“केशनो द्वोच करनार पुरुषे पश्चात्कर्म, पूर्वकर्म, जीवहिंसा अने परिग्रह एट्टवा दोपोनो त्याग कर्यो डे एम समजवूं.”

स्थानांग सूत्रमां दश प्रकारनो द्वोच कहेढो डे. तेमां पांच इन्द्रियोनो जय अने चार कपायनो त्याग ए नव प्रकारे जावद्वोच कहेढो डे अने दशमो केशद्वोच ए इव्यद्वोच कहेढो डे. ते द्रव्यद्वोच नव प्रकारना जावद्वोच पूर्वक करवो जोइए. अहीं चार जांगा थाय डे ते आ प्रमाणे—कोइक मध्यम जावद्वोच करीने पडी इव्यद्वोच करे डे. कहुं डे के “साधु होय तेज साधु थाय डे.” आ उपर जंसूस्वामी विगेरेनां दृष्टान्त जाएवां ( ? ), कोइक मध्यम जावद्वोच करे डे, पडी इव्यद्वोच करता-नयी. अहीं महदेवी पांता विगेरेनां दृष्टान्तो जाएवां ( ? ). कोइक मध्यम इव्यद्वोच करीने पडी जावद्वोच करे डे. ते उपर दुम्मक साधु विगेरेना-

दृष्टुं जाणवां ( ३ ). अने कोइ प्रथम द्रव्यद्वेष करीने पड़ी जावद्वेष करता नयी. अहीं उदायि राजाने मारनार विनयरत्ननुं दृष्टुं जाणवुं, अथवा आयुनिक धेष्ठारी अने आजीविका माटे यतिद्विग धारण करनारनुं दृष्टुं जाणवां ( ४ ).

अहीं कोइ शंका करे के “परीपहमां अने आ कायकद्वेषमां शो तफावतं डे ? ” तेनो जबाब आये डे के “ परीपहुं पोताथी अने वीजाथी एम बैने प्रकारथी उत्पन्न यतां क्षेत्र रूप होय डे, अने कायकद्वेष मात्र पोते करेहा क्षेत्रना अनुज्ञव रूप होय डे, एट्झो तेमां तफावत डे. ” आ कायकद्वेष तप करवाथी निरंतर कर्मकृयस्ती गुण प्राप्त थाय डे, तेथी उत्पन्न जिनकाल्पि विगेरे प्राये निरंतर उजाज रहे डे, अने कदाच वेसे डे तोपण उत्कटिक विगेरे विषम आसनव-मेज वेसे डे. तेज जवामां सिद्धिगामी श्री वीरपन्जुए आ तप सारी रीते आचर्यु डे, केमेक श्री वीरपन्जु उत्पन्न अवस्थामां सामा वार वर्ष अने पंदर दिवस मुधी रखा, तेमां कोइ पण बखत ते पर्यस्तिका ( पद्मांठी ) वाढीने एक कणवार पण वेत्रा नयी. तेमज एक मुहूर्त मात्र निष्ठा छीधी डे ते पण उजा रहीनेज छीधेज्जी डे.

आ कायकद्वेष तप पण सिदान्तनी युक्तिने कर्युं होय तोज फलदायी थाय डे. नहीं तो शाळ तपस्वीओ घणा प्रकारना कायकद्वेषने सहन करे डे, कम्प्रादिकनी जेम पंचाभि तप करे डे, सूर्य सन्मुख दृष्टि राखीने तथा उंचा हाय राखीने उजा रहे डे, पंचकेश वशरे डे, तथा वृक्षनी शास्त्रा उपर पग थांधो-ने नीचे मस्तके खटके डे, पूरण, जपद्वयि अने कौशिक विगेरे तापसोनी जेम महा काष सहन करे डे, परंतु ते सर्व आप आगमनी युक्तिरहित होवाथी निष्कल डे.

“ जे जवामां अवउय सिद्धि मलवानी डे ते जवामां पण वीतरण प्रज्ञ-रुमा आगमने अनुसरीने आ कायकद्वेष तपनुं आचरण निरंतर करेडे, माटे तपना अर्थी मुनिओए आ तपनुं आराधन अवउय करनुं.”

॥४७६॥

इत्यद्विनपरिमितोपदेशप्राप्तादवृत्ती विज्ञतिमस्तंजस्य

पदशीत्यधिकद्विज्ञततमः प्रवर्थः ॥ ४७६ ॥

व्याख्यान २८७ मुं.

संज्ञीनता नामना छद्वा तपाचार विषे.

इन्द्रियादिचतुर्नेदा, संज्ञीनता निगद्यते ।

वाह्यतपोऽन्तिमो ज्ञेदः, स्वीकार्यः स्कन्दकर्पिवत् ॥ १ ॥

ज्ञावार्थ—“इन्द्रियादिक चार प्रकारे संज्ञीनता कहेंद्री डे, ते वाह्यतपनो बेल्डो ज्ञेद स्कन्दक ऋषिनी जेम अंगीकार करवो.”

संज्ञीनता एड्वे गुप्तपणु अर्थात् शयन, ज्ञेजन विगेरे अमगधपणे करवुं ते. ते संज्ञीनताना चार ज्ञेद डे. ते विषे पूर्वाचार्योंए कबुं डे के—

इन्दियकसायजोए, पमुच्च संज्ञीण्या मुणेयव्वा ।

तह य विवित्तचरिया, पञ्चता वीयरागेहिं ॥ १ ॥

ज्ञावार्थ—“इन्द्रिय, कपाय अने योग आश्रयी व्याप संज्ञीनता तथा विवित्तचर्या ए चोथी संज्ञीनता जाणवी, एम वीतराग जिनेश्वरे कबुं डे.”

श्रोत्र इन्दियवके मधुर के अमधुर (कट) शब्दो उपर राग छेप न करवो, ते श्रोत्रेन्द्रिय संज्ञीनता कहेवाय डे. ए प्रमाणे चक्षु इन्द्रिय विगेरेमां पण सपमज्वं. एम पांच प्रकारे इन्द्रिय संज्ञीनता जाणवी. उदयमां नहाँ आवेद्धा कपाय योने रोकवा तथा उदयमां आवेद्धाने निष्फल करत्वा ते कपाय संज्ञीनता जाणवी. मन, वचन, कायाना अशुन्न योगनो निरोध करवो, ने शुन्न योगनी उदीरणा करवी, ते योगसंज्ञीनता जाणवी; अने स्त्री, पशु, नरुंसक विगेरेयी रहित आरामादिकमां निवास करवो, ते विवित शयन ज्ञेजन संज्ञीनता जाणवी. आप्रमाण चारे प्रकारनी संज्ञीनता पाळवी. जेओ तेलुं पाङ्गन करता नथी तेओ श्वाण मात्रथीज धर्मनुं ग्रहण करनार तापसनी जेम मोटी छुःखपरंपराने पामे डे.

अमणमात्रग्राही तापसनुं दृष्टांत.

कोइ गाममां कोइक ग्राहण पापथी जय पामीने तापस थयो. तेणे ‘कृ-पथा धर्मः’ (दयावी धर्म थाय डे) ए वाक्य सांजल्युं हत्तूं. एकदा कोइ तापस सन्धिपतना व्याधियी पीमातो हत्तो, तेने वैद्य धर्मुं जल पीवानो निषेय कयों हत्तो. एक वर्षत वीजा सर्व तापसो कांइ काम प्रसंगे अन्य स्थाने गया हत्ता; ते वख-

ते पेहा रोगी तापसे आ नवीन तापस पासे धर्मुं पाणी माघ्युं, तेथी ' कृषबदं ध-  
र्म थाय दे ' एम जाणीने तेणे ते रोगीने धर्मुं जल आप्युं, तेथी ते रोगी वहु  
पीका पाम्यो. ते वृत्तांत जाणीने वीजा तापसाए ते नवीन तापसने पण्ठो धिक्षायो के-  
" अरे मूर्ख ! ते आ रोगीने मारी नांस्यो, अथवा अङ्गानी शुं न करे ? " तेथी  
ते नवीन तापसे विचार्यु के " हुं अङ्गानी शुं, तेथी मारे झान शीखवै जोडए. "  
पट्ठी अच्छास करतो तेणे सांजन्नर्थु के " तप कर्या विना झान निर्धक दे. तपथी  
ज झाननी प्राप्ति थाय दे. कश्यु छे के-तपस्वी पुण्यो आ सचाचर विज्ञेययने  
जुए दे. " इत्यादि सांजन्नीने ' लोतानेज आधीन एवं तप हुं करु ' एम विचारी-  
ने कोइने पण कशा विना ते नवीन तापस पर्वतनी गुफामां गयो. त्यां तप करवानो  
आरंज कयो. कंद, मूळ अने फलादिकनो पण त्याग करीने तेणे केटझाएक दि-  
वसो निर्गमन कर्या. क्षुधानी पीकाथी कंउगत प्राण थयो, तेवामां तेने झाँथ करवा  
नीकलेद्वा केटझाक तापसोए तेने जोयो, अने कश्यु के " आ रीते तप थाय नहीं,  
केपके ' शरीरमाद्यं खश्चु धर्मसाधनं ' धर्मनुं पहेद्वुं साधन शारीर छे. एवं बचन  
छे, माटे शारीरतुं रक्षण करवूं अने धर्मनुं मूळ कारण समाधान(समता) छे, तेमां यत्न करवो. " ते सांजन्नीने ' समताने विषे हुं यत्न कहे ' एम निश्चय करीने ते तापस कोइ गापमां  
गयो. त्यां जक्कजनोथी पृजा पामवा द्वाघ्यो. केटझेक दिवसे तेने धन प्राप्त थयुं.  
ते जाणीने केटझाक धृते माणसोए तेनो परिचय करवा मांड्यो. ते धृतों उपर वि-  
श्वास आववाधी तेणे समाधान मूळक धर्म कयो के " जे कांड मुवर्ण, खी चिंगेरे  
सहेजे प्राप्त थाय तेनो उपयोग करवो, अने प्राप्त न थाय तेनी आगळ के पालक  
सृहा करवी नहीं. " आ प्रमाणे समाधान मूळ धर्म सांजन्नीने ते धृतोंए उपाय  
हाय द्वागवाधी तेनी पासे गणिका मोकळीने सर्व धनं हरी दीहुं. ते वात जाण-  
वामां आववाधी द्वोकोए तेने काढी यूळ्यो. आ प्रमाणे ते तापस श्रवणमात्रधी-  
ज धर्मने ग्रहण करनार, शास्त्रवचनना जावार्धने नहीं जाणनार, शास्त्रना उपदेशाने  
अयोग्य, तथा संझीनता तपना रहस्यने नहीं जाणनार होवाधी अनेक जवपरं-  
पराने पाम्यो.

**चार प्रकारना संझीनता तपयुक्त स्कन्दक साधुनुं दृष्टान्त.**

पांचमा ओंगमां कश्यु दे के कक्षिगपुरीना लघानमां श्री वीरसामी सम-  
वसर्यी. ते पुरीनी सर्वप्रे आवस्ति नामनो नगरीमां स्कन्दक नामे एक तापस रहेतो

हतो. ते ब्राह्मणनां समग्र शास्त्रो जाणतो हतो. एकदा महाबीरं स्वामीना शिष्य पिंगल नामना मुनिए स्कन्दकने पूछयुँ के “ हे स्कंदक ! लोक सान्त भे के अनन्त भे ? जीव सान्त छे के अनन्त छे ? सिद्धि सान्त छे के अनन्त छे ? अनेको प्रकारना मरणाथी जीव संसारनी दृष्टि अथवा हानि पाए ? ” आ प्रश्नो सांजलीने स्याद्वादने नहीं जाणनार स्कन्दक तापसे मान धारण कर्यु. पिंगल मुनिए ब्रणवार ते प्रश्नो कर्या, पण स्कंदक उत्तर आपी शक्यो नहीं. तेवामां श्रावस्ति नगरीना लोको श्री वीरप्रभुने वांदवा जता हतां, ते जोझने स्कन्दके पण प्रभुना शिष्ये पूछेद्वा प्रश्नोना उत्तरो जाणवा माटे पोताना त्रिदंड, कमंकदु, दृक्षना पद्मव, अंकुश, रुचाकूनी माळा अने गेहूथी रंगेदां वत्त विगेरे उपकरणो लाइने श्री वीरप्रभु पासे आवावानो संकल्प कर्यो. ते वत्तते श्री जिनेथरे गौतम गणधरने कहुँ के “ आजे तमने तमारा पूर्व मित्र स्कन्दकनो समागम थशे. ” गौतमे पूछयुँ के “ हे स्वामिन् ! वयारे थशे ? ” प्रभु बोद्ध्या के “ हमणाते मार्गपांज चाव्या आवे डे. ” गौतमे पूछयुँ के “ हे स्वामिन् ! ते आपनो शिष्य थशे के नहीं ? ” स्वामी बोद्ध्या के ‘ थशे. ’ ते सांजलीने गौतमस्वामी तेनी सन्मुख गया, अने जबदीथी तेने मळीने पूछयुँ के “ हे स्कन्दक ! तमे कुशल डो ? ” (अर्हीं गौतम गणधरे असंयर्मी सन्मुख गमन, कुशल प्रभ विगेरे कर्यु, ते अनेक द्वाज जोवाथी, अथवा प्रथमथीज पोताना गुरुने तेना आवावानुं ज्ञान थयुं हतुं, ते वर्दे प्रभुनो ज्ञानातिशय जणाववा माटे, अथवा ‘ ते स्कंदकने वत्तनो समय समीपेज डे ’ एम जावाहृत वीर प्रभुना वाक्यथी जाणीने पोतानुं निर्मानित्व जणाववा माटे कर्यु छे.) पडी श्री गौतम स्वामीए तेने कहुँ के “ हे पूर्व मित्र ! तमे पिंगल मुनिए पूछेद्वा प्रश्नोना उत्तरो पूछवा माटे मारा धर्मगुरु पासे आवो छो. ” ते सांजलीने स्कंदके पूछयुँ के “ तमे मारा मननी हकीकत शी रीते जाणी? ” गौतम गणधरे कहुँ के “ अपारा गुरु त्रिकाळमां एकान्ते करेद्वुं, प्रलयक करेद्वुं अथवा ज्ञविष्यमां करवानुं ते सर्व जाणे डे. तेमने सादि अनन्त जागे ज्ञान रहेद्वुं डे. तेमना वचनथी में तपारुं आगमन विगेरे जाएयुं. ” स्कंदक बोद्ध्या के “ तो हवे आपणे तपारा धर्मगुरु पासे जइए. ” पडी ते गौतम गणधरनी साथे प्रभु पासे आव्या. श्री वीरस्वामीए पण गौतमस्वामीनी जेमज वात करी. पडी स्कन्दके प्रभुना सर्वज्ञपणानी प्रतीति माटे ते प्रश्नोना अर्थ पूछ्या. एड्डो स्वामी बोद्ध्या के “ लोक ज्ञानादिक

चार पक्षारनो डे, तेमां इव्यथी लोक एक डे, पंचास्ति कायना स्वरूपवालो डे, सान्त डे, अने परिमाणयुक्त डे, क्षेत्रयी लोक आयाम, विक्कंज अने परिवीथी असंख्यता कोटिकोटी योजन प्रमाण डे, माटे सान्त डे, कालयी अनादि अनन्त डे; कोइ पण वर्तत आ लोक नहोतो, नयी के नहीं हजे एवं नयी; अतीत काळे हुतो, वर्तमानकाळे विद्यमान डे, अने जविष्यकाळे पण विद्यमान हजे; तेथी हमेसां नित्य डे, अने ज्ञान्त छे, ज्ञावयी लोक अनन्त डे, केमके अनन्त वर्ण गंधादिक पर्याय युक्त डे.

जीव पण इव्ययी एक अने नित्य डे; क्षेत्रयी असंख्य प्रदेशनी अवगाहनावालो अने सान्त डे; कालयी जणे कालमां अनन्त डे अने ज्ञान्त छे; अने ज्ञावयी अनन्त झानादि रत्नत्रयना पर्यायोदी युक्त डे; केमके प्रथमर्ता जण शरीर ( औदारिक, बैक्रिय अने आहारक )ने आश्रीने अनन्ता गुरुद्वय पर्यायो डे, अने तैजस तथा कार्यण ए वे शरीरने आश्रीने अनन्ता अगुरुद्वय पर्यायो डे, तेणे करीने जीवयुक्त डे तेथी ज्ञावयी जीव अनन्त छे.

सिद्ध एड्डे सिद्ध जीवनी समीपतुं क्षेत्र सिद्धशिक्षा जाणवी, ते सिद्धशिक्षा इव्ययी एक, सान्त अने ध्रुव डे; क्षेत्रयी पीस्ताळीश लाख योजन आयाम विक्कंज परिमाणवाली डे; कालयी अनादि अनन्त छे; अने ज्ञावयी अनन्त वर्णादिक पर्यायोदी युक्त डे.

सिद्ध एड्डे सकल कर्मनो क्रय करवायी जेने आत्मस्वरूप प्राप्त थयुं छे ते. ते सिद्ध, इव्ययी एक अने सान्त डे; क्षेत्रयी असंख्य प्रदेशनी अवगाहनावाला डे; कालयी सिद्ध सादि अनन्त डे; अने ज्ञावयी अनन्त झानादिक पर्यायोदी युक्त, सान्त तथा अनन्त छे.

ते सञ्जलीने स्कन्दके “केवा मरणयी जीव संसारनी दृष्टि तपा हानि करे?” ए प्रश्न पूछेये. जगताने चक्र आप्यो के “ वाळ मरणयी संसारनी दृष्टि थाय अने पंचित मरणयो चतुरपरंपरानी हानि थाय. तेमां वाळ मरण चार पक्षारनुं छे, तेवुं मरण करवायी जीव चार गतिवाला संसाररूप कांतारमां भटके डे. तेमां कुशादिकीनी पीकायी अपवा संयमज्जेष थझे मृत्यु पापे ते वद्यमरण ?, पांच इन्द्रियाने आपीन रहीने तेनी पीडायी मृत्यु पापे ते वद्यार्तमरण ?, मनमां शब्द राखी

मृत्यु पामे ते अन्तःशब्द्यमरण ३, माणस पोताना जबतुं नियाणुं करीने मृत्यु पामे ते तद्गत्यमरण ४, पर्वतपरथी पक्षीने मरे ते गिरिपतनमरण ५, दृक्षपरथी पक्षीने मरे ते तरुष्टनमरण ६, जलमां शूद्रीने मरे ते जलप्रवेशमरण ७, अग्निमां प्रवेश करीने मरे ते ज्वलनप्रवेशमरण ८, विष जक्षण करीने मरे ते विषजक्षणमरण ९, शत्रुघ्नी मरे ते शत्रुघ्नमरण १०, दृक्कनी शाखापर पाश वांधीने मरे ते दृक्षपाशमरण ११, गीघ पक्षी, हाथी विंगेना प्रहारथी मरे ते गृह्यपृष्ठमरण १२. पंक्षित मरण वे प्रकारतुं ते—पादपोषगमन अनेन नक्षमत्याख्यान. आ वे मरणथी अनन्त जबनो क्रय थाय ते.” आ प्रमाणे सांजलीने ते स्कन्दक संदेह रहित थया, अनेन प्रज्ञने ब्रण प्रदक्षिणा करीने वोद्या के “हे जगवन्! आपतुं वाक्य खरेखरुं सत्य ते.” पडी ते स्कन्दके इशान कृष्णे जइ पोतानां सर्व उपकरणे मूकी दृष्टे श्री जिनेंद्र पासे दीक्षा ग्रहण करी. अनुक्रमे अग्नियार अंगनो अन्यास करी प्रज्ञनी आङ्गा दृष्टे वार प्रतिपा अंगीकार करी. पडी प्रज्ञनी आङ्गाथी गुणरत्नसंवत्सर तप अंगीकार कर्यु. ते तपमां पहेले मासे एकेक उपवास करीने वीजे दिवसे पारणुं, वीजे महिने निरंतर उठ तप करीने पारणुं, एवी रीते चमतां चमतां सोळमे महिने सोळ उपवासे पारणुं थाय ते. स्कंदक मुनि ए प्रमाणे तप करतां दिवसे उत्कट आसने सूर्य समुख रहीने आतापना द्वेता, अनेन रात्रे वीरासन वाढीने वस्त्र रहित रहेता हता. आ गुणरत्नसंवत्सर तपमां वैतेर पारणाना दिवसो आवे ते. एवी रीते उच्च, अचम्प, अर्ध मास नदा मासकृपणादि तपे करीने आत्माने जावता सता शरीरतुं सवर्णुं मांस शुष्क थड गयुं. मात्र जीवनी शक्तिवने गमन करता, अनेन वोद्यता सता ग्नानि पामी जता हता. तेपतुं शरीर एटद्वारुं वर्णुं कुश थड गयुं हतुं के ते चाक्षता अथवा वेसता त्यारे जाणे सुकां काष्ठतुं जरेद्वारुं अथवा कोळसातुं जरेद्वारुं गारुं चालतुं होय तेम तेपना शरीरनां हानकां खमखम शब्द करतां हतां. एकदा धर्मजागरण करतां रात्रिना पातङ्गा जागे तेणे विचार्यु के ‘हे हुं अनशन ग्रहण करुं’ पडी प्रातःकाळे श्री जिनेभरनी आङ्गा दृष्टे अलंत हृष्प पूर्वक धीमे धीमे तेओ विषुव गिरिपर चढ्या. त्यां पृथ्वीझीझापट्टुं प्रमार्जन करीने पूर्वजिमुखे पश्चासन वाढी दर्जना संथारापर वेसीने योगमुज्जाए करीने ‘नपोत्युणं’ इत्यादि जाणीने वोद्या के “हे जगवन्! आप त्यां रथा सता मने अहीं रहेओने जुओ, प्रथम में आ-

पनी पासे पांच महा व्रत ध्रुंगीकार कर्या दे, हवे अत्यारे पण आपनीज साक्षीए अद्वार पापस्थानोनुं अने चार प्रकारना आहारनुं हुं देश्वा खासोभास सुधी प्रत्या-स्थान कर्ण दुं. ” आ प्रमाणे कही सर्व पाप आक्षोचनि तथा प्रतिक्रमीने मृत्युने अणाइच्छता सता एक मासनी संझेखना करी. प्रांते वार वर्षे सुधी चासित्रिनुं पा-क्षन करी काळधर्म पामीने अच्युत देवद्वेषकामां देवता यथा; त्यां भोडं आयुष्य जीवनी त्यांथी च्यवीनि पहाचिदेहक्षेत्रमां मनुप्पणुं पामी समस्त दुःखनो अंत करी सिच्छिपदेन पामदो.

“ चार प्रकारनुं संझीनता नामनुं शुक्ल तप धारण करीने श्री महावीर स्वामीना शिष्य स्कन्दक नामना साधु विपुल नामना पर्वत ऊपर मासनी संझेखना करीने देश्वा अच्युत सर्वगमां गया. ”

इत्पञ्चदिनपरिमितोपदेशभासाद्वृत्तौ विश्वातिपस्तंनस्य  
सप्तशीत्यधिकविश्वाततमः प्रवृत्तः ॥ ४७४ ॥

## व्याख्यान २८८ मुं.

हवे ड प्रकारना आर्यतर तपमां प्रथम प्रायश्चित्त नामना तपस्य सातमो  
तपाचार कहे दे.

गीतार्थादिगुणेयुक्तं, ब्रह्मवाचार्यं विवेकिना ।

प्रायश्चित्तं तपो ग्राह्यं, पापफलप्रोधकम् ॥ १ ॥

जावार्थ—“ विवेकी पुर्वे गीतार्थादिक गुणेयी युक्त एवा आचार्यने पामीने पापना फळने रोकनारुं प्रायश्चित्त नामनुं तप ग्रहण कर्युं. ”

गीतार्थ पट्टेज निशीथ विगेरे डेद सूत्रादिना जावार्थने जाणनार, आदि-  
शब्दे करीने कृत योगी ( करेज्ञा डे योग जेणे ) विगेरे गुणेयी युक्त मुनि जाण-  
वा, कर्तुं डे के—

गीत्यर्थो कन्जोगी, चारित्ती तह गाहणाकुसलो ।  
खेद्यन्नो अविसाई, ज्ञणिनु आद्योयणायरितु ॥ १ ॥

ज्ञावार्थ—“ गीतार्थ एट्ड्वे समग्र सिद्धान्तना अर्थने जाणनार, कृत-  
येगी एट्ड्वे मन वचन अने कायाना योगनो अन्यांस करनार अथवा विविध प्र-  
कारं तप करनार, चारित्ती एट्ड्वे अतिचार रहित संयमतु पावन करनार, तथा  
ग्राहणाकुशल एट्ड्वे घणी युक्तिथी आद्योचना देनारेन विविध प्रकारनां प्राय-  
श्चित्त तप ग्रहण करावामां कुशल, खेद्य एट्ड्वे सम्पर्क प्रकारे प्रायश्चित्त देतां  
तथा करतां जे परिश्रम याप तेने जाणनार, अविषादी एट्ड्वे प्रायश्चित्त देनारना  
अनेक दोषो सांचल्या छतां खेद नहीं पामतां उद्याद प्रायश्चित्त देनारने तेवा तेवा  
प्रकारनां दृष्टांतो कहेवा पूर्वीक वैराग्यवालां वाक्योथी उत्साह पमारनार, एवा प्रका-  
रना आचार्य आद्योचनाने माटे योग्य कहेला भे.”

माटे आद्योयण देनारे अवश्य गीतार्थ गुरुनी शोध करवी. कहुं भे के—

. आद्योयणादिनिमित्तं, स्थित्तमि सत्तजोयणसयाइ ।

काले वारसवासा, गीत्यर्थगवेसणं कुज्जा ॥ १ ॥

ज्ञावार्थ—“ आद्योचनादिक देवा माटे क्षेत्रथी सातसो योजन सुधी अ-  
ने कालथी वार वर्षे सुधो फरीने गीतार्थनी शोध करवी.”

अगीठ न विजाणई, सोहिं चरणस्स देह उणहिअं ।

तो अप्पाणं आद्योयगं च पानेह संसारे ॥ २ ॥

ज्ञावार्थ—“ अगीठ के अगीतार्थ आद्योयण आपी जाणता नथी, तेथी  
ते जो चारित्त संवंधी अधिक अथवा न्यून आद्योयण आपे, तो तेथी पोताने अनें  
आद्योचनां देनारने वक्षेने संसारपां पारे.”

अखेन्मिअचारित्तो, वयगहणाठे हविज जो निचं ।

तस्स सगासे देसणवयगहणं सोहिगहणं च ॥ ३ ॥

ज्ञावार्थ—“ जे हंमेशां व्रत ग्रहण कर्या पती अर्थम चारित्रवाला होय,  
तेनी पासे दर्शन ( सपकित ) अने व्रततु ग्रहण कर्वुं, तथा तेनीज पासे आद्योयण  
देवी, अथवा अनशन आदर्वुं.”

आवा प्रकारना गुह्ये पामीने अवश्य प्रायधित्त ग्रहण करुं. कदापि आ-  
झोचना द्वेवा जता मार्गमांज आयुष्य पूर्ण थतां मृत्यु पामे तो पण तेने आराधक जा-  
एवो. केमके पांचपा छंगमां करुं छे के—

आद्वोअणापरिणउ, सम्मं संपटिउ गुह्यतगासे ।

जइ अंतरावि काढ्वं, करीज जइ आराहउ तहवि ॥१॥

जावार्थ—“ आज्ञोयणापरिणत (आज्ञोयणा द्वेवाने तत्पर) थयो सनो, गुह्ये  
पासे जवाने सम्प्रक् प्रकारे संप्रस्थित थयो होय एट्क्षे मार्गं पद्यो होय एवो मुनि  
कदापि मार्गमां पण काळ करे तो ते तदपि (आज्ञोयण द्वीपा दिना पण) आ-  
राधक ते. ”

जो कदाचित् आचार्य विगेरेनी योग्यता न मळे तो सिष्टनी साक्षीए पण  
आज्ञोयण द्वेवी. करुं छे के—

आयरिथाइ सगच्छे, संज्ञोइथ्य इत्तर गीतार्थपासत्थे ।

सारुच्ची पद्भाकम्, देव य पनिमा अरिहसिष्ठे ॥२॥

जावार्थ—“ स्वगच्छना आचार्यादिक्, सांज्ञोगिक्, इतर, गीतार्थपासत्थ,  
सारुपिक्, पश्चात्कृत, देव, प्रतिमा अनेअर्हन्त सिष्टनी साक्षीए उत्तरोत्तर अ-  
नावे आज्ञोचना द्वेवी. ”

आ गाथानो विस्तरार्थ ए छे के—साधु अथवा श्रावके अवश्य प्रथम पो-  
ताना गच्छना आचार्य पासे आज्ञोचना द्वेवी, तेने अन्नावे उपाध्याय पासे, तेने  
अन्नावे प्रवर्तक पासे, तेने अन्नावे स्थविर पासे अने तेने अन्नावे गणावच्छेदक पासे  
( जे कोइ गच्छमां मोदा होय तेनी पासे ) आज्ञोचना द्वेवी. पोताना गच्छमां  
उपरना पांचेनो अन्नाव होय तो सांज्ञोगिक एट्क्षे समान सामाचारीबाला वीजा  
गच्छना आचार्य विगेरे पांचेनी पासे अनुक्रमे एक एकना अन्नावे आज्ञोचना द्वेवी.  
तेमना अन्नावे इतर असांज्ञोगिक एट्क्षे लुदी सामाचारीबाला संविम गच्छमां तेज  
क्रम आज्ञोचना द्वेवी. तेमना पण अन्नावे गीतार्थपासत्थ एट्क्षे गीतार्थ थया पडी  
पासव्या थइ गमेल होय तेनी पासे, तेना अन्नावे गीतार्थ सारुपिक एट्क्षे खेतवस्तु-  
धारी, मुन्, वस्त्रकच्छ रहित, रजोहरण रहित, ब्रह्मचर्य रहित, स्त्रीवर्जित,

जिज्ञावदे ज्ञेयन करनार एवानी पासे अथवा शिखा धारण करनार अने जार्यावाला सिद्धपुत्रनी पासे, तेना अज्ञावे गीतार्थ पश्चात्कृत एट्डो गीतार्थ यथा पड़ी चारित्रना वेपने तजीने खीवाला थयेद्वा गृहस्थ पासे आज्ञोचना लेवी.

आवा पासत्यादिकने पण आज्ञोयण लेती वसते गुरुनी जेम वंदनादिक विधि करवो. केमके धर्मतुं मूळ विनय डे. जो कदाच पासत्यादिक पोते पोताने हीन गुणवाला समझीने वंदनादिक करवानी ना कहे, तो तेने आसन उपर वेसारी प्रणाम यात्रकरी आज्ञोचना लेवी. जेणे चारित्रनो वेप तजी दीधो डे एवा पश्चात्कृत पासे लेतां तेने अद्वय काळनुं सामापिक उच्चरात्रीने तथा वेप धारण करावीने पड़ी विधि पूर्वक आज्ञोयण लेवी. तेवा पासत्यादिकना पण अज्ञावे जे उद्यानादिकपां वेसीने अर्हन्ते अने गणधरादिक घणी वार आज्ञोचना आपी होय, अने ते जे देवताए जोयुं-सांजल्युं होय, त्यां जड ते सम्यग्दृष्टिदेवतानी अद्धम विगेरे तपथी आराधना करीने तेमने भूत्यकं करी तेनी पासे आज्ञोचना लेवी. जो कदाच जेणे आज्ञोयण सांजलेज्ज ते देवता र्यवी गयो हहो ती तेने स्थाने उत्पन्न थयेद्वो धीजो देवता महाविदेहमां विचरता अर्हिहंतने पूर्णिने आज्ञोचना आपणे. तेना पण अज्ञावे अर्हिहंतनी प्रतिमा पासे आज्ञोचनीने पोतेज मायश्चित्त ग्रहण करवुं. तेना पण अर्योगे इशान कूण तरफ मुख राती अर्हन्त सिद्धनी समक्ष आज्ञोचना करवी, पण आज्ञोचना कर्या विना रहेवुं नहां. केमके शब्द्य सहित रहेवार्थी आराधकपणुं नष्ट याय डे, आ विगेरे व्याख्यान व्यवहार सूत्रमां पण लखेद्वुं डे.

आज्ञोचनाना अनेक गुणो डे. क्युं डे के—

बहु आहाद्वजणणं, अप्पपरनिवत्ति अज्जवं सोही ।

छुक्रकरणं आणा, निस्सद्वत्तं च सोहिगुणा ॥ १ ॥

‘शब्दर्थ—“ लघुता, आहाद उत्पन्न थवो ते, स्वपरनी निष्ठत्ति, आज्जव, शुद्धता, छुपकर करवापणुं, आज्ञा अने निःशब्द्यत्व-ए शोधि एट्डो आज्ञोयणना गुणो डे.”

तात्पर्यार्थ—लघुता एट्डो जेम जार वहन करनारनो जार लड लेवार्थी ते लघु (हल्कवो) धाय तेम हृदयमांथी शब्द्य नाश थवार्थी आज्ञोयण लेनारने लघुता भास धाय डे, आहादी जनन एट्डो म्रमोद (हर्ष) उत्पन्न धाय डे, स्वपरनिष्ठत्ति

एट्टेष्वे पोतानी तथा अन्यनी दोषयी निवृत्ति थाय भे, अर्थात् आङ्गोचना द्वेवायी पोताना दोषनी निवृत्ति थाय भे, एट्टुंज नहीं पण तें जोइने वीजाओ पण पोताना दोषनी आङ्गोचना द्वेवा तत्पर थाय भे, तेयी वीजानी पण दोषयी निवृत्ति थाय भे, आर्जिव एट्टेष्वे सारी रीते आङ्गोपेण द्वेवायी निष्कपण्ठा-सरदता माजन थाय भे, शोधि एट्टेष्वे अतिचाररूप्य मळनो नाजा थवायी शुद्धता मास थाय भे, शुफ्करकरण-शुफ्कर करवापाण थाय भे. एट्टेष्वे के पापकार्यतुं प्रतिसेवनते कांइ शुफ्कर नयी, तेतो अनादिकालयी परिचित भे; परंतु कांइपण दोष थयो होय तेनी आङ्गोचना द्वेवी ते शुफ्कर भे. केषके आङ्गोचनानी इच्छा तो ज्योर मोदला सन्मुखनावे प्रबळ वीर्यनो उद्घास थाय त्यारेज थड़ शेके भे. ते विषे श्री निशीय चृणिमां पण कग्यु भे के—

“तं न छुकरं जं पन्दिसेविर्जद्दि, तं छुकरं जं सम्म आङ्गोइजक्षति”

“जे ( अकार्यतुं ) प्रतिसेवन करवूं ते शुफ्कर नयी, पण जे सेनी सम्प-क् प्रकारे आङ्गोचना द्वेवी ते शुफ्कर भे.”

आ काणवीज आ आङ्गोचनाने अन्यतर तपमां गणेश भे. सम्यग् आ-ङ्गोचन मासक्षपणादिक तप करतो पण शुफ्कर भे. अहीं लक्षणा साध्वीतुं तथा चंदकैशिकना पूर्वजनवामां देखकीनी हिंसा करनार तपस्वी ( मुनि )तुं दृष्टांत जाणावूं.

हवे झानादिकनी आङ्गोचना कहे भे.

त्रिविधाशातना जाते, झानादिनां यथाक्रमम् ।

अतिचारविशुद्ध्यर्थं, सूत्रोक्तं तत्तपश्चरेत् ॥ १ ॥

जार्य—“झानादिकनी अनुक्रमे त्रण प्रकारनी आशातना थये सते तेना अतिचारनी विशुद्धि माटे सूत्रमां कला प्रमाणे तप करवूं.”

जयन्प, मध्यम अने उत्तमपृष्ठ एम त्रण प्रकारनी आशातना जाणवी. तेमां झानादिकनो अविनय थाय, त्यारे तेनुं प्रायश्चित्त लह यथायोग्य तप करवो जोइ. निंतकहृप अनुसारे “काले बिणेये बहुमाणे” इत्यादि आठ प्रकारना झानाचाचारनी देश आशातनामां एक आंविज्ञ अने सर्वशातनामां एक उपवासकरयो; अने स्थानांग सूत्र अनुसारे जयन्प आशातनामां पुरिमह, मध्यममां एकासाणुं अने

उत्कृष्टमां आंचित्र करवुं. आचार्य, उपाध्याय, पुस्तक, पाठी, कवली, ओळीया, नवकारवाली विगेरे दरेकनी आशातनामां जघन्यथी एक आंचित्र आवे. निदा, प्रदेप, मत्सर, उपहास विगेरे रूप दरेक आशातनामां एक एक उपवास आवे. इर्यावही प्रतिक्रम्या विना स्थाध्याय विगेरे करे तो एक पुरिमट्टुं प्रायश्चित्त आवे. पोताना प्रमादयी पुस्तकादिकनो अग्रिधी दाह थयो होय, अथवा नए थयां होय तो शक्ति डते ते पुस्तको फरीधी नवां बाखावावां. अक्षरोने पग अकके तो नीवी आवे, हान समीप डतां ( पासे होवा डतां ) आहार नीहार करवायी नीवी आवे, थूक्कमे अक्षर कढे तो पुरिमट्टुं आवे, जपमाला ( नवकारवाली ) तुटे अथवा तेने पानो सर्व थाय के खोवाय तो नीवी आवे, काळ वत्ते सिञ्चान्त जणे गणे अथवा कोइने जणवामां अंतराय करे तो पुरिमट्टुं प्रायश्चित्त आवे, आ प्रमाणे जाणीने जे माणस हान संबंधी प्रायश्चित्त ग्रहण करे नहीं, आलोवे नहीं ते माणस वरदत्तना जीव वसुदेव आचार्यनी जेम अने पुस्तक पाठी विगेरेने वाली नाखनार गुणमंजरीना जीव सुंदरीनी जेम महान छुख पामे छे<sup>१</sup>.

हवे 'निसंकिय निकंखिय' इत्यादि आठ प्रकारना दर्शनाचारने विषे देशंकामां आंचित्रतुं प्रायश्चित्त आवे, सर्व शंका थाय तो उपवास आवे. (आ प्रमाणे आउमां समझी द्वेषु). स्थानांग सूत्रमां दर्शनाचारना अतिचार संबंधी जघन्यथी पुरिमट्ट, मध्यमयी एकासाणुं अने उत्कृष्टयी उपवास कहेद्वोडे. प्रमादयी देवगुरुने वंदना न करे तो पुरिमट्ट, प्रतिमानी साथे वासकुंपी, धूपधाणुं विगेरे अथमाइ जाय, प्रतिमा पनी जाय, वगर धोयेज्ञा वस्त्रको पूजा करे तो पुरिमट्ट अने देव, गुरु, पुस्तक, संघ, चैत्य, तप, सायु, शावक अने सामाचारीनी देशी आशातना करे तो आंचित्र अने सर्वाशातनामां प्रत्येके उपवास; देरासरनी अंदर तंदोळ सावुं, जळ पीवुं, जोजन करवुं इत्यादि दश प्रकारनी चैत्यनी आशातना देशाधी थाय तो आंचित्र, सर्वधी आशातना थाय तो उपवास; सामान्ये मिथ्यात्व क्रिया करे तो पुरिमट्ट, उत्कृष्टयी आंचित्र; अन्य तीर्थिकना देवगुरुनुं वंदन करे, शाद संवत्सरी करे, मांदवा मांगे, उतार मुके इत्यादि वादर मिथ्यात्व एक वार करवायी प्रत्येके एक एक उपवास, वरंवार तेवी करणी करे तो प्रत्येके दश दश उपवास; साधर्मिकनी साथे अभीति करे तो जघन्यथी एकासाणुं, मध्यमयी आंचित्र अने उत्कृष्ट-

<sup>१</sup> आ दृश्यांगो पूर्वे व्याख्यान २१५ मां आवी गेलां छे.

थी उपवास ; स्थापनाचार्यनी पनिद्वेष्टु न करे तो पुरिमिठ, पक्षी जाय तो एका-  
सणं, खोचाइ जाय तो उपवास ; प्रतिपानी अंगुष्ठी बिगेरे पेताना प्रमादधी नए  
थाय तो दश उपवास ; सूहमपणे देवद्वयने उपजोग थइ जाय तो जघन्यवी  
पुरिमिठ, पृथ्यमधी उपवास, अने प्रमादधी वारंवार जोगमां ले तो दश उपवास ;  
देवद्वय जक्कण करीने जे मनुष्य प्रायश्चित्त ग्रहण करे नहीं ते संकाश देउ, सा-  
गर देउ बिगेस्नी जेम अनेक छुखसंतविन पामे डे. पृथ्वीपर पक्षी गयेझाँ पुष्प  
प्रमादधी प्रज्ञने चमत्वे तो आंविज्ञनुं प्रायश्चित्त आवे, आ प्रमाणे प्रायश्चित्त ले-  
वाची थोडा तपत्ते झुच्छि थाय डे, अने जो गुरु पासे जइ प्रायश्चित्त न ले तो  
ते मातंगना पुश्नी जेम घणं छुख पामे डे.

### मातंग पुत्रनुं दृष्टान्त.

कामरुप पट्टणमां कोइ चांकाळने धेर दांतवालो पुत्र उत्पन्न थयो, ते जोइ  
तेनी माताए नय पामीने गाम बहार जइ ते पुत्रने तजी दीधो, तेवामां ते नगरनो  
राजा फरवा नीकल्यो तेण तेने दीधो, एठेले परिजन धारा पेताना महेझमां झळ  
जइ तेने उत्तेयो, अनुक्रमे ते युवाबस्था पाम्यो, प्राते राजाए तेनेज गादीपर वेसामीने  
दीक्षा दीधी, ते राजपि अनुक्रमे झानी थया, एझे पुत्रने प्रतिवेष करवा त्यां  
आआ, राजाने खवर थांतो ते मोडी समृद्धियो गुरुने बांदीने पासे धेडो, तेवामां  
ते चांकाळनी स्त्री पण त्यां आवी गुरुने बांदीने धेडी, ते मातंगीने जोडने राजा  
हर्ष पाम्यो अने ते मातंगी पण राजाने जोडने हर्ष पामी, तेना रामांच विकसित  
थया अने तत्काळ तेना बने स्तनमांयो दूधनी धारा नीकली, ते जोडने राजाए  
आश्रय पामी गुरुने पूछयुं के “ हे स्वप्नी ! माग दर्शनवी आ मातंगीना स्तनमा-  
धी दूध केम नीकल्युं ? ” मुनि बोद्धा के “ हे राजा ! आ मातंगी तारी माता  
डे, तेण तेन जन्मतांज गाम बहार तजी दीधो हतो, त्यांवी में लाईन तारुं पाज्जन  
कर्युं हतुं, अने मारे पुत्र नहीं होवाची तेने राज्य आप्युं हतुं, ” ते सांजलीने रा-  
जाए पूछयुं के “ हे गुरु ! कथा कर्पयो मातंग कुळमां मासे जन्म थयो ? अने क-  
या कर्पयी मने राज्य मळयुं ? ” मुनि बोद्धा के “ तुं पूर्व नवे श्रीमान् अने वि-  
देशी श्रेष्ठी हतो, एकदा जिनेन्द्रनी पूजा करतां एक मुगंधी पुष्प पद्मासन  
उपर पळयुं, ते अति मुगंधी डे एम जाणीने तें फरीयी ते पुष्प प्रज्ञपर चमाच्युं,  
अविधिए स्नान कर्या विना ए प्रमाणे करवाची तें माहिन्यपणानुं पापकर्म अ-

व्याख्याने ४७८ मुं. पांच आणुवत संवंधी प्रायश्चित्त विषे. ( १८ )

जित कर्यु, ते पापनी आळोचना कर्या विना परण पामी मात्रं कुलमां तुं उत्पन्न धयो, अने विधि पूर्वक पूजा करवाना पुण्यधी तुं राज्य पास्यो. ” आ प्रमाणे सांचक्कीन तेन जातिस्मरण इन उत्पन्न धयुं, एवंते तत्त्व तेणे राज्य तंजी दृढ़ने दीक्षा दीधी. अंते संप्रे उपर्यु आळोची प्रतिक्रियने स्वर्ग गयो.

“ सिद्धान्त, संव अने प्रनिमानी अर्चना विग्रेमां अविवेक्ते दीधी जे आशातना थइ होय तेनी सद्गुरु पासे तत्काल आळोचना थइ योग्य तप तपीने दरेक माणसे शुद्ध थेवुं. ”

इत्यद्रिदिनषरिमितोपेशप्रासादवृत्तौ विश्वतिमस्तंजस्य

अप्राशीत्यधिकच्छततमः प्रवंधः ॥ ४७८ ॥

## व्याख्यान २८९ मुं.

पांच आणुवत संवंधी प्रायश्चित्त विषे.

पंचाणुवतसंबन्धतिचारशुच्छिहेतवे ।

प्रायश्चित्ततपः कार्य, गीतार्थगुरुणोदितम् ॥ १ ॥

जावार्थ—“ पांच आणुवत संवंधी अतिचारनी शुच्छिने मांटे गीतार्थ गुरुए कहेद्यु मांयश्चित्त तप करुं. ”

पांच व्रत मांडेद्वा पहेद्वा व्रतनी आळोचना आ प्रमाणे डे—शावकोने पृथ्वीकायादिक एकेन्द्रिय जीवनी विराधना घणुं करीने सामायिकने स्थाने अथवा अन्तिग्रहतुं उत्कृश्यन करता जाणवी, तेमां पांचे स्थावरनो कारण विना संघट करवावी एक पुस्तिठ, तेओने थोकी पीमा करी होय तो एकासणुं, गाढ पीमा करी होय तो नीवी अने उपद्वव कयों होय तो अंगिव विन करवुं. अनन्तकायने विक्षेन्द्रियनो संबद्ध करवावी पुस्तिठ, अद्य पीमा करी होय तो एकासणुं, अधिक पीमा करी होय तो अंगिव अने उपद्वव कयों होय तो उपशास. अहंकरवी पैचेन्द्रियनो वंश कयों होय तो दश उपवास, यणा एकेन्द्रियनो वंश कयों होय तो

दश उपवास, गङ्गा विनानुं जल एक बार पीयुं होय तो वे उपवास, जल गङ्गा पड़ी तेनो संतारो थोड़ो। दोलायो होय तो वे उपवास, चार्नवार मंत्रारो दोलायो होय तो दश उपवास, संतारो सूक्ष्म गयोहोय तो दश उपवास, खारो अने मीठी ( खारोने मीठा पाणीनो ) संतारो पक्क करवामां आओ होय तो त्रण उपवास, गङ्गा विनाना जलयी स्नान कर्युं होय अथवा तेने उनुं कर्युं होय तो त्रण उपवास, खीझ फूज्जनो संथट कर्यो होय तो एक उपवास, खीझां याम उपर वेसवा के चालवायी एक उपवास, गर्जपाते १०८ उपवास, करोड़ीयानां पद उखेमवायी दश उपवास, उपद्धनो पर नष्ट करवायी दश उपवास; खालकूवामां, कीमीओना दरमां तथा पोडाणवाळ। जपीनमां जल जाय तेम स्नान करवायी, अने उनुं जल अथवा ओसापए विंगेरे तेवे स्थाने होलवायी एक उपवास; पाणीगङ्गां दोळे, फाडेल्ला गङ्गणायी पाणी गळे, लाकडां पुंज्या विना अग्रिमां नाले, सलेझुं धान्य खाँदे, दृक्के, संके, जरके के तदके मुके, उस्सरके सळगाले, द्वेष्मां सूद करे, वासीहुं अग्रिमां नाले, कोउ नाले, चोपासमां ढांचा विना दोबो करे, खालद्वा गोड़मां तदके नाले, वासी गार छाँपे, वासी भाणों थोपे, चकड़ी विंगेत्ना माला जांगे, जीव जोया विना यस्तु धुए, रात्रिए स्नान करे, पंडी, खांसहीयो, चूज्जो विंगेरे पुंज्या विना उपयोगमां छे, सोप खुए, इत्यादि कार्य निर्धास ( निर्दय ) पणे करवायी दरेक कार्यमां जन्मये एक उपवासनुं, मध्यमयी त्रण उपवासनुं अने उल्लहृ दश उपवासनुं प्रायश्चित्त आवे, मुवावक करवायी वे अथवा त्रण उपवास, पणे स्त्रीओनी मुवावक करवायी दर्शां उपवास; जगो मूकाववायी एक उपवास, कुमिना नाश माटे आंपय खायुं होय तो उल्लहृ दश उपवास; जलशयमां स्नान करे, लूगमां के गोड़मां विंगेरे धुए तो दश उपवास, अने कांचकी विंगेत्थी केगा ओलोने जूँ छीखनी विराघना करे तो दश उपवास.

आ पमाणे आज्ञानना साजलीने जे कोइ पापनी आज्ञानेचना न करे ते पोँडु छुँख पापे छे.

धर्मराजाए पूर्वं पोनाना द्रुपदना जवमांघणा स्थावर अने अनन्तकायादि-  
कर्मो वय कर्यो हतो, तेथी तेने घणुं छुँख पाप थयुं हतुं, पड़ी नेणी ते पापनी गुरु  
पासे आज्ञानेचना करी, अने गुरुए कहेहुं प्रायश्चित्त अंगीकार कर्युं, तेथी तेज ज-  
वमां ते पागे पोट्ये इच्य थयो. लाखो साथमिकाने अवदान आपीने तेणे मुस्ती

कर्या, त्यार परी वीजो मनुष्यजन्म पापती बलते तेना प्रजावधी वार वर्षनो  
मुक्काळ पूज्वानो हतो ते पड्यो नहीं, तेथी तेतु धर्मराजा नाम पड्यु, आ दृष्टान्त  
अमे सातमा वतमां सविस्तर आपेक्षुं डे. एक गोवाले वावळनी सूझी जूने परोवी  
मारी हती, तेतु प्रायश्चित् न करवायी ते एकसो ने आठ जव सुधी सूलीथी  
परण पाप्यो हतो. महेश्वर नामना श्रेष्ठीनी ल्हीए एक जू मारी हती, ते जाणीने  
कुमारपाल राजाए तेनुं सर्वस्व लाइने तेनावके ते जूना प्रायश्चित् वदल यूकाविहार  
नामनुं चैत्यं करव्युं हतुं, श्रीहस्तिङ्गमूर्ति पोताना प्रायश्चित्तने स्पाने चौदसो ने  
चुम्बालीश ग्रन्थो वनाव्या डे. आ विगेरे दृष्टान्तो पोतानी भेले जाणी लेवां.

हवे वीजा वतनुं प्रायश्चित् आ प्रमाणे छे—पांच मोदा असत्य डे, ते  
बोद्धवायी जयन्ये एक आंविद्ध अने उत्कृष्टे एक उपवासनुं प्रायश्चित्. अहंकारथी  
असत्य बोद्धे तो दुश उपवास, कवह करतां, चारी करतां ने खोट्ट कवङ्क देतां  
एक आंविद्ध, धर्मनो द्वोप थाय एवं बोद्धे तो दश उपवास, श्राव॑ देवायी अथवा  
हाथवती करकमा मोल्लवायी एक उपवास, छुप्पणायी कोइने मारवानुं कहे तो  
दश उपवास, कोइना पर कड़कंक चमावदा माटे तेने व्यजिचारी कहेवी, शाकिनो<sup>३</sup>  
कहेवी अथवा कोइने निधि मळ्यो डे ए विगेरे दोप आपवो तेथी दश उपवास.  
अर्कंर, 'मसि (ज्ञाही) अने गुप कहेव वातनो जेद करे तो एक आंविद्ध, खोटी  
रीते कोइनो दंद करावे तो दश उपवास, कोइने मारी नांखे तो एकसो ने ऐशी उ-  
पवास. एक परवामीया सुधी क्रोध रहे तो एक उपवास, चार मास सुधी क्रोध रहे  
तो वे उपवास, वर्ष सुधी क्रोध रहे तो दश उपवास. (आ प्रमाणे प्रायश्चित् सम-  
जनुं). एक वर्षयी वधारे मुदत क्रोध रहे तेनी आज्ञोचना डेज नहीं. अज्ञिचि  
कुमारे पोताना पिता उदायि मुनि उपर द्वेष राख्यो हतो. डेवट मरण समये पण  
तेणे उदायि चिना वीजा सर्व जीवोने खमाव्या, अने उदायि परना घेपनी आज्ञो-  
चना करी नहीं, तेथी ते 'अधोगमी देवता थयो हतो.

असत्य वाणी बोद्धवाना पापनी आज्ञोचना नहीं लेनारा रजा साढ़ी,  
कुवङ्गपत्र सुरि अने मरिचि विगेरेनां दृष्टान्ता अहीं जाणवां.

स्थूल अदत्तादानमां प्रपाद्यी खोड़ तोझां तथा माप राखवां, रस पदार्थमां

१ तोह भुंडु धज्जो इत्यादि बोल्हुं से थार. २ आ वीजाने संबंधी दोप जाणवो. दाकण कहे छे ने.

३ अधर फेरवावो. ४ ज्ञाही बश्लावर्वा. ५ भुवनपति व्यतरादि.

बीजो सस ज्ञेलवी बेववो, दाणचेरी करवी इत्यादिकमां जग्नवयी पुरिमहु, मध्यपथी आंचिङ्ग अने उत्कृष्टी उपवास. अहंकारवी ते कार्यो करे तो दश उपवासं, चिभासशत करवायी एक उपवास. अदचादाननी आ प्रमाणेनी आळोयण नहीं द्वेनार अने अदच ग्रहण करवायां आसन्न धवळ नामनो थेष्ठी श्रीपात्र राजा उपर चिभासशतनी सृहा राखवायी तेज नवयां योटी व्यथाने पाम्यो हतो; अने केसरी, राहिण्य विगेर चोरो चोरीनो त्याग करीने जिनभरना मार्गना रामी (नक्त) घया हता.

मयुन विष्पण नामना चोदा व्रतमां प्रमादवी स्वदारा संवंधी नियमनो जंग थयो होय तो एक उपवास, वेश्या संवंधी नियमनो जंग थयो होय तो वे उपवास, अहंकारवी जंग कर्यो होय तो दश उपवास, हीन जातिनी परस्तीने अङ्गातपणे सेववायी दश उपवास, जाणीने सेववायी द्वारव सज्जाय सहित<sup>१</sup> दश उपवास, आम नामना राजाए मुंबनी स्त्री साथे ज्ञेन करवानी इच्छा करी हती ते वात वपनदृ सूर्सिना जाणवायां आवी, तेवी राजा लज्जित थयो. पछी ब्राष्टणना कहेद्वा प्रायथित्वायी राजाए तपत्वेद्वी द्वोदानी पुतक्कीनु आळिंगन करवानी इच्छा करी. ते जाणीने शुल्ष राजाने शिवामण आपी के “ हे राजा! एम करवायी पापनो क्षम थतो नवी. ” पछी राजाना पृथ्वीवायी शुल्ष सर्वहङ्कारवाने आधेर प्रायथित्वायी आएँ. ते प्रायथित्व तप करवायी राजा पाप रहित थझे गुण पाम्यो हतो. उत्तम जातिनी परस्तीने अजाणतां सेववायी एक द्वारव ने ऐशी हजार सज्जाय सहित दश उपवास, जाणीने सेववायी १८० उपवास. तिर्यच संवंधी नियमनो जंग थयो होय तो एक आंचिङ्ग, स्वज्ञमां जंग थयो होय तो चार द्वेष्ठास्त्र ने एक नवकारनो कायोत्सर्ग, एकसो ने आउ व्यासोश्वास प्रमाण, हस्तक्रिया करवायी वण उपवास, वारंवार हस्तक्रिया करवायी दश उपवास, परस्तीना हृदयनो स्पर्श करवायी एक उपवास, दींगद्वा दींगद्वीना विवाह करवायी एक पुरीमहु, दींगद्वा गुणवायी एकासांगु, अने तेनी क्रीडा करवायी एक आंचिङ्ग, परस्तीने चलात्कारे सेववायी एकसो ऐशी उपवास, तेना पर तीव्र इष्टिराग राखवायी वे उपवास, अने तेनी साथे तीव्र भेम पूर्वक वातचित के हस्त विगेरेनो स्पर्श करवायी वण उपवासनी आळोयण आवे डे.

स्पी नामनी राजपुत्री धाळचिधवा हती

नामना आ-

१ याय नवधर गणना अथवा लाग श्वेष वांचवा संभारकृ

मात्य उपर हप्तिराग कर्यो होतो. अतुक्रमे ते बनेए दीक्षा ग्रहण करी हती. उपर संदेखनाने समये गुरुए घणी रीते वोथ करी समजावी, तोपण रुपी साध्वीए ते हप्तिराग संबंधी पापनी आद्वोचना दीधी नहीं; ते पाप गुप्त राखवाथी ( दंन करवायी ) अनन्त जबरंपरा पामी. जो ते पापनी आद्वोचना दीधी होत तो थोका तपथीज तेनी कार्यसिद्धि थात.

कुमारीका सथे जोग करवाथी अच्छम, इत्वर परिग्रहिता ( अमुक मुदत सुधी रखायत तरीके कोइए रखेव ) नो समागम करवाथी वे उपवास, मैयुन संवेदी अशुज्ज चित्वन करवाथी एक उपवास. श्री लक्ष्मणा नामनी साध्वीए चक्षाना मैयुननी सुन्ति करी हती. ते पापनी आद्वोयण गुरु पासे दीधी नहीं, पण पोतानी बुद्धिभीज ते पापना नाशने माटे पचास वर्ष सुधी महा उत्कट तप कर्यो, तो पण ते पाप नाश पाम्यु नहीं; उक्ती अनेक जब सुधी विनंबना पामी. पण जो दंननो त्याग करीने गुरुए आपेक्षा प्रायश्चित्त तपयी आद्वोचना करी होत तो थोमा काळमांज शुद्ध थात.

पांचमा परिग्रह परिमाण नामना व्रतमां नव प्रकारना परिग्रहना नियमनो नंग थाय तो जयन्ते पुरिमट्ठ, मध्यमयी आंधित्र अने उत्कृष्टे एक उपवासनी आद्वोयण आवे डे; दर्पथी नियमनो नंग करे तो दश उपवासनी आद्वोयण आवे डे. आ व्रतसुं प्रायश्चित्त तप महणसिंह नामना श्रावकनी जेम तत्काळ स्वीकारी देव्युं साहुए पण पोताना उपकरणादिक अधिक राखवाथी तत्काळ आद्वोयण देवी—ते पापने आद्वोव्युं; नहीं तो विद्युत्सिंहसूरिनी जेम अनार्य कुलमां जन्मव्युं पदे डे, ते कथा नीचे प्रमाणे—

### विद्युत्सिंहसूरिनुं दृष्टांत.

श्री विद्युत्सिंह नामना सूरि पोताना शिष्यो. सहित समस्त आम्रपणीत धर्ममां रक्त होता. परंतु एक योगपट्ठ उपर तेणे घणी प्रीति थड्ह होती. ते योगपट्ठ चिना कोइ पण स्थाने तेने प्रीति उपजती नहोती. योगपट्ठ एट्झे उज्जी पक्षांत्री वाळीने केद तथा पगने साथे वांधवामां आवत्तुं मुतरनुं वह्य समजव्युं. ते योगपट्ठ उपरनी मूर्गी तेणे तजी नहीं. जिनेन्द्रोए तो मूर्गीनेज समस्त परिग्रहतुं मूळ कारण कहेद्व्युं डे. ते मूर्गीनुं पाप तेणे मृत्यु चखते पण सम्यग् प्रकारे आद्वोच्युं नहीं.

तेवी ते सूरि काळ करीने अनार्य देशमां आरबना म्बेच्छ कुलमां राजपुत्र थया। त्यां तेना शरीरपर योगष्टुना आकारे चिन्ह थयुं तब्ब, बाहुं विंगेरे चिन्हनी जेम ते चिन्ह जोइने सर्व माणसो विस्मय पायथा। कारण के आवुं चिन्ह कोइ वरवत जेवामां आव्युं नहोतुं, अने तेवुं कारण तो मात्र ज्ञानीज जाए तेम हतुं। अहीं तेना शिष्योने संयम अने तपना वल्लथी अनुक्रमे अवधिज्ञान अने मनःपर्यवेक्षान उत्पन्न थया, ते ज्ञानवके पोताना गुरुनी शी गति थइ डे ? ते जोतां म्बेच्छ कुलमां तेमनी उत्पन्न जाणीने ते शिष्यो विचारवा द्वाग्या के “अहो ! धनादिक विना मात्र स्वप्न मूर्गी पण आ प्रमाणे व्रतजंगना फलने आपनारी थइ पमी, एवी मूर्गीने धिक्कार डे, तेमने तेवी मूर्गीनी अनाद्वौचननाने पण धिक्कार डे, पण हवे आपणे तेमने सर्वह धर्म पमानवे करीने तेमनो उच्चर करी प्रसुपकार करतो जोइए, कहुं डे के—

समकितदायक युरु तणो, ‘पच्चुवयार न थाय;

चव कोमाकोमे करी, करतो सर्व उपाय. १.

स्थानांग मूर्तमां पण “तिहं दुष्पन्दियार” त्रण बानानो प्रतिकार थइ शके नहिं, इत्यादि कहेहुं डे. एम विचारीने ते शिष्यो तुरकली वाणी तथा आरब शास्त्र जाणवा द्वाग्या, पर्ची म्बेच्छ द्वोकोमां मान्य थाय एवो वेप धारण करीने अने पोतानो यतिवेप गोपवीने ते देश तरफ तेओए विहार कर्यो, अनुक्रमे अनार्य देश आव्यो, त्यां सर्व स्थाने निर्दोष आहारादिक मलशे नहों एम जाणीने ते सर्वेष मासक्राणे विंगेरे तप अंगीकार कर्युं, पर्ची इयां पोताना गुरुउत्पन्न थया हता त्यां आव्या, अने कुरानमां जे जे निर्दोष विषयो हता तेवुं आज्ञावन करीने वेराग्यनी युक्तिर्थी उपदेश करवा द्वाग्या, तेवी तेओ वणो द्वोकोनी स्तुतिने योग्य थया, अनेक जनोनो मुखर्थी तेमनी प्रशंसा सांजलीने ते राजपुत्र पण तेमनी पासे आवश्या द्वाग्यो, ते सादुओनो वाणो सांजलीने राजपुत्रने वणो हर्ष थयो, ते कोइ कोइ वार एक्कोम त्यां आवतो, अने कोइ कोइ वार परिवार सहित आवतो, मुनिओ पण एकांतमां ते राजपुत्रने पोतानो सादुवेश देखाकरता हता, एकदा सादुओनी क्रिया, वेप, योगष्टुल्ली निशानी, मुनिनां वाक्य अने पोताना पूर्वजनवनो उत्तांत सांजलीने तेने जातिस्मरण थयुं, एटझे तेणे विचार्यु के “अहो मने धिक्कार

बे के में योगपट्ट संवर्धी प्रायश्चित्त बीधुं नहीं. तेवी हुं त्रण रत्नो ( समक्ति, झान ने चास्त्रि ) हारी गयो, अने मात्र योगपट्टनी मृत्युर्धी परमात्माना धर्मयी व्यतिरिक्त हीन जातिपां उत्त्वन्न थयो. आ सर्वं मारा शिष्यो बे, तेओए मारा परघणो उपकार कर्यो बे. केमके तेओ आहारादिकनो पण ल्याग करीने मारे माटे निःस्पृहपणे आवुं लग्न तप करे बे. तेमेन अहीं आत्मा घणा दिवसो थइ गया बे, माटे देहना आत्मरचूत आहारादिक विना तेओ केम रही शक्शे ? माटे हुं ज्ञानदीयी मारा स्वजनोने भेतरीने एमनी साये जड आर्य देशनी सीमाए पहोचीने दीक्षा ग्रहण करुं. ” पठो अवसर जोइने राजपुत्रे ते शिष्यो साये आर्य देशमां आवी दीक्षा लाने पोतानो जन्म सफल कर्यो.

“ नाना चिद्रवालुं नाव पण जेम समुद्रमां हुवी जाय बे तेम अष्ट्य मूर्गायी पण सूरि अनार्य देशमां उत्त्वन्न थया; माटे सर्वं जन्य जीवोए पापनी शुच्छि माटे आद्वोचना अवश्य देवी. ”

॥३४॥

इत्यद्विनपरिमितोपदेशप्रासादवृत्तौ विंशतितमस्तंजस्य  
एकोननवत्यधिकद्विशततमः प्रवंधः ॥ ३४ ॥

## व्याख्यान २९० मुं.

गुणव्रत तथा शिक्षाव्रतना प्रायश्चित्त विषे.

‘त्रीणि गुणव्रतानि स्युः, सेव्यानि प्रत्यहं तथा ।

शिक्षाव्रतानि चत्वार्येपाभपि तत्त्वो च्चवेत् ॥ १ ॥

जावार्य—“ त्रण गुणव्रत अने चार शिक्षाव्रत बे, तेमनुं निंतर सेवन करुं, ते वने प्रकारना व्रत संवर्धी पण ते तप (प्रायश्चित्त तप) अतिचार आद्वोचनास्प कहेदी बे. ” ते आ प्रमाणे—

पहेदा गुणव्रतमां तीर्तुं जलमां ने स्थलमां अने उंचे तथा नीचे नियम क-

रतां अधिक गमन पाय तो जयन्यथी एक आंघिङ्गानुं प्रायश्चित्त समज्वुं.

वीजा गुणव्रतमां अग्नाणतां मथ मांस उपजोगमां आवे तो ब्रण उपवास, अने दर्पयी अथवा आकुटीयी पद्य मांस वापरवापां आवे तो दश उपवास. गुणी माणसे मध्यर्मासना स्वादनी इच्छा मात्र पण करवी नहीं. कदाच इच्छा थइ जाय तो तेनी पण अवश्य आद्वोचना लेवी. एकदा श्रीकृष्णरपाठ राजाने कांइक सूक्त धेवर खातां दाढ मध्ये 'करम' 'करम' शब्द थयो. तेथी प्रथम नक्षण करेद्वा मांसतुं स्मरण थइ आव्युं. तेण तरतन विचार्यु के "अहो! मे अपेक्ष्य ध्यान कर्यु." पडी तेना प्रायश्चित्त माटे पोताना सर्व दांत पाढी नांववा तैयार थइ गया. मंत्रीए तेम करतां अट्कावीने ते एचान्त गुरुने जणाव्यो. गुरुए लाज जोझ्ने तेना प्रायश्चित्त-ने डेकाणे एक हजार ने चोवीश स्तंनवाळुं आरस पत्थरतुं चैत्य कराववानो उप-देश आप्यो.

कोऽवार अनाजोगे मालण स्वावापां आव्युं होय तो एक उपवास. जाणी-ने ( आकुटीयी ) नक्षण के तो ब्रण उपवास. अनन्तकायतुं एकवार अनाजोगे नक्षण करवायी एक उपवास, अने जाणीने नक्षण करवायी ब्रण उपवास. कोही गेष्मी बनस्पतिना नक्षणयी एक आंघिङ्ग, घोळ अथाणु नक्षण करवायी तथा ठाठा दूध, दहीं अने गाशमां छिद्व खावायी अने सोळ महर उपरांततुं दहीं नक्षण करवायी तेमन वार्दीश अनक्षना नक्षणयी एक एक उपवास. मथना नक्षणमां तेनो नियम चतां जंग पाय तो वे उपवास, नियम न होय अने मध्यं नक्षण करे तो एक उपवास. चैंद्र नियमनो जंग पाय तो जयन्यथी एक पुरिमदृ, अने उत्कर्षयी एक उपवास. सुदूरम कर्मादानमां वे उपवास अने लुहारनो, वार्दी वाववानो ( गाळीनो ), रथ ( गाळो विगेर ) घरवानो धंघो करवायी तथा लाख, गळी, मणजीळि, धावमी, साशु, जांग, चार महा विगय, पञ्च पक्षीनां छंगोपांग डेदन, अफीण, हळ अने हृथियार विगेलेनो वेपार करवायी दश उपवास. विष आपीने अथवा अपावीने पडीयी तेहुं निवारण कर्यु होय तो दश उपवास, पण निवारण कर्यु न होय तो एकसो ने ओँशी उपवास. मुह बनाववायी एक आंघिङ्ग, भरी बनाववायी ब्रण उपवास.

हृथियारनो वेपारज राजीया श्रावकनी जेम श्रावके निषेधवो ( न करवो ). तेनी कथा एवी ते के " खंजातमां तपगच्छी राजीया अने वजीया नामना वे जा-

इयो रहेता हुता. तेन यणा दूर देशथी जलमार्ग बहाणो आव्यां. तेमां तस्वार, बरी, कटारी, सुकी, दातरकां, तीर, बंडुक, पीस्तोळ अने वरडी विगेरे लोहानां वनावेद्वां घणां हथियारो मोटी कींमतवालां हुतां. ते जोइने तेणे विचार्यु के 'आ हथियारोथी परंपराए अनेक जीवोनी हिंसा थषे, माटे ते सेवने जांगीने जीणो चूरो करी खानो खोदी दाटी देवां जोइए.' आ प्रमाणे विचारीने तेणे पोताना सेवकोने हथियारोने तेवी रीते दाटी देवानो हुकम कयों. सेवकोए घणो धननो छान देखाड्यो, तोपण तेमनुं कहेवुं कबूझ राख्युं नहीं."

रात्रिजोजनना नियमनो जंग थाय तो उण उपवास, रात्रिए बोजाने पी-रसे तो एक पुरिमहू, अने वारंवार तेप करे तो दश उपवास, अजाणतां लगनग वेळाए जमवायी एक आंचित, प्रनाते जल जांखज्ज समये खाय तो एक आंचित, साहुओए तो सर्वथा जीवितपर्यन्त रात्रिजोजनानो निषेध करेलो होय रे, तेथी तेमणे तो तेनी इच्छा मात्र पण करवी नहीं. केमके इच्छा करवायी पण मोटो दोप खागे रे. ते उपर द्यांत कहे रे—

श्रीपुर नामना नारमां धनेश्वर नामना सूरि चातुर्मास रहा हुता. तेमनामां उपवास करवानी शक्ति नहोती. अन्यदा पर्युपण पर्व आवत्तां वीजा साहुओ तथा श्रावको उन, अवप विगेरे तप करवा लाग्या. ते वखते सूरिए विचार्यु के "हुं उपवास करी शकतो नयी, तो पण आजे तो उपवास करुं." एम विचारीने तेणे प्रथम पोरसीनुं पञ्चकाण कर्यु, पडी पुरिमहूनुं कर्यु, पडी अवहूनुं कर्यु, एम वथनुं वथनुं पञ्चकाण करवा लाग्या. वीजा साहुओए गुरुने कहुं के "अपे आहार लङ्घ आवीए, तपे पञ्चकाण पारो." गुरु वाद्या के "आजे तो उपवासज रे." पडी सायंकाळनुं प्रतिकमण कर्यु, संयारानी विधि जाणीने संथरो कयों, पण जू-खने लीधे तेमने निजा आवी नहीं. मध्य रात्रिए गुरु वोद्या के "हे मुनिओ ! असुर थयुं रे, माटे अव लङ्घ आवो." साहुओ वोद्या के "हजु तो मध्य रात्रिजो समय रे, सूर्योदय थयो नयी, शंख वगाभनारे हजु शंख पण वगाड्यो नयी, कुकमाओ पण वोद्यता नयी. आपेन अमोने शीखद्युं रे के 'रात्रिजोजनयी मूळ गुणनी हानि थाय रे' माटे आ वखते जीक्षा लेवा जऱ्युं योग्य नयी. लोको पण हजु मुता रे." ते साजलीने सूरि वोद्या के "हे शिष्यो ! शंख पोताना पिता समुद्रने मळवा गयो रे, सूर्यनो रथ जांगी गयो रे, अने कुकमा पण उमीने

वीजे रेकाणे आकाशमां गया छे, कर्यु बे के—

“ उयहिं सरेविण शंख गय, कुकुर गया नहेसि ।

रह जगो सूर्य तणो, तेण न विहाइ रत्ति ” ॥ १ ॥

जावार्थ—“ शंख समुद्रने मळवा गयो बे, कुकुर आकाशमां गया बे, अने सूर्यनो रथ जांगी गयो बे, तेथी रात्रि वीती गइ जणाती नयी ।”

आ प्रमाणे सांजलीने सायुओ धोब्या के “ आप जे कहो बो ते सत्य बे, पण कृथातुर माणसो शुं शुं करता नयी ? जुओ !

पंच नश्यन्ति पद्माक्षिः, कुधार्तस्य न संशयः ।

तेजो ल्लजा मतिर्जनं मदनश्चापि पंचमः ॥ १ ॥

जावार्थ—“ हे कमळना सरखा नेप्रवाली स्त्री ! कृथानुर माणसनुं तेज, ल्लजा, बुद्धि, ज्ञान अने पांचपां कामदेव—ए पांच वानां नाश पागे बे, एमां काँड संदेह नयी ।”

ते सांजलीने सूरि धोब्या के “मै कृथानी पीमधी आंतु जड्यन कर्यु बे, तेथी मने तेनो मिथ्या छुफुत हो ।” ए प्रमाणे निष्कर्षपणे सर्वती समक्ष पोतानुं पाप आज्ञोबीने सूरिए चित ढढ कर्यु, पछी प्रातःकाळे पण पोरिसीनुं पच्चखाण करीने त्यार पर्ही पाराण कर्यु.

तीजा गुणवतनी आज्ञोचना आ प्रमाणे छे—जावुनो धात, राजपत्तानी प्राप्ति, गामनो पात, अभिन खगाफवानी वृत्ति अने हुं विश्वास धार्तु तो उक्ति एवी इच्छा। इत्यादि छुर्ध्यान कर्यु होय, “ वळद्वाने दमन करो, खेतर खेमो, धोमाओने केलबो, गामो हांको ” इत्यादि पापकर्मनो उपदेश क्यों होय तो ज्यन्यथी एक उपवास, अने अहंकारथी तेप कर्यु होय तो दश उपवास, हङ्गण कृषिनो जीव जे पूर्व जबे पुरोहित होतो, तेण पोताना खेतरपां ५०० हज्ज्यने एकेक चास वधारे खेमाव्यो हनो अने तेथी दोढ हजार<sup>२</sup> प्राणी अने जो जननो अंतराय थयो हतो, ते पापनी आज्ञोचना करी नहीं, तेथी मुनिना जवामो तेपने व यहिने निर्देष आहार पञ्चो हतो,

<sup>१</sup> पांचमे हड्ड सेट्ट्यापा १००० वट्ट ने तेने हांकनारा ५०० रुपयानो।

हल, यंत्र, उखल ( खांमणीयो ), मुशल ( संबेदुं ); घंटी, घाणी जि-  
गेरे हिंसा थाय तेवी वस्तु आपवाधी तथा जिनचैत्यमां विद्वासादिक करवाधी  
जघन्ये एक उपवास अने दर्पयों केरे तो दश उपवास, कामण, वशीकरण विगेरे  
करवाधी दश उपवास, सरोवर, झह, तलाव विगेरे जलवायोनुं शोषण करवाधी  
अने दावानळ लगाभवाधी दश उपवास, कोइ स्थानके एकसो ने आउ उपवास  
पण कहेला दे.

पहेला शिक्षाव्रतमां सामायिक करवानों नियम होय अने न करे तो एक  
उपवास, गंति सहित सामायिकनो जंग थयो होय तो एक नीची, पर्वतिथिए आ-  
रंजनी जयणा न करे तो एक पुरिमट्ठ, सामायिकमां वादर अपकाय पृथ्वीकाय अने  
तेजस्कायनो स्पर्श थाय तो एक आंविद्ध, सामायिकमां जीना वस्तुनो स्पर्श थाय तो  
एक पुरिमट्ठ, लीदां तृणादिक तथा वीजादिकनुं मर्दन करे तो एक आंविद्ध, पुरुषने  
खीनो स्पर्श थाय अथवा खीने पुरुषनो स्पर्श थाय तो एक आंविद्ध, आंतरा पूर्वक  
स्पर्श थाय तो एक नीची, तेमना वस्तु विगेरेनो स्पर्श थाय तो एक पुरिमट्ठ, सुतां  
सुतां राजकथा करे तो एक पुरिमट्ठ, साधुने खीनो स्पर्श थाय तो जघन्य एक पुरि-  
मट्ठ, मध्यम एकासणुं अने उत्कृष्ट एक आंविद्ध, सर्व अंगनो स्पर्श थयो होय तो  
दश उपवासनी आद्वोयण आवे दे. सावध सूरिए साव्वीना वस्तुनो संघट थया  
भतां ते पापनी आद्वोचना करी नहीं, तेथी ते अनन्त छुःख पाम्या. मोट तल्काळ  
तेनी आद्वोचना करवी के जेवी अद्य तपवमे ते कर्मनी निष्टित्ति थाय.

देशावकाशिक नामना दशमा व्रतनो जंग थाय अथवा तेमां अतिचार  
बागे तो एक आंविद्धनी आद्वोयण आवे दे. काकजंघ राजानी जेम अववर्यं एनुं  
प्रायश्चित् दाइ द्वेयुं.

अगियारमा व्रतमां लीथेज्ञा नियमनो जंग करे अथवा वरावर नियम पाले  
नहीं तो एक उपवास, अने अतिचार बागे तो एक आंविद्ध, तेमज आवस्सही  
निसिही वरावर न कहे, उच्चार अने प्रस्तवणनी नूमिने न प्रमार्जे, प्रमार्ज्या विना  
कोइ पण वस्तु ग्रहण करे, अविधिए वारणां उधाने अथवा वंध करे, शरीरने  
प्रमार्ज्या विना खजवाळे, जीत पुंज्या विना तेने अर्डागीने वेस, गमनागमन न  
आळोवे, वसतिने प्रमार्ज्या विना सजाय करे, केवल कामलीन पहरे, जठ, अप्रि,  
विजली अने पृथ्वीकायनो संघट करे, इत्यादिकना प्रायश्चित् वद्व भत्येके जघन्यथी

एक नीवीनी आळोपण आवे छे. कामो उच्चरे नहाँ अथवा वेत्रा षेत्रा प्रतिक्रमण करे तो जग्न्ये एक पुरिमू, अने उक्केटे एकासाणु, पाँपभाँ बमन यसुं होय, कारण विना द्विसे शपन कर्युं होय, अने जग्या पडी वांदणां न दीर्घा होय तो प्रत्यंके एक एक आंधिज्ञ. मुखवत्तिकाना संयुक्तां एक नीवी, मुखवत्तिका खोवाइ गइ होय तो एक उपवास, रजोहरणना संयुक्तां एक आंधिज्ञ अने रजोहरण खोवाइ जाय तो एक अट्टम. आ प्रमाणे पाँपभनी आळोचना सांजलीनि जब्य जीवोए उनावनी अनुमां तृपायी पीकाया भतां पण जलनी इच्छा मात्र करवी नहाँ, कदाच इच्छा उत्तम यह जाय तो तत्काल तेनी आळोचना सेवी, नहाँ तो नंद मणिकार शावकनी जेम-मोडुं मुख भास थाय डे.

अतिथि संविजागनो नियम लीयो होय तो ते नियम न पालवायी अथवा जागवाप्ते एक उपवास, अने तेना अतिवारतो एक आंधिज्ञ. साहुने अशुभ आहार आपाने तेनी आळोचना न करे तो ते नागथ्री विंगेरेनी जेप नवपरंपराने पापे डे, माटे कदाचिन् मुनिने अयोग्य आहार अपायो होय तो तेनी तरतन आळोपण क्षेवी ( प्रायश्चित्त ग्रहण करुं ). तपस्वी साहुने देरना चैत्रानी राखेती सीर वहोरावनार श्रावकनी जेप.

हवे प्रसंगोपात वीजां पण केटझांक प्रापथित कडे डे.

आपयात करवानुं चिंतवन कर्युं होय तो एक उपवास, नियाणु करे तो एक उपवास, कदाच नियाणु कर्युं होय तो तरतन तेनी आळोचना द्वाइ क्षेवी. द्वांपदीना जीवे मुकुमालिकाना जवमां पांच पुरुषोदी सेवाती एक वेश्याने जोइने नियाणु कर्युं हतुं, ते पापनी आळोचना करी नहाँ तो तेवी ते अनेक प्रकारनी अथवेन पापी हती.

गर्जवती स्त्रीन आउ मास थाय त्यां मुखी साहुए तेना हाथयी आहार ग्रहण करवो; जो नवये मासे ग्रहण करे तो तेने एक आंधिज्ञां प्रायश्चित्त आवे. एकासणा विंगेरे तपनो नंग थयो होय तो तेना प्रायश्चित्तमा तेज ( एकासाणुं विंगेरे ) तप आपवो, अथवा ते तपनो जेड्डो स्थायाय होय ते आपवो.<sup>\*</sup> आ प्रमाणे आळोचनानुं र्खेन आचार्य भहाराने कहेलुं डे. ते सांजल्या भतां पण जे तेनो आदर न करे ते हीन गतिने भास थाय डे.

\* एक उपवासना बदलामा २००० स्वाध्यय अपाय डे ते प्रमाणे समजी लेवुं.

एकदा राजगृह नगरमां श्री वीरस्वामीने बांदीने श्रेणिक राजा सहित सर्व सज्जा बेड़ी हती, ते खखते चमोरेन्द्रनी अग्रमहिपी काळी नामनी देवी सर्व शुचि सहित प्रज्ञ पासे आवी नवीने सूर्योज देवनी जेम नृत्य करी पोताने स्थाने गइ. पड़ी ते देवीना पूर्वज्ञवनुं वृत्तांत गौतम स्वामीए प्रह्लादे पृष्ठयुं, एझे नगधान् बोध्या के “ आमद्वक्ष्य नगरमां काळ नामना शृहस्थनी पुत्री काळी नामे कूमारिका हती. तेण मावापनी रजा छाइने श्री पार्विनाय स्वामी पासे दीक्षा दीधी. प्रज्ञए तेने पुण्यनूज्ञा नामनी साढ़ीने शिष्या तरीके सौंपी. पड़ी ते काळी साढ़ी तेपनी पासे सामायिक विग्रे अग्नियार अंगनुं अध्ययन करीने संयम तपवर्मे पोताना आत्माने जाववा द्वागी. अग्न्यदा ते काळी साढ़ी मङ्ग परीपह सहन करवाने असमर्थ घइ सती हाथ, पग, मुख, मस्तक, स्तनांतर, कङ्गांतर, गुदांतर विग्रे अविष्यो जल्दी धोवा द्वागी, अने जे ठेकाणे वेसीने स्वाध्याय करे त्यां प्रथम जल्दमे पृथ्वीने शुद्ध करवा द्वागी. ते सर्व जोझने महत्तराए तेने शीखामण आपी के “ साहु साढ़ीने देहादिकनी जल्दमे शुचि करवी घट्टी नदी, माटे तेनुं तुं प्रायश्चित्त द्वे. ” ते सांजलीने काळी साढ़ी मौन रही सती विचारवा द्वागी के “ मारे आवी रीते पराधीनयणे अहीं रहेवुं योग्य नयी. ” पड़ी ते जूदा उपाश्रयमां जड़ने रही. त्यां अंकुश रहित थवाथी स्वच्छंदपणे जल्दमे अंगनी शुचि करवा द्वागी. ए प्रमाणे घणां वर्णे मुधी चारित्रियनुं पाज्ञन करीने मांते ते पापनी आद्वोचना प्रतिक्रिया कर्या विना पंदर दिवसना अनशनयी काळ करीने अड़ी पद्मोपमना आयुष्वाली असुरकुमार निकायमां देवी घइ द्वे; त्यांथी चबीने महाविदेह केत्रमां उत्पन्न घइ सिद्धिपदने पामदो.

“ भेदसूत्र विग्रे शास्त्रोमां वहुक्षुत आचार्योए अनेक विचारयी गरिनेत आ प्रायश्चित्त तपनुं वर्णन करेलुं द्वे, तेथी ते तपनो तात्कालिक स्वोकार करीने पापनी आद्वोचना देवी, पण शुजने इच्छनारा पुरुषोए श्रुतयी व्यतिरिक्त कांड पण बोझवुं नहीं. ”

१२५

इत्यद्रदिनपरिमितोपदेशप्राप्ताद्वृत्तौ विश्वतितमस्तंजस्य  
नवत्यधिक्षिद्वाततमः प्रवंधः ॥ शृणु ॥

## व्याख्यान २९१ सुं.

धर्मकर्ममां दंजनो त्याग करवा चिपे.

दंजतो नन्वयत्तेन, तपोऽनुष्ठानमादृतम् ।

तत्सर्वं निष्फलं झेयमूपरक्षेत्रवर्णणम् ॥ १ ॥

**नार्वार्थ—**“ तप अनुष्ठानादि निश्चये जो अयतनावसे अने दंजथी करवामां आवे तो ते सर्व उत्तर जमीनमां घटिनी जेप निष्फल जाणवां। ” ते उपर सुजसिरिनी कथा ते ते आ प्रमाणे—

### सुजसिरिनी कथा.

अबन्ति नगरी पासे शंखुक नामना खेडने विषे सुजशिव नामे एक ब्राह्मण रहेतो हतो. ते दरिकी अने निर्देश हतो. तेनी स्त्री यक्षयशा अन्यदा गर्जवती थइ. प्रसूतिसमये प्रसवती बदनाथी ते मरी गइ. तेणे एक कल्पनि जन्म आप्यो हतो. तेनु नाम सुजसिरि राख्यु हतुं. आ सुजसिरिनी जीव पूर्व जवे कोइ राजा-नी राणी हतो. ते राणीए पोतानो शोकना पुत्रेन मारी नांखवानो विचार कर्यो हतो. तेथी आ जवे तेनी माता जन्मतांज मृत्यु पापी. अनुक्रमे ते पुत्री इत्यात वर्षनी थइ तेवामां बार वर्षनो छुप्काळ पड्यो. एट्टेआजीविका माटे ते सुजशिव ब्राह्मण पुत्रीने दृढ़ने परदेश चाल्यो. मार्ग जतां कोइ गाममां गोविंद नामे एक ब्राह्मण रहेतो हतो. तेने घेर तेणे सुजसिरि बेची. अनुक्रमे ते गोविंद पण निर्धन थयो. एकदा तेने घेर कोइ महीयरी गोरस बेचवा आवी. तेनी पासेथी गोविंदनी स्त्रीए चेत्ताने बदले गोरस लीहुं अने चेत्ता बावचाने माटे सुजसिरिने घरमां मोकडी. ते घरमां जइ आम तेप जेइने पाडी आवी अने घोटी के ‘चोस्ता क्यां डे ? मैं तो क्यांइ जाया नहीं.’ ते सांजलीने गोविंदनी स्त्री पोते घरमां गइ, तो घरना एक खुणामां तेना भोय पुत्रेन कोइ बेदया साथे क्रीमा करतां जोयो. ते पुत्र तेने आवती जोइने किरसकार कर्यो, तेथी ते मूर्डा पापी गइ. गोविंदने तेनी खबर पमतां तेणे शीत छपचारथी तेने सज्जा बरी. एट्टेते स्त्रीने जातिस्मरण झान धवाथी तेणे पोतानो पूर्वजव जाणीने कही बताव्यो. ते सांजलीने गोविंदे पोतानी स्त्री सहित दीक्षा ग्रहण करी.

आ सप्ते श्री गौतम स्वामीए श्री महावीर स्वामीने प्रणाम करीने पूछतुं के “ हे जगवंत ! तेण पोतानो पूर्वनव शो कही बताव्यो के जेथी गोविंदने पण वैराग्य उपज्यो ? ” एट्ड्वे जगवान बोव्या के ते ख्येए द्वाल जब उपर दंज कर्यो हतो. पूर्वे ते द्वितिप्रतिष्ठ नगरना राजानी रूपी नामनी पुत्री हती. ते पुत्रीतुं पाणिग्रहण थयुं के तरतज तेनो पति मृत्यु पाम्यो. एट्ड्वे ते रूपी विश्वा थवाथी तेण शीङ्गना रङ्गण माटे चितामां प्रवेश करवा पोताना पितानी रजा मागी. राजाए कथुं के “ हे पुत्री ! चितामां प्रवेश करवाथी पतंगना मृत्युनी जेम निष्फल मरवा-पणे छे, तेथी तुं ते वात ओमी दृष्टने जैनर्धमां रक्त थइ शीङ्गवंततुं पावन कर.” ते सांजलीने रूपीए जावथी शीङ्ग अंगीकार कर्यु. अन्यदा ते राजा पुत्ररहित मरण पाम्यो, एट्ड्वे प्रथानोए ते पुत्रीनेज गादीपर वेसामो, अनेतेने रूपीराजाना नामथी बोव्याववा द्वाग्या. अनुकमे रूपी युवावस्था पाम्य. तेना गात्रमां कामदेवे प्रवेश कर्यो. एकदा सजाने विषे शीङ्गसन्नाह नामनो मंत्रो बेत्रो हतो तेनी सार्व रूपीए सराग दृष्टिए जोयु. ते मंत्रीए पण तेना चित्तनो अन्निप्राय जाएणी द्वीधो. एट्ड्वे शीङ्गनं-गथी जीह मंत्री गुप्तरीते नगरनी वहार नीकली गयो, अनेविचारसार नामना कोइ बीजा राजानो सेवक थझने रथो. एकदा ते राजाए मंत्रीने पूछतुं के “ ते प्रथम जे राजानी सेवा करी हती तेनुं नाम तथा तारुं कुळ, जाति, नगर विगोरे कहे.” मंत्रीए कथुं के “ मैं जे राजानी प्रथम सेवा करी हती तेनी आ मुज्जा जुओ. बाको तेनुं नाम तो जोजन कर्या पहेवां लेतुं योग्य नयी. केमके जो जोजन अ-गाउ तेनुं नाम लेवामां आवे तो ते दिवस अब विनानो जाय डे.” ते सांजलीने राजा विस्मय पाम्यो, एट्ड्वे तरतज सजामां जोजनसामग्री मंगावो, हाथमां कबल दृष्टने मंत्रीने कथुं के “ हवे ते राजानुं नाम लेवे.” ज्यारे मंत्रीए ‘रूपीराजा’ ए प्रमाणे नाम कर्यु के तरतज “ शत्रु राजाए आपना नगरने घेरो घाव्यो डे ” ए वाक्य राजाए सांजल्यु. तत्काल कबल नांखी दृष्टने राजा युद्ध करवा गयो. प्रस्तर मोडु युद्ध चाल्यु. ते वरवते युद्धतुं निवारण करवा माटे शीङ्गसन्नाह पण त्यां गयो. तेने मारवा माटे शत्रुना सुन्नये तेनी सन्मुख आव्या. तेमने शासनदेवीए स्तंनित कर्या, अने आकाशवाणी करी के ‘नमोस्तु शीङ्गसन्नाहाय ब्रह्मनर्पत्ताय’ “ ब्रह्म-चर्यमां आसक्त एवा शीङ्गसन्नाहने नमस्कार डे ” एम बोलीने देवताओए शीङ्गस-नाह उपर पुष्पनी दृष्टि करी. शीङ्गसन्नाह ते वाक्य सांजलीने विचार करवा

बाध्यो, एट्टें तरतम तेने जातिस्मरण थयुं, अने अवधिकान पण मात थयुं, तत्काळ तेणे पंचमुष्टि द्वोच करी चारित्र अंगीकार कर्युं. पड़ी ते मुनिना उपदेशयी ते वन्ने राजाओ बोध पामो युद्धयी निःत थया. पूर्वजवामो शीघ्रसन्नाह मुनि सांवय वचन वोश्या हुता, तेयी तेना प्रायधित्त माटे तेणे मौन व्रत धारण कर्युं।

प्रति ते मुनि चारित्र पालीने प्रथम देवद्वोक्ष्यां देवता थया, अने स्थायी चवीने ए शीघ्रसन्नाह स्वयंभुद्ध मुनि थया हे।<sup>१</sup>

शीघ्रसन्नाह मुनि विहार करतां करतां एकदा रुपी राजाना नगरनी वहार उद्यानमां आत्या. तेने वांदवा माटे रुपी राजा सामन्तादिकं सहित उद्यानपां आत्यो. त्यां गुरुनी देशना सांजलीने रुपी राजाए दीक्षा ग्रहण करी. अतु ग्रामे शीघ्रसन्नाह मुनि समेतशिखर गया. त्यां जिनेभरोने वंदना करीने एक शिखापद्म उपर सेथरो करी संखेखना करवा तयार थया. ते वस्त्रे रुपी सांघी वोश्या के “हे गुरु ! मने पण संखेखना कराओ.” गुरु वोश्या के “ जब संबंधी सर्वे पापोनी आद्वोचना लक्ष्मे शश्वरहित थया पड़ी इच्छित कर्य करो. केमरे उपांसुधी शस्य गयुं न होप त्योंसुधी वहु जब ज्ञापण कर्युं एके हे. जेम कोइक राजाना अभना पगमां खीझो बाध्यो हुतो, तेनो नानो सरखो करको अंशरजराइर्यो हुतो, तेयी ते अभ अति कुश थवा लाग्यो. राजाए तेने मंट अनेक उपवासे कर्य पण ते निष्कल्प गया. पड़ी एक कुशल पुरुषे ते अभना आत्या शरीरे आछो आछो कादव चोपड्यो एट्टें जे तेकाणे शस्य हर्तुं ते ज्ञाग उपसी आत्यो. ते जोझ्ने ते पुरुषे तेपायी नखहरणी<sup>२</sup> वनी ते शश्व काढी नांसुधुं, एट्टें ते अभ स्वस्य थयो. वढ़ी हे सांघी ! एक तापस हुतो. तेणे एकदा अजाएयुं फल खायुं, तेयी ते रोगप्रस्त थयो. पड़ी दवा माटे ते वैद्य पासे गयो, वैद्य शुं खायुं हे ? एम पृथग्युं स्यारे तापसे सत्य बात कही दीधी. तेयी ते वैद्य तेने बमन तथा विरेचन आपीने साजो कर्यो.” आ प्रमाणे सांजलीने ते रुपी सांघीए मात्र एक दृष्टिविकार ( शिघ्रसन्नाह सामुं विकार दृष्टिए जोयुं हर्तुं ते ) विना बोजो सर्वे पापनी आद्वोचना दीधी. गुरुए कर्युं के “ प्रथम सज्जामां तें मारो सामुं सराग दृष्टिए. जोयुं हर्तुं तेनी. आद्वोचना कर.” ते वोश्यी के “ ते तो मे सहंज निर्देनपणे जोयुं ह-

<sup>१</sup> अनेदेशनादि द्वाम निवित किना न दोल्दुं ए प्रमाणेनुं मानवत जाणुं. <sup>२</sup> वा हकीकत शीलसंप्राहना भवता प्रांत भागनी हे ते वैद्य लक्षवासी आदी हे. <sup>३</sup> भागामां ‘ नेरणी ’ कहेवामां आवे हे.

तुः ।” ते संजलीनि गुरुण् तेने लपदेश आपवा माटे बद्रमणा राजपुत्रीनु दृष्टांत कही संजलार्थ्यु के—

“गद उत्सप्तिणीमां क्रितिप्रतिष्ठ नामना नगरने विषे जंबुदार्निम नामना राजानो बद्रमणा नामे युवान पुत्री हती. ते स्वयंवरमंस्यमां एक योग्य पतिने वरी. तेना पाणिश्रहण वरते चोरोमांज तेनो पति अकस्मात् मरण पाम्यो. तेथी बद्रमणा अति छुख्यी विद्वाप करवा द्वागी. तेना पिताए तेने शिखामण आपी के “हे पुत्री ! कर्मनी विचित्र गति भे, माटे विद्वाप करवाथी दुँ फल छे ? तेथी तु जीवित पर्यंत शीघ्रतुं पावन कर.” इत्यादि कहीने राजाए तेने ज्ञांत करी. एकदा श्री जिनेश्वर ते राजाना उद्यानमां सम्पवस्या. जगवाननी देशनाथी बोध पामीने राजाए पुत्री सहित दीक्षा ग्रहण करी. बद्रमणा साढ़ी पोतानी गुरुणी (प्रवत्तिनी) पासे रहीने संयम पालवा द्वागी. एकदा गुरुणीजी (महत्तरा) ना कहेवायी ते वसति शोधवा गद. त्यां चक्रवाना प्रियुनने चुंबनादि पूर्वक कामक्री-मा करते जोश्ने तेणे विचार्यु के “पतियी वियोग पायेकी मने धिकार भे ! अहो ! आ पक्षीओ पण प्रशंसा करवा द्वायकु भे के जेओ साथे रहीने निरंतर कीमा करे भे. अहो ! श्री जिनेश्वरोए आनो सर्वथा निषेध केम कर्यो हशे ? जरुर श्री जिनेन्द्री अवेदी होवायी वेदोदयना विपाकथी अजाएया होवा जोइए.” आवा विचारथी तेणे जिनेश्वरपां अङ्गानदोप प्रागट कर्यो अने दांपत्यसुखनी प्रशंसा करी. पड़ी तरतम पोतानुं साढ़ीपाणुं याद आववायी ते पोताने निंदवा द्वागी के “अरेरे ! मैं माहौ व्रत फोगड खंकित कर्यु ! आ पापतुं प्रायश्चित्त गुरु पासे जड्ने दुःखं.” एम निर्णय करतां वळी विचार आव्यो के “ हुं वाद्यावस्थाथीज इीक्ष-वरते पालनारी राजपुत्री दुँ, तेथी सर्व द्वोकनी समक्ष आ निंदवा द्वायक छुफ-र्मदुँ-झी रीते प्रायश्चित्त लइ जाकुं ? तेम करवायी तो मारी आजमुधीनी जे शी-लभशंसा भे ते नष्ट थाय, माटे अन्यनी साक्षीनुं दुँ काय छे ? आत्मानी साक्षीए जे करवुं तेज प्रमाण भे.” इत्यादि विचार करीने ते साढ़ीए गुरु पासे प्रायश्चित्त द्वीधा शिवाय पोतानी मेलेज प्रायश्चित्त तरीके उच्च, अट्टम, दशम, आंविज्ञ, नी-वी विग्रे अनेक तपस्याओ चैद वर्ष पर्यंत करी ; सोळ वर्ष सुधी मासक्षण ए कर्यो, अने चैद वर्ष मुधी सतत आंविज्ञ कर्यो. एकदा तेणे विचार्यु के “मैं आटझी वर्षी तपस्या करी; पण तेनुं साक्षात् फल तो मैं कांद पण जोयुं नहीं.” इत्यादि

आतिथ्यान करतां ते मृत्यु पामीने एक वेड्याने धेर अति रुपवती दासी घट्टा ते  
रुप जोइने सर्व कामी पुरुषो तेनेज इच्छावा द्वाग्या. पोतानी पुत्रीने जोयो ब्रह्मां पाण  
तेनी कांड इच्छा करतुं नवी, एम जोइने अक्षा रोप पामीने विचारवा द्वाग्यी के  
“आ रुपवती दासीनां कान, नाक अने होउ कापी नांखवा योग्य बे.” तेन रा-  
त्रिए कोइ व्यंतर देवताए ते दासीने उंचमां अक्षाना विचारतुं स्वप्न आएँ, तेथी  
लय पामीने ते दासी प्रातःकाळे न्यांथी जाणी. जमतां जमतां उ मास व्यतीते  
थया त्यारे कोइ गृहस्थाना पुत्रे तेने पोताना घरमां गम्ही. एकदा ते श्रेष्ठीनी पनी-  
ने इर्प्पी आवायाथी तेणे क्रोधवदे ते दासी उंधी गङ्ग हती त्यारे तेना गुणस्थानमां  
झोडानी कोश नांखी, तेथी ते दासी मृत्यु पामी. शेत्राणीए तेना शरीरना डक्क-  
डक्का करीने गीथ विंगे पक्षीओने खबरात्री दीधा. श्रेष्ठीए ते वृत्तांत जाएँयुं ए-  
ट्वे वैराग्य पामीने तरतज चासित्र ल्लीहुं. ते दासी घणा जवमां उमण करीने न-  
रदेव ( चक्रवर्ती ) नुं स्त्रीरत्न घट्ट, त्यांथी परीने ब्रह्मी नरकमां गङ्ग, त्यांथी भान-  
योनिमां उपनी. अनेक वार मरण पामीने निर्धन ग्राव्यणपाणुं पामी. परी अनु-  
क्रमे व्यन्तरपाणुं व्राव्यणपाणुं, नरके गमन, सात जय सुधी पादो, मनुष्य, माछडी  
अने अनार्थ देवमां स्त्रीपाणुं पामी. मरीने ब्रह्मी नरके गङ्ग. त्यांथी नीकळी कुष्ठि  
मनुष्य घट्ट, परी पशु अने सर्प योनिमां उत्पन्न घट्ट, मरीने पांचभी नरके गङ्ग. इत्यादि  
चारे गतिमां परिच्छिमण करीने ते लङ्घणानो जीव पश्चनान स्वामीना वारामां को-  
इक ग्राममां कुबुद्धी स्त्री घशे. तेने तेना मावाप अविनीतपणाने द्वीधे घरमांथी काढी  
मूकशे. परी तेने अरण्यमां भ्रमण करतां कांडक पुण्योदययी श्री पश्चनान प्रज्ञना-  
दर्शन घशे. त्यो ते पोताना कर्म विप्रकर्त्तो मक्ष कर्त्ते, त्यारे पञ्च सर्व वृत्तांत क-  
हेशे. ते सांजळीने ते कुबुद्धा वैराग्य पापो दोक्षा देशे. परी पूर्वना सर्व छुप्तोनी  
आद्योचना प्रक्षिप्तमणा करीने समाधिवद केवळज्ञान पामी सिद्धिपदने पामशे।  
इति लङ्घणा साथी प्रवंधः

आ प्रमाणे शोळसबाहु मुनिए कहेक्षो वृत्तांत संजल्या उतां पण रुपी  
साथी बोली के “हे गुरु ! मारामां कांड पण शाल्य नवी.” आ प्रमाणे कहेवायी  
तेणे मायवर्म फरीने पण स्त्रीपाणुं उपार्जन कर्तुं गुरुए तेने अयोग्य जाणीनि संज्ञे-  
खना ने करावी अने पोते एक मासनी संक्षेखना करी, केवळज्ञान पामीने मोहो गया।

माय मेलवती अनुक्रमे केवळज्ञान पामी मोहे जडे एम घडमान लंगे थे।

रूपी साक्षी विराघक जावे मृत्यु पापी विशुकुमार नीकायमां देवी थइ; त्यांथी चबीने उद्याम अंगवाली अने कामवासनाथी विहळ एवो कोइ ब्राह्मणनी पुत्री थइ, त्यांथी नरकपां गइ, त्यांथी नीकली तिर्यच थइ. एवी रीते ब्रणे उणा द्वाल जब सुधी पस्त्रिपण करीने मनुष्यजनव पापी प्रबज्या ग्रहण करी साहुपणाना गुणने पापी; परंतु पूर्वनी मायाने दीधे त्यांथी काळ करीने इन्द्रनी अथ महिपी (इंद्रिणी) थइ, त्यांथी चबीने ते गोविंदनी स्त्री थइ, अने आ नवपां चारिं पामीने मोङ्के गइ. ” इति रूपी श्रमणी संवंयः

हवे पेक्षी सुज्जसिरि गोविंदना घरमां रहेती हती, त्यांथी तेने द्वोज पमानीने एक आजीरी पोताने धेर लाइ गइ. त्यां दूध दहीं विगेरे खाइने ते मनोहर रुपवाली थइ. तेनो पिता जे सुज्जशिव हतो ते मनुष्य अने पशुनो क्रयविक्रय करतावरे पांच महोर मेल्ली फरतो फरतो एकदा रात्रि रहेवा माटे ते आजीरीने धेर आव्यो. त्यां पोतानी पुत्री सुज्जसिरिना रूपी मोह पापीने घणा छब्बनो व्यय करी तेने परायो. एकदा वे साधुने जोड्ने सुज्जसिरिनां नेत्रपां जल चारायुं. तेनुं कारण तेना पतिए पूछ्युं त्यारे ते बोद्धी के “ मारा स्वामी गोविंदनी पत्नी आवा घणा साहुओने प्रतिज्ञानीने पंचांग नमस्कार करती हती, तेनुं स्मरण थवाथी मने शोक थाय डे. ” ते सांजलीने सुज्जशिवे तेने पोतानी पुत्री तरीके ओलखी अने तेणे पण पोताना पिता तरीके सुज्जशिवने ओलख्यो; तेथी ते वने लजित थया. पडी ते वने अग्रिमां वली मस्तानो निश्चय करी चिता खफकीने तेमां पेत्रा, पण काषु निर्दाहक जातिनां होताथी अग्रि पण शुक्राद गयो. दोकोए तेपनो अत्यंत तिरस्कार कर्यो, एकद्वे तेओ त्यांथी चाद्वी नीकल्या. अनुकमे एक मुनि मल्या, एकद्वे तेनी पासे सुज्जशिवे दीक्षा लीधी. सुज्जसिरि गर्जवती हती, तेथी तेने दीक्षा आपी नहीं. पडी ते गर्जना छुख्या विचार करता द्वागो के “ आ गर्नेने विविध प्रकारना कारादिकना उपाययो पानी नाखुं. ” इत्यादि रौद्रव्यान करती सती प्रसवनी वेदनाथी मरण पापीने उड्डी नरके गइ.

तेना गर्जयी नवा जन्मेत्रा पुत्रने कोइ कूत्राए मुखमां लाइने एक कुंजारना चक उपर मूर्ख्यो. कुंजारे तेने पुत्र तरीके रास्थो. मुसढ तेनुं नाम पामयुं. अनुकमे ते युवावस्था पाप्यो. एकदा ते मुसढे मुनिना उपदेशाथी बोय पापी दीक्षा ग्रहण

करी; परंतु जपतरादिमां तेमन व्रततुं आचरण करवाभां ने क्रियामां शिथिदाचारी थयो, गुह्य तेने थणो। उपदेश आप्यो, तोपण तेणे शिथिद्वपणुं बोझ्युं नहीं, तेवट ते काळ करीने पहेला देवदोक्षमां सामानिक देवता थयो, त्यांथी चबीने ते जरतकेत्रमां वासुदेव थयो, त्यांथी सातमी नरके जड़ने हाथी थयो, त्यांथी अनन्त जापमां उत्पन्न थयो, इत्यादि वहु काळ मुखी जमीने अन्ते ते सिद्धि पामो।” कापमां उत्पन्न थयो, इत्यादि वहु काळ मुखी जमीने अन्ते ते सिद्धि पामो।” आ सुसहनी कथा निशीथ सूत्रमां कहेली डे, ते अहों उंकामां प्रसंगे कहेलामा आवी छे।

“ उत्तम जीवे आङ्गोचना द्वेती वर्षते निरंतर कुठिक्षपणानो अवश्यत्याग करवो, आगमना अर्थने जाणनार पुरुषोए आङ्गोचना देवी तेमन द्वेषी, केसके आङ्गोचनानी इच्छा मात्र पण शुज फलदायक डे। ”

इत्यद्विनपरिमितोपदेशमासादृच्छा विश्वितमस्वंजस्य  
एकलवत्यधिकद्विज्ञानतयः प्रवंधः ॥ २५ ॥

## व्याख्यान २९२ मुं.

—२२—  
आउमा विनय तप चिषे,

चतुर्धा विनयः प्रोक्तः, सम्यग्ज्ञानादिज्ञेदतः ।

धर्मकार्ये नरः सोऽर्हः, विनयाहृतपोऽवितः ॥ १ ॥

जावार्थ—“ सम्यग् ज्ञानादि ज्ञेदे करीने चार प्रकारनो विनय कहेलो ते विनय नामना तपथो युक्त पुरुष धर्मकार्यने चिषे योग्य डे। ”

झानादि ज्ञेदे करीने चार प्रकारनो विनय डे ते आ प्रमाणे—वहुमा पूर्वक झान ग्रहण कर्वूं, तेनो अस्यास करवो, स्मरण कर्वूं, इत्यादि ज्ञानविनय कहेवाय डे ( ? ). आहार नीहार चिंगेरे क्रिया करतां मौन धारण कर्वूं ते झानविनय डे, सामायिक चिंगेरे सकल प्रवचन श्रीनिनेभूरभूत होवाई ते।

कोइ पण जातमो विसंवाद नयी, तेथी यथार्थ वस्तुतत्त्वनो प्रतीतिमां निःशंक धर्म ते दर्शनविनय कहेवाय डे ( ४ ). चारित्रिनुं श्रस्त्रान कर्हुं, तेनुं सम्यक् प्रकारे आराधन कर्हुं, अन्यनी पासे चारित्रिना गुणेनी स्तवना कर्वो अने चारित्रिनुं स्वरूप कंही वतावर्हुं, ए विगेरे चारित्रविनय कहेवाय डे ( ५ ). आचार्य विगेरे गुरुनुं प्रत्यक्ष दर्शन धाय एट्ड्वे तरतज उन्ना धर्म, तेमनी सन्मुख जवं, हाय जो-मवा विगेरे विनय करवो, अने तेमनी गेरहाजरी होय त्यारे पण मन वचन अने कायाना योगे करीने फो बाग्युं अने तेमना गुणनुं कीर्तन तया वार्त्वार स्मरणादि कर्हुं ते उपचारविनय कहेवाय डे. आ संवंधमां पांच कळशी जार वाह-कनी कथा डे ते आ प्रमाणे—

### पंचाख्य ज्ञारवाहक कथा.

कोइ एक गाममां जार वहन करनारा पांचसो मजुर रहेता हता. तेओमां एक मुख्य हतो, ते पांच कळशी अनाजनो जार उपाखतो हतो. तेनामां एवो द्वो-कोत्तर गुण जोड्ने राजाए तेना पर कृपा करीने वर आप्यो के “ ज्यारे तुं जार उपाखीने मार्गमां चाक्षे त्यारे तारी सामे जो रथ, घोमा, गामां, सैन्य अने हाथी विगेरे आवतां होय तो तेने जोड्ने तारे तारो स्वीकार करेद्वो मार्ग डोकीने आघुं पाहुं जवं नहीं, केमके जारथी दीनयेद्वा प्राणीने चाक्षतो मार्ग डोमवो अति छु-प्कर डे. हुं पण तेने दूरथी जोड्ने मार्ग आपीश, तेथी तारे मारो पण जय रात्खवो नहीं, तो पछी दीजानो जय तो शामटेज होय ! आ मारी आङ्गानो कोइ द्वोप करसे तेने हुं शिक्षा करीश.” आ प्रमाणे आङ्गा मळवाथी ते मजुर इच्छा मुजवद मार्गमां चाक्षतो हतो. तेने आवतो जोड्ने सर्व कोइ तेने मार्ग आपत्ता हता, पण तेना पर कोइ रोप कर्हुं नहोतुं. एकदा ते जार उपाखीने मार्गमां जतो हतो, तेवामां तेनी सामे कोइ साहुने आवतां तेणे जोया. तेने जोड्ने ते मजुरे विचार कर्यो के “ मारो जार तो गमे तेद्वो पण परिमित डे, अने आ मुनिए धारण करेद्वा पांच महाव्रत रूपी जार तो अपरिमित डे, ते कोइनाथी कळी शकातो नयी; तेद्व्यो वधो जार उपाखीने ते चाक्षे डे, तेथी एमनी पासे मारुं पराक्रम निरर्थक डे.” एम विचारीने तेणे मुनिने रस्तो आप्यो. ते आप्यो खस्यो एट्ड्वे तेनी पञ्चलना सर्व मजुरोने पण खस्युं पड्युं, तेथी तेओ रोप पामीने बोद्या के “ ते राजानी आङ्गानुं उद्घाष्टन कर्हुं.” पडी तेओए राजाने जाहेर कर्हुं. राजाए तेने बोद्यावीने

पूछयुं, त्यारे ते वोओ के “हे देव ! आपनो आङ्गा जरा पण में संकित करी नथी.” राजाए तेतुं कारण पूछयुं, त्यारे ते फटीथी वोध्यो के “हे राजा ! मारा करतां आ मुनिनो जार अधिक डे, तेथी हुं बाजुपर खस्यो लुं.” राजाए पूछयुं के “तेनापर शो जार डे ?” ते वोध्यो के “हे स्त्रामी ! मेरु पर्वत करतां पण अधिक जारवालं पांच महावतो के जेन वहन करवाने हुं असमर्थ लुं अनें आ मुनि तो ते जारलुं वहन करे डे, अनें तेमां नेत्रस्कुरण जेझो काळ पण प्रमाद करता नथी, हुं तो मात्र बहारनो जार उपाहुं लुं, अने इर्यादि समिति रहित होवायी अनेक जीवोंतुं उभयर्देन करीने अनेक जबोयी पण फुर्मोच्य एवा पापना समूहने वृद्धि पमाहुं लुं. प्रयम में प्रवद्या अंगोकार करी हती, परंतु पांच महावतना जारने वहन करवामां अशक्त थवायी प्रवद्यानो में त्याग कर्यो. आ पांच कलशीनो जार तो हुं सहेजे उपासी शकुं लुं, पण प्रयम स्वोकार करेहा महावत रूपी अन्यंतर जार उपासी शकतो नथी, माटे हुं मार्गपांयी आयो खस्यो, ते में युक्त कर्युं डे.”

**नक्तिजरा नमस्यन्ति, इन्द्रादयो गतस्मयाः ।**

**महावतभराकीर्णान्, तदग्रेऽहं कियन्मितः ॥ १ ॥**

**जावार्थ—**“हे राजा ! महावत रूपी जारने वहन करनारा मुनिओने नक्तियी जरपूर इन्द्रादिक पण गर्वरहित यद्देने नपस्कार करे डे, तो तेवां मुनिनी पासे हुं कोण मात्र लुं ?”

बड़ी हे राजा ! आ मुनि पांच महावतोमांना दरेकने पांच पांच जावना वहे निरंतर निर्वल करे डे, तेमां पहेला प्राणातिपात्र विस्मण नामना व्रतनी पांच जावनाओ आ प्रमाणे डे. यतः प्रवचनसारोक्तरे—

**इरियासमिए लहा सया जाए, उवेह लुंजेज व पाणज्ञोयण् ।**  
**आयाणनिकेव छुगुंच्च संजए, समाहिए संजयए मणोवर्द्ध ॥१॥**

**शब्दार्थ—**“इरियासमितिवाला, तथा सर्वदा जोड्ने पान जोजन करनारा (एपणा समितिवाला), आदान निकैप अनें लुगुप्सा करनारा, तथा समाहित यद्देन पसने अने वचनने नियममां राखनारा यति पहेला व्रतनी पांच जावना जावे डे.”

**विस्तरार्थ—**इरि एट्के गपन करवू ते, तेमां समिति एट्के उपयोगं राखनार,

समस्त जीवोनी हिंसाना त्यागने माटे ईर्यासमित थवुं ते पहेळी जावना; तथा सर्वदा सारी रीते उपयोग राखीने इक्कण पूर्वक ( जोइने ) पान अने जीजन ग्रहण करवुं अथवा बापरवुं ए बोजो जावना ; आदान निक्षेप एट्टेपे पात्रादिक प्रमाणिना पूर्वक ग्रहण करवां अथवा मूकवां ते, तथा अगममां जेनो निपेथ कर्यो होय तेनी जुगुप्सा ( निंदा ) करे—योते न आचरे ते बीजी जावना; तथा साहु समाहित एट्टेपे सावधान घड्ने मनने दूपण रहित प्रवतार्व, केमके मन दूपणवाळुं होय तो कायसंझीनता विगेरे कर्या उतां पण ते कर्मवंध माटे थाय भे. प्रसन्नचंद्र नामना राजपिंए मनोगुप्ति राखी नहाँ, तेथी कायावरे हिंसा नहाँ कर्या उतां पण मनथी सातमी नस्कने योग्य कर्म वांश्चुं हतुं एम संजलाय छे, माटे मनने निधमाँ राखवुं ए चायी जावना. तेवीज रीते वाणी पण दूपण रहित बोझवी के जेथी हिंसा थाय नहाँ, ते पांचमी जावना.

बीजा असत्यविरमण व्रतनी पांच जावना आ प्रमाणे छे—

अहस्स सच्चे अणुवीय ज्ञासए, जे कोह लोहं ज्ञयमेव वज्जए ।  
से दीहरायं समुपेहिया सया, मुणी हु मोसं पन्निवज्जए सिया ॥२॥

शास्त्रार्थ—“ जे हास्य रहित सत्य बोझे, विचारीने बोझे तथा क्रोध लोज अने जयनो त्याग करे ने मुनि दीर्घरात्रने सदा जुए छे, माटे मुनिए सर्वदा असत्यनो त्याग करतो.”

विस्तरार्थ—हास्यनो त्याग करीने सत्य वाणी बोझवी, केमके हास्यथी कदाच असत्य पण बोझाय भे ते पहेली जावना. १. विचारीने एट्टेपे सम्यक् झान पूर्वक विचार करीने बोझवुं ; वगर विचारे बोझनार कोइ वार असत्य पण बोझी जाय भे, अने तेथी पोताने वैर, पीभा थिंगेरे प्राप्त थाय छे, तथा जीवहिंसा पण थाय छे ते बीजी जावना. २. तथा जे क्रोध<sup>१</sup>, लोज अने जयनो त्याग करे ते मुनि दीर्घरात्र एट्टेपे मोझने पोतानी समीपे जुए भे; माटे हंमेशां असत्यनो त्याग करवो. क्रोधादिक त्याग करतालुं तात्पर्य ए भे के—क्रोधने आधीन थयेद्वा माणेस ज्योरं बोझे भे त्यारे तेने स्वपरनी अपेक्षा रहेती नयी, तेथी ते जेम तेप बोझतां असत्य पण बोझे भे, माटे तेनो त्याग करवो थेष्ट भे. ३. लोजने आधीन

<sup>१</sup> क्रोधादिकना लागनी त्रण भावना मर्दीने पांच थाय छे.

थयेक्षो माणस पण अत्यंत धनना लोकवी साक्षी पूर्वा विंगेरथी । असत्य चोङ्गे डे, माटे तेनो त्याग करवो । ४. तथा जपनीत माणस पोताना माणादिकुं रक्षण करवानी इच्छाथी सत्यवादीपणानो त्याग के डे, माटे पोताना आत्मामान निरंतर निर्जयता धारण करवी । ५.

बीजा अदत्तादान विमण व्रतनी पांच ज्ञायना आ प्रमाणे डे—

सयमेव उग्रह जायणे घडे, मळमं निसम्म स जिखु उग्रहं ।  
अणुन्नविय चुंजिय पाणनोयण, जाह्न्ता साहंमियाण उग्रहं॥३॥

शद्वार्थ—“सायु पोतानी जातेज ‘अवग्रहनी याचना करे, पडी मतिमान एवो ते सायु (योग्य) चेष्टा करे, अवग्रहनी आङ्गा सांजलीने तेपां रहे, पान अने चोमन आङ्गा लङ्घने करे, तथा साधर्मिक पासे अवग्रहनी याचना करीने निवास करे’ ।

विस्तार्थ—बीजानी साये कहेयमाआ विना पोतेज सायु जगवंतनी आङ्गा प्रमाणे इन्द्र, राजा, शृहपति, शाय्यातर अने साधर्मिकना चंद्रवाला पांच प्रकारन अवग्रहनी याचना करे; अन्य माणस पासे याचना न करवे, कारणके जे स्वामी न होए तेनी पासे याचना करी होय ने स्वरा स्वामी पासे याचना न करी होय तो परस्य विशेषादिक दोषो मास थाप डे ( ? ). पडी ते आङ्गा लीवेज्ञा अवग्रहमां तृणादिक ग्रहण करवा माटे मतिमान सायु चेष्टा एट्झे यत्न करे, अर्थात् अवग्रह आपनारु आङ्गावचन सांजलीने तृणादिक पण वापरे; आङ्गा विना वापरे तो अदृत्तं ग्रहण कर्यु कहेवाय ( ४ ). तथा सायुए सर्वेश अवग्रहनी स्पष्ट मर्यादा पूर्वक याचना करे, अर्थात् स्वामीए एकवार अवग्रह आप्या उर्ता पण वारंवार मात्रुं विगेर पठववाना कार्यमां अवग्रहनी याचना करे ( ५ ), गुरु विंगेरनी आङ्गा लङ्घने पान जोगन विगेर वापरे, अर्थात् जे कांडचीजवापत्ती ते सर्व गुरुनी आङ्गा पूर्वकज वापरवी जोइप, नहीं तो अदृत्त जोगव्यानो दोप लागे डे ( ६ ). सरखों धर्म तुं जे आचरण करे ते साधर्मिक कहेवाय छे, अर्थात् एकज शासनमां वर्तनारा संवेगी सायुओ. तेमणे प्रथमयी ते स्थान याचना पूर्वक ग्रहण कोलुं होय तो तेमनी पासे मास विगेर अवधितुं तथा पंचकोशादि कुंत्रमुं मान करीने रहेवा माटे मागी लेवूं. तेमनी आङ्गायीज उपाश्रय विंगेरे सर्व ग्रहण कर्युं, नहीं तो अदृत्त नो जांगो लागे डे.

हृषे चोथा ब्रह्मचर्य व्रतनी पांच ज्ञावना आ प्रमाणे देः—

आहारयुक्ते अविज्ञासियप्पा, इत्थि न निष्ठाय न संथवेजा ।

बुद्धे मुणी खुद्दकहुं न कुज्ञा, धर्माणुपेही वंजचेर संधए ॥४॥

**शब्दार्थ—**“ आहारनी गुसि करे, पोताना देहने अविज्ञूपित राखे, ही-  
ने जुए नहीं, हीनी प्रशंसा अववा परिचय करे नहीं, अने बुद्धिमान मुनि कृष्ण  
कथा करे नहीं, तो ते धर्मानुभेदी मुनि ब्रह्मचर्यने वरावर धारण करे ते  
एम जाणेवुं. ”

**विस्तरार्थ—**आहारनी गुसि राखवी, एट्ट्वे स्तिथ जोजन करवुं नहीं  
तेमज अतिमत्र जोजन करवुं नहीं, केमके तेथी घातु पुष्ट थवार्थी वेदनो उदय  
थार्य अने तेथी करीने कडाच ब्रह्मचर्यतुं खंडन पण थाय ( ? ), अविज्ञूपितात्मा  
एट्ट्वे शरीरने स्नान विलोपन विगेरे विविध प्रकारनी विज्ञपार्थी रहित राखवुं  
( ? ), हीने अने तेना अंगोपांगोने पण जोवां नहीं ( ? ), हीनी प्रशंसा करवी  
नहीं, तथा तेना परिचय पण कस्तो नहीं ( ? ), तथा बुद्धिमान एट्ट्वे तत्त्वने जा-  
णनार मुनिए कृष्ण एट्ट्वे अपशास्य एवी त्वीकथा करवी नहीं ( ? ), आ पांच  
ज्ञावनाथो जेनुं अंतःकरण ज्ञावित थयुं देः, एवो धर्मानुभेदी एट्ट्वे धर्मना आसे-  
वनमां तत्त्व साधु ब्रह्मचर्यने धारण करे देः, अर्थात् ते व्रतने पुष्ट करे देः.

पांचमृ महाव्रतनी ज्ञावना आ प्रमाणे देः—

जे सहरुवरसंघमायए, फासे य संपत्पमणुसपावए ।

गेही पठसं न करेज्ज पंडिए, से होइ दंते विरए अकिंचणे॥५॥

**शब्दार्थ—**“ जे साधु मनोङ्क ने अमनोङ्क एवा आगंतुक शब्द, रूप, रस  
अने गन्ध ए चार तथा स्पर्श भळी पांच प्रकारना इन्द्रियना विषयोने पामीने तेना  
पर शृंखि के प्रदेष करे नहीं ते पंक्ति, जितेन्द्रिय ने सर्व सावद्य कर्मयी विरक्त एवो  
साधु अकिंचन एट्ट्वे परिव्यह रहित कहेवाय देः. ”

**ज्ञावार्थ—**“जे साधु शब्द, रूप, रस, गन्ध ए चार प्रकारना आवता एवा  
इन्द्रियना विषयो प्रत्येतेमज स्पर्श प्रत्ये—मनोङ्क अने अमनोङ्क—इष्ट अने अ-  
निष्ट एवाने—पामीने तेनापर शृंखि ते मूर्डी अने प्रदेष ते देष यथाक्रमे न करे,  
अर्थात् इष्ट विषयोने पामीने शृंखि न करे अने अनिष्टने पामीने देष न करे ते

मुनि दांत, जितेन्द्रिय, सर्व साधय योगधी विरत अनेक अकिञ्चन—निश्चयिही धाय हे. पांच प्रकारना विषयो संबंधी अन्नियंगने प्रदेष एट्टेख राग ने झेय तजी देवो ए पांचमा व्रतनी पांच जायना जाणवी.

आ प्रमाणे दरेक व्रतनी पांच पांच जायनाओ भलीने पचीन जावना जाणवी. इत्यादि अनेक युक्तियी महाव्रतनो जार उपायो छुफ्कर हे.

पंचाल्य नामना मजुर पासेथी आ प्रमाणेनी हकीकत सांजलीने रात्रे बोद्धो के “हे पंचाल्य ! तु महा पराक्रमी हे. आट्टेखा पांच कलशीनो योग्य जार वहन करे हे, महा कष्टनो अनुज्ञव करे हे, उत्तो ते र्घन महाव्रतनो त्याग ज्ञापांतर करो ? कम्के तेमां कांड जार नयी, आ व्रत तो मुख्यवी निर्वाह घट जाके तेवो हे, मने तो तेमां कांड पण छुफ्कर जणानु नयी.” ते सांजलीने पंचाल्य बोद्धो के “हे स्वामी ! आपे घणी वार इन्द्रियोने योग्य एवा विषयो ज्ञापाव्या हे, हाँ आपना पुनरेव राज्य साँपीने मुनिने योग्य एवुं संघर्ष एकज, द्विवसने माटे अंगीकार करो, अनेतेने योग्य क्रियाअनुष्टान करो.” आ प्रमाणेना पंचाल्यना वचनवीते अन्निपानी राजा व्रतने माटे लघ्यमी थयो. ते वात जाणीने तेनी राणी औ बोस्ती के “हे प्राणनाथ ! अपे तमारुं पम्हुं एक क्राण पण बोक्कुं नहीं, तमारा विना अपे कोऽ पण वस्तुधी रनि पाम्हुं नहीं. वली मनोहर-रमणिक कामिनीना जो गने योग्य एवुं आ तमारुं शरीर अंत, प्रांत अने तुच्छ आहारादिक वावीज मकारना परीपहो सेववाथी नाशा पाम्हो, ते वरवते पञ्ची तपेन निरंतर पथात्ताप थयो; कम्के छुःख जोगक्कुं ते सहेद्धुं नयी. हे नाथ ! जोके हमणां तमे निःस्पृह अनेत्रिकाळ परवस्तुने नहीं इच्छनारा एवा मुनिना गुणोनी तिरस्कार करवा माटे अहंकारने दीधि आ कार्य करवा इच्छो गो पण ते युक्त नयी; केम्के ते कार्य तो सम्ब्र प्रकारना दर्प, दंज अने गर्ववी रहित एवा पुरुषोंग करी जाके हे.” इत्यादि सांजलीने राजा बोद्धो के “अहो ! आ अति छुफ्कर कार्य में अहानवीज चित्तव्युं, केम्के ज्यारे सर्वथा निराशो जाव प्राप्त थाय हे, त्यारेज ते व्रतने योग्य स्व-जाव ( आन्म जाव ) प्रगट थाय हे.” पञ्ची राजाए ते जारवाहक मुख्यने कम्पु के “समस्त पुद्गलनी आशा रहित एवुं मुनिपणुं अनुम जीवोने एक द्विवस पण फरसी जाक्कुं नयी.” पंचाल्य बोद्धो के “हे राजा ! ते मुनिए योवन अवस्था उत्तो पण मत्यक् प्राप्त थयेद्धुं कांचन, कामिनी अने राज्यकुं मुख तड़ान मात्रनी जेम

बोकी दृश्ने जीवन पर्यत संयमनो जार वहन करवानु स्त्रीकार्यु डे, अने तेज प्रमाणे ते छेष्टा भासोच्छास मुधी पाद्धन करशे। में पण श्री मुमुक्षु (तीर्थकर) प्रणीत स्याद्वाद आगमनां वचनोने सांजलीने महाव्रत ग्रहण कर्या हतां परंतु हुं तो तेमां नपुंसक बळ्ड जेवो थइ गयो। हाथीनो जार तो हाथीज उपामी शके, गधेमो उपामी शके नहीं। वली विश्वमां आ समग्र पृथ्वी, समुद्र, पर्वत अने दृढ़ो विगे-रेनो जार उपामामां समर्थ एवा केद्वाक पुरुषोने सांजलीए डीप; पण आ महा व्रतनो जार वहन करवामां तो ते क्षमावान मुनिन समर्थ डे एम हुं मानुं दुं; ते मादेज हे राजा ! हुं मार्गमां तेने विनयथी नम्यो दुं, तथा तेनी प्रश्नसा पण तेष्वा माटेज करी डे। ” आ प्रमाणे पंचाख्यनां वचनो सांजलीने राजा विगेरे सर्वे जैन मुनितो विनय करवामां तत्पर थाया, अने पंचाख्यनी आवी बुद्धिथी रंजित थयेद्वा राजाए तेने प्रोतानो हजुर सेवक करीने राख्यो, अने तेनी पासे निरंतर धर्मकथा श्रवण करवा द्वाय्यो,

“ आ जारवाहके जोके दुखे धारण करी शकाय तेवा चारिना गुणोनो ल्याग कर्या हतो, तोपण तेण राजादिके धर्मना रागी कर्या, तेरु कारण ए के सर्व गुणोना मोदा जाइ समान विनय गुणने तेणे बोड्यो नहोतो अने तेज गुणधी ते परिणामे सर्वोत्तमपणुं पामशे। ”

इत्यद्विनपरिमितोपदेशमासादवृत्तौ विश्वितमस्तंजस्य  
द्विजवत्यधिकद्विशततमः प्रवंधः ॥ शृणु ॥

### व्याख्यान २९३ मुं.

पुनः विनयनुंज वर्णन करे डे।

वाद्यान्यन्तरनेदान्यां, द्विविधो विनयः स्मृतः ।

तदेकैकोऽपि द्विजेदो, द्वोकद्वोकोत्तरात्मकः ॥ १ ॥

जावार्थ—“ वाद तथा अन्यन्तर नेदवके विनय वे प्रकारनो कहेद्वो डे, ते धाद तथा अन्यन्तरना पण द्वोक अने द्वोकोत्तर एवा ववे ज्ञेद डे। ”

वंदन कर्वु, वचनधी स्तुति करवी, उज्जा थर्वु, सन्मुख जर्वु, ५ यिं  
बाय विनय कहेवाय डे ; अने अन्तःकरणीयी वंदनादिक कर्वु, ते अन्यन्तर वि-  
नय कहेवाय डे. आ वे प्रकारना विनयना चार जांगा थइ शके डे, ते आ ५  
माणे—कोइ प्राणी पात्र बाय विनय देखोक डे, पण अन्यन्तर विनय होये  
नथी. श्रीतत्त्वाचरिती जेम ( ? ). कोइ प्राणी अन्यन्तर विनय करे डे, पण  
बाय विनय करतो नथी ; सातमा देवझोकना देवतानी जेम. ते विषे पांचया अ-  
गमो कर्यु डे के—सातमा देवझोकना देवोए श्रीमहावीरसामीने जावधी वंदन  
करीने मनवरेज प्रभ कर्यो, तेथी प्रकृत पण “ पारा सातसो शिष्यो पांक पावो ”  
एवो उत्तर आप्यो, ते बाहते संदेह उत्तम थवार्थी गौतम विगेरे मुनिओए सा-  
मीने पृथ्वी के “ हे जगवन् ! आ देवोए बाय विनय केम न कर्यो ! ” त्योरे म-  
ज्ञुए अन्तर जक्कियी पृथ्वी प्रश्नादिकतुं सर्व उत्तान्त कर्यु, ते साजडीने तेजो  
विस्मय पास्या ( ? ). कोइ प्राणी अतिमुक्तक ऋषिनी जेम घेबे प्रकारनो वि-  
नय करे डे ( ? ). तथा दोइ प्राणी गोप्यामाहिष्म अने मंखझीपुत्र विगेरेनी जेम  
वेपांची एक प्रकारनो विनय करतो नथी ( ४ ).

आ वेळे प्रकारना विनय हाँकिक तथा झोकोत्तर जेदे करीने वेळे प्रकार-  
ना डे. तेमा पिता विगेरेने विषे बाय विनय करवो ते हाँकिक बाय विनय कहेवाय  
डे, अने ते पिता विगेरेने विषे आंतर प्रीतियी वंदन, अन्युत्थानादिक करवो, ते  
हाँकिक अन्यन्तर विनय कहेवाय डे. झोकोत्तर एवा जैन पार्गमो रहेसा आचा-  
र्यादिकनो अन्युत्थानादिक बाय विनय करवो, ते झोकोत्तर बाय विनय कहेवाय  
डे, तथा ते आचार्यादिकतुं अंतरंग प्रीतियी विधि वंदनादिक वेद ध्यान कर्वु ते  
झोकोत्तर अन्यन्तर विनय कहेवाय डे.

वीजा सर्व गुणोची भ्रष्ट थया उत्तां पण जो विनयवालो होय तो ते ५  
मे पापी शके डे. कर्यु डे के—

**अन्यैर्गुणः प्रच्छयोऽपि, यथस्ति विनयो दृढः ।**

**नूयो गुणानवाप्नोति, अर्हन्नकनिदर्शनम् ॥ १ ॥**

जावार्थ—“ वीजा गुणोची भ्रष्ट थया उत्तां पण जो विनय गुण दृढ-  
य तो ते फरीधी पण अर्हन्नकनी जेम गुणने पाये डे. ”

### अर्हन्नक मुनिनुं दृष्टान्त.

तगरा नामनी नगरीमां इत्त नामे आवक रहेतो हहतो. तेने जडा नामनी पत्नी साथे पांच इन्द्रिय संबंधी मुख जोगवतां अर्हन्नक नामनो पुत्र थयो. एकदा अर्हन्निमित्र नामना सूरि पासे आर्हत धर्म श्रवण करीने वैराग्य पोमझा दत्ते पोतानी त्वी अने पुत्र सहित दीक्षा ग्रहण करी. इत्त मुनि सारी रीते क्रियायुक्त छतां पण “ आगळ जतां मारो पुत्र संयमनुं पाक्षन करशे ” एम धारीने तथा पुत्र उपरना वात्सल्यने लीधे उत्तम जोजन लावी लावीने पुत्रनुं पोषण करता हहता, कोइ पण बखत पुत्रेने निक्षा लेवा मोक्षज्ञता नहीं. ते जोइने वीजा साधुओ “ आ चाल साधु समर्थ छर्तां पण तेनी पासे जामाटे निक्षा मंगावता नथी ? ” इत्यादिक मनमां विचार करता, पण तेने काँइ पण कही शकता नहीं. केमके पुत्रनुं पिता पाक्षन करे तेमां कोए नियेद करी शके ? पठी केट्क्षेक काले दत्त मुनि उनालाना समयमां समाधियी मरण पाम्या. तेना वियोगधी अर्हन्नक साधुने महा छुख प्राप्त थयुं. पिताना विरहथी छुखी धयेज्ञा तेने वीजा साधुओए वे त्रण दिवस मुखी तो आहार लावी आप्यो. पठी तेओए अर्हन्नकने कहुं के “ हवे तुं पोतेज निक्षा माटे अटन कर. तारा पितानी जेम हवे हंमेशां कोइ लावीने तेने आहार आपशे नहीं. ” आ प्रमाणे कर्णमां सीर्षु रेड्या जेवुं बचन सांजळीने अर्हन्नक खेदयुक्त थइ वीजा मुनिओनी साथे निक्षा माटे चास्या. पूर्वे कोइ पण बखत तेणे जरा पण श्रम लीधो नहेतो, अने शरीर अत्यंत मुकुमार हहुं, तेथी ग्रीष्म क्षतुना सूर्यनां उग्र किरणोथी तेवज्जी धूलमां चाक्षवाथी तेना पण दाऊवा लाग्या, माझुं पण सूर्यनां किरणोथी तपी गयुं, अने तुपा क्षागवाथी मुख पण सूकाइ गयुं. तेवी रीते चाक्षतां ते अर्हन्नक मुनि वीजा साधुओथी पात्रल रही गया, एड्क्षे विश्रामने माटे कोइ एक गृहस्थना महेज्ञनी भायामां उजा रहा. त्यां उजा रहेला कामदेव समान आकृतिवाला तेने चंडना जेवा मुखवाळी अने जेनो पति परदेश गयेज्ञो हहतो एवी ते घरनी माक्षेक त्वीप दीउ. ते वाल मुनिने जोइने तेणे विचार्यु के “ अहो ! शुं आनुं अपूर्व सौन्दर्य छे के जे जेवा मात्रथीज यारा मननुं आकर्षण करे छे ! माटे आ मुवाननी साथे विज्ञास करीने मार्ह यावन सफल करुं. ” एम विचारीने तेणे ते साधुने बोलावा माटे दासीने मोक्षी. दासीए तेने बोलाव्या, एड्क्षे ते पण तेना घरमा गया.

तेन आवाता जोहने हर्षना जारयो जेना कुचकुंज प्रफुल्लित थया ते एवी ते सौ तेनी सामे आवी, अने हासयो मिथित थयेजा दांतनां किरणीयी अंयोग्येके जस्ती करती तथा नेवने नीचो राखीने बांको दृष्टियो कदाक करती ते स्त्रीए ते शूद्रयुक्त के “ हे ग्राणना जीवन समान ! तम शुं मागो ओ ? ” त्यारे अर्हब्रह्म मुनि पूछ्युँ के “ हे ग्राणना जीवन समान ! तम शुं मागो ओ ? ” त्यारे अर्हब्रह्म मुनि वोह्या के “ हे सरा ज्ञोचनशाळी कामदेवनी प्रिया ! हुं जिका माणु ते ” ते सांनदीने तेणे विचार्यु के “ आ साहुने हुं कामदेवने उद्दीपन करनां औपयोगी मिथित, स्तिग्र, मधुर अने जोवा मात्रयोज विकार उत्तम करतां आहार आवीने वश कहे. ” एम विचारीने तेणे मनोद्धर एवा धणा वोदक तेन आप्या, ते पण पर्युन करवायी भजानि पाप्या हता, तेयो आवा सुंदर योद्ध भजवायी धणो हर्षे पाप्या. पठो ते स्त्रीए स्नेहयुक्त दृष्टियो जोतां जोतां तेन पूज्य के “ हे युवान ! मारा अंगांपो व्ययेजा कामविकारना तापसमूहनुं निचारण करवामां सर्वय, तथा कद्दलीना स्तंन जेवी कोमळ जंगवाळी अने मालपाता जेना सुकुमार अंगवाळी कमनीय कामिनीओए सुहा करवा योग्य एवुं आ योद्धन पापी ने जापाटे परीषहस्ती कुउरखदे बूझनी जेप आ प्रफुल्लर्यवन स्वपी वानु तु बन्धुवत करो ओ ? ब्रत ग्रहण करवानो आ सप्त नयी, केहजाएक स्त्रीमुखनी द्वाजसावलां जीवो कुधा तृपादिक कष सहन करे ब्रे, आनुर रथा करे डे; तोपण तेबोने रसने पण तेवा मुखनी मामि दुर्लभ जणाय डे, तपने तो तेवुं मुख आत्यरे अनापासं पाप थयुं डे, पटे आद्या दिवस पाज्जन करद्वा ब्रतनुं आ प्रत्यक्षज फल प्राप्त थयुं डे एम जाणो, बढी

**कुरुपद्मःस्यस्थविरक्कशांगजनोचिताम् ।**

**इमां कषक्रियां सुच, मुधा स्वं वंचयस्व मा ॥ १ ॥**

“ कुरुप, दुख्ली, बुद अने कठोर अंगवाळा जनोने योग्य एवी आ करती क्रियाने मूकी थो; फोगट तपारा आत्माने उतरो नहीं. ”

बढी आपणा बेउनुं रूप अनेन शरीर अन्येन्यना संगमधी आंग सफ पणाने पापो, जो कदाच तपने दीक्षार्मी अत्यंत आग्रहज होय तो जोग जोग पडी, दृष्टावस्थामां फरीधी दीक्षा ग्रहण करजो. ” आ प्रमाणेनो तेनां वं सांजलीने तथा तेना हातजाव जोहने अर्हब्रह्मकुं मन ब्रत उपरथी जप्ते थइ कस्युं डे के—

दृष्टाश्चित्रेऽपि चेतांसि, हरन्ति हरिणीहृशः ।

किं पुनस्ताः स्मितस्मेरविद्वमन्त्रमितेक्षणाः ॥ १ ॥

ज्ञावर्थ—“ मृगजीना सखा नेत्रोवाली स्त्रीओ भात्र चित्रमां जोइ होय तोपण ते चित्तनुं हरण करे डे, तो पड़ी हास्यथी प्रफुट्टित अने विद्वासथी ब्र-मित एवं नेत्रोवाली स्त्रीओने साक्षात् जोवाथी चित्त हरण करे तेमां शुं कहेदुं ! ”

पड़ी तेनुं वचनं अंगीकार करीने अर्हन्त्रक तेनाज घरमां रहो, अने अत्यंत आसक्त थयेक्षी ते स्त्रीनी साथे स्वेच्छापूर्वक कामकीमा करवा द्वाग्यो.

अर्हीं सर्वे साधुओ गोचरी दृष्टे उपाथये आव्या, पण अर्हन्त्रकने जोयो नहीं, तेथी तेमणे तेनी शोध आखा शहेरमां करी, पण कोइ ठेकाणे तेनो पत्तो द्वाग्यो नहीं, तेथी तेओए ते वृत्तांत तेनी पाता के जे साध्वी थयेक्षी हत्ती तेने कहो. ते सांनलीने साध्वी पुत्रपरना अति रागांधपणाथी पुत्रोगक्षेत्रे जाणे तेना शरीरमां जूत पेहुं होय तेम वेनान जेवी अने उन्मत्त जेवी थइ गइ, अने “ हे अर्हन्त्र ! हे अर्हन्त्र ! ” एम उंचे स्वरे गदगद् कंठे विद्वाप करती शहेरना सर्व चौदा अने जेरीओमां जमवा द्वागी. मोहर्थी धेज्जो बनेद्वी ते पगडे पगडे स्खद्वना पा-मती, नयनमांथी पक्षतां आंसुनी धाराथी मार्गानी धूलने आर्ज करती, अने जे कोइ सामुं मळे तेने “ मारो प्राणथी पण मिय पुत्र अर्हन्त्रकने तमे क्यांइ पण जोयो डे ? ” एम चारंवार पूछती ते आखा नगरमां अटन करवा द्वागी. तेनी आवी उन्मत्त अवस्था जोइने सज्जन पुरुषोने अनुकंपा आवती हत्ती अने छुर्जनो तेनी मळकरी करता हता. एकदा महेद्वनी वारीमां बेतेला अर्हन्त्रके तेने दीड़ी. तेनी तेवी उन्मत्त स्थिति जोइ तेने ओळखीने अर्हन्त्रक विचार करवा द्वाग्यो के “ अहो ! मारुं केवुं अविनयपणुं ! अहो ! मैं केवुं छुर्कर्म कर्युं ! क्रणिक मुखने माटे मैं आ-स्त्रीना वचनथी मुक्तिना मुखने आपनारा ब्रतनो त्याग कर्यो, अने आवा छुसह कण्मां मारी माताने नांसी. द्वांकिक शास्त्रमां अमसत तीर्थो करतां पण माताना विनयनुं फळ अत्यंत कहेदुं डे. तेमां पण आ मारी माता तो जैनर्धमह होवाथी अने चारित्र अंगीकार करेद्वी होवाथी विशेषे करीने पूज्य डे. हा इति खेदे ! चारित्रनो जंग करीने मैं मारा आत्माने जबसागरमां नांख्यो, एंदुंज नहीं पण आ मारी माताना महावतनो द्वोप थवामां पण हुंज सहायज्ञत थयो. अहो ! परंपराथी मारा पापमां केव्वी वर्धी दृप्ति थइ ? आ चंडबद्ना स्त्रीए प्रारंजमां

मिट्ठ द्वागे तेवुं वहारथी सुंदर पण परिणामे अनन्त छुःख आपनार हाव जावादि रूप विषयुं मने पान कराव्युं. तेना द्वावएयने, सुंदर वेपने अने निपुणताने धिकार डे ! आनी सर्व चतुराइ केवळ नरकनेज आपनारी डे. हे चेतन ! हवे लार माटे वे मार्ग डे. एक तो आ चंद्रमुखीए वतावेद्वो पाप मार्ग अने वीजो आ आर्याए वतावेद्वो पुन्य मार्ग. आ वे मार्गमांथी जे कल्याणकारी होय तेनु आचरण कर. पण अत्यरे तो मारे मारी छुःखी माताना शोकनु उभ्यून करवुं योग्य डे.” एम विचारिने अर्हन्नक एकदम ते घरमांथी वहार नीकल्यो. तेनी पाडळ ते चंद्रमुखी पण एकदम आवीने विरहना विज्ञाप विगेरे अनेक प्रकारना अनुकूल उपसर्ग करती बोझो के “ हे निर्दय ! हमणा तने खीहत्यानुं पाप द्वागारे. हे कठोर ! शामाटे मने वृक्षना शृंग उपरथी पासी नाखे डे ? शामाटे मने छुःख रूपी चितामां होमे डे ? शामाटे माझतीना पुष्पनी माळा जेवी कोमळ, सुंदर अने अकुटिङ्ग एवी मने तजे डे ? मने रसीझी वनावीने हवे विस केम करे डे ? ” आ प्रमाणेनां तेनां वचनो सांजलीने अर्हन्नक बोध्यो के “ हे पापसमुद्दे ! कणिकमुखने मादे आवा फोगट विज्ञापे शामाटे करे डे ? पहेलां हुं अङ्गानशस्त हतो, तेथी तें मने विज्ञासमां पासी नांद्यो, अने में त्रण द्वाकने अद्वितीय शरण रूप परमात्मा-ना धर्मने दूषित कर्यो. हवे अहों रहेवुं मने योग्य नथी. आ मारी माताने धन्य डे, के जेणे मने विवेकमार्ग देखाव्यो. संसारमां पक्षवाना मार्ग वतावनार तो छुनियामां घणा देखाय डे, परंतु जवसागरमां पक्षेद्वानो उच्चार करवामो ने तेने पवित्र करवामां समर्थ तो मारी माता समान बीजुं कोइ नथी. हवे जीवन पर्यन्त इच्छनी अग्रमहिपीनुं सुख मळे तो तेने पण हुं इच्छतो नथी, तो पडी मनुष्यजातिनी खीना सुखनी इच्छा तो शेनीज करुं ? मन वचन कायाए करीने में सर्व संसारसुखनो त्याग कर्यो डे.” इत्यादि कहीने पडी द्वजा सहित विनययुक्त पोतानी माताने नमीने ते बोध्यो के “ हे माता ! आ तपारा कुळमां अंगारा जेवो अर्हन्नक तमने नमे डे. ” एम कहीने नेत्रमां अथु द्वावीने ते माताने नम्यो. तेने जोझने ते माता स्वस्थ चित्तवाळी घड सती हर्षथी बोझी के “ हे पुत्र ! आद्वा दिवस तुं क्यां रहो हतो ? ” त्यारे अर्हन्नके दंजरहितपणे पूर्व अन्यास करेद्वा प्रशस्त धर्मरागथी अनंतगणा शुञ्ज धराग्ययुक्त अध्यवसायवाळा यद्दने पोतानुं सर्व वृत्तान्त य-कही आप्युं. ” ते सांजलीने माता बोझी के “ हे वत्स ! हवे तुं फरीधी

चारित्र ग्रहण कर. ” ते वोद्ध्यो के “ हे माता ! हंसेशां संयमक्रियातुं पाद्मन करवुं मने छुप्कर ल्लागे डे. निरंतर सुन्नतादीश दोप रहित आहार ग्रहण करवो, एक निमेप मात्र पण प्रमाद करवो नहीं, ‘ करेमि जंते ’ ना उच्चार समययी आरं-जीने प्राणांत समय सुधी अतिचार रहित चारित्रातुं पाद्मन करवुं. इत्यादि साहुनी समग्र क्रिया निरंतर करवा हुं शक्तिमान नव्यी. हुं महा पापी हुं, तेथी ब्रतनुं पाद्मन करी शक्तीश नहीं, तेथी हे माता ! जो तपारी आङ्गा होय तो हुं अनशन ग्रहण करुं. ” ते सांजलीने जडा सांबी हृष पापी सती वोद्धी के “ हे जड ! आ समये अनशन पण तारे माटे योग्य डे; अनंत जव ड्रमण करवामां निमित्तरूप ब्रतनंग योग्य नव्यी, परंतु तुं आवा स्वृप्य मात्र पंच महाब्रतनुं पाद्मन करवामां उद्घेग पापे डे, तो अनशन पाळवुं ते तो महा छुप्कर डे. योग्य माणसनेज ते अ-नशन प्राप्त थाय डे. तुं तो शुन अने अशुन पुढगळोने जोळेने राग अने विराग धारण करे डे, माटे हमणा तो तारो विश्वास झानीना वचनव्यी आवशो, ते विना आवशी नहीं. ” अर्हन्बक विचारवा ल्लाग्यो के “ खरेखर मातानो राग मारा पर अत्यंत डे. ” पडी मातानी परीक्षा करवा माटे ते वोद्ध्यो के “ हे माता ! हमणा योजा दिवसना मारा विरहव्यी तमे आवी छुःखी अवस्था पाभ्या, तो अनशनव्यी ते मारा जारीरनो सर्वथा नाश थजो, ते व्यथा तमे झी रीते सहन करशो ? ” जडा वोद्धी. “ हे पुत्र ! तुं सत्य कहे डे. परंतु एक वात कहुं ते सांजल. तारा विरहव्यी छुःख पापीने में विचार्यु हतुं के “ मारो पुत्र धर्म कर्या विना इन्द्रादिक-ने पण छुर्वीन एवा संयम रूपी रत्ननो त्रुणनी माफक त्याग करवो तो संसारनां महा छुःखो पापशो; तेथी तेने हुं तत्काळ वोध करुं. ” ते सांजलीने अर्हन्बक वो-द्ध्यो के “ हे माता ! तमे आ द्वोक्षमां अने परद्वोक्षमां वक्षेमां सुखदायी थया डे. वधोरे शुं कहुं ! तमे मारो सम्यक् प्रकारे उद्धार कर्यो डे. प्रथम तमे मने जन्म आपनार थया, अने पडी अनंत जन्मनो नाश करनार धर्म आपनार थया. ” इत्या-दि मातानी स्तुति करीने शुरु पासे जड तेणे फरीथी चारित्र ल्लाग्युं. पडी झा-नीना वचनव्यी विश्वास पापीने माताए आङ्गा आपी एव्हे तेणे सर्व सावद्य योग्युं प्रत्यारुद्धान करीने, पोताना छुरितनी निन्दा करीने, सर्व प्राणीओने खमावीने, सूर्यनां किरणोधी तपेक्षी वादवननी शिळा उपर वेसीने चार शरण अंगीकार करी पाद्योपगमन अनशन ग्रहण कर्युं. पडी अति दाखण उपण वेदनाने सम्यक् प्रका-

रे सहन कर्ता ने अर्हनक मुनि शरीरे अति कोषल होवायी भावणा चिन्नी जैम एक मुहूर्तमात्रभाज गढ़ी जड़ तत्काल स्वर्गमुख्ये पाम्या।

“ चंद्रमुखी स्त्रीना स्नेहशाशमो वैयाया त्रिंशं पण अर्हनके पोताने माताने जोइने चिन्य तज्यो नहीं, अने तेयीन ते फरीने पोताना उपर्युक्त त्याग करी स्वर्गानु सुख पाम्या। ”

इत्यद्विनपरिपितोपेशपासादुच्चां चिंशतितपस्तंजस्य  
चिनवत्यधिकद्वितात्मः प्रवेषः ॥ शृणु ३ ॥

## व्याख्यान २९४ सं.

—\*—\*—  
नवपा वैयाहृत्य नामना तप चिं.

यथाहै तत्प्रतीकारो, व्याधिपरीपहादिषु ।

वैयाहृत्यं तदुक्ताव्यं, विश्रामणाशनादिज्ञिः ॥ ३ ॥

नावार्य—“ व्याधि ने परीपहादिकर्ण जैम घटे तेनो प्रतीकार ( उपाय ) कर्त्तो, अने विश्रामणा तथा अशनादिके करीने वैयाहृत्य कर्वुं, ”

विश्रामणा एठ्ठे भ्वानमुनिने अथवा मार्गीर्ण ड्रग्न करवायी श्रमित थयेझा मुनिने निट्ठनिमाटे तेनां हाथ, पा, पृष्ठ, जांघ चिंगेरे अत्रपबोने हाथनी मुष्टियी दशावर्णा ते, ते विश्रामणा गुह चिंगेरेनी अवश्य निरंतर करवी जोइए. अशन एठ्ठे आहार, वस्त्र, पात्र चिंगेरे आपीने इक्कि प्रमाणे अनुकूल वर्तन कर्वुं ते. आ विश्रामणा करवावर्द्दे अने अशनादिक ड्यापवावर्दे वैयाहृत्य करी कहेवाय डे. आवृ वैयाहृत्य सर्वने अवश्य करवा द्यायक डे. आ विषय उपर घणां दृष्टोतो डे, तेमां चर- तवकी तथा वाहुवलिए पोताना पूर्व जबमां हेमेशां पांचसो सावुने अव पाणी क्षावी आपवानो तथा विश्रामणा करवानो अनिग्रह हीधो हतो तेनां, तथा वस्त्र- देवना जीव नंदीपिण महर्षिए रोगीनु वैयाहृत्य करवानो अनिग्रह हीधो हतो तेनां

दृष्टांत जाणवां. तथा परीपह—उपर्युक्त थाय त्यारे तेनो प्रतीकार अवश्य करवो, ते उपर हस्तिकेशी मुनिनुं वैयाकृत्य करनार तिंकुक नामना यक्कनुं दृष्टांत डे, ते श्री उत्तराध्यनसूत्रधी जाणी देवुं.

आ वैयाकृत्यनुं फल सूत्रमां विशेष अधिक वर्णव्युं डे. यतः—

“वैयावच्चेण ज्ञेते जीवे किं जणाइ? गोयमा! निच्च गोयं कम्मं न वंधइ”

वैयावच्चं निययं करेह, उत्तमगुणे धरंताणं ॥

सब्बं किर पनिवाई, वैयावच्चं अपनिवाई ॥ १ ॥

पनिज्जगस्स मयस्स व, नासइ चरणं सुअं अगुणणाए ।

न हु वैयावच्चं चित्र, असुहोदय नासए कम्मं ॥ २ ॥

जावार्य—“गौतम स्वामी पूछे डे के हे जगन् ! वैयाकृत्य करवाथी जीवने शुं उत्पन्न थाय ? ” प्रनु कहे डे के “ हे गौतम ! वैयावच्च करनार नीच गोत्रकर्म घाँये नहीं. ” वली “ निरंतर वैयाकृत्य करवुं. जोके वीजा उत्तम गुणो कोइ धारण के, पण ते सर्व गुणो कोइवार प्रतिपाती थाय डे ( ज्ञान थाय डे ), पण वैयाकृत्य गुण अप्रतिपाती डे. ते गुणधी माणी ज्ञान थतो नयी. १. मरे करीने ज्ञान थयेद्वारा माणसनुं चारित्र नष्ट थाय डे, अने आवृत्ति विना ( वारंवार संजारी विना ) श्रुत नष्ट थाय डे, पण वैयाकृत्य गुण कदापि नाश पामतो नयी, अने अ-शुनोदयवाला कर्मनो नाश करे डे. २. ”

आ वैयाकृत्य करवानुं तथा न करवानुं फल विपुलमतिना दृष्टांतधी जाणवुं. कहुं डे के—

गुरुज्ञति अकुणांतो, कुगड जीवा लहंति पुणरवि ।

तं च कुणांतो सुगर्द, विज्ञामर्द इथं दिच्छंतो ॥ १ ॥

जावार्य—“ गुरुनी जक्कि नहीं करवाथी जीवो कुगतिने पामे डे, अने पागा गुरुज्ञक्कि करवाथी सारी गतिने पामे डे, ते उपर विपुलमतिनुं दृष्टांतडे.” ते आ प्रमाणे—

विपुलमतिनी कथा.

विराट देशमां विजयपुरो नामे नगरी डे. तेमां श्रीचूल नामे राजा राज्य

करतो हतो. ते राजानो घटु मानीनो जिनदत्त नामे श्रीपूरी परम आवश्यक होते. ते श्रीने सद्बुद्धिक्षिणी विषुद्धमति नामे पुरी हती. तेज नगरीपाँ भनमिति नामे एव आवश्यक होतो हतो, ते जिनदत्तनो मिति हतो. ते एमे मित्राँ जीन पर्यं पालता हुए एकदा शीपालानी फ्रनु आवी.

शीत फ्रनुतुं थण्ठन कोइ कथिए जोन राजानी पासे फर्हु डे ऊ—

शीते प्राणपटी न चास्ति शकटी जूमो च घृष्टा कटी,

निर्वाता न कुटी न तंकुञ्जपुटी तुष्टिने चेका घटी ।

घृत्तिर्नारनटी प्रिया न गुमटी तमाथ मे संकटी

श्रीमन् जोज तव प्रसादकरटी जंक्ता ममापत्तटी ॥ १ ॥

जावार्थ—“ आ टाढनी झनुमां मारी पासे शीतधी रक्षण करनारे १ नयी, तापवा माटे सार्मो नयी, पुष्टीपर कटी पसवी पडे डे, अर्धात् दूमिर २ थरवातुं पण साधन नयी, जेमां वायुनो संचार न घाय परी हुंपदी नयी, सारा पांड चपटी चोला नयी, एक पसी पण मसमना नयी, सारी रीते हृति घाय ते ३ साधन नयी अने सुंदर स्त्री नयी. हे स्त्रामो! ४ ए सर्व प्रकारनो मारे संकटो डे, ते पण हे जोनराजा! तपारा मसाद रूप हाथीए मारी आपत्ति दृष्ट नदीने जांगी नासी डे, अर्धात् सर्व आपत्ति मदामी दीवी डे. ”

रात्रौ जानुर्दिवा जानुः, कृशानुः: संध्ययोर्द्ध्योः ।

राजन् शीतं मया नीते, जानुजानुकृशानुन्निः ॥ २ ॥

जावार्थ—“ रात्रिप जानु, दिवस जानु ( सूर्य ) अने घने संध्यासमये हु शानु ( अग्नि ) शीतनी रक्षा करनारे डे. तेथी हे राजा “ जानु, जानु अने कृशा-हुए करीने मैं शीतनो नाजा कयो डे. ”

आवा टाढना घस्तरपा एकदा धनमित्रे जिनदत्तने कोनुकधी कर्णु के—“ को-इ पण माणस गाम वहारना उथानपां धंभा जळधी जरेज्जा तळावपा आ माप मासने समेय आखी रात्रि मुर्धी कंठप्रमाण जळमां उज्जो रहे सो तेने हुं एक झाल दीनार आपु. ” ते सोनलीने लोजी जिनदत्ते सर्व लोकनी समझ तेप करवातुं

१ पण संदेशवेले मुकाबी टाड घोडी लागे दें.

अंगीकार कर्यु, अने आखी रात्रि तेवीज रीते निर्गमन करी. पड़ी प्रजाते आवीने धनमित्रने कशुं के “मने लाल दीनार आप.” धनमित्र बोल्यो के “तुं आखी रात्रि तेवीज रीते रहो भे तेनी खात्री शी?” जिनदत्त बोल्यो के “तारा धरमां आखी रात्रि दीवो बलतो हतो, ते निशानीयी तारे खात्री मानवी.” धनमित्र बोल्यो के “त्यारे तो दीवो जोवाधी तारी टाठ जती रही, माटे हवे तने धन नहीं आपुं.” ते सांचलीने जिनदत्त खेदयुक्त चित्ते घेर गयो. तेने चिंतातुर जोझने विपुलमति पुत्री बोल्ली के “हे पिता! तमे खेद करो मा, तमने जे रीते धननी प्राप्ति थशो तेम हुं करीजा.” पड़ी पुत्रीना कहेवाधी जिनदत्ते जर उनालामां धनमित्रने पोताने घेर जोजननुं आमंत्रण कर्यु. मध्याह्न सप्तमे तेने जपवा वेसाड्यो. जोजनमां मीठावालो अने स्त्रियथ पद्धर्थ विशेष हतो, तेथी जोजन करतां धनमित्रे वचमां पाणी पीवा मारयुं. ते वत्तते जिनदत्ते शीतल जलनी जरेल्ली गागर देखानीने कशुं के “जेम ते वत्तते शियालामां दीवो जोवाधी मारी टाठ नाश पामी हती, तेम आजे आ पाणीनी गागर जोवाधी नारी तृपा पण नाश पामो.” धनमित्र आनो जबाब आपी शक्यो नहीं, एट्टेते हारी गयो. तेथी सरतमां उरवेझा लाल रुपीआ तेणे जिनदत्तने आप्या. पड़ी जिनदत्ते तेने जल आपुं. जोजन कर्पी पड़ी धनमित्र पोताने घेर गयो अने विचारवा लाग्यो के “आ बुद्धि कोनी?” ते वत्तते कोझए कर्यु के “जिनदत्तनी पुत्री विपुलमतिनी.” ते सांचलीने धनमित्रे परणवा माटे विपुलमतिनुं मागुं कर्यु. पण जिनदत्ते विचार्यु के “मारी पुत्री हुं एने आपीजा तो ते क्रोधधी तेनुं विरूप करशो” एम धारीने तेने आपी नहीं. त्यारे विपुलमति बोल्ली के “हे पिता! मने धनमित्र साथे परणावो. बुद्धिना प्रसादधी वधुं सारु घजो.” केयके

यस्य बुद्धिर्वर्कं तस्य, निर्बुद्धेश्च कुतो वद्धम् ।

बद्धो गजो वने मत्तो, मूषपकैः परिमोचितः ॥ ९ ॥

जावार्थ—“जेने बुद्धि भे तेनेज वळ भे, निर्बुद्धिने वळ क्यांधी हाय? वनमां मदेन्मत्त हाधीने बांधेझो हतो तेने बुद्धिमान चंदरे मुक्त कयों हतो.” ( आ दृष्टां पंचतेत्रमांधी जाणी क्षेवुं.)

पुत्रीनां आवां वचन सांचली जिनदत्ते धनमित्रनी साथे तेने परणावी. विचाह थया पड़ी घेर लह जइने धनमित्रे विपुलमतिने पाणी विनाना एक कृत्वामां

नाखी, अने तेने कहुँ के “ तने पुत्र थाय त्यां सुधी कपास कांतती अने कांगना चोखा खाती आमां रहेजे. हुं झव्य उपार्जन करवा माटे परदेश जाऊं हुं. ” एमकहीने धनमित्रपरदेश गयो. पड़ी विपुलमतिए ते कृत्यार्थी पिताना घर मुधी सुरंग खोदावीने ते रस्ते पिताने घेर गइ.<sup>१</sup> कृत्यामां पोताने बेकाणे एक चाकरने राख्यो. ते हमेशां कांगना चोखा ग्रहण करतो, कांतवा आवेद्धा कपास पिताने सोच्यो अने कंतावी राखवा कहुँ. पड़ी “ ज्यां मारो पति ते त्यां हुं जाऊं हुं ” एमकहीने ते पति बाला गामे गइ. त्यां बेश्यानी दृच्छिधी पतिने बश करी तेनी साथे झोका करवा द्यागी. अनुक्रमे तेनाथी पुत्र थयो. पड़ी पतिनी पहेजांज ते पोताने घेर आवी अने कृत्यामां रही. केउझेक दिवसे धनमित्र घेर आव्यो, तेने तेना आम जनोए कहुँ के “ तारी खीने कृत्यार्थी बहार काढ. ” धनमित्र तेने बहार काढी तो सूत्र अने पुत्र सहित ते बहार नीकली. धनमित्र तेने ओळखी एझे ते आशर्थ्य पाम्यो. पड़ी तेणे विपुलमतिने घरनी स्वामिनी करी. लोकमां विपुलमतिनी घणी प्रतिष्ठा घइ.

एकदा ते नगरीमां जबदेव नामना सूरि आव्या. तेने बांदवा माटे खी सहित धनदत्त गयो. गुल्मे बांदीने तेणे पूछहुँ के “ हे स्त्रावी ! आ मारी खीए पूर्व नवमां शुं पुण्य उपार्जन कर्यु ते के जेना प्रसाद्यी तेनी आवी तीइण बुद्धि घइ छे ? ” गुरु बोस्था के “ हे महा जाग्यवान् ! कुम्भपुर नामना नगरमां जातुं देवने रोहिणी नामे वालविधा पुत्री हती. एकदा तेने घेर परामर्थी कोइ गृहस्थ वषिकनो पुत्र आव्यो. तेने जोइने रोहिणीने कामविकार उत्पन्न थयो, तेथी तेणे तेना सामुं कटाक्ष पूर्वक चपल दृष्टियी जोयु. ते खत्तते आहार द्वेषा आवेद्धा इीक्ष-सार मुनि ते समजी गया. कहुँ छे के—

जद्वि न सह न संपज्ज, न हु अ ऊएइ हिअयमज्जंमि ।

मयणातुरस्स दिष्टी, लस्किज्ज तहवि लोएण ॥ १ ॥

जावार्थ—“ जोके पोताने खी नथी, खीनी इच्छा नथी, तेने हृदयमां ध्याता नपी, तोपण बुद्धिमान भाणी जोवा मानथी फडनातुरनी दृष्टिने समजी शके छे. ”

<sup>१</sup> धनमित्रे बहेली हर्षविहारी जिवदत्तने खबर पड़ा पर्दी बोइ माणस द्वारा विपुलमतिए कहेवरखेली शुरू प्रमाणे आ सुरंग खोदावी.

पञ्ची “ अहो ! कामदेवनो प्रचार अति छुर्जय डे ” एम विचारतां ते मुनि त्यांपी चाव्या गया, ते शीघ्रसार मुनि अनुक्रमे समग्र सूत्र अने अर्थनो अन्यासं करी गीतार्थ थया, तेथो गुरुए तेने आचार्यपदे स्थापन कर्या, अनुक्रमे विहार करतां एकदा जब्य जीवोने प्रतिवोध करवा माटे ते कुसुमपुरे पथार्या, त्यां देशाना आपी, ते सांजळीने रोहिणी प्रतिवोध पामी, अने दीक्षा लेवा तैयार थइ. दीक्षा लेवाने समये गुरुए कर्युं के—

जहा सुविसुद्धे कुर्ने, लिहिअ चित्तं विहाइ रमणिङं ।

तह अणश्यार जीवे, समत्तं गुणकरं होइ ॥ १ ॥

जह लंघणिअरस्स, रोगिणो उसहं गुणाय जवे ।

आदोयणा विसुद्धस्स, धम्मकम्मं तहा सयदं ॥ २ ॥

अर्थ—“ जेम शुद्ध करेद्दी जीत उपर चित्रेद्दुं चित्र रमणीय लागे डे, तेवीज रीते अतिचार रहित शुद्ध जीवने विषे रहेद्दुं समकित अधिक गुणकारी थाय डे. जेम द्वंघन करेवा रोगीने आौपथ गुणकारी थाय डे, तेम आदोयण रूपी द्वंघनथी विशुद्ध थयेज्ञा जीवने सर्व धर्मकार्य गुणकारी थाय डे. ”

ते सांजळीने रोहिणीए सर्व पापनी आद्वेचना दीधी, पण पेज्ञा दृष्टिविकारनी आद्वेचना दीधी नहीं. त्यारे गुरु बोद्ध्या के “ हे महा अनुजावचाळी ! ते दिवसे हुं तारे घेर आहार लेवा आव्यो हतो, ते वरवेत मे तारे हृषिविकार साक्षात् जोयो हतो, तेनी आद्वेचना केम करती नयी ? ” रोहिणीए जवाव आप्यो के “ ते वणिकपुत्रनी सामुं में मात्र सहजज जोयुं हतुं; रागधी जोयुं नहोतुं. ” ते सांजळीने गुरुए तेने द्वक्षमणा आर्यानुं दृष्टान्त आपीने घण्यं समजावी, तोपण तेण मान्युं नहीं, अने कहेवा लागी के “ वारंवार कहीने खोडं दूपणज शामोटे वतावो गो ? जो आपने खोडं दूपणज आपवुं होय तो मारे चारित्रज लेवुं नयी. ” एम बोद्धीने सम्यक्त ग्रहण करेद्दी ते गुरु उपर क्षेप करीने पोताने घेर चाझी गइ. पञ्ची प्रतिसमये उन्नरता क्षेपधी ते निरंतर गुरुनी निंदा करवा लागी.

अनुक्रमे तेवाज छुर्ध्यानमां मृत्यु पामीने ते लूतरी थइ. कल्प वरवेते तेना गुदस्थानमां अनेक क्रमि उत्पन्न थया, तेनी व्यथाधी मरण पामीने सर्पिणी थइ.

त्यां दावानलयी बड़ी परीने नरके गइ. त्यांथी नीकड़ीने बाधण थइ, त्यां पारा-  
धिना बाणथी मृत्यु पापीने पाड़ी नरके गइ. इत्यादि तिर्यच तथा नरकपां असंख्य  
बार उत्पन्न थइने अत्यंत छुःसह छुःखो पापी. पड़ी पनुष्पणामां चहु खलत  
त्वीपणां पापीने दुर्जाग्य, दारिद्र्य, व्याधि, शोक, पतिवियोग विग्रेरे अनेक प्रकारानं  
छुःखो जोगवीने असंख्य काळे धन्य नामना पुरमां गोवर्धन देउनी धनी नापे पुत्री  
थइ. ते युवावस्था पापी एट्टें तेने नगरशेषना पुत्रे जोइ, अनेने तेना स्वरूपयी मो-  
हित थइ तेनी मागाणी कर्निते ते तेने परण्यो. पड़ी शयनयृहमां सुवा गयो.  
ते खलते तेना अंगनो स्पर्शी थतांज तेने एवो ताप लागयो के जाणे जांचव्यमान  
अभिना तापमां पड्यो होय. आबो ताप सहन नहीं थवायी ते रात्रि-  
मांज जतो रहो. प्रातःकाळे पुत्रीने रुदन करती जोइने तेना पिताए तेने धीरज  
आपी. पड़ी पोताना घरना गोवाळने घरजमाइ करीने तेनी साथे परणावी. ते  
गोवाळ पण तेना स्पर्शयी ताप पापीने तेने मूर्झीने नासी गयो. पड़ी शोकात्म  
थयेझी पुत्रीने तेना पिताए कर्युं के “ हे पुत्री ! आपणा कुळने अयोग्य एवो  
तारो पुनर्विवाह पण मैं कर्यै, तोपण तारां पूर्व कर्मना प्रज्ञावयी दुर्जाग्यज आग-  
लुं आगळ आवीने उज्जुं रहे भे. हवे तुं दानादिक धर्मक्रियामां तत्पर थइने मारा  
परमांज रहे. ” धनीए ते वात कबुझ करी, अने पिताना कहेवा प्रमाणे धर्मक्रिया  
करवा मांसो. एकदा त्यां कोइ साहुओ आव्या, तेमने वंदना करीने धनीए पूर्जुं  
के “ हे गुरु ! एवो कोइ मंथ, जंत्र के तंत्र डे के जेवी मने सौजानयनी प्राप्ति  
धाय, अने हुं युवान पुरपने सृहा करवा ज्ञायक थाउं ? ” मुनिए जवाब आपो  
के “ अमं कांइ जाणता नयी, पण पुष्पाकर उद्यानमां अमारा गुरु जीवाकर ना-  
मना आचार्य पथार्या भे, ते सर्व जाणे डे. ” ते संजलीने धनी आचार्य महाराज  
पासे गइ, अने वंदना करीने तेने पण प्रथमनी जेम सौजानय मंत्रादि भाटे पूर्जुं  
आचार्य बोद्ध्या के—

तिद्वुक्र वसीकरणो, समत्त मणचिंति अथ्थ संजणणो !

जिएपन्नतो धम्मो, मंतो तेचेव नहु अन्नो ॥ १ ॥

जेहिं विहिन न धम्मो, पुञ्च ते एथ्य दुष्ठिया जीवा ॥

किं पसरह दारिहं, चिंतारयणेवि संपत्ते ॥ २ ॥

**अर्थ—**“ त्रेण द्वोकने वश करनार अने समग्र मनचिंतित पदार्थने आपनार एवो एक जिनेश्वरकथित धर्म रूपी मंत्रज श्रेष्ठ डे; वीजो कोइ मंत्र नयी. जेणे पूर्व जन्ममां धर्मनुं अनुष्टान कर्यु नयी तेओज आ जन्ममां छुःखी थाय डे; वाकी जेने चिंतापणि रत्न प्राप्त थयुं होय तेनी पासे शुं दास्त्र्य रही शके ? ” ते सां-जल्लीने गोवर्धन शेते पूछ्युं के “ हे गुरु ! आ मारी पुत्रीए पूर्व जन्ममां केवुं पापकर्म कर्यु डे के जेथी आ जन्ममां आवा छुर्जाग्ययी कदंकित थइ ? ” आ-चार्य बोद्ध्या के “ आ तारी पुत्रीए प्रथम रोहिणीना जन्ममां गुरुनी अवङ्गा करी हत्ती; तेथी असंख्य जन्ममां अनेक छुःखो अनुज्ञवीने आ जबे तारी पुत्री थइ डे. पूर्व जन्मनुं कर्म जोगवावुं कांडक वाकी रह्युं डे, तेथी आ जन्ममां पण तेने आवुं छुर्जाग्य प्राप्त थयुं डे. ” आ प्रमाणे सांजलतांज धनीने जातिस्मरण झान प्राप्त थयुं, तेथी तेणे पोतानो पूर्वजन दीजो एट्ले ते बोद्धी के “ हे पूज्य गुरु ! आपनुं कहेवुं सर्व सत्य डे. ” गुरु बोद्ध्या के—

इहद्वोद्देश वि कजे, सुयुरुं पणमंति माणवा निचं ।

किं पुण परद्वोअपहे, धम्मायस्त्रिं पर्वत्समं ॥ १ ॥

**नारार्थ—**“ मनुष्यो आ द्वोकनां कायोंमां पण सदगुरुने हमेशां नये डे, तो पडी परद्वोकना मार्गमां प्रदीप समान आचार्यने नमवुं तेमां तो शुं कहेवुं ? ”

आ प्रमाणे सांजल्लीने धनी पूर्वे करेद्वा पापनी आद्वोचना करीने गुरु पासे वार व्रतस्त्रप गृहस्थधर्म ग्रहण करी धर्मक्रियामां तत्पर थइ, तीव्र तप करवा द्वागी. पारणाने दिवसे वस्त्र, अन्न, पान, पात्र, शाश्वा विगोरे जे जे जेने अनुकूल होय ते ते तेमने ( साधुओने ) प्राप्तुक अने एपणीय आपवा द्वागी. पडी मनना उद्वास पूर्वक शुन परिणामे करीने ते धनीए चारित्र ग्रहण कर्यु, अने अतिचार रहित चारित्रनुं प्रतिपाद्धन करीने सौधर्मदेवद्वोकमां उत्पन्न थइ. त्यांथी चवीने आ तारी विपुलमति नामे खी थइ डे. गुरुनी चक्षि करवायी तेनी आवी निर्मल बुद्धि थइ डे, अने जोग संपत्ति पण प्राप्त थइ डे.

आ प्रमाणे पोताना पूर्वजनवर्तु वृत्तांत गुरुमुखयी सांजल्लीने ते विपुलमति-ने जातिस्मरण थयुं, तेथी संशय रहित थइने हर्षयी तेणे गुरुने पूछ्युं के “ हे स्वामी ! वैयाद्यत्यना केद्वा प्रकार डे ? ” गुरु बोद्ध्या के हे जाविक खी ! वैयाद्यत्यना दश प्रकार डे—

( ६० )

उपदेशमासाद ज्ञापांतर-ज्ञाग ५ मो-स्तंन ५० मो.

आयरिय उवङ्गाण, थेर तवसी गिवाण सेहे अ ।

साहमिय कुञ्जगण, संघसंगयं तमिह कायब्वं ॥१॥

ज्ञापार्थ—“आचार्य, उपाध्याय, स्थविर, तपस्वी, ज्ञान (रीगी), नवदीक्षित शिष्य, साधीभिक, कुल, गण अने संय ए दशाना संविधमां जे वैषावव करवी ते दश प्रकार जाएवा.”

आ प्रमाणे सांजळीने विमुळमति निरंतर वैयाहृत्य करवामां तत्पर थइ अनुक्रमे मृत्यु पापीने स्वर्गे गइ, स्यांधी च्यवो घोमा काळमां सिच्छिमुखने पापमो.

“आ अन्यंतर तपनुं निरंतर आराधन करनार प्राणी आहार करतां उत्तां पण तपनुं फळ पापे डे. आ तपनुं फळ प्रस्तक जोइने विपुळमतिए ते तप स्वीकार्यो अने तेथी ध्रुव (मोक) पदने पापी.”

चतुर्नवत्यधिकद्विशत्तमः पवदः ॥ ४४४ ॥

## व्याख्यान २९५ मुं.

दशमा तपाचार विषे.

स्वाध्यायः पंचधा प्रोक्तो, महत्तीनिर्जराकरः ।

तपोपूर्तिरनेन स्यात्, सर्वोत्कृष्टस्ततोऽर्हता ॥ १ ॥

ज्ञापार्थ—“स्वाध्यायना पांच प्रकार डे, ते कर्मनी मोटी निर्जराना करनार डे. एनावडे तपनी पूर्णता धाय डे, मोटेज अरिहंते ते स्वाध्याय तपने सर्वोत्कृष्ट तप कहेझो डे.”

स्वाध्यायना पांच प्रकार डे, तेमां पहेल्यो प्रकार वाचना डे. वाचना एटके सूत्र तथा अर्धनो अन्यास करवो अने करावयो ते. ते प्रकार वज्रस्वामी अने जडवाह-

१ वृद्धसुनि. २ एक मुरिनो परिवार. ३ भणा आचार्येनो परिवार.

स्वामी विगेरेनी जेम निरंतर करतो. वीजो पृच्छना नामनो स्वाध्याय छे. सूत्र तथा अर्थ संबंधी संदेह दूर करता माटे अने तेने हृदयमां दृढ़ करता माटे. वीजा विशेष-क्षाताने पृबुर्वुं ते पृच्छना कहेवाय छे. ते पृच्छना चिद्रातिपुञ्च, महावक्त्रनो जीव, सुदर्शन शेत्र अने हरिज्ञक्ष ब्राह्मण विगेरेनी जेम अववय करती. वीजो परावर्तना नामनो स्वाध्याय छे. जाणी गयेद्वा सूत्रादिक विसरी न जवाय माडे तेनुं बारंबार ग-एवुं-आहृत्ति करती ते परावर्तना कहेवाय भे. ते अतिमुक्तक तथा कुद्वक कृष्ण-नी जेम करतुं, तथा तंतु बणकरनी जेम विस्तारावुं. कोइ एक बणकर पांजणी पातां ते तंतुओना प्रांत जागने पकड़ने वेने रेने उन्नी रहेल्ली पोतानी वे स्त्रीओ पासे ज्यारे ज्यारे जतो त्यारे त्यारे कुचर्मदेन तथा अधर्मचुंबनादि करतो हतो. तेनी आ प्रमाणेनी चेष्टा मार्गे जता कोइ मुनिए जोइ, एटले ते उन्ना रहा. ते बखते बणकर मुनिने कल्युं के “हे साहु ! तमे शुं जुओ ओ ? आवुं सुख तमे क्यांइ जोयुं छे ? तमारे तो स्वप्नमां पण आवुं सुख क्यांथी होय ? ” आ प्रमाणे अन्नि-मानवाळुं तेनुं बचन सांजलीने मुनिए अवधिक्षाननो उपयोग दीयो. तेथी ते बणकरनुं मात्र एक क्षणनुंज आयुष्य वाकी रहेल्लुं जोइने तेने पोतानी पासे बोक्षावी-ने कल्युं के “हे नज ! केटल्ली बखत जीवता माटे आवी कामचेष्टा करे छे ? ताहुं आयुष्य तो हमपांज पूर्ण थवानुं भे. ” ते सांजलीने बणकर नय पामीने बोव्यो के “ त्यारे तमे मने कांड पण जीवतानो उपाय कहो. ” पडी मुनिए तेने नवकार पंत्र आय्यो. ते मंत्रने एक वार गणीने तेनुं परावर्तन करतो ते मृत्यु पामीने स्वर्गे गयो. पोताना पतिनुं अकस्मात् मृत्यु जोइने तेनी स्त्रीओए मुनिने कदंक च-काल्युं के “ तमे मारा स्वामीने मूत्र विगेरे प्रयोगथी मारी नांख्यो. ” मुनिए तेम-ने घण्णो उपदेश तथा शिखामण आपी, पण ते स्त्रीओए पोतानो कदाप्रह भोड्यो नहीं, अने गामना लोकोने जेळा करी मुनिने कदंक आपता द्वागी. मुनि पण ते देवना आगमननी राह जोतां त्यांज उन्ना रहा. एटज्ञामां ते बणकरदेव पोताना गुरुना उपकारनुं स्मरण थां तत्काळ त्यां आव्यो, अने गामना लोकोने तथा पो-तानी स्त्रीओने सर्व वृत्तांत कहीने तेमनी जंका दूर करी, गुरुने नमी तथा स्त्रीने स्वर्गे गयो.

चेष्टो अनुमेङ्गा नामनो स्वाध्याय भे. अनुमेङ्गा एटज्ञे सूत्रार्थनो मुख्यथी उच्चार कर्या विना मनपां ध्यान करतुं ते. कायोत्सर्गादिकर्मा अने अस्वाध्यायने

देवसे मुखे परावर्तन थइ शके नहीं, मोटे ते बखते अनुमेकावर्नेज श्रुत स्मृति विरे थाय डे, परावर्तना करता अनुमेका अधिक फलदायी डे, केमके अन्यासना बशयी मननु शून्यपणां छतां पण मुखवरे परावर्तना थइ शके डे, अने अनुमेका तो मन सावधान होय त्यारेज थइ शके डे, मंत्रनी आराधना विगेरमां स्मरण (अनुमेका) दीज विशेष सिद्धि थाय डे, करुं डे के—

संकुञ्जाद्विजने जब्यः, सज्जावदान्मौनवान् शुभ्जः ।  
मौनजान्मानसः श्रेष्ठो, जापः शुभाच्यः परःपरः ॥१॥

जावार्थ—“ घणा माणसोपां रहीने जाप करवो ते कस्तां एकाते करवो ते श्रेष्ठ डे, तेमां पण मुखयी बोझीने करवा करतां मौन धारण करीने करवो ते श्रेष्ठ डे, मौन जप करतां पण मनथी जाप करवो ते श्रेष्ठ डे, एवी रीते उत्तरोत्तर जप बखाणवा ज्ञायक डे. ”

बड़ी संभेदवना, अनज्ञन विगेरे करवायी वहु कीए शरीरवाला थइ जवाने द्वीपे परावर्तनादिक करवानी इक्कि ज्योरे रहेती नथी त्यारे अनुमेकाए करीने ज प्रतिक्रमण विगेरे नित्य क्रिया थाय डे; अने तेथीज यातिकर्मनो कृष थइने केत्तलङ्काननी प्राप्ति थाप डे, ने प्रांते सिद्धिपद प्राप्त थाय डे, पांचमो धर्मकथा नामनो स्वाध्याप डे, धर्मकथा एवज्ज्ञे धर्मनो उपदेश अने सूत्रार्थीनी व्याख्या करवी तथा सोलक्ष्यी ते, ते धर्मकथा नंदिपेण अपिनी जेम करवो.

आ पांचे प्रकारना स्वाध्याये करीने तपनी पूर्ति थाय डे, ते विषे आळोचनाना ग्रंथमां करुं डे के “ एकासणानो जंग थाय तो पांचसो नवकार गणवा, उपनासनो जंग थाय तो वे हजार नवकार गणवा, नीबीनो जंग थाय तो बसो ने समसउ नवकार गणवा, आविष्वनो जंग थाय तो एक हजार नवकार गणवा, चौविहारनो जंग थाय तो एक उपनास करवो, तथा हंमेशां एकसो नवकार गणवायी वर्षे उत्तीर्ण हजार नवकारनो स्वाध्याय थाय डे, हंमेशां बसो नवकार गणवायी एक वर्षे बोतेर हजार अने हंमेशां त्रणसो गणवायी एक वर्षे एक द्वात्र अने आव हजार नवकारनो स्वाध्याय थाय डे, इत्यादि पोतानी धेले जाणा छेवुं. ”

आवी रीतना स्वाध्याय तपने जिनेखेरे सर्वांतम एवज्जे सर्व तपमां उत्तम नप कहेझो डे, श्री महानिशीथ सूत्रमां करुं डे के—

वारसविहंभि तवे, अस्मिंतरवाहिरे कुसवदिष्टे ।

न वि अत्थि न वि अ होहि, सप्नायसमं तवो कम्मं ॥१॥

जावार्थ—“ सर्वज्ञ जगवते कहेला अच्यंतर अने वाला एवा वार प्रकार-  
ना तपमां स्वाध्याय जेवूं तपकर्म कोइ भे पण नहीं, अने कोइ यशे पण नहीं। ”

मणवयणकाय गुत्तो, नाणावरणं च खवइ अणुसमयं ।

सप्नाये वट्ठंतो, खणे खणे जाइ वेरगं ॥ २ ॥

जावार्थ—“ स्वाध्यायमां वर्ततो माणस मन, वचन अने कायानी गुप्तिए  
करीने प्रतिसमये झानावरणीय कर्मनो क्रय करे भे, तथा तेने क्षणे क्षणे वैराग्य  
मास थाय भे। ”

इग छु ति मासखवणं, संवच्छरमवि अणसिंठ हुजा ।

सप्नायप्नाणरहिउं, एगोवासफट्टं पि न दन्निजा ॥ ३ ॥

जावार्थ—“ एक मास, वे मास के त्रण मास कृपण करे, अथवा एक  
वर्ष मुधी अनशन ( उपवास ) करे, पण जो ते स्वाध्याय ध्यान रहित होय, तो  
एक उपवासनुं पण फळ मेड्वतो नयी। ”

उग्गम उप्पाय एसणाहिं, सुझुं च निच्च चुंजंतो ।

जइ तिविहेणाउत्तो, अणुसमयं नविज्ञ सप्नाए ॥ ४ ॥

ता तं गोयम एगग—माणसं नेव उवमिउं सक्का ।

संवच्छरखवणेणवि, जेण तहिं निजराणंता ॥ ५ ॥

जावार्थ—“ उद्गम, उत्पाद अने एषणाना दोप विजाना शुच्च आहा-  
रने दररोज ज्ञोगवतो सतो पण जो ते प्रतिसमये त्रिविध योगवदे स्वाध्यायमां आ-  
युक्त-क्तपर होय तोहे गोयम ! ते एकाग्र मनवालाने सांवत्सरिक तपवरे करीने पण उ-  
पमी शकीए नहीं, अर्थात् तेनी साधे पण सरखवावी शकीए नहीं, कारणके सांवत्स-  
रिक उपवास करतां तेने अनंतगुणी निर्जरा थाय भे। ” ४-५.

हवे प्रसंगात व्यतिरेकफळ आगळ कहेवादो एवा मुनज्जाना सं-  
केप्ती जाणवूं.

### मुन्जज्ञानी कथा.

वाराणसी पुरीमां एक सार्थवाह हतो। तेने मुन्जज्ञा नामे खी हती। तेने कांइ पण संतति धती नहोती, तेने माटे ते वहु विकल्प करती हती। एकदा तेने घेर साध्वीसंघाटक ( वे साध्वी ) निङ्गा पाट आयो, तेमने प्रतिज्ञानीने मुन्जज्ञाए विज्ञप्ति करी पृछयु के “ हे पृज्य ! जे खीना पुत्रो आंगणामां क्रीमा करता होय ते खीने धन्य डे ! माटे मारे कांइ संतनि धजो के नहीं ? ” साध्वी घोट्या के “ हे जडे ! अमे धर्म विना बीरुं कांइ बोद्धता नयी। ” त्यारे मुन्जज्ञा बोद्धीके “ तो धर्म कहो। ” त्यारे ते साध्वीओए सारी रीते धर्मनो उपदेश कर्यो, ते सांजळीने मुन्जद्वा बोध पामी, पड़ी अपुत्रपणना छुःखयी पीमाएळी ते मुन्जद्वाए केटब्बेक काढे पति-नी आङ्गा लङ्गने दीक्षा ग्रहण करी, चास्त्रितुं पालन करतां ते स्वाध्यायमां तत्पर रहेती, तोपण रूपवंत एवां वाल्कोने देखीने मोहना वशयी ते पोताना उद्धर पर, खोलामां, हृदय उपर अने जंया उपर वेसान्ती, तथा केटब्बांक वाल्कोने आंगळी-नो आधार आपीने जमान्ती, अने केटज्ञांकने मुखमी विगेरे खावानुं पण आपती, कहुं डे के—

केसिं पि देइ खजं, अन्नेसिं चुर्जई मन्नेसिं ।

अवूर्ज्ञगइ उव्वद्वद्व, एहाइ य तह फासुअजद्वेण ॥ १ ॥

धाइकम्माइआ, जं दोसा जिणवरेहिं इह नणिया ।

इहलोअ पारबोईआ, छुखाण निवंधणवूच्नुआ ॥ २ ॥

नार्थ—“ कोइ वाल्कने खावानुं आपे, कोइने खवरावे, कोइने अन्यगं करे, उव्वद्वणं करे तेमन फासु जळवमे न्हवरावे, इत्यादि धातिकर्म / माताए करतां कार्य )यी जे दोष जिनेवर जगवंते कहेहो डे ते उभो उखना निवंधनन्त ( कारणन्त ) जाणवो. ” ?

आ प्रमाणे मुन्जज्ञा साध्वीनी चेष्टा

किखामण आपी के “ तने आम् ”

कम प्रमाद करे डे ? मुनिओ ते

तेनी इच्छानो त्याग कर्दे

सांजलीने सुन्नदा अति कोप पामीने वीजा उपाश्रयमां गइ, त्यां निरंकुश थइने यथेच्छ रीते वाल्कोनी साथे क्रीमा करवा लागी. भेषटे पाकिक अनशनथी काल करीने प्रथम स्वर्गमां देवीपणे उत्पन्न थइ.

एकदा ते सुन्नदा देवी श्री महावीर स्वामीने वांदवा माटे सर्व समृद्धि सहित आयी, त्यां पण पूर्वना अन्यासथी तेमन वाल्कपरना रागथी घण्ठां वाल्को विकुर्वाने नाडक करी ते पोताना विमानमां गइ, तेना गया पडी श्री गौतम-स्वामीए प्रनुने पूछयुं के “ हे जगवन् ! आ देवताए घण्ठां वाल्कोने शा माटे विकुर्व्यी ? ” जिनेखोर कहुं के “ हे गौतम ! ए वहुपुत्रिका नामनी देवी डे. तेणे पूर्वनवना अन्यासना वशथी अर्हां पण वाल्को विकुर्व्यी हतां, शक्रेन्द्रनी सन्नामां पण तेणे नृत्य करती वत्तेघण्ठां वाल्को विकुर्व्यी हतां, तेथी ते देवी वहुपुत्रिका नामथी प्रसिद्ध थइ डे. ” ते सांजलीने श्री गौतम स्वामीए तेनो पूर्वनव पूछ्यो, एट्से स्वामीए सर्व वृत्तान्त कशो. गौतम स्वामीए “ हवे पडी ते क्यां जशे ? ” एवो प्रश्न कर्यो, त्यारे प्रनु वोद्या के “ ए देवी चार पद्मोपमनुं आयुष्य पूर्ण करीने विद्याचळ पर्वतनी समीपे वेजेझ नामना सञ्जिवेशमां सोमा नामे कोइ ब्राह्मणनी रूपवती पुत्री थशे, तेने कोइ राष्ट्रकुट नामनो छिज परणेशे, त्यां तेने युग्म संतान उत्पन्न थशे, एम दर वर्षे वधे संतति उत्पन्न थतां सोळ वर्षमां वत्रीश पुत्रपुत्रीनो समुदाय थशे. वाल्कोमां कोइ तेनी पीठ उपर आने कोइ माथा उपर चमी जशे, कोइ महार करशे, कोइ स्वावानुं मागशे, कोइ उत्संगमां मूत्रादिक करशे, एम रात्रिदिवस पुत्रोनां छुःखथी पीका पामीने घण्ठो उद्देग पामी सती ते मनमां विचार करशे के “ मारा करतां वंश्या ह्यी श्रेष्ठ डे, के जे सुखे रहे डे, अने निरांते निजा द्वे डे. ” पडी एकदा साध्वीना संयामाने प्रतिज्ञानां तेने जातिस्मरण उत्पन्न थशे; तेथी पोतानो पूर्वनव जाणीने ते वैराग्यथी दीक्षा ग्रहण करशे. पडी एकादश अंगनो अन्यास करी सर्व जननी समझ पोताना पूर्वनवनुं चर्स्त्रि प्राण करी अंते एक मासना अनशनथी कार्लधम पामीने वै सागरोपमना आयुष्यवालो देव थशे, त्यांथी चवीने महाविदेह क्लेत्रपां सिद्धिपदने पामशे.

“ सुन्नदा साध्वी स्वाव्यायादिक क्रियामां प्रवर्ततां उतां पण वाल्कोने

(६६.) उपदेशप्राप्ताद् ज्ञापत्तर-ज्ञाग ५ मो-स्तंत्र ४० मो.

जोइने तेना परना मोहयी क्रियामां विधिज्ञ थइ, तो तेनुं फल वीजा मनुष्यनव-  
मां पामीने पड़ी तेनी आओचना करी प्रांते मुक्ति पामी।”

इत्यद्विनपरिमितेपदेशप्राप्तादहत्ती विश्वतिवस्तंत्रस्य  
पञ्चनवत्यधिकचिद्वित्तमः प्रवंशः ॥ ४५ ॥

## ध्यारख्यान २९६ मुं.

ध्यान नामना अगियारमा तपाचार विषे,

सिद्धाः सिध्यन्ति सेत्स्यन्ति, यावन्तः केऽपि मानवाः  
ध्यानतपोवद्वेनैव, ते सर्वेऽपि शुज्ञाशयाः ॥ १ ॥

जावार्थ—“जे कोइ मनुष्यो सिद्ध थया डे, सिद्ध थाय डे, अने सिद्ध  
थडे ते सर्वे शुज्ञाशयवाला ध्यान तपना वडे करीनेज सिद्धपणुं पामे डे  
एम जाणुं।”

अहाँ एवी मतझव डे के नाना प्रकारनां छुस्तप तपे, तोपण ते शुज्ञ ध्या-  
नवीज सिद्धिने पामे डे. केमके परदेवा माता अने जरत चक्री विंगेरे तप विना  
पण सिद्धि पाम्या डे, मोट मोक्षनुं ध्यवत्तान रहित अवन्ध साधन शुज्ञ ध्यानज  
डे; वीजां सर्वे सन्तुत्यो परंपराए करीनेज मोक्षनां साधन डे. सर्वे सुकृत करतां शुज्ञ  
ध्याननुंज सर्वे मकारे अतिशयपणुं डे. कहुं डे के—

निर्जिराकरणे वाह्याच्छ्रेष्ठमाज्यन्तरं तपः ।

तत्राप्येकातपत्रत्वं, ध्यानस्य मुनयोः जयुः ॥ २ ॥

जावार्थ—“निर्जिरा करवामां वाय तप करतां अज्यन्तर तप श्रेष्ठ डे, तेमां  
पण ध्यानतपनुं एक चत्रपणुं डे. ते तप ‘चक्रवर्ती डे’ एम मुनिश्चो कहे डे।”

ध्यानना काळनुं प्रमाण आ प्रमाणे कहुं डे—

अन्तर्मुहूर्तमात्रं यदेकाग्रचित्ततान्वितम् ।

तथ्यानं चिरकालीनां, कर्मणां ज्ञायकारणम् ॥ २ ॥

व्याख्यान शृणु मुं ध्यान नामना अगियरमा तपाचार विषे। ( ६७ )

ज्ञावार्थ—“ अन्तर्मुहूर्त मात्र जे एकाग्र चित्तपणु ते ध्यान कहेवाय डे तेवुं ध्यान पणा काळनां वाखेद्वां कर्मोनो क्षय करवामां कारणन्तु डे । ”

आ अर्थने पुष्टि करनारु सिद्धान्तनुं वाक्य पण डे के—

अंतोमुहूर्तमित्तं, चित्तावत्थाणमेगवत्थुंभि ।

ब्रह्मतथाणं ज्ञाणं, जोगनिरोहो जिणाणं तु ॥ १ ॥

ज्ञावार्थ—“ एकज वस्त्रमां अंतर्मुहूर्त मात्र जे चित्तनी एकाग्रता ते ब्राह्मस्थिकनुं ध्यान डे अने योगनिरोध ते जिनेवरोनुं ध्यान डे । ”

आ ध्यान पणा काळनां संचित करेद्वां अनन्त कर्मोनो पण तत्काल क्षय करे डे, ते विषे ज्ञाप्यकार कहे डे के—

जहू चिअसंचिअमिंधणमणद्वो य पवण सहिठु छुअं डहश ।

तहू कमिंधणमभिअं खणेण झाणाणद्वो डहश ॥ १ ॥

ज्ञावार्थ—“ जेम चिरकाळनां एकजां करेद्वां काप्तेने पवननी साथे रहेद्वो अग्नि तत्काल वाळी नाखे डे, तेम अनन्त कर्मस्तुपी इंधनने एक क्षणमात्रमां ज ध्यानस्तुपी अग्नि वाळी नाखे डे । ”

अहवा घणसंघाया, खणेण पवणाहया विविज्जंति ।

झाणपवणावहूआ, तहू कम्मधणा विविज्जंति ॥ १ ॥

अथवा जेम पवनथी हणायेद्वो मेघसमूह एक क्षणमात्रमां वर्स्वाइ जाय डे ( नाश पामी जाय डे ), तेम ध्यानस्तुपी पवनथी हणायेद्वो कर्मस्तुपी मेघ क्षण मात्रमां वेराइ जाय डे.

हवे प्रशस्त अने अप्रशस्त निमित्तो ध्यानने अनुसरेज फल अपे डे, ते विषे कहुं डे के—

प्रशस्त कारणानि स्युः, शुज्ञानि ध्यानयोगतः ।

अनर्हाण्यपि तान्येव, अनर्हध्यानपुष्टितः ॥ १ ॥

अप्रशस्तनिमित्तानि, शुज्ञानि ध्यानवृद्धितः ।

तद्वापाणि ज्ञवन्त्येव, अग्नुज्ञाश्रवसंश्रयात् ॥ १ ॥

**ज्ञावार्थ—**“ शुन ध्यानना योगधी प्रशस्त एवां कारणे शुन धाय डे अने तेज कारणे अशुन ध्याननी पुष्टियी अशुन (आयोग्य) पण धाय डे. तेमन ध्याननी शुचिधी अप्रशस्त निपित्तो शुन धाय डे, अने अशुन आश्रवनो आश्रय करवायी तेज कारणे अशुन धाय डे.”

आ वे शोकोनुं तात्पर्य एवुं डे के श्री जिनेभरना मतमां जेवडा सुछतना प्रकारो डे ते सर्वे जो के मुक्तिना हेतुओ डे, परंतु ते सलकृत्यो शुनध्यानसंयुक्त होय तोन मुक्तिनां कारण डे, नहीं तो मुक्तिनां कारण नयी. ते उपर यथा वस्तु मुखी चारित्रनुं आराधन करनार अंगारमदक नापना आवार्यनुं दृष्टांत स्वप्नेव जाणी बोतुं, अने शुन ध्यान सते ही धनादिक जे कांइ जवाचिना कारणजूत डे ते पण मुक्तिनां कारण धाय डे. करुं डे के—

**अहो ध्यानस्य माहात्म्यं, येनैकापि हि कामिनी ।**

**अनुरागविरागात्म्यां, ज्ञवाय च शिवाय च ॥ १ ॥**

**ज्ञावार्थ—**“ अहो ! ध्याननुं केवुं माहात्म्य डे के जेथी एकज स्त्री अनुराग अने विराग करीने जबने माटे तथा मोक्षने माटे धाय डे, एटक्षे अनुरागधी जबने माटे धाय डे अने विरागधी मोक्षने माटे धाय डे.” सूत्रमां पण करुं डे के—

जे जित्तिआयहेऊ, जवस्स तेचेव तित्तिआ मुख्ले ।

**गुण गणाईआ द्वोगा, छुण्हवि पुञ्जा जवे तुङ्गा ॥ १ ॥**

**ज्ञावार्थ—**“जे जेवडा संसारना हेतु डे तेज जेवडा मोक्षना हेतु डे; गुणगणातीत द्वोक्षमा बैने पूर्ण डे अने सरखाग डे.”

आ विंगे अनेक युक्तिए करीने ध्याननुं माहात्म्य शाखमां वर्णव्युं डे, ते सांजडीने अप्रशस्त अनेक निपित्तो मळे तोपण वसुन्नतिनी जेम शुन ध्यान तजवुं नहीं.

### वसुन्नतिनी कथा.

वसंतपुरमां शिवचूति अने वसुन्नति नापना वे जाइओ हता. एकदा मोदा जाइ शिवचूतिनी ही कमलश्रीए कामदेव जेवा वसुन्नति दियरने जोइने राग उत्पन्न थवायी जोगने माटे तेनी पासे याचना करी; त्यारे वसुन्नति थोड्यो के “ हे

मुख्य ! ‘मोदा जाइनी पत्नीने माता समान जाएवी’ एम नीतिशास्त्रमां कहेदुर्भु  
डे.” ते सांजलीने कमलश्री बोद्धी के “ हे स्वामी ! मारा अंगमां व्योपेश्वी काम-  
उत्तरनी व्यथा शांत कर, नहीं तो तने मोड़ पाप द्वागज्ञे. तुं लोकव्यवहारयी अ-  
ज्ञात ते तेथी शास्त्रना वाक्ययी ज्ञानित पाम्यो डे. व्यवहारने नहीं जाणनाराउं  
एक दृष्टान्त तने कहुं ते सांजल. हरिस्थल नामना गाममां न्याय, ज्योतिष, व्याकर-  
ण अने वैद्यकशास्त्रमां कुशल थयेद्वा पण व्यवहारयी विकल चार द्वाहाणना पुत्रो  
परस्पर श्रीतिवाळा हता. एक दिवस ते चारे जण पोतपोतानी विद्यायी गर्वित थ-  
येद्वा परदेशनां कौतुको जोवा माटे पोताना गामयी नीकव्या. मार्गमां कोइ गाम  
आवृत्त त्यां जोनन माटे रोकाया. पडी जे नैयायिक हुतो तेणे धी द्वाववानुं, जो-  
पीए वल्द चारवानुं, वैयाकरणीए रसोइ करवानुं अने वैये शाक द्वाववानुं काम  
माये द्वीधुं. पडी पोतपोताना कार्यमां चारे जणा प्रवृत्त थया. तेमां नैयायिक धी द्व-  
ज्ञे आवतां मार्गमां विचार करवा द्वाग्यो के ‘ घृताधारं पात्रं पात्राधारं घृतं वा ’  
योने आधारे पात्र छे के पात्रने आधारे धी रहुं छे ? एम विचारीने खात्री करवा  
माटे ते घृतपात्रने उंहुं बाल्युं, एद्वे तेमानुं वहुं धी पृथ्वी पर पदी गयुं. पडी आ-  
गळ चाज्ञातां सामेथी हाथी आवतो जोड्ने तेणे विचार्यु के “ आ हाथी मास  
( अरुकनार )ने मारे के अप्राप्तने मारे ? जो अप्राप्तने हणे तो तो कोइ पण जीवे  
नहीं, अने तेवी रीते जोवामां पण आवतुं नयी. जो कदाच प्राप्तने हणे तो तेना  
महावतने हणझो. हुं तो अति दूर छुं, अने तेने अरुकतो पण नयी.” इत्यादि  
विचार करे डे, तेवामां हाथीए तेने तत्काळ सूंदरी पकड्यो. हवे बीजो जे जोपी  
हुतो ते वल्द चारवा गयो, त्यां वल्दो द्वीकां धास चरता चरता दूर नीकली  
गया. तेवी तेनी शोधने माटे ते ज्योतीपशास्त्रनुं अवव्योकेन करवा द्वाग्यो के “ आ  
मारा वल्दो अंथ नक्त्रमां, काण नक्त्रमां, चीपट नक्त्रमां के दिव्यकृन् नक्त्रमां-  
कया नक्त्रमां गंगा डे ? वळी तेओ क६ दिशामां गया डे अने चर द्वग्नमां गया  
डे के स्थिर द्वग्नमां गया डे ? ” इत्यादि विचार करवा द्वाग्यो, तेव्वामां तो ते  
वल्दो अति दूर नीकली गया. हवे बीजो जे वैयाकरणी हुतो ते रसोइ करतो  
हुतो, तेणे चूऱा पर खीचमी मूळी हड्ठी. तेमां ‘ सद्वद ’ शब्द थया द्वाग्यो. ते  
सांजलीने तेणे विचार्यु के “ अहो ! आ ‘ खद्वद ’ शब्द कया व्याकरणमां क-  
या मूळयी सिद्ध थयो डे ? ” इत्यादि विचार करवा द्वाग्यो, एद्वे खीचमी दाळी

गैः हृषे चीथो जे वैय हृतो, ते शाक खेवा गयो हृतो. त्यां केल्हा, केरी, कंकोनी, ज्ञानी, हींडु विगेरे घणां शाक जोइने तेणे विचार्यु के आ सर्वे शाक वात, पित्त, कफ, श्वेष्य अने त्रिदोष विगेरे महा व्याधिओने उत्पन्न करवाना कारण चूत भे, मांडे ते शाक तो खेवां नहीं. पण आ हींडवातुं शाक ठीक भे, केमके बैद्यकशास्त्रमां कहु भे के—

निंवो वातहरः कल्हो सुरतरः शाखाप्रशाखाकुञ्जः

पित्तधः कृमिनाशनः कफहरो छुर्गन्धनिर्नाशनः ।

कुष्टव्याधिविपापहो व्रणहरो ऊक्पाचनः शोधनो

वालानां हितकारको विजयते निंवाय तस्मै नमः ॥ १ ॥

ज्ञानार्थ—“ शाखा प्रशाखाए करीने युक्त एवो आ हींडवातो कल्हियुग्ने विपे कल्पयुक्त समान विजय पामे भे, ते वातानुं हरण करे भे, पित्तने हणे भे, कृमिनो नाश करे भे, कफलुं हरण करे भे, छुर्गन्धनो नाश करे भे, कुए ( कोठ ) ना व्याधिनो अने विपनो नाश करे भे, व्रण—चांदा विगेरलुं हरण करे ( रुजावे ) भे, शीघ्र पाचन करनार भे, कोवने शुद्ध करे भे, घडी वालकोने विशेषे द्वित करनार भे. माटे ते निंव इक्कने नमस्कार छे. ”

आप विचारीने ते बैद्यकशास्त्रने आधारे हींडवातुं शाक बैज्ञने आव्यो. आ प्रमाणे तेओ शाख नणेला हृता, उतां लोकब्यवहारने नहीं जाणवाथी पोत-पोताना कार्यमां द्वापृताने पाम्या. माटे हे दिवर ! तुं पण शाखनी जमतां डोर्नीने मारी साथे क्रीमा कर, नहीं तो तने मोटो दोष प्राप्त थझो. ” आ प्रमाणे आव्यह-वालं जानीनां वचनो सांजलीने वमुज्जूति बैराय पामी घर तजी दृज्ञे यति थयो. कहु भे के—

अपसर सखे दूरादस्मात् कटाङ्गविपानज्ञात्

प्रकृतिविषमाद्योपित्तर्पाच्छ्वासद्वस्तकणात् ।

इतरकणिना दप्तः शक्यश्चिकित्सतुमौपद्ये—

शुद्धवनिताज्ञोगिग्रस्तं त्यजन्ति हि मंत्रिणः ॥ २ ॥

ज्ञानार्थ—“ हे मित्र ! जेमां कटाङ्ग रूपी विपनो अग्नि रहेबो भे, वि-

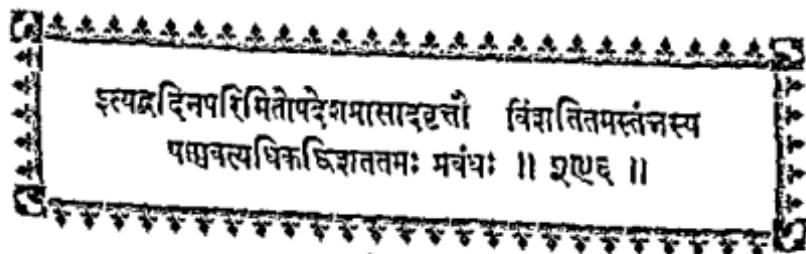
द्वास रूपी जेने उत्तमता फणा डे, अने जे स्वज्ञावधीज विषम डे एवा आ ही रूपी सर्पथी दूर खसी जा. केमके वीजा द्वाकिक सर्पथी रसाएद्वा माणसनी औपशादिकथी चिकित्सा करी शकाय डे, पण ही रूपी चपल सर्पथी ग्रस्त थयेक्काने तो मंत्रीओ<sup>१</sup> पण छोमी दे डे; तेओ पण तेनी चिकित्सा करी शकता नयी. ”

आ प्रमाणे हीनो संग विषम जाणीने ते महात्मा बसुचूति सर्वथा ही-संगनो त्याग करीने विहार करवा द्वाग्या. तेनी जानी पण तेणे दीक्षा दीधाना खवर जाणीने रागना उदयथी आर्तध्याने मृत्यु पामी कोइक गाममां कूतरी थइ. त्यां ते बसुचूति मुनिने गोचरी माटे फरता जोइने पूर्वागना वशथी ते कूतरी शरी-स्नी ग्रायानी जेम ते मुनिनी साथेज चाद्वाच-रहेवा द्वागी. सर्व काळे अने सर्व स्थाने ते कूतरीने साथे रहेती जोइने द्वोको ते मुनिने शुनीपति ( कूतरीनो स्वामी ) कहेवा द्वाग्या. आवा द्वोकवाक्यथी द्वजा पामीने मुनि कोइ प्रकारे ते कूतरीनी हप्तिने जुद्वावी त्यांथी जता रहा. मुनिने नहीं जोवायी ते कूतरी आर्त-ध्यानथी मृत्यु पामी कोइ वनमां वानरी थइ. त्यां पण कोइ वार बसुचूति मुनिने मार्गमां विचरता जोइने कूतरीनी जेम तेमनी पाऊळ पमी ने साथेज फरवा द्वागी. तेवी हीते जोइने द्वोको मुनिने वानरीपति कहेवा द्वाग्या. जेम जेम द्वोको मुनिने वानरी-पति कहेता, तेम तेम ते वानरी अत्यंत हर्ष पापती, अने हमेशां मुनिनी पासे विषयनी चेष्टा कर्या करती. आ सर्व जोइने मुनि विचारता के “ अहो ! मारा कर्मनी गहन गति डे ! ” पडी शुनीनी जेम आ वानरीने पण कोइ प्रकारे जुद्वावो खवरावीने मुनि जता रहा, एट्के ते वानरी पण आर्तध्यानथी मृत्यु पामीने कोइ जडाज्ञायमां हंसी थइ. ते जडाज्ञाय पासे ते मुनि एकदा शीतपरीषह सहन करवा माटे प्रतिमा धारण करीने उना हता, तेने जोइने हंसी कामातुर थइ गइ, तेथी वे हाथवर्मे हीनी जेम पाणीथी नींजाएवी वने पांखोवर्मे तेणे मुनिने आक्षिंगन कर्यु, अने वारंवार करुण स्वरे अब्बक्त मधुर अने विरह वेदनावाळी वाणी द्वोद्वाद्वा द्वागी. मुनि तो शुनध्यानमांज मध रहा अने पडी त्यांथी अन्यत्र विहार कर्यो, मुनिने नहीं जोवायी ते हंसी आर्तध्यानवर्मे तेनुंज स्परण करती मृत्यु पामीने व्य-न्तर निकायमां देवी थइ. त्यां तेणे विज्ञंग इकानथी पोतानो अने मुनिनो सर्व सं-यंथ जाणीने “ आ मारा दियेर मारूं वचन मान्युं नयी ” . ए वात संजारी क्रोधा-

१ सर्वना पथमां मंत्र जाणनार अने हीना पथमां प्रधान विगेरे.

यथान थइने ते मुनिने हणवा तैयार थइ; पण मुनिना ध्यानतपता भजावयी ते तेने मारी खकी नहीं, पड़ी ते देवी मुनिनी पासे पोतानी दिव्य शक्तिर्थी अनेक स्त्रीओनां रूपो विकुर्वीने बोक्खी के “ हे मुनि ! तर्म शुं चिचारो छो ? तमारे संप्रसय सफल थयुं डे, माटे आ दिव्य ज्ञाग ज्ञागवो, हवे शामाटे फोगट नप करो छो ? तपारी वथने योग्य प्रत्यक्ष भास थयेदुं सुख अंगीकार करो. ” इत्यादि प्रतिकृद्ध अनेक उपसर्गों ते देवीए कर्या, पण मुनि किंचित् मात्र क्लोज पाम्पा नहीं, तेओ विचारवा लाग्या के “ संसारमां आसवत थयेज्ञा घाशदृष्टिवाला जीवोने सुंदर स्त्री अभूतना घमाजेवी खागेडे, ते स्त्रीने माटे धन उपार्जन करे डे, अने तेनेज माटे मोहनिपथ थइने रावणादिकनी जेम प्राणनो पण त्याग करे डे, परंतु जेओ निर्मल अने एकान्त आर्नदमय आत्म स्वरूपने जीवामां दक्ष थयेज्ञा डे तेओने तो आ स्त्रीओ मळ, मूत्र, मांस, मेद, अस्ति, मज्जा अने शुक्र विंगेरे अशुचि पद्मर्थनुं पाव माझम पर्ने डे. तेवी स्त्रीओनो त्याग करनार जंबूस्वामी विंगेरन सर्वोत्तम डे. ” इत्यादि निर्मल ध्यानपां आरूढ थयेज्ञा ते मुनिने अनुक्रमे केवळक्षान प्राप्त थयुं. पड़ी सर्व लोकोनी समझ पोतानो अने ते देवीनो सर्व संवंध कहीने अनुक्रमे ते मुनि मुकित पद्ने पाम्पा.

“ कुमा गुण धारण करनार मुनिने ध्यानर्थ। चक्रित करवा माटे रागयी चिह्न थयेज्ञी ते स्त्री कोइ पण ज्ञवमां सर्वथ थइ नहीं, अने ते मुनीभरपण अनेक प्रकारना परीपहो उत्पन्न थया भतां एकाग्र ध्यानवी ज्ञाए थया नहीं. ”



स्यद्दिनपरिमितोपदेशमासाद्वत्तौ विज्ञतितपस्तंजस्य  
पशुवत्यधिक्विज्ञाततमः प्रवंधः ॥ ४७६ ॥

## व्याख्यान २९७ मुं.

— — — — —

कायोत्सर्ग नामना वारमा तपाचार विषे।

प्रायो वाञ्छनसेरेव, स्याध्याने हि नियंत्रणा ।

कायोत्सर्गे तु कायस्याप्यतो ध्यानात् फलं महत् ॥ १ ॥

जर्जर्वस्यशयिताद्यैश्च, कायोत्सर्गः क्रियारत्तैः ।

एकोनविंशतिदोषैर्मुक्तः कायो यथाविधिः ॥ २ ॥

भावार्थ—“ ध्यानमां प्राये वाणी अने मननीज नियंत्रणा ( कवने राख-  
वापाणुं ) धाय डे, पण कायोत्सर्गमां तो कायानी पण नियंत्रणा धाय डे, माटे ध्यान  
करतां कायोत्सर्गनुं मोडुं फळ डे ( ? ). क्रियामां आसक्तिवाला पुरुषोए उज्जा र-  
हेवा वरे तंदा शयन विगोरेए करीने ओगणीश दोषे करीने रहित एवो कायोत्सर्ग  
यथाविधि करवो. २. ”

एकांत स्थानमां लांचा हाथ राखीने कायोत्सर्ग करवामां आवे छे ते, कायो-  
त्सर्गनिर्युक्तिमां कहेक्की घोरगङ्गयखंजाइ० ए गाथामां कहेदा ओगणीश दोष  
रहित, उज्जा रहीने अथवा शयनादिक वरे करवो. आदिनुं ग्रहण कर्तुं डे माटे  
वेता वेता पण करी शकाय डे. तेमां ठडास्थ अवस्थामां तीर्थिकर अने जिनकष्टिप  
मुनि विगोरे तो उज्जा रहीनेज कायोत्सर्ग करे डे; केमके तेओ वेसबुं, सुबुं विगोरे  
कांड करता नयी. कदाचित् जिनकष्टिप वेसे डे, त्यारे पण ते उत्कटिक आसनेज  
वेसे डे, अने सुबे तोपण तेज आसने रात्रिना ब्रीजा प्रहरे सुबे छे. स्यविरकष्टिपए  
पेतानी शक्ति प्रमाणे कायोत्सर्ग करवो, पण तेना ओगणीश दोष तजवा. आ प्र-  
संग उपर एक वृत्तांत वरवीए डीए.

### सुस्थित मुनिनुं दृष्टान्तः.

श्री राजगृह नगरमां दर्ढर नामना देवताए श्रेणिक राजाना समकितनी  
परीक्षाधी प्रसन्न थझेन तेने अद्वार सरनो एक हार, दिव्य वस्त्रयुगळ तथा वे कुं-  
कल आप्यां हतां. राजाए हार चेत्तणाने आप्यो, अने वस्त्र तथा कुंकल सुनंदाने  
आप्यां. ते जोझेने चेत्तणाए खेद पामीने राजाने कहुं के “ जो तमे मने ते वस्तुओ

नहीं आपो तो हुं मारुं जीवित तजी दइग. ” राजाए कहुं के “ तेन जम रुचे तेम कर. ” ते सांजलीने चेङ्गणां घणों रोप चब्बो. तेयी पहेल्लना गोखमां एकझी आर्तध्यान करती वेडी. रोपनो आवेश होवाथी रात्रि उत्तां तेन निष्ठा न आवी. ते बखते ते गोख नीचे सेचनक हाथीनो महावत अने मगधसेना नामनी दासी परस्पर बातो करता हता. तेमां दासीए पोताना जार महावतने कहुं के “ काज्जे दासीओनो पहोत्सव डे, तेयी तुंभने आ चंपकमाला हाथीना कंउमांधी उत्तारीने आप, जेदी ते पहेरीने हुं मारी जातिमां अधिक शोना पासुं. ” महावत योद्धो के “ राजा-नी आङ्गाना जंगनुं छुःख सहन करता हुं सर्व नयी. ” दासीए कहुं के “ त्यारे हुं भाण तजीश. ” महावत योद्धो के “ हुं ब्रह्मदत्त चक्रीनी जेवो मूढ नयी, के जेधी स्त्रीना वचनयी चितामां प्रवेश करथा तेयार थाउं. ” ( ते ब्रह्मदत्तने वकराए वोप आप्यो हुतो, विगेरे कथा पूर्वदाखाइ गइ डे.) ते सांजलीने दासी योद्धो के— “ हुं मरुं तो मारा जीवनी जाउं, तेमां तारुं शुं गयुं ? तुं तो वीजी स्त्रीमां आस-क्त थइ मारुं नाम पण नहीं ले. परंतु तारुं मन पथ्यर करतां पण वथारे कठण देखाय डे. ” इत्यादिक तेमनी बातो सांजलीने चेङ्गणाए विचार्यु के “ हुं जो प्राणनो त्याग करुं, तो तेमां राजाने कांइ पण हानि थवानी नयी. तेने तो वीजी पांचसो राणीओ डे, पण हुं तप संयमादिक कर्या विना मनुष्यनन्मयी छ्रष्ट थाउं. ” एम विचारीने ते पाड़ी राजा उपर अनुरागवाळी थड.

एकदा ते हास्तो दोरो तुटी गयो. पेज्जा दर्ढरांक देवताए हार आपती ब-खते कहुं हतुं के “ आ हार तुथ्या पड़ी तेने जे सांधशे ते मस्तक फाटवाथी मरण पामशो. ” राजाए शहेरमां पट्हं बगमाड्यो के “ जे आ अद्वार सस्तो हार सांधी आ-पशे तेने राजा एक बाल दिनार आपशे. ” ते सांजलीने एक दृश्य मणिकारे पोताना ऊँडना सुख मोडे ते पट्हं ग्रहण कर्यो. ते बखते राजाए तेने अर्धो लालू छव्य प्रथम आप्युं अने कहुं के “ ज्यारे हार पूरो संधशे त्यार बाकीनुं छव्य आपगुं. ” पड़ी ते हार द्वाज्ञे ते मणिकारे पोताना घरना एक ज्ञागमां सरखी चूमिपर ते हार भूख्यो, पड़ी एक दृश्यम दोरी धी तथा मध्यो वासित करीने मोतीनां चिङ्गमां परोववा ल्लागयो. पण गोतीनां चिंद बोकां होवाथी तेने सांधशाने सर्व थयो नहीं. तेवाप्पां मधनी गंधधी गणी कीमीओ त्यां आवी. ते दोरीनो डेनो पकडीने धीमे धीमे मोतीनां चिङ्गमां चाझी, एड्जे ते दोरो परोवाइ गइ. पड़ी ते मणिकारे गांड वाळीने हार सांधी

दीयो; परंतु तत्काल तेनुं पस्तक फाटी गयुं, तेथी ते मृत्यु पामीने तेज गाममां वानर थयो. तेने एकदा दरेक धेर फरतां फरतां पोतानुं घर तथा पुत्रादिकने जोइने जाति-संरण थयुं. ते जोइने पुत्रो उपरनी अनुकंपायी तेणे ‘हुं तमारो पिता दुं’ एवा अक्षर पुत्रनी पासे द्वाख्या. ते जोइने तेना सर्वे स्वजनोए आश्रयं पामी विचार्युं के “आहो ! कर्मनी गति केवी विचित्र डे ! ” पडी ते वांने अक्षर द्वाख्या के “वाकीनुं इच्छा राजाए तमने आप्युं के नहीं ? ” पुत्रो बोध्या के “नथी आप्युं.” ते सांजलीने तेने राजा उपर थणो देष उत्पन्न थयो. पडी ते हारनी चेती करवा मोटे चिद्र जोता द्वाख्यो. एकदा चेतणा राणी सायंकाळे वावमां स्नान करती हतो, ते वयने तेणे सर्वे अबंकारो उतारीने वहार मूर्क्यां हतां, तेमां ते हार देखीने द्वाग जोइ वानराए ते हार गुप्त रीते उपामी द्वीयो अने पोताना पुत्रने आप्यो. राणी न्हाइने अबंकार पहेरवा द्वागी, ते वयने हार जोयो नहीं, तेथी ते विद्युती थड गड. तेणे ते वृत्तांत राजाने कयो. राजाए अन्नयकुमारने बोद्धावीने कंगुं के “आ हार सात दिवसमां शोधी द्वाव, ते शिवाय तारो जीववानो उपाय देखातो नथी.” पडी अन्नयकुमार मंत्रीए ते हारनी निरंतर शोध करवा मांझी.

हवे ते नगरमां कोइ आचार्यना पांच शिष्यो आव्या हुता, तेमनां शिव, मुव्रत, धन्य, जोणक अने मुस्तिष्ठ एवां नाम हतां; तेमांयी सुस्थित मुनि जिनक-ध्यीपणुं अंगीकार करवानी इच्छायी तेनी पांच प्रकारनी जावना जावता हुता, ( तुक्षना करता हुता ). तेनां नाम आ प्रमाणे—

**तवेण सत्तेण सुत्तेण, एगत्तप्त वद्वेण य ।**

**तुद्वाणा पंचद्वा बुत्ता, जिणकप्पं पमिवज्जर्ज ॥ १ ॥**

जावार्थ—“ जिनकध्य प्रतिपन्न करवाने इच्छनार मुनिने मोटे तप, सत्त्व, सूत्र, एकत्व अने वळ ए पांच प्रकारनी तुक्षना कही डे. ”

पहेद्वी तपन्नावना आ प्रमाणे डे के—प्रथम ते पोरसी विगेरे तपनी अन्न्यास करे डे, तेमां गिस्तिन्दीमां उतरता सिंहनी जेप कृधानो विजय करवाने मोटे त्रेणगारुं तप करवूं. जेप कोइ पर्वतमांयी नीकलती नदी जलयी जरपूर होय, ते नदीने उतरतो सिंह सरख मार्ग आव त्यां सुधी वक्र गतिए चाव्ये, तेवीज रीते एक एक उपवासनी वृच्छि करतां कांड पण हानि न थाय तेपठ मासना उपवास करवा सुधी तपने वृच्छि

प्रमाणे. वीजी सत्त्व ज्ञावना ए प्रमाणे डे के—रात्रिने वखते प्रथम उपाध्रथयमां रहीने कायोत्सर्ग करतां सर्प, चोर, गोपाल तथा जयंकर संग्राम विग्रेरथी जय पामे नहीं, अने रात्रिना पहेद्वा त्रण प्रहर सुधी ध्यानमांज स्थित रहे, वीकुल निदा के नहीं, तेने कायोत्सर्ग करवानां पांच स्थान डे. तेमां प्रथम उपाध्रथयमां, वीजु उपाध्रथ वहार, वीजु चौडामां, चोये शून्य घरमां अने पांचमुं समझानमां. आ स्थानमां ध्यानमप्प रहेतां जयंकर स्वरूपवाला देवताओ वीकुल तोपण किंचित् जय पामे नहीं; सर्वत्र निर्जय रहे. [आ ज्ञावनामां जय ने निष्ठानो जय करवानो डे]. वीजी सूत ज्ञावना एवी रीते डे के—नंदी सूत विग्रेरे सर्व शास्त्र पोनाना नामनी जेप कोइ पण वखते नूद्वे नहीं, कठे राखे अने काळना प्रमाणने सूत्रने आधारे वरावर जाए. वासोच्छ्वास, भाण, स्तोक, मुहूर्त तथा पोरसी विग्रेरे काळना प्रमाणने, दिवसे तथा रात्रिए मेंप्रादिकथी आकाश छवयुं होय तोपण यथास्थित जाए. तथा पमिलेहणनो काळ, वे टंकना प्रतिक्रमणनो काळ, जिझानो काळ तथा विहारादिकोनो काळ पण देहनो ग्राया न देखाती होय त्यारे पण वरावर जाए. चोथी एकत्व ज्ञावना एवी रीते डे के—जो के प्रथम शृहस्थिपणानुं स्त्री धनादिक संवेदी ममत्व साधुओए डोकी दीधुं डे, तोपण पाऊळधी आचार्यादिक पद प्राप्त थवाथी गच्छ विग्रेरे उपर ममत्व उत्पन्न थाय डे; तेवो ममत्व न करवो, अने हष्टिपात, आलाप, परस्पर कुशल पृच्छा अने कथाव्यतिकर कहेवा विग्रेनी जे प्रथम प्रवृत्ति हती, ते सर्वनो त्पाग करवो. डेवट देह अने उपधि आदिकनो ममत्व पण तजवो. पांचमी वळ ज्ञावना आ प्रमाणे डे के—तप प्रसुखना वशाथी जो शरीरनुं वळ कीण थयुं होय तोपण चित्तना धैर्यनो त्पाग करे नहीं. महा धोर परीसह उत्पन्न थाय, अथवा वीजां छुर्पर प्राणीओना जयजनक उपसर्गो थाय तोपण योतानुं धैर्य मूके नहीं. आ प्रमाणे पांच ज्ञावनाथी कांड पण द्वोज न पामे तो पडी जिनकष्ठने अंगीकार करी शकाय डे. सुस्थित मुनि वीजी सत्त्व ज्ञावनाए करीने आत्माने ज्ञावना हता. तेमां पण उपाध्रथ वहार रहीने कायोत्सर्ग करवासूप वीजां सत्त्व योगनी ज्ञावना करता हता.

ते पांचे मुनिओ अजयकुमार मंत्रीनी यानद्वालामां मास कष्य रद्या हता. हवे अजयकुमारे घणी शोध करी तोपण हार मल्यो नहीं तेथी “ तु दिवस वीजी गया अने आजे सातपो दिवस डे, कोण जाए काळे शु थायो ? ” इत्यादि

विचारथी ते शोकातुर थयो सतो आजे तो साधु पासे जड्ने तेमनी पर्युपासना करुं. एवो विचार करीने उपाश्रयमां आवी रात्रिपोसह लङ्घ त्यांज रात्रि रह्यो, ते समये सुस्थित मुनि प्रतिक्रमण करीने उपाश्रयनी वहार जड्ह कायोत्सर्गे रह्या.

अर्हीं पेद्वा मणिकारना पुत्रने विचार थयो के “ जो कदाच राजाने आ हार मारी पासे डे एम खवर पमशो, तो आखा कुडंच सहित मारा जीवितनी हानि थझो.” पडी तेणे ते हार बानरने पाडो आप्यो. माणसो उपर कृपावान बानर ते हार बीजे कांड न मूकतां साधुना उपाश्रय पासे आव्यो, त्यां मुनिने उपाश्रयनी वहार एकद्वा कायोत्सर्गे रहेद्वा जोड्ने ते हार मुनिना कंठमां पहेरावी दीधो. हवे उपाश्रयमां रहेद्वा बीजा चार साधुओ एक एक प्रहरना बारा प्रमाणे सुस्थित मुनिना शरीरने प्रमार्जना ( तेनी संज्ञाल देवा ) आवता हुता. तेपां प्रथम शिवसाधु पहेळ्ये प्रहरे कायोत्सर्गे रहेद्वा सुस्थित मुनिना देहनुं प्रमार्जन करवा माटे आव्या. ते बखते तेमना कंठमां दिव्य कांतिवाळो हार जोड्ने तेणे धार्यु के “ जरु जेने माटे अन्नयमंत्री चिंतातुर डे तेज आ हार जणाय डे.” पडी सुस्थित मुनिना देहनुं प्रमार्जन करीने पहेलो प्रहर पुरो थये उपाश्रयनी अंदर निसिहि करीने प्रवेश करतां शिवसाधु बोद्ध्या के “ अहो ! महान्नय प्राप्त थयुं.” ते सांजली अन्नये पूलचुं के “ निर्जय एवा मुनिओने जय क्यांधी होय ? ” साधुए कल्युं के “ पूर्वे अनुज्ञेद्वा जयनुं स्मरण थयुं.” अन्नये कल्युं के “ हे पूज्य ! ते वृत्तान्त जाणवा इच्छुं दुं.” त्यारे मुनि बोद्ध्या के—

अवन्ति नगरीमां सोम अने शिवदत्त नामे वे जाइओ रहेता हुता. ते वने धन मेलववानी इच्छाथी व्यापार करवा माटे सौराष्ट्र देशमां गया. त्यां अनेक प्रकारना अर्धमे तथा कर्मादानना वेपार करीने तेमणे थाणुं झच्च मेलवचुं. पडी पोताना वर तरफ आववा तेयार थया. ते बखते सर्व धन एक वांसलीमां जरीने मोद्याज्ञाए ते वांसली पोतानी केमे वांधी. मार्गमां चाढतां तेने विचार थयो के “ जोहुं आ नाना जाइने मारी नांखुं तो आ धननो जागीदार कोइ रहे नहीं, अने सर्व धन मारा हाथमांज रहे.” एम विचार करतो करतो ते नाना जाइ सहित गन्धवती नदी पासे आवी पहांच्यो. एट्ट्वे तेणे विचार्यु के “ आ द्रव्यना प्रजावधी प्रतिक्रिणे मने रौद्र ध्यान थया करे डे, माटे आ अर्नथ करनारी वांसलीने नदीना मोद्य झहमांज नारवी दर्हे.” एम विचारीने तेणे तरतज नदीना मोद्य धरामां ते

वांसळी नांखी दीधी, ते जोड्ने नाना जाइए कर्यु के “ अरे जाइ ! आ तमे शुं कर्यु ? ” योटो जाइ वोद्यो के “ छुए बुच्छि सहित में वांसळीने अगाध जलमां नांखी दीधी डे. ” एम कहीने तेणे पोताना छुए विचारी नाना जाइने कथा, ते सांजळीने नानो जाइ पण वोद्यो के “ तमे वहु सारु कर्यु, मारी पण तेवीज छुए बुच्छि घती हती, ते पण नाश पामी. ” पड़ी ते वन्ने जाइओ पोताने घेर आ-व्या, अहीं ते वांसळीने एक कुधित मत्स्य गढ़ी गयो, ते मत्स्य जारे घइ जवायी तरतज कोइ एक मच्छीमारनी जालमां पकड़यो, तेने मारीने मच्छीमार चैयामा वेचवा आव्यो, ते वन्ने जाइओनी माताए मूळ्य आपीने ते मत्स्य वेचातो ली-धो, अने घेर आवीने पोतानी दीकरीने विदावा आप्यो, ते दीकरीए मत्स्य का-पनां तेमां वांसळी दीकरी, तेने भानी रीते खाइने पोताना खोलामां संतानी, ते जो-इने माताए पृछ्युं के “ ते शुं संतानद्यु ? ” पुत्री वोद्यी के “ कांड नहीं. ” माता खात्री करवा माटे तेनी पासे गइ, एट्ट्वे पुत्रीए तेने हाथमां रहेज्ञा भरावरे मर्म-स्थानमां महार कयो, तेथी ते मोझी मृत्यु पामी, पड़ी गजराइने ते अमारी वे-न एकदम उडी, एट्ट्वे तेना खोलामांयी ते वांसळी जूमिपर पक्ती अमे साकाद जोइ, तेथी अमने वन्ने जाइओने विचार घयो के “ अहो ! तेज आ अनर्थ कर-नार धन डे के जेने अमे फेझी दीयुं हतुं ! ” इत्यादि विचारीने मातानी उर्ध्व-किया करीने अमे वन्ने जाइओए वैराग्ययी ते वांसळीनो त्याग करी दीक्षा ग्रह-ण करी, माटे हे श्रावक ! ते जय अत्यारे मने याद आव्युं, तमेज जुओ के ते अर्थ (धन) केवुं जयकारी डे ? ” अज्ञय वोद्यो के “ हे पूज्य ! आपनुं वाक्य स-त्य डे, धन सेहवाला जाइओमां पण परस्पर वेर करावनारुं छे, सेंकमो दोप उत्पन्न करनारुं डे अने हजारो छुःखोने आपनारुं डे, तेना जययी आपे जे आ चारित्र लीयुं, ते वहु सारु कर्यु डे; केमके छुःखने आपनारा एवा अनेक विकल्पोने करा-यनारुं धन डे.

“ आ द्युपांत सांजळी अनयकुमार धनतुं छुःखदायी परिणाम जाएया डः तां पोते धननो आदर कयो डे एम विचारीने ते शिवसाधुनी तथा कायोत्सर्गे रहे-द्वा सुस्थित मुनिनी मशांसा करवा द्वाग्यो. ”

३४७

इत्यद्रदि नपरिमितोपदेशप्रापाददृत्ती विश्वतिमसंन्नस्य  
सप्तनवत्यधिकषिद्विततमः प्रयेषः ॥ ३४७ ॥

## व्याख्यान २९८ मुं.

सुस्थितमुनिवालुं दृष्टांतं आगळ कहे डे.

**तथैव सुस्थितं साधुं, कायोत्सर्गजुपं मुदा ।  
देहप्रमार्जनार्थाय, द्वियामे सुव्रतो ययौ ॥ १ ॥**

**नावार्थ—**“तेज प्रमाणे हर्षपूर्वक कायोत्सर्गमे सेवनारा सुस्थित मुनिनादेहनुं प्रमार्जन करवा माटे बीजे प्रहरे सुव्रत साधु गया.” आ शोकमां सूचवेदा सुव्रत मुनिनो संबंध आ प्रमाणे डे—

हवे बीजे प्रहरे सुस्थित मुनिना देहने प्रमार्जना माटे सुव्रत साधु उपाध्यनी वहार नीकल्या. ते पण पोतानुं कार्य करीने हार जोड़ बीजो प्रहर पुरो थये पात्रा बल्या, अने “अहो ! महा जय उत्पन्न थयुं” एम वोद्या. ते सांजली-ने अन्यकुमार मंत्रीए पूछ्युं के “ हे पूज्य ! जेमणे यृहकार्योनो सर्वथा त्याग कर्यो डे एवा मुनिने मोटुं जय शुं ? ” साधु वोद्या के “ पूर्वे अनुज्ञवेद्युं जय स्मरणमां आव्युं.” मंत्रीए तेनुं स्वरूप पूछ्युं, एव्वले सुव्रत मुनि वोद्या के “ अंग-देशने विषे व्रज नापना गाममां मदहरनो पुत्र हुं सुव्रत नामे हतो. मारे सीरिज्जिता नामनी पली हती. एकदा ते गाममां चोरो घेता. तेपना जयथी सर्व लोको नासी गया. हुं एकान्त स्वल्पमां संताइ गयो. ते वातथी अजाणी मारी स्त्रीए चोरोने कहुं के “ तमे स्त्रीओने केम हरी जता नथी ? ” तेना आवा वाक्यथी चोरोए तेनो अनिमाय जाणीने तेनुं हरण कर्युं, अने पोताना पद्मीपतिने अर्पण करी. पड़ी मारा स्वजनो मने वारंवार कहेवा द्वाग्या के “ तुं वयने वंधनथी केम छोमावतो नथी ? ” तोपण हुं तेनी शोध करतो नहोतो. अन्यदा स्वजनोनो वहु आग्रह थवाथी हुं एकदो चोरनी पद्मीमां गुप रीते गयो. त्यां एक दृष्ट मोशीने घेर रहो. एक दिवस में ते मोशीने मारी स्त्रीतुं हरण थयेद्युं जणाव्युं. तेथी ते दृष्टाए पद्मी-पतिने घेर जड़ने ते स्त्रीने कहुं के “ तारे माटे तारो पति अहों आव्यो डे.” ते सांजली सीरिज्जिता वोद्यी के “ आजे पद्मीपति वहार जवानो डे, तेथी तेना गया पड़ी सांजे मारा पतिने मारी पासे मोकझजो.” पड़ी ते दृष्टाना कहेवाथी हुं मारी स्त्री पासे गयो. तेणे मारं सारी रीते आसनादिकथी सन्मान कर्युं. तेवामां पद्मी-

पति अपशुकन थवाथी पात्रा आव्यो, तेथो मारी स्त्रीए मने पञ्चगनी नीचे संतानी की दीधो. पद्मीपतिपण आवीनेतेज पञ्चग उपर वेत्रो, तेथी हुं जयनीतथयो. पड़ी मारी स्त्रीए पद्मीपतिने पूछयुं के “ हे पद्मीश ! जो कदाच मारो पति अहों आवे तो तमे मने शुं करो ? ” तेणे जवाब आप्यो के “ सत्कार पूर्वक तने तारा पति ने पात्री सौंपी दाँच. ” ते सांचलीने तेणे वक्र भृकुटी करीने संझा करी, एटजे ते फरीथी बोध्यो के “ जो हुं तारा पतिने जोऽनं, तो तेनो वध करुं. ” एटजे मारी स्त्रीए नेत्रनी संझाथी मने देखाड्यो के तरतज मारा केश पक्कीने मने बहार काढ्यो अने द्वीपी वाधरथी मने वांधी लीधो. पड़ी पद्मीपति वेगोर सर्व जनो सृष्ट गया. मने वांध्यो हतो त्यां केटज्ञाएक बुनरा आव्या, तेमणे मारां सर्व वंधन जडाण कर्या. तेथी हुं वंधनमुक्त थयो. पड़ी ते चोरनाज स्वमगथी में पद्मीपतिने मारी नांख्यो, अने मारी स्त्रीने केश पक्कीने खेंची अने कर्णु के “ जो बूष पासीश तो हुं तारे शिर पण छेदी नाखीश. ” एटजे ते स्त्री मान घरी रही. पड़ी तेने छाझने हुं बहार नीकली चाढ़वा मांड्या. ते मारी स्त्रीए मार्गमां कंबज्ञ फाकीने तेना कक्कानानांखवा मांड्या. प्रातःकाळ हुं तेनी साथे एक वांसनी जाळमां विसापो खावा माटे रोकायो. थोर्मीवारे मारी स्त्रीए नांखेव्हा कंबज्ञना कक्काने अनुसारे ते पद्मीपतिना अनुचरो आवी पहोच्या, अने मने खुब मार मार्यो. पड़ी मारां पांच अगोने पांच स्त्रीदाथी जमी लइ मने पृथ्वी साथे चोटाकी दीधो, अने मारी जार्याने छाझने तेओं पात्रा चाढ्या गया. थोर्मीवारे एक वानर मारी पासे आव्यो. ते मने जोऽने मूर्चा पास्यो. केटज्ञीक वारे सावध छाझने ते शब्द्योच्चरणी ( शब्द्यनो उद्धार करनारी ) अने संरोहणी ( घा स्त्रावनारी ) औंपदी छाझने मारी पासे आव्यो. तेनाथी तेणे मने शब्द्य रहित कर्यो. पड़ी मारी समीपे तेणे अक्षरो द्वारया के “ हुं तारा गाममां सिद्धकर्मा नामनो वैद्य हुतो; ते वरदते पण में तने साजो कर्यो हुतो, ते हुं मरीने आ वनमां वनर थयो हुं. आ वनमां कोइ एक वानरे मने प्रहार करीने मारो सर्व परिवार लइ लीधो बे, हुं यूथयी ज्ञाए थयेद्वा अहों तारी पासे आव्यो हुं. तने जोऽने मने जातिसंरण थयुं तेथी में तने शब्द्यथी मुक्त कर्यो बे. हवे हुं पण मारो सहायनूत था, जेथी मारा शत्रु वानरनो हुं पराजय करुं. ” ते सांचलीने हुं ते मर्कटनी साथे गयो. त्यां बन्ने पर्कटोनुं युद्ध जारु थयुं. तेमां मारी साधेना मर्कटनो पराजय थयो, त्यारे तेणे मने कर्युं के “ ते मारी सहायता केम न क-

री ? ” में कहुं के “ तमे वने स्वप्न अने वर्णादिके करीने समान देखाओ गो, तेथी मित्र कोण अने तेनो शत्रु कोण ते हुं ओळखी शक्यो नहीं, ” ते सांजलोने ते मर्कट निशानी माटे पोताना कंठमां पुण्यमाला नांखीने फरीथी युद्ध करवा गयो. ते वस्ते में वीजा बानरने पथरखडं मर्मस्थानमां प्रहार कर्यो, जेथी ते मृत्यु पाम्यो. पड़ी हुं मारा मित्र बानरनी रजा द्वाने पांडो चेतनी पढ़ीमां गयो. त्यां मारी जार्या साथे आदिंगन करीने सुतेज्ञा पढ़ीपतिना जाइने में खदगबदे मारी नांख्यो, अने वलात्कारधी मारी खीने द्वाने मारे घेर आयो; परंतु सर्व प्रकारनां छुँखनो अनुज्ञव थवायी मने वैराग्य उत्पन्न थयो, तेथी में तत्काल संसार गो-मीने चारित-ग्रहण कर्युं. हे मंत्री ! आजे उपात्रयमां प्रवेश करतां ते जयतुं स्मरण थयुं, ” ते सांजलीं मंत्री बोद्ध्यो के “ हे मुनि ! आपे ते खीनो संग गोमीने चारित दीधुं ते धृणुं उत्तम काम कर्युं हे. ”

पड़ी त्रीजे प्रहरे धन्य मुनि सुस्थित मुनिना देहने प्रमार्जवा गया. ते पण तेवीज रीते हारं जोझैने “ अहो ! मोडुं जय उत्पन्न थयुं ” एम बोद्धता उपात्रयमां आव्या. अन्नयकुमारे पूर्वशुं के “ हे पूज्य ! वीतरागना मार्गमां रहेद्वाने अति जय क्यांथी होय ? ” मुनि बोद्ध्या के “ पूर्वतुं अनुज्ञवेद्वुं जय याद आव्युं, ” मंत्रीए कहुं “ हे स्वामी ! ते दृत्तान्तं प्रकाशित करो. ” त्यारे मुनि कहेवा द्वाग्या के अवन्ति नगरीनी सर्वपे एक गाममाना रहीश कोइ कुद्रपुत्र ( कणवी ) नो पु-त्र हुं धनक नामनो डुं. मारा मातापिताए मने अवन्तिमां परणाव्यो हतो. एकदा हुं सायंकाळने वस्ते मारे सासेर जतो हतो. संभ्यासमय थतां हुं अवन्ति नगरीना स्मशाने जड़ पहोँच्यो. त्यां एक युवतीने रोती सांजलीने में तेने पूर्वशुं के “ तुं केम रहे छे ? ” ते बोद्धी के “ जे माणस कदी छुँख पाम्यो नथी अथवा जे छुँख भांगवा समर्थ नथी अथवा जे वीजातुं छुँख जाए छुँखी थतो नथी तेवा माणसने छुँखतुं दृत्तांत कहेवुं नहीं; अने जे छुँख पाम्यो छे, जे छुँखनो नियह करवा समर्थ छे अथवा जे पारका छुँखे छुँखीओ थाय छे तेने छुँखनी बात कहेवी. ” ते सांजलीने में कहुं के “ हुं तारा छुँखतुं निवारण करीजा. ” त्यारे ते बोद्धी के “ आ शूली उपर चमावेज्ञो माणस मारो स्वामी छे. ते निर्देष भतां तेने राजाए आवी दशा पमारी छे. हुं राजपुरुषोथी जय पामती. ‘ मने कोइ जाए नहीं ’ एम विचारीने आ संभ्यासमये मारा स्वामीमाटे जोजनादिक द्वाने आ-

वी छुं; पण मारुं शरीर नातुं होवाथी हुं तेने जोजन कराववा शक्तिमान् घती नदी, तेथी हुं रुदन करुं छुं। ” ते सांजळीने में तेने कहुं के “ मारी पीउ पर चक्रीने तुं तारा पतिने जोजन कराव। ” त्यारे तेणे पने कहुं के “ तारे नीची इष्टिन राखवी, उंचुं जोवृं नहीं ; जो उंचुं जोइशा तो हुं पतिवता होवाथी द्वजा पार्मीश। ” एम कहीने ते मारी पीउ पर चक्री पोताना कार्यमां प्रवृत्त थइ, थोकी-बारे मारा पृष्ठ उपर रुधिरनां बिंकुओ परवा द्वाग्यां, तेथी में कांइक उंची इष्टि करी जोयुं तो डरावने ते माणसनुं मांसादिक लेती अने तेने कापी कापी-ने पात्रमां नाँखती में तेने जोइ, आवा वीजत्स कर्मने जोइने में तेने पक्ती मु-की, अने जपथी हुं गमना दरवाजा पासे आवेद्वा एक यक्कना देरामां पेडो, मारी पाउलज दोकती। आवती तेणे मने जोयो; एट्टेमारो एक पग देराना उमरानी बहार अने एक पग अंदर हतो, तेज वसते तेणे बहारना पग उपर तेज अ-सिवने प्रहार कयों, अने तेनाथी कपायेद्वा मारो उरुपदेश लइने ते नासी गद, पडी हुं धारेदेवीनो पासे करुण स्वरे रुदन करवा द्वाग्यो, तेथी देवीने करुणा उत्पन्न थइ; एट्टेकोइ शूलीए चमावेद्वा सजीवन माणसनो उरुपदेश कापी द्वा-वीने मारा पग साथे सांवी तेणे भने साजो कयों, पडी हुं रात्रिनेज वसते मारा स-सराने घेर गयो, त्यां घरमां दीबो वळतो होवाथी धारना उज्जमांथी घरनी अं-दर तुं थाप ढे ते हुं जोवा द्वाग्यो, तो तेज स्वीने अने तेनी माने मध मांस खाती में जोइ, तेनी माए तेने पृउच्छुं के “ अहो पुत्री ! आवृं सुंदर ताजुं मांस तुं क्याथी द्वावी ? ” ते बोद्धी के “ हे माता ! आ मांस तारा जमाइनुं छे, ” एम कहीने तेणे सर्व द्वचान्त वल्लो, त्यारे तेनी माता बोद्धी के “ एम करुं तने योग्य न-होतुं, ” पुत्री बोद्धी के “ हुं तुं करुं ? तेणे मारा वचन प्रमाणे कर्यु नहीं, अने उं-चुं जोयुं, तेथी में तेम कर्युं, ” आ ममाणे ते घनेनी वातो सांजळीने हुं पागो फरी देवीना उत्पन्नां आव्यो, अने त्यां रात्रि निर्गमन करी, कोइ साधु पासे धर्मो-पदेश सांजळीने में दीक्षा ग्रहण करी, हात्यमां आ सुस्थित मुनिनी सेवा करें छुं, आजे ते पूर्वुं अनुजवेद्वुं नय स्मरणमां आव्युं, ” ते सांजळीने अभ्यकुमा-रे तेमनी अति प्रशंसा करी,

हवे दोये प्रहरे जोएक मुनि प्रमार्जन निमित्ते गया, तेऽयो पण हार जो-इने ‘ महा नय उत्पन्न थयुं ’ एम बोद्धा, अन्यकुमारे-पृज्ञतां ते जोएक साधु

पोतानुं पूर्वं चरित्रं कहेवा लाभ्या के “ अवन्तिनगरीमाँ जोएक नामनो हुं सार्थ-  
वाह हतो. मारी स्त्री उपर हुं अति रागवान हतो.” एक वखत मारी जार्याए मने  
कहुं के “ तमे मने मृगपुच्छं द्वावी आपो.” में कहुं के “ हुं क्यांथी द्वावी  
आपुं ? ” ते बोझो के “ राजगृहं नगरना राजाने घेर डे, त्यांथी द्वावी आपो.”  
पड़ी हुं राजगृहं नगरना उद्यानमां गयो, त्यां स्वरूपवान वेद्यानो समृहं बेलं पुरु-  
षोनी साथे क्रीमा करतो में जोपो, तेमांथी एक मुग्धसेना नामनी छुंदर युवतीने  
कोइ विद्याधरे हरण करी. में ते विद्याधरने वाणीथी वींधी नारब्यो, एट्के तेना  
हायमांथी कूटीने ते युवती सरोवरमां पमी, तेमां उगेद्वा कमलो द्वाइने ते वहार  
नीकली अने मने कमलनुं जेटां करी मारी साथे स्नेह करवा द्वागी. त्यार पड़ी  
तेणे मने आगमननुं कारण पृथग्युं. एट्के में पण स्त्रीनी भ्रेणाथी करेद्वा प्रया-  
णनुं बृत्तान्त निवेदन कर्यु. ते बृत्तान्त सांजलीने ते युवतीए मने कहुं के “ खरेवर  
तमारी स्त्री असती जणाय डे. तेणे कपट करीने तमने ब्रेतर्या डे.” ते युवतीनुं  
आ वाक्य मने सत्य द्वाग्युं नहीं. मने एवो ज्ञास थयो के “ स्त्रीओ वीजी स्त्रीना  
गुण सांजलीने खुशी थती नवी, पण ईर्षाङ्क थाय डे.” पड़ी हुं ते मुग्धसेना वेद्याने  
घेर गयो. तेणे घणा उपचारोथी मारी सेवा करी. एक दिवस ते वेद्याए श्रेणिक  
राजा पासे वृत्त्य करवानो आरंज कर्यो, ते वखते हुं तेनी साथे गयो हतो. सर्व  
जनोनां हृदय वृत्त्यमां द्वीन थयेद्वां जोइने में मृगपुच्छं हरण कर्यु; पण तेना रक्षके  
मने दीर्घो एट्के तेणे राजा पासे जाहेर कर्यु. ते गुन्हामांथी मने मुग्धसेनाए गो-  
माव्यो. अन्यदा ते मुग्धसेनाने द्वाइने हुं मारा गाम तरफ चाढ्यो अने गामनी वहा-  
र उद्यानमां ते वेद्याने मुकीने रत्रे हुं गुप्त रीते मारे घेर गयो. ते वखते मारी जा-  
र्याने एक जार पुरुषनी साथे जोजन करती में जोइ. त्यार पड़ी मारी स्त्री काँइ  
काम माटे वहार गइ अने ते जार सह गयो. त्यार तेने में मारी नारब्यो. मारी स्त्री-  
ए आवीने तेने परेद्वा जोपो. एट्के तरतज तेने उचकाने घरना वामामां एक खा-  
मो खोदी तेमां दाटी दीयो. ते सर्व स्त्रीचरित्रं जोइने पाड़ो हुं उद्यानमां पेढ़ी वे-  
द्या पासे आव्यो, अने तेने सर्व वात कही. पड़ी वेद्या साथे हुं राजगृहं नगरमां  
आवी तेने घेर घणा काल मुधी रह्यो. पड़ी वेद्यानी रजा द्वाइने हुं फरीथी मारी  
स्त्रीनुं चरित्रं जोवानी उत्कंठाथी घेर गयो. मारी स्त्री निरंतर मारी सेवा करवा  
द्वागी. में पण तेनुं चरित्रं प्रगट कर्यु नहीं. हवे ते हंभेशां पेढ़ा जारने ज्यां नेव्या

हती ते स्थाननी जोजनादिक नैवेद्यधी प्रथम पूजा करी पड़ी जपती हती। एक दिवसे मारी खीए मारे भाटे घेवर बिंगेरे मिठु जोजन तैयार कर्यु, ते बखते मैं-तेने कर्यु के “आजे प्रथमधी कोइने तारे आ जोजन आपवृं नहीं ; जे तने अधिक प्रिय होय नेनेज प्रथम आपवृं.” त्यसे ते बोझी के “मारे तपाराधी बीजो कोइ अधिक नथी” एम कहीने ते मारी हष्टि चुकावीने पेज्जा जासाला स्थलनी पूजा करता गइ, मैं ते जाणीने तेने कर्यु के “हे अपार्य प्रार्थिके ! ( मृत्युने मागनारी ! ) हजु मुधी हुं नाहूं चश्त्रि डोकती नयी.” त्यारे तेणे जबाब आप्पो के “मैं कोइ पण बखत तपारो आङ्गारुं उल्लूचन कर्यु नयी, हुं कोइ बखत कर्मवृं ब-चन पण बोझी नयी, अने शामांड काण चिना मने उपको आपो गो ? ” एम बोझीने क्रोध्यी अशुपात करती तेणे तपावेज्जा तेज्जयी जरेद्वो द्वोढानो तजो मारी उपर फेझ्यो, तेमायी उछलना तेजना विंकुओ एटजाँ बथां मारा शारीर उपर प-ड्यां के मारा शारीरनी बधी चामदी नाश पापी गइ, पड़ी हुं जययी एकदम नासीने महा मुडकेझीए मारी माना घर्यां पेसी गयो, त्यां जनांज हुं मूर्डी साइने पकी गयो, मारा स्वजनोए मने शतपाक तेज्ज बिंगेरे उपचारो करीने साजो कयो, पड़ी मैं सर्व कुटुंबने सत्य वृत्तान्त कहीने सावु पासे आनो धर्मेष्ट्रेजा सांजली ब-राययी दीक्षा ग्रहण करी, अत्यारे पण ते जयतुं मने स्वरण घंजुं.” ते सांज-ली अन्यकुमार बोध्यो के “हे पूज्य ! तपे तो वाय अने अच्यंतर बद्दे प्रकारना जययी रहित गो, पण अमेज वर्मना समूहयी जारे थता सर्व जयनी मध्ये रही-ए गीए.” इत्यादि यणी रीति तेमनी प्रशासा करीने अन्यकुमारे राज्यपोसह पूर्ण कयों।

सूर्योदय थयो त्यारे मंत्री उपाश्रयनी वहारनीकल्या, त्यां कायोत्सर्गमां त-त्यर अंतःकरणवाला सुस्थित मुनिना कंउमां पेज्जो हार जोइने तेणे विचार्यु के “अ-हो ! राजिना दोक प्रहरे ते चोर मुनिओ “पहाजय मास थयुं” एम बोध्या हता ते सत्य छे; केमके निःसृह मुनिओने तो कांचन महाजय रूपज छे, अहो ! सावुओनी निझोनता केवी छे ! राज्य सपान दिव्य हार जोज्जने पचिमांयी को-इए किंचित् पण द्वोन कयों नहीं, खरेवर सर्व जयो द्वोजमांज रहेद्वां छे.” आ-प्रमाणे विचारी सुस्थित मुनिने त्रण पदकिणा पूर्वक बांदीने तथा स्तुति करीने अन्यकुमार बोध्या के “अहो ! तमेज खरेखरो द्वोजने जीत्यो डे.” पड़ी ते

हार मुनिना कंठथी पोतेज उतारीने हर्ष पामता राजसनामां जइ श्रेणिक राजाने आप्यो, अने रात्रिनुं सर्व दृत्तांत कर्युं. ते सांजलीने राजाए मंत्रीने कर्युं के “मुनि-ओना गुणनी स्तुति विगेरे करवाथी अनन्त जबनां छुःख चिंतादिकनो नाश थाय डे; तो पछी तपारी अंहिक चिंतानो नाश थाय तेमां तो शुं कहेवुं! तेमना महिमाथी स्वयमेव सर्व छुःखनो क्रय थाय छे.”

“ उपाथ्रयनी वहार कायोत्सर्गमां उजा रहेदा सुस्थित साथु चारे प्रहर सुधी योगमां निवय रहा, ते बेह्ला तपाचारने आचरता सद्गुणी मुनीभर्ती हुं स्तुति करुं दुं.”

इत्यद्विनपरिमितोपेदशप्राप्ताददृत्तौ विश्वतितमस्तंजस्य  
अष्टानवत्यधिकद्विजाततमः प्रवैषः ॥ शृणु ॥

## व्याख्यान २९९ मुं.

तपनी प्रधानता विषे.

तपो मुख्यं हि सर्वत्र, न कुञ्जं मुख्यमुच्यते ।

हरिकेशी श्वपाकोऽपि, स्वःपूज्योऽन्नून्महाव्रतैः ॥ १ ॥

जावार्थ—“सर्वत्र तप्त मुख्य डे, कुल मुख्य कहेवारुं नथी. जुओ! हरिकेशी नामनो चामात्र पण पांच महाव्रतोथी देवने पूज्य थयो हतो.”

हरिकेशीमुनिनी कथा.

मयुरापुरीमां शंख नामना युवराजे धर्म श्रवण करीने दीक्षा ग्रहण करी. विहार करतां करतां राजपुर (हस्तिनापुर)मां आआ. त्यां ज्ञिकाने माटे तप्त-याद्युकावाळी नरक पृथ्वी समान अने देवना प्रजावधी दावानल रूप हुतवहा नामनी एक शेरी हती. ते शेरीमां जें कोइ चावतुं ते तरतज मृत्युं पामनुं हतुं. मुनिए ते शेरीने माणसना संचार विनानी जोइने पुरोहितना पुत्रने पूछयुं के “आ

शेरीमां माणसो चाहे भे के नहीं ? ” तेणे ‘ जड़े आ वली जाय ’ एवा छुट्ट आशयथी कहुं के ‘ चाहे भे.’ ते सांजली मुनि उतावला ते शेरीमांज चाला, तेपना तपना प्रजावधी ते शेरी शीतल थइ गइ. पेंझो पुरोहितनो पुत्र गवाक्षमा बे- भो हतो तेणे मुनिने ईर्ष्यापथिकी शोधता अने धीमे धीमे चालता जोइने “ अ- हो ! आ कोइ महानपस्ती भे ” एम जाणी विस्मित थयो. पत्ती एक दिवस ते- मुनि पासे उद्यानमां जइ तेपने नभीने ते बोध्यो के “ हे पूज्य ! मैं आपने पेढ़ी वे- रीमां जवानी अनुज्ञा आपी हती ते पापयी हुं शी रीने मुक्त थइश ? ” मुनिए कहुं के “ प्रबज्या ग्रहण कर.” ते सांजलीने तेणे दीक्षा द्वीषी. परंतु ग्रामण होवाधी तेणे जातिपद कर्यो. भेवट आयुष्य पूर्ण करीने स्वर्गे गयो.

त्यांथी चबीने गंगाने कांउ स्पशाननो स्वामी बज्जकोट नामनो चांकाळ हतो, तेने गौरी अने गांधारी नामनी वे स्त्रीओ हती. तेमां गौरीनी कुक्षिमां ते दृत्यन्त थयो. पूर्व जबे जातिपद कर्यो हतो तेथी कङ्गो अने उपाय थयो. चांका- लीने पण उपहास करवा द्वायक थयो. तेनुं वल नाम पाम्युं, ते कोइने पण जांक- वामां कुशल अने विष दृक्कनी जेम सैने देख करवा द्वायक थयो सतो घणा द्वोक्तेने उड्डेग पमारुतो दृच्छ पापवा द्वाग्यो. एकदा तेनो वंशवर्ग “ पानगोष्ठीमां तत्पर थयो हतो, ते यखते तेणे जांकचेष्टा करीने सर्वनी साये कद्वह कर्यो; तेथी ते- ओए तेने पोतावी दूर कर्यो. ते दूर जड़ने वेंडो, तेवार्मा त्यां एक सर्व नीकलथो. तेने जोइने ते सर्वे चांकालोए एकदम उड्डीने ‘आ जेरी साप भे’ एम कही तेने मारी नाख्यो. थोसी धारे धीजो दीपक जातिनो सर्व नीकलथो, ते विपरहित भे एम जाणीने तेओए तेने जवा दीधो. ते सर्व जोइने वले विचार्यु के “ विषधारी सर्व हणाय भे, अने दीपक ( निविंप ) सर्व मूकी देवाय भे, माटे सर्व कोइ पोतानाम दोषयी क्षेत्रा पोम भे. एम सिंच थयुं, तो हबे जद्य प्रकृति राखवी तेज योग्य भे.” एम विचारतो तेने जातिस्मरण थयुं. तेथी पोतानो स्वर्गवास तथा छुट्ट जातिपदते विचारतो ते धल कोइ संविध सातु पासे गयो. तेमनी पासे धर्ष थ्रवण करीने तेणे दीक्षा द्वीषी. पत्ती विहार करतां अन्यदा तिंकुर नामना उद्यानमां तिंकुक यक्षना स्वर्यमां ते मुनि <sup>१</sup> प्रतिपा धारण करीने रखा.

१ मदिरापान करवामा.

२ कायोनर्ग करीने रिथर रहें ते.

व्याख्यान शृणु मुँ. तपनी प्रथानता विषे हस्तिकेशी मुनिनी कथा. ( ८७ )

एक दिवस ते चैत्यमां कौशलिक राजानी पुत्री नज्ञा घणी सखीओ साथे परवरेदी आवी. त्यां यक्कने नमीने क्रीमा करवामां प्रवृत्त थइ. क्रीमा करतां ते सर्वेए वरने आदिंगन करवानुं मिप करीने चैत्यना जुदा जुदा स्तंजो पकड्या. तेमां राजपुत्री कायोत्सर्गे उच्चेद्वा ते मुनिने स्तंज धारीने तेमनेज आदिंगन करीने बोद्धी के “ हुं आ वसने वरी दुं. ” योद्धी वारे वर्णे इयाम अने विकराल एवा ते मुनिने जोइने ते चूम पामती सती थू करवा द्वागां. ते जोइने यक्कने क्रोध चड्यो. तेथी तेणे ते राजकन्यानुं मुख बांकुं करी नांख्युं शरीर कड्हुं कर्युं अने परवश करी दीधी. पडी ते यक्क बोद्धो के “ जो आ स्त्री मुनिने पतिपणे स्त्रीकारदा तोज तेने हुं मुक्त करीश. ” ते सांचलीने राजाए जीवती राखवाना हेतुयी तेप करवानुं कड्हाज कर्युं. पडी ते राजपुत्री स्वजनोनी अनुक्षायी यक्कना चैत्यमांज रही, अने तेमने अनुकूल उपर्सग करवा द्वागी, पण मुनिए तेनी जरा पण इच्छा करी नहीं एक्से ते पाडी ओसरी. पडी यक्के घमीमां पोतानुं स्वरूप अने घमीमां मुनिनुं स्वरूप देखानी डेतरीने आवी रात्रि तेनी विमंवना करी. प्रातःकाळे “ मुनि तो तेने इच्छता नयी ” एवा यक्कना वचनयी ते राजपुत्री खिन्न मनवाळी थइ सती पोताना पिताने धेर गइ. पाडी आवेदी जोइने पुरोहिते राजाने कहुं के “ आ कपिपत्नी ब्राह्मणने कड्ये. ” ते सांचलीने राजाए ते पुरोहितमेज आपी. तेणे तेने पोतानी पत्नी करी. अन्यदा प्रिया सहित यहांदीक्षा ग्रहण करीने तेणे यक्कनो आसंज कर्यो.

हवे हस्तिकेशी नामना चांमाल कुळमां उत्पन्न थयेद्वा वळ नामना ते जितेन्द्रिय मुनि एक दिवस जिक्का माटे ते ब्राह्मणना यहापाट्कमांज गया. ते तपस्वीने आवता जोइने ब्राह्मणो अनार्यनी जेम तेनो उपहास करवा द्वाग्या, अने कहेवा द्वाग्या के “ अरे! तुं कोण डे? तारुं आवुं वीजत्स रूप जोबाने पण अमे योग्य नयी. तुं शी इच्छायी अहीं आव्यो डे? अमारी दृष्टिधी दूर जा. ” इत्यादि वचनो सांचलीने पेढ्हो यक्क जे निरंतर मुनिनी साथेज रहेतो हतो ते कौपायमान थयो; तेणे मुनिना देहमां प्रवेश करीने कहुं के “ हुं श्रमण ( साधु ) दुं. वीजाने माटे तपार करेदुं अब लेवा माटे हुं आव्यो दुं. अहीं तमोए धाणुं अब रांध्युं डे; तो तेमांथी शेषनुं पण अवशेष प्रति रहेदुं होय ते मने साधुने आपो. ” ए प्रमाणेनां वचनो सांचली याङ्किको बोद्धा के “ आ सिद्ध करेदुं जोजन ब्राह्मणोनेज

देवा योग्य भे, तने गुद्धने दइ शकाय तेम नथी. जगतमां ब्राह्मण समान वीरुं कोइ पुण्यक्रेच नवी, तेमां वावेदुं वीज मोटा फळने आयेभे.” मुनिना शरीरमां रहीने यकृ वोद्यो के “ तमे यङ्गमां हिंसा करो गो, आरंजमां रक्त गो, अजितेन्द्रिय गो, तेवी तमे तो पापक्रेच डो; विष्वमां महाव्रतने धारण करनार मुनिना जेवुं वीरुं कोइ पुण्यक्रेच नथी.” आ प्रमाणे ते यकृ यङ्गाचार्यवुं अपमान कर्यु. ते जाणीने तेना शिष्यो थोड्यो के “ अमारा उपाध्यायनो तुं प्रत्यनिक भे, माटे हवे तो तने कांइ पण आपगुं नहीं ; नहींतो कदाच अनुकंपाने छीधे कांइ अंत प्रांतादि पण आपत.” यकृ वोद्यो के “ समितिवंत, समाधिवाला, व्रण गुस्तिथी गुप्त अने जितेन्द्रिय एवा मने जो तमे एपणीय अब नहिं आपो; तो पडी आ यङ्गथी तमने शुं लाज मल्लानो भे ? कांइ पण लाज मल्लो नहीं.” ते सांजलीने अध्यापके पोताना शिष्योंने कर्यु के “ आने लाकडी अने मुर्ती विग्रेषी मारीने काढी मूको.” ते सांजलीने सर्वे शिष्यो एकदम तेना तरफ दोड्या, अने मुनिने दंकादिक्वदे पारवा द्वाग्या. ते बखत राजपुत्री जडा तेमने अट्कावीनि वोद्दी के “ हे शिष्यो ! आ मुनि कदर्थनाने योग्य नवी, केमके देवना बचनथी घने राजाए आ मुनिने आपी हती, तोपण तेले घनवी पण मारी इच्छा कर्या विना मने डोकी दीधी; ते आ कृषि भे, देवेंद्र ने नरेण्ठने पण वेदनिक भे, आ महा यशस्वी, मोटा प्रजावाला, महा छुकार व्रतधारी अने घोर पराक्रमवाला एवा मुनिनी तमे हीड्वना करो नहीं. तेनी हीड्वना करवाई तेमना तपना प्रजाववदे तमे ने अमे सर्वे वर्लीने जस्त थइ जड्हायुं, माटे तेवुं न थाप तेम करो.” ते सांजलीने यकृ “ आ जडाउं बचन मिथ्या न थाओ ” एम धारी सर्वे भावोनुं निवारण कर्यु.” कहुं भे के—

एयाइं तीसे वयणाइ सोच्चा, पत्तीए ज्ञाहाए सुज्ञासियाई ।

इसिस्स वेयावम्नियठयाए, जखा कुमारोवि णिवारयंति ॥१॥

जावार्थ—“ पोताना पतिने कहेजां जडानां आवां मुज्जापित वचन सांजलीने मुनिनी वैयावच करनार यकृ ते शिष्योनुं निवारण कर्यु.” केवी रीति कर्यु ते कहे भे—

तरतज रोप पार्मनि यकृ आकाशमां अनेक रुपो चिकुर्वीं ते उपसर्ग करनारा सर्वे उत्रोने अंग विदाला अने लोही घमता कर्या. ते जोइ फरीधी जडा वोद्दी

व्याख्यान शृणु मुं तपनी प्रधानता विषे हस्तिकेशी मुनिनी कथा। (४५)

के “हे छात्रो ! आ मुनिनी तमे अवगणना करो छो, ते पर्वतने नखथी खोदवा जेहुं, द्वोहदंसने दांतयी खावा जेहुं अने जाज्वद्यमान अभिनने पादप्रहार करवा जेहुं करो ओ, एमने सामान्य जिझु मानीने मूर्खने योग्य एहुं कार्य करो ओ ते तमने धट्टुं नवी, माटे जो तमे जीवितने के धनने इच्छता हो तो ते मुनिने मस्तक नमावीने तेमने शरणे जाओ, ” पड़ी ते सोमदेव नामनो यज्ञाचार्य, जेमनां नेत्र अने जिहा वहार नीकलेज्जा भे एवा, अने काष्ठ समान यह गयेज्जा तेमज लार्ज्जे मुखवाला छात्रोने जोइने पोतानी पत्नो जज्जा सहित ते मुनि पासे जह तेमने सुन्ति छारा प्रसन्न करवा माटे कहेवा बाग्यो के “हे जगवन् ! अमारा अपराधने क्षमा करो, आ बाल्क, मूर्ख अने अज्ञानी छात्रोए आपनी हीज्जना करी, तेनी आप क्षमा करो, केमके मुनिनां तो घणा कृपालु होय भे; तेओ कदी पण कोइना पर कोप करता नवी, ” ते सांजळीने मुनि बोद्ध्या के “प्रधम, अत्यारे के हवे पड़ी मने किंचित् पण तमारी उपर प्रश्नेप नवी, पण कोइ यक्ष मारुं वैयाकृत्य करे छे, तेणे आ तपारा छात्रोने पराजयेज्जा जणाय भे, ” अध्यापक बोद्ध्यो के “हे पूज्य ! तमे धर्मतत्त्वना ज्ञानी क्रोध करोन नहीं, पण अमे तो आपना चरणने शरणे आव्या छीए, माटे आ पुष्कल शालि विग्रे अब्र इच्छानुसार ग्रहण करो, अने ते वापरीने अमारा पर अनुग्रह करो, ” ते सांजळीने मुनिए मासक्रपणतुं पाराणुं होवायी शुभ अन्नपान ग्रहण कर्युं, एठ्क्के पेज्जा यक्षे सर्व छात्रोने साजा कर्या अने पांच दिव्य प्रगट कर्या, पड़ी हर्षवन्त थाइने ते सर्व ब्राह्मणो बोद्ध्या के “वाह स्तानादि-क धर्मनी स्पृहावाला अमे आपे अंगीकार करेज्जा यज्ञादिकतुं तत्त्व जाणता नवी; तेथी पूर्डीए डीए के—तमारे यक्ष करवाना विधिमां कयो अग्नि भे ? ते अभिनुं स्थान कयुं भे के ज्यां अग्निनुं स्थापन कराय भे ? धृतादिक नांखवा माटे तमारे सुन्त्रो कयो छे ? अग्निने प्रदीप करवा माटे तमारे कारीस ( जुंगली ) रूप शुं भे के जेनाथी अग्नि फुंकाय छे ? अग्निने सलगाववा माटे समिध ( काष्ठ ) कया भे ? पापने उपशमन करवामां हेतुरूप एवी जांतिने माटे तमारी अध्ययनपद्धति कह भे ? अने केद्ज्जा तेमज कोना संवंधी होमविधि जेनो होम करो ओ ? ते सर्व शुपा करीने कहो, ” मुनिए जवाव आप्यो के “अमारे तप ( आहार मूर्त्ति त्याग ) रूप अग्नि छे, केमके ते कर्मन्धनने बालनार भे, जीव अग्निनुं स्थान भे, कारणके तपरूपी ज्योति ( अग्नि ), तेने आश्रये रहे भे, मन, वचन अने कायाना योगलूपी सुन्त्रो

डे, तेनावन्दे थता शुन व्यापार ते स्लेह ( धृत )ने स्थाने डे, शरीररूप अधिक प्रमाणतुं करीस ( जुंगली ) डे, कर्मरूपी समिध ( काष्ठ ) छे अने संयम तथा योगरूप शान्ति क्रिया डे, एवी रीते मुनिश्रोने होम करवानो विधि डे, तेवा प्रकारयी हुं पण होम करुं छुं.” फरीने अध्यापके स्नानतुं स्वरूप पृछयुं के “तमोर स्नान करवा माटे कयो झह ( धरो ) डे ? पाप टाळवा माटे अने शांति माटे कयुं तीर्थ डे ? करुं पुण्यदेव डे ? ते तीर्थोंनां केदङ्गां स्वरूप डे के जे संसाररूपी समुद्धथी तारे डे ? शेने विषे स्नान करीने पवित्र थयेङ्गा आप कर्ममठनो त्याग करो गो ? अमारीन जेवां तपारे पण शुचि करवानां झहादि जलाशयो ( तीर्थो ) डे के काँइ जु-दान डे ? ते अमे जाणता नवी, माटे हे यकृपूज्य मुनि ! ते सर्व आपनी पासेथी अमे जाणवा इच्छीए छीए.” मुनि बोल्या के “अमारे धर्मरूपी झह ( धरो ) डे अने ब्रह्मचर्य रूपी तीर्थ डे के जेने विषे अनावविस ( संसारमां नहीं द्वपदयेद्वो ) अने प्रसन्न क्षेत्रयावाङो आत्मा स्वतन करवाथी निर्मल, शुच अने शीतल थझने सर्व दोषनो त्याग करे डे.” इत्यादि मुनिनां शुन बाब्योयो ते ब्राह्मणो थोथ पापीने जैनभर्मी थया, मुनि पण अन्यत्र चिह्नार करता अनुक्रमे कर्मनो क्रय करीने परमपदने पाम्या,

“खरेखर सौवी अधिक तपन देखाय डे ; कोइ भेकाए जातिनुं अधिक पणु देखातुं नवी. शुओ ! हरिकेशी चान्दालना पुत्र भत्तो पण तपनाज प्रजावधी महातुज्ञाग थझने आवी क्रफ्फिने पाम्या.”

३५४

इत्यद्विनपरिमितोपदेशप्रासादटत्त्वो विशतितमस्तंजस्य  
नवनवत्यधिकक्षिद्वाततमः प्रवैयः ॥ ३५४ ॥

## व्याख्यान ३०० मुं.

वीर्यचार.

वाद्यान्तरसामर्थ्यानिन्द्वेन प्रवर्तनम् ।

सर्वेषु धर्मकार्येषु, वीर्यचिरणमुच्यते ॥ १ ॥

ज्ञावर्थ—“ वाद्य तथा अन्तर सामर्थ्यने गोपवा विना तेने सर्व धर्म-  
कार्यमां प्रवर्तवनुं, ते वीर्यचार कहेवाय डे. ”

वाणी अने कायाने आधीन जे सामर्थ्य ते वाद्य सामर्थ्य कहेवाय डे, अने  
मन संबंधी जे वीर्य ते अन्तर सामर्थ्य कहेवाय डे. ते बनेना अनिन्द्वपणे प्रवर्तनुं  
एटद्वे सर्व धर्मकार्यमां वीर्यने फोरवनुं तेने वीर्यचार कहे डे.

पूर्वाचार्योंए कहुं डे के—

अणिगूहिअ वद्वीरिउ, परिक्लमइ जो जहुत्तमाउत्तो ।

जुंगइ अ जहाथामं, नायव्वो वीरिआयारो ॥ १ ॥

ज्ञावर्थ—“ वद्वे<sup>१</sup> अने वीर्यने गोपवा शिवाय जे यदोक्त रीते छानादि  
आचारनो आश्रय करीने अनन्य चित्ते पराक्रम करे डे, अने ते वाद्यान्तर प-  
राक्रमने योग्य स्वयने जोमे डे एटद्वे तेनो घटित उपयोग करे डे, ते वीर्य-  
चार जाएवो.”

अहीं आचार अने आचारवाक्यानो कथंचित् अनेद मानीने तेने वीर्य-  
चार कहेव्वो डे. ते मन, वाणी अने कायाना जेदे करीने बण मकारनो डे. तेना  
अतिचार पण मन, वाणी अने कायाना वीर्यने गोपवा स्वप बणज डे. ते विपे शा-  
यकना एकसो ने चोबीश अतिचारोना वर्णननी गायामां कहुं डे के—

पण संदेहण पनरस्स कम्मा, नाणाइ अट पत्तेयं ।

वारस तव विरिय तिग, पण सम्मवयाइ अद्यारा ॥१॥

<sup>१</sup> बद्व अने वाद्यनु द्व.

<sup>२</sup> मनु स्त.

ज्ञावार्य—“ संदेखनाना पांच अतिचार भे, कर्मादानना पंनर भे, ज्ञानादि ( ज्ञान, दर्शन, चारित्र )ना प्रत्येके आउ आउ भे, तपना धार भे, वीर्यना व्रण भे अने सम्बन्धत्व तथा वारे व्रतना पांच पांच अतिचार भे.” एव्हे ५-१५-३४-१२-३-६५ मली १९४ थाय भे.

अहीं कोइ शंका करे के—“ आ वकरीना गङ्गाना आंचल जेवा ( नकामा ) वीर्याचारने सारी रीते उपयोगमां लेवानुं शु प्रयोजन भे ? केमके जब्य प्राणीओंने जबस्थितिनुं तो नियतपाणुं भे, तेथी ज्योर जे जब्य प्राणी सिद्धिमां जवानो हशे, त्यारे ते प्राणी वीर्याचारनो उपयोग कर्या विना पण मोडे जगे.” गुरुमहाराज तेनो जवाव आपे भे के “ तें जे अहीं जबस्थितिनुं नियतपाणुं हेतुपणे दर्शाव्युं, ते युक्तिविकल होवार्थी सत्य नयी. केमके जब्य जीवोनी जबस्थिति एकान्ते नियत पण नयी, तेप अनियत पण नयी. पण नियतानियत भे. ते शी रीते ? एम पृथीश तो सांभळ—पुण्य पापने अनुसारे जबस्थिति घेटे भे अने दृष्टि पापे भे. तेथी तेनुं अनियतपाणुं कहेवाय भे; अने जे ज्योर मुक्ति जवानो भे ते त्यारेज मुक्ति पामरो, ए युक्तिर्थी नियत पण कहेवाय भे. परंतु जो ‘ जे ज्योर मोडे जवानो भे, ते त्यारेज मोडे जगे ’ एवो एकान्तवाद स्वीकारीए, तो गोशाळानो मत मास थाय भे. गोशाळो ‘ जेनुं जे ज्योर थवानुं भे तेनुं ते त्यारे थायम भे ’ एवो नियतिवाद माने भे, अने तेम मानवार्थी तो प्रत्यक्ष मिथ्यात्व भास थाय भे. केमके जिनशासनमां काङ्गादिक पांच कारणो जगतना विवर्तमां हेतुरूप कहेझां भे. तेमाना मात्र प्रत्येकने हेतु मानेझा नयी, पण पांच मलीने हेतु रूपे मानेझां भे. माटे जबस्थितिने नियतानियतज मानवी जोइए, आ वचन युक्तिर्थी विकल भे एम समजनुं नहीं. केमके जेम एकज बस्तुमां लत्पाद, व्यय अने धैव्य ए त्रण अविरोधे रहे भे, तेमज एक जबस्थितिमां कथंचित् नियतपाणुं अने कथंचित् अनियतपाणुं पण रही शके भे. अहीं तात्पर्य ए भे के—जीव पुण्यादिक उपक्रम करवार्थी वहेझो पण मोडे पापे भे, अने जिनकां लोपवार्थी तया महा पापो करवार्थी अधिक काळ संसारमां परिच्छमण पण करे भे. ते अपेक्षाए जबस्थिति अनियत जाणवी, आ वावतं सिखान्तवी पण विश्व नयी. केमके महानिशीथादि शास्त्रोमां आपणे सांजलीए पण उत्सूक ज्ञापणादिव्यने तेओनी जबस्थिति अधिक घड हती, कोइ जीव जव-

स्थितिना प्रतिनियत समयेज मोक्षनी प्राप्तिने योग्य एवं पुण्य करवा शक्तिमान था-  
य अने वीजे वर्खते तेवुं पुण्य करी न शके, ते नियत काळेज मोक्ष जाय, तेनि अ-  
पेक्षाए चतुर्स्थिति नियत जाणवी. केवलङ्घानीए जे स्थिति कही होय ते तो नि-  
यत स्थितिज जाणवी ; केमके केवलङ्घानी तो संपूर्ण झानना प्रजावधी “आ जीव  
आ प्रमाणे पुण्यादि उपक्रम करशे, अने आ जीव तेम नहीं करे ” इत्यादि दरे-  
कं जीवना उपक्रमतुं स्वरूप जाणनिज चतुर्स्थिति कहे डे, जाण्या विना कहेता न-  
थी ; माटे तेने नियत जाणवी. पण जो चतुर्स्थितिनुं<sup>१</sup> एकान्त नियतपणुंज अंगी-  
कार करीए, तो प्राणीने तेवा तेवा प्रकारनां छुप्कर धर्मकृत्यो करवानुं अने हिंसा-  
दिक् पापव्यापारना परिहारनुं निष्फलपणुं प्राप्त यशे, ते कांड युक्तियुक्त नथी.  
माटे चतुर्य प्राणीओनी चतुर्स्थितिनुं नियतानियतपणुं सिद्ध छे एम समजबुं ; अने  
तेनी सिद्धि यवाधी सर्वत्र धर्मक्रियामां पोतानी शक्ति फोरववा रूप वीर्यचारनी  
पण सफलता सिद्ध यइ. ते विपे सूत्रमां कहुं डे के—

तिथ्ययरो चउनाणी, सुरमहिर्नि सिजित्यव्यय धुवंमि ।

अणिगृह्यवद्विरिं, सव्यत्यामेण उज्जमश ॥ १ ॥

जावार्थ—“ चार झानने धारण करनार, देववाओथी पूजित अने धुव  
( निश्चये ) सिद्धिपदने पामनारा एवा तीर्थकरो पण वद्व<sup>२</sup> अने वीर्यने गोपव्या  
विना सर्व सामर्थ्यवर्मे उद्यम करे डे.”

इत्य जह तेवि हु निच्छणपायसंसारसायरा वि जिणा ।

अप्नुजमंति तो सेसयाण को इत्य वामोहो ॥ २ ॥

जावार्थ—“ आ प्रमाणे ज्यारे जेमने संसारसागर प्राप्ते तरी गयेद्वा जे-  
वोज डे एवा जिनेभरो पण ( शुन योगमां ) उद्यमयंत थया डे, तो पछी अहीं-  
आं वीजाओने शुं व्यामोह करवा जेवुं डे ? ” अर्थात् शो विचार करवानो छे ?  
तेमणे तो अवश्य शुभ निमित्तमां मन वचन कायानुं वल वीर्य फोरववा योग्य डे.”

अहीं वीर्यना गोपन तथा अगोपननुं फल मुर्धम श्रेष्ठीना दृष्टांतवर्मे  
वतावे डे—

<sup>१</sup> वद शरीर संवंधी जाणां. <sup>२</sup> वीर्य मन संवंधी जाणां.

## सुधर्म श्रेष्ठीनी कथा।

पृष्ठीपुरायां सुधर्मा नामे एक श्रेष्ठी रहेतो हतो, तेनुं अन्तःकरण जैन धर्म-  
यी वासित हतुं. एकदा गुरुमुखयी विराग्यनी कथा सांजलतां तेमां जारवाहक वि-  
गेरेतां दृष्टन्तो सांजलीने तेणे चास्त्रि ग्रहण कर्यु, ते जारवाहकतुं दृष्टां आ-  
प्ताणे—

कोइएक जारवाहक हंमेशां मोटा कष्टी कापु लावी ते वेचीने आवेद्धा  
पैसामार्थी पेतानो निर्वाह चक्षावतो हतो. एकदा ग्रीष्मकल्पुमां मध्याह सप्तये ते का-  
पुनो जारो माथे उपासीने वेचवा माटे गोखमां अटन करतो हतो. अति जास्ती  
पीमार्थी मायेथी जारो उतारीने ते कोइ गृहस्थनी हवेझीनी छायामा विश्वानि  
द्वेवा उजो रखो, ते बखते हवेझीना गोखमां ते गृहनी स्वामिनी तिङ्गोत्तमा अप्स-  
राना जेवी मनोहर रूपवती बेठी हर्ती. तेने जोइने तेणे विचार्यु के “अहो ! सम-  
ग्र वैद्वोक्ष्यतुं सुख तो आ युवनीएज खेची दीर्घु डे, परंतु आवा सुखनुं कारण मा-  
त्र द्रव्यज डे; तो हुं पण इव्यतुं उपार्जन करीने आवुं सुख मेल्वी जन्म सफल क-  
रुं.” एम विचारीने त्यारथी तेणे जोजनादिकमां कृपणता (कसर) करवा भोगी.  
कापु वेचतां जे पैसा आवे तेमार्थी थोमा खचें अने वधारे संग्रह करे. ए प्रभाणे  
निर्तर इव्य उपार्जन करवाना ध्यानस्त्री कहोज्ज्वरी चपड मनवालो ते काळ नि-  
र्गमन करवा लाग्यो, एक दिवस अति कृपणताने दीधे जेनुं अंग अति कुरा थाइयुं  
छे एतो ते जारवाहक सूर्यनां किरणोना तापथी आकुलव्याकुल थइ गयो, झारीतां  
सर्व अवयवो परसेवाना विजुओथी जीजाइ गयां, द्वुहारनी धमणनी जेम भासे-  
भास द्वेवा लाग्यो, अने केने वे हाथ राखीने फरतो फरतो आरण्यना एक कूच  
पास आव्यो. त्यां विथाम द्वेवा माटे कूचाना थालामां सूझ गयो, तल्काल निश्च  
आवी गइ, तेमां तेने स्वप्न आव्युं, स्वप्नमां तेणे जोयुं के जाणे पोते महान कष्टो  
अनुज्ञवीने द्रव्य मेल्व्युं, तेनावदे विचाहादिक कार्यो कर्या, पूर्वे गोखमां वेवेझी  
युवनी जोइ हती तेना जेवी सुंदर स्त्री परायो, तेनी साथे हावनाव, कटाक वि-  
गेर क्रीमा अनुज्ञवा लाग्यो. परस्पर प्रशोक्तरो करतां ते स्त्रीने कांइ रोप उत्पन्न  
कर्यो तेथी ते स्त्री बक दृष्टि करी बोझी के “आवुं लज्जावाढुं वावय केम बोझो डे?  
अहोर्थी दूर जाओ.” आ प्रभाणे कोमळ अने सुंदर चाणी सांजलीने

ते प्रेमगान्ति चेष्टयी प्रसन्न थयो, तेथी वे हायबदे तेने गाढ आक्षिंगन करवा तै-यार थयो, एट्ड्वे ते स्त्रीए विज्ञासथीज एक दोरमीवडे तेनापर महार कर्यो. ते जो-इने ते जार्खाहक जरा दूर खस्यो, आवा स्वप्नमां तेनुं थाळामां पमेद्धुं शरीर पण निद्रामां ने निद्रामां साक्षात् खस्युं, एट्ड्वे ते थाळामांथी कूवामां पमी गयो, पमतां प-मतां तेनी निद्रा जंती रही, एट्ड्वे ते विचारवा बायो के “ अहो ! आ शुं थयु ? मैं शुं जोयुं ? ते स्त्री क्यां गइ ? तेना विज्ञासनी केवी बठा ! अहो ! जेनुं नि-रंतर ध्यान कर्युं हत्तु ते आजे स्वप्नमां फलीतृत थयुं, परंतु आ तो स्वप्नमां स्त्री-ए पोतानी मायाजाळमां वांधीने मने आ अंध कूवामां नांखी दीधो; तो पडी सा-क्षात् स्त्रीनो अनुज्ञव कर्यो होय, तो ते तो खरेखर नरकगतिमांज नांखे, तेमां प्रा-णीओए कांइ पण संदेह राखवा जेवुं नयी. ” आ प्रमाणे कूवामां ख्यो सतो ते विचार करे छे, तेवामां त्यां एक राजा आवी चड्यो, तेणे कूवामां पमेज्जा ते माणस-ने जोइने तेने वढार काढी पूछ्यु के “ तने आ कूवामां कोणे नाख्यो ते कहे. हुं ते-ने शिक्षा करीश. ” जार्खाहक वोड्यो के “ हे स्वामी ! तेनी पासे तमे तो शी गण-श्रीमां डो ? इन्डादिक पण तेने शिक्षा करवा समर्थ नयी, तो पडी वीजानी तो वा-तज शी कत्ती ! ” ते सांजळीने पोताना वल्थी गर्व पामेज्जो ते राजा गाजी उड्यो के “ अरे ! हुं पृथ्वीपति द्धुं; तेथी एवी कोइ पण वस्तु नयी के जे हुं करी न श-कुं. ” त्यारे ते जार्खाहके पोताना स्वप्नतुं दृत्तान्त सर्व कहुं. ते सांजळी राजा प्र-तिवोध पामी बोल्यो के “ ते सत्य कहुं छे, स्त्रीना विज्ञासने जीतनार तो मात्र म-हपिंग्रोज डे. ” पडी ते जार्खाहक पूरेपूरो प्रवोध पामवाथी तेने प्रथम झब्य तथा स्त्री उपर जेवी आसक्ति थइ हत्ती, तेवीज हवे सत्त्व, रजस् अने तमो गुणथी र-हित एवा निर्गुण मार्गमां आसक्ति थइ. ”

आ प्रमाणेनां अनेक दृष्टान्तो सांजळीने ते सुर्घर्षा शेत्र प्रतिवोध पाम्यो ह-तो, ते पोताना एक मित्रेने हंसेशां धर्मकथाओ कहीने उपदेश आपवा बायो, पण ते मित्र तीव्र मोह अने अङ्गानसमन्वित होवाथी एक क्षणमात्र पण जैन धर्म उपर रुचिवालो थयो नहीं, तेथी विपाद पामीने सुर्घर्षा श्रेष्ठीए एकज्ञाज दीक्षा ग्रहण करी अनुक्रमे एकादश अंगनो अन्यास कर्यो.

एकदा ते मुनि नगरमां प्रवेश करतां कोइ डेकाणे विवाहरत्सव होवा-थी मधुर गीत, वृत्य अने वाजित्रना मनोहर नाद सांजळीने तथा कामने उद्दीपन

करे तेवां सुंदर द्वावएयथी, वस्त्राल्पण्यथी अने मनोहर गीतना आवापथी कामी जनना मनने विहळ करनार स्त्रीओना समूहने जोइने तत्काळ पात्रा फर्यी ; अने अरएना कोइ विजागां जड़ने द्वीजां तृण, पर्ण अने वीजादिकनी विरापना न थाप तेवी रीते कोइ वृक्षनी नीचे इर्यापयिकी पक्षिकमीने ध्यानमग्न थया सता विचारवा द्वाम्या के “ अहो ! मारो आत्मा अति लोभुप छे, तेवी जो ते मोहननक निमित्तो जोइने हुं पठो निवर्त्यो न होत तो मोटी कर्मवृच्छि थात, ते पुरुषोनेज धन्य डे के जेओ रंजा अने तिज्जीतमा जेवी युक्तीओना समूहमां रखा छतां एक क्षणमात्र पण आत्मतत्त्वनी रमणताने मूरक्ता नयी. ” आ प्रमाणे शुभ ध्यान ध्यातां ते मुनिने अवधिङ्गान उत्पन्न थयुं, तेज बखते उपरना वृक्ष उपरथी एक पांदरुं पोताना चोक्षपट्ट उपर पक्षयुं. ते जोइने मुनिए विचारु के “ आ पत्रमां हुं पण अनेकवार उत्पन्न थयो हृशा, परंतु मारो पूर्वनो मित्र कइ गतिमां गयो हवे ? ” एम विचारीने तेणे अवधिङ्गानवे जोयुं तो तेज पत्रमां पोताना मित्र ने एकेन्द्रियपणे उत्पन्न थयेज्जो जोयो, ते बखते मुनि वौद्या के “ हे मित्र ! पूर्वे मै तने अनेक प्रकारे वार्या डतां पण ते मोहनी आसक्ति डोमी नहीं; हवे तो हुं मन, चाणी अने वीजी इन्द्रियो विनानो थयो डे, तेवी हवे हुं तने शुं कहुं ! ते पनुप्यनव निर्यक गुमाल्यो, अरे रे ! परमात्मानो कहेज्जो धर्म ते सम्यग् प्रकारे अंगीकार कयों नहीं. ” इत्यादि ज्ञावद्या ज्ञावतां अनुक्रमे ते मुनि अनन्तानंदपः एं ( मोक्ष ) पाम्या.

“विज्ञासमां ज्ञानसाधाला ते मित्रने सारी रीते वोध कर्या डतां पण तेणे पोतालुं वीर्य गोपकी राखयुं; तेवी ते वृक्षना पत्रपणाने पाम्यो, अने सुर्यमा मुनिए पोतालुं वीर्य फोरयुं, तो ते आज जन्ममां अव्ययपद्देन पाम्या. ”

३४८  
स्त्यद्विनपरिमितेपदेशमासादवृत्तौ विशतितमस्तंजस्य  
विशततमः प्रवधः ॥ ३०० ॥

॥ समाप्तोऽयं विशतितमः स्तंजः ॥

# श्री उपदेशप्राप्ति

स्थंभ २१ मो.

व्याख्यान ३०१ मुं.

पूर्णता गुण विषे.

पूर्णतागुणसंपृक्तं, वाचयममहामुनिम् ।

जयधोपो द्विजः प्रेह्य, पूर्णानन्दमयोऽन्नवत् ॥ १ ॥

नावार्थ—“ वाणीने नियममां रखनार एवा पहा मुनिने पूर्णता गुणथी  
युक्त जोइने जययोप नामनो व्रात्यण पूर्ण आनन्दमय थयो हुतो. ”

पूर्णता गुणनुं वर्णनं पूर्वाचार्योऽ आ प्रमाणे कर्यु भेः—

पूर्णता या परोपाधेः, सा याचितकमंरनम् ।

या तु स्वाज्ञाविकी सैव, जात्यरत्नविज्ञानिज्ञा ॥ १ ॥

नावार्थ—“ जे पर उपाधिथी पूर्णता धयेवी भे ते मागेवा अद्विकार  
जेवी भे; अने जे स्वाज्ञाविक पूर्णता भे ते जातिवंत रत्ननी प्रजा जेवी भे. ”

आ श्लोकनुं तात्पर्य ए भे के “ पर उपाधि एट्टेस्त्रु पुद्गद्धना संवंधयी  
उत्पन्न धयेवा देह, घव्य, कामिनी, कीर्ति विग्रे उपाधिथी नरेन्द्र अने देवेन्द्रादि  
क जे पूर्णता मानें भे, ते मार्गीने पहेरेवा अद्विकारादिक जेम थोमो वरत  
शोज्ञा आपे भे, तेम थोमा वरतनी शोज्ञा भे, अनंतकाळ पर्यंत ते शोज्ञा रहेती  
नदी. केमके तेवा अद्विकारादिकथी जे ऐश्वर्य प्राप्त थाय भे ते ऐश्वर्य तो आ  
विभवासी धणा जीवोए अनन्तवार जोगवीने उच्चिष्ठ करेवुं भे; तेथी ते माणीओने  
अशुद्धताना कारणचूत भे. आवी रीते समजीने जे आत्म स्वरूपना अनुज्ञवनी  
शोज्ञा धारण करे ते शोज्ञाज निर्मल रत्ननी कान्ति जेवी शुद्ध भे एम जाणवुः ”

१ श्री वगेषिज्यज्ञी उपाध्यायहृष्ट हानसागर [ अष्टक ]ना पहेला पूर्णाङ्कमां आ श्लोक हे.

आ पूर्णता जेने सम्यक्त्वादि प्राप्त थयुं होय तेनेज होय डे. ते विषे कहुं डे के—

कृष्णपक्षे परिक्षीणे, शुक्ले च समुद्भवति ।

योतते सकलाध्यक्षा, पूर्णानन्दविधोः कला ॥ २ ॥

( ज्ञानसार ).

**शब्दार्थ—**“ कृष्णपक्ष कीण थाय अने शुक्ल पक्षनो उदय थाय, त्यारे पूर्णानन्द रूपी चन्द्रनी कला समग्र लोकनी समक्ष प्रकाशमान थाय डे. ”

**विस्तरार्थ—**“ कृष्णपक्ष क्य पामे अने शुक्लपक्ष उदय पामे, त्यारे समस्त लोकने प्रत्यक्ष एवी चन्द्रनी कला प्रकाशे डे ए लोकसिद्ध रीति डे. तेवीज रीते कृष्णपक्ष रूपी अर्ध पुद्गळ परावर्त उपरांत तमाम संसार क्य पामे, अने शुक्लपक्षरूप अर्ध पुद्गळ परावर्तनी अंदर रहेज्ञो संसार प्रवर्तमान थाय, त्यारे पूर्णानन्द ( आत्मा ) रूपी चन्द्रनी स्वरूपानुयायी चेतन्य पर्याय प्रगट थवा रूप कला प्रत्यक्ष थाय डे ( जाने डे ). कृष्णपक्षमां तो अनादि द्वयोपशमीचूत चेतनावीर्यादि परिणाम मिथ्यात्व अविरतिमय होवायी संसारना हेतु जूत होय डे तेथी ते ज्ञानज्ञानं नयी.

आ पूर्णताने स्वमति कल्पनाथी अनेक प्रकारे कहेझी डे, परंतु स्याद्वाद रीते तो जे आत्म स्वरूपतुं साधन करवानी अवस्था तेज पूर्णता प्रशस्त डे.

**पूर्णताना चार प्रकार डे—**नाम पूर्णता, स्थापना पूर्णता, ऋब्य पूर्णता अने जाव पूर्णता. तेमां नाम पूर्ण एट्ट्वे कोइ वस्तुनुं नाम मात्रज पूर्ण होय ते. जेमांके पूर्णपोळी. काष्ठ अथवा पापाणादिक्रमां जे पूर्णनी आकृति करीए ते स्थापना पूर्ण. ऋब्य पूर्णना घणा अर्यो थाय डे, तेमां ऋब्यमां पूर्ण धनाकृत्य माणस; ऋब्ये करीने पूर्ण—जल विंगेरे ऋब्ये करीने पूर्ण घमो विंगेरे; ऋब्यथी पूर्ण—पोताना कार्यथी पूर्ण घयेज्ञो; ( अहीं ऋब्य एट्ट्वे “ अर्थ किया करनाह ” एवं ऋब्यतुं छ-झण समजनुं ). ऋब्योने विषे पूर्ण—धर्मास्तिकाय स्कन्ध विंगेरे. ( अहीं ‘अणुवर्ण-गो दब्बं ’ ‘ जेनामां उपयोगशून्यता होय ते ऋब्य ’ एवं वचन कहेलुं डे. ) जे पूर्णपदना अर्थने जाणनार उतां उपयोग रहित होय ते आगमथी ऋब्य कहेवाय डे, अने झशारीर, ऋब्य झारीर तथा तेथी व्यतिरिक्त ए त्रण प्रकारे करीने नोआगमथी ऋब्य कहेवाय डे; तेमां पूर्णपद जाणनार जीवनुं जे झारीर डे ते झशारीर

कहेवाय त्रे, पूर्णपदने जाणनार हवे पची थवानो होय एवो जे दृष्टु शिष्यादिक, ते जब्य शरीर कहेवाय त्रे, तथा ते बनेथी व्यतिरिक्त एट्डे गुणादिकनी सत्तावमे पूर्ण होय, तोपण तेनी प्रवृत्तिथी रहित अने कर्मयी आवरण पामेद्वा एवो आत्मासूपी इव्य ते तद्व्यतिरिक्त कहेवाय त्रे. अर्हीं तेना जाव स्वज्ञावनी विवक्षा करी नथी. केमके इव्य कोइ पण चखते पर्याय विनानुं होतुंज नथी. परंतु अर्हीं तो इव्य निक्षेपना प्रतिषादनने माटे पर्याय रहित मात्र इव्यनीज विवक्षा करेद्वी त्रे. आ प्रमाणे जीवत्तमासादिक ग्रंथमां निर्णय करेद्वा त्रे. पूर्णता तो जीवना गुण स्वप त्रे. ते गुण गुणी विना रही जाके नहीं. तेथी तेमां इव्यनुं प्राधान्य राखवायी इव्य जीव कहेवाय त्रे. जावपूर्ण एट्डे आगमधी पूर्ण पदार्थना समग्र उपयोगवालो अनेनोआगमधी ज्ञानादि गुणेवदे संपूर्ण.

संग्रह नयने आधारे सर्वे जोवो पूर्णता गुणे करीने युक्त त्रे. नैगमनयने आधारे आसन्न सिद्धिवाला जब्य जीवो जेओ पूर्णता गुणना अनिज्ञापी होय ते पूर्णता गुणथी युक्त कहेवाय त्रे. व्यवहार नयने आधारे पूर्णता गुण प्राप्त करवा माटेतेनो अन्यास करनारा जीवो पूर्ण त्रे. क्लेशूत्रना मतमां पूर्णता गुणनो वर्तमान समयमां विचार करनारा जीवो पूर्ण त्रे. शब्दनयना मतमां सम्यक् दर्शनादि साधक गुणेना आनन्दथी पूर्ण थयेद्वा जीवो पूर्ण त्रे. समन्वित नयनो आश्रय करीए तो अरिहन्त, आचार्य, उपाध्याय अने मुनिओ आत्म स्वज्ञावना सुखनो आस्वाद करीने संसारमां उद्घेग पामेद्वा होवायी पूर्णता गुणयो युक्त त्रे; अने एवंजूत नयने आधारे सिद्धना जीवो अनन्त गुणवाला अव्यावाद आनन्दथी पूर्ण थयेद्वा होवायी पूर्णता गुणे युक्त त्रे. अर्हीं जाव पूर्णता एट्डे त्रिकाळने विषे पण पर पुद्गळना संयोगयी उत्पन्न थता मुखनी वांगायी रहित थर्वु ते. तेनायी न्यूनपणुं न मानवुं ते. तेवा पूर्णता गुणे करीने युक्त एवा साधुने जोड्ने जययोप नामनो ब्राह्मण पूर्ण आनन्दमय थयो हतो तेनी कथा आ प्रमाणे—

### जयघोप द्विजनी कथा.

वाणारसी नगरीमां साथे जमेद्वा जययोप अने विजययोप नामना वे जाईत्रो काश्यपगोव्यी हताप्तकदा जययोप स्तनन करवागंगाने किलरे ग्योत्यां मुखमां शब्द करता देमकाने दृष्टने खातो एक सर्प तेणे जोयो. ते सर्पने पण एक दुर्र पक्षीए उपासीने उन्हो उमाकी पृथ्वीपर नांखी खावा मांझ्यो. ते पक्षीयी चक्रण

करतां उतां पण ते सर्व पेक्षा शब्द करता देखकाने तोमी तोमीने खातोज होते। आपमाणे परस्पर जक्षण करता ते प्राणीओने जोड्ने जयवोपे विचार्यु के “अहो! संसारनुं स्वरूप केहुं भे ! ”

यो हि यस्मै प्रज्ञवति, ग्रसते तं स मीनवत् ।

न तु गोपयति स्वीयशक्तिं कोऽपि न दीनवत् ॥ १ ॥

भावार्थ—“ जे जेना करतां वथारे समर्थ भे, ते तेने मत्स्यनी पेते ग्रसन करे भे, कोइ पण प्राणी दीननी जेम पोतानी शक्तिने गोपता नथी। ” अने

कृतान्तस्तु महाशक्तिरिति स ग्रसतेऽखिदम् ।

तदसारेऽत्र संसारे, का नामास्था मनीषिणाम् ॥ २ ॥

भावार्थ—“ यमराज तो महाशक्तिमान छ, तेवी ते समग्र प्राणीने गढी जाय भे; तो आवा असार संसारमां बुच्छिमान पुरुषोनी केम आस्था होय ? नज होय। ”

परंतु आ संसारमां मात्र एक धर्मज यमराजनी शक्तिने कुंठित करवा समर्थ भे, तेवी हुं तेनोज आथ्रय करुं।

आ प्रमाणे चित्तमां निश्चय करीने ते गंगा नदीने सांम तीरे गयो, त्यां तेणे पूर्वे कहेक्षा पूर्णता गुणधी युक्त एवा साधुओने जोया, एट्ड्वे तेमनी वाणी थी जेन धर्मनुं रहस्य जाणीने तेमनी पासे दीक्षा ग्रहण करी पृथ्वी पर विहार कर्ता द्वागयो, अतुक्रमे विहार करतां ते जयवोप मुनि वाणारसी नगरीनो उद्यानमां आव्या, ते पुरीमां विजयवोपे यहु करवा मांडयो हहो, त्यां जयवोप मुनि मासक्ष पणने पारणे जिक्का माटे गया, तेने यहु करनार विजयवोपे ओळख्या नहीं, तेवी पोतेज तेने जिक्कानो निषेध करी कहुं के “ हे जिक्कुक ! तने हुं जिक्का आपीरा नहीं, वीजे भेकाणे याचना कर, केमके वेद जाणनार ब्राह्मणोज यहुमंमध्यमां निषेध थयेद्युं अब्र खाचाने योग्य भे। ” आ प्रमाणे ते याजके ( यहु करनाराए ) निषेध कर्या उतां पण ते मुनि समता धारण करीने रहा, परी अब्रनी इच्छाधी नहीं, पण तेने तारखानी बुद्धियी ते वोद्या के “ हे ब्राह्मण ! वेदमुख एट्ड्वे वेदमां मुख्य धर्म शो कदो भे ? यहुमुख एट्ड्वे मुख्य यहु कयो भे ? नक्षमुख एट्ड्वे नक्षमोमां मुख्य कोण भे ? अने धर्ममुख एट्ड्वे धर्मने शारु करनार कोण भे ? ते तुं

काँइ पण जाणतो नथी.” ते सांजळीने याजक वोद्यो के “ त्यारे तमेज ते सर्व कहो.” मुनि वोद्यो के “ वेदमां अहिंसा धर्मज सर्व धर्मां मुख्य कहेक्को छे, सर्व यज्ञोमां ज्ञावयङ्ग मुख्य भे, नक्षत्रोमां मुख्य चंडमा भे अने धर्मनुं मुख काश्यप-गोत्री कृपनदेवज भे. केमके तेमणेज धर्मनो प्रथम उपदेश करेक्को भे अने तेमणे प्र-स्पेद्वा धर्मनुं आराधन करनारज ब्राह्मण कहेवाय भे. ते विषे श्री उत्तराध्ययनना प-चीशमा अध्ययनमां कयुं भे के—

जहा पौमं जहो जायं, नो वि द्विष्पद वारिणा ।

एवं अवित्त कामेहिं, तं वयं वंजमाहए ॥ १ ॥

ज्ञावार्थ—“ जेम जळमां उत्यन्न धयेक्कुं कमल जळथी लेपातुं नथी, तेनीज रीते जेओ कामजोगथी लेपाता नथी तेनेज अमे ब्राह्मण कहीए भीए.” बठी-  
न वि मुंनिएण समणो, न उँकारेण वंजणो ।

न मुणी रसुवासेण, कुसचीरेण न तावसो ॥ २ ॥

ज्ञावार्थ—“ मात्र मुर्मन करावाथी ( द्वोच कर्याथी ) काँइ साधु कहे-  
वाय नहीं, मात्र औंकार ( ॐ चूर्ज्यः स्वः इत्यादि गायत्रीमंत्र ) वोद्यवाथी ब्रा-  
ह्मण कहेवाय नहीं, मात्र अरण्यमां रहेवाथी मुनि कहेवाय नहीं अने मात्र दर्ज  
अर्थवा वट्कद्वनां वस्त्र धारण करवाथी तापस कहेवाय नहीं.”

त्यारे ते साधु विगेरे क्यारे कहेवाय ? ते कहे डे के—

समयाद् समणो होइ, वंजचेरेण वंजणो ।

नाणेण्य मुणि होइ, तवेण होइ तावसो ॥ ३ ॥

ज्ञावार्थ—“ समता गुण धारण करवाथी श्रमण ( साधु ) कहेवाय भे,  
ब्रह्मचर्य पाठ्यवाथी ब्राह्मण कहेवाय भे, ज्ञानथी मुनि कहेवाय भे, अने तप करवा-  
थी तापस कहेवाय भे.” बठी—

कम्मुणा वंजणो होइ, कम्मुणा होइ खत्तीउ ।

कम्मुणा वझ्सो होइ, सुहो हवइ कम्मुणा ॥ १ ॥

ज्ञावार्थ—“ कर्म ( क्रियावदे ) करीनेज ब्राह्मण कहेवाय भे, कर्म करी-

नेज कृत्रिय कहेवाय डे, कर्म करीनेज वैश्य कहेवाय डे, अने कर्म करीनेज शूद्र कहेवाय डे।”

कर्म करीनेज ब्राह्मण कहेवाय डे, ते विषे क्षयुं डे के—

**क्रमा दानं तपो ध्यानं, सत्यं शौचं धृतिः क्रमा ।**

**ज्ञानं विज्ञानमास्तिक्यमेतद्वाह्यणद्वक्षणम् ॥ १ ॥**

ज्ञावार्थ—“क्रमा, दान, तप, ध्यान, सत्य, शौच, धृति, क्रमा, ज्ञान, विज्ञान अने आस्तिक्याणं ए ब्राह्मणानां द्वक्षण डे।”

कर्म करीने कृत्रिय कहेवाय डे, एव्वले ज्यथी रक्षण करवा रूप कर्म करीने कृत्रिय कहेवाय डे, कृषि तथा पशुपालन विग्रेरे करवार्थी वैश्य कहेवाय डे अने कासदीयुं, नोकरी विग्रेरे कर्म करवार्थी शूद्र कहेवाय डे, आ प्रमाणे पोतपोताने योग्य कर्म न करे तो ते ब्राह्मणादिक जातियी ने तेवी संज्ञार्थी पण ऋषि थेयदा जाणवा, अहिंसादिक गुणोर्थी युक्त एवा थेषु ब्राह्मणोज तरवा अने तारवामां समर्थ होय डे।”

आ प्रमाणे ते मुनिनां धर्मवाक्ये सांजबीने विजययोप संशयरहित थइ “जहर आ मुनि मारा जाइ छे” एम जाणीने प्रसन्न थइ बोध्यो के “हे मुनि ! तमेज खरा बेदने जाणनारा डो, हे यथास्थित वस्तुतत्त्वने जाणनार ! तमेज यहना करनारा डो, जावयह करीने तमेज पोताने अने परने तारवाने समर्थ डो, पाठे हे उत्तम निहु ! आ जिक्का ग्रहण करीने तमे मारा पर अनुग्रह करो,” मुनि बोध्या के “हे ब्राह्मण ! पारे जिक्कानी काँइ जहर नथी; परंतु जडदीयो तु आ कृत्यथी निवृत्ति पामी प्रवज्या ग्रहण कर, ज्यना आवर्तवाळा आ संसार सागरमां नटकनहि, जेम एक लीझो तथा एक सूको एवा माटीना वे गोलाने जीत पर फैकीए, तो आर्द्ध गोलो जीत साचे चोटी जशे, अने सूको गोलो नाचे पर्वत अर्थात् ते चोटशे नहीं, तेम जे फुर्शुच्छि माणसो कामनी ब्राह्मसावाळा डे, तेओ ज संसारमां लीन थाय डे, अने जेओ ते ब्राह्मसार्थी विरक्त डे तेओ लीन थानी नथी।” क्षयुं डे के—

एवं लग्नांति डुमेहा, जे नरा कामज्ञालसा ।

विरक्ता उ न लग्नांति, जहा सुके उ गोलए ॥१॥

इत्यादि उपदेश सांजलीने ते विजययोगे सर्व संग तजीने दीक्षा ग्रहण करी, पठी बन्न जाइयो अनुक्रमे पूर्व कर्मनो क्रय करीने मोक्षसुखने पाम्या.

“ वास्तविक कल्पना रहित अने आत्मगुण साधन करवामां तत्पर एवी पूर्णता ते ज्ञानदृष्टिरूप पोतानीज कांति डे. माटे हे जब्र प्राणीओ! तमे तेने अनुयायी चेतना करो. ”

इत्यद्विनपरिमितेपदेशप्रासाददृच्छा एकविश्वितमस्तंनस्य  
एकोत्तरत्रिशततमः प्रवृथः ॥ ३०? ॥

## व्याख्यान ३०२ जुं

ममता गुण विषे.

हित्वाक्षविषयांश्चित्तं, समाधिसौख्यद्वालसम् ।

यस्य जातं नमस्तस्मै, ममतागुणधारिणे ॥ १ ॥

नावार्थ—“ जेनुं चित्त इन्द्रियोना विषयोने डोकीने समाधिसुखनुं द्वाक्षमु ( तद्वीन ) थयुं डे, तेवा ममता गुण धारण करनारने नमस्कार डे. ”

ममता गुणनुं स्वरूप पूर्वाचार्योंए आ प्रमाणे कहुं डे—आ जीव अनादि कालधी पुद्गळना स्वन्धथी उत्पन्न थयेद्वा वर्ण, गंध, रस, स्पर्श अने शब्द विग्रे विषयोपां ज्ञमण करतां करोको कल्पना करीने इष्ट विषयोने इच्छातो सतो वायुए उकारेद्वा पद्माशनां सुकां पांदमानी जेम जटक्या करे डे. ते जीव कोइ वस्त व्य-परना विवेक रूप नेदङ्कानने पामीने अनन्त ज्ञान दर्शनना आनंदवाला आत्मजावनो सत्तापणे निश्चय करीने पछी “ आ १विजावयी उत्पन्न थयेक्तुं सुख याहं नहीं, हुं तेनो जोक्ता नहीं, ए तो मात्र उपाधिज डे; मैं आजसुवी आ पर वस्तुओपां मम-ता राखीने तेनो कर्त्ता, जोक्ता ( जोगवनार ) अने ग्राहक ( ग्रहण करनार ) हुं हुं एम जे मान्युं हतुं ते योग्य नवी. त्रिकालङ्क केवली जगवानना वाक्य रूपी ।

१ आत्मावी अवितिरिक्त पुद्गलादिक सर्व विभाव कहेवाय डे.

अंजनवर्मे जेने स्वपरनो विवेक प्राप्त थयेद्वा डे, तेने परब्रह्मां रमण स्वप्न आस्ता-  
दन योग्य नवी।” एवी रीते विचार करीनि आत्माने अनन्त आनन्दमय जाणी  
परमात्म सत्तारूप स्वरूपमां मग्न थाय डे. आवो माणस मग्नता गुणेन पारण  
करनार कहेवाय डे.

आ मग्नता गुण नयनिकेपादिकवर्मे वरणा प्रकारनो डे. तेमाँ नाम अने  
स्वपना सुगम डे. धन अने मदिरापान विग्रेमां जे मग्न होय ते ज्व्यमग्न कहेवाय  
डे. अथवा ज्व्यमग्ना वे प्रकार जाणवा. आगमधी मग्न अने नोआगमधी मग्न.  
तेमाँ आगमधी पग्न एट्टेवे पदायोने जाणे, पण तेमाँ उपयोग वत्ते नहीं ते, अने  
नोआगमधी मग्न पूर्वे कथा प्रमाणे धन मदिरादिकमां मग्न होय ते. तद्वतिरिक्त वे  
मृद, शून्य, जम होय ते, जावमग्न वे प्रकार डे, अशुद्ध अने शुद्ध. तेमाँ अशुद्ध  
जावमग्न ते निरंतर क्रीयादिकमां मग्न, विजावमां आत्माने जावनारो. शुद्ध जाव-  
मग्ना वे प्रकार छे, तेमाँ प्रथम साधक एट्टेवे आत्म स्वरूपने साधनार ते आत्म स-  
रूपनी सम्मुख रहेद्वा. नयनी अपेक्षाए विचारीए तो पहेद्वा चार नयनी अपेक्षाए  
विधि सहित वाह्य साधनमां प्रवृत्ति करनार अने वस्तु स्वरूपने प्रगट करवानी इ-  
च्छावालो साधक कहेवाय डे; अने शब्दादिक वरण नयनी अपेक्षाए तो सम्यक् द-  
र्शन, ज्ञान अने संयम विग्रेवे आत्म समाधिमां मग्न थयेद्वा साधक कहेवाय डे. वीजो  
सिद्धमग्न ते आवरण रहित संपूर्ण वस्तुस्वरूपमां मग्न थयेद्वा जाणवो.

अहीं ज्ञानादिक आत्मस्वरूपमां मग्नपाणु गुणान्वित जाणवुं, परज्ञावमां  
आसक्त थयेद्वामां मनपाणु जाणवुं नहीं, कवुं छे के—

**स्वज्ञावसुखमग्नस्य, जगत्तत्त्वावलोकिनः ।**

**कर्तृत्वं नान्यज्ञावानां, साक्षित्वमवशिष्यते ॥ १ ॥**

जावार्थ—“ जगतना तत्त्वात् अवद्वोक्त करनार स्वज्ञावसुखमां मन थ-  
येद्वाने अन्य जावोतुं कर्त्तापाणु होतुं नवी, मात्र साक्षिपाणुं अवशेष रहे डे.”

अर्थात् स्वाज्ञाविक सहज मुखमां मन थयेद्वा अनेद्वोक्ता यथार्थ स-  
रूपने जाणनारा दर्शनशील एवा पनुप्योने ज्ञानावरणादिक कर्मोने उत्पन्न करनार  
वाय पुद्गत्व स्वन्धो देवामां अथवा मूकवामां कर्त्तापाणु होतुं नवी, पण ज्ञान-  
णाना स्वज्ञाधीयी साक्षीपाणु ज होय डे.

आ उपर सूक्ष्म विचार करीए तो—क्रिया करवामां जेतुं एवाधिपत्यपणुं [स्वतंत्रपणुं] होय ते कर्ता कहेवाय छे. आ कर्त्तपणुं जीवमां तेना गुणोनुंज होइ शके डे. कुंजार चक्रादिक उपकरणथो पटादिक पदार्थो करे डे, तेम जीव पण चैतन्यवीर्य रूपी उपकरणथी पोताना गुणो उत्पन्न करी शके छे. एकाधिपत्य क्रियाशून्यपणुं होवायी धमास्तिकायादिक द्रव्यमां कर्त्तपणुं नयी. जीवतुं कर्त्तपणुं पण पोताना कार्य (आत्मधर्म) संबंधे डे. कोइ पण जीव जगतनो कर्ता नयी, परंतु पोताना कर्यना परिणाम पामता गुणेना पर्यायनी प्रवृत्तिनोज कर्ता डे. जो परन्नावोनो कर्ता जीवन मानीए तो असद आरोप अने सिद्धिअन्नाव विंगे दूषणो प्राप्त थाय डे, माटे जो इकोकाङ्गोकनो झाता डे पण परन्नावनो वर्ता नयी. परंतु स्वनावर्मा मूढ यझे अशुद्ध परिणाममां पृथृत यह अशुद्ध निश्चन्नरे रागादिक विनावनो अने अशुद्ध अवहारनये झानावरणादि कर्मनो कर्ता थाय डे, तेम ब्रतां पण ते जीव स्वाभाविक सचिवालो अने अनन्त अविनाशी आत्मस्वरूपवालो होइने आत्माना परमानन्दनोज जोका छे. ते परन्नावोनो कर्ता नयी, पण झाता (साक्षीमात्र) डे.

आ मग्नता गुण धारण करनार प्राणी केवो होय ? ते विषे पूर्वपृज्य पुरुषो कहे डे के—

परब्रह्मणि मग्नस्य, श्लया पौद्गविकी कथा ।

व्वामी चामीकरोन्मादाः, स्फारा दाराद्राः क्व च ॥१॥

शब्दार्थ—“परब्रह्ममां मग्न थयेक्षा मनुष्यने पुद्गल संवंधी कथाज शिथिल थह जाय डे. तेने पडी आ मुर्वण्ना उन्मादो क्यां ? अने देदीप्यमान स्त्रीओनो आदर पण क्यां ? ”

विस्तरार्थ—“परब्रह्म एट्के झानादि आत्म स्वरूपमां मग्न थयेक्षा मनुष्यने पुद्गल संवंधी कथा एट्के शरीरादिकना सुंदर वर्ण विंगेनी कथा शिथिल एट्के नए थह जाय डे. केमके ते शरीरादिक परवस्तु डे, अग्राव डे, अने अन्नोग्य डे, एम तेने निर्धार थयेक्षो होय डे. अर्थात् आवा पुद्गलादिकनी कथा पण जेने करवा द्वायक नयी, तेने पडी तेनापर आग्रह तो क्यांशीज थाय ? ते कारणाथोज तेने आ कांचन एट्के मुर्वण्नो उन्मादज क्यांथी होय ? केमके प.पस्यानोना निपित्तभूत होवायी आत्मगुणरूपी संविचिवाला मनुष्यने मुर्वण्डिनुं ग्रहण

करवापण्नुं होतुं नदी, तेमन एवा पुरुषने स्फार-देवीप्यमान एवी जे त्वी तेने आदर पण क्यांथीज होय ? नन होय.”

अहनिंश पुद्गळ संवंधी कथामां पय रहेनार सर्व स्थाने उन्मादवालोंज होय डे. जुओ ! रामचंद्रे त्रिकाळमां पण असंजवित एवो सुवर्णनो मृग जो इने तेने प्रहण करवा माटे अनेक प्रकारना उन्मादो कर्ती हता. त्यार पडी त्वीनि पाठे पण तेणे घणो आदर प्रगट कयों हतो. अर्थात् सीतातुं हरण दत्तां घणो उन्माद वताव्यो हतो अने तेने पाडी द्वावना पारावार प्रयास कयों हतो. माटे व्यवा उत्पन्न करनारी ते पुद्गळनी कथाने जेणे ज्ञानगोचर करेझी छे तेज मनता गुण-युक्त कहेवाय डे. आ संवंधयां उपयोगी सोपत्रसुतुं दृष्टांत डे ते आ प्रमाणे—

### सोमवसुनी कथा.

कौशांधी नगरीमां सोप नामे एक व्रात्यण रहेतो हतो. ते हंमेशां धर्मशां त्व श्रवण करवामां प्रीतिवालो हतो. एकदा पुराणमां तेणे आ प्रमाणे द्वापं क्रपिनी कथा सांभळी के “ कोइ एक दीर्घदर्ढीं ( सूक्ष्म दृष्टिवालो ) तापसे वार हजार वर्ष सुधी तप कर्यु. ते मासकृपणने पारणे पांचन घेर जिक्का मागतो हतो. जो कदाच ते पांच धर्मांधी तेने जिक्का न मळतो तो फरीर्थी मासना उपवास करतो, पण डडे घेर जिक्का मागतो नहीं. ए प्रमाणे चार मासकृपण सुधी करतो, अने आहार मळतो त्यारे मळेझा आहारना चार जाग करीने एक जाग १जळचरने, वीजो २स्थलचरने अने वीजो ३खेचरने आपीने अवशेष रहेझा चोद्या जाग ने एकवीश वार पाणीधी धोइने पेते खातो हतो. आवी रीते तप करतां ते तापस मृत्यु पामीने इन्द्र थयो, त्यां तेणे सर्व देवोने पूछयुं के “ आ स्वर्ग कोण वनाव्युं डे ? ” त्यारे देवताओ वोद्या के “ आ स्वर्ग कोइए वनाव्युं नदी. त तो स्वयं-सिष्टज डे. ” ते सांजलीने तेणे ( इन्द्रे ) विचार्यु के “ आ स्वर्ग जीर्ण घडगयुं डे माटे हुं नवुं स्वर्ग वनाव्यु. ” देवताओए कर्यु के “ नवीन स्वर्ग कोव्यी बनी शकेज नहीं. ” इन्द्रे कर्यु के “ प्रयमना इन्द्रो नवीन स्वर्ग वनाववामा अद्वाक्त हता, पण हुं तो सर्प्य डुं. ” त्यारे देवो वोद्या के “ हे स्वाम ! तपे प्रथम मृत्युं साक्ने जुओ, पडी तपारी धारणा प्रमाणे करो. ” ते सांजलीने इन्द्र मृत्युनो-

<sup>१</sup> माछन्द्र विग्रे. <sup>२</sup> वशुओ. <sup>३</sup> पक्षीओ.

क जोवा गयो. त्यां कोइ एक अराण्यमां एक आकमाना छक्कनी नीचे द्वोम नामना क्रपिने तपस्या करता जोया. ते क्रपिने इन्हे पूछर्यु के “ हे क्रपि ! तमे मठ कर्या बिना तप केम करी शको गे ? ” द्वोम क्रपि वोद्या के “ ज्योरे चौद चोकमी जाप छे, त्यारे मारा शरीरनो एक बाल खरे गे. एवी रीते आ मारा आखा शरीरना सामाजण करोम बाल खरी जशे, त्यारे मारु मृत्यु थवातुं छे. हजु तो माराम-स्तकना चार केश पाण पूरा पड्या नवी. एकेक चोकमी वीश हजार वर्ष थाय छे, ते प्रमाणे सर्व रोम पमदो त्योरे मारु मृत्यु थझे. तेवी आ देह अनित्य गे. जो आ शरीर शाखरुं होत तो तेने माटे मठ विनोरे करवानो मोह राखत, पण तेम तो न-धी. ” ते सांजळी इन्हे विचार कर्यो के “ आ क्रपिनी पासे मारु आयुष्य तो जब्ना कणीआ जेयबुंज गे. तो नवीन स्वर्ग करवानो शो मोह करवो ? ” एम निश्चय करी इन्ह पोताने स्थाने गयो.

आ प्रमाणे पुराणनी काणा सांजळीने ते सोम व्रात्यणे विचार्यु के “ कु-लधर्म तो श्रेष्ठ नवी, माडे धर्मनी परीक्षा करीने ज्ञानधर्मनुं आचरण करुं. ” येडी तेणे नाना प्रकारनां दर्शनो जोतां जोतां कोइएक मतना परिवाजकने धर्म पूछ्यो के “ प्रज्ञुए त्रण पद्मां धर्म कहेझो गे. मीरुं खारुं, मुखे सुरुं अने पोतानो आत्मा द्वोक्षिय करवो. आ त्रण पद्मनो शो अर्थ समजवो ? ” परिवाजके जवाब आप्यो के “ प्रथमनुं जमेक्कुं जीर्ण थया पडी ( पची गया पडी ) रुचि प्रमाणे जमवुं ते मीरुं जोजन, कोपल शश्यामां सूरुं ते सुखशयन अने मंत्र तथा औपधी-ना प्रयोगयी द्वोक्षोमां प्रजांसा थाय तेम करवुं ते द्वोक्षिय थवुं. ” ते सांजळीने सोमपुरुए विचार्यु के “ आ सम्यग् धर्म नवी केमके आ तो पापप्रवृत्तिमय गे. ” एम विचारीने तेणे ते त्रणे पद्मनो अर्थ कोइ मुनि पासे जड्ने पूछ्यो. एद्दे मु-निए जवाब आप्यो के “ जे जोजन पांते कर्यु न होय, कराव्यु न होय अने तेना करनारने अनुमोदन पण कर्यु न होय एवुं जोजन एकार्तरे खावामां आंव तो ते प्रमार्थयी मिटु कहेवाय गे. केमके ते दाता, दान ने देय एम त्रणे प्रकारनी शु-चिवाकुं होवाथी दान करनार अने द्वेनार बनेने सुखकारी गे. विधि पूर्वक अ-ध्य. निष्ठा लेवी ते सुखशयन कहेवाय गे; अने कोइ पण प्रकारनी इहा ( इच्छा ) न करवी, एवुं महा निरीहपणं होवायी द्वोक्षिय थवाय गे. ” आ प्रमाणे.

<sup>1</sup> तेतार्थी लाल अन चोश हजार वर्षोनो एक चोकडी कहेवाय हे एम टवामो लाल्यु हे.

सांजलीने सोमवसुए विचार्य के “आ अर्थ मार्गानुयायी अने समिचिन न णाय डे,”

ए प्रमाणे तत्त्वज्ञान सांजलीने ते ब्राह्मण हर्ष पांभो अने पांच समिति तथा त्रण गुप्तिथी युक्त एवा ते साधुए आचरण करेद्वी विषदीने जोड्ने तथा सांजलीने तेणे चास्त्र ग्रहण कर्यु. एकदा ते सोम साधु अरण्यमां प्रतिपा धारण करी. उन्ना रहा हता, ते बद्धते इन्डियोना विषयोने निवारीने आत्म स्वरूपना अवज्ञोक्तनमांज तत्पर थइ तन्मय चित्त करीने आत्म स्वरूपना ज्ञानमां मन थापा कर्यु डे के—

ज्ञानमग्रस्य यत्सौख्यं, तद्वक्तुं नैव शब्दयते ।

नोपमेयं प्रियाश्लेषैर्नापि तद्वन्दनञ्चैः ॥ १ ॥

जावार्थ—ज्ञानमां पश्च थयेद्वा मनुष्यने जे सुख होय डे, ते कहेवाने को-इ समर्थ नथी. ते मुखने प्रियाना आकृंगन साथे अथवा तो चंदन रसना विदेपन साथे उपमा आपी शकाय तेम नथी.” आत्म स्वरूपनी उपदेशिथी प्राप्त थ-येद्वुं जे सुख ते वाणीगोचर बेज नहीं. ते अथात्म मुखने वाल सुखनी उपमा वे के उपमित करायन नहीं. केमके आरोपित सुख आत्मज्ञानना सुखनी वरावर थइ शके नहीं. कर्यु डे के—

बद्धजइ सुरसामित्तं, बद्धजइ पहुअत्तणं न संदेहो ।

द्व्यो नवरिं न बद्धजइ, जिणवरदेसितुं धम्मो ॥ १ ॥

जावार्थ—“देवोतुं स्वामीपाणुं ( इंजपाणुं ) पामी शकाय डे, तेमन प-  
चुता पण पामी शकाय डे, तेमां कांड संदेह जेद्वुं नथी. परंतु एक जिनेदे प्रखण्ण  
करेद्वो धर्मन पामी शकातो नथी, तेज एक विशेष छुर्वन्न डे.”

धम्मो पवत्तिरुद्धो, बद्धजइ कद्या वि निरयद्भुखतथा ।

जो निअवत्युसहावो, सो धम्मो छुव्वहो बोए ॥ २ ॥

जावार्थ—“नरकना छुव्वयो पीमा पापोने कोइक वखत प्रहतिरूप  
थर्म तो पामी शकाय डे, पण जेमां आत्मवस्तुनो स्वनाम रहेद्वो डे एवो जेथर्म ते  
आ द्वोक्तमा छुर्वन्न डे,”

एज कारणी वस्तुस्वरूप धर्मना स्पर्शवर्मे करीनेज ते साधु शुन्न ध्यानमां मग थइ कायोत्सर्वे रहा हता. ते वस्ते कोइ एक चक्रवर्ती चोराशी द्वाख हाथी, घोमा अने रथथी युक्त तथा उन्नु करोइ पश्चाति सहित अनेक वारांगनाओने नृत्य करावतो ते मार्गे नीकल्यो. तेणे ते मुनिने जोइने विचार्यु के “ अहो ! आ मुनिमां आत्मस्वरूपमां मग थवानो गुण केवो अप्रतिम डे ? ते वाणीयी कही शकाय तेप नयो। मारा सैन्यमां रहेद्वा स्पर्शनादिक पांचे इन्द्रियोना विपयोने जोया उत्तां पण ते जोता नयी, पाटे हुं हाथी परयी उत्तरीने तेपने बोझावुं. ” एम विचारी हाथी परयी नीने उत्तरीने ते बोझ्यो के “ हे मुनि ! हुं चक्रवर्ती राजा तपने वांछुं छुं. ” एम वारंवार राजाए कद्युं तोपण ते मुनिए सांजळ्या उत्तां पण सांजळ्युं नहीं, कारणके ते तो आत्मानो स्वाज्ञाविक धर्म अने तेनी अद्वार हजार शिक्षांगरथादि सेना तेने जोवामांज एकतानवाळा हता; परवस्तु तो विजाव दशावाळी होवाथी ते परावज्ञोकन करता नहोता. आ प्रमाणे आत्मगुणमां मग थयेद्वा ( जावितात्मा ) ते मुनिनी सामे चक्रवर्ती अरथा पहोर सुधी जोइ रहो, तो पण तेपणे पोतानुं ध्यानमपणुं बोमयुं नहीं, परी राजाए मुनिना गुणनी प्रशंसा करता सता श्रावकर्थम ग्रहण कर्यो. मुनि पण अनुक्रमे केवलज्ञान अने सिद्धिपदने पाम्या.

“ समग्र साध्य ( आत्मस्वरूप )ने साधनार एवा पोताना आत्मामांज रहेद्वा मगता गुणने पामीने आत्मकर्त्त्व—पोतानी सेना जोवामांज तन्पर अने समाधिमां रहेद्वा सोमवसु मुनिए इन्द्रिय विपयोयी जरपुर एवी चक्रवर्तीनी सेना सामुं पण जोयुं नहीं. ”

इत्यद्रिदिनपरिमिनोपदेशप्रासादवृत्तौ एकविशतितमसंज्ञस्य  
क्षयुत्तरविशततमः प्रवंधः ॥ ३०७ ॥

## व्याख्यान ३०३ मुं.

स्थिरता गुण विषे.

**दर्शनादिगुणावाप्तो, विज्ञावेष्वपवर्तना ।**

**सा स्थिरता दिवा रात्रावरक्तस्थिरतां गता ॥ १ ॥**

जावार्थ—“दर्शनादिगुणेनो प्राप्ति पादे रात्रिदिवस विज्ञाव पदार्थां राग छेष तज्जीने ते पदार्थांशी पात्रा फरखु तेने स्थिरता कहेकी छे.”

आ स्थिरता पूर्वाचार्यांए घणे प्रकारे वर्णवेज्ञी छे. तेमां धर्मस्तिकाय, अधर्मस्तिकाय अने आकाशास्तिकाय ए प्रणनी स्थिरता क्रियारहित होवायी अने पुद्गलोनी स्थिरता स्कंधादिनिवद् होवायी ते आत्मतत्त्वना साधनां हेतुचूल नदी, पण आत्मानी स्थिरताज हेतुचूल छे. तेमां नाम स्थिरता अने स्वापना स्थिरता तो पूर्वीनी जेम सुगम छे. इच्छायी स्थिरता एटझे योगचेष्टानो रोध करवो ते. अब्यने विषे स्थिरता एटझे पम्पण श्रेष्ठीनी जेम प्राप्त थपेज्ञा इच्छ्य ( धन ) नो व्यष करवानी इच्छा पण न करवी ते. अथवा इच्छ्यस्थिरता एटझे शरीरमां गोगादिक उत्पन्न थवायी मळ कोष्टकये भ्य ( मञ्जमूत्रादिक्लो रोध ) थाय छे ते. अथवा ते ब्रह्मधी व्यतिरिक्त—स्वापना उपयोगायी शून्य अने साध्यायी विकल एवा भृणी प्रणामादिकने विषे तथा कायोत्सर्गादिमां स्थिरता थाय छे ते पण इच्छ्यस्थिरता कहेवाप्य छे. करु छे के—

**अस्थिरे हृदये चित्रा, वास्त्राकारगोपना ।**

**पुंश्चित्या हृद कल्याणकारिणी न प्रकीर्तिता ॥ २ ॥**

जावार्थ—“हृदय स्थिर न होय एटझे परज्ञावपां प्रवर्ततु होय, उतां विचित्र एवी वाणी, नेत्र तथा आकारनी इच्छक्रियाद्य गोपना—ते पुंश्चित्या ( असती ) चीनी जेम हित करनारी कहेज्ञ नदी.”

जैन शासनमां जावनी अचिद्वायी एवो इच्छ क्रियाज प्रशस्त कहेज्ञी छे. जावरहित क्रिया विज्ञामाना ध्यान जेवी निष्कल छे. केटझाएकने इच्छ क्रिया परंपराए करीन धर्मना हेतुपणे थाय छे, एम तत्त्वार्थमां कहेलुँ छे, पण तें देवादिकला

मुखनी तथा यश विग्रेनी वांच्चारहित करेद्वी क्रिया समजवी; द्वोक्संज्ञामां आरूढ़ अयेलाए द्वोक्मां रूप्याति विग्रेनी इच्छा माटे करेद्वी न समजवी. जावस्थिरता अगुद्ध अने शुच्च ज्ञेदे करीने वे प्रकारनी डे. तेमां राग द्वेष्पां तन्मयरूप जे स्थिरता ते अगुद्ध जाव स्थिरता कहेवाय डे, अने सम्यग् ज्ञानादिक स्वरूपमां तन्मयणारूप स्थिरता ते शुच्च जाव स्थिरता कहेवाय डे.

साधनी अज्ञिज्ञापाए करीने साधने योग्य उद्यमना परिणामनी कारण-  
चूत योगादिक इच्छाश्रवनो त्याग करवायी अयेद्वा जे स्थिरता ते पहेद्वा चार नय  
रूप डे, जे सम्यक् दर्शनादिके करीने आत्मस्वरूप निष्पादन करवा माटे अन्यासं-  
वाळी स्थिरता ते ज्ञानय स्थिरता डे, जे धर्मध्यान अने गुक्वध्यानमां रहेद्वी अ-  
प्रच्युति परिणतिरूप स्थिरता ते उद्वा नयने योग्य डे, अने जे क्वायिक ज्ञानादिकना  
मुखवी अप्रच्युतिरूप स्थिरता ते एवंनूत स्थिरता कहेवाय डे. विजाव पदर्थमां  
पण सर्व नयनी अपेक्षाए स्थिरता होइ शके डे, पण तेवी स्थिरता तच्चविकल  
पुरुषोने होय डे. अहीं तो परजावमां अप्रवर्तनरूप जे स्थिरता तेज परमानंदना सं-  
दोहवाळी होवायी ग्रहण योग्य डे. कहु डे के—

स्थैर्यरत्नप्रदीपश्वेदीपः संकृष्टपदीपजैः ।

तद्विकृष्टपैरब्दं धूमैरद्वंधूमैस्तथाश्रवैः ॥ १ ॥

जावार्द—“जे मनुष्यने स्थिरतारूपी रत्नप्रदीप देवीप्यमान डे तेने सं-  
कृष्टरूपी दीवायी उत्पन्न थता विकृष्टरूपी धूमतुं शुं प्रयोजन डे? तेमज आश्रव  
रूपी धूमतुं पण शुं प्रयोजन डे ? ”

आ श्रोक्नो विस्तरार्थ एवो डे के—“ जे माणसने स्थिरता रूपीरत्नो  
दीवो देवीप्यमान डे, ते माणसने परवसुनी चिंतायी उत्पन्न अगुद्ध चप-  
क्तारूप जे संकृष्टते संकृष्ट रूपदोवाय। उत्पन्न थता जे वारंवार स्मरणरूप विकृ-  
ष्टो ते स्वप्न धूमाकाशी सर्वुं, अर्पत् तेने आवा धूमाका कांड द्वान करी शकता नयी.  
जो के अभेद रत्नव्रयीनो प्राकुर्जीव थाय त्योरेज निर्विकृष्ट समाधि थाय डे, तोपण  
आत्मस्वरूपमां द्वीन अयेद्वा मनुष्यने संसार संवंधी संकृष्टविकृष्ट तो थताज नयी.  
तथा इच्छयी अने जाववी प्राणातिपातादिक आश्रवोयी पण सर्वुं, अर्थात् जेने  
स्थिरता रूप रत्नदीपक होय तेन आश्रवो कांड पण द्वान करी शकता नयी.”

आत्म समाधिमां कीन थयेज्ञाने आश्रो होताज नयी; असत् स्वरूपयी द्वान्ति पामेज्ञानेज आश्रव प्राप्त थाय डे; तेनाज तेवी परिणति थाय डे. ज्यो आत्मस्वरूपनो वोध प्राप्त थाय डे, त्यारे पोतानी परिणति आत्मकार्य करवामांज ब्राह्मे डे, पण परकार्य करवामां वापाता नयी. कर्ता, कर्म विगेरे छए कारको पण आत्मस्वरूपनी मुद्रातायीज परकार्यमां व्यापार करता जणाय डे. वास्तविक रीते ते आशुच्छि करनाराज डे झगे स्वपरना विवेक करीने “ हुं जहो बुं, हुं पर व-सुनो कर्ण अथवा जोका नयी. ” ए प्रमाणे आत्म विवेक प्राप्त थाय छे त्यारे पद्मालक रूप चरुने आत्मकार्य करवामांज प्रवर्तवे छे. ते वालो ड कारकोनी प्रवृत्ति आ प्रमाणे थाय डे: “ आत्मा ( पोताना ) आत्माने आत्माए करीने आत्माने गाटे ( आत्महान माटे ) आत्मायी आत्मामांज प्रवर्तवे डे. ” आ प्रमाणे स्वरूपमां स्थिरतावाचा मनुष्योने आश्रो होता नदी. अहां स्थिरता गुण उपर ते गुणयुक्त राजीमतोनो संबंध डे ते आ प्रमाणे—

### राजीमतीनुं हृषान्त.

दश धनुषना देहवाला ध्री नेमीनाथे कुमारावस्थामां त्रणसो वर्ष निर्ग-  
मन कर्या. अन्यदा वन्युओना आप्रहयी पश्चाती, गौरी, गंगारी विगेरे कुण्ठनी  
पद्माणीओए तथा वत्रीश हजार गोपांगनाओए जङ्गकीमा सफ्ये हावजावना वा-  
योगी, कटाक्षस्त्वी वाणीयी अने पुष्पना कंडुक ( दडा ) मारवायी नेमिनाथने  
खेद पमानी परणवानी कबुझात मागी. नेमिनाथ मान धारीने रहा, तेथी कुण्ठनी  
राणीओए कुण्ठने कांगु के नेमिनाथ पाणिश्वरण करवानुं मान्युं डे. ते सांजळी-  
ने हृषे पामेज्ञा कुण्ठे सत्यजामानी नानो वेन राजीमतीने माटे तेना पिता उप्रसेन  
पासे मागणी करी. उप्रसेने पण राजीमती साथे नेमिनाथनो निवाह कधुक कर्या.  
पठी ल्यने दिवसे यादवोनी साथे रथमां वेसीने नेमिनाथ उप्रसेनना घर समीपे  
आव्या. त्यो एक वामामां दृढ वंथनयी विवेज्ञां एवां दीन पशुपक्षीओने करुण स्व-  
रे रुद्रन करतां नेमिनाथ सांजळ्यां. तेथी तेणे सारधिने पृछुपुरु के “ आ विवार-  
ओने केम विवेज्ञां छे ? ” सारधिए कांगु के “ आपना दम्भमसंगमा सर्व यादवोने  
जमामता माटे आ पशुओने विवेज्ञां डे. ” ते सांजळी नेमिनाथ बोव्या के—

धिगनाराजकं विश्वं, धिगमी निःकृपा जनाः।

यदेवमज्ञारण्यानां, पशुनां कुर्वते वधं॥ १॥

“ आ स्वामी विनाना विश्वने धिक्कार डें, अने आ निर्दय माणसोने प-  
ण धिक्कार डें के जेओ शरणरहित एवा ( निरपाधी ) पशुओनो वध करे डें। ”

पड़ीनेमिनाथना हुकमथी सारथिए वासामांयी सर्व जीवोने मुक्त कराव्या अने  
रथ पाड़ो वाल्यो. ते जोइ नेमिनाथना मातापिता विगेरे खेद पामीने नेमिनाथने  
कहेवा द्वाग्या के “ हे वत्स ! आवा हर्षने रेकाए विरस करवो योग्य नर्थी। ”  
नेमिनाथ बोल्या के “ हे मातपिता ! मैं अर्हां आववानो जे आरंज कयों डे ते स-  
र्वने कुपाधर्म जाणाववा माटे, अने पशुना समूहने मूकाववा माटेज कयों डे। ” एम  
कहीने रुदन करता सर्व यादवोनी उपेक्षा करोने नेमिनाथ घेरे आव्या. पड़ी इ-  
न्द्रनी आङ्गाधी जृनक देवोए द्वावीने धेरेहां मुवर्णथी पञ्चुए वरसीदान आपी-  
ने चारित्र ग्रहण कर्यु. चारित्र लीधा पड़ो चोपन दिवसे आभिन पासनी अपा-  
वास्याए ( जादंरवा वद ७ ) से ) चित्रा नक्षत्रमां चंद्र स्थित हुतो ते वरखते जन्म-  
थोज ब्रह्मचर्यवस्थाए रहेहा पञ्चुने रुवतक ( गिरनार ) पर्वत उपर केवलङ्घान  
प्राप्त यथुं.

अर्हां जोजराज ( उग्रसेन ) नी पुत्री राजीमती पञ्चुए ज्योर रथ पाड़ो  
बाल्यो त्यरे आवेद्धी मूर्झने लीधि तत्काळ पृथ्वीपर पमी गइ. तेनी सखीओए  
तेने अनेक उपचारोथी सावध करी, एट्टो राजीमती मुखस्लपी चंद्रना संवंधथी  
जाए करमाइ गया होय तेवा हस्तकमलने कपोलपर राखी विज्ञाप करवा द्वागी के  
“ हे इश ! ज्योरे तमे पाढुं चलवानुं आगल्थीज धारी राख्युं हतुं, तो मने  
आवी रीते डेतरी शामाटे ? सत्पुरुपने आवुं कार्य करवुं योग्य नर्थी. केमके आ-  
रंज करेहा कार्यने उत्तम पुरुषो तजता नर्थी, ते तमे शुं नर्थी सांजल्युं ? शुं मैं  
पूर्व जन्ममां कोइ दंपतीना जोगमुखमां कांइ विघ्न कर्यु हशे ? अथवा शुं कोइना  
हाथतुं विघ्न कर्यु हशे, के जेवी हुं आपना करकमलनो स्पर्श पण पामी न-  
हीं ? ” आ प्रमाणे विज्ञाप करती राजीमतीने तेनी सखीओए कर्यु के “ हे स-  
खी ! तुं जामाटे ज्ञोक करे डे ? ए कठोर हृदयवाला नेमि गया तो जड़े गया,  
तेंतुं शुं काम डे ? यादवोमां बीजा प्रोतामा स्वस्पदी कामदेवने पण जीतनारा ध-  
णा कुमारो डे, तेमांयी कोइ पण शुं तने परणशे नहीं ? ” आ प्रमाणे सखीओ-  
नां वचन सांजलीने राजीमती बोल्ली के “ हे सखीओ ! आवुं कुलने कदंक झ-  
गारनारुं वचन तमे केम बोझो डो ? शुं कोइ पण जाख्यमां बीजी वार कल्यादान

अपाय एम कहुं डे ? मोटे नेमिज मारा स्वामी हो. वीजाने हुं मनवचनथी इच्छती नथी.” एम कहीने ते राजापती केटड्वेक काळे शोकरहित थइ, “अने जैम चक्रवाकी पोताना पतिना समागमनी उत्कंठाथी चंडोदयनी राह जुए, तेम दीक्षा द्वेवानी उत्कंठाथी जगवानने केवलङ्घान उत्पन्न थयानी राह जोती दिवसो फुखयी निर्गमन करवा द्वागी.

अहीं जगवाने दीक्षा द्वीधी, त्यारे तेना नाना ज्ञाइ रथनेमि राजीमतीने परणवानी बांच्छाथी तेने नवां नवां जेटणां मोकलवा द्वाग्यो. ते जोइ राजीमती एम धारती के “पोताना माझ्ना भेमेन द्वीधे आ रथनेमि मने जेटो मोकलेडे, मोटे मारे ते ग्रहण करवो जोइए.” एम धारीने ते ग्रहण करवा द्वागी. एक दिवसे विवाहनी इच्छाथी रथनेमिए राजीमतीनी प्रार्थना करी, एटझे राजीमतीए कहुं के “मदेनफळ” (भाँडोळ) सुंधीने तुं वमन कर, पडी ते वमन करेलुं खाइ जा.” ते बोध्यो के “शुं हुं कृतरा शुं के वमन करेलुं खाउं ?” राजीमती द्वीधी के “त्यारे तमारा ज्ञाइए त्याग करेली एवी मने जोगवाने शामोटे इच्छा करोडो ? बढी कयो माणस हस्तीने गोमीनि गधेनानी इच्छा करे ? अने कयो माणस रत्ननो अनादर करीने काचना ककमने इच्छे ? हुं तो जन्मांतरमा पण नेमिनाथ वरनेज इच्छुं शुं, वीजाने इच्छती नथी.” इत्यादि युक्तियो समजावीने रथनेमिनो मनोरथ ज्ञाग करी पाडो मोकव्यो.

एकदा जेमने केवलङ्घान प्राप्त थयुं डे एवा नेमिनाथ प्रज्ञु गिरनारपर समर्पण सर्था. ते वयते राजीमतीए त्यां जइ प्रज्ञु पासे दीक्षा द्वीधी; प्रज्ञुना नाना ज्ञाइ रथनेमिए पण चारिं ग्रहण कर्यु.

अन्यदा जिनेखरनी आङ्गा द्वाघने रथनेमि जिक्काने मोटे नगरीमां छ्रमण करी पाडा फर्या. रस्तापां वरसाद पमवा द्वाग्यो. तेथी तेणे विचार्यु के “मारा शरीरना संरक्षणी अपकाय जीवोनो विनाश न थाओ.” एम विचारीने ते एक गुफामा पेता. अहीं राजीमती पण प्रज्ञुने वांदने पाडो बलती हुती, ते पण हृषियी जय पापीने रथनेमिवाढीज गुफामा पेती. ते गुफामा रथनेमि रहेक्का डे तेनी तेने खवर नहोती, अने पेता पडी पण अंधकारने द्वीधे एक खुण्णामा वंते क्का रथनेमिने तेणे जोया नहीं, एटड्वे पोताना नीजाएक्का वहने ते नीचोवां द्वांगी, ते वयने स्वर्गज्ञोकने जीतवाने मांदज तप “कर्त्ती होर्थ नहीं एवी हृषिती”

ते साध्वीने बहुरहित जोड़ने रथनेमि साधुं विषयोत्कंठित थया। ते बहुते “आ मुनिना जाइए मारो जन्मयो आरंजीने तिरस्कार कर्यो भे” एम धारीने कामदेव पण जाइना वैरने वीधि ते मुनिने पीमा करवा लाग्यो, रथनेमि मुनि कामवि-कारथी ग्रस्त थया सत्वा विचार करवा लाग्या के “जाणे समस्त जगतना सौंदर्य-नो पिंफ होय एवी आ मृगेक्षणाने एकवार पण में जोगवी नहीं, तेथी मारो जन्म निर्वर्क भे.” एम विचारीने चाकरनो जेम कांइक शंखीरना कंपने धारण करता ते मुनि विसंस्पुद्धपणे उन्होंने थड़ धीरे धीरे राजीमतीनी सन्मुख आवोने विकसर नेत्रधी तेना सामुं जोना वाढ्या के “हे जडे ! स्वेच्छाधी आव, आव, आपणे जन्म सफल करीए, पर्डी वृद्धावस्थामां आपणे फरीने व्रत ग्रहण करसुं.” आ प्रमाणे सांजळीने शुद्ध मनवाळी ते साध्वी धर्य धारण करीने तत्काल वस्त्र पहेरी दृश्य अमृत समान वाणीधी ते मुनि प्रत्ये बोक्षी के “हे मुनीन्द्र ! संयमने धा-रण करनार एवा तमोर आ प्रमाणे बोक्षुं युक्त नयी. हे मुनि ! तमारो निर्मल कुलमां जन्म क्यां ? अने आ काजळधी पण काळुं एवुं कुकर्म क्यां ? माटे आदर केज्जा निर्मल व्रतनो निर्बाह करो. धीर पुरुषो कदापि पण व्रतधी भ्रष्ट थता नयी. वलो संयमीनी साधे जोगविज्ञास करवाधी, धर्मनी उड्डाह करवाधी, कृपिनी ह-त्या करवाधी अने देवदत्तनो विनाश करवाधी बोधीवीजनो नाश थाय भे, एम शास्त्रमां कहेद्दुं भे. पूर्वे शृहस्थावस्थामां में वाणीधी पण तमारी इच्छा करी नयी, तो आ-जे व्रतनी प्रतिज्ञा लड्डे पर्डी तमारो आदर केम करी शकुं ? हे मुनि ! अगंधन कुलमां उत्पन्न थयेज्जा सर्वे पण सारा के जे वमन करेद्दुं विष पालुं ग्रहण करता नयी, पण तमे तो ते करतां पण हीन छो के जे वमेज्जाने पालुं इच्छो भो. जीज्जनुं खंसन करनारा जीवितने धिक्कार भे ! हे श्रेष्ठ साधु ! जो तमे खीने जोड़े जोड़ने तेना पर आसक्त थझो, तो वायुयी हणायेज्जा वृक्षनी जेम धर्यथी हणाइने अ-स्थिर आत्मावाला थझो. माटे हे मुनि ! एक कोमी वास्ते करोमनो नाश न करो, अने धर्य धारण करीने शुद्ध धर्मनुं आचरण करो.” आ प्रमाणे राजीमतीनां अ-नेक प्रकारनां युक्तियुक्त वाक्यो सांजळीने रथनेमि मुनिए विचार्यु के “खोजा-तिमां पण गुणसंभित्तिना जंमार सूप आ. राजीमतीने धन्व भे ! अने कुकर्म सूपी समुद्रमां रुचेज्जो होवाधी हुं पुरुष उतां पण मने धिक्कार भे !” पर्डी राजीमतीनी सम्मतिधी वोध पामीने रथनेमि मुनिए तत्काल ते साध्वीने मिथ्याछुक्त आ-

पीने प्रज्ञु पासे जह फरीधी साहु धर्म अंगीकार कयो।

राजीवती साध्वी पण शहस्रपणामां चारसो वर्ष, ब्रह्मस्थपणामां एक वर्ष अने केवलज्ञान अवस्थामां पांचसो वर्ष रहीने कुङ्ग नवसो ने एक वर्षतु आयुष्य पूर्ण करी मोक्षपदेन पामी।

“ कामदेवनां पांच वाणना निवारण मोट पांच महाव्रत रूपी शशो धारण करवा, तेमां पण विशेष करीने स्थिरता धारण करवी; केषके स्थिरता विना पावे महावती निष्कल्पाय डे। ”

इत्यद्विनष्टिमितोपदेशमासादवृत्ती एकविश्वातिनमस्तंनस्य  
शुत्तरप्रिशतनयः प्रवृथः ॥ ३०३ ॥

### व्याख्यान ३०४ सुं.

मुनिना स्थिरता गुण विषे,

नेत्तवन्ति मुनयः केचिद्विकित्सां व्याधिपीभिताः ।

निष्प्रकंपा यतेर्थमें, श्रीमत्सनल्कुमारवत् ॥ १ ॥

जावार्थ—“ केद्याएक मुनिओ व्याधिधी पीभित यथा उतां पण ते रोगनी चिकित्सा करवाने इच्छता नवी, अने श्रीमान् सनल्कुमार चंकीनी जेम यति धर्मां कंपरहित ( स्थिर ) रहे डे। ”

### सनल्कुमार चकवर्तीनी कथा,

कांचनपुरपां विक्रमयश नामे राजा हतो, तेने पांचसो राणीओ हतो, ते पुरमां जाग्रदत्त नामनो श्रेष्ठी रहेती हनो, तेने विष्णुश्री नामे खी हतो, एकदा राजा मार्गिमां जतां विष्णुश्रीने जोइने मोह पाम्यो, तेथी तेनु द्वरण करीने तेने पोताना अन्तःपुरमां राखी, ते विषे धर्मोपदेशमाळानी वृत्तिमां कर्णु डे के—

सन्ति मार्गणधातानां; सोदारः प्रचुरा युधि ।

विरक्षास्तु स्मरश्चाल्पप्रहाराणामिहावनौ ॥ १ ॥

जावार्थ—“युद्धमां वाणना धातने सहन करनारा वणा डे, पण काम-देवना शत्रुप्रहारने सहन करनारा आं पृथ्वीमां विरक्षा डे.”

पोतानी स्त्रीना वियोगथी विद्वल थयेद्वा नागदत्त महा छुँखी हाल्लते आवा शहरमां भटकवा लाग्यो. विष्णुश्रीने अन्तःपुरमां लाववाथी राजानी उपर बीजी सर्वे राणीओए कोप पामीने ते विष्णुश्रीने कार्मणप्रयोगथी मारी नांखी; परं विष्णुश्रीना मोहमां परेद्वा राजाए तेने मरेद्वी थारी नहीं, पण कांड कारण-सर रीसाणी डे एम मानीने ते तेना पगमां पक्ष्यो अने बोद्ध्यो के “हे प्रिये! अपराध विना मारा पर तुं जामाटे कोप करे छे ?” आवां वाक्योथी पण झ्योर ते बोद्धी नहीं, त्यारे तेने पोताना खोलामां वेसानी. मंत्रीओए राजाने घणी रीते सप्तजाग्यो, परंतु राजाए तेने अग्रिसंस्कारादिक कांड कार्य करवा दीखुं नहीं. छेवट मंत्रीओए राजाने कोइ वावतनो विचार करवाना मिपथी कार्यमां व्यग्र कर्यो. पडी राजानी हप्तिने डेतरीने ते विष्णुश्रीना शवने बनमां छाड जड्ने मुकी दीखुं. थोकीबारे राजा विचार करीने पाड्यो आब्यो, तो विष्णुश्रीने जोड नहीं. तेथी ते मृद्दी पाम्यो. मंत्रीओए तेने चंद्रनना जलथी सिंचन करी सावध कर्यो. एट्डे राजाए कर्यु के “मारी प्रिया व्यां डे ? ज्यां होय त्यांथी ल्लावीने मने यतावो.” मंत्री बोद्ध्या के “हे स्वामी ! आपना विरहयी पीका पामीने वारीमां गयेझ डे. परंतु आपना उपस्तो क्रोध तजीने आपना गुणनुं स्मरण करी हमणा पाडी आवश्य, माटे आप तेनी चिन्ता न करो.” ते सांजलीने राजा अन्नादिकनो त्याग करीने वेदो. आ प्रमाणे राजा वे दिवस मुधी शोकमग्र रख्यो. त्यारे मंत्रीओ तेने विष्णुश्रीना शव पासे छाड गया. ते शवने जोयुं तो तेनुं मुख पहोळुं थड गयेयुं होवाथी अंद्रना ढांत देखावाने ल्लीधे ते जयंकर लाग्नुं हतुं, पडीओए वज्र जेवी चांचो मारीने तंनां बन्ने नेत्रो उखेमी नांखेद्वां हतां, तेना देहमां कीका पड्या हन्ता, नाक अके कान पक्कीओ खाइ गया हता; शियाळ, कागजा, कृतरा अने धुँघड विगरेए ते शवने चावी नाम्बुं हतुं, तेथी तेमांथी नीकल्नुं चुर्गेवाढुं पाणी इथ्वीने आई करतुं हतुं. आवी स्थितिमां ते शवने जोड्ने राजाने परम विराग्य

प्राप्त थयो, ते विचारवा लाग्यो के “ ज्यां सुधी मारो जीव आ शरीरे तमी-  
ने जाय नहीं त्यांसुधीमां हुं आ शरीरे करीने मारा आत्मानुं हित करुं.” इत्या-  
दि विचारीने तेणे तल्काळ दीक्षा ग्रहण करी, पछी चाहित्रितुं पाद्मन करी तप त-  
पने ब्रीजा स्वर्गे देवता थयो.

त्यांथी चबीने रत्नपुरमां जिनर्थम् नामे वणिक थयो, पेढ्ठो नागदत्त पण  
जबमो ज्ञमण करीने मिहुपुरमां अग्निशमी नामे ब्राह्मण थयो; तेणे तापसपणुं अं-  
गीकार कर्युं, ते तापस वे मास उपवासना पारणा माटे रत्नपुरमां आव्यो, राजाए  
पारणा माटे निमंत्रण कर्युं, त्यां जिनर्थम् श्रावकने जोइने तेणे राजाने कर्युं के  
“ जो आ वणिकना पृष्ठपर उपण नोजनपात्र राखीने जमानो तो हुं जमुं.” ते  
सांचलीने राजाए ते प्रमाणे कराव्युं, नोजनपात्र अति उपण होवाथी जिनर्थमना  
पृष्ठनी चापको उम्बरी गङ्ग, तोपण तेणे क्रोध के क्षेप कर्या विना पोताना पूर्वक  
मंतुंज ए फळ डे प्रम धार्युः पडी तेणे सात क्षेत्रमां इव्यनो व्यथ करीने ब्रत ग्रहण  
कर्युं, प्रांते अनशन करी एक मासे काळर्थम् पापी सार्थम् देवज्ञोकमां इन्द्र थयो,  
पेढ्ठो तापस ते इन्द्रनी ऐरावण हस्ती थयो, ते हस्ती त्यांथी चबीने भवमां ज्ञमण  
करी अभित नामे यद्ग थयो; अनेन जिनर्थमनो जीव जे इन्द्र थयो हतो ते आयुष्य  
पूर्ण थतां चबीने चौद महा स्वमोर्थी सूचित सनत्कुमार नामनो चोथो चक्रवर्ती हं  
स्तिरापुरमां अभ्यसेन राजानी पट्टराणी सहदेवीनी कुक्षिथी उत्पन्न थयो.

ते चक्रीने महेन्द्रसिंह नामे एक मित्र हतो, एकदा वसन्त क्रतुने विवे-  
युवावस्थाना आरंभमां मित्र सहित सनत्कुमार नेदनवन जेवा मकरंद नामना व-  
नमां गयो, त्यां कोइ अभ्यपालके एक जातिवंत अभ्य कुमारने नेट तरीके आप्यो,  
तेनापर चढीने सनत्कुमार तेने चक्रावता लाग्यो, तेवापां ते अभ्य एक क्षणमां सर्व  
जनने अदृश्य थड गयो, ते खवर अभ्यसेन राजाने थनां तेणे घणी शोध करावी,  
एण अभ्य तथा पुत्रनी शोध मळी जाकी नहीं, पडी सनत्कुमारनो मित्र, महेन्द्र-  
सिंह राजानी रजा लङ्घने मित्रनी शोध माटे चाढ्यो, एक वर्ष सुधी ते मोटो अं-  
गेपां जड्यो, पण मित्रनी प्राप्ति थड नहीं, एकदा सारस पक्कीनो ध्वनि सांचली-  
ने ते शन्दने अनुसारे आगल गयो, तो एक सरोवर तेना जोवामो आव्युं, ते सरो-  
वरनी पासे कदम्बीगृहमां स्त्रीओना समूहथी अनुसराता वंदिजनना मुख्यी एक  
स्तुतिनो श्लोक महेन्द्रसिंहे सांचलीयो के—

कुरुदेशोकमाणिक्य, अश्वसेननृपांगज ।

श्रीसनत्कुमार त्वं, जय त्रेद्वोक्यविश्रुतः ॥ १ ॥

नावार्य—“ कुरुदेशना एक माणिक्य समान अने अश्वसेन राजाना पुनः एवा हे श्रीमान सनत्कुमार ! त्रेण द्वोक्मां विद्यत एवा तमे जय पामो । ”

आ प्रमाणे श्रोक सांचलीने महेन्द्रसिंह अति र्हष पाम्यो. तेथी आगळ जड्ने जुए डे, तो तेणे साकात् सनत्कुमारने जोयो. सनत्कुमार पण मित्रने जोड्ने उत्तानंद पाम्यो. वने मित्रो प्रेपथी परस्पर आविंगन करी मठीने एक आसनपर वेता. कुशद्व वृत्तान्त पृथतां महेन्द्रसिंह बोध्यो के “ हे कुमार ! आद्वा वधा दिवसो तमे क्यां निर्गमन कर्या ? ” कुमारे करुं के “ मने निद्रा आवे डे, माटे हुं जरा सुइ जाऊं दुँ. तमने मारुं सर्व वृत्तान्त आ मारी वकुञ्जवती नामनी प्रिया प्रङ्गसि विद्यायी जाणीने कहेवो. ” एम कहीने सनत्कुमार सुइ गयो. पडी वकुञ्जवती वोली के “ हे महेन्द्रसिंह ! तमारा मित्रनुं अपहरण करीने ते विपरीत शिक्षावालो अश्व तेमने एक मोटा अरण्यमां द्वाव्यो. त्यां त्रीजे दिवसे कृपा तृपायी पोमा पामीने ते अश्व भरण पाम्यो. कुमार पण जळ विना आंखे अंधारा आवारायी मृडी खाइने पृथ्वीपर पसी गया. ते वरवते कोइ एक यङ्के तेने जळ डांटीने सावध कर्या. एट्टेके कुमारे ते यङ्कने पृथुयुं के “ आवृं जळ क्यां डे ? ” यङ्क बोध्यो के “ आवृं जळ मान सरोवरमां डे. ” कुमारे करुं के “ जो हुं तेमां स्नान करुं तो मारा शरीरनो ताप शान्त थाय. ” ते सांचलीने ते यङ्क तेने मान सरोवर लपर बङ्ग गयो. कुमारे तेमां स्नान करुं. पडी जळपान करीने कुमार सरोवरनी पाळ लपर वेता, तेवामां पूर्वना चार जळना वैरी अमित यङ्के तेमने जोया. एट्टेके ते यङ्क क्रोध करीने कुमार साये युद्ध करवा आव्यो. वनेतु महा युद्ध थयुं. चिरकाळ सुधी युद्ध करीने डेवट तमारा मित्रे क्रोधदो वज्र जेवो मुतीवके ते यङ्कने प्रहार कर्यो. ते देव व होवायी भरण पाम्यो नहीं, पण जय पामोने नासी गयो. पडी कुमार त्यांयी आगळ चाल्या.

आगळ जतां जानुवेग नामना चिद्रापेर पोतानी आउ पुत्रीओ साये कुमारनो चिद्राह कर्यो. ते आउ खीओ सहित मुता हता, तेवामां ते अमित यङ्के आवीने कुमारने उपार्मी कोइक स्थाने नांखी दीधा, मातःकाळे जायत थड्ने कु-

अचिन्तयच्च धिगिदं, सदागद पदं वपुः ।

मुधैव सुग्धाः कुर्वन्ति, तन्मूर्च्छा तुच्छबुद्धयः ॥ १ ॥

शरीरमन्तर्हत्पन्नैव्याधिनिर्विधैरिदम् ।

दीर्घते दारुणैर्दारु, दारु कीटगणैरिव ॥ २ ॥

अद्यश्वीनविनाशस्य, शरीरस्य शरीरिणाम् ।

सकामनिर्जरासारं, तप एव महत्कदम् ॥ ३ ॥

**ज्ञावार्थ—**“ चक्रीए विचार्यु के निरन्तर व्याधिना स्थानत्रैत एवा आ शरीरने धिकार डे। आवा शरीरनी मूर्च्छा तुच्छ बुद्धिवालो मूर्ख मोण्डसो फोगटज करे डे। शरीरनी अंदर उत्पन्न थंयद्वा विविध प्रकारना जयंकर व्याधिओए करीने कीमाना समूहवदे काषुनी जेम आ शरीर दिवीर्ण थाय डे। आज के काम नाश पामवा वाला शरीरनुं मोडं फळ सकाम निर्जराना सरवालो तप करवो तेज डे। ”

इत्यादि विचार करीने सनत्कुमार चक्रीए चक्रीपणानी क्रष्णने तभी दृश्ये विनप्त्यर नामना सूरि पासे दीक्षा ग्रहण करी।

परी गुरुनी आङ्गाथी एकज्ञविहार प्रतिमा अंगीकार करी विचरणा होग्या, तेमनी पाड़ल छ मास सुधी विविध प्रकारना आङ्गाप करती तेमनी राणीओ तथा मंत्रीओ विगेरे फर्यो; पण ते मुनीन्द्रे हण्डिवं जोवा जेटझी पण तेमनी संजावना करी नहीं, बढ़, अद्यप विगेरे तपस्या करीने पारणाने दिवसे गोचरी मार्द फर्ला अन्यदा कुरीया अने बकरीनी ठाड़ा तेमने प्राप्त थइ, तेनो आहार करवायी, तेमना शरीरमां सात व्याधिओ उत्पन्न थाया, ते आ प्रमाणे—

शुष्ककच्छु ज्वरः श्वासः, काशश्वासाहुचिस्तथा ।

अक्षिष्ठःखं तुंदक्षःखं, ससैतेऽत्यन्तदारुणाः ॥ १ ॥

**ज्ञावार्थ—**“ सूकी खरज, ज्वर, श्वास, काश ( खांसी ), अन्न पर अरुचि, नेत्ररोग अने उदररोग ए सात व्याधिओ अत्यन्त दारुण डे। ”

\* आ श्वेषे थो हेमचंद्रचांडून योगशावनी म्होङ्गडानिमो नोथा चमीनी भावनामा तेमने भाष्या के।

आ सात व्याधिना छुःखने तेमणे सातसो वर्षे सुश्री सहन कर्यु, पण कोइ बखत पोताना देहमां व्याधिओ डे एवो उपयोग पण तेमणे दीधो नहीं। सं-यमनी कियारहित एक क्षण पण तेमनो निर्गमन थतो नहीं के जे बखते व्याधिनुं स्मरण थाय, आवी तेमनी चारित्रिमां स्थिरता जोइने सज्जामां वेठेलां सौधर्पे इन्हे सर्व देवोनी सपक्ष कथुं के “ अहो ! सनत्कुमार मुनिनी केवी अनुपम स्थिरता डे, के जे व्याधिना प्रतिकारनी इच्छा पण करता नथी। ” ते सांजलीने पेढ़ा प्रथ-मनाज वे देवो परीक्षा करवा माटे वैद्यनुं रूप धारण करीने पृथ्वी पर आव्या, ते वै-योए मुनिने कथुं के “ हे मुनि ! जो आपनी आङ्गा होय तो अपे वैयो आप-ना व्याधिनी निर्देष आपथ्यो चिकित्सा करीए। ” मुनि बोद्धा के “ इच्छा अने जाव एम वे प्रकारना व्याधिओ डे, तेमां इच्छा एटङ्के बाय व्याधिना प्रतिकारने तो हुं पण जाणु दुं, ” एम कहीने ते मुनिए पोतानी एक आंगलीने पोताना शुभ्य ( शुंक ) वर्मे द्वेष करीने सुवर्ण जेवी करी बतावी, पड़ी मुनि बोद्धा के “ आउ कर्मने जाव व्याधिओ कहेल्ला डे, ते कर्मनी एकसो ने अठाखन प्रकृतिओ कहेली डे, तेमना प्रतिकारने हुं पोते, क्रियावर्मे करुं दुं, ते प्रतिकार झानविकल अने क्रियामां नपुंसक जेवा पुरुषोने अति छुप्कर डे, हुं मारा चित्तने गुज त्रिया रहित क्षणबार पण राखतो नथी; ते डतां पण जाव रोगेथी हूमेशां जय पापतो रहुं दुं, माटे जो तपे खरा वैद्य हो तो मारा जाव रोगनो प्रतिकार करो। ” आ पमाणे सांजलीने ते वन्ने देवो पोताना आगमनतुं कारण कही तेमनी स्तुति करी-ने पोताने स्थाने गया, अने सर्व वृत्तांत इन्हने निवेदन कर्यो।

सनत्कुमार मुनीभर खस्गथारा समान तीव्र ब्रततुं पाद्धन करीने अंते अनशन ग्रहण करी उपाधिरहित समाधिवडे देहने तजी दश त्रीजा देवद्वाकमां महीर्ष्यक देवता थया,

एव एव उपाधिविभिः दिवानां दद्यन् ॥ ३०४ ॥

चतुर्हत्तरत्रिशततमः प्रवैषः ॥ ३०४ ॥

## व्याख्यान ३०५ सुं.

—\*\*\*—  
मोह तजवा विषे.

**स्वरूपानववोधेन, मोहमूढा ममत्वगः ।**

**चमन्ति चवकान्तरे, हेयो मोहस्ततोऽग्रुजः ॥ १ ॥**

जावार्थ—“आत्म स्वरूपना अङ्गानने लीधे मोहमां मूढ धयेज्ञा अने संसारमां ममतावाळा जीवो जवाट्टीमां ज्ञमण कर्ता करे छे, माटे ए अग्रुज मोह त्याग करता लायक डे.”

आ श्येकना अर्थात् समर्थन करता माटे अहीं एवी जावना करतानी के झानादिक गुणना सुखनो रोध करनारा, चंचल स्वज्ञाववाळा, अनन्त जीवोए अनन्तवार जोगवी जोगवीने मूकी दीधेज्ञा, जह अने अप्राप्य एवा पुद्गङ्गीमां ग्रहण रूप जे विकल्प ( पुद्गलो उपर जे ममता ) ते मोह कहेवाय डे: आवा मोहमां आसक्त धयेज्ञा जीवो जवाट्टीमां परिज्ञमण करे डे, तेथी ते मोहनो त्याग करतो योग्य डे, कायुं छे के—

—\*\*\*—  
**अप्पा नाणसद्वावी, दंसणसीझो विसुद्धसुदरूपो ।**

**सो संसारे जमइ, एसो दोसो खु मोहस्त ॥ १ ॥**

जावार्थ—“झान दर्शनना स्वज्ञाववाळो अने विशुद्ध सुखरूप एवो आत्मा पण संसारमां परिज्ञमण करे छे, ते दोप मोहनोज डे.”

मोहनो त्याग शुद्ध आत्मज्ञाने करीने थड शके डे. “झानादिकं अनन्त गुण पर्यायवाळो, नित्यानित्य विंगेरे अनन्त स्वज्ञाववाळो, असंख्य प्रदेशी, स्वज्ञावपरिणामी ( आत्मज्ञाना परिणामवाळो ), पोताना स्वज्ञावनोज कर्ता अने जोक्ता इत्यादि गुणवाळो शुद्ध आत्मा तेज हुं छुं, हुं अनन्त स्याद्वाद सत्तानो रसिक छुं. एक समयमां त्रण काळमां अने त्रण झोकमां रहेज्ञा सर्वे द्रव्यपर्यायोंनी उत्पत्ति, स्थिति अने नाशने जणावनाहूं जे झान ते मारो ( आत्मानो ) गुण छे.” इत्यादिक अनन्त स्वरूपने जाणनारो मनुष्यज मोहनो जय करे छे; वोजो जय करी शकतो नदी. केमके मोहनीय कर्म अति छुर्जय डे. आ संवंधमां अहेहत-

नी कथा डे ते नीचे प्रमाणे—

### अर्हदत्तनी कथा.

अचबपुरना राजानो पुत्र युवराज वैराग्य उत्पन्न थवायी दीक्षा ग्रहण करीने विहार करतां अवन्ति नगरीमां आव्यो. त्यां मध्याह्नकाले जिक्षा माटे राजमंदिर तरफ जता ते मुनिने जोड़े लोकोए कहुं के “आ गाम्मां राजानो पुत्र अने पुरोहितनो पुत्र साधुने जोड़े तेने पीमा करे डे; माटे आ गाम्मां रहेवा जेवुं नर्थी.” आ प्रमाणे सांजव्या उत्तां पण ज्यरहित मुनि त्यां जड़े उंचे सरे ‘धर्म ज्ञान’ एम बोद्धा. ते सांजलीने एक स्थानमां रहेवा जाए वे पाप-श्रहो होय तेवा ते बन्ने जाणा मुनि पासे आवीने बोद्धा के “हे साधु ! तुं अ-मारी पासे नृत्य कर, अमे वाजित्र वगामीए.” त्यारे साधुए कहुं के ‘बहु साहुं.’ पड़ी साधु नृत्य करवा ज्ञान्या अने ते बन्ने वाजित्र वगामवा ज्ञान्या. थोर्मीतरे साधुए ते बन्नेने तिरस्कारथी कहुं के “अरे ! कौलिको (कोळीना पुत्रो !) त-मने वाजित्र वगामतां वैरावर आवस्तुं नर्थी, केमके तमे मूर्ख डो.” आ प्रमाणे सांजलीने ते बन्ने क्रोधथी मुनिने पास्वा दोऱ्या; एट्ट्वे नियुष्मकुशळ मुनिए ते-मना शरीरना अवयवोने संधिमांथी उतारी नांख्या. आ प्रमाणे मुनिना द्वेषीओने शिक्षा आपीने ते युवराज मुनि त्यांथी नगर वहार चाल्या गया. पड़ी राजा तथा पुरोहितने ते वातनी खवर थतां पोताना पुत्रोनी अति छुँखी अवस्था जोड़े अ-त्यंत खेद पाम्या सता तत्काल युवराज कृपिनी पासे आव्या. त्यां तेमने ओलखी-ने राजा विहासि करवा ज्ञान्यो के “हे जाइ ! तमारा भत्रीजाने साजो करो ने ते बाल्कनो अपराध कुमा करो.” मुनि बोद्धा के “हे राजा ! जो ते बन्ने पुत्रो हितकारी एवा ब्रतने आदरे तो तरतज ते बन्नेने हुं साजा करुं. ते सिवाय तेमने साजा नहीं करुं.” ते सांजलीने ते बन्ने कुमारोने मुनि पासे लालवामां आव्या. तेओए मुनिनुं बनन अंगीकार कर्युं. तेथी मुनिए प्रथम तेमनो झोच कर्यो, अने पड़ी तेमने साजा करीने दीक्षा आपी.

त्यार पड़ी राजपुत शंकारहित व्रतनुं पाज्जन करवा ज्ञान्यो; पण पुरोहित-नो पुत्र जाते ब्राह्मण होवायी चारित्रनुं पाज्जन करता उत्तां पण “मने आ मुनिए बलात्कारे दीक्षा आपी डे” एम मनमां तेमना पर अज्ञाव राखवा ज्ञान्यो; अनुक्रमे

ते वन्दे मरण पामीने देवता थया।

कौशांखी नामनी नगरीमां कोइ एक तापस नामनो श्रेष्ठी रहतो हतो, ते भरण पामीने पोताना घरना उकरमापांज शूकर (चुंद) थयो, तेने पोतानो महेश्वर विंगेरे जोवायी जातिस्मरण थयुं, अन्यदा तेना छाकराओए तेनाज थ्राऊने दिवसे तेनेज (ते शूकरने) मार्यो, ते मरीने पोतानाज घरमां सर्प थगो, एकदा ते सर्प घरमां फरतो हतो, तेने जोइने तेना पुत्रोएज मारी नाखयो, ते पोताना पुत्रनाज दीकरो थयो, तेने पूर्वनो जेम जातिस्मरण थयुं, तथी 'पुत्रनी बहुने पा अने पुत्रने पिता शी रीते कहुं ?' एम विचारीने तेणे मौन धारण कर्यु, तेथी तेनु नाम अशोकदन पामयुं हतुं, छतां मूरु नाम सर्वत्र प्रसिद्ध थयुं, एकदा ते नगरीमां जाङ्गानने धारण करनार कोइ सूरि समवसर्या, तेमणे पोताना वे सावुने नीचेनी गाया शीखवीने मूकने धेर मोकद्या।

तावस किमिमिणा मूञ्चव्वदण, पन्निवज्ज जाणिङ धम्मं ।

मरिण सुअरोरग, जाउ पुत्तस्त पुत्तोसि ॥ १ ॥

जावार्थ—“हे तापस श्रेष्ठी ! आ मौनदते करीने तुं ? माटे धर्मने जाणीने तेनो आदर कर, तुं मरीने शूकर अने पडी सर्प थयो हतो, अने हमणा पुत्रनो पुत्र थयो छे.”

आ गाया सांजलीने विस्मय पामेझा मूके ते मुनिने नमीने पृछयुं के “आ यात तमे शी रीने जाणी ?” ते सावुओ बोट्या के “अमारा गुरु गाम बहार उथानमां रहेझा छे, तेमना बचनयी अमे जाणीए डीए,” ते सांजलीने मूक तेपनी साये उथानमां गयो, त्यां गुरु पासे देशना सांभडीने तेणे मौनपण मूकी आवकर्थम अंगीकार कर्यो,

अहीं देवदेवाकमां जातिमद्वालो पुरोहितनो पुत्र जे देव थयेझो छे तेणे महाविदेह क्षेत्रमां जाइ जिनेश्वरने प्रभ कयों के “हुं सुख्खजबोधि तुं के छुर्खज-बोधि तुं ?” पञ्चए जवाव आपो के “तुं छुर्खजबोधि छे; पण स्वर्गयी चबीने कौशांखी नगरीमां मूकनो जाइ थवानो छे, तेनायी तने धर्मनी मासि थदो.” आ प्रमाणे सांजलीने ते देवे कौशांखीमां आवीने मूकने कहुं के “हुं स्वर्गमादी त्री-ने तारी माताना उद्दर्मा उत्पन्न थद्धा, तेने अकाळे आष्ट्र फल खावानो दोहद-

थरे, तेने माटे में आजधी आ समीपना पर्वत पर हंमेशां फळ आपे तेबो आम्र छक्क रोप्यो छे, तेथी ज्यारे ते माता तारी पासे घणा आद्वधी आम्र फळ मागे त्यारे तेनी पासे तारे एटझा अक्करो खखवा के “हे माता ! गर्जमां रहेद्वा पुत्र जो तुं मने आपे तो हुं तारो दोहद पूर्ण करुं.” आ तारुं वचन ज्यारे ते स्वीकारे, त्यारे तारे तेने आम्र फळ लावी आपवां, मारो जन्म थया पड़ो मने तारे स्वाधीन राखीने जैन धर्मनो बोध आपवो, चली वैताङ्ग पर्वत ऊपर पुफ्करिणी (वाव) में मारा नामधी अंकित वे कुँक्लो गोपव्यां छे, ते मने खात्राने माटे वताववां, कदाच तुं मरीने स्वर्गमां जाय, तोपण मारी उपेक्षा करवी नहीं.” आ प्रमाणेना ते देवना वचनने मूके अंगीकार कर्युं, एटझे ते देव स्वस्थाने गयो.

अनुकमे आयुष्य पूर्ण थतां ते देव चढ़ीने मूकनी मातानी कुक्किमां अवतर्यो, तेने क्षतु विना केरो खावानो दोहद थयो, ते वखते देवनी वाणीनुं स्मरण करीने मूक बोध्यो के “हे माता ! जो तुं मने आ गर्जमां रहेद्वा पुत्रने आपे, तो हुं तेने आम्र फळ लावी आपुं.” माताए तेम करवानुं कबूल कर्युं, एटझे ते मूके देव कहेद्वा पर्वत परथी आम्र फळ लावी आपीने मातानो दोहद पूर्ण कर्यो, संपय पूर्ण थतां तेणे पुत्र प्रसव्यो, मातापिताए हर्षयी ते पुत्रनुं अर्हद्वत्त एवुं नाम पाम्युं, पड़ी मूक पोताना नाइनुं वाद्यायस्यार्थीन लाल्लनपाल्लन करवा द्वायायो अने चैत्यमां तथा उपाश्रयमां लङ्घ जवा लाग्यो, पण ते वाळ्क मुनिओने जोइने मोटेथी रोवा द्वागतो, अने तेमने वंदना पण करतो नहीं, मूके तेने घणी रीते समजाओ, पण ते वाळ्क साहुना गन्धने पण सहन करतो नहीं, छवट तेने समजावतां मूक थाकी गयो, तोपण ते (अर्हद्वत्त) धर्म पाम्यो नहीं, एटले मूक तो साहु पासे दीक्षा लक्ष्मे अनुकमे आयुष्य पूर्ण थतां स्वर्ग गयो, त्यां तेणे अवधिज्ञाननो उपयोग दीधो तो पोताना नाना न्नाइ अर्हद्वत्तने चार स्त्री साथे परणेद्वो जोये, मूक देव तेणे कहेद्वुं अने पोते स्वीकार करेद्वुं पूर्व नवनुं वाक्य संजार्युं, अने तेने प्रतिवेद करवा माटे प्रथम तेना शरीरमां ज्ञोदरनो व्याधि उत्पन्न कर्यो, तेव्याधिना जारथी अर्हद्वत्त उड़ी पण शकतो नहीं, सर्व वैद्यो तेनी चिकित्सा करी करीने थाक्या, पण कोइथी साहुं थयुं नहीं, तथी सर्व वैद्यो तेनो त्याग कर्यो, पड़ी ते मूक देव पोते वैद्यनो आमंदवर करीने अर्हद्वत्तनी पासे आव्यो, अर्हद्वत्त तेने जोइने दीनमुख बोध्यो के “हे वैद्यराज ! मने रोगवी मुक्त करो,” वैद्य बो-

स्यो के “तारी आ व्याधि असाध्य छे, तोणए विविध प्रकारना औंपथी हुं तने निरोगी कहं; परंतु सारुं थया पड़ी तारे आ मारो औंपथ तथा शत्रुओं को-थळो उपासीने जीवतां सुधी मारी साथे फरवृं पमशे.” ते सांजलीने अर्हदत्त ते बत कबूज करी, एट्ले ते यायावी देवं औंपथो आपीने तेने सारो कर्यो. पड़ी अर्हदत्त तेनी साथे चाल्यो. देववंद्ये तेने वैदकने योग्य एवं शत्रुधी जरेलो कोथलो उपासवा आप्यो. ते कोथलोने मायावर्मे अत्यंत जारवालो कर्यो. अर्हदत्त तेवा असद जास्ते हंमेशां बहन करतो विचारवा लाग्यो के “आद्यो जार हुं नित-तर शी रीते बहन करी शकीश ?” एक दिवस कोइक स्थाने तेणे संयमशारी साधुओंने जोया. ते बतते अर्हदत्तना मनमां विविध प्रकारना उद्भेद यतो हतो, ते जाणीने देववंद्ये तेने कहुं के “जो तुं दीक्षा ग्रहण करे तो हुं तने छोमी दरं.” ते सांजलीने महाजारथी पोका पामेज्ञो अर्हदत्त बोह्यो के “हुं बज्र जेवा आ जास्ते हंमेशां उपासी उपासीने कुबूज थइ गयो दुं; तेथी आवो जार उपासवा करतां तो मारे बत लेवृं तेज सारुं डे.” पड़ी ते देव तेने मुनि पासे दीक्षा ग्रहण करावीने स्वस्थाने गयो.

देवना गया पड़ी अर्हदत्त ब्रत तज्जीने पोताने घेर गयो. देवे अवधिज्ञानी तेने चारित्रियी द्वष्ट जाएयो; एट्जे फरीधी जन्मोदरनो व्याधि उत्पन्न कर्यो, अने पूर्वनीज जेप नेने फरीधी दीक्षा अपावी. ए प्रमाणे ब्रण वार दीक्षा लझने तेणे मूकी दीधी. पड़ी चोयी वार दीक्षा अपावीने तेने ब्रतमां स्थिर करवा मारे ते देव हंमेशां तेनी पासेज रहेवा लाग्यो. एकदा माये तुणनो भारो लझने चालतो ते देव कोइ अग्रियी बलता गाम्पमां पेसवा लाग्यो. ते जोइने अर्हदत्त तेने कहुं के “यसने जारो लझने आ अग्रियी बलता गाम्पमां केम पेसे छे ?” देव बोस्यो के “ज्योरे तुं आप जाणे डे, त्यारे क्रोधादिक अग्रियी बलता गृहवासमां जह्ने केम प्रवेश करे डे ?” ते सांजलीने पण बोध नहीं पामेज्ञा अर्हदत्तने साथे लझने आगळ चालतां ते देव सारो मार्ग मूकीने जयंकर अग्राय तरफ चाल्यो. ते जोइने अर्हदत्त बोह्यो के “सारो मार्ग मूकीने उन्मार्गमां केम चाले छे ?” देव बोस्यो के “ज्योरे तुं एम जाणे डे, त्यारे मुक्तिमार्गने मूकीने जवाह्योमां पेसवानी केम इच्छा करे डे ?” आवी रीते क्या डतां पण अर्हदत्त बोध पाम्यो नहीं, तो पण ‘कायर न थवै एम संपत्तिनुं स्थान डे’ एम जाणीने ते देव तेनी साथेन आ-

गळ चाल्यो, मार्गमां कोइ एक चत्यमां छोकोयी पूजातां भतां नीचे मुखे पडता एक पक्षेन तेणे दिव्य शक्तियी बताव्यो, ते जोइने अर्हदत्ते कर्णु के “आ व्यंतर जेम जेम छोकोयी पूजाय ते तेम तेम अथोमुख धृष्टे नीचे पडतो जाय ते, माटे आ पक्षना जेवा वीजो कोइ अधन्य पृथ्वीपर जणातो नयी.” ते सांजली तेने देवे कर्णु के “संयम रूपी उंचे स्थाने स्थापन कर्या भतां पण तुं वारंवार नीचे पडे छे, माटे हे मूर्खशिरोमणि ! तुं तेना करतां विशेष अधन्य ते.” ते सांजलीने अर्हदत्ते तेने पूछयुं के “वारंवार आवी रीते ओळनार तमे कोण गो ?” त्यारे ते देवे पोतातुं मूकना चबवाढुं स्वस्त्रप देखानी तेना पूर्व जबतुं सर्व दृत्तान्त कर्णु, ते सांजलीने अर्हदत्ते पूछयुं के “हुं पूर्व जबे देव हतो तेनी खात्री जी ?” एट्झे देव तेने बैताड्य पर्वतपर छाड गयो, अने पुकरिणी (वाव)मां गोपवेद्मां तेना नामधी अंकित एवां वे कुंकलो काढीने तेन देखाड्यां, ते जोइने अर्हदत्तने जातिस्सरण थयुं, तेथी प्रतिक्रिया पामीने ते जावचास्त्रि पाम्यो. आ रीते तेने धर्ममां स्थिर करीने ते मूर्क देव स्वस्थाने गयो.

“ सर्व कर्ममां श्री जिनेश्वरे मोहने अति छुर्ज्य कहेल्हो छे, ते मोहनो मूर्क देव त्याग कराव्यो त्यारेज अर्हदत्त धर्म पामीने मोङ्के गयो.”

इत्यद्विनपरिमितोपदेशप्रापादवृत्ता एकविंशतितमस्तंजस्य  
पंचाधिकत्रिशततमः प्रवंथः ॥ ३०५ ॥

## ठ्याख्यान ३०६ सुं:

—\*—\*—\*

ज्ञान तथा अज्ञान विषे.

**मज्जत्यङ्गः किञ्चाङ्गाने, विषाधामित्र शूकरः ।**

**ज्ञानी निमज्जति ज्ञाने, मराङ्ग इव मानसे ॥ १ ॥**

जावार्थ—“अङ्ग एट्टेआ आत्मनाव अने परजावने नहीं जाणनारो माणस अज्ञान एट्टेआ यथार्थ उपयोगमां विषामां शूकरनी जेम मग्न थाय डे, अने मानसंरोवरमां राजहंसनी जेम ज्ञानी यथार्थ उपयोगवाला तत्त्वावबोधमां (आत्म-स्वरूपमां) पग्न थाय डे.” आ संवेदमां साङ्ग ने महासाङ्गनुं दृष्टांत छे ते आ प्रपाणे—

**साङ्ग महासाङ्गनी कथा:**

पृष्ठचंपा नगरीना राजाना पुत्रो साङ्ग अने महासाङ्ग वक्त्रे युवराज हुला, अन्यदा ते नगरीमां थ्री वीरस्वामी समवसर्था, प्रज्ञुने वांदवा माटे ते वक्त्रे जाइओ, मोटी कृष्ण सदित गया, त्यां थ्री वीरप्रज्ञुने नमीने धर्म श्रवण करी वैराग्य पामी पोताने येर गया, पत्री पोताना जाणेज गांगिज्ञने राज्य सोंपीने जिनेभर पासे ते वक्त्रे दीक्षा ग्रहण करी, स्थविर सावु पासे ते ओए संपूर्ण अगिपार अंगनो अन्यास कर्या, एकदा थ्री वीरप्रज्ञुनी अज्ञान लाइने थ्री गौतम स्वामीनी साथे पोताना कुर्डवने भ्रतियोग करवा माटे ते ओप्रे पृष्ठचंपाए आब्बा, तेमनुं आगमन साजडीने गांगिज्ञ राजा नेमने वांदवा आओ, गणेश महाराजने तथा साङ्ग महासाङ्ग मुनिने नमीने ते देशना सांजलवा बेत्रो, ते वस्तते चार ज्ञानने धरण कलार थ्री गौतम स्वामीए देजानानो आरंज कर्या—

**निर्वाणपदमप्येकं, ज्ञाव्यते यन्मुहुर्मुहुः ।**

**तदेव ज्ञानमुक्तुष्टं, निर्वन्धो नास्ति नूयसा ॥ १ ॥**

जावार्थ—“निर्वाणपद एट्टेकर्मरहित थवाना हेतुजूत एवा एक मोक्षपदनीज स्पाष्टादना सोपेक्षणाए वारंवार ज्ञावना कराय एट्टेआत्मने तन्मय कराय, स्वरूपमां एकना थाय तेन उल्लक्षण ज्ञान डे, जे ज्ञानवर्त आत्मा अनादि-काळथी नहीं पर्मझा आत्ममुखनो अनुज्ञव करे डे, वाकी आत्मज्ञानथी

व्यतिरिक्त वीजा वाणीना विस्तारवाळा थेणा एवा संवेदन ज्ञानवर्मे कांड आत्म-  
मुख्यनो निश्चय थतो नवी. केपके थोरुं पण अपृत सद्गत ज्ञानज अनादि कर्परो-  
गनो नाश करनार्ह ते. ”

**वादांश्च प्रतिवादांश्च, वदन्तोऽनिश्चितांस्तथा ।**

**तत्त्वान्तं नैव गच्छन्ति, तिद्वधीवकवज्जतौ ॥ ४ ॥**

ज्ञावार्थ—“ वाद अने प्रतिवाद तेमज अनिश्चित पदार्थने कहेनारा माण-  
सो घाणीना वल्लदनी गतिनी जेप तत्त्वना पारने पापता नवी. ”

विस्तरार्थ—वाद एट्डे पूर्वपक्ष अने प्रतिवाद एट्डे उत्तरपक्ष तेने परना  
पारनय माटे तथा पोताना नयने माटे करवाथी वस्तुर्थमस्य तत्त्वना अंतने प्राप्ती  
शकातुं नवी. वडी पदार्थना स्वस्मृपनो निश्चय कर्या विना तेतुं अनिर्धारित स्वस्मृप  
कहेवाथी पोताना अत्यंत स्वाज्ञानिक आत्मज्ञानना अनुज्ञवने पापी शकातुं नवी.  
जेम घाणीयां नांखेझो वृपत्त गमे तेद्वारुं फेरे नोपण कोड वीजा स्थानने पापतो न-  
वी, तेप तत्त्वज्ञानने नहीं इच्छनारो मतुष्य अनेक शास्त्रोयां श्रम कर्या डर्ता पण  
तत्त्वना अनुज्ञवनो स्वर्ग मात्र पण करतो नवी. एज कारण्यी साते नयो स्वेच्छा  
प्रमाणे ज्ञानना स्वस्मृपने कहे ते.

ज्ञानना चार निकेपा आ प्रमाणे ते—ज्ञानना आलाप स्वप जे ज्ञान ते  
नामज्ञान कहेवाय ते, सिद्धचक्रादिकमां स्थापन करेद्वारुं ज्ञानपद ते स्थापनाज्ञान  
कहेद्वारुं ते, उपयोगरहित पात्र मात्र करतो ते ज्ञवज्ञान कहेवाय ते. तत्त्वार्थतुं  
ज्ञान जे पुस्तकर्मा ज्ञानेद्वारुं होय ते ते पण ज्ञवज्ञान कहेवाय ते. उपयोग विना  
स्थायाय करती ते पण ज्ञवज्ञान ते, अने उपयोगपरिणति ते ज्ञानज्ञान ते. तेमां  
ज्ञापादिकना स्कंपरूप जे ज्ञान ते नैगम नयनी अपेक्षाए ज्ञान जाणेद्वारुं. संग्रहनयनी अपे-  
क्षाए अनेद उपचाराथी सर्व जीवो ज्ञान स्वप जाणावा. व्यवहार नयनी अपेक्षाए  
पुस्तकादिकमां रहेद्वारुं ज्ञान जाणेद्वारुं अने क्रज्ञसूत्रनये तत्परिणाम संकल्पस्वप ज्ञान  
जाणेद्वारुं. अयथा ज्ञानना हेतुच्छत वीर्यने नैगमनय ज्ञान कहे ते, संग्रहनय आ-  
त्मने ज्ञान कहे ते, व्यवहारनय क्रयोपदेश प्रमाणे ज्ञान संवंधी व्यवहार प्रवृत्ति-  
ने ज्ञान कहे ते, अने क्रज्ञसूत्र वर्तमान यदार्थ अयथार्थ वस्तुतत्त्वना वीथने ज्ञान  
कहे ते. ज्ञाननयनी अपेक्षाए सम्प्रदर्शन पूर्वक यथार्थ वस्तुस्वस्मृपना वीथम्य

झक्षणवालुं, कारण तथा कार्यनी अपेक्षावालुं, पोताने तथा परने प्रकाश करनारुं अने स्याज्ञादयी युक्त जे ज्ञान तेने ज्ञान जाणवुं. समजिस्तुहनयनी अपेक्षाए ज्ञानवाची समग्र वचन पर्यायोनी शक्तिनी प्रवृत्ति रूप ज्ञान जाणवुं, अने पवंभूत नयनी अपेक्षाए केवलज्ञाननेज ज्ञान जाणवुं. अहीं सम्यग् रत्नत्रयना उपादेय झक्षणवालुं परमज्ञान ते शुद्ध ज्ञान डे. कहुं डे के—

**पीयूपमसमुद्भोत्यं, रसायनमन्तौपधम् ।**

**अनन्यापेक्षमैश्वर्यं, ज्ञानमाहुर्मनीषिणः ॥ १ ॥**

जावार्थ—“ पंसितो समुद्भ विना उत्पन्न थयेज्ञा अमृतस्य, औषध विना उत्पन्न थयेज्ञा जरामरणने नाश करनार रसायणस्य अने सैन्यादिक अन्य कोइ पण वस्तुनी अपेक्षारहित शक्तचकीषणाना अधर्यस्य—एवुं ज्ञान कहे डे.”

ते माटे हे जब्य प्राणीओ ! ज्ञाननो सम्यग् प्रकारे आदर करवो योग्य हे.” इत्यादि गौतम गणधरनी देशना सांजलीने बैराग्य पाखेज्ञा गांगिज्ञ राजाए पोताना पुत्रेन राज्य सांपी मातापिता सहित मोटा उत्सव पूर्वक दीक्षा प्रहण करी. पडी साज्ज, महासाज्ज अने गांगिज्ञ विग्रेने साथे ज्ञाने श्री गौतम स्वामी जिनेभर पासे जना माटे चंपा तरफ चाव्या. मार्गमां साज्ज अने महासाज्ज विचार करना लाग्या के “ आ अमारी वेन, वनेवी अने ज्ञाणेजने धन्य डे, के जेओ अध्य काळमांज सर्वविरतिपणुं पाम्या.” ते वखते गांगिज्ञ विग्रे त्रणे जणा पण ए वो विचार करवा लाग्या के “ आ साज्ज अने महासाज्जने धन्य डे, के जेओ अआपणने प्रथम राज्यज्ञदमी आपी, अने हमणा महानंदसुखने पमामनारुं चारिनि अपावुं.” आवी रीते ते पांचे जणा ल्लोकोत्तर ध्यानमां प्रग्र धड़ क्षपक श्रेणिपर आमुद थड्ने केवलज्ञान पाम्या. तेओ श्री पञ्चु पासे आव्या, त्यारे श्री गौतम स्वामीनी साथे पञ्चुनो प्रदक्षिणा करीने ते पांचे केवलीनी सज्जा तरफ चाव्या. ए द्वे गौतम स्वामी बोव्या के “ ओर ! तमे सर्व अजाण्या हो तेम त्यां केम चाव्या जाओ छो ? अहीं आवो, त्रणे जगतना पञ्चुने धंदना करो.” ते सांजलीने श्री वीरपञ्चुप गौतमने कहुं के “ जिननो ( केवलीनी ) आगातना न करो.” पञ्चु तुं वचन सांजलीने गौतम स्वामीए तत्काल तेमने खपाव्या. पडो तेमणे पोताना मनमां विचार्यु के—

दुर्जगं हरिणाङ्गीव, चजतेऽव्यापि मां नहि ।

केवलज्ञानब्रह्मस्तत्, किं सेत्सामि नंवाथ्वा ॥१॥

जावार्थ—“हरिणनां सखां नेत्रवाली स्त्री जेम दुर्जांगी पुरुषने जगे नहीं, तेम केवलज्ञाननी द्वाक्षी मने प्राप्त थती नयी, तो शुं हुं आ जबे सिद्धि-ने पामीङ्ग के नहीं ? ” एम तेओ विचार करता हता, तेवामां तेमणे देववाणी सांचली के “आजे श्री जिनेखरे कहुं भे के जे कोइ मनुष्य पोतानी द्विघ्यमे अष्टापद उपर जड़ जिनेखरोने वंदना करे ते जगर तेज जबे सिद्धिने पामे. ” आ पमाणेनी देववाणी सांचलीने गाँतम गणधर श्री वीरप्रभुनी आङ्गा झड़ने अष्टापद पर्वत तरफ चाल्या.

आ अरसामां कौमिन्य, फिल्ह अने सेवाज्ञ नामना तापसना आचार्यो “अष्टापद उपर पोतानी शक्तिवर्म चमवाथी मुक्ति पामी शकाय ” एवं जगवा-नतुं वाक्य जनमुखथी सांभलीने पोताना पांचसो पांचसो शिष्यो ( तापसो ) स-हित अष्टापद तरफ जवा प्रथमथी नीकली चुक्या हता. तेमां प्रथम कौमिन्य ता-पस पांचसो तापसो सहित एकांतर उपवास करीने ते अष्टापदनी पहेड़ी मेखद्वा-ए पहोच्यो हतो. तेओ पारणाने दिवसे कंद विगेरेतुं जोजन करता हता. वीजो तापस पोताना परिवार सहित छछ तप करतो अने पारणामां पाकेलां पत्रादिकलुं जोजन करतो ते पर्वतनी वीजी मेखद्वा युधी पहोच्यो हतो; अने वीजो तापस पोताना परिवार सहित अष्टम तप करतो पारणामां शुप्क सेवाज्ञ खातो ते पर्वतनी वीजी मेखद्वा युधी पहोच्यो हतो. परंतु कोइ पण तापस अत्यंत क्लेश सहन कर्या छतां ते पर्वतना शिखर उपर पहोची शक्या नहोता. ते तापसोए गाँतम स्वामीने दूर्यी आवता जोइने विचार्यु के “ तपवर्मे करीने अति कृश धयेद्वा अमे आ प-र्वत उपर चमी शक्या नयी, तो आ स्यूज्ञ शरीरवाला यति जी रीते चमजे ? ” आ पमाणे ते सर्व तापसो विचार करता हता, तेज्ज्ञामां तो श्री गाँतम स्वामी ज-थाचारण द्विघ्यथी सूर्यनां किरणेतुं अवज्ञवन करीने तत्काल ते सर्व तापसोने ओलंगीने आगळ चाल्या, अने एक क्षणमां तेमने अदृश्य थड़ गया. ते जोइने विस्मय पामेद्वा सर्व तापसो योद्व्या के “आपणे तो आ साधुना शिष्य थद्गुं.” गाँ-तम स्वामी तो पर्वतना शिखरपर जड़ने जरतचक्रीए करावेद्वा चेत्यने जोइ तेमां स्था-

पित करेजा चेवीश तीर्थकरोने नम्या; अने “जगचितामेणि जगनाह<sup>१</sup>” इत्यादि गायत्रे स्तुति करीने चल्य बहार नीकल्या; पर्वी रात्रि निर्गमन करवा माटे अशोक वृक्षनी नीचे बैठा.

ते बखते इन्द्रनो दिक्षाङ्ग कुबेर तीर्थकरोने नमवा माटे अष्टापदे आव्यो, ते जिनेश्वरोने नमीने श्री गौतम स्वामी पासे आव्यो, अने तेमने वंदना करीने देशना सांचलवा बैठो. श्री गौतम स्वामी बोध्या के—

**महाव्रतधरास्तीव्रतपःशोपितविग्रहाः ।**

**तारयंति परं ये हि, तरन्तः पोतवत्स्वयम् ॥ १ ॥**

जावार्थ—“ तीव्र तपस्यावर्ने जेओए पोतानां देहानुं शोपण कर्युं छे एवा महाव्रतने धारण करनार मुनिश्चो नावनी पेत्रे पोते तरता छतां बीजाने पण नारे डे.”

ते सांचलीने ‘झाँसुं सूकुं अशन लेवाथी आवुं पुष्ट शरीर थाय नहीं’ एम विचारीने कुबेर विसित मुख करीने कांडक हस्यो. ते बखते तेनो अनिपाय जाणीने गौतम गणधरे पुंकरीक साखानुं अध्ययन प्रकाशित करी ढेवे कर्युं के—  
**कृशोऽपि पश्य दुर्ध्यानात्, कंकरीको यथावधः ।**  
**पुष्टोऽपि पुंकरीकस्तु, शुच्यानात् सुरोऽनवत् ॥ १ ॥**

“हे कुबेर! जुओ के कंकरीक तपस्याथी कुश थयेज्ज हतो भर्ता पण अशुन ध्यानथी मरीने नरके गयो, अने पुंकरीक मुनि शरीरे पुष्ट हतो भर्ता भर्ता पण शुन ध्यानथी देव थया.

ते सांचलीने कुबेर गणधरने खपावीने स्वस्थाने गयो. ते बखते कुबेरनो सापानिक देव के जे बज्रस्वामीनो जीव हतो ते समकित पाम्यो, तेने केन्द्रापक तिर्यग् जैनक देव हतो एम कहे डे.

प्रातःकाळे गौतम स्वामी पर्वतपर्थी उत्तरतां ते तापसो पासे आव्या, ल्यारे सर्वे तापसोए तेमने कर्युं के “ तमे अमारा गुरु डो, अने अमे तमारा शिष्य डी-ए. ” गणधर बोध्या के “ तमारा अने अमारा सर्वना गुरु श्री महावीरज डे. ” पर्वी देवनाए तेमने मुनिवेश आप्यो डे एवा ते तापसोए गौतम स्वामी पासे दीक्षा दीधी. गणधरे पामुक अने निर्देष एवां पायसान्न ( कीर )नुं एक पात्र जरी लावीने विधि पूर्वक अनुक्रम प्रमाणे तेमने वेसामी अर्काणि महानस ब्रह्मिवर्मे क-

<sup>१</sup> था जगचितामेणि नु चैव वैदेन गतिम स्मार्माए भवी बनाव्यु.

रीने यथेच्च पाराणं कराव्युं, तेज वस्ते सेवाल्लनुं नक्षण करनारा पांचसोने एक साधु गणधर्नो स्तुति करवामां मम थया सता जमता जमताज उज्ज्वल केवलङ्गान पाम्या, सर्वं दृप्त थया पड़ी गणधरे पोते जोजन कर्युं, पड़ी ते सर्वने साथे लझेने आगल चाल्या, अनुक्रमे प्रज्ञुना समवसरणनी पृथ्वी नजीक आवतां डँठ तप करनारा, मिन्नादिक पांचसोने एक साधुने प्रज्ञुना प्रातिहार्यनी लहर्मी जोतांज केवलङ्गान प्राप्त थयुं, अने कांमिन्यादिक ५७? साधुओने प्रज्ञुनुं दर्शन थतांज केवलङ्गान प्राप्त थयुं,

प्रज्ञु पासे आवीने १५७३ मुनिथी परवरेला गांतम स्वामीए प्रज्ञुने प्रदक्षिणा दीधा पड़ी ते सर्वं साधुओ केवलीनी सजामां जवा लाग्या, एक्ष्वे गणधर वोद्या के “अरे! तमे सर्वं अर्हां आवो, अने त्रण जगतना गुरुने नमन करो.” ते सांजलीने जगताने तेमने कर्युं के “केवलीनी आशातना न करो.” ते सांजलीने गणधरे मिथ्यादुष्कृत आपी तेमने खमाल्या, पछी गणधरे विचार्युं के “हुं गुरुकर्मी बुं, तेथी आ जवे मोक्ष पामीश नहीं, आ मैं दीक्षा आपेक्षा साधुओने पन्य डे के जेओ तत्काल केवलङ्गान पाम्या,” आ प्रमाणे अर्थे राखता गांतम गणधर प्रत्ये श्री वीरस्वामी वोद्या के “प्राणीओने मंद, तीव्र ने तीव्रतर स्नेह होय छे, चिरकालना परिचयथी तेमने मारा डपर तीव्र एवो प्रशस्त स्नेह घेयेझो छे, तेथी तेमने केवलङ्गान प्राप्त थतुं नथी; ते स्नेह नाश पामझे त्यारे तेमने केवलङ्गान थझे, अर्हांथी काल धर्म पामीने आपणे वन्ने समान थवाना दीए, माटे तमे अर्थे न राखो.” ए प्रमाणे प्रज्ञुनां वचन सांजलीने श्री गांतमस्वामी भूषण यद्य संयम पालन करता सता प्रज्ञुनी सेवा करवा लाग्या.

“आ प्रमाणे स्वज्ञावना (आत्मङ्गानना) व्याजर्थी साज्ज, महासाला अने गांगिज विग्रे नूपो तथा सर्वं तापसो तत्काल केवलङ्गान पामीने अनंत मुख्याला मोक्षपदने पाम्या.”

इत्यद्विनपरिमितोपदेशप्राप्ताद्वृत्तौ एकविशतितमस्तंजस्य

प्रदधिक्त्रिशततमः प्रवंधः ॥ ३०६ ॥

## ठ्यारव्यानं ३०७ मुं.

शमगुण विषे-

**विकल्पविषयोत्तीर्णः, स्वज्ञावालंबनः संदाः ।**

**ज्ञानस्य परिषाको यः; स शमः परिकीर्तिः ॥ १ ॥**

**नावार्थ—**“ संकल्पविकल्प ( चित्तविज्ञप्ति )ना , विषययी ( विस्तारयी ) निवर्त्तेद्वा अत्र ए सम्यग् रत्नत्रय स्वरूपजे आत्मानो स्वज्ञाव तेनुं ( गुणपर्यायवतु ) निरंतर आलंबन करनार एवो आत्माना उपयोग लक्षणवाला ज्ञाननो जे परिषाक— प्रोट अवसर ते शम कहेज्ञो छे. ”

शमना चार निकेपा आ प्रमाणे—नाम शम अने स्थापना शम तो पूर्वती पेते जाणवा, आगमयी इच्छ शम ते शमना स्वरूपने जाणनार ज्ञानी जे तेमांडू पयोगमां वर्ततो न हीय ते, नोआगमयी इच्छ शम ते मायाए करीने खबिर्जनी सिद्धने माटे अथवा देवतिनी प्राप्ति विग्रेर माटे उपकार अपकारना विपक्षने शमन करवाना हेतुयी क्रोकादिकनो उपशम करें ते; अने जावशम ते आत्म स्वरूपमां उपयोगवालो; तेमां आगमयी मिथ्यात्वने तजीने यथार्थ वस्तुना जासन पूर्वक चारित्रमोहनीय कर्मना उदयनो अचाव होत्राथी क्रोकादिक गुणनी जे परिणति ते शम कहेवाय भे, ते शम पण बाँकिक अने बोकोत्तर जेदे करीने बे प्रकारनो भे; तेमां बेदांत मतवालानो जे शम गुण भे ते बाँकिक छे, अने जन प्रवचनने अनुसरनारपां जे शम होय भे ते बोकोत्तर भे, ते बोकोत्तर गुणज स्वरेखरो शुरू भे; तेनी उपर मृगापुत्रनी कथा भे ते आ प्रमाणे—

### मृगापुत्रनी कथा.

मृगीते पुरनो राजानो पुत्र मृगापुत्र नामे हतो; ते एकदं यहेक्षनां गोखर्मां वेसीने नगरतुं स्वरूप जोतो हतो, तेवर्मां शमगुणना निधि संमानं एक मुनिने निष्परहितः इष्टियी प्रीतिपूर्वक जोतां तेने जातिसरणज्ञान चतुपत्र थयुं, एवं एवं जये पेते चारित्र ग्रहण कर्यु हतुं तेनु तेने स्मरण थयुं, पञ्ची ते मृगापुत्र पोताना मातापिता पासे जड्हने बोझ्यो के—

सुयाणि मे पंच महाव्याणि, नरएसु छुकं च तिरिक्तजोगिसु ।  
निविसुकामो ह्मि महास्वार्जं, अणुजाएह पव्वश्स्तामि अम्मो॥१॥

जावार्य—“हे मातपिता ! मैं पांच महावतने सांजल्यां डे, तथा नरकने  
विषे अने हिर्यचयोनिने विषे जे छुःख पदे छे ते पण मैं जाएयुं डे; तेथी हुं सं-  
सारस्प महार्णवथी निर्वंद (वैराग्य) पाम्यो हुं; माटे मने अनुज्ञा आपो के जे-  
थी हुं प्रवज्या अंगीकार करुं ।”

इत्यादिक वाक्योवम् देहना नोगोपजोगादिकनुं अनित्यणुं कहीने ते-  
णे प्रवज्या लेवानी अनुज्ञा मागी. ते सांजलीने मातपिताए अनेक युक्तिओर्व-  
के जीवन पर्यंत चारित्रनुं पालन अति छुप्कर बतावीने कहुं के “हे पुत्र ! ताहं  
शरीर अति मुकोपल छे, तुं चारित्र पालवाने समर्थ नथी; केमके पांच इंडियो त-  
ष्णा-मन जीतवा मुझकेज्ज डे. सोढाना चणा चावानी जेवुं चारित्र पालवुं छुप्कर  
डे. देवीप्यमान अग्निनो ज्वार नुं पान करवानी जेम अथवा मन्दराचल पर्वतने तोल-  
वानी जेम युवावस्थामां चारित्रनुं पालन करवुं अति छुप्कर डे. माटे वृष्णवस्थामां  
दीक्षा लेवी योग्य डे.” ते सांजलीने मृगापुत्र वोट्यो के “हे मातपिता ! आ  
जोकमां निःस्पृह थयेद्वा माणसने कांड पण छुप्कर नथी. केमके मैं चारे गतिमां  
वाणीथी कही न शकाय तेर्वा। अनेक वेदनाओ अनुज्ञवी डे.

सव्वज्जवेसु असाया, वेअणा वेइआ मए ।

निमेसंतरभित्तं पि, जं साया नत्थि वेइआ ॥ १ ॥

जावार्य—“मैं सर्व ज्ञामां असातावेदनी वेदी डे, एक निमेपमात्र प-  
ण सातावेदनी वेदी नथी ।”

मैं नरकादिकनी महा व्याओ सहन करी डे, तो पड़ी मारे दीक्षानुं पा-  
ओन करवुं तेमां गुं मुझकेज्ज डे ? माटे मारे अवश्य दीक्षा लेवीज डे. संप्रमत्तुं पाल-  
न करतां जे शम गुणना सुखनो आस्वाद मले छे तेज मोड़ सुख डे. शाम्य सु-  
खमां यद्य थयेज्जो जीव देशे उणा कोटी पूर्वना कालने पण सुखे सुखे दीनता रहि-  
त निर्गमने करे डे. एक निमेपमात्र पण प्रमादमां पमतो नथी. कहुं डे के—

शमसूक्तसुधासिकं, येषां नक्तदिनं मनः ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥  
कदापि ते न दृष्ट्वा, रागोरगविषोर्मिनिः ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥

जावार्थ—“ जे महात्माओरुं मन रात्रिदिवस शम जे कषायाभाव तेनां  
सूक्त एव्वे आत्मस्वपत्तचनां वंचनो ते रूपी अमृतवी सिंचन घयेद्दुः होय ते  
तेओ राग रूपी सर्पना विषोर्मियी कदापि दग्ध थता नथी. ”

जगतना जीवो रागादिक सर्पथी रुसाया सता विषयमां धूर्मित थइने परि-  
ज्ञमण करे छे. इष्ट वस्तुना संयोगनी अने अनिष्ट वस्तुना विषयोगनी चिंता अह-  
निश करीने अनेक प्रकारना संकष्टविकल्प करे छे, अने वहु प्रकारनी अप्राप्त-  
चादि<sup>१</sup> जे कल्पना तेना कद्ग्राहने ग्रहण करे द्वेः तेमज अनंत जीवोए अनंतीवार  
ज्ञोगवीने मूकी दीधिद्वा जगतना उच्चिर्षु एवा अनेक पुद्गङ्ग संक्षेपोनी याचना  
करे छे. माझे कोइ पण प्रकारे शम गुणने प्रगट करवो, एज निरूपम अभ्यस्कर भे.  
कर्यु ते के—

स्वयंनूरमणस्पर्खिवर्धिष्णुसमतारसः ।

मुनियेनोपमीयेत, कोऽपि नासौ चराचरे ॥ १ ॥ १ ॥

जावार्थ—“ स्वयंनूरमण समुद्धनी सर्पथी करनार एवो समतां रस जे-  
ना हृदयमां दृच्छि पाम्या करे ते तेवा मुनिने जेनावमे उपमा आपी शकाय एवो  
कोइ पण पद्धार्थ आ चराचर जगतमां नथी. ”

अर्थ रञ्जु प्रमाण डेढ्हो स्वयंनूरमण नामनो जे समुद्र तेना जळनी सा-  
थ सर्पथी करे तेढ्हो समता रस जेना आत्मामां दृच्छ पाम्या करे ते एवा मुनिनि-  
काम्भे पण विषयने ग्रहण करता नथी. तेओने अतीत काळमां ज्ञोगवेद्वा ज्ञानाना  
स्परणेनो अनाव भे, वर्तमान काळे इन्द्रियगोचर एवा विषयोमां रमणतानो अना-  
व भे, अने अनागत काळे मनोङ्ग विषयोनी इच्छानो अनाव भे. एवा मुनिने जे-  
उपमाने करीने उपमा अपाय एवो कोइ पण आ सचराचर जगतमां पद्धार्थ नथी. के-  
मंके सर्व पदार्थों तो अचेतन पुद्गङ्ग संक्षेपीयी उत्पन्न घयेद्वा अने रूपी भे, अने संपत्ता  
रस तो सहज, आत्मतिक अने निरूपम आत्मस्वज्ञाव भे, तो तेनी साये तेनी शी  
रीते उपमा आपी शकाय ? ”

<sup>१</sup> दुःख आवा पद्वाना भव्य घरानां प्रथमवा जे शोकसत्ताप बरवा ते,

इत्यादि विविधः उपायोवमे मातापिताने प्रतिवेद पमाईने, तेमनी अ-  
रुहाथी समग्र परिग्रहनो त्याग करो मृगापुत्रे दीक्षा ग्रहण करी, कहुं छे के—

अणिस्तिरु इह लोए, परदोए अणिस्तिरु ।

वासिचंदणकप्पो अ, असणे अणसणे तहा ॥ १ ॥

नार्थ—“आखोकने विषे इच्चारहित अने परदोकने विषे पण, इ-  
च्चारहित तेमन वासी ने चंदन अने अशन ने अनशन ए जेमने तुद्य रे एवा ते  
मुनि थया,” अर्थात् आखोकना मुखने अर्थे के परदोकना मुखने अर्थे जे तं-  
प तपता नयी, वांसज्ञायी ठेदन करनार अने चंदनयी विक्षेपन करनार उपर जे-  
मने समनाव डे अने अशन ते आहारनो सद्ज्ञाव अने अनशन ते तेनो अन्नाव  
तेमा जे तुद्य मनोदृतिवाळा डे.

आ प्रमाणे धणां वर्णे मुधी चास्त्रुं पाढन करीने मृगापुत्र मुनि एक  
मासरुं अनशन करी सर्व कर्म खपावी सिद्धिपदने पाम्या.

“जे माणसना हृदयमां अंतर्गत ध्यानने विशुद्ध करनार देदीप्यमान स-  
मता गुण होय डे, ते मृगापुत्र मुनीद्वनी जेम तल्काळ शुन एवा रत्नवर्णनी पुष्टि प्र-  
त्ये पोषे डे.”

इत्यद्विनपरिमितोपदेशमासाद्वत्तौ एकविंशतिमसंजस्य  
सप्ताधिकविशततमः प्रवंधः ॥ ३०७ ॥

## व्याख्यानं ३०८ सुं.

पांच इन्द्रियोना स्वरूप विषे.

श्रुतेन्द्रियस्वरूपांणि, श्रीज्ञातनंदनास्यतः ।

स सुन्नज्जोऽनुचानोन्नूत, पंचाक्षविषयोन्मुखः ॥ १ ॥

जावार्थ—“ श्री महावीर स्वामीना मुख्यी पांच इन्द्रियोना स्वरूपे साभकी पांच इन्द्रियोना विषयी, पराह्मुख थयेज्ञ ते सुन्दर आणगार (मुनि) थया, ” तेनु दृष्टं आ प्रमाणे—

### सुन्दरी कथा.

श्री सजगृह नगरमां कोट श्रेष्ठानो पुत्र मुन्द्र नामे हतो, ते जन्मथीत ददित्रीपाणि पामेज्ञा होवायी निरंतर निकाट्विती उद्दरनिर्वाह करतो हतो, एक दा ते नगरमां श्री महावीर स्वामी गुणशील वनमां समवंसर्या, ते परमात्माने बांद्वा मोटे राजा तथा सर्व पीरजानो जता हता, ते जोड्ने ते सुन्दर पण सर्व जननी साये प्रज्ञ पासे गयो, त्रण भ्रुवनने तारवामां समर्थ अने जेन कोइनी उपमा न आपी शकाय एवी श्री जिनेभरनी वाणी सांजळीने आर्थ्य पामेज्ञा सुन्द्रे विचार कर्यो के “ अहो ! आजे मे. निःसीम गुणना निधि समान कर्मकस्मपरहित एवा प्रहुने जोया, आजे मारे जन्म सफल थयो, ” पछी समग्र जगतना जीवों नो उद्धार करनार अने योधितीजने आपनार एवा श्री प्रज्ञप ते सुन्द्रने उद्देशी ने इन्द्रियो संबंधी व्यव्यान शाह कर्यु, ते आ प्रमाणे—

जितान्यक्षाणि मोक्षाय, संसारायाजितानि च ।

ज्ञेत्तदन्तरं ज्ञात्वा, यद्युक्तं तत्समाचर ॥ १ ॥

जावार्थ—“ जीतेज्ञ इन्द्रियो मोक्षने मोटे थाय छे, अने नंहीं जीतेज्ञ इन्द्रियो संसारने मोटे थाय छे ; मोटे ते बनेतुं अंतर जाणीने जे युक्त ज्ञाने तेनु आचरण कर, ”

इन्द्रियो पांच छे—शोत्र, नेत्र, नासिका, जिहा अने स्वर्गत (कापा), ते देरेक इन्द्रिय छव्य अने जावयी बवे प्रकारनी छे, छव्येन्द्रियना पण वे प्रकार छे, एक निर्वृति इन्द्रिय अने बीजी उपकारण इन्द्रिय, निर्वृति एट्ड्वे इन्द्रियने आकार, ते पण थाय अने अन्यंतर जेदे करीने वे प्रकारनो छे, तेमा थाय आकार स्कुड छे, ते देरेक जातिने विषे जूदा जूदा स्वरूपवालो काननी पापदो विगेरे जे वहार देखाय छे, ते जाणवो, थाय आकार विचित्र आकृतिवालो होवायी श्री अश, मनुष्य विगेरे जातिमां समान रूपवालो नयी, अन्यंतर आकार सर्व जातिमां समान होय छे, ते आ प्रमाणे—शोत्रनो अन्यंतर आकार कदं व पुण्यता आ-

कार जेवा पासना गोलारूप छे, नेत्रोनो अच्युतर आकार मसूरना शान्यनी जेवो होय छे, नासिकानो अच्युतर आकार अतिमुक्तकना<sup>१</sup> पुण्य जेवो होय छे, जिहानो आकार अस्ता जेवो होय डे, अने स्पर्शन इन्द्रियनी आकृति जिन्न जिन्न प्रकारनी होय डे, पण ते वाश अने अच्युतर एकज स्वरूपे होय डे. आ प्रमाणे निर्वृति इन्द्रियनुं स्वरूप जाणवुं. उपकरण इन्द्रियनुं स्वरूप एवुं डे के जेप सदगनी धारामां चेदन करवानी शक्ति छे, तेम शुद्ध पुदग्नमय शब्दादि विषयने ग्रहण करवानी जे शक्ति विशेष ते उपकरण इन्द्रिय जाणवी. ते इन्द्रियनो अतिकठोर मेयर्गन्नादिकर्म उपदात थाप तो बहेरापाण विग्रे प्राप्त थाय डे. ए प्रमाणे द्रव्य इन्द्रियना निर्वृति अने उपकरण एवा वनें चेदनुं स्वरूप जाणवुं, हवे जाव इन्द्रियना पण वे प्रकार डेः लभ्य अने उपयोग. तेमां श्रोत्र विग्रे इन्द्रियोना विषयवाळा सर्व आत्मप्रदेशने 'आवरण' करनरां कर्मनो जे क्षयोपशमं ते लभ्य इन्द्रिय जाणवी; अनें पोतरोताना विषयमां लभ्यस्तु इन्द्रियने अनुसारे आत्मानो जे व्यापार—प्रणिधान ते उपयोग इन्द्रिय जाणवी.

पांचे उपकरण इन्द्रियो अंगुष्ठना असंख्येय जाग प्रमाण स्थूलं (जीमां-इपां) डे. तेमां श्रोत्र, नासिका अने नेत्र अंगुष्ठना असंख्यातमा भागे पृथु डें, जिहा इन्द्रिय वेदी नव अंगुष्ठ विस्तारवाळी डे, अने स्पर्शनेन्द्रिय देहप्रमाण विस्तारवाळी डे.

पांचे इन्द्रियोना विषयनुं मान आ प्रमाणे डे—नेत्र विना वीजी चार इन्द्रियो जघन्यवी अंगुष्ठना असंख्यातमा जागमात्रां रहेद्वा विषयने जाणे डे, तेथी वंथारे नजीक रहेद्वाने जाणती नवी. नेत्र इन्द्रिय जघन्यवी अंगुष्ठना संख्याता जागमां रहेद्वा पदार्थने जोड शक्ते डे, पण अति समीपे रहेद्वां अंजन, रज, मेज विंगेने जोड शक्ती नवी. नासिका, जिहा, अने स्पर्शन एत्रण इन्द्रियो उल्लृष्ट नव योजनवी आवता गंधे, रस तथा स्पर्शने ग्रहण करे डे. कर्ण इन्द्रिय उल्लृष्ट वार योजन दूरवी आवता शब्दने सांजले डे, अने चक्षुरिन्द्रिय साधिक वाख योजन दूर रहेद्वा रूपने जोड शक्ते डे, वक्ती—

एकाङ्कादिव्यवहारो, चतुर्दश्येन्द्रियैः किञ्च ।

अन्यथा वकुञ्जः पंचाङ्गः स्यात्पञ्चोपयोगतः ॥ १ ॥

रणन्नपुरशृंगारचाहुद्वैलेङ्गाणमुखात् ।

निर्यत्सुगनिधमद्विरागं नूपादेप पुष्यति ॥ २ ॥

जावार्य—“एकेन्द्रियादिक व्यवहार द्रव्य इन्द्रियोए करीनेज थाय डे, अहीं तो वकुञ्ज बृह धांचे इन्द्रियोना उपयोगवालुं होवाथी पंचेन्द्रिय कहेवाय. (ए ते एकेन्द्रियन डे. (?). पगमां शब्द करता नेत्र विंगे शृंगार धारण करेवी सुंदर अने चपल नेत्रवाली खीना मुखवी नीकलता मुगंधी मदिराना कोणडाथी वकुञ्ज बृह पुण्यित थाय डे.”

अहीं वकुञ्ज बृहने पांचे जाव इन्द्रियोनो उपयोग आ प्रमाणे समजवो—

नूपुरना शब्दवाला पादनो स्पर्श करवाथी प्रफुट्टित थाय डे तेथी कर्ण अने स्पर्श ए वे इन्द्रियोनो उपयोग, सुंदर नेत्रवाली खीने लीधे प्रफुट्टित थाय डे, तेथो नेत्र इन्द्रियोनो उपयोग अने मुगंधी मदिराना रसवी प्रफुट्टित थवाने अंगे सेंडिय ने घाणेंद्रियोनो उपयोग—एम पांचे इन्द्रियना विषयनो उपयोग जाणवो.

आ प्रमाणे इन्द्रियोना स्वरूपने जाणीने तेना शब्दादि विषयोमां कण-पात्र पण मननी प्रवृत्ति करवी नहीं. कर्णु छे के—

इंदिअधुत्ताण अहो, तिलतुसमित्तं पि देसु मा पसरं ।

अह दिन्हो तो नीझ, जत्थ खण्णो वरिसकोमिसमो ॥ १ ॥

जावार्य—“अहो! इन्द्रियरूपी धूतने तलना फोतरा जेझ्डो पण मसा-र (अवकाश) आपीश नहीं. जो कदाच तेने एक क्षणमात्र पण अवकाश आपीश तो ते जहार कोटी वर्ष मुधी जशे नहीं.”

इन्द्रियो गोपवाना विषयमां झातार्थकर्थांग सुन्नने विषे वे काचवातुं एषांत ओपेमुं डे. ते सूत्रमां आ वे गायाओ डे—

विसएसु इंदिआङ्ग, रुन्जन्ता रागदोसनिम्मुक्ता ।

पावंति निवुह सुहं, कुम्मुव्व मर्यंगदहंसुहं ॥ २ ॥

अवेरे उ अणत्यपरं परार्तं प्रावंति पावकम्मवसा ।  
संसारं सागरगया, गोमातु अ गसिअ कुम्मु वत् ॥६॥

जावार्य—“रागेक्षयी रहित थइने इन्द्रियोने विषयोने रोकनारा प्राणी-ओ मृदंग झहनो सुखने पामनारा काचवानी जेम निर्वृत्ति सुखने पामे डे, अने बीजा संसारसागरमां परेवा प्राणीओं पापकर्मना वशयी शियाळे ग्रसित करेवां काचवानी जेम अनर्थ परं पराने पामे डे.”

ते वे काचवानी कथा नीचे प्रमाणे—

बाराणसी पुरीने विषे गंगानदीने कांचे मृदंग नामना झहमां गुम्भेडिय अने अंगुमेन्द्रिय नामना वे काचवाओ रहेता हता. ते वने स्थङ्गचारी कीकाओ-तुं मांस खावामां प्रीतिवाळा हता, तेथी एकदा तेओ झहनी वहार नोकल्या ह-ता, तेवामां वे शियाळीयाए तेमने जोया. ते काचवाओ १४ शियाळने जोइने जय पास्या, तेघी तेमणे पोताना चारे पग तथा ग्रीवाने संकोचीने पृष्ठनी ढाकमां गोपवी दीधा, अने कांड पण चेष्टा कर्या विना जाणे मरी गयेवा होय तेम पड्या रहा, वने शियाळे पासे आवीने ते काचवाओने वारंवार उंचा उपासीने पडाड्या, गु-झांयो खवर्गावी तंद्या ग्रेणा पादप्रहार कर्या, परंतु ते काचवाने कांड पण इज्जा थइ-नहीं. पडी थाकी गयेवा ते वने शियाळ योके दूर जडेने संताइ रहा. एट्टेपेझा अंगुमेन्द्रिय काचवाए चपळताने द्विधि एक पडी एक एम चारे पग तथा ग्रीवाने व-हार काढी, ते जोइ वने शियाळे तत्काल दोझी आवीने तेनी मोक पकडीने मारी नोख्यो. बीजो गुम्भेडिय काचवो तो अचपळ होवायी चिर काळ सुधो तेमनो तेम पळ्यो रह्यो. पडी थणीवार सुधी रोकाइने थाकी गयेवा ते शियाळ झ्यारे त्यांयी जंता रह्या, त्यांरे ते काचवो चोतरफ जोतो जोतो कुदीने जम्बदीयी झहमां जतो रह्यो, तेवी ते सुखी थयो.

पांचे अंगोने गोपवनार काचवानी जेम पांचे इन्द्रियोने गोपवनार प्राणी सुखी थाय डे, एवं आ द्वारांततुं तात्पर्य डे.

आ पांचे इन्द्रियोनो प्रयोग प्रशास्त परिणाम अने अप्रशास्त परिणामे क-रीने वे मकारनो डे, तेमां श्रवण इन्द्रियो, देवघुरुना गुणग्राम अने धर्मदेवाना-

दिकना श्रवण करवामां शुन्न अध्यवसायथी जे उपयोग कराय ते प्रशास्त कहेवाय डे, अने इष्ट तथा अनिष्ट शब्दो श्रवण करीने रागदेष्टु जे निमित्त थाय ते अ-प्रशास्त उपयोग कहेवाय डे. चक्र इन्द्रियनो देव, गुरु, संघ तथा शास्त्रो जोवामां अने पमिद्वेहण, प्रमाणन विंगेमां, ईर्यासमितिमां तथा धर्मस्थानादिक जोवामां जे उपयोग कराय ते प्रशास्त डे, अने हास्य, नृत्य, क्रीमा, रुद्धन, जांमचेष्टा, इन्द्रजाल, पंरस्पर युद्ध, तथा स्त्रीना युस्त्य कुस्त्य अंगेयांग विगेरे जोवामां जे उपयोग कराय ते अप्रशास्त डे. नासिकानो अरिहंतनी पूजामां उपयोगी पुष्पो, केसर, कपूर, मुर्गंधी तेज विगेरेनी परीक्षामां, गुरु अने ग्नान मुनि विगेरेने पाटे पथ के ओंपथ आपवामां, तथा साहुओने अन्न, जल, चक्र, अन्नदृश्य विगेरे जाएवामां उपयोग कराय, ते प्रशास्त कहेवाय डे, अने रागदेष्ट उत्पन्न करनार मुर्गंधी तथा मुर्गंधी पदार्थोंमां उपयोग कराय तो ते अप्रशास्त डे. जिहा इन्द्रियनो साध्याय करवामां, देवगुरुनी सुति करवामां, परने उपदेश आपवामां, गुरु विगेरेनी जक्कि करवामां अने मुनिओने आहारपाणी आपतां ते वस्तुओनी परीक्षा करवामां उपयोग कराय ते प्रशास्त डे; अने स्त्री विंगेरे चार प्रकारनी विकथा करवामां, पाप शास्त्रनो अन्यास करवामां, परने ताप उपजाववामां अने रागदेष्ट उत्पन्न करनार इष्ट अनिष्ट आहारादिकमां जे उपयोग कराय ते अप्रशास्त डे. स्पर्श इन्द्रियनो जिनपतिमार्दु म्नानादिक करवामां तथा गुरु अने ग्नान साहु विगेरेनी वैयावन करवामां जे उपयोग कराय ते प्रशास्त डे, अने स्त्रीने आद्विंगन विंगेरे करवामां जे उपयोग कराय ते अप्रशास्त डे. आ प्रमाणे सर्व वस्तुओमां शुन्न तथा अग्रभ अध्यन-सायनी फलमासिने अनुसारे प्रशास्त तथा अप्रशास्त जाव जाएवो. तेवी रीते विचारतां अहीं चार जांगा थाय डे. ते आ प्रमाणे—केऽङ्गाएक जीवोने शुन्न अध्यवसायना कारण (साधक कारण) नृत जिनविंश्वादिक प्रशास्त वस्तु जोइने कासंक शोकस्ति विंगेरेनी जेम अप्रशास्त वापक जाव उदय पामे डे. केऽङ्गाएक जीवोने शुन्न अध्यवसायने साधनार साथक कारणभूत समवसरणादिक प्रशास्त वस्तु जोइने पंदरसो तापसोनी जेम प्रशास्त साधकजाव उत्पन्न थाय डे. केऽङ्गाएक जीवोने वापक कारणनृत अप्रशास्त वस्तु जोइने पण आपाद नार्तक अधिनी जेम प्रशास्त एवो. साधकभाव द्विष्ट पामे डे, अने केऽङ्गाएक जीवोने अप्रशास्त वापक वस्तु जोइने सुचूप चक्री, व्रद्धदत्त चक्री विंगेरेनी जेम अप्रशास्त वापकजाव उत्पन्न

थाय भे. ”

आ प्रमाणे श्री वीरमनुना मुख्यी धर्मदेशना सांजडीने जैसे शेरीमां प्रकेक्षा चाँधरानी कंथा ओढ़ेंटी भे, अने जेना हाथमां मृत्तिकातुं रामपात्र रहेद्दुं छे एवो दस्ती मुनद्र प्रतिवोध पाम्यो, तेथी तेणे तरतज सर्व मूर्तीनो ल्याग कं रीने दीक्षा ग्रहण करी. आकाशनी पेचे असख्तित विहारवाळो थयो, अने प्रनु-नी कुपाथी ते अगियार अंगना सुत्रार्थनो झाता थयो. एकदा पाँखोको ते मु-निनी पृष्ठावस्था संज्ञारीने हांसी करवा दाग्या के “ अहो ! आ मुनद्र केवी राजसमृद्धि तजीने मुनि थयो भे ! हवे तो सारी रीते आहारादिक मलबाधी ते पूर्णनी अवस्था करतां घधारे मुखी थयो भे. पहेळां तो आ रंक रंकपुरुषोवमे प-ए निय ( निदवा दायक ) हतो, अने हवे तो इन्जादिक देवोने पण वंद्य ( वंद-न करवा योग्य ) थयो भे. पहेलां तो तेने उछिष्ट ( एटुं ) जोजननी मासि पण उत्तेजन हतो; अने हवे तो येष्व जोजन मले छे. आना वैराग्यंतुं उत्तात ने तेतुं का-रण आपाणे वरावर समज्या भीए. ”

इत्यादिक निंदा करता पाँखोकोने जोझे श्रेणिक राजाना पुत्र अभय-कुमार मंत्रीए विचार्यु के “ अहो ! आ पाँखजनो विनाकारण गदा वैराग्यवान ने स्थांगीमां श्रेष्ठ एवा आ मुनिनी निंदा करे भे. परमार्थ तत्त्वने नहीं जाणनारा आ मूढ लोको आ निःस्पृह मुनि रपर फोगट वैर राखीने तेना गुणोने दोपणे वह-न करे भे. तेपन मुनिनी निंदा करवायी तेओ दृढतर पापकर्मना समूहने उपार्ज-न करे भे. माटे-मारे आ सर्व लोकोने कोइ प्रकारे प्रतिवोध करवो जोइए. ” एम विचारीने अवसरङ्ग अन्यकुमारे एकदा राजमार्गमां सर्व पाँखजनो एकत्रा मलेला हता, ते वरते दूरथी मुनद्र मुनिने आवता जोझे पोताना वाहन परथी नीचे उत्तरी बण प्रदक्षिणा पूर्वक तेमने नमीने पूछ्युं के “ हे पृज्य ! एककाळे केड़वी इन्जियोनो उपयोग होइ शके ? ” गुरुए जवाब आप्यो के “ एककाळे एकजं इन्जियनो उपयोग होइ शके. ” फरीथी मंत्रीए पूछ्युं के “ एक एक इन्जिय से-वी सती छुःखशायी थाय के नहीं ? ” मुनि बोध्या के “ एक एक इन्जिय पण मृ-गादिकिनी जेप आळोकमां तथा परखोकमां महा अनर्थनुं कारण थाय भे, तो प-त्री-पाचे इन्जियोनुं सेवन करवायी केड़लो अनर्थ थाय ? कायुं भे के— कुरंगमातंगपतंगभृंगमीना हताः पंचन्जिरेव पंच . ।

एकप्रमादी स कथं न हन्याथः सेवते पंचन्जिरेव पंच ॥१॥

जावार्य—“मृग, हाथी, पतंग, भ्रमर अने मत्स्य ए पांच प्राणीओ पांच इन्द्रियोमांथी एकेकना सेववावमे हणाया, एटझे पांचथी पांच हणाया तो जे प्रमादी मनुष्य एकझो पांचे इन्द्रियोवमे पांचेना विषयोने सेवे डे ते केम न हणाय? ते तो अवश्य हणाय.”

मृगो स्वेद्वाए अरण्यमां अटन करे डे, तेने पकडवा माटे पारधीओ सारंगी, वीणा विगेनो नाद करे डे, तेथी कर्णना विषयमां दुब्ब थयेझा, मृगो मोह पामीने ते संगीत सांजळवा आवे डे. ते वस्ते पारधीओ तेने जंगलीधी हणी नाखे डे.

हायीने पकडवा माटे छुट्ट पुरुषो एक मोटा खानामां कागळनी हाथणी वनावीने राखे डे. ते हायणीने जोइने तेनो स्पर्श करवाने उत्सुक थयेझो हाथी ते खानामां पमे डे, त्यांथी ते नीकळी शकतो नव्ही. पडी कुधा अने दृष्टि विगेरेथी पीका पामेझा ते हायीने निर्वळ थयेझो जाणीने केवळेक दिवसे तेने वापे डे, अथवा मारी पण नाखे डे.

नेवना विषयमां आसक्त थयेदुं पतंगीयुं दीवानी ज्योतमां मोह पामीने ते मा पोताना देहने होमे डे तेथी मरण पामे डे.

घाण इन्द्रियना विषयमां आसक्त थयेझो ब्रह्मर कपळना सुगंधधी मोह पामीने दिवसे ते कपळमां पेसे डे. पडी रात्रे ते कपळ बीकाइ जाय डे, एटझे ते महा छुख पामे डे.

जीद्वा इन्द्रियने वश थयेझा मत्स्यो लोदाना कांद्याना अग्र ज्ञापर राखे बी लोडनी गोळीओ जोइने तेमां दुब्ब यह मांसनी बुच्छियी ते गोळीओ खाचा जाय छे, एटझे तरतन लोहना कांद्याथी वींधाइने परण पामे डे.”

आ प्रमाणे इन्द्रियोनुं स्वरूप सुन्दर मुनिना मुखवी सांभळीने अभ्यं कुमारे सर्व पांचवोकोने कहुं के “हे पौरजना! तपारामांथी जे कोइ मात्र एक इन्द्रियने वश करे, अने तेनुं मनुनी साक्षीए पचलखाण द्वे तेने हुं आ मढा मूँ व्यवाढुं रत्न आपुं.” ते सांजळीने ते लोकोमांथी कोइ पण तेम करवाने तीवां थयो नहां, सर्व जनों माने धरी रखा त्यारे अभ्यं कुमारे मुनिने कहुं के “हे सा-

मा! आपे तो श्री वीर मनुनी साक्षीए पांचे इन्द्रियोना विषयोनुं प्रत्याख्यान कर्युं डे, तेथी आ पांच रत्नो आप ग्रहण करो. ” मुनि वोद्या के “ ए रुत्नोने हुं शुं कर्ह ? मने तो कांचन अने पापाणमां समान बुच्छ डे. मैं तो त्रिविधे त्रिविधे शरीरी सुशुप्ता करवानो अने पसिंहमात्रनो त्याग करेलो डे. इन्द्रादिकना सुखमां पण मने त्रिकाळे पण इडा नवी. ” ते सांजलीने सर्व पाँखोको विस्यं पामी कहेवा दाग्या के “ अहो ! आ मुनि खरेखरा निःस्पृह डे. आपणे मूर्खोंए आज मुधी तेनी फोगट निंदा करी. ” आ प्रमाणे तेमना मुख्यी मुनिनी स्तुति सांजलीने कुर्तार्थ थयेलो अन्नयकुमार मुनिने नमन करी जैन धर्मनो महिमा वथारीने पोताने घेर गयो, अने मुनज्ज मुनि शुन उपयोगयी पूर्ण थया सता आत्म कार्य साधवामां तत्पर थया.

“ इन्द्रियोना विषयो प्राप्त थाय त्यारे श्री वीरप्रभुना वाक्यनुं सरण करीने ते विषयोपर जरा पण विश्वास करवो नहीं. जुओ ! इन्द्रियोने वश करवाथी मुनज्ज मुनिए पुकांते रहीने आत्मभाव प्रगट कर्यो. ”

इत्यद्विनपरिमितोपदेशप्रासाददृच्छौ एकविश्वितिमस्तंजस्य  
अष्टेत्तरत्रिशततमः प्रवंधः ॥ ३०८ ॥

## व्याख्यान ३०९ मुं.

इन्द्रियोनुं स्वरूपं ( शरु )

आत्मानं विषयैः पाञ्चैर्त्तिवासपराङ्मुखम् ।

इन्द्रियाणि निवधन्निति, मोहराजस्य किंकराः ॥१॥

नावार्थ—“ नववासर्थी एद्वें संसारमां रहेवार्थी पराङ्मुख थयेद्वा एवा उच्छ्रित वैरागी आत्माने पण मोह राजाना किंकर रूप इन्द्रियो विषय रूपी पा-

शब्दे थांधी क्षे डे, अने तेने पागा संसारमां ज्ञमावे डे. ” ते उपर सुकुमारिकाने संवेद छे ते आ प्रमाणे—

### सुकुमारिका साध्वीनी कथा.

बसंतपुरना राजाना रासक अने जसक नामना पुत्रोए बैरांग्यथी दीक्षा लीधी. अनुक्रमे तेओ गीतार्थ थया. पडी तेपणे पोतानी बेन सुकुमारिकाने प्रतिवेष पमादी दीक्षा आवी. ते सुकुमारिका अत्यंत स्वहृष्टपान होवायी अनेक युवान पुरुषोनां चित्ततुं आकर्षण करतो हती. तेथी ते युवान पुरुषो साध्वीना उपाश्रय पां प्रवेश करीने सुकुमारिकाना रूपने रागहृष्टियो जोगा हता. ते उपदेशनो दृतात महत्तरा साध्वीए तेना जाइआने कयो. एटड्वे तेओ सुकुमारिकाने एक जुदा मकानमां राखीने तेनी रक्षा करवा द्याया. सुकुमारिकाने गुप्त राखेझी जाणीने युवान पुरुषोए ते बने जाइओनी साथे युच्च करवा मांमशुं. ते जोझेने सुकुमारिकाने विचार थयो के “ मरे माटे मारा जाइओ मेटो क्षेत्रा पामे डे; माटे अनर्थ करनारा एवा आ मारा शरीरने धिकार डे ! ” इत्यादि विचार करीने बैरांग्यथी तेणे अनेशन प्रहण कर्यु, तेथी केटड्वेक दिवसे तेतुं शरीर एटद्वुं वधुं क्षीण पड़ गयुके तेना जाइओए अतिशय मोहना वशयी तेने मृत्यु पामेझो जाणीः एटले ते बन्हेए गाम वहार तेने अरण्यमां परवाही दीधी. त्यां जितङ्ग वायुना स्पर्शयी तेने गुच्छ आवी. तेवामां कोइ सार्थवाहे तेने जाइ, एटड्वे ‘ आ कोइ स्त्रीरत्न डे ’ एम जाणी ते तेने पोताना मुकाममां द्वां गयो. पडी अन्यंग, उर्ध्वतन तथा आंघय विग्रे करीने तेणे अनुक्रमे तेने पूर्वनी जेवी सुंदर रूपवती करी. पडी सुकुमारिका ते मकारनी जवितव्यतायी अने कर्पनी विचित्रताने द्वीषे “ आ सार्थवाह मारो अहुप्म उपकारी अने बतसज्ज डे ” एम मानवा द्यागी. तेथी सार्थवाहना कहेवा माणे तेनी स्त्री थझ्ने केटझोक काळ तेने घेर रही. एकदा तेणे पोताना बने जाइओ (मुनि)ने जोगा. एटड्वे तेमने घेदना करीने तेणे पोतानो सर्व दृतात निवेदन कयो. ते सांभळीने तेओए सार्थवाह पासेथी. तेने डोकावीने फरीधी प्रतिवेष आप्यो के—

सरित्सद्वस्तुऽपूरस्सुखोदरसोदरः ।

तृप्तो नैवेन्द्रियग्रामो, ज्ञव तृप्तोऽन्तरात्मना ॥ १ ॥

ज्ञावार्थ—“ हे जन्म प्राणी ! हजारो नदीओना जलथी पण जेतुं उद्दर पूर्ण घतुं नवी एवा समुद्रनी जेवो इन्द्रियसमूह कदापि तुमि पामतो नवी, माटे अन्तरात्माए करीनेज तुं तृप्त था । ”

विस्तरार्थ—हे जन्म ! आ इन्द्रियो कोइ पण वर्खत तृप्त घतीज नवी, केमके नहीं जोगवेद्वा जोगनी इच्छा रहे डे, जोगवती वर्खते तेमां आसक्ति रहे डे, अनेज जोगवायेद्वा जोगतुं स्मरण रहा करे डे. एटले वर्णे काळमां इन्द्रियोनी अशुद्ध प्रृष्ठिं छे, अनेइ इन्द्रियोना विषयोमां आसक्त घयेद्वा जीवनी तेना जोगवते कदापि तुमि घतीज नवी. ते इन्द्रियोनो समूह केवो डे ? हजारो नदीओना प्रवाहवर्ते पण नहीं पूराता समुद्र जेवो डे. ते इन्द्रियोनो अनिद्वाप शमसंतोषवर्मेज पूरी शकाय तेम डे. तेने माटे आ हित कथन छे; तेथी हे उत्तम जीव ! तुं तारा आत्म स्वरूपे करीनेज तृप्त था.

आ जीव संसारचक्रमां रहेद्वा परजावोने आत्मपणे ( पोतापणे ) मानीने ‘ आ शरीरज आत्मा डे ’ एवी रीतना वाहा भावने विषे आत्मयुक्ति धारण करी वाहात्मापणाने पामवार्थी मोहर्मां आसक्त घयो सतो अनन्त पुद्गङ्ग परवर्त सुंधी संसारचक्रमां पर्यटण करे डे. तेज जीव निसर्गवी ( स्वयेमव ) अध्यारा अधिगमयी ( परना उपदेशार्थी ) आत्मरूप तथा पर रूपनो विजाग करीने ‘ हुं शुद्ध दुं ’ एवो निश्चय करी सम्यक् रत्नत्रय स्वरूपवाला आत्मानेज आत्मरूपे जाणी तथा रागादिकनो परजावपणे निश्चय करी सम्यगदृष्टिवालो अन्तरात्मा शीघ्र डे, ( तेज अंतरात्मा कहेवाय छे ); अनेतेज अन्तरात्मा सम्यगदर्शन प्राप्तेने, अबसरे निर्भर करेद्वा संपूर्ण आत्म स्वरूपनी प्राप्ति घवासी परमात्मा चनेडे, माटे इन्द्रियोना विषयोनो त्याग करवो योग्य डे. कहुं डे के—

पुरः पुरः स्फुरत्तृप्णामृगतृप्णानुकारिपु

इन्द्रियार्थेषु धावन्ति, त्यक्त्वा ज्ञानामृतं जमाः ॥ १ ॥

ज्ञावार्थ—“ जम पुरुषो ज्ञानरूपी अमृतनो त्याग करीने आगळ आगळ स्फुरणायमान घती जोगपिपासा ( विषयतृप्णा ) रूपी मृगतृप्णा जेवा रूप रस गंध स्पर्श शब्द ब्रक्षण इन्द्रियोनां विषयो तरफ दोमे डे; अंतुर थाय डे. ” तेने अर्थे अनेक प्रकारनां यत्न, दंज, व्यापार, मुक्तन विग्रेर कर्म करे डे.

तत्त्वने नहीं जाणनारा ( तत्त्वविकल ) द्वोको इन्द्रियोना जोगने सुखरूप माने डे, परंतु ते सुख नयी पण ज्ञातिज डे. काहुं डे के—

**वारमणांतं ज्ञुता, वंता चत्ताय धीरपुरिसेहि ।**

**ते ज्ञोगा पुण इच्छृष्ट, ज्ञोतुं तिहाऊबो जीवो ॥ १ ॥**

जावार्थ—“धीर पुरुषोए अनन्तीवार ज्ञोगवेद्वा, वयन करेद्वा अने त्योगेद्वा गाने दृष्णाधी आकुद्वव्याकुद्व थंयद्वो जीव फरीफरीधी ज्ञोगवाने इच्छे डे.”

तेथीज चक्रवर्ती, वासुदेव, मांकक्षिक राजाओ अने कंभरीक विगे, अनेक पुरुषो विषयोमा मोह पामवायी नरकां दीन अवस्थाने पाम्या डे. घाउं कहेवायी गुं ! विषयनो जरा पण विश्वास करवो नहीं. अहो ! पूर्व जबे आस्वादन करेद्वा समता सुखतुं स्मरण करीनि द्वयसत्तम देवताओ अनुत्तर विमानना सुखने पण गृण समान नये डे. इन्जादिक पण विषयनो त्याग करवार्मा असमर्थ होवायी मुनिओना चरणकमळमा पृथ्वीपर आलोडे छे, माटे अनादिकाल्यी अनेकवार ज्ञोगेद्वा विषयोनो त्यागज करवो; तेनो किंचित् मात्र पण संग करवो नहीं. पूर्वपरिचित ( पूर्व ज्ञोगवेद्वा ) विषयतुं स्मरण पण करवुं नहीं. नियंथ मुनिजनो तत्त्व जागवानी इच्छाधी शाखाअवद्वोक्तव्येन काळ निर्गमन करे डे; अने ‘निर्मल निःसंग तगा निष्कर्षक एवा सिद्ध जायनो अमे वयरे स्वर्ण करजुं’ इत्यादिक ध्यायमानि मध्य रहे डे.”

आ शमाणेना बेदु मुनिना उपदेशनो वाक्यो सांचलीने सुकुमारिकांर करीधी चारिभ ग्रहण कर्युं, अने निर्मल अंतःकरणधी तेनुं प्रतिपादन करीने अहु क्रमे स्वर्गे गइ..

“धीर पुरुषोने विषें मुखरूप एवा ते मुनिए विविध प्रकारना विषयकी रज्जुधी वेधाया विनाज ग्राष थयेद्वी पोतानी वेननो शिग्र उद्धार कयों, अने ते ५ ए पापने आज्ञोवीने स्वर्गमुखने पामी.”

**स्त्यद्वदिनपरिमितोपेशमासादवृत्तीं एकविंशतितमसंत्रस्य**

**नवाधिकत्रिशततमः प्रवंधः ॥ ३०४ ॥**

## व्याख्यान ३१० मुः

— — —

इन्द्रियोनो जय करवा विषे।

स्यादक्षाणां जयो त्यागात्यागोऽत्र परवस्तुपु ।

जनन्यादिष्वन्निष्वंगं, स एव निर्जरां श्रयेत् ॥ १ ॥

**नाथार्थ—**“ इन्द्रियोनो जय त्याग करवायी थाय छे. त्याग एट्हें माता विगरे परवस्तुने विषे अन्निष्वंग जे राग तेथी रहित घर्तुं ते. ते त्यागज निर्जरानो आश्रय करे छे, अर्थात् तेना त्यागथीज निर्जरा थाय छे.” आ प्रसंग उपर मुन्नानुकुमारनी कथा ते ते आ प्रमाणे—

सुन्नानुकुमारनी कथा.

आ जरतदेवने विषे मागध देवामां सुवप्ना नामे पुर्वा भे, तेमां अरिदिमन नामे राजा हतो. तेने धारिणी नामे पद्मराणी हती. तेने देवसपान कांतिवाळो मुन्नानु नामे कुमार थयो हतो. ते कुमार युवावस्था पाम्यो त्यारे तेने तेना पिताए रूप, वावए अनेक कलावाळी एकसो कन्याओ परणाचो. ते स्त्रोओनी साये विष्यसुख जोगवतो नानुकुमार मुखे मुखे दिवसो निर्गमन करतो हतो. एकदा श्री संन्नवनाथ स्वामी ते नगरीना उद्यानमां समवसर्या. ते वृत्तान्त बनपाळे आवीने नानुकुमारने कथो के “ अनेक केवली, अनेक विपुलमति, अनेक कञ्जुमति, अनेक अवधिङ्गानी, अनेक पूर्वधर, अनेक आचार्य, अनेक उपाध्याय, अनेक तपस्त्री, अनेक नवदीक्षित मुनिओ तथा अनेक देवदेवीओयी परिवरेवा सर्वज्ञ, सर्वदर्शी अने आकांशमां जेमनी आगळ धर्मचक्र चाल्वे भे एवा श्री संन्नवनाथ स्वामी आपणा उद्यानमां समवसर्या भे.” ते सांजली नानुकुमार पोतानी सोए स्त्रीओ सहित पोटी समृद्धियी वांदवा नीकब्ब्यो; अने समवसरणमां रहेवा प्रभुने वंदना करीने विनय पूर्वक योग्य स्थाने वंतो. ते वसते स्वामीए देशनानी आरंज कयो के—“ सर्व धर्मने विषे मुख्य हेतु परन्नावनो त्याग करवो तेज भे. तेमां स्वद्वय, स्वकेत्र, स्वकाल अने स्वभाव पणाए करीने स्यादस्ति नामना पहेला

जांगापी ग्रहण करेको जे आत्मानो परिणाम ते पोताना आत्माने विषे रहेको स्वधर्म छे. तेनो समवय संवेदे करीने अनेद होवायी ते आत्मर्थम तजवा योग्य नथी; पण अनादि कालयी चाह्या आवता मिथ्यादृष्टिपणाए करीने कुदेवादिकने विषे आसक्ति विगेरे जे अपशस्त जाव छे तेना ग्रहणनो त्याग करतो योग्य छे. तेमा नामथी त्याग शब्दना आश्वाप रूप छे. शास्त्र, यतिर्थम अने जिनपूजा निर्गोरो स्थापन करेको त्याग ते स्थापना त्याग छे. बायदृत्तियी इन्द्रियोना अनिद्वाषनो, आहारानो अने उपाधि विगेरोनो जे त्याग करतो ते इच्छत्याग छे; अने अंतरंग दृत्तियी राग, देव तथा मिथ्यात्व विगेरे आश्रव परिणतिनो त्याग करतो ते जावत्याग छ.

विष गरब्द अनुष्ठानवर्म करीने जे त्याग ते नैगम, संग्रह ने व्यवहार नये समजबो, कम्भा विपाकन। जीतियी जे त्याग ते क्षमुसूत्र नये जाणबो, तर्जेत क्रियापणे त्याग ते शब्द ने समजिरुद्ध नये समजबो, अने वर्जवाना यत्नवर्म सर्वथा वर्जन ते एवंभूत नये समजरु<sup>१</sup>।” इत्यादि अनेक युक्तिवाला उपदेशने सांजलीने चारित्रमोहनीय कर्मणा क्षयोपशमवर्म सर्वविरति ग्रहण करवानो जेनी दुष्क्रिध थे छ एबो जानुकुमार मञ्जुना चरणकमलमां वंदना करीने थोड्यो के “शरणरहित प्राणीअने शरण आपवामां सार्थवाह समान, अने जवसमुद्र्धी तारनार एवा हे मनु ! हे स्वामी ! मने सर्वविरति सामाधिकनो उपदेश करो (आपो) के जेथी विषप कणायादिकनो त्याग दुष्क्रिध पापे.” ते सांजलीने जगवाने तेने सामयिक चारित्र आप्यु, तेणे महावत ग्रहण पूर्वक साधुपण्डि छांगीकार कर्यु, तेन वसते तेणु आयुष्य पूर्ण थक्कायी ते कुमार मृत्यु पामीने स्वर्गे गयो. तेवामां ते कुमारनो पिता परिवार सहित मञ्जुने वांदवा आब्यो, त्यां पोताना पुत्रने मरेको जोइने तेने अति खेद थयो, तेनी माता पण पुत्रवियोगथी विज्ञाप करतो रुदन करवा छागी, ते वसते जानुकुमारनो जीव तत्काल देवपणुं पामीने मञ्जुनी पासे आब्यो, त्यां पोताना मातापिताने विज्ञाप करतां जोइने ते देवे तेमने कर्यु के “तमने एवं शुद्धुःख पन्थयु छे के परम मुखद्रायक एवा श्री जिनेश्वरना चरणकमलने पामीने पण तमे रुदन करो भो? ” ते सांजलीने राजा तथा राणी थोड्यां के “अमारो अत्यंत मिय पुत्र मृत्यु पाम्यो, तेनो अमारे वियोग थयो, ते शुःख अमारायी सहन थहै

<sup>१</sup> या सात नये त्याग वरावर गुहामधी समजबा थाय छे.

नयी।” देव वोद्यो के “ हें राजा ते पुत्र तुम शरीर तपने प्रिय भे के तेनो जीव प्रिय भे ? जो तेनो जीव प्रिय होय तो ते हुं बुं, माटे मारापर प्रीति करो, अने जो तेनु शरीर प्रिय होय तो आ तेना परेक्वा शरीरपर प्रीति करो, हे माता ! तपे केम बारंवार विज्ञाप करां छो ? तमारो पुत्र कये रेकाणे—शरीरमां के जीवमां क्यां रहेक्वा भे ? तेनु शरीर अने जीव ए बने तमारी पासेज भे, माटे रुद्धन करवूं युक्त नथी।” ते सांजलीने राजा वोद्यो के “ तारे विषे अथवा आ परेक्वा शरीरने विषे एके उपर अपने प्रीति थती नथी।” देव वोद्यो के “त्यारे तो स्वार्थज सर्व प्राणीने इष्ट भे, अने परमार्थ कोइने इष्ट नयी एवुं थयुं. आ जगतना सर्व पदार्थ अनित्य भे, असत्य एवो सर्व संबंध अवास्तविक भे. तेमां तपे केम भोह पामो गो? सर्व लंकिक संबंध ब्रांतिस्तुपज भे. हे मातापिता ! विरतिरहित प्राणीओनो संबंध अनादि काळयी होय भे; पण ते अध्रुव भे, माटे हवे शाश्वत रहेनारा अने शुद्ध एवा शीङ शम दमादि बन्धुओनो संबंध करवा योग्य भे. मारो ने तमारो संबंध पण अनादि छे; पांतु ते अनित्य होवायी हवे हुं नित्य एवा शमदमादिक बंधुओं साथे संबंध जोमवा इच्छुं बुं—तेनो आश्रय करुं बुं. एक समता रूपी कांतानेज हुं अंगीकार करुं बुं, अने समान क्रियावाली ज्ञातिने हुं आदरुं बुं. वीजा सर्व वाय वर्गनो ( वाय कुटुंबनो ) त्याग करीने हुं धर्म संन्यासी थयो बुं. उद्धिक संपदाओनो त्याग कर्त्तावीज क्षायोपमिक स्वसंपदा प्राप्त थाय भे, अने स्वार पत्री काविक जावनी रत्नवत्य रूप संपदा प्राप्त थाय भे।” इत्यादि देवना करेक्वा उपदेशयी राजा पोताना समग्र कुटुंब सहित प्रतिवाध पाम्यो. एटझे तेमणे श्रीमान् संजनवनाथ स्वामी पासे दीक्षा ग्रहण करी अने महानंदपदनी साधनामां प्रवर्त्या अनुकूपे महानंदपद प्राप्त कर्यु.

“ पोतानो आत्मर्थमि तिरोहित थयो होय ते प्रशस्त योगना सेवनयी सम्यग् प्रकारे आविर्जीवने पामे भे—प्रगट थाय भे. माटे मुन्नातु कुमारनी ज्ञेम परं चतुर्पात्रोनो रागनो तत्काल त्याग करवो, जेथी प्रशस्तयोगं प्राप्त थाय भे।”

इत्यद्विनपरिमितोपदेशं प्राप्तादृत्तां एकविंशतितमसंजस्य

दशाधिकत्रिशततमः प्रवंधः ॥ ३१० ॥

## व्याख्यान ३११ मुं.

---

ज्ञानयुक्त क्रिया फलदायी हे.

**जिताक्षः साम्यशुद्धात्मा, तत्त्ववोधी क्रियापरः ।**

**विश्वांन्तोधेः स्वयं तीर्णः, अन्यानुत्तारणे क्रमः ॥१॥**

जावार्थ—“ साम्यपणाए करीने जेनो आत्मा शुद्ध हे, जेणे इन्द्रियोने जप करेद्वारा हे, जे तत्त्वने जाणे हे, अने जे शुद्ध क्रियामां तत्पर हे, ते प्राणी पों ते संसारसागरने तरे हे, अने वीजाने तारवा समर्थ थाय हे. ”

तत्त्ववोधी एटेवे यथार्थ स्वरूपने जाणनार, क्रियापर एटेवे आत्म साधनना कारणे अनुसरनारी योगप्रवृत्तिरूप अथवा आत्मगुणने अनुसरनारी आत्मवीर्यनी प्रवृत्तिरूप एवी जे क्रिया तेमां तत्पर थयेद्वारा, जे कराय ते क्रिया कहीए, ते क्रिया साधक अने वाधक एवा जेदे करीने वे प्रकारनी हे. तेमां आ अनादि संसारमां अशुद्ध एवी काया विग्रेना व्यापारकी उत्पन्न थयेद्वारी जे क्रिया ते वाधक क्रिया कहेवाय हे, अने शुद्ध एवी समिति गुप्ति विग्रेयी उत्पन्न थयेद्वारी कायादिकनी क्रिया ते साधक क्रिया कहेवाय हे. आ शुद्ध क्रिया अशुद्ध क्रियाने दूर करे हे. संसारनो नाश करवा सारु संवर अने निर्जरास्त्रप क्रिया करवी ते जाव क्रिया कहेवाय हे. वीजी नाम क्रिया, स्थापना क्रिया, अने द्रव्य क्रिया पूर्वनी जेम जाणी लेवी.

नेगण नय क्रिया करवाना संकल्पनेम क्रिया कहे हे. संग्रह नय सर्वे संसारी जीवोने सक्रिय कहे हे. व्यवहार नय शरीर पर्याप्ति पूर्ण थया पडीनी क्रियाने क्रिया कहे हे. अशुद्ध नय कार्यानु साधन करवा माटे योगवीर्यनी प्रवृत्तिनापरिणाम रूप क्रियाने क्रिया कहे हे. शाद्र नय आत्म वीर्यनी स्फुरणा रूप क्रियाने क्रिया कहे हे. समन्वित नय आत्मगुणानु साधन करवा माटे कराती सकल कर्त्तव्य व्यापारस्त्रप क्रियाने क्रिया कहे हे; अने एवंत्रूप नय आत्मतत्त्वना एकत्रिपण्डा रूप वीर्यनी तीक्ष्णताने उत्पन्न करवामां एकांत सहायकारक गुणपरिणामन रूप क्रियानेम क्रिया कहे हे. अहों स्वरूपनुं ग्रहण अने परजावनो त्याग तदूप क्रिया-

ज मोक्षने साधनारी भे. माटे ज्ञानतत्त्ववेद करीने आत्मतत्त्व साधना माटे सम्पर्क क्रिया करवी जोइए. कर्तुं भे के—

“ज्ञानाचारादयोऽपीष्टः शुद्धस्वस्वपदावधि । पोतपोतातुं शुद्ध स्थान प्राप्त थाय त्यां सुधी ज्ञानाचार विगेरे पण इष्ट मानेवा भे. आतुं तात्पर्य ए भे के—ज्ञायिक सम्पर्कत्व प्राप्त थाय त्यां सुधी निरंतर निःशंकता विगेरे आठ दर्शनाचारं सेवन कर्वुं, केवळ ज्ञान प्राप्त थाय त्यांसुधी काळ, विनय विगेरे आठ ज्ञानाचारं निरंतर सेवन कर्वुं. यथारूपात चारिंग प्राप्त थाय त्यां सुधी समिति गुप्ति रूप आठ चारिंगचारं सेवन कर्वुं. शुद्धज्ञान प्राप्त थाय त्यां सुधी तपाचारं सेवन कर्वुं, अनेसर्व संवर प्राप्त थाय त्यां सुधी वीर्यचारं सेवन कर्वुं. आ पांच आचारं पालन कर्या विना मोक्षनी प्राप्ति थती नयी. माटे ज्ञान पूर्वक क्रियामां तत्त्वर घेयेवो, समताए करीने शुद्ध आत्मावालो, अनेजीतेन्द्रिय पुरुष जबंसमुद्धी पोते तरी जाय भे, अनेपोताने शरणे आवेद्वा वीजाओने पण उपदेश आपीने तारवा समर्थ थाय भे: ते आत्मारामी कहेवाय भे.

ज्ञान क्रियायुक्त होय तोज हितने माटे थाय भे, एकत्रुं ज्ञान कांड पण हित करी शक्तुं नयी. कर्तुं भे के—

क्रियाविरहितं हन्त, ज्ञानमात्रमनर्थकम् ।

गतिं विना पथङ्गोऽपि, नाप्नोति पुरसीप्सितम् ॥ १ ॥

ज्ञावार्थ—“क्रियारहित एवं मात्र जाणवारूप संवेदन ज्ञान के जे वाणीना व्यापाररूप अनेमनना विकल्परूप भे ते अनर्थक भे, वंध्य भे एटेवे मुक्तिने साधनाहं नयी. केमके (पुरना) मार्गने जाणनारो माणस पण गतिरूप क्रिया कर्या विना कदी पण इच्छित पुरने पामनो नयी.”

तेज वातने दृढ करवा माटे कहे भे—

खानुकूलां क्रियां काढे, ज्ञानपूर्णोऽप्यपेक्षते ।

प्रदीपः स्वप्रकाशोऽपि, तैज्जपूर्त्यादिकं यथा ॥ २ ॥

ज्ञावार्थ—“तत्त्ववोधनी प्राप्तिरूप स्पर्शज्ञानं करीने पूर्ण उतां पण कार्यसाधनसम्ये स्वकार्यने अनुकूल एवो क्रियानो. अपेक्षा राखे भे; ते माटे ज

मुनि महाराज आवश्यकादि क्रिया यथोक्त काले करे भे, केमके दीबो पोते प्रका-  
शमान व्रतां पण तेज्ज पूर्वा विगेतेनी अपेक्षा राखे भे: अर्थात् स्वयंप्रकाङ्की उद्दी,  
तेज्ज, वाट, पञ्चनयो रक्षण विगेतेनी अपेक्षा रहे भे. ”

क्रिया करवातुं फळ आ प्रमाणे कहुं भे के—

गुणवद्वहुमानाद्यैर्नित्यस्मृत्या च सत्किया ।

जातं न पातयेज्ञावमजातं जनयेदपि ॥ १ ॥

जावार्थ—“ संयमादिक गुणवालातुं वहुमान करवा वफे, आदि शब्दे क-  
रीने पापनी छुंच्चा (निंदा) करवा वफे अने अतिचारनी आद्योचनादि करवा वफे,  
बळी पूर्वे ग्रहण करेका व्रतां निरंतर स्मरण करवा वफे यथेक्षी जे. सत् क्रिया, अ-  
र्थात् वे ते गुणयुक्त यती शुन क्रिया ते उत्पन्न यथेज्ञा जावने नाश यवा देती नयी,  
अने नहीं उत्पन्न यथेज्ञा शुक्र ध्यानादिक जावने उत्पन्न करे भे. ”

श्रेणिक राजाने वथा कृष्ण वासुदेव विगेने गुणीना वहुमानयी, पृण-  
वतीने पापना पश्चात्तापयी, अतिमुक्त मुनिने अतिचारनी आद्योचना करवायी  
अने रतिसुंदरीने धर्ममां स्थिता राखवायी—इत्यादि अनेक कारणोयी अनेक जन्म-  
जनोने परस्परनंदपदनी प्राप्ति थइ भे. अहीं प्रसंगोचित रतिसुंदरीनी कथा भे ते  
आ प्रमाणे—

### रतिसुंदरीनी कथा.

सकेतपुरमां जोतशु राजाने रतिसुंदरी नोम पुत्री हती, तेज नारामा श्रेष्ठी-  
नी पुत्री ऋच्छिसुंदरी, मंत्रीनी पुत्री बुच्छिसुंदरी अने पुरोहितनी पुत्री गुणमुं-  
दरी जामे हती. ए चारे सखीओ सुंदर रूपवाली हती, शावक धर्म पालनारी  
सती परस्पर मेमवाली हती, अनें देवगुरुना स्थलमां (देरासरे ने उपाश्रयमां) ५-  
कठी मझीने धर्मगोष्टी करती हती, तेओए धर्मक्रिया करतां परपुरुषनो नियम  
लीषिव्वो हतो.

हो नंदपुरनो राजा चार सखीओ ऐकी राजपुत्री रतिसुंदरीने परस्परे,  
तेंदुं रूप अने सावण्य सर्वत्र श्लाघा पाप्युं, तेवी हस्तिनापुरना राजाए ए-  
क दिवस दूत मोकझीने रतिसुंदरीनो माणणी करी, तें सांजलीनी नंदपुरना राजाए  
दूतने कहुं के “ एक सापन्य-प्राणस पण पोतानी पत्नीने आपतो नयी, तो हुं-

जी रीते मारी पत्नीने आपीश ? माटे तुं तारे स्थाने पाढो चाल्यो जा.”” ते सां-  
चल्लीने दूते जड़ने पोताना राजाने सर्व बात कही. तेथी राजाए नंदपुरपर चकाइ  
करी. बैने राजानुं युद्ध थतां हस्तिनापुरना राजानो जय थयो. ते रतिसुंदरीने व-  
लाक्तारथी छाइने पोताना पुरमां आओ. पडी तेणे रतिसुंदरीनी प्रार्थना करी, त्यारे  
ते बोझी के “मारे चार मास सुधी जीक्षवत पाळवानो नियम डे.”” ते सांचल्लीने  
राजाए विचार्यु के “चार मास पडी पण ते मारेज आधीन डे. क्यां जवानी  
डे ?” एम विचारी दिवसो निर्गमन करवा द्यायो. रतिसुंदरी हंमेशां तेने प्रति-  
बोध आपवा द्यागी, पण राजानो राग तेना परवी जरा पण ओढो थयो न-  
हीं. एकदा राजा बोझो के “हे जडे ! तुं हंमेशां मने उपदेश आपे डे, तुं तप-  
वने अतिकृश घट गड डे; तेमज शरीरपरवी सर्व शृंगार काढी नांख्या छे, तोपण  
मारू मन तारामां अति आसक्त डे. तासं बीजां अंगना तो हुं शुं बखाण करूं ! प-  
रंतु एक तारा नेत्रानुं पण वर्णन हुं करी शक्तो नयी.”” ते सांचल्लीने रतिसुं-  
दरीए पोतानां नेत्रोनेज जीझिलोपतुं कारण जाणी राजानी समक्क तत्काळ भरी-  
वदे बने नेत्रो काढीने राजाना हाथमां आप्यां. ते जोइ राजाने अस्यंत खेद थयो.  
तेने रतिसुंदरीए सारी रीते धर्मोपदेश आप्यो. राजाए प्रतिबोध पामीने तेने खमा-  
वी; अने मारे माटे आ खीए पोतानां नेत्रो काढी नांख्यां एम जाणीने मनमां अ-  
ति छुँखी थयो. राजानुं छुँख निवारण करवा माटे रतिसुंदरीए देवतानुं आगाध-  
न कर्तु. तत्काळ देवताए रतिसुंदरीने नवां नेत्र आप्यां. पडी राजाना आग्रहथी  
केद्याक दिवस रोकाइने पडी रतिसुंदरीए दीक्षा ग्रहण करी.

बीजो श्रेष्ठीनी पुनी जे क्रदिसुंदरी नामे हती, तें तामलिसी नगरीमां  
श्रीविष्णुक नामना धनाव्यने परणी हती. ते वणिक तेने साये लोडने वेवार माटे  
समुद्रस्ते चाल्यो. मार्गमां वहाण जांगवायी ते दंपत्ती एक पाटीयानुं अवद्यंतन  
करीने तरतां तरतां कोइ एक छिपे नीकल्या. त्यां तेपणे एक धजा उंची करी राखी.  
ते जोइने कोइ बीजा वणिके पोतानुं वहाण ते छिपे लड जड़ने ते बन्नेने तेमां लड  
दीधो. ते बीजो वणिक क्रक्षिसुंदरीने जोइने तेनापर मोह पाम्यो, तेथी क्रक्षि-  
सुंदरीना पतिने तेणे गुप रीते समुद्रमां नांखी दीधो. पडी तेणे क्रक्षिसुंदरीनी  
प्रार्थना करी. त्यारे तेणे तेने समजाववा माटे घणो उपदेश कर्यो, तोपण ते व-  
णिकनो मोह ओडो थयो नहीं. ते बोझो के “तारे माटे तो तारा पतिने में समु-

द्रमां नाखी दीधो डे." ए बात जाणीने तेणे काळ निर्गमन करवा माटे कां-  
इक मिष वताव्युं. आगळ चाझतां ते वहाण पण जांयुं. कृच्छिसुंदरी दैवयोगे मले-  
बा एक पाटीयायी तरीने सोपारक नामना नगरमां आवी. तेज नगरमां तेनो पक्षि-  
पण पाटीयायी तरीने प्रयमयी आवेज्जो हतो. तेनी साथे तेनो मेळाप थयो.  
पेज्जो बीजो वणिक पण पाटीयुं मळवायी तरीने तेज नगरमां आव्यो. तेने पोताना  
पापने बीधे कुष्ठनो व्याधि थयो. एकदा ते पेज्जा दंपतीनी नजेरे पड्यो. एटझे तेने  
व्याधियी पीकाएज्जो जोड्ने तेनो पूर्व उपकार स्मरण करी ते दंपतीए आँपख वि-  
गेरेवी तेने नीरोगी कर्यो. ते वणिके ते दंपती पासे पोताना पापनी कृपा मागी;  
त्यारे ते दंपतीए तेने उपदेश करीने धर्म पमाळ्यो. पडी ते वक्ते वणिके व्यापार  
करी धन उपार्जन करीने पोतपोताना नगरमां गया. पडी केढज्जोक काळ सुखमांनि-  
र्गमन करीने कृच्छिसुंदरीए दीक्षा लइ आत्मसाधन कर्युं.

आ वे सखीओनी कथा कही. हवे बीजी वे सखीनी कथा आगळ क-  
हेवामां आवशे.

" प्रशांत चित्तवदे इन्द्रियोना जय पूर्वक करेद्वी क्रियाज सफळ थाय  
वे, तेथी रतिसुंदरीनी जेम कण प्राप्त थया भत्तां पण सुर्जाव त्वीओ पोताना कृ-  
तव्यने तजती नवी." ॥

३४८

स्त्यददिनपरिमितोपदेशमासादहृचौ एकविंशतितमस्तंजस्य

एकादशाधिकविंशततमः प्रवंधः ॥ ३११ ॥

व्याख्यान ३१२ सुं.

—००—

कृपा ने अतृपतुं स्वस्प.

विषयोर्भिविष्योद्गारः, स्यादतृपत्स्य पुरुद्गद्वैः ।  
ज्ञानतृपत्स्य तु ध्यानसुधोद्गारपरंपरा ॥ १ ॥

**ज्ञावर्थ—**“ पुद्गलिक सुखथी अतृप्ति एवा मनुष्यने पुद्गलोए करीने विषयनी ऊमिस्त्रपी विषया उद्दगार प्राप्त थाय छे ( ओकार आवे डे ), अने ज्ञानथी तृप्ति थेवलाने तो ध्यानस्त्रपी अमृतना उद्गारनी परंपरा प्राप्त थाय डे. ”

आत्मस्वरूपनः स्वादथी रहित-जेणे तेनो स्वाद द्वीधो नथी एवा पुरुपने अंगराग, स्त्रीओलुं आक्षिंगन विगेरे पुद्गलोए करीने इन्ज्यविज्ञास रूप विषया उद्गार प्राप्त थाय डे; अने आत्मतत्त्वना अवबोधयी तृप्ति एट्ट्वे पूर्ण थेवेहा पुरुपने तो शुन्नथ्यान रूपी अमृतना उद्गारनी परंपरा प्राप्त थाय डे. आ प्रसंग उपर बुद्धि-मुंदरीनी कथा डे ते आ प्रमाणे—

### बुद्धिसुंदरीनी कथा.

त्रीजी जे बुद्धिसुंदरी नामे प्रधानपुत्री हती ते अत्यंत रूपकती हती.. तेने एकदा राजाए जोइ, तेथी तेनापर मोह पामिने दूती मोकडी तेनी प्रार्थना करी; पण बुद्धिसुंदरी अन्य नरने इच्छती नहोती, एट्ट्वे राजानी माणणी तेणे कबूल करी नहाँ, तेथी क्रेत्र पामेहा राजाए कांडक प्रपञ्च करीने प्रधानने तेना हुंदंब सहितकेद कर्यो. पत्री राजाए प्रधानने कहुं के “ज्यारे तुं मारी आङ्गा कबूल करीश त्यारे ल्ने हुं रोझीजा. ” प्रधाने कहुं के “ हे स्वामी ! आप आङ्गा करो, ते मारे प्रमाण डे. ” ते सांजलीने राजाए सर्वैने डेउनी दीधा ने बुद्धिसुंदरीने अन्तःपुरमां राखी तेनी प्रार्थना करी. बुद्धिसुंदरी वीज्ञकुञ्ज राजाने इच्छती नहोती. तेणे राजाने उपदेश आप्यो के—

संसारे स्वप्नवन्मिथ्या, तृप्तिः स्थादभिमानिकी ।

तथा तु चान्तिशून्यस्य, स्वात्मवीर्यविपाककृत् ॥ १ ॥

**ज्ञावर्थ—**आ संसारमां अज्ञिमानथी उत्तन थेवी तृप्ति स्वप्न जेवी मिथ्या छे, पण भ्रान्तिरहित पुरुपने आत्म वीर्यनो विपाक करनारी जे तृप्ति तेज सत्य डे.

**विस्तरार्थ—**हे राजा ! छव्ययी चार गतिरूप अने ज्ञावथी मिथ्यात्वादिक जाववाला आ संसारमां “ मै ठळ-बळ करीने आ कार्य कर्मु, मारा जेवो जगतमां कोइ नथी ” एवा अज्ञिमानथी उत्तन थेवी तृप्ति स्वप्ननी जेम मिथ्या एट्ट्वे मात्र कव्यनारूपज डे. केमके ते तृप्ति विनधर डे, पर वस्तु छे तथा आत्म-

सत्तानो रोध करनार अठ प्रकारना कर्मना विधमां कारणनूत एवा रागद्वेषने उत्पन्न करनार डे. मोटे ते पृगुवणा जेवी रुसि सुखनो हेतु नयी. परंतु भ्रान्तिरहित एट्ट्वे सम्पर्कङ्गाने करीने सहित पुरुषने स्वज्ञाव ने विजावना अनुजवचाली जे रुसि डे तेज सत्य अने सुखनो हेतु डे. केमके ते रुसि आत्म वीर्यनो विपाक जे पुष्टि तेने करनार डे.

सुखिनो विषयातुप्ता, नेन्द्रोपेन्द्रादयोऽप्यहो ।

जिन्कुरेकः सुखी द्वोके, ज्ञानतृप्तो निरंजनः ॥ २ ॥

शब्दार्थ—“अहो ! आ जगतमां विषयोथी अतृप्त एवा इन्द्र, उपेन्द्र विंगेरे सुखी नयी ; मात्र ज्ञानयी तृप्त थयेज्ञा निरंजन एवा एक जिन्कुरुम् द्वुखी छे.”

विस्तरार्थ—“अहो इति आश्वर्ये ! इन्द्र ते देवोना स्वामी अने उपेन्द्र ते चक्रवर्ती वासुदेव विंगेरे ते कोइ आ जगतमां सुखी नयी ; केमके ते ओ भगवाहर इन्द्रियोना विषयोने सेवता उतां निरंतर अतृप्त रहे डे. अनेक वनिताओना विद्वासथी, पद्मस ज्ञाननामा ग्रासयी, सुगन्धी कुसुमना वासयी अने रहेवाना सुंदर अंगिसयी, तेमन मृड शब्दना अवश्य अने सुंदर स्वरूपोना निरिक्षणयी असंख्य काळ सुधी इन्द्रियोना विषयोनो अनुज्ञ करतां उतां पण ते ओ तृप्त थता नयी ; परंतु ते तृप्त थायज केम ? कारणके ते सर्व विषयो तृप्तिना हेतुज नयी. मात्र तेमां सुखादिकनो असदारोपज करेज्ञो डे. आ चौद रज्जु प्रमाण द्वोकमां मात्र एक जिन्कुरुम के जे आहारादिकमां द्वुव्य नयी, संयमयात्रा माटेज तीक्ष्ण शीश्वरु पालन करे डे, अने सर्व पथिहनो त्याग करे डे, तेज सुखी डे. केमके ते ओ ज्ञान जे आत्म स्वरूपनो अवयोध तेना आस्वादनवरु तृप्त थयेज्ञ डे. वली ते सागादिक अंगननी इयामतारहित छे, अने आत्मवर्मनाम जोक्ता डे.

आ प्रमाणे अनेक प्रकारे उपेशा आप्यो, तोपण राजा वोध पोम्यो नहीं, त्यारे ते बुच्चसुंदरीए पोताना जेवीज एक प्रोज्जी पुतकी करावीने तेमां मदिरा जरी, परी घण्ड दिवसे ज्यारे राजा आसक्तिनां वचनोयी तेने वोज्ञावाचा खायो, त्यारे बुच्चसुंदरीए पाभळ्यी गुप रीते ते पुतकीनुं मुख उवँडयु, तरतम तेमांयी अत्यंत ऊर्गन्ध नीकल्यो, ते जोइ राजा वोध्यो के “ शुं आ ज्ञारी आदे ”

व्याख्यान ३१३ मुं. लेख्य अने अङ्गेष्य विषे. ( १६१ )

कुर्गम्यवाकुं भे ? ” तोपण राजानो पोह तेनापरथी ओग्रे थयो नहीं. त्यारे बुद्धि-  
एंद्रीए महेवनी उच्ची वारीएवी पोतानो देह एकतो मूर्क्यो, तेवी ते मूर्डा पामी.  
तें जोइने राजा अति खेद पामी तेनी आसनावासनां करवा छाग्यो, अनुक्रमे बु-  
द्धिसुंदरी सावध थइ, एटेज्जे राजाए परखीप्रमननो नियम कर्यो, केटलेक काले बु-  
च्छिसुंदरी दीक्षा खइ आत्मज्ञानवडे थती सत्य रुसिने प्राप्त करी मोक्षपद पामी.

“ संपूर्ण रुसियीज शीज्ज विगेरे सर्व सद्गुणो शुन आत्मामां शोज्जाने  
प्राप्त थाय भे, अने तेवी बुच्छिसुंदरीनी जेम तेनी प्रशंसा आग्या जगतमां थाय  
भे, अने भेवड मोक्षपदे पामे भे. ”

इत्यद्रदिनपरिमितेष्वामाददृच्छा एकविंशतितमस्तंजस्य  
ज्ञादशाधिकविशततमः प्रवृत्त्यः ॥ ३१४ ॥

## व्याख्यान ३१३ मुं.

लेख्य अने अङ्गेष्य विषे.

संसारे निवसन् स्वार्थसज्जः कज्जबवेशमनि ।

विष्यते निखिलो द्वोको, ज्ञानसिद्धो न विष्यते ॥१॥

नार्थ—“ स्वार्थमां आसक्त थयेद्वो समग्र द्वोक काजबना गृह समान  
आ संसारमां वसतो सनो ( कर्मवर्मे ) लेपाय भे, पण ज्ञानथी सिद्ध थयेद्वो म-  
मुप्य लेपातो नर्थी. ”

रागादिक पापस्थानक स्वप काजबना गृहमां अने ते रागादिकना निमि-  
त्ततृत धन स्वमनादिकने ग्रहण करता स्वप संसारमां वसवाथी अहंकारादिक  
स्वार्थमां सज्ज ( तत्पर ) थयेद्वो माणस लेपाय भे, पण हेय अने उपदेशनी प-  
रीक्षाए करीने वस्तुस्थरूपने जाणनारो ज्ञानी लेपातो नर्थी. आ संवेधमां गुण-  
सुंदरीनी कथा भे ते आ प्रमाणे—

## गुणसुंदरीनी कथा.

चौथी पुरोहितनी पुत्री जे गुणसुंदरी हती, तेने श्रावस्ती नगरीना राजा-जा पुरोहितनो पुत्र पराण्यो हतो, ते गुणसुंदरी उपर साकेतपुरनो रहेवासी कोइ ब्राह्मण मोह पाम्यो हतो, तेथी ते ब्राह्मणे जिद्वानी पद्मीमां जड्ने पद्मीपतिने क-हुं के “तमे श्रावस्ती नगरीमां दृढ़ करो, हुं तमने मदद करीश, तेमां जेझुं धन आवे, ते सर्व तपारे राख्युं अने एक गुणसुंदरी मने आपवी.” एम कहीने-ते ब्राह्मण-पद्मीपतिने तेना अनुचरो सहित श्रावस्ती दृढ़ गयो, त्यां दृढ़ करी, तेमांथी ते ब्राह्मण-गुणसुंदरीने दृढ़ने कोइक नगरमां गयो, त्यां तेणे गुणसुंदरीने पोतानी स्त्री घरा कर्युं, त्यारे ते बोधी के “हात्व मार नियम हे.” एम कहीने केझाक दिवसो निर्गमन कर्या, पडी आौपथना भ्रेयांग थी ते तदन अशुचि शरीर राखवा लागी, तेरुं तेरुं डुर्गयुक्त शरीर जोइने ब्राह्मणने वैराग्य उत्पन्न थयो, ते जाणीने गुणसुंदरीए तेने कर्युं के “मने मारा पिताने धेर दृढ़ जा.” त्यारे ते ब्राह्मणे तेने तेना पिताने धेर पहोचानी, एकदा ते ब्राह्मणने सर्व मस्यो, ते बखने गुणसुंदरीए तेने सज्ज कर्यो, पडी तेने गुरु पासे दृढ़ जड्ने धर्मदेशना संजलावी, गुरु बोध्या के “निर्वेष गुणयी युक्त एवो जीव अनेक गुणोने पामे डे, चैतन्यतुं समय परजावना संयोगना अभावे करीने स्वनावमां अवस्थित रहेवापाणुं ते निर्वेष गुण कहेवाय डे, कर्युं डे के—

ब्रिष्ट्यते पुद्गज्जस्कन्धो, न ब्रिष्ये पुद्गद्वैरहम् ।

चित्रैव्योमांजनैनैव, ध्यायन्निति न ब्रिष्यते ॥ १ ॥

अर्य—“पुद्गज्जोयी पुद्गज्ज स्कन्धो द्वेषाय डे, हुं द्वेषातो नवी—जेप चित्र भक्तरना अंजनोवरे पण आकाश द्वेषातुं नवी तेम, आ प्रमाणे ध्यातो सतो प्राणी ( कर्मयी ) द्वेषातो नवी.”

जावार्थ—परस्पर एकता मञ्चवायी आश्वेष अने संक्षमादिवर्ने पुद्गज्ज ना स्कन्धो द्वेषाय डे एटके अन्य पुद्गज्जोयी उपचयने पामे डे, पांतु हुं निर्मल चित्र स्वरूप आत्मा पुद्गज्जना आश्वेषवाळो नवी, वास्तविक रीते जीवने अने पुद्गज्जने नादात्म्य संनेष डेज नहीं, मात्र संयोग संवेष डे, ते पण उपाधिजन्म डे,

जेम आकाश विचित्र अंजनयी लेप्पा उत्तां पण लेपातुं नयी; तेम अमूर्त आत्म-सज्जावाळो हुं एक क्रेत्रमां रहेला पुद्गळोयी पण लेपातो नयी. आ प्रमाणे ध्यान करतो जीग कदापि लेपातो नयी. ”

जे आत्मस्वज्ञावने जाणनोर आत्मा आत्म वीर्यनी शक्तिने आत्मामां वा परे डे, ते नवां कर्पोरी लेपातो नयी. केमके ज्यांसुधी आत्मशक्ति परानुया-पिनी होय छे त्यांसुधी आश्रव थाय डे, अने ज्यारे आत्मशक्ति स्वरूपानुया-पिनी थाय डे त्यारे संवर थाय डे. कर्हुं डे के—

तपःश्रुतादिना मत्तः, क्रियावानपि लिप्यते ।

जावनाङ्गानसंपन्नो, निःक्रियोऽपि न लिप्यते ॥ ४ ॥

जावार्थ—“ तप अने श्रुतादिकयी मत्त एवो मनुष्य क्रियावान होय तोपण ते लेपाय डे, अने जावना झानयी युक्त क्रिया न को तोपण ते लेपातो नयी. ”

जिनकद्यी सावु विमेरेना जेवी क्रियानो अच्यासी उत्तां पण तप अने श्रुतादिरुनो अभिभानी होय डे तो ते नवां कर्म ग्रहण करवावने लेपाय डे. केमके आहारादिकनी लाभचयी धर्मना अच्यासमां जे प्रवृत्ति करवी ते धर्म नयी, तेवां शुन जावनानी अपेक्षा छे. तेथीज तेवा शुन जावनाङ्गानयी संपन्न मनुष्य क्रिया न को तोपण कर्पयी लेपातो नयी. कर्हुं डे के—

न कम्मुणा कम्म खवंति वाला, अकम्मुणा कम्म खवंति वीरा ।

मेहाविणो लोच्चमयावतीता, संतोसिणो नो पकरंति पावं ॥ १ ॥

जावार्थ—“ अङ्गानी माणसो कर्मे करीने ( शुन क्रिया करवावने करीने पण ) कर्मने खपावता नयी. वीर पुरुषो वर्म ( शुन क्रिया ) नहीं कर्या उत्तां पण कर्मने खपाये डे. पुराष्याला माणसो लोच ने मदधी रहित होय डे, तेवा संतोषी पापकर्म करताग नयी. ”

जहा कुम्मो सअंगाद्य, सण देवे समाहरे ।

एवं पावाह मेहावी, अङ्गस्सेण समाहरे ॥ ५ ॥

**ज्ञावार्थ**—“जेम काचबो पोताना अंगेने पोताना देहमांज संकोची ल्ले डे, तेम बुच्छिशाळी माणसो शुन अध्यासवमेन पापनो रंहार करे डे.”

आ भमाणे गुरुए धर्मांपदेश आष्टो, ते सांजळीने ते ब्राह्मणे प्रतिवेष पामी परस्तीगमनना निषेधनो नियम ढीधो, गुणसुंदरी पोताना स्तूपने अने सौन्दर्यने कुश करवा पांड चास्त्र ढाइ तप करवा द्वागी, ते अनुक्रमे सर्वगुण स्तूपने पामी.

आ भमाणे पूर्व वर्णन करेक्की रतिसुंदरी विगेरे चारे सखीओ स्तर्गे गद्द त्यांयी चबीने चंगा नगरीपां चार जूदा जूदा श्रीमंत गृहस्थनी पुढीओ थइ, ते चारे विनयंशर नामना श्रेष्ठीपुत्रनी साये परली, एकदा राजाए ते चारेने समान स्वरूपवाळी जोइ, जाणे एकन मातायी उत्पन्न घ्येली होय तेबी समान द्वावण्यवाळी जोइने तेनापर राजा मोहित थयो, तेबी राजाए विनयंशर श्रेष्ठीनी साये कफ्मीत्री की, विनयंशर राजानो मानीतो धवायी राजाना अंतःपुरमां पण स्वेच्छाए गमनगमन करवा द्वाग्यो, एकदा राजाए विनयंशरना हायथी नीचेनी गाया काँगल्लर द्वावाढी.

एसच्चेर विचखणि, अज तु ज्ञावस्त तुह विउअंमि।  
सा रयणी चउजामा, जामसहस्रं च वोद्वीणा ॥ १ ॥

**ज्ञावार्थ**—“हे विचक्षण स्ती! आ आर्थ्य डे के आजे आ भूलने तारा वियोगयी चार प्रहरवाळी रात्रि पण हजार प्रहर जेड्डी लावी थइ.”

आ गाया लखावीने राजाए पोतानी पासे राखी, केड्डाक दिवसो गण परी विनयंशर तो ते चात पण चूङ्गी गयो, पछो राजाए ते गाथा सजारां बतावीने कहुँके “आ गाया विनयंशरे मारा अंतःपुरमां मोकझी डे,” आं भमाणे ते श्रेष्ठीनी चार स्त्रीओने ग्रहण करवा पांड राजाए तेनापर खोडुं कब्जक सुकी तेने काँरागृहपां नांख्यो, अने तेनी चारे स्त्रीओने पकडी द्वावीने अंतःपुरमां राखी, त्या ते चारे स्त्रीओ वे जयमां पालेला झीलवतना मन्नावयी तथा पतिव्रतनो द्वोप न काँवायी अत्यंत कद्दी थइ गद्द, ते जोइने राजाए जय पामी श्रेष्ठीने गोदी दीधो तथा ते स्त्रीओने सुकत करी, ते स्त्रीओनो झीलपन्नाव पृथ्वीपर विस्तार पाम्यो.

“ ते चारे स्त्रीओना अंग उपर कदापि कुशीबनो देश पण स्पर्श करवा पायो नहीं; अने आ व्होकना अनेक प्रकारनां जोगमुखो प्राप्त थया उतां पण तेओ तेमां देशाइ नहीं, अने तेथी शुच्छ कर्म करीने स्वर्गमुखने पायी. ”

इत्यद्विनपरिमितोपेशप्रासादवृत्तौ एकविश्वितमस्तंजस्य  
त्रयोदशाधिकविश्वततमः प्रवंधः ॥ ३१३ ॥

## व्याख्यान ३१४ सुं.

मंत्रिपणानी निंदा विषे.

ध्यायत्यनुचकर्मणि, प्रत्यहं राष्ट्रचिन्तया ।

अनेकपापपाथोधिं, मंत्रित्वं नाभियेत् सुधीः ॥ १ ॥

नावर्थ—“ निरंतर देशना रक्षणी चिंताथी मंत्रीने अगुञ्जकमोरुं ध्यान कर्वुं पडे रे, माटे एवा अनेक प्रकारनां पापना समुद्ध समान प्रधानपदने भावा माणसे आदत्युं ( स्वीकारत्युं ) नहीं. ” आ प्रसंग उपर शकटाद्व मंत्रीनी कथा डे ते नीचे प्रमाणे—

शकटाद्व मंत्रीनी कथा.

पाट्टिपुर नगरमां कोणिकना पुत्र उदायी राजाना दंडमां नंद नामे राजा थयो. तेने शकटाद्व नामे मंत्री होतो. ते मंत्रीने द्वक्षमीवती नामनी पत्नीथी सून्नजद्ध अने श्रीयक नामना वे पुत्रो थया हता. ते नगरमां चारुर्यद्वक्षमी अने सून्नपत्रद्वीना चंमार जेवी के शा नामनी वेश्या रहेती हती. एकदा ते को-शाने जोड्ने सून्नजद्ध तेनार मोहित थड्ते ने घेर गयो अने त्यां रथो. विविध प्रकारना विद्वास करतां ते वडेने अत्यंत निर्दम्प मेम वंथायो. अत्यंत अनुरागो ए-चा ते वडेना शरीर जिन्ह हतां पण तेमनुं मन भिन्न नहोतुं, तेथी नख अने मो-

सनी. जेमे तेऽयो एकवीजाना वियोगने सहन करी शकता नहोता. आवी इद प्रीति वंशायाथी स्वृद्धभज पोताने घेर पण जगे नहीं, रात्रिदिवस कोंशाने प्रेरज पँड्यो रहेतो. आ प्रमाणे तेणे वार वर्ष त्यां निर्गमन कर्या.

अहीं राजानी सभामां हंमेशां वररुचि नामनो कवि एकसो ने आउ नवा श्लोको वनावीने नंद राजानी स्तवना करतो हतो. ते सांजलीने प्रसन्न थयेक्षो राजा शक्यान्न मंत्रीनी सामुं जोदो हतो. पण ते कवि मिथ्याइष्टि होवाथी मंत्री तेना श्लोकोनी प्रशंसा करतो नहोतो, तेथी राजा प्रसन्न थया डतां पण तेने कांइ पण दान आपतो नहोतो. आ प्रमाणे थवाथी 'राजा मंत्रीने आधीन छे.' एम वररुचिना जाणवामां आब्दुं. पडी कविए मंत्रीने प्रसन्न करवानी तजवीज करतां ढोकोना मुखथी जाएयुं के 'मंत्री पोतानी खीने आधीन छे.' तेथी ते कवि पोताना स्वार्थने माटे मंत्रीनी खीनी सेवा करवा गयो. एकदा मंत्रीनी खीए प्रसन्न थइने तेने क्युं के 'तपारे जे काम होय ते मने कहो.' तपारे ते वोद्यो के "हुं रोज राजा पासे नवा श्लोको करीने छाउं छुं, तेनी प्रशंसा जो मंत्री करे तो मने छव्यनो छान थाय. एवढुं मारुं काम करवानुं छे." पडी तेना उपरोक्तथी मंत्रीनी खीए मंत्रीने तेना श्लोकनी प्रशंसा वरवा आग्रह कर्यो. मंत्रीए क्युं के "हुं जिनधर्मी छुं, माटे ते मिथ्यात्मीनी प्रशंसा करवी मारे योग्य नथी. तोपण हैं मिया! तारा आग्रहधी हुं तेनी प्रशंसा करीग." पडी राजसभामां डथरे वररुचि श्लोको वोद्यो, त्यारे मंत्रीए तेनी कवित्वशक्तिनी प्रशंसा करी; तेथी हवित थयेज्ञा राजाए तेने एकसो आउ दीनार इनाम तरीके आपां. पडी तेज प्रमाणे ते कवि हंमेशा एकसो आउ नवा श्लोको वोद्यी तेवढुं इनाम राजा पासेथी लेवां ज्ञायो. आप थवाथी चंकार खाली थतो जोड्ने मंत्रीए राजाने निषेध करीने क्युं के "हंवं तो आ कवि जूना श्लोको वोद्ये छे, माटे तेने कांइ इनाम आपवूं योग्य नथी. जो आपने मारा वाक्यपर विभास न होय तो मारी सात पुत्रीओ आपनी प्राप्ते आ कविना वोद्येज्ञा श्लोको वोद्यी थतावशे." ते सांजलीने आर्थिपामेज्ञा राजाए मंत्रीनी साने पुत्रीओने वोद्यावीने जयनिकामां वेसाही. ते पुत्रीओनां अनुक्रमेयज्ञा, यज्ञदिना, भूता, चूतदिना, सेणा, वेणा अने रेणा एवां नाम हतां, ते सातमां मोटी यज्ञा हती, ते एक वर्षत सांजलेढुं शास्त्र तत्काळ ग्रहण करती हती. एवी रीते वीजी वेवार सांजलवाथी, एम सातमी सातवार सांजलवाथी प्र

हुए करती हती. हवेते वरहूचिने आङ्गा थतां ते १०८ श्लोक बोझो. ते सांतलीने यक्काए तेज प्रमाणे ते श्लोको बोझी देखाड्या. वीजीवार सांजलबायी वीनी पुत्रीए पण तेज प्रमाणे बोझी बताव्या. एवी रीते अनुकमे साने पुत्रीओ बोझी गळ. ते सांनलीने राजाए ‘पारकां काढ्यो पेताना उरावीने बोझे डे ! ’ एम हडी वरहूचिने तिस्सार करीने तेने काढी मूळयो. पडी खेद पामेझो वरहूचि गाने किनारे गयो. त्यां एक यंत्र गोठवी तेसां एकसो ने आउ दीनारनी एक पोटकी गंगानी गंगाना जळमां गुप्त रीते राखी. प्रातःकाळे गंगानी सुति करी ते यंत्रने पगळी दवाव्युं, एट्टेपेज्जी दीनारनी पोटकी उनीने तेना हाथमां पर्हो. एवी रीते ते हंमेशां कत्या द्वाग्यो. ते जोइ लोकोए विस्य पावी राजाने कळु के “आहो ! या पण आ कविने हंमेशां सुति कत्यायी १०८ दीनारनुं दान आपे डे. ” ते राजाए मंत्रीने कही. त्यारे मंत्री बोझो के “ हे स्वामी ! आपणे काढे प्रातःकाळे जोवा जळुं. ” रात्रिने समपे मंत्रीए पेताना एक खानगी माणसने शीखवीने गंगाने किनारे मोकझो. ते दूत घृक्कनी घग्गमां पळीनी जेम संताइने रहो. तेथामां ते वरहूचि डानी रीते आवीने गंगाना जळमां रहेझा यंत्रमुं एकसो ने आउ दीनारनी पोटकी मुकीने वेऱ गयो. पाछळयी पेज्जा माणसे ते पोटकी काढी द्वेषने तेने तेकाणे कउण कांकरा जरी दीधा अने पेज्जी पोटकी मंत्री पासे जळने तेने आपी. प्रातःकाळे वरहूचि ब्राह्मण गंगा किनारे जळने तेनी सुति करवा द्वाग्यो. ते वाहते मंत्री सहित राजा तया सर्व पौरजनो त्यां आव्या. ते कवि वारंवार सुति करीने पेज्जा यंत्रने पगवती दवाववा द्वाग्यो; पण छुर्नार्गीना मनोरथनी जेम तेना हाथमां कांइ आव्युं नहीं. तेवी ते जळमां हाथ नांखीने पोते मुकेझी पोटकी शोभवा द्वाग्यो. ते जोइ मंत्री बोझो के “ आजे गंगानदी तने कांइ आपती नथी ? परंतु पोतेज स्थापन करेलुं झव्य वारंवार चुं काम झोयेडे ? ले आ तारुं झव्य. आजे आ गंगा मारापर प्रसन्न थळ डे, तेवी मारा हाथमां तारुं धन आव्युं डे. ” एम कही पोतानी पासे राखेझी पेज्जी दीनारनी पोटज्जी मंत्रीए बतावी. ते जोइ राजाए पोतेज आपेज्जा झव्यने ओलखी ते ब्राह्मणनी घणी निंदा करी, आने सौ पोतेंताने तेकाणे गया. परंतु मंत्रीनी आ कृतियो खेद पामेझो वरहूचि निरंतर मंत्रीना त्रिज्ज जोवा द्वाग्यो.

एकदा श्रीयक्तनो विवाहप्रसंग आओ. तेने मष्ट मंत्री सर्व सामग्री तैयार

करवा द्वार्यो. ते वत्वते तेने घेर अनेक शत्रु, वत्र, अभ, हायी विग्रेरे जोइने ते वरहचिने डिद्र मन्त्रयुं, एझे तेणे निशालना सर्व गोकुराओने एक श्येक शीखव्ये ते आ प्रमाणे—

यत्कर्ता शकटाद्वोऽयं, तत्र जानाति पार्थिवः ।

हत्वा नन्दं तस्य राज्ये, श्रीयकं स्यापयिष्यति ॥ १ ॥

नावार्य—“शक्यत्वं मंत्रीजे करे भे ते राजा जाणतो नदी. ते मंत्र नंदराजाने मारीने तेना राज्यपर श्रीयहने स्यापन करणे.”

आ श्येक गोकराओ गाममां सर्वेत्र वोज्ञता हता. ते श्येक राजाना सचलवामां पण आव्यो. एझे राजाए विचार्यु के—

वाक्का यद्य नापेते, नायन्ते यद्य योपितः ।

ओत्पातिकी च या नापा, सा नवत्यन्यथा न हि ॥ ॥

नावार्य—“वाळको जे वोज्ञे छे, खीओ जे चोक्ने छे, अनेजे आकाशवाणी थाप उे अयवा अकस्मात् कोइ वोज्ञी जाप उे ते कडि असत्य थतुं नदी.”

एम विचारी खावी करवा माटे राजाए पोताना दूसने मंत्रीने घेर जोवा मोक्ष्यो. दूते जह आवीने सर्व हकीकत—त्यारी संवेदी कही वतवो. तेवी राजा मंत्रीपर अत्यंत गुस्से थयो. पर्ही सजा वत्वते मंत्रीए आवीने प्रणाम कर्यो, ते कसते राजाए कोपयी अबद्धुं मुख कर्हुं. राजानी मनोवृत्तिने जाणनार मंत्रीए तत्सङ्ग घेर आवी श्रीयकने कर्हुं के “राजा कोइ पिशुनना वाक्यथी मारापर अत्यंत कोपायपान थया छे. तेथो अकस्मात् आपणा कुळनो नाश करणे, माटे हे वस! हुं सजार्मा जड्ने ज्यारे राजाने प्रणाम कर्हुं, त्यारे हुं खहगवर्हे मार्हुं मार्हुं कापी नालिजे. पर्ही राजा तेप करवातुं कारण तने पूऱे, त्यारे हुं कढेजे के “सामीनो अनजक्त एवो पिता होय तो ते पण वय करवा योग्य उे.” ते सांचलीने रोता रोता श्रीयक वोद्यो के “हे पिता! हुं एवै घोरकर्प चांडाळ पण कदापि करे?” मंत्रीए कर्हुं के “हुं आवा विचारो करवायी आपणा शक्तुना मनोरथ पूर्ण करीश, माटे यपराजना जेवो प्रचंद राजा ज्यांसुवी आपणा आख्या कुळेवनो नाश न करे”

तेऽवामां मात्र मारा एकनाज नाशथी आसा कुरुवर्तुं तुं स्कण करी द्वे, वढी हुं  
मुखमां ताळपुट विष नांखी। राजाने प्रणाम करीश, एट्वे मृत्यु पामेवा एवा मारा  
जिरने भेदतां तने पितृहल्लातुं पातक द्वागजो नहीं।” आ प्रमाणे मंत्रीना वोथथी  
श्रीयके पितानी आङ्हा कबूझ करी, पड़ी राजाने नमता मंत्रीतुं मस्तक राजानी  
समझ श्रीयके कापी नांख्युं ते जोइ राजा संभ्रमयी बोध्यो के “हे वत्स ! ते आत्म  
मुर्फ्कम केम कर्यु ?” श्रीयक बोध्यो के “स्वामीए एमने द्रोह करनार जाएया तेथी  
मे तेमनुं मस्तक भेद्यु डे, भृत्यजनो स्वामीना अन्निप्राय प्रमाणे वर्तनाराज होयरे。”  
परिज्ञापि पर्वमां आ संवेदमां कहुं डे के—

भृत्यानां युज्यते दोषे, स्वयं ज्ञाते विचारणा ।

स्वामिज्ञाते प्रतीकारो, युज्यते न विचारणा ॥ १ ॥

ज्ञातार्थ—“ भृत्यनो दोष पोते जाएयो होय तो तेमां विचार करवो यो-  
ग्य डे ; पण भृत्यनो दोष स्वामीए जाएयो होय तो तेनो प्रतीकारज योग्य डे, ते-  
मां विचार करवो योग्य नयी। ”

पड़ी राजानी आङ्हाथी श्रीयके पितानुं सर्व मृतकार्य कर्यु, पड़ी नन्द रा-  
जाए श्रीयकने कहुं के “ राज्यना सर्व कार्यजार सहित आ मंत्रीपणानी मुझा  
ग्रहण कर.” श्रीयक बोध्यो के “हे पूज्य ! पिता तुव्य मारो मोटे जाइ स्यूझन्नद नामे  
डे, ते कोशावेशयने घेर पितानी कृपाथी निर्वापणे जोगविज्ञास जोगवे डे, तेने वा-  
र वर्ष व्यतीत थइ गयां डे; मोटे ते मारो मोटे जाइ पिताना स्थानने योग्य डे : ”  
ते सांजळी राजाए स्यूझन्नजने बोझावीने मंत्रीपद ग्रहण करवा कहुं, त्यारे स्यूझन्नज  
बोध्यो के “ हे स्वामी ! हुं विचार करीने ते अंगीकार करीश.” राजाए कहुं के  
“ हमणाज विचार करी द्वे.” ते सांजळीने स्यूझन्नज अशोक वामीमां जइ, वि-  
चार करवा द्वाग्यो के राज्यनो कारजार करनारा मारा पितानो चपल कर्णवाला  
राजाए अकाळ मृत्युधी नाश कर्यो, माटे राज्यना अधिकारीओने मुख व्याथी  
होय ? कहुं डे के—

स्ववत्वा सर्वमपि स्वार्थ, राजार्थ कुर्वतामपि ।

उपद्वन्निति पितृना, उद्घाज्ञामित्र छिकाः ॥ १ ॥

जावार्थ—“ सर्व स्वार्थनो त्याग करीने राजानुंज कार्य करनार भूत्योने पण उंचे वांधेद्वा (शब्द)ने जेम कागडाओ उपद्रव करे तेम पिशुनो (चान्दियाओ) उपद्रव करे डे । ”

यथा स्वदेहज्ञविणव्ययेनापि प्रयत्यते ।

राजार्थं तद्वदात्मार्थं, यत्यते किं न धीमता ॥ २ ॥

जावार्थ—“ जेम लोको राजाने माटे पोताना देह अने धननो व्यप करीने पण यत्न करे डे, तेम बुद्धिमान लोको आत्माने माटे केम यत्न नदी करता ? ”

आ प्रमाणे वैराग्यनी जावना जावतां स्थूलजडे पोताना केशनो लोच करी स्तुकंवद्वनी दशीयोर्तुं रजोहरण (ओशो) वनावी सजापां आवी राजाने करुं के “ मैं तो आ प्रमाणे विचार्यु डे, तमने धर्मद्वाभ हो । ” एम कही ते तत्काळ राजनुभन्मांथी बहार नीकच्छो. ते जोइने “ शुं आ कपट करी वेश्याने घेर पाडो जाय डे ? ” एवा अविश्वासथी राजा गवाक्षमांथी ते वाजु जोइ रहो. एष स्थूलजड तो कोही गयेद्वा शवनी छुर्मन्धथी जेम नाक मरमनीने चाले तेम ते वेश्याना घर तरफ मौं परडीने चाश्या गथा. ते जोइने राजाए विचार्यु के “ अहो ! आतो पृज्य वीतराग जिवा डे. तेने माटे मारा करेद्वा खोश विचारने धिक्कार हो ! ” एम ते आत्मनिदा करवा द्वाग्यो.

स्थूलजडे श्रीसंजूतिविजय आचार्य पासे जइ सामायिकना उचार पूर्वक दीक्षा अंगीकार करी.

पछी राजाए मंत्रीनी जग्याए श्रीयकने स्थापन कर्यो. श्रीयक हंमेशा को-जाने घेर तेने दिवासो आपत्ता जवा द्वाग्यो. तेने जोइने कोशा स्थूलजडना विरहज्ञःखथी रुदन करती हृती. एकदा श्रीयके कोशाने करुं के “ हे आर्ये ! आपणे शुं करीए ? पेद्वा पापी वरसाचए मारा पितानो धात कराव्यो अने तपने जन्मधनो विरह कराव्यो. कोशा धोड्वी के “ तमे तेतुं मैर लेवानो उपाय विचार कहो तीं ” ते वोद्व्यो क “ जो ते वररुचि मद्यपान करे तो वैरनो वाहुं तेने मद्यपान करे तेतुं कर. ” कोशाए तेतुं कर्यो. पछी ते धात कोशाए श्रीयकने कही.

ते सांजलीने श्रीयक हृषि पाम्यो. पड़ी एकदा श्रीयक राजसन्नामां नयो हतो तेवे वस्ते राजा शक्तिव्वा मंत्रीना गुणोत्तुं सरण करीने तेनी प्रशंसा करवा द्वाम्यो. त्यारे श्रीयक वोद्यो के “हे स्वामी ! शुं करीए ! मध्यान करनार वररुचिए आ सर्व पापकूप कर्यु डे.” राजाए पूछद्यु के “शुं ए वररुचि मध्यान करे चे ?” श्रीयक वोद्यो के “हे स्वामी ! ते हुं अपने वतावीश.” पड़ी वीजे दिवसे सर्व सन्न चराइ हती. वररुचि पण आवेद्वा हतो. ते वस्ते श्रीयक मंत्रीए शीखवी राखेद्वा अनुचर पासे राजाने तथा सन्नाना सर्व दोकोने एक एक कमलनुं पुण्य अपावृं. तेपां वररुचिने मीढोलना चूर्णवी मिथ्रित करेद्युं कमल अपावृं. राजा विगेरे सर्व जनो ते कमलने सुंवीने तेना सुगम्भतो प्रशंसा करवा द्वाम्या. तेथी वररुचि पण पोताना कमलने सुंवदा द्वाम्यो, तेवी रात्रिए पीघेक्षी चंडहास मदिरानुं तेणे तरतज वंपन कर्यु. ते जोइ सर्व दोकोए तेनो तिरस्कार कर्यो, एटद्वे ते सन्नामांथी जतो रहो. पड़ी दोकोमां यती पोतानी निन्दाने दूर करवाना हेतुयी तेणे सुरापानना प्राप्यथित माटे विद्वानोने पूछद्युं के “सुरापाननुं शुं प्राप्यथित ?” ब्राह्मणो वोद्यो के “शास्त्रमां—तापितव्रपुषः पानं मदिरापानपाश्वत् । एटद्वे तपावेद्वा सी-साना रसनुं पान करे तो मदिरापाननुं पाप दूर थाय, एम कर्यु डे.” ते सांजलीने वररुचिए सीसाना रसनुं पान कर्यु, तेथी ते तत्काळ मर्तु पाम्यो.

अर्हीं स्थूलजन्द्र मुनि गुरुनी सेवा करतां शुतसमुद्रना पारने पाम्या. जे कारण माटे जोगविद्वानो तेणे त्याग कर्यो हतो ते कार्य तेणे सारी रीते निरंतर साधवा मांडशुं.

“ उंचा प्रकारना मंत्रीपदने हुं शुं करुं ! मे मूर्खाइने लीघे वाह्यावस्थाथीज खीना जोगविद्वासवदे युवावस्था गुमावी छे.” एवी रीते श्रीयकना मोद्वा जाइ स्थूलजन्द्र मुनि जावना जावता हता.

“ हे आत्मा ! खीनी साथे जोगविद्वास करतां सर्व इन्द्रियोना विषयनुं मुख अनेक प्रकारे इच्छानुसार जोगवृं; तो पड़ी पराधीन एवा मंत्रीपदमां शुं विशेष मुख मब्बानुं डे?” एम धारीने तेमणे स्वाधीन एवुं मुनिपद धारण कर्यु.”

इत्यद्रदिनपरिमितोपदेशप्रासाददृष्ट्वा एकविंशतितमस्तंजस्य

चतुर्दशाधिकत्रिशततमः प्रवंधः ॥ ३१४ ॥

निःस्पृहता विषे.

स्वरूपप्राप्तिरोधिक्यं, प्राप्तव्यं नावशिष्यते ।

इत्यात्मराजसंपत्या, निःस्पृहो जायते मुनिः ॥१॥

जार्थ—“ स्वरूपनी प्राप्तिर्थी वीर्जुं कोइ पण विशेष पामवा द्वायक अवशेष रहेतुं नयी, तेथी आत्मारूपी राजानी संपत्ति पामीने मुनिं तदैन स्पृहा रहित थाय डे. ”

स्वरूप तेजानादि रत्नव्रय, अनंतवीर्य, अव्यावाध, अमूर्त, अनंदरूप अने अविनाशी एवं जे सिद्धत्व तेनुं शुच्च पारिणामिक द्वक्षण जाणवुं, तेनी प्राप्तिया पडी वीजी कोइ पामवा योग्य वस्तु वाकी रहेती नयी, तेथी करीने आत्मारूपी राजानी संपत्ति पामवाथी शुद्धिपरिज्ञावमे तजी दीधा डे इत्यजाव आथव जेणे एवा मुनि निःस्पृह थाय डे, अर्थात् सर्व शरीरादिकना पणिहमां मूर्जीरहित थाय डे. आ प्रसंग उपर कालवैशिक राजपिंतो संबंध डे ते आ प्रमाणे—

### कालवैशिक मुनिनी कथा.

मधुरानगरीनो राजा जितशब्दु एकदा काजा नामनी वेश्यापर मोहित थयो, एट्टेते तेने पोताना अंतःपुरमां राखी, तेनी साथे विज्ञास करतां तेने कालवैशिक नाम पुत्र थयो, ते पुत्र एकदा रात्रे सुतो हतो, तेवामां तेण शियाळनो शब्द सांनली पोताना चृत्योने पृछयुं के “ आ कोनो शब्द संज्ञाय डे ? ” चृत्योए कहुं के “ हे कुमार ! शियाळनो शब्द संभक्षाय डे. ” ल्यारे कुमारे कहुं के “ ते शियाळने चरणमांयी वांधीने अर्हां लड आवो. ” भृत्योए बनमां जड़ेने एक शियाळने वांधी द्वावीने कुमारने सोंपयुं, पडी क्रीमामां आसक्त कुमार तेने वारंवार मारवा लाग्यो, तेना मारथी शियाळ ‘ खो खी ’ शब्द वारंवार करतुं; परतुं ते जेम जेम ‘ खी खी ’ शब्द करतुं, तेम तेम कुमार वधारे हसतो. एवी रीते निरंतर मारती ते शियाळ मरण पाम्युं, अने अकाम निर्जरायी मरीने व्यंतरपाणुं पाम्युं.

एकदा शुवावस्या पामेज्जो कुमार बनयां क्रीमा करवा गयो, ल्यां कोइ सा-

धुना मुखयी तेणे नीचे प्रमाणे धर्मदेशना सांनळी—

निष्कासनीया विछुपा, स्पृहा चित्तगृहाद्विः ।

अनात्मरतिचांकालीसंगमंगीकरोति या ॥ १ ॥

ज्ञावार्थ—“ आत्मसमाधि साधवार्पा उद्यत घ्येज्ञा पंक्ति पुरुषे स्पृहा जे पराजा तेने चित्तरूपी घरनी वहार काढी मूकवी. केमके ते स्पृहा अनात्म जे परज्ञाव तेमां रति जे प्रीति तदरूपी चांकालीनो संग करनारी डे. ” माटे स्पृहाने तजी देवी. वली—

जे परज्ञावे रत्ता, भक्ता विसएसु पाववहुवेसु ।

आसापासनिवद्धा, जमंति चउगझमहारन्ते ॥ २ ॥

ज्ञावार्थ—“ जेओ परज्ञावर्मां रक्त डे, जेओ घणां पापवाला इंडियोना विपरोमां मत्त डे; अने जेओ आशाना पाशर्मां वैधायेज्ञा डे तेओ चार गतिरूप महा अरण्यमां भ्रमण करे डे. ”

जेओओ परवस्तुनी आशारूपी पाजा काढी नांख्या डे एवा मुनिजनो स्वरूपचितन अने स्वरूपरमणना अनुभवमां लीन अने पीन (पुष्ट) घइने तच्चानं-दमां रमे डे—क्रीका करे डे, कहुं डे के—

तिणसंथारनिसन्नो, मुनिवरो जट्टरागमयमोहो ।

जं पावश मुक्तिसुहं, कर्तो तं चक्रवटी वि ॥ ३ ॥

भावार्थ—“ रुणना संधारापर बेत्तेला, अने जेना राग, मद अने मोह नाजा पाम्या डे एवा श्रेष्ठ मुनि जे मुक्तिना सुखने पामे डे ते सुखनी प्राप्ति चक्र-वर्तीने पण क्यांची होय ? ”

आयसहावविज्ञासी, आयविसुद्धोवि यो निये धम्मे ।

नरसुरविसयविज्ञासं, तुच्छं निस्सार मन्त्रंति ॥ ४ ॥

ज्ञावार्थ—“ जे आत्मा पोताना स्वरूपमांज विज्ञासी डे, अने जे आत्मा पोताना धर्ममांज विशुद्ध डे ते आत्मा मनुप्य तथा देवताना विषयविज्ञासने तुच्छ अने निःसार माने डे. ”

इत्यादि धर्मवाक्य सांजडीने प्रतियोग पापेद्वा राजकुमारे दीक्षा ग्रहण करी, अन्यदा एकद्विहार प्रतिमाने अंगोकार करी विहार करता ते मुनि मुद्दण-हैद्वा नामना नगरे आव्या, ते यत्वेत तेने अर्द्धनो व्याधि घयो हृतो, ते व्याधियो पीकाता उत्तां ते मुनि कोइ बखत मनमां पण तेना प्रतीकारनुं चितन करता नहता; केमके ते पोताना शरीर उपर पण निःस्पृह हृता, ते नगरनी राजा मुनिनो बनेवी घतो हृतो, तेथा। तेनी राणी केजे मुनिनी बेन हृती तेणे पोताना जाइने अर्द्धनो व्याधियो पीका पामता जाणीने तथा तेने औपथ लेवानो अज्जिग्रह ऐ ते वात पण जाणीने स्नेहना वशयी अर्द्धने नाश करनार औपथयी मिथ करेदुं ज्ञोजन ते मुनिने आप्युं, मुनिए ते आहार वापर्यो, परंतु ते वापरती बखत तेनी अंदर औपथ ढे एम जाणीने पश्चात्ताप करता सता तेणे विचार्यु के “मैं उपयोग राख्यो नहीं, तेवी आ अयोग्य कार्य मारायी घयुं; अने अर्द्धना जंतुनो नाश न करया संवंधी अज्जिग्रहनो मैं जंग कर्यो, परंतु आ सर्वे अनर्थ आहारनी इच्छायी घयो डे, माटे हुं आहारनोज सर्वथा त्याग करूं.” एम विचारीने पुरमाणी वहार नीकडी पासेना पर्वत पर जड तेमणे मोटुं अनशन<sup>१</sup> स्वीकार्यु, ते मुनिने अनशन ग्रहण करेद्वा जाणीने तेना शरीरनुं उपद्वयी रक्षण करवा माटे राजाए पोताना किंकरोने तेमनी पासे राख्या.

हवे पेद्वा शियाळ जे मरीने व्यन्तर घयो हृतो तेणे अवधिकानवर्द्ध पूर्व ज्ञवत्तु वैर स्मरण करीने मुनिने उपद्वय करवा माटे वाळक सहित शियाळणी कुर्बी, परंतु ज्यांसुधी राजाना किंकरो ते मुनि पासे रहेता, त्यांसुधी ते शियाळणी मुनिने उपद्वय करी शकती नहीं, पण ज्यारे ते किंकरो पाऊ नगरमां जता त्यारे ते शियाळणी ‘खी खी’ शब्द करतो मुनिने वारंवार वटकां जरती हृती, मुनि तो ते शियाळणीए उपजावेद्वी पीकाने तथा अर्द्धना व्याधिनी पीकाने ज्ञांत चिते सहन करता सता निःस्पृह जावने मूकता नहीं, परंतु धर्मध्यानमांज स्थिर रहेता हृता, आवी रीते आर्तध्यानने वधारनार रोग संवंधी छुःख प्राप्त यवायी तथा रौष्ठ ध्यानने वधारनार शियाळणीना उपद्वयनुं छुःख प्राप्त यवायी पण ते मुनिए आर्त, तथा रौष्ठ ध्यान कर्यु नहीं, ए प्रमाणे पंदर दिवस सुधी शियाळणीए करेद्वी महाव्यथाने सहन करता महासत्त्ववाला मुनि पंदर दिवसनुं अनशन पाळी सर्वे क-

<sup>१</sup> मरण पर्यन्त आहार न ग्रहण कर्यो ते महा अनशन,

मैंनो क्य करी केवलज्ञान पामीने मोक्षे गया.

इति निःसृह ज्ञावतो रुजं, परिपेहे मुनिकालवैशिकः ।

सकद्वैरपि साधुनिस्तथा, सहनीयोऽयसुदारनिःसृहः॥ १ ॥

ज्ञावार्थ—“ आ प्रमाणे निःसृह ज्ञावने धारण करनार कालवैशिक मु-  
निए जेवी रीते व्याधिने सहन कर्यो, तेवी रीते सर्व साधुओए आ उदार निःसृह  
गुण धारण करवो. ”

इत्यद्विदिनपरिमितोपेशप्रापाददृच्छौ एकविंशतितमस्तंजस्य  
पञ्चदशाधिकविंशतितमः प्रवृंधः ॥ ३१५ ॥

एकवीशमो स्तंज संपूर्णी.

# उपदेश प्रासाद.

स्तं श२ मो.

व्याख्यान ३१६ सुं.

---

सम्यक्त्व ने मुनिपणानी एकता विषे।

मन्यते यो जगत्तत्त्वं, स मुनिः परिकीर्तिः ।

सम्यक्त्वमेव तन्मौने, मौनं सम्यक्त्वमेव च ॥ १ ॥

जावार्थ—“जे जगतना तत्त्वने माने डे (जाणे छे) तेने आचार्याए मुनि कहेक्का छे, ते मुनिपणाने विषेज सम्यक्त्व रहेलुँ छे, अने जे मुनिपणुँ छे ते सम्यक्त्वज डे。”

विस्तरार्थ—शम, संवेग, निर्वेद, अनुकंपा ने आस्तित्वयता ए पांच लक्षणे लक्षित एवा अने जीव अजीवात्मक जगतने जाणनारा जे होय ते मुनि कहीए. जे जेतुं जाएलुँ ते तेन प्रपाणे कर्यु, एम होवाथी तेमनुं सम्यक्त्व तेज मुनित्व डे, अने मौनपणुँ—निग्रंथत्व तेज सम्यक्त्व डे. अहीं शुद्ध अच्छाए करीने निश्चय करेक्का आत्म स्वनावर्मां जे रहेलुँ ते चरण कहेवाय डे. सम्यग् दर्शनबने निर्धारित करेलुँ अने सम्यक्कडानबने विजक्क करेलुँ जे आत्मस्वरूप तेनुं उपादेयपणुँ एट्टेते तेनुं तेवीज रीते अनुजवर्तु, तेमां रपण करवूं ते चारित्र अथवा मुनिपणुँ कहेवाय डे; पांड एवंशूत नये सम्यक्कहपृष्ठे सम्यक् अच्छा पूर्वक तेनुं तद्वत् आचरण करवूं. चोया गुणवाणे हता त्यारे साथ्यपणे जे धार्यु हतुं ते तेन प्रपाणे प्रटृति करीने सिद्धावस्थामा मुनिपणावने निप्पादन कर्यु, तेथी शुद्ध सिद्धत्वधर्मनो निरधार तेज सम्यक्त्व समजवूं अने सम्यक्त्व तेज मुनिपणुँ समजवूं. आ संवंधमां कुरुदत्तनो संवंध डे ते नीचे प्रमाणे—

कुरुदत्तनी कथा.

हस्तिनापुरमां कुरुदत्त नामे एक श्रेष्ठीनो पुंच महा सुखी हतो, ते एकदा

धर्मदेशनाने समये श्री गुरुमहाराज पासे गयो. त्यां तेणे स्पष्टाद रूप आप्त वाक्य हृदयमां धारण कर्यु. गुरुमहाराजे कर्णु के “ आत्मज्ञाननी प्राप्तिमाटे अनेक अन्य दर्शनीओ परस्पर बादविवाद करे डे. रेचक, कुंचक अने पूरक वायुनु अव्यव्यव्यन करीने प्राणायामां प्रवृत्त थाय डे, अने मौन धारण करीने पर्वत तथा वन्नी गुफाओमां परिग्रामण करे डे; तोपण तेओ श्री अर्हते कहेद्वा आगमनु अवण कर्या विना स्पष्टाद रूपी आप्त वाक्यथीज यह शके तेवी स्वज्ञाव तथा परज्ञावनी परीक्षा करी शकता नयी, अने स्व स्वज्ञावना अवबोध विना तेओनी कार्यसिद्धि पण घती नयी. कर्णु डे के—

आत्माज्ञानज्ञवं द्वुःखमात्मज्ञानेन हन्यते ।

अभ्यस्यस्तत्तथा तेन येनात्मा ज्ञानमयो ज्ञवेत् ॥ ३ ॥

जावार्थ—“ आत्माना आज्ञानयी उत्पन्न थयेद्वुं द्वुःख आत्मज्ञानवदेज नाश पामे डे; माटे तेवी रीते अन्यास करवो जोइए के जेथी आत्मा ज्ञानमय थाय. ”

अर्हीं उपादान स्वरूपमां कर्ता विगेरे ड कारक रूपी चक्रमय आत्माज छे, आत्मा पोतेज कर्ता डे. कार्यरूप, करणरूप, संप्रदान, अपादान अने अधिकरण पण आत्मा पोतेज छे: महाभाष्यमां पण कर्णु छे के “ आत्मा एट्टेज जीवं कर्ता रूप डे. ते पोताना आत्माने एट्टेज अनन्त शुद्ध धर्म ( प्रकट करवा ) रूप कार्यने, आत्माए करीने एट्टेज आत्मशक्ति रूप करणवदे करीने, आत्माने माटे एट्टेज आत्मस्वरूप प्रगट करवा माटे, आत्मायी एट्टेज आत्मज्ञावयी—परज्ञावयी, पृथक् एवा अपादान रूप आत्मायी, आत्मा रूप आधारने विषे एट्टेज अनन्त धर्मपर्यायोना पात्रज्ञत आत्माने विषे प्रकट करे डे. ” तेथी करीनेज मुनि आत्मस्वरूपमां मग्न रहे डे. जेप सोजाथी थयेद्वी शरीरनी पुष्टा असत्य डे ( इष्ट नयी ), अने जेम वस्थस्थानपर लाइ जवाता वध्य माणसने पहेरवेद्वा कणेरनी मोळा विगेरे अद्वंकार असत्य डे—जोना आपनारा नयी, तेवी रीते संसारना स्वरूपने—जवाना उन्मादने जाणनार मुनि समस्त परज्ञावनो त्याग करीने अनन्तगुण रूप आत्मस्वरूपमांज त्रुम रहे डे. संसारसुं स्वरूप असार डे, निफ्फल डे, अज्ञोग्य डे

(जीगवद्वाने अयोग्य ऐ), तुच्छ ऐ इत्यादि जाणीने मुनि आत्मस्वरूपमांज मग्न रहे ऐ।”

आ प्रमाणे गुरुना मुख्यी अध्यात्म स्वरूप सांचलीने प्रतिवोध पामेज्ञा कुरुदत्ते दीक्षा ग्रहण करी, पर्वी शुतनो अन्यास कर्यो, अने एकविहार प्रतिपा अंगीकार करी, अर्थात् एकज्ञा विचरणा लाग्या, ते विहार करतां करतां एकदा साकेत नगरनी पासे चोथी पोरसीए मंदराचलना जेवी धीरता धारण करीने कायोत्सर्गे रहा; ते समये केटज्ञाएक चोरो कोइ गाममां गायोत्तुं धण हरीने ते मुनिनी पासे घड्ने चाव्या गया, केटव्हीक वारे तेमनी पाडळ गायोनी शोध करनारा नीकल्या हता, तेओ पण ते मुनिनी नजीक आव्या, त्यां वे मार्ग जोइने तेओए मुनिने पूछयुं के “हे साहु ! गायोत्तुं धरण करनार ते चोरो कये रस्ते गया ?” ते सांज-व्या डतां पण मुनिए तेमने कांइ जवाब आप्यो नहीं, कहुं ऐ के “एकेन्द्रिय जीवोने पण वाणीना अनुचार रूप मौन तो सुख्खन ऐ, सुप्राप्य ऐ, पण ते मौन मोक्षसाधक नवी; परंतु रम्यारम्य पुद्गव्होने विषे प्रवृत्ति नहीं करवा रूप जे मौन तेज उत्तम ऐ, प्रशस्य ऐ.” तेवा उत्तम मौनने धारण करनार अने आत्म स्वरूपमांज क्षीन थयेज्ञा ते कुरुदत्त मुनि सत्य डतां पण सावद्य वाक्य शी रीते बोझे ? कहुं ऐ के “न सत्यमपि जापेत परपीडाकरं वचः” सत्य डतां पण परने पीका करनारं वचन बोझ्युं नहीं, मुनिए कांइ पण जवाब आप्यो नहीं, तेथी कोभद्धी विहळ थयेज्ञा ते छुष्ट ल्लोकोए जळधी आर्ज थयेज्ञी मार्टी क्षेष्टने ते मुनिना मस्तक लपर पाळ वार्षी; अने तेमां चिताना वळता अंगारा नाखीने त्यांधी जता राशा, ते अंगाराधी मुनिनुं मस्तक वळवा ल्लाग्युं, तोपण मुनि तो एवोज विचार करवा ल्लाग्या के “हे जीव ! तारा कङ्गेवरने उत्पन्न थता आ छुःखने हुं सहन कर, केमके स्ववशापणे छुःख सहन कर्युं तेज छुर्खन ऐ; वाकी परवशपणे तो तें घण्युं छुःख सहन कर्युं ऐ ने करीजा, पण तेमां कांइ गुण ( ल्लाज ) थशे नहीं; ल्लाज तो स्ववेश सहन करवाईज थशे.” ए प्रमाणे विचार करतां मुनिए मस्तक अथवा मन जरा पण कंपाव्युं नहीं, अने ते उपर्सग्ने सम्प्रक्रमकरे सहन करी परद्वोक्तुं साधन कर्युं.

“जेओ कुरुदत्त मुनिनी जेम मौन व्रेतमांज मुनिपण्टुं रहेहुं ऐ एवी

जावना जावता सता निर्दीनपणे सम्यग् ज्ञानादिक त्रण रत्नरुं परिपाक्षन करे ते-  
ओ स्याद्वाद धर्मना आराधनयी थता सुखने प्राप्त करे डे।”

इत्यद्विनपरिमितोपेशप्राप्ताददृच्छौ ज्ञाविशतितमस्तंजस्य  
पोक्षाधिकत्रिशततमः प्रवंधः ॥ ३१६ ॥

## व्याख्यान ३१७ मुं.

विद्या अविद्या विषे.

यः पश्येन्नित्यमात्मानं, सा विद्या परमा मता ।

अनात्मसु ममत्वं यदविद्या सा निगद्यते ॥ १ ॥

ज्ञावार्थ—“जे निरंतर आत्मानेज जुए डे ते श्रेष्ठ विद्या मानेवी डे, अने  
आत्मार्थी व्यतिरिक्त पदार्थने विषे जे ममता ते अविद्या कहेवी डे।”

आत्मार्थी व्यतिरिक्त पुदगङ्गोने विषे ममता एट्टें। आ शरीर मारूं डे,  
हुं शरीररूपज बुं’ एवी रीते जे मानवुं ते अविद्या एट्टें भ्रांतिज छे, आ  
अर्थने यथार्थ अवधारण करवाने माटे समुद्घपालनो संवंध जाएवा योग्य डे ते  
आ प्रपाणे—

समुद्घपालनी कथा.

चंपानगरीमां समुद्घदत्त नामे एक श्रेष्ठी रहेतो हतो. ते श्री वीरस्वामीनी  
देशना सांजलीने प्रतिवेष पाम्यो हतो; तेथी ते श्रावकर्यम पाळतो हतो, अने  
निर्यथप्रवचनप्रवीण हतो, निर्यथप्रवचनपां कहुं डे के—

तरंगतरबां लद्मीमायुर्वायुवदस्थिरम् ।

अद्वधीरुध्येऽपि विषुः ॥ १ ॥

जावार्थ—“निर्मल बुद्धिवालो ( पुष्टुच्छि ) माणस तरंगना जेवी चंच-  
क्क ब्रह्मीने, वायुनो जेवा अस्थिर आयुष्यने अने वादलानी जेवा क्षणजंगुर श-  
रीरने चित्तवन करे डे.” अर्थात् ब्रह्मी, आयु अने शरीरने ते ते पदार्थोंनी जेवा  
अस्थिर माने डे, तेपां स्थिरपणानी बुद्धि राखतो नवी. ब्रह्मीने तरंग जेवी चं-  
क्क माने डे, आयुष्यने प्रतिसप्तय विनश्चर अनेक विद्वानोपयुक्त माने डे, अने शरी-  
रने वादलानी जेम नंगुर—नंग थवाना शीलबालुं माने डे. बळी—

शुचीन्यप्यशुचीकर्तुं, समर्थेऽशुचिसंन्नवे ।

देहे जडादिना शौचं, त्रमो मूढस्य दारुणः ॥ ७ ॥

जावार्थ—“कर्पूरादिक पवित्र पदार्थोंने पण अपवित्र करवाने समर्थ  
तथा रक्त अने वीर्य रूप अपवित्र पदार्थों उत्पन्न धर्येझा एवा आ शरीरने विषे  
जडादिकवने जे शौचविधि करवो ते मूर्ख माणसनो मोटो भ्रम डे.” अर्थात्  
इंद्रियोना आयतनजूत शरीरमां जलमृत्तिकाना संयोगवने श्रोत्रियादिकनी जेम  
पवित्र थवानुं मानवुं ते जपकारी डे; कारण के आ शरीर तो कर्पूरादि मुर्गधवाला  
अने शुचि पदार्थोंने पण अशुचि ( अपवित्र ) करवाने समर्थ डे. देहना संगथी  
वावनाचंदनादिकर्तुं विज्ञेपन पण अशुचि धइ जाय डे. तेनी उत्पत्तिना संवेषमां  
पण कहुं डे के—

सुकं पितणो माऊए सोणियं, तफुन्नयं पि संसद्धं ।

तप्पदमाए जीवो, आहारे तत्य उपवन्नो ॥ ३ ॥

जावार्थ—“पितानुं शुक्र ( वीर्य ) अने मानानुं रुधिर ए वेना मिथ्रण-  
मां प्रथम तेनोज आहार देवो सतो जीव उत्पन्न थाय डे.”

एड्वा माटे अस्थिर, अपवित्र, उपाधियुक्त, नवां कर्मवंभनमां कारण-  
शूत अने ज्ञव्यनाव अधिकरणरूप एवा आ शरीरनो शो संस्कार करवो ? माटे  
तेना ( शरीरला ) संस्कारतुं निवारण करीने आत्मस्वरूपमां आत्मानुंज पवित्रप-  
णुं करवुं योग्य डे. कहुं डे के—

यः स्नात्वा समताकुंडे, हित्वा कञ्चमद्वजं मद्भम् ।

पुनर्न याति मालिन्यं, सोऽन्तरात्मा परः शुचिः ॥ १ ॥

**ज्ञात्वार्थ—**“ जे समतारूप कुंभमां स्नान करीने पापथी उत्पन्न थे-  
पेक्षा पछ्नो त्याग करी फरीधी मद्विन थतो नथी ते अन्तरात्मा परम शुचि  
जाएयो, ”

समुद्घपाळ श्री वीरस्यामीना प्रसादधी आवा प्रकारना धर्मनो जाएकार  
अने तेमां प्रवीण हहो, ते एकदा समुद्रस्ते वहाणमां वेसीने वेपार करतो पिहुंस-  
पुर आव्यो, ते पुरमां रहेनारा कोइ वणिके तेने पोतानी पुत्री परणावी, ते ही ग-  
र्जवती थइ, पत्री तेने छाइने समुद्घपाळ पोताना देश तरफ चाल्यो, मार्गमां वहाण-  
मांज ते ह्याए पुत्र प्रसव्यो, तेतुं नाम तेणे समुद्घपाळ पाड्युँ, अनुक्रमे ते श्रेष्ठी केम-  
कुशले पोताने घेर आवी पहोच्यो, ते पुत्र युवावस्था पाम्यो एड्वेल मातापिताए ते-  
ने रूपवती कन्या परणावी, तेनी साथे विषयसुख अनुजवतो ते दिवसो नि-  
र्गमन करवा द्यायो, एकदा ते गामनी जोना जोवा माटे गवाङ्कमां बेतो हहो, तेवा-  
मां तेणे रक्तचंदनतुं विक्षेपन केल्यो; राता कणेरनी माला पहेरावेज्ञो अने वधस्थान  
तरफ छाइ जवातो एक कथ्य पुरुप जोयो, तेने जोइने ते बोध्यो के “ अहो ! अ-  
शुज्ज कर्मनो केतो मात्रे विपाक प्राणी अनुभवे डे ? जुओ ! आ विचारो आवी  
रीते वधस्थान तरफ छाइ जवाय डे. ” इत्यादि विचार करतां तेने प्रतिवेद थयो,  
तेथी तेणे विचार्यु के—

अविद्यातिभिरध्वंसे, दृशा विद्याऽजनस्पृशा ।

पश्यन्ति परमात्मानमात्मन्येव हि योगिनः ॥ १ ॥

**ज्ञात्वार्थ—**“ योगीओ अविद्यारूप अंधकारनो नाश थवार्थी विद्यारूपी  
अंजनथी द्विस येद्वा दृष्टिवर्ने आत्माने विषेज परमात्माने जुए डे. ”

पद्मक्रना वायुने रुधीने समाधि दशामां रहेद्वा योगीओ आत्माने विषेज समस्त  
कर्मजालनी विद्युताथी रहित अने उक्तृष्टपणे भास थयेज्ञ सिद्ध स्वरूपवाला  
परमात्माने तत्त्वशुच्छ रूप अंजनथी व्यास एवी दृष्टिवर्द्धे अथवार्थ उपयोग रूप  
अंधकारनो नाश थवार्थी सम्यक दृष्टिवर्णने दीधे जुए डे.

इत्यादि शुज्ज ध्यानमां आरुह थयेद्वा समुद्घपाळे मातापितानी आङ्गा छाइने  
दीक्षा ग्रहण करी, श्री उत्तराध्ययनमां कथ्यु डे के “ महाक्षेत्र ओपनार एवा सर्व  
संगनो त्याग करीने तथा क्षेत्रदायक अने महानयनुं कारण एवा मोहनो त्याग क-

रीने धर्मनी रुचिवाला पुरुषे पांच महायत अने शीबाहुं परिपाळन करवुं तथा पस्सिहो सहेवा, ” परंतु मात्र व्रतनो स्वीकार करीनेज रहेवुं नहीं, तेरु अप्रमत्त-पणे परिपाळन करवुं, तेमज काळने छचित एवी प्रत्युपेक्षणा ( परिक्षेहणा ) विमेरे क्रियाओ करीने देशमां तथा गाममां, जेवी रीते संयमनी हानि न थायः तेवी रीते विहार करवो, बली कोइ पण इष्ट वस्तु जोझने तेना अजिज्ञापी थवुं नहीं, अने त्वी पशु पंसग विगेरेयी रहित एवा उपाथ्रयनुं सेवन करवुं, तेवी रीते आचरण करवायी ते केवो थाय ? ते विषे कयुं रे के “ सतज्ञानने पामेझो मुनि अनुचर एवा क्षांत्यादि धर्मनो संचय करीने ( आचरीने ) यज्ञस्वी थइ केवलज्ञान पांपी आकाशमां सूर्य प्रकाशो तेम जगतमां प्रकाशो रे, अने डेवट पुरायपापनो सर्वयो क्षय करीने अपुनरागमनवाला मोक्षपदने पामे रे. ”

“ योगीजनो द्वोकोचर एवी ज्ञानदृष्टिए करीने पोताना आत्मामार्थी मिथ्या अविद्यानो नाश करी समुद्घपाळनी जेम शुद्ध आत्मस्वरूपनो निश्चय करे रे, निर्धार करे रे, तेने धारण करे रे. ”

॥३७॥

स्त्यद्विनपरिमितोपदेशप्रासादवृत्तौ व्याविद्यातितप्रस्तंजस्य  
सप्तदशाधिकत्रिशततमः प्रवधः ॥ ३७ ॥

### व्याख्यान ३१८ मुं.

विवेक गुण विषे,

कर्म जीवं च संश्लिष्टं, सर्वदा क्षीरनीरवत् ।

विजिज्ञीकुरुते योऽस्तौ, मुनिहंसो विवेकवान् ॥ १ ॥

ज्ञावार्थ—“ सर्वदा दुध अने जलनी जेम एकरूप थइ गयेद्वा एवा कर्म अने जीवने आ विवेकी मुनिरूपी हंसपृथक् करे रे, ”

कर्म ज्ञानावरणी आदिक अने जीव सचिदानंदसूप ते सर्व काळ छुय ने जळनी जेम एकीनृत थयेदा डे. तेने ब्रह्मणादि जेदे करीने जे पृथक् करे छे ते मुनिहंस विवेकवान कहेवाय डे. विवेचन ते विवेक, हेय (त्याग करवा लायक) अने उपादेय (ग्रहण करवा लायक) नी जे परीक्षा ते विवेक कहेवाय डे. तेमां धन उपार्जन करवामां, राजनीतिमां अने कुलनीति विगेरेमां जे निपुणता ते द्वौकिं विवेक—ज्ञव्यविवेक कहेवाय डे, अने द्वोकोत्तर एवो जावविवेक तो धर्मनीति जाणनारने होयडे. तेमां पण स्वजन, ज्ञव्य अने पोताना देहादिकमां जे राग—तेनी वहेंचण करवी अर्थात् करवा योग्य नथी एम विचारत्वं ते वाशविवेक कहेवाय छे; अने अग्रुद्ध चेतनायी उत्सव थयेत्र ज्ञानावरणादिक ज्ञव्यकर्म तथा विज्ञावादिक जावकर्म—तेनी जे वहेंचण करवी—विज्ञाग करबो ते अन्यतर विवेक कहेवाय डे. कहुं डे के—

देहात्माद्यविवेकोऽयं, सर्वदा सुखनो ज्ञवेत् ।

नवकोट्यापि तज्जेदे, विवेकस्त्वतिष्ठर्वेनः ॥ १ ॥

जावार्थ—“ देह एज आत्मा डे इत्यादि जे अविवेक ते तो सर्वदा सुखन डे; पण ते घनेना जेदमां ( जेद संवंधी ) जे विवेक ते कोटीजवे पण अति छुर्वेन डे. ”

विस्तरार्थ—“ आत्माना त्रण जेद डे. वाशात्मा, अन्तरात्मा अने परपात्मा. जेने देह, मन, वाणी विगेरेमां आत्मत्व युच्छि डे: एट्टें देहज आत्मा डे विगेरे. ए प्रमाणे सर्व पौद्गविक प्रवर्तनमां जेने आत्मत्व युद्धि डे ते वाशात्मा कहेवाय डे. ते मिथ्यादृष्टि डे. कर्म सहित अवस्थामां पण ज्ञानादि उपयोग ब्रह्मणवाला, निर्विकार, अपर, अव्यावाध अने समग्र परज्ञावथी मुक्त एवा आत्माने विपेन जेने आत्मयुद्धि डे ते अन्तरात्मा कहेवाय डे. अविरति सम्यक्दृष्टि ( चोया ) गुणस्थानकथी आरंनीने वारमा क्लीणमोह गुणस्थानक मुधी अंतरात्मा कहेवाय डे, अने जे केवळज्ञान तथा केवळदर्शनना उपयोगवालो डे ते परमात्मा कहेवाय डे. ते तेरमा चाँदमा गुणस्थानके होय डे. आवा जेदना विवेक करीने सर्व साध्य डे.

देह ते शरीर अने आदि शब्दधी मन वाणी ने काया तेने विपे ‘ आज

आत्मा डे ' एम जे मानवुं ते अविवेक डे, ते अविवेक संसारमां सर्वदा मुझन डे; ने शरीर अने आत्मानी निवातानुं जे विवेचन कर्हुं ते विवेक डे; तेवो विवेक कोटीनवे पण अति छुर्खन डे, सम्यगृह्णि जीवनेज तेवुं ज्ञेदङ्गान होय डे. "

**संयमास्त्रं विवेकेन, शाणेनोन्तेजितं मुनेः ।**

**धृतिधारोद्वणं कर्मशत्रुच्छेदक्रमं नवेत् ॥ १ ॥**

जावार्थ—“ विवेकरूपी शराणे करीने तेजस्वी करेलुं अने धृति ( संतोष ) रूप तीक्ष्ण धारवाणुं परज्ञावनिरुचिरूप जे संयमरूपी शत्रुं ते ज्ञानावणादि कर्मरूपी शत्रुनो नाश करवाने समर्थ थाय छे. ”

आ जीव अनादिकालथी मिथ्यात्व, असंयम अने अङ्गानवी अधिष्ठित यथेद्वा होशायी संसारमां परिच्छमण करे डे. तेज जीव ब्रिजोकना वत्सज्ज एवा जिनेखोरे कहेद्वा श्रेष्ठ आगमना तत्त्वरसनुं पान करवावर्ह स्व-परना विवेकने प्राप्त करीने परज्ञाव अने विजावयी निवृत्त थइ परम स्वरूपनो साधक थाय छे. आ संवंधमां उदाहरण छे ते नीचे प्रमाणे—

**अमणज्जन्ती कथा.**

चंपानगरीमां जिवशत्रु राजाने थमणज्जन्त नामे पुत्र हतो. तेणे एक दिवस धर्मयोप नामना गुरुमहाराज पासे धर्मोपदेश सांजल्यो के—

**यथा योधैः कृतं युद्धं, स्वाभिन्येवोपचर्यते ।**

**शुद्धात्मन्यविवेकेन, कर्मस्कन्धोर्जितं तथा ॥ १ ॥**

जावार्थ—“ जेम सुनद्योप करेलुं युद्ध राजने विषे उपचार कराय डे, एट्ट्वे युद्धतुं जयपराजयरूपी फल राजामां आरोपण कराय डे—आ राजा जीत्यो ने आ राजा हार्यो एम कहेवाय डे, तेम अविवेक अनें असंयमे करीने धर्मोपदेश कर्मस्कन्धेना साम्राज्यनो आरोप पण शुद्ध आत्माने विषेन कराय डे. ”

इत्यादि धर्मोपदेश सांजलीने कामज्ञोगवी विरक्त यथेद्वा ते महात्मार होका ग्रहण करी, गुरुनी कृपायी ते थमणज्जन्त मुनि श्रुतसामरसनो पार पायी,

अने गुहनी आङ्गावी एकब्रविहार प्रतिपां अंगीकार करी. अन्यदा ते मुनि नीची जूमिवाळा प्रदेशीमां विहार करतां शरद कृतुने समये कोइ महा अरण्यमां रात्रिने विषे प्रतिपा धारण करीने रखा. त्यां सोयनी जेवा तीक्ष्ण मुखवाळा हजारो मांसो ते मुनिना कोमळ शरीर उपर द्वागीने तेमनुं लोही पीवा द्वाग्या. फँखवामां तत्पर एवा निरंतर बळगी रहेद्वा ते मांसोए करीने सुवर्णना वर्ण जेवा ते मुनि जाणे लोहना वर्ण जेवा होय तेम श्यामवर्ण थइ गया. ते मांसोना फँख-धो मुनिना शरीरमां महा वेदना घती हती तोपण क्षमाधारी ते मुनि तेने सहन करता हता, अने ते मांसोने उमाकृता पण नहोता. उक्षटो ते एवो विचार करता हता के “ आ व्यया मारे शी गणत्रीमां डे ? आथी अनन्तगणी वेदनां नरकमां में अनन्तीवार सहन करी डे. केमं—

**परमाधार्मिकोत्पन्ना, मिथोजाः क्लेत्रजास्तथा ।**

**नारकाणां व्यथा वक्तुं, पार्यते ज्ञानिनापि न ॥ १ ॥**

जावार्थ—“ नारकीओनी परमाधार्मिके उत्पन्न करेही, परस्परनी करेली तथा क्लेत्रयी उत्पन्न थयेद्वा व्यथानुं संपूर्ण वर्णन करवाने ज्ञानीओ पण समर्थ नयी. ” बळी

**अन्यद्वपुरिदं जीवाजीवश्चान्यः शरीरतः ।**

**जानन्नपीति को दक्षः, करोति ममतां तनौ ॥ २ ॥**

जावार्थ—“ आ शरीर जीवथी निन्न डे, अने आ जीव शरीरथी जुद्दो डे. ए प्रमाणे जाणता भतां पण कयो माहो माणस शरीरपर ममता करे ? ”

“ देह ए पुद्गलनो पिंड डे, अने ते अनित्य डे. जीव अमूर्त अने अ-चल ( नित्य ) डे. ते जीव अनन्त ज्ञान, दर्शन अने चारित्र धर्मवाळो छे, चैतन्य स्वस्फूर्ण डे, स्व ( पोताना ) स्फूर्णनो कर्ता डे, स्व-स्फूर्णनो जोक्ता डे, स्व-स्फूर्णमांज स-पण करनार डे, चबड्यपणाथी श्रान्त थयेद्वा डे अने पुद्गविक परजावना कर्दत्वादि धर्मयी रहित डे. ”

इत्यादि विवेके करीने शुन्न ज्ञाव जोवता सता ते मुनि ते महा व्यथाने सहन करता हता, तें मांसोध, तेमना शरीरतुं संपूर्ण लोहे. शोषाइ गयुं, तेथी

तेज रात्रिए ते मुनि काळ करीने स्वयं गया।

“ आ प्रमाणे विवेक गुणने हृदयमां धारण करवायी श्रमणजद्र मुनि स्वर्गमुखने पाम्या, तेज प्रमाणे वीजा पण निषुण मुनिवरोए आ जिन घचनने अंगीकार करवा। ”

॥३१७॥  
 इत्यद्विनपरिमितोपदेशमासादहृत्त्वा ज्ञाविज्ञतिमस्तंनस्य  
 अष्टादशाधिकविशततमः प्रवंधः ॥ ३१७ ॥

### व्याख्यान ३१९ सुं.

माध्यस्थ्य गुण विषे।

रागकारणसंप्राप्ते, न ज्ञेज्ञागयुग्मनः ।

द्वेषहेतौ न च द्वेषस्तन्माध्यस्थ्यगुणः स्मृतः ॥ १ ॥

जावार्य—“रागतुं कारण प्राप्त यथा छतां पण जेतुं मन रागयुक्त थतुं न-  
शी, तेमज द्वेषतुं कारण प्राप्त यथा छतां पण जेना मनमां द्वेष उत्पन्न थतो नयी  
ते माध्यस्थ्य गुण कहेवाय त्रे। ” आ प्रसंग ऊपर कथा कहे डे—

अर्हनिमित्रनी कथा।

कोइ एक नगरमां अर्हदृत अने अर्हनिमित्र नामना वे ज्ञाइओ रहेता हैं-  
ता, तेमां अर्हनिमित्रनो आत्मा हैमेशां धर्ममां प्रोतिवालो हुतो, ते हैमेशां गुरुमहारा-  
मुण्डुं वर्णन कर्तु, ते आ प्रमाणे—

स्थीयतामनुपाद्विन्नं, मध्यस्थेनान्तरात्मना ।

कुर्तर्कर्कर्द्वैपेस्त्यज्यतां वादचापद्वम् ॥ १ ॥

जावार्थ—“ हे जब्य प्राणीओ ! कुर्तक सूपी कांकरा नांखवा ब्रह्म वा-  
ळ अङ्ग—एकांत ज्ञानमां रक्त तेंतुं जे चापद्य ते मूकी दो; अर्थात् कुत्तके करीने व-  
सुखरूपनी अपेक्षारहित वचनवाली चपलतानो त्याग करो, अने मध्यस्थ एट्टेवे  
रागदेवे रहित एवा अन्तरात्माए ( साधक आत्माए ) करीने आत्मस्थरूपना धा-  
तरूप उपादानंजरहित रहो.”

**स्वस्वकर्मकृतावेशाः , स्वस्वकर्मचुजो नराः ।**

**न रागं नापि च द्वेषं, मध्यस्यस्तेषु गच्छति ॥ २ ॥**

जावार्थ—“ प्राणीओ पोतपोताना कर्मना उदयवी शुन्न के अशुन्न फ-  
ळनी प्राप्ति थये सते पोतपोताना कर्मना फळनेज जोगवे डे. एम धारीने समान  
चितृत्ति धारक माध्यस्थ गुणधारी माणस ते शुन्नशुन्न कर्मना उदयमां राग के  
द्वेषने धारण करता नयी.”

**मनः स्याद्व्यापृतं यावत्, परदोपगुणग्रहे ।**

**कार्यं व्यग्रं वरं तावनमध्यस्येनात्मजावने ॥ ३ ॥**

जावार्थ—“ उथोर मन परना दोष अववा गुणने ग्रहण करवामां प्रदृश  
आय, त्यारे मध्यस्थ पुरुषे ते मनने आत्मभावनामां सारी रीते व्यग्र कस्तुं—रोकी रा-  
खवृं तेन श्रेष्ठ डे.”

आ श्लोके करीने—“ अमूर्त एवा आत्माना अगुरुद्वधुपण्, पद् गुण  
हानि वृच्छिए परिणमन अने उत्ताद, व्यय, ध्रौव्य विगेरे वक्षणवाला स्वरूपनुं  
चितन करवामां व्यग्र थवेज्ञा प्राणीने संसारना गुणदोपतुं चितन करवानो अवका-  
शज मळतो नयी. तेव्री करीने निर्विय मुनिओ तेंतुं चितन करे छे, जावनांच-  
कने जावे डे, झव्यानुयोग ग्रन्थना प्रश्नो करे छे, अने परस्तर स्वज्ञाव विभावना  
परिणमननुं अववज्ञोकन करे डे. इत्यादि सूचित आय डे.” वळी

**विज्ञिन्ना अपि पन्थानः , समुद्रं सरितामिव ।**

**मध्यस्थानां परं ब्रह्म, प्राप्नुवन्त्येकमङ्गयम् ॥ ४ ॥**

जावार्थ—“नदीओने समुद्र पत्ते मळवाना अनेक जुदा जुदा मार्गो होय

हे तेम मध्यस्थ पुरुषो पण अनेक मार्गीवके एक अक्षय परब्रह्मने पामे हे, अर्थात् व्याचरणथी आरंनीने शुक्रायान मुखीना सर्व साधनो—मार्गसाधननी पद्धतिओ जूदी जूदी उतां सम्यक् दृष्टि अपुनक्षेपकथी मांकीने जिनकल्पी विगेरे मध्यस्थ ज्ञावतीं जीवोने ते सर्व एक परब्रह्मने पमामे हे. केमके सर्व साधनो—छपायो एक शुद्ध आत्मस्वरूपमांज अवतोरे हे, अने ते सर्वतुं मोक्ष साधन करतुं ते एकज साध्य हे. ”

स्वागमं रागमात्रेण, द्वेषमात्रात् परागमम् ।

न श्रयामस्त्वजामो वा, किं तु मध्यस्थया हृशा ॥ ५ ॥

**जावार्य—**“ अमे रागमात्रे करीनेज जिनागमनो आथय करता नयी, एद्ये के अमारी कुलपरंपरायी चाहतो अवेद्यो धर्म छा हे, माटे अमारे तेनोज आथय करवो जोइए एम धारीने तेनो आदर करता नयी, तेमज कपिज्ञादिक परंशास्त्र पर्कीय हे एवा द्वेषमात्रयीज अमे तेनो त्याग करीए डीए तेम नयी. पण यथार्थ वसुस्वरूपनी प्रल्पणावर्म ते सम्यक्ज्ञानतुं कारण हे, एम मध्यस्थ दृष्टिवडे परीक्षा करीनेज अमे तेनो आथय करीए डीए.” कांतु हे के—

पक्षपातो न मे वीरे, न द्वेषः कपिज्ञादिपु ।

युक्तिमध्यचनं यस्य, तस्य कार्यः परिग्रहः ॥ १ ॥

**जावार्य—**“मारे वीरस्त्रामीना पर पक्षपात नयी, तेमज कपिज्ञादिक (अन्य पर्मीओ ) उपर द्वेष नयी; पण जेनुं वयन युक्तिवाङ्मुँ होय तेनुंज ग्रहण कर्बुं ” एवो मारो निथय हे.

न श्रद्धयैव त्वयि पक्षपातो, न द्वेषमात्रादरुचिः परेषु ।

यथावदासत्त्वपरीक्षया तु, त्वमेव वीरं प्रज्ञुमाश्रयामः ॥ २ ॥

**जावार्य—**“ हे वीरस्त्रामी ! मात्र श्रद्धाद करीनेज तपारे विवे मारो पक्षपात हे एम नयी, तेमज मात्र द्वेषवीज वीजाओपर आरुचि हे एम पण नयी; परंतु यथास्थित आप्सपणानी परीक्षाए करीनेज तपने ( वीरजगवानने ) अमे आश्रद्ध डीए—तपारो आथय करीए डीए. ”

इत्यादि गुरुना मुखयी धर्मदेशना सांजळीने अर्हन्मित्रे स्वदारा संतोष-  
रूप नियम ग्रहण कर्या, हवे तेना मोटा जाइनी वहु ते दीयरपर आसक्त थझने  
हावजाव कटाक्ष पूर्वक मधुर वाणीथी तेने निरंतर अनुकूल उपसर्ग करवा लागी,  
परंतु अर्हन्मित्र तेनापर किंचित्पण आसक्त थयो नहीं, परंतु आ प्रमाणे स्थीच-  
स्थि जोइने पोताना व्रतना रक्षण माटे तेणे पांच महाव्रत उच्चरी दीक्षा ग्रहण करी,  
तेनापर आसक्त थयेझी ते मोटा जाइनी वहु मरीने कूतरी थइ, एकदा अर्हन्मित्र  
मुनि विहार करतां ते कूतरी हत्ती लां आव्या, तेने जोइने ते कूतरीए तेने पति-  
नी जेम आबिंगन कर्यु, ते जोइ वाज्ञाथी मुनि नासी गया, ते कूतरी पण मरी-  
ने मोटा अरण्यमां वानरी थइ, जवितव्यताना योगथी ते अरण्यमां ते मुनि आ-  
वी चड्या, तेने जोइने ते वानरो प्रयमनीज जेम रागथी तेने आबिंगन करवा लागी,  
ते जोइ बीजा सावु ते मुनिनी वानरीपति कहीने मश्करी करवा लाग्या,  
ते सांजळीने वाज्ञाथी क्रोधयुक्त थझने मुनि ल्यांधी नासी गया, ते वानरी मरीने  
यक्षिणी थइ, ते मुनिने जोइने तेने जातिस्मरण थयुं, तेथी तेणे विचार्यु के  
“आ मुनिनी में घणा जवयी वांडा करी छे, पण ते हजु मने इछत्ता नथी, ते-  
थी आजे तो हुं तेने आबिंगन करं,” एम विचारीने तेणे मुनिने आबिंगन कर्यु,  
ते जोइने मुनि ल्यांधी नाठा, मार्गमां नदीने ओलंगवा माटे ते मुनि जळमां प्रवेश  
करता हत्ता तेवामां ते यक्षिणीए ते मुनिनो एक पग डेवी नांख्यो, ते जोइने शास-  
नदेवीए ते यक्षिणीने तामना करी कहुं के “हे पापिणी ! तुं आ मुनिनो पंरा-  
जव करे छे ते योग्य नथी, तारो पूर्वजव सांजळ,” एम कही तेने तेनो पूर्वजव क-  
यो, ते सांजळीने ते यक्षिणीए मुनिने मिथ्यापुक्त आपीने खमाव्या, पडी शा-  
सनदेवीए पोताना दिव्य प्रजावयी मुनिनो डेदायेझो पग साजो कर्या, मुनि पण  
विशेष पकारे संथमनुं प्रतिपाद्यन करीने स्वर्गे गया, ल्यांधी च्यवी अनुक्रमे  
मोक्षपद पामशे, ( आ कथा प्रथम लखी गया उतां प्रसंगने लीथे अहीं फरी-  
वार दाखी डे).

“पोताना मोटा जाइनी हीए घणी विमुचना पमारी तेमज अन्य जनोए-म-

१ सामान्य व्यंतरीओनुं अवविज्ञन यहु अन्य होय , तेथी तेनावडे ते ओळझी के जाणी शकती न-  
थी, पग जातिस्मरण घाणी जाणी शके छे.

इकरी करी तोपण अर्हनिमत्रे मध्यस्यज्ञाव छोड़यो नहीं, ते प्रमाणे सर्व मुनिए आचरण करुं। ”

३१९  
इत्यद्विन्यपरिमितोपेदशप्राप्तादयुक्तौ व्यविश्वितमस्तंजस्य  
एकोनविश्वत्यधिकत्रिशततमः प्रबंधः ॥ ३१९ ॥

## व्याख्यान ३२० सुं.

—  
—  
—

निर्जयता गुण विषे,

एकं ब्रह्माखमादाय, निष्ठन्मोहचमूँ मुनिः ।

विज्ञेति नेव संग्रामशीर्षस्थ इव नागराट् ॥ १ ॥

जावार्य—“ब्रह्मज्ञान एद्वा आत्मस्वरूपनो अवधीष ते रूप अद्वितीय शक्तिने—ब्रह्माख्वेन ग्रहण करीने संग्रामेन मोखे रहेज्ञा गंजवरनी जेम मोहरूपी संन्यने हणता एवा आत्मस्वरूपमां आसक्त मुनि कोइ बखत पण जय पामता न थी, कष्टमां पद्या सता पण कर्मना पराजयमां प्रवर्त्ते डे—तेनो जय धरावता नथी, केमके ते शरीरादिक समय परज्ञात्य विरक्त होय डे,” ड्या संवंधमां स्कंदक अपिनी कथा डे ते आ प्रमाणे—

स्कन्दक मुनिनी कथा.

आवस्ती नगरीमां जितशतु राजानो पुत्र स्कन्दक नामे हतो, ते राजाने पुरुषन्दरयशा नामे एक कन्या हती, तेने राजाए कुंजकार नगरना राजा दंमकने परणवी हतो, ते दंमक राजाने पालक नामनो छुए अने अज्ञव्य पुरोहित हतो.

अन्यदा वीश्वा नीर्थकर श्री मुव्रत स्वामी आवस्ती नगरीमां समवसर्या, तेमनु आगमन सांजलीने पोताने धन्य मानतो स्कन्दक प्रज्ञुने चांदवा गयो, त्यां प्रज्ञुनी देशना सांजलीने तेणे थावकर्थम अंगीकार कयों, एकदा पालक पुरोहित

कांक्ष राजकार्य माटे थावस्ती नगरीए आव्यो. तेणे राजसन्नामां मुनिओनी निदा करी. ते सांजली स्कन्दके तेनो पराजय करी निस्तर कर्यो. तेथी ते पाद्मक स्कन्दकना उपर छेप धारण करतो पोताने स्थाने गयो. अनुक्रमे जोगविद्वास संवंधी सुख जोगवीने विस्त क्चित्तवाळा स्कन्दके पांचसो माणस सहित श्री जिनेन्द्र पासे दीक्षा ग्रहण करी. अनुक्रमे गीतार्थ थया. त्यारे प्रज्ञुए ते पांचसो साधुने तेना शिष्य तरीके आप्या.

एकदा स्कन्दकाचार्ये श्री प्रज्ञुने पृथ्युं के “हे स्वामी! जो आपनी आङ्गा होय तो हुं मारी बेनना देशमां जाऊं.” प्रज्ञु बोल्या के “त्यां सर्व साधुओने मरण पर्यतनो उपद्वय उत्पन्न घशे.” स्कन्दके पृथ्युं के “हे स्वामी! ते उपसर्गमां अपे सर्व आराधक घट्टशुं के विराधक घट्टशुं?” स्वामीए कहुं के “एक तमारा विना वीजा सर्व साधुओ आराधक थशे.” ते सांजलीने निर्जय एवा स्कन्दके विचार्यु के “जे विहारमां आठव्वा वया साधु आराधक थाय ते खरेखर शुभ्नकारीज विहार छे.” एम विचारीने ५०० साधुओ सहित स्कन्दकाचार्ये त्यांधी विहार कर्यो. अनुक्रमे कुञ्जकार नगरना उपवनमां आव्या. तेमना आववाना खधर सांजलीने कुष्ठ पाद्मके स्कन्दक उपरतुं प्रथमनुं वेर द्वेवा माटे ते उद्यानमां प्रथमधी गुप्त रीते विविध प्रकारनां शस्त्रो दाढी राख्यां. पडी तेणे राजाने कहुं के “हे स्वामी! आपणा गामना उद्यानमां स्कन्दक आव्या रे, ते पोतेज महा वलवान रे, उपरांत ज्ञुजदंसना प्रचंक विक्रमवाळा अने साधुना वेषने धारण करनारा पांचमो झुजटोने साथे द्वाव्या रे, ते सर्वनां शस्त्रो ते उद्याननी पृथ्वीमां तेणे गुप्त राख्यां रे; ज्योर तमे तेने वांदवा जशो त्यारे ते तमने मारीने तमारुं राज्य द्वाइ द्वेवाना रे. आपने मारा वचनपर विश्वास न आवतो होय तो आप जातेज जड्ने उद्यानमां संतानेक्षां शस्त्रो जोइ खाली करो.” ते सांजलीने राजा पाद्मकनी साथे उद्यानमां गया. त्यां पाद्मके तेने गुप्त राखेक्षां शस्त्रो काढीने चताव्यां. ते जोइ राजाए क्रोधथी सर्व साधुओने वेधावीने ते पाद्मकनेज सौप्या, अने तेने कहुं के “हे पाद्मक! तारी मर्जीमां आवे तेवी शिक्षा आ सर्वने कर.” ते सांजलीने हर्ष पामेक्षो पाद्मक सर्व साधुओने मनुप्यने पीडवाना यंत्र ( घाणी ) पासे द्वाइ गयो. पडी तेणे सर्वने कहुं के “तमे सर्व तमारा इष्ट देवतुं स्मरण करो; केमकं आ घाणीमां नांखीने तमने सर्वने हुं हमगां पीझी नांखीज.” ते सांजलीने जीववानी

तथा परवानी इच्छाथी रहित—निर्जय एवा सर्वे साधुओए अंतिम आराधना करी, पड़ी ते छुट्ट पादक आचार्यने धाणी पासे चांधी राखी तेनी नजेरे एक एक साधुने धाणीमां नाखीने पीज्जवा लाग्यो, सूरिए किंचित् पण खेद कर्या विना सम्यने योग्य एवां धाक्योधी ते सर्वनी निर्यामणा करी, ते आ प्रमाणे—

**जिन्नः शरीरतो जीवो, जीवाज्जिन्नश्च विग्रहः ।**

**विद्ज्ञिति वपुन्नशेऽप्यन्तः खिद्येत कः कृती ॥ १ ॥**

ज्ञावार्थ—“ जीव शरीरथी जिन्न दे, अने शरीर जीवथी जिन्न दे, ए प्रमाणे जाणनार कयो पंडित पुरुष शरीरनो नाश थाय तोपण अंतःकरणमां खेद करे ? ”

इत्यादि अनेक युक्तियी सूरिए घोष पपानेदा, शब्दु तथा मित्रने विषे समान दृष्टिवाला अने क्रमाल्पी भनवाळा ते सर्वे साधुओ अनुकमे केवळज्ञान पामी पापीने मोड़े गया, आ प्रमाणे ते पापी पादके चारसो ने अत्राणुं साधुओनो नाश कयों, पड़ी डेवठना एक कुद्वक ( बाल्क ) साधुने पीज्जवा तंयार थ्येद्वा पाल्कने आचार्ये कहुं के “ हे पादक ! आ दया करवा योग्य बाल्कने पीज्जतो जो-याने हुं शक्तिमान नयी, पाट तेनी पहेज्जां मने पीज्ज, अने पड़ी तेन पीज्जने.” ते सांजलीने आचार्यने बधारे छुखी करवानी इच्छाथी तेना देखतां पादके प्रथम ते बाल्क साधुनेन पीज्जवा मांड्यो, ते पण महा धैर्यवान बाल साधु गुरुनी निर्यामणाथी मोड़े गया, पादकना एवा छुफ्क्त्यने जोइने छुखित हृदयवाळा आचार्ये कोष करीने विचार्यु के “ आ पापीए परिवार सहित मारो नाश कयों, डेवठ एक कुद्वक साधुने पण में कदा बतां एक कणवार पण बचाओ नहीं; तो हवे जो पारा छुफ्कर तपनुं कोइ फल होय तो आवेता जन्मपां आ छुट्ट पुरोहित, राजा अने आ आखा देशनो हुं बालनार थाठं.” आ प्रमाणे निदान करीने स्कन्दवाचार्य ते पापीधी पीज्जाइ मृत्यु पामी वहिकुमारमां देव थया.

हवे तेन दिवसे स्कन्दक सूरिनी वेन पुरंदरस्यशाने विचार थयो के “ केम आजे नगरपां साधुओ जणाता नयी ? ” आ प्रमाणे विचार करे डे तेबामां स्कन्दकाचार्यपतुं लोहीबालुं रजाहरण उपार्नीने कोइ गीष पक्षीए ज्ञवितव्यताने योगे ते राणीनी पासेज पढ़तुं मूर्खयुं, ते लझने उखेलतां तेने भाल्म पक्षयुं के “ आ कांवळनो कक्को मेंज मारा जाइने तंयार करीने दीक्षा वस्ते आप्यो हतो.” आ

निशानीधि मुनिओने हणायेद्वा जाणीने खेद पामेद्वी राणीए राजाने कर्तुं के “रे छुष ! आ शुं मोडुं अकार्य कर्तुं ? आ महापापथी तने मोटी व्याधा प्राप्त थे : ” एम कहीने वैराण्यवी पुरुदरयशा दीक्षा लेया उत्सुक यइ. ते जाणीने त-रतज शासनेदेवताए तेने श्री मुनिभुवत स्वामी पासे मुकी. त्यां तेणे दीक्षा लइ परदोकर्तुं कार्य साध्यु.

हवे पेद्वा स्कन्दक देवताए अवधिकानवेन पोतांनो पूर्व वृत्तान्त जाणी प्रभा क्रोधथी आसा देश सहित कुंजकार नगाने वाळी नांख्युं. तेथी ते स्थान मो-डुं अरण्य थयुं. ते देशनो राजा दंडक होवायी त्यां थयेद्वुं अरण्य हजु सुधी प-ए दंडकारण्यने नामे प्रसिद्ध ढे.

“ गुणना समूहने धारण करनारा चारसो ने नवाणु सायुओए जेप नि-र्जयतास्त्व गुणनो त्याग कर्यो नहीं, तेप सायुओए पण ते गुणनो त्याग करवो न-हीं, अने स्कन्दकार्यनी जेप कदी पण क्रोध करवो नहीं. ”

इत्यद्विनपरिमितोपदेशप्राप्तदृत्तो धाविशतितमस्तंजस्य

विशत्यधिकत्रिशततमः प्रवृथः ॥ ३४० ॥

## व्याख्यान ३२१ मुँ.

आत्मप्रशंसा विषे.

गुणैर्यदि न पूर्णोऽसि, कृतमात्मप्रशंसया ।

गुणैरेवासि पूर्णश्चेत्, कृतमात्मप्रशंसया ॥ १ ॥

जावार्य—“ जो केलङ्कानादिक गुणोए करीने पूर्ण न हो तो आत्म-  
श्लाघाथी सर्यु, केमके गुणरहित आत्मानी शी प्रशंसा करवी ? अने जो सम्यक्  
रस्तंत्रादिक गुणोए करीने पूर्ण हो, तोपण आत्मानी प्रशंसा करवायी सर्यु. क-

करे वाणीधी पात्र आत्मानी श्लाघा करवाथी शुं ? शुच्च गुणों पोतानी जातेज  
मगद थाय छे. ”

**आलंबिता हिताय स्युः , परैः स्वगुणरशमयः ।**

**अहो स्वयं यहीतास्तु पातयन्ति जबोदधौ ॥ २ ॥**

**जार्थ—**“ अन्य जनोए पोताना गुणरूप रज्जुनुं आक्षंबन कर्युं होय  
तो ते कथ्याणने माटे थाय बे ; पण ते गुणरूपी रज्जुनुं पोतेज ग्रहण कर्युं होय  
तो ते भवसमुद्रमां नांखे छे, ते मोटुं आर्थ्य बे. ”

पोताना गुणनुं अन्य जनो स्मरण, चिंतन विगेरे करे तो तेमनुं कथ्याण  
थाय बे अने पोताने सुखने माटे थाय बे, पण पोतेज पोताना गुणनी श्लाघा  
करे तो ते उद्धाद जबसागरमां नांखे बे, माटे पोताना गुणनी श्लाघा कदी पण  
कर्वी नहां. आ प्रसंग उपर मरिचिकुमारनी कथा छे ते आ श्वाणे—

### **मरिचिकुमारनी कथा.**

जरत चक्रवर्तीनो पुत्र मरिचिकुमार एक वस्त चक्रीनी साथे आदी धरने  
वेदन करवा गयो. त्वां श्री कृष्णस्वामीना मुखयी स्याद्वाद धर्मनुं श्रवण करी प-  
तिवोय पामीने तेणे दीक्षा ग्रहण करी. स्थविरं मुनिओनी पासे रह्यने अग्नियार-  
अंग जाण्या अने स्वामीनी साथे चिरकाळ विहार कर्यो.

एकदा ग्रीष्म ऋतुना तापयी पीका पामेज्ञा मरिचि मुनि चास्त्रावरण क-  
र्मनो उदय थवाथी आ प्रपाणे विचारवा ल्लाग्या के “ मेष्पर्वत जेऽज्ञा नारवाद्य  
अने वहन न थइ शके तेवा मुनिना गुणोने वहन करवा भवनी आकांक्षावालो  
हुं निर्युणी हवे सपर्य नयी, तो शुं हवे हुं लीभेज्ञा व्रतनो त्याग कर्ह ? ना, त्याग  
करवायी तो लोकमां मारी हांसी थाय. परंतु व्रतनो सर्वथा जंग न थाय. अने मने  
क्षेत्र पण न थाय तेवो एक उपाय मने सुझ्यो बे, ते ए के आ पूज्य मुनिवरो हं-  
मेशां मन वचन अने कार्याना ब्रणे दंक्षयी रहित बे, पण हुं तो ते ब्रणे दंक्षयी  
परानव पामेज्ञो शुं, माटे मारे लिदंक्षतुं चिन्ह हो. आ मुनिओ जितेन्द्रिय हो-  
वायी केजानो लोच करे बे, अने हुं तेथी जोतायेज्ञो होवायी मारे आत्मायी मुंक-  
न हो, तथा मस्तकपर शिखा हो. आ मुनिओ महावतने धारण करनारा बे, अ-

ने हुं तो अलृतने धारण करवा समर्थ दुं. आ मुनिओ सर्वथा पश्चिमी रहित डे, पण मारे तो एक मुज्जिकामात्र परिग्रह हो. आ मुनिओ मोहना ढांकण. रहित डे, अने हुं तो मोहयी आघादित दुं, तेथी मारे माथे उत्र धारण करवापाणु हो. आ महा क्रपिओ पगां उपान पहेर्या विना विचेरे डे, पण मारे तो पगनां रखा माटे उपान हो. आ मुनिओ शीक्षवरेज सुगंधी डे, पण शीक्षयी ब्रां होवायी मारे छुर्गंधीने सुगंध भाटे चंदननां तिक्कादि हो. आ मुनिओ कपायरहित होवायी खेत वस्त्र धारण करे डे, पण हुं क्रोधादिक कपायवाळो होवायी मारे कपाय रंगवाळां वस्त्र हो. आ मुनिओ वहु जीवोनी हिंसावाळा सचित्त जब्ना आरंजन तजे डे, पण मारे तो स्नान तया पान परिमित जळधी हो.” आ प्रमाणे चास्त्रिनो निर्वाह करवा संवंधी कष्ट सहन करवामां कायर घेयेवा मरिचिए पोतानी बुज्जिथी विकड्प करीने पश्चिमाजकनो नवो वेष अंगीकार कर्यो.

तेने तेवो नवीन वेषयारी जोइने सर्व लोक धर्म पूछता हुता. परंतु मरिचि तो श्री जिनेश्वरे प्रस्तुपेज्ञो साधुर्थमंज कहेतो हुतो. सर्वेनी पासे ज्यारे ते एवी शुच्छ धर्मदेशनानुं प्रस्तुपण करतो, त्यारे लोको नेने पूछता के “ त्यारे तमे पोते केम तेवा धर्मनुं आचरण करता नयी ? ” तेना जवावमां ते कहेतो के “ हुं तें मेरु समान जारवाळा चास्त्रिने वहन करवा समर्थ नयी. ” एप कहीने पोतानां सर्व विकटप कही वतावतो हुतो. ए प्रमाणे तेमना संशय दूर करीने प्रतिबोध पमानेद्वा ते जब्य जीवो ज्योरे दीक्षा देवा तैयार घता, त्यारे तेमने मरिचि श्री युगादीजा पासेज मोक्षतो हुतो. आ प्रमाणे आचार पाळतो मरिचि स्वामीनी सायेज विहार करतो हुतो. अनुक्रमे विहार करतां स्वामी फरीयी विनीता नगरीमां समवसर्या. जरत चक्रीए आवीने प्रज्ञुने वंदना करी. पञ्ची जविष्यमां घवाना तीर्थिकर, चक्रवर्ती, वामुदेव विगेरेलुं स्वस्त्रप पूछयुं. एट्ट्वे प्रज्ञुए ते सर्वनुं वर्णन यथास्थित कर्यु. फरीयी चक्रीए पूछयुं के “ हे स्वामी ! आ पर्पदामां एवो कोइ जीव ठे के जे आ जरतकेत्रमां आपनी जेवो तीर्थिकर घवानो होय ? ” स्वामी वोद्या के “ आ तारो पुत्र मरिचि आ जरतकेत्रमां वीर नामे चोवीशमा तीर्थिकर घशे. अने प्रथम वामुदेव घशे, तया महाविदेहकेत्रमां चक्रवर्ती घशे. ” ते सांजलीने जरतचक्री मरिचि पासे जङ तेने प्रदक्षिणा पूर्वक वंदना करीने वोद्या के “ तमारुं आ पश्चिमाज-कपाणु वंदन करवा योग्य नयी; पण तमे जावी तीर्थिकर डो, तेथी हुं तमने वांछुं

“हुं” एम कहीने प्रभुए कहेलुं सर्व वृचांत चकीए मरिचिने कही वताव्युं, ते सांजड़ीने मरिचि पहा हर्षथी पोतानी काखझीनुं ब्रण वार आस्फोटन करीने उचे स्वरे बोल्यो के “हुं पहेलो वासुदेव थइश, मूका नगरीमां हुं चक्रवर्ती थइश, तथा बेहो नीर्धकर पण हुं थइश, तेथी हवे मारे वीजी कांड पण इडा नथी.” बड़ी आंदोऽहं वासुदेवानां, पिता मे चक्रवर्तीनाम् ।  
पितामहस्तीर्थकुतामहो मे कुदमुत्तमम् ॥ ३ ॥

ज्ञापांत—“हुं वासुदेवोमां पहेलो, मारा पिता चक्रवर्तीओमा पहेला, अने मारा पितामह नीर्धकरोमां पहेला, अहो ! मारुं कुछ केवुं लुचम-चे ?” इत्यादि आत्मप्रयोग करवाथी तेणे नीचगोचरकर्म उपर्जन कर्युं।

एकदा ते मरिचिना शरीरमां व्याधि उत्पन्न थयो, तेमी सारवार कोइ साधुए करी नहीं, तेथी ते ग्जानि पापीने विचार करवा द्वाग्यो के “अहो ! आ साधुओ दाकिण्यगुणथी रहित ने, मारी सारवार करवी तो दूर रही, पण मारा सामुं जोता पण नवी, अरथया में आ खेयो विचार कर्यो, कैमके आ मुनिजनो पोताना देहनी पण परिचर्या करता नवी, तो पड़ी मारी ज्ञषु ज्ञारिवालानी सारवार तो शेनीज करे ? माटे हवे तो आ व्याधि शांत थाय एड्झे एक शिष्य करूं。” प्रम विचारतां केवलक दिवसे मरिचि व्याघ्रिरहित थयो।

अन्यथा तेने कपिङ्ग नामनो एक कुदमुत्तम भल्यो, तेनी पासे मरिचिए आहेत धर्मनो उपदेश कर्यो, ते सांजड़ी कपिङ्गे तेने पृष्ठयुं के “हुं, तमारा भर्मां तो धर्म रहेलोज नथी ?” ते सांजड़ीने तेने जिनोक्त धर्ममां आल्सु-जाणी शिष्य करवानी इच्छावाला मरिचिए कर्युं के “जैन मार्गमां पण धर्म-चे, अने मारा मार्गमां पण धर्म चे.” ते सांजड़ीने कपिङ्ग मरिचिनो शिष्य-धयो, आबो मिथ्या धर्मनो उपदेश करवावी मरिचिए एक कोकाकोम सागरोपम प्रमाण संसार उपर्जन कर्यो, पड़ी ते पापनी द्याव्योचना कर्या विना अनशनवर्त्ते मृत्यु पासीने ब्रह्म देवत्वोक्तमां देवता थयो, कपिङ्ग पण पोताना परित्राजक धर्मनो उपदेश दद्द यणा शिष्यो करी मृत्यु पापीने ब्रह्म देवत्वोक्तमां देवता थयो, ते कपिङ्ग देवे अवधिज्ञान वर्ते पोतानो पूर्वजव जाणेने मोहथी पृथ्वीपर आवी पोते प्रकट करेला। सांख्य मताने असुर विगेने योध कर्यो, त्याग्यी आसंजीने सांख्य दर्शनने प्रवृत्ति थद्द,

केमके “घणुं करीने सुखे थइ शके तेवी क्रियामां होकोनी प्रदृच्छि विशेषयाय डे.” तेऽयो कहे डे के “पचीश तत्त्वने जाणनार माणस क्रिया करे अथवान करे तोपण ते निश्च मोक्षपद पामे डे.” आवो तेमनो (ज्ञानवादीनो) मत डे. आ स्थले वी-जुं घणुं कहेवांतुं डे. ते श्री हेमचंद्राचार्ये रचेका त्रिपटि शब्दाकां पुरुष चरित्रिना दशमा पर्यायी जाणी लेवूं. अहीं तो आत्मप्रशंसा न करवी एवंद्वांज आ उपदेशानु तांस्पर्ये डे.

“आत्मप्रशंसा करवायी मरिचिए नीच गोत्रकर्म उपर्जनं कर्यु, अने उत्सूक्ष्मी प्रस्तुपणा करवायी असंख्य भव कर्या. माटे जब्य प्राणीओए ते प्रमाणे करवूं नहीं.”

इत्यद्विनपरिमितोपदेशप्रापादृत्त्वां ज्ञाविशतितमस्तंजस्य  
एकविंशत्यधिकत्रिशततमः प्रवंधः ॥ ३४? ॥

## व्याख्यान ३२२ मुँ.

तत्त्वदृष्टिः विषे.

रूपे रूपवती दृष्टिरूपा रूपं विमुह्यति ।

मज्जत्यात्मनि नीरूपे, तत्त्वदृष्टिस्त्वरूपिणी ॥ १ ॥

ज्ञावार्थ—“पुढगङ्गना स्वरूपने ग्रहण करनारी दृष्टि (चक्रु) खेतादि-करूपने जोडने ते रूपमां (वर्णादिमां) मोह पामे डे; पण रूपरहित एवीङ्गानस्त-प-आत्मचैतन्यशक्तिक्षण तत्त्वदृष्टि तो निरूप (रूपरहित) आत्माने विषेज मम थाय डे. माटे अनादिकाळनी वाय दृष्टिनो त्याग करीने आत्मस्वरूपना उपयोगबोधी आन्तर दृष्टि करवी.”

ग्रामारामादि मोहाय, यद्वद्वृष्टं वाह्यया दशा ।

तत्त्वदृष्ट्या तदेवान्तर्नित्यं वैराग्यसंपदे ॥ २ ॥

ज्ञाचार्थ—“वाय दृष्टिवडे जे गाप, उद्यान विगेरे जोवामां आवे ते मोहाय ने मोटे थाय डे, एट्डे असंपमनी वृच्छि माटे थाय डे, तेज ग्रामादिकने स्वपरना द्वाळी कुत्रिम अने अकुत्रिमना विचारवाळी तत्त्वदृष्टिवडे अन्तःकरणना उपयोगी जोवामां आवे तो ते नितंतर वैराग्यनी संपत्तिने मोटे थाय छे,” आपस उपर एक हृष्टांत छे ते आ प्रमाणे—

### एक आचार्यतुं हृष्टान्त.

ज्ञान अने चारित्रिके प्रधान, श्रुतना रहस्यनो पार पामेद्वा अने जन्म्यन्ते वोने तारवामां समर्थ एवा कोइ एक आचार्य अनेक साधुगण सहित गमे गाम द्वार करीने वाचनाए करी ( उपदेश आपवावदे ) सर्व अपणसंघने बोध कर हता, ते आचार्य पांच समिति अने त्रण गुप्तियी युक्त हता, अने सर्व संयोग अनित्यादिक वार जावना जावता हता, ते विहारना क्रमे करीने एकदो एक मेटा वनमां आव्या, ते वन अनेक लता विगेरेण करीने नीबुर्वण झागतुं हतुं, अने तेमां अनेक फङ्गीओना समूहे निवास करेलो हनो, ते वननी पुण्य, पत्र अने पलनी दृष्टिपी ( शोजा ) जोझने सर्व मुनिओ प्रत्ये आचार्य चोद्या के “हे निग्रंयो ! आ पत्र, पुण्य, गुछ, गुद्ध अने फळोने जुओ, तेमां रहेद्वा जीवो वै न्यस्तक्षणरूप अनन्त शक्तिवाळा भला तेने आवरण करीने रहेद्वा ज्ञानावरण, दर्शनावरण, चारित्रमोहनी, मिथ्यात्ममोहनी अने अंतरायकर्मना उदये करीने दानादिक कांइ पण थइन शके तेवा एकेन्द्रिय जावने पामेद्वा डे, तेओ वायुथी कंपता, बलहीन, छुख्ली, आत्माने कोइ पण भकारना शरण विनाना अने जन्म-मरणना जावर्य युक्त डे, अहो ! तेओ अनुकंपा करवा योग्य छे, मन, वचन अने नेत्रादिती द्वित एवा आ विचारापर कोण दया न करे !” एम कही सर्वना मनमां संभव उत्पन्न करीने आगळ चाव्या, तेवामां एक मोडुं नगर आव्युं, ते नगरमां अनेक भकारना गीत अने वाजिबोना शाल्यी विवाहादिक उत्सवो थता प्रगट रीते देसा ता हता, तेथी स्वर्गना जेवु ते मनोहर झागतुं हतुं, ते नगरने जोझने सूरियः सर्व-

सायुज्योंने कहु के “ हे मुनिओ ! आजे आ नगरमां मोह राजानी धोक पढ़ी डे, तेथी आ द्वोको उडव्या करे छे. तेओ आत्मिकज्ञये करीने व्याप्त डे. अहीं प्रवेश करबो आपणने योग्य नव्यी. आ द्वोको द्वोन्नपाशार्थी वंधायेद्वा छे, माटे तेओ अनुकंपाने योग्य डे, परंतु तेओ मोहमदिरानुं पान करीने उन्मत्त घयेद्वा हो-वायी। उपदेशने योग्य नव्यी, माटे आपणे आगळ चाहो. ” तेसांजलीने सायुज्यों घोट्या के “ हे गुरु ! आपे अपने सारो उपदेश कर्यो. ” इत्यादि शुभ योग्यां तत्पर घयेद्वाने ग्राम, नगर, अरण्य सर्व वराग्यनां कारणपणे थाय डे. आ अन्वय दृष्टां डे, हवे व्यतिरेक दृष्टां कहे डे—

कोइ गच्छमां आचार्ये पोताना आयुष्यनो अंत आवेद्वा जाणीने बीजा सारा शिष्यने अज्ञावे एक स्यूझ सामाचारीने जाणनार शिष्यने आचार्यपदे स्थापन कर्यो. तेनवा आचार्य सर्वत्र प्रतिष्ठा पामवायी आगमादिक शास्त्रना अध्ययनमां प्रमादी थया. तेओ श्रुतार्थना जाण नहोता वरां गुरुना महिमायी सर्वत्र स्थानि पाम्या हता. तेसुरि विहार करतां करतां अन्यदा पृथ्वीतिवक नामना नगरे आव्या. त्यां श्रावकोए पुरमेद्वा वर्खते एवो महोत्सव कर्यो के जेथी तेमनों पंहिमा अधिक रीते प्रसिद्ध थयो, तथा शासननी पण घणी उन्नति थइ. तेनवा नगरमां पूर्वे अनेक जैन आचार्योए आवीने राजसंजामां घणा परवादीओनो पराजय करेद्वा हतो. तेवादीओ आ वर्खते पण आ आचार्यनी आवी उन्नति जोइने इर्प्पावाळा थया. परंतु पूर्वे पराजय पामेद्वा होवायी फरीयी पोताना महत्त्वनी हानि थवानो जय धरावता हता, तेथी प्रथम ते आचार्यनुं शास्त्रपरिङ्गान केवैं डे ? तेनी परीक्षा करवा माटे पोताने अनुकूल एवा एक श्रावकने केटद्वाक प्रश्न शीखदीने तेमनी प्रासे मोकळ्यो. तेश्रावक हंमेशां आचार्य प्रासे जड़ने विधि पूर्वक तेनी सेवा करवा द्वाग्यो. एकदा तेणे सूर्सिने प्रश्न कर्यो के “ हे गुरु ! पुद्गलने केटेद्वी इन्द्रिय होय ? ” तेसांजली तत्त्वदृष्टिरहित सूरिए चिरकाळ मुखी विचार कर्यो, तेवामो पूर्वे कोइ वर्खत सांजलेल्लु तेने यांद आव्युक्ते के “ पुद्गल सर्व समयां द्वीकात मुखी जड़ शके डे. ” आवृं सरण थवायी सूरिए विचार्यु के “ पंचेन्द्रिय विना आटळी वधी ज्ञात्ति वयांयी होय ? ” एम हृदयपां निश्चय करीने तेणे जवाब आप्यो के “ हे जाइ ! पुद्गलने पांच इंडियो होय डे. ” आ

ज्ञाय ते श्रावके पेण्डा परवादीओने कथो, एटड़े तेओए धार्यु के “आः सूर्खि-  
पोताना शास्त्रतुं पण परिक्षान नर्थी, तो पर्ही परर्थमना शास्त्रतुं परिक्षान तो क्या-  
धीज हरो ? ” एम. विचारी सूर्खि इन्ना इन्ना पासने जाणनारा ते बादीओए, रा-  
जसज्ञामां तेमने वोक्षावीने ते सूर्खिनो पराजय कर्यो, तेथी घणा लोको जैन धर्मधी  
ब्रह्म धया, ते जोइ संघे मळीने सूर्खिने त्यांयी घणे दूर विहार कराव्यो, आवा-  
तच्छक्षानरहित आचार्यों ग्राम, आराम, उपाध्य, श्रावक अने संघ विग्रेमां आ-  
सक्त घड्ने उपदेश आपता सता पण तेवा प्रकारतुं शुभ इन्ना न होवायी उत्तू-  
न प्रसूपणा पण को डे, अने तेथी करीने तेओ पोताना आधितोने तारवाने उद्देश-  
उद्धय नवसागरमां शुवावे छे, कसुं डे के—

जं जयइ अगीयत्यो, जं च अगीयत्यनिस्तिर्तुं होइ ।

वद्वावेइ य गच्छं, आएंतसंसारिर्तुं होइ ॥ १ ॥

जावार्य—“ जे पोते अगीतार्य होय तथा जे अगीतार्थनी । निशावाला  
होय ते गच्छनी दृष्टि करता सता अनन्तसंसारी थाय डे, ” माटे तच्छहप्रिविक्ल  
अने अयहुश्चुते धर्मदेशना आपवी योग्य नर्थी,

“ जेओए शुज एवी तच्छविचारहप्रि मास कोरडी, डे तेओ विजाव  
( पुद्गलादिक ) बसुओने विपे राग करता नर्थी, अने उपवनमां के उपाध्यमां  
मोह पापता नर्थी, आवा सायुओज पृथ्वीपर तच्छहप्रिवाला थाय डे, ”

आ प्रथं उपयोगी होवायी फरीने लखवामां आव्यो डे,

इत्प्रददिनपरिमितोपदेशप्रासाददृत्तां ज्ञाविशंतिमस्तंनस्य

ज्ञाविशत्यधिकविशत्तमः प्रवेदः ॥ ३४४ ॥

## व्याख्यान ३२३ मं.

संपत्तिनी कृष्णनंगुरता विषे.

संपत्स्वस्थिरतां ज्ञात्वा, पुत्रदाराहयादिपु ।

**नूमिपालः** प्रबुद्धो ज्ञाक्, शास्त्रज्ञोक्तसुन्नापितैः ॥ १ ॥

नावार्थ—“ ज्ञात्वा पंमिते कहेक्षा सुनापितव्मे पुत्र, स्त्री अने अ-  
श्वादिक संपत्तिमां अस्थिरता जाणीने नूमिपाल नामनो राजा तत्काल प्रतिवेद  
पाम्यो । ” आ अर्थानुं समर्थन करवा माटे ते राजानुं दृष्टांत कहे छे—

**नूमिपाल राजानी कथा.**

पृथ्वीपुरमां नूमिपाल नामे राजा राज्य करतो हतो, ते पुरमां एक ज्ञात्व-  
मां प्रवीण ब्राह्मण हतो, ते एक वेश्यामां आसक्त थयो हतो. एकदा कौमुदी उ-  
त्सवमां राजानी राणी सर्व अद्विकार पहेरी रथमां वेसीने जर्ती हती. ते वसते ते-  
वेश्या राणीना कंठमां रहेलो हार जोइने मोह पामी. तेथी तेणे पेढा पंमितने क-  
हुं के “ हे प्राणेश ! जो तपारे मारा शरीरसुखने अनुजंगवानी इच्छां होय अ-  
र्धात् मारापर अधिक प्रीति होय तो राणीना कंठमां रहेलो हार चोरीने मने ला-  
वी आपो । ” ते सांजली वेड्याने आधीन थयेझो विषयनो जीक्षु ते पंडित चोरी  
करवा माटे चोरनी जेम गुप्त रीते राजमंदिरमां गयो. त्यां राजाने जागतो जोइने भा-  
नी रीते राजाना पञ्चगनी नीचे संताइ रहो. ते वसते राजाए संपत्तिना गर्वथी ए-  
क श्लोकना त्रण पद नवां रच्यां; पण चोरुं पद तेनाथी वनी शक्युं नहीं, तेथी ते  
त्रण पद राजा वारंवार बोझवा लाग्यो. ते आ प्रमाणे—

**चेतोहरा युवतयः स्वजनानुकूलाः**

**सद्वान्धवाः प्रणयनम्रगिरश्च भृत्याः ।**

**गर्जन्ति दन्तिनिवहास्तरवास्तुरंगाः**

नावार्थ—मारे चित्तने हरण करे तेबी हीओ छे, अनुकूल स्वजनैक्ये,  
सारा बांधवो छे, प्रणये करीने नम्र बाणी बोझनारा भृत्यो बे, आंगणामां हस्तिना

(४०६) उपदेशमासाद जापांतर-जाग ५ मो. स्तंन ३२ मो.

समूही गर्जना करी रहा ते तथा चंचल घोट्यो छे—

आ त्रण पद वारंवार राजाना मुख्यी घोड़ाता सांजलीने ते पंक्ति चोयै पद पूर्ण करीने घोट्यो के—

संमीलने नयनयोर्न हि किंचिदस्ति ॥ १ ॥

‘पण आंखो भीचाया पड़ी तेपांनुं कांझ नथी, अर्थात् मृत्यु थाय ए-  
ट्यै ते सर्व निष्फल डे.’

आ चोयै पद सांजलीने एकदम आश्वर्य पामेझो राजा विचार करीने घोट्यो के “अहो ! पहेरेगीरोने डेतरीने मारा पहेड़मां कोण आव्युं डे ? देव, दा-  
नब अथवा मनुष्य जे हो ते एकदम प्रगट थाओ.” ते सांजलीने जेनो देह कं-  
पायमान यह रहो डे एवो ते पंक्ति प्रगट यड्ने घोट्यो के “हे स्थामी ! आपनौ ग-  
र्व हरण करवाना हेतुथी चोयै पद पूर्ण करवा माटे आ नवीन भाग्यी हुं अहीं  
आव्यो लुं.” राजाए कांगु के “सत्य घोड़ा, असत्य शामाटे घोड़े डे ?” त्यारे ते  
पंक्तिते सर्व सत्य वात राजाने कही संजलावी. ते सांजलीने राजाए तेने हार आ-  
यो, अने ‘गुरु होवाथी अवध्य डे’ एम विचारीने तेने डोमी मूर्क्यो.

पड़ी ते पंक्तिते कहेक्षा चोया पद्धी प्रतिव्रोध पामेझो. राजा भातःकाळे  
राजसन्नामां गयो, ते बखते कंचुकीना मुख्यी श्रीपांज मुर्खम गुरुलुं आगमन सांज-  
लीने हर्ष पूर्वक ते गुरु पासे जइ तेपने बंदना करी योग्य स्थाने बेतो, ते बखते गु-  
रुए नीचे प्राणे धर्मदेशना आणी.

वाष्पटिप्रचारेषु, मुडितेषु महात्मनः ।

अन्तेरेवावज्ञासन्ते, स्फुटाः सर्वाः समृद्धयः ॥ १ ॥

जावार्थ—“महात्माने वाष्प दृष्टिना भचारेनो रोध यंवाथी सर्व समृद्धि-  
ओ अंतःकरणमांज स्फुट रीते जासे डे.”

स्वरूप अने परखूपना नेदङ्कानवके शुरु आत्मस्वरूपना अनुभवमां ही-  
न वयेज्ञा महात्माने सर्व समृद्धिग्रो अंतःकरणमांज स्फुट जासे डे. “हुं स्वरूप-  
नेदमय दुं, हुं निर्मल, अखेन अने सर्व भकाशक ङ्कानवाळो दुं, इदं चंजादिकंनी  
संपत्तिग्रो तो औपचारिक डे, अने हुं तो अविनाशी तथा अनंतपर्यायवाळी संपत्ति-

थी युक्त बुँ।” आवी रीतना आत्मस्वरूपना ज्ञानधी युक्त थयेद्वा महात्माने पोताना आत्मायांज सर्व संपत्तिओ जासे डे; पण वाह दृष्टिप्रचार एट्झे विषयोमा प्रवर्तती जे इन्द्रियो तेपनो प्रचार वंध थाय त्यारेज सर्व संपत्तिओ जासे डे. केमके चंबल उपयोगवाला इंडियोना प्रचारधी आत्मानी अंदर रहेली, अमृते अने कर्मधी आवरेली आत्मस्वरूपनी संपत्ति जणातीज नवी, पण इन्द्रियोनी चंबलता रोकवारी स्थिर चैतन्यना उपयोगवरे कर्ममळना पटलधी ढंकायेली एवी आत्म संपत्ति पण जोवामा आवे डे.

समाधिनन्दनं धैर्यं, दंज्ञोऽिः समता शाची ।

ज्ञानं महाविमानं च, वासवश्रीरियं मुनेः ॥ ५ ॥

जावार्थ—“मुनिने क्रीमा करवा माटे समाधिरूप नंदन बन डे, धैर्यरूपी बज्जे डे, समतारूपी इंजाणी डें, अने ज्ञानरूपी मोडं विमान डे. माटे मुनि पासे आ प्रमाणे इन्द्रनी सर्व समृद्धि डे.”

अहो मुनि एट्झे आत्मस्वरूपना ज्ञानना अनुजवमा द्वीन थयेज्ञाने उपर प्रमाणेनी इंद्रनी शोना होय डे, तेमां ध्याता, ध्यान अने ध्येयना एकपणाए करीने निर्विकल्प आनंदरूप समाधिने नंदन बन कहेलुं डे. इन्द्रने नंदस्वन क्रीमाना सुखने माटे डे, तेवीज रीते मुनिने पण समाधि क्रीमासुखने माटे. डे. धैर्य एट्ले आत्मवीर्य अर्थात् आदियिक जावामा अकृत्यता-तद्रुप बज कहेलुं डे. समतारूपी स्वर्घमपली (इंजाणी) कही डे, अने सर्व वस्तुना अवबोधवालुं ज्ञान तद्रुप महा विमान कहेलुं डे. इत्यादि क्रियाए परिवृत्त मुनि इंद्र जेवाज सागे डे. बढी—

विस्तारितक्रियाज्ञान चर्मत्रो निवारयन् ।

मोहस्वेच्छमहावृदिं, चक्रवर्ती न किं मुनिः ॥ ३ ॥

जावार्थ—“क्रियारूपी चर्म रत्नने अने ज्ञानरूपी उत्र रत्नने जेणे विस्तार्यु छे, अने ते साधनवरे मोहरूपी म्भेडोए करेली महा वृष्टिनुं निवारण करे डे तेथी एवा मुनि शुं चक्रवर्ती नवी? डेज.”

आ वे शेकरुं तात्पर्य एवुं डें के “देवोमां इंद्र अपु डे अने मनुव्योमा

(४०४) उपदेशमासाद ज्ञापांतर-ज्ञाग ५ मो-स्तंञ्ज ४२ मौ.

‘चक्रवर्ती श्रेष्ठ डे, ते बनेनी समृच्छितुं सुख मुनिना स्वज्ञावमांज अन्तर्जाव पाम्युं डे, “तो वीजाना सुखतुं तो शुं कहेहुं ?” वळो तीर्थकरनी समृच्छितुं सुख पण मुनिना आत्म स्वज्ञावमां समायेहुं डे. ते आ प्रमाणे—

रत्नैश्चिन्निः पवित्रा या, श्रोतोन्निरिव जाहनवी।

सिद्धयोगस्य साप्यर्हत्यदवी न दवीयसी ॥ १ ॥

ज्ञावार्थ—“स्वर्ग, मृत्यु अने पातालना वण प्रवाहे करीने गंगा नदीनी जेम त्रण रत्ने करीने पवित्र एवी जे झानादि अनंत चतुष्टयवाळी, आउ प्राति-हार्यथी युक्त अने जगत्ने धर्मोपदेशवद्वे उपकार करनारी तीर्थकरनी पदवी, ते पण अष्टांग योगना साधनवी सिद्ध धर्मेज्ञा मुनिने कांइज दूरं नवी; अर्थात् त्रिलोक-मां अद्भुत परमार्थने आपवा विंगेरे रूप अतिशयवाळी तीर्थकरनी समृद्धि पण यथार्थ मार्गमां रहेज्ञा साधक पुरुषने पासेज डे.”

माटे सर्व उपाधिनो त्याग करीने आत्माना रत्नत्रयनी साधना करवी, जेपी सर्व समृद्धिओ प्राप्त थाय. ” इत्यादि धर्मोपदेश सांजलीने प्रतिचोध पामेज्ञा चूमिपाळ राजाए सर्व वाद संपत्तिओने क्षणजंगुर जाणी तेनो त्याग करीने साधु-धर्म ( चारित्र ) अंगीकार कर्यो.

“ चूमिपाळ राजानी जेम वाद संपत्तिओ क्षणजंगुर डे—नाशवंत डे-एवो निश्चय हृदयमां धारण करवो, जेथी आत्मामांज रहेक्षी इंद्रनी तथा चक्रवर्तीनी सर्व संपत्तिओ सहेजे प्राप्त थडो. ”

## व्याख्यान ३२४ सुं.

—  
कर्मनी विचित्रता विषे.

**दुःखं प्राप्य न दीनः स्यात्, सुखं प्राप्य न विस्मितः ।**

**जगत् कर्मविपाकस्य, जानन् परवशं मुनिः ॥ १ ॥**

ज्ञावार्थ—“आ चराचर जगत् शुन्न अनेऽगुन्न उदयवाला कर्मविपाकने परवशा छे, एम जाणनार तच्चरसिक मुनि असातादिक दुःखने पामीने दीन थता नयी. केमके कर्म करती वस्ते विचार कर्यो नहीं, तो हवे तीव्र रसवर्ण वंधायेद्वा कर्मना उदयमां दीनता शी करवी? एम समजे छे, तेमज सातादिक सुखने पामीने विस्मित (हर्षित) थता नयी. केमके ए पण शुन्न कर्मना विपाक रे एम जाणे छे. बळी—

**येषां चूञ्जंगमात्रेण, चञ्ज्यन्ते पर्वता अपि ।**

**प्रासादां छुर्दशायां ते, प्राप्यन्ते अवापि नाशनम् ॥ २ ॥**

ज्ञावार्थ—“जेओनी भृकुटीना चंगमात्रे करीने पर्वतो भांगी जाय ढे एवा महा शक्तिवान् पुरुष पण छुर्दशा प्राप्त थाय रे त्यारे कोण जाणे क्यां नाश पामी जाय ढे तेनी खबर पण पक्ती नयी.” आ प्रसंग उपर एक कथा ढे ते नीचे प्रमाणे—

**कदंव विप्रनी कथा.**

काकंदी पुरीमां सोमशर्मा नामे एक ब्राह्मण रहेतो हतो. तेने कदंव नामे पुत्र हतो. ते ज्ञौच धर्ममां अति आग्रही हतो. अपवित्र के नीच माणसनी ग्राया मात्रनो पण स्पर्श थतां ते सर्व वस्तु सहित म्लान करतो. तेथी द्वोको तेने पाणीनो पिण्ठाच एवे नामे वोद्वावता हता. ते मुख अने नासिकाने वस्त्रना उभावती ढांकीने सर्वत्र हुं हुं करतो अटन करतो हतो. कोइ माणसना वस्त्रनो डेरो तेने अमकी जतो तो ते तेनापर डेप करतो. आखी रीते ज्ञान धर्म पालतां केलझेक काळे ते गङ्ग-

स्कुष्ठ विगेरे व्याधिथी ग्रस्त थयो, तेयी तेनो कोइ पण स्पर्श करतुं नहीं। वैय पण तेनो चेप लागवाना जयथी तेनी नामी पण जोता नहीं। कहुँ डे के—

**ज्वरो जगंदरः कुष्टः, क्रयश्चैव चतुर्थकः ।**

**एते संस्पर्शतो रोगाः, संक्रमन्ति नरान्नरम् ॥.१ ॥**

जावार्थ—“ज्वर, भगंदर, कुष्ट अने चोथो क्रय, ए रोगो स्पर्श करवायी एक माणसथी बीजा माणसमां संक्रमण करे डे.”

आ व्याधिथी तेनो शौच धर्म नहुं थयो, अने शरीरमां अतिवेदना थ-  
वा लागी, एकदा ते कोइ यतिनी पासे गयो, त्यां यतिए तेने धर्मोपदेश आप्यो,  
कदंबे यतिने पूछयुँ के “तमे स्नान करता नवी, तो तमारी शुचिं झी रीते था-  
य डे ? ” मुनिए जवाब आप्यो के “आ शरीर सदा अशुचिज डे, तेनु स्ना-  
न करवायी झी रीते शुचिपाणु थाय ? माटे मननी शुद्धिज जोधी जोइए, केमके  
रस, लोही, मांस, मेद, अस्थि, मज्जा, शुक्र अने वसा, इत्यादि अशुचिनां स्था-  
नलृप शरीरनुं शुचिपाणु क्यांथी होय ? अहो ! नव ज्ञारमांथी निरंतर अशुचि  
रसने ऊरवावाला अने अशुचिथी व्यास एवा आ देहमां शौचिनो संकल्प भाव कं-  
खो, ते पण महा मोहनुं विज्ञसितज डे.” आ प्रमाणेनो उत्तर सांजलीने कदंबे  
विचार्यु के “हुं तो फोगडज शौचवाद करुं छुं, खरेखरा तो आ सावुओज पवित्र  
डे, केमके “ब्रह्मचारी सदा शुचिः” ब्रह्मचारी निरंतर पवित्रज डे.” इत्यादि  
विचार कीने पडी तेणे फरीथी गुरुने पूछयुँ के “हे स्वामी ! मने शरीरमां म-  
हा छुःसह पैदा थाय डे, एक क्षणमात्र पण शांति थती नवी, तेनु शुं कार-  
ण ? ” गुरु बोट्या के “कर्मनी घटना उंठना पृष्ठ जेवी महा विषम डे. जाति, कु-  
ळ, देह, विज्ञान, आयु, बळ, ज्ञोग अने संपदा विगेस्नी विषमता जोइने आ  
संसारमां विज्ञान माणसने प्रीति केम थाय ? नज थाय, बळी रत्नत्रयो परिणात  
अने तीव्र क्षयोपशमवाला मुनि अपूर्वे करणना बळथी उपशमश्रेष्ठि पामीने चा-  
रित्र परिणामपर आरुढ थइ सर्वथा मोहोदय रहित थाय डे अने तकेवलीनी  
हदे पहोचे डे; तोपण छुए कर्मने लोधे अर्थात् सत्तामां रहेद्वा मोहनी कर्मना  
उदयथी अथवा आयु कर्मनो अंत थवायी ( आयुष्य पूर्ण थवायी ) भ्रष्ट थाय  
डे अने चार गतिमां परिज्ञमण करे डे. छुए मोहना वजायी प्राणीने अनंत संसा-

र परिभ्रमण करवुं पर्मे छे; तेथी कोइपण प्रयत्ने चेतनाने कर्मधीन करवी नहीं, स्वाधीन करवी. वढी कर्मनी विप्रता एवी बे के कोइ रंक माणस शुन कर्मना उदयथी एक क्लाणमात्रमां राजा थाय डे, अने कोइ राजा अशुन कर्मना उदयथी क्लाणमात्रमां रंक थाय डे. पुराणमां पण कहुं छे के—

याहशं क्रियते चित्तं, देहिन्निर्वर्णनादिपु ।

ताहशं कविवन्नूनं, जायते सततं जने ॥ १ ॥

जावर्ध—“ सुति निंदा विगेरेमां कविग्रोनी जेप प्राणीत्रो जेवुं चित्त करे डे तेवुं क्लोकमां निरंतर प्राप्त थाय डे. ”

एकदा ब्रह्मा विगेरे घणा देवो एकत्र मढीने पोतपोताना उत्कर्षतुं वर्णन करता हता, ते वस्ते शनिश्वर वोद्यो के “ हुं सर्व देवादिकने मुख छुःख आपवा समर्थ दुं. ” ते सांजलीने शंकरे कहुं के “ तुं केवुं मुख छुःख आपे डे ते जोइ-डुं, मने यताकजे. ” एप कहीने महादेवे स्वस्थाने जझने ते वात पर्वतीने कही. पडी शिवे पोते पानातुं रूप लीयुं, अने पर्वतीतुं चेंशनुं रूप कर्युं. पडी नगरनी अशुचिपय खालमां जझने वने जणा रहा. त्रण दिवस रहीने ते वने त्यांधी नी-कळीने घेर आवी पोताना मूळ स्वरूपवाला थया. पडी शंजुए शनि पासे जझने कहुं के “ तारीदशा काळे पूरी थइ. ते तो मने कांइ पण छुःख आप्युं नहीं. ” शनि वोद्यो के “ तमे क्यां रहा हता ? ” त्यारे शंकरे पोतानी स्थिति कही घतावी. त्यारे शनि वोद्यो के “ हुं कांइ द्वाकमी द्वाझने कोइने मारतो नवी, पण तेवा प्रकारनी डुच्छि आपुं दुं के जेथी पोतानी जातेज ते छुःखमां पके छे. तमे त्रण दिवस मुथी अशुचिपय खालमां रहा, तेथी वधारे कहुं छुःख ? माटे हुंज लोकोने छुःखादिक आपुं दुं, पण ते कर्मनी प्रेरणाधीज आपुं दुं. ” ते सांजली शिव वोद्या के “ ए वात सत्य डे के जीवो कर्मधीज करेलां मुखछुःखने पाये छे. ” पडी सर्व देवोए “ कृतकर्मद्यो नास्ति ” एट्डे करेलां कर्मनो जोगव्या विना नाश घतो नवी, एप अंगीकार कर्युं. ”

आ प्रमाणे श्री गुरुना मुखयी कर्मविषाकर्तुं स्वरूप सांजलीने ते कदंब विप वोद्यो के “ जो मने पण आ रोगनी शांति थाय तो हुं पण गुरु जेवो थां. ” त्यारे गुरु वोद्या के “ सर्व-आपव मूकीने एक नवकार मंत्रनेज दृ-पास मु-

धी गण्या कर; तारे वीरुं कांद पण ध्यान करवू नहीं।” कदंबे गुरुना कहेवार्थी नवकारनुंज ध्यान करवा मांकशुं. तेथी तेनो कुष्ट व्याधि नाश पाम्यो, एट्टले ते उच्चम श्रावक थयो. पडी सर्व इंव्यनो संन्मांगे व्यय करी चारिव लङ्घने अनुकर्म स्वर्गे गयो.

“ मिथ्यात्वादिक हेतुए करीने पोते करेहुं कर्म दाखण विपाकने आपे छे, एम सांजळीने कदंब ब्राह्मण पोताना स्वरूपने पाम्यो; तेवी रीते बोजाओए पण पवर्तवूं।”

इत्यद्विनपरिमितोपदेशमासादवृत्तौ षाविंशतिमस्तंजस्य  
चतुर्विंशत्यथिकविशततमः प्रवेदः ॥ ३४४ ॥

## व्याख्यान ३२५ सुं

कर्मनां फल विषे.

स्वात्मनोच्छ्रूखद्वेनात्तं, तद्गुकत्या कर्म होयते ।

अद्वयत्वमहो एकं, ढंडणपिंकुमारवत् ॥ १ ॥

ज्ञावार्थ—“ अहो ! ढंडण कृषि कुमारनी जेम पोतेज उच्चतपणार्थ वाखेहुं क्रय न थाय तेवूं कर्म तेनुं फल नोगव्याधीज क्रय पामे बे.” तेमनुं दृष्टत आ प्रमाणे—

ढंडणकृषि कुमारनी कथा.

कुवेरे चनाशेखी षाकाना नगरीपां श्री कृष्ण वासुदेव वल्लभनी साथे राज्य करता हता; ते वासुदेवने ढंडणा नेमि राणी हुती. तेनी कुक्षिष्ठी उत्पन्न थेसो ढंडण नामनो कुमार हतो, ते युवावस्था पाम्यो एट्टले तेनं कृष्णवासुदेवे मोट उत्सवयी सौन्दर्यमां देवकन्यानो पण तिरस्कार करे तेवी पणी राजकन्याओ पर-

एवी. तेनी साथे ढंडण कुमार पंचेन्द्रिय संवंधी सुखनोग जोगवा द्वाग्यो। एकदा ते नगरीमां श्री नेमिनाथ प्रज्ञ समवसर्या बनपाळना मुखथी ते खबर सांजढीने प्रज्ञने चांदवा माटे सर्व परिवार सहित श्री कृष्ण ढंडण कुमारने साथे लग्ने गया। समवसरण नजीक आव्या एटझे राज्य संवंधी पांच<sup>१</sup> चिन्होनो त्याग करीने त्रण प्रदक्षिणा पूर्वक स्वामीने वंदना करी, अने विनयथी नम्र देह राखीने जगवाननी पासे वेता। पत्ती स्वामीए सर्व प्राणीओनी जापाने अनुसरती वाणी-वर्क देवना आपी। ते सांभढीनि जेने संघेग उत्पन्न ययो ते एवा ढंडण कुमारे महा प्रयत्ने मातपितानी आङ्ग मेलवी जगवंतनी पासे दीक्षा लीधी। पत्ती जगवाननी पासे ग्रहण अने आसेवना नामनी वे मकारनी शिक्षा शीखतां तेमणे सांजछ्यु के “मुनिए ड कारणे आहार देवो। ते श्रा प्रमाणे—

लुहवेअणवेयावद्ये, संजम इङ्गाण पाणरखण्डाए ।  
इरियं च विसोहेऽं, लुंजइ नो रुवरसहेऽं॥ १ ॥

जावर्थ—“कृथा वेदनानुं शमन, वैयाकृत्य, संयम, ध्यान, प्राणरक्षा अने ईर्यापथिकीनुं शोधन ए ड हेतुए मुनि आहार करे, पण रूप के रसना हेतुथी आहार करे नहीं।” तेनी व्याख्या करे ते—

१ कृथा अने तृपानी वेदना डेदवा माटे मुनिए आहार देवो। २ दश मकारना वैयाकृत्यने माटे आहार देवो, केमके कृथादिकथी पीमायेवो माणस वैयाकृत्य करवा समर्थ थतो नवी। ३ पमिद्वेहणा प्रमार्जनादि छक्कणवाळा संयमने पाळवा माटे आहार देवो, केमके आहारादिक विना कड, महाकड विगेरनी जेम संयमनुं पाळन थड शके नहीं। ४ सूत्रने अर्थनुं चिंतन करवामां एकाग्रता रूप जे प्रणिधान—तेने माटे जक्क पान ग्रहण करवुं, केमके कृथातृपाथी छुर्वळ थयेवाने छुर्यान प्राप्त थवानो संजव डे, तो पत्ती ते सूत्रार्थनुं चिंतन तो क्यांथीज करी शके? ५ प्राण एटझे पोतानुं जीवित तेना रक्षण माटे आहार पाणी देवां, केमके अविधिवर्ने कृथा तृपा सहन करीने पोताना प्राणनो पण नाश करे तो तेथी पण हिंसा थाय डे। तथा ६ ईर्यापथिकी एटझे चालती वत्ते मार्ग शोधवो, तेने माटे आहारादिक ग्रहण करवो, केमके कृथा अने तृपाथी आकुलव्याकुल थयेवां माणस नेत्रवर्मे वरावर जोइ शके नहीं, तेथी मार्गमां रहेज्जा जीवादिकनुं निरीकण

<sup>१</sup> खड्ग, छत्र, मोजडी, सुड्ड ने चामर आ पांच राजचिन्हो जाणवा।

कुण्ठ थाय, आ र हेतुथी मुनि आहारादिक ग्रहण करे, पण रूप एट्ट-  
क्षे शरीरना सौन्दर्यने माटे अथवा जिहा इंजियना रसना लोन्थी आहार ग्र-  
हण करे नहीं.

हवे जे भ कारणोर्थी आहारादिकनु ग्रहण न करे ते कहे डे—

अहव न जिमिज रोगे, मोहुदये सयणमाइनवसगे ।

पाणिदया तवहेऊ, अंते तणुमोयणत्यं च ॥ २ ॥

जावार्थ—अथवा रोगमां, मोहना उदयमां, स्वजनादिकना उपसर्गमां,  
प्राणीनी दयामां, तपमां अने डेवट शरीरना त्यागमां, एट्झा कारणे मुनि आहा-  
रादिक ग्रहण करे नहीं.” तेनी व्याख्या करे डे—

१ चर, अक्षिरोग, अनीर्ण विंगे व्याधि होय त्यारे आहार क्षे न-  
हीं. २ पुरुषवेद विंगे लक्षणवाळा मोहनो उदय थाय त्यारे अर्यात् प्रवल  
वेदोदयादि होय त्यारे आहार क्षे नहीं. ३ माता, पिता, स्त्री विंगे स्वजनो  
अथवा देवता विंगे व्रतनंग माटे उपक्रम करता होय त्यारे आहार क्षे नहीं.  
४ जीवदया माटे एट्झे वर्षा क्रतुमां धुंयाडमां रहेज्ञा अपकाय जीवोनी रक्षा माटे  
अथवा सूक्ष्म देवकीओ विंगे जीवोर्थी व्यास घेज्ञी पृथ्वी होय त्यारे ते जी-  
वोनी रक्षा माटे आहार क्षे नहीं-क्षेवा नीकळेन नहीं. ५ चनुर्यादिक तप कर-  
याने माटे आहार करे नहीं. तथा ६ डेवट परण बखते संयम पाठ्याने असर्थ  
घेज्ञा देहनो त्याग करवा माटे आहार क्षे नहीं.”

इत्यादि नेमिनाथ पञ्चना मुख्यी कहेज्ञी जिक्काने धारण करता दंडणपि  
आसक्तिरहित घड्ने “जे कांड मासुक अब भढी गयुं ते ग्वाइ लीहुं” एवी  
रीते विचरवा लाग्या.

एकदा ते मुनिने पूर्वे करेज्ञा अन्तराय कर्मनो उदय थयो, तेवी ते भिक्षा-  
ने माटे उयां उयां जाय त्यां त्यां शुच्च निक्का पामे नहीं. तेवी तेणे एवो अन्नि-  
ग्रह व्यीथो के “आज पठी ज्यारे हुं मारी पोतानी व्यविधी. अब पार्वीश त्या-  
रेज पारणुं करीजा, नहीं तो पारणुं नहीं करूं; वीजा मुनिओए लावेज्ञो आंहार  
हुं करीजा नहीं.” एवो अन्निग्रह लाज्ञे पञ्चनी साथे विहार करतो अन्यदा घा-  
रका नगरीमां आव्या. त्यां पण तेवीज रीते पांते विपाक्ता पुन उतां अने जगत्-

गुरुना जिष्ये उतां, स्वर्गनी द्वाद्यमीने पण जीतनार एवं समृच्छिवाली धारका न-  
गरीमां पण गोदा श्रीमंतोना घरमां पर्यंतन करतां दंडणमुनि पोताने योग्य कांइ पण  
आहार पाम्या नहीं, एक दिवस कोइ वीजा मुनि दंडणमुनिनी साथे गोचरी ग-  
या तो तेने पण आहार पक्ष्यो नहीं, तेथी वीजा मुनिओए प्रज्ञने पूछयुं के “ हे  
ज्ञगवान् ! आ दंडणकृष्णि कथा कर्पने द्वीधे श्रावकना घरथी पण निक्षा पापता न-  
थी ? ” ज्ञगवान् वोद्या के तेना पूर्वजवतुं वृत्तान्त सांजलो—

पूर्वे धान्यपुर नामना गममां पारासर नामे एक ब्राह्मण रहेतो हतो, ते  
राजानो नियोगी ( अधिकारी ) होवायी राजाए तेने ते गममां पांचसो सांतीनो  
( तेक्ष्णा खेतरनो ) अधिकार आप्यो हतो, एकदा खेतुतोने माटे जोजन आव्युं  
हतुं, वळदो माटे धास आव्युं हतुं अने सर्वे चूखतरसथी थाकी गया हंता, तो-  
पण ते पारासरे ते पांचसो खेतुतोने जपवानी रजा आपी नहीं, अने कर्णु के “ मा-  
रा खेतरमां एक एक चास खेतुने पडी सर्वे जोजनादिक करो. ” ते सांजली पं-  
राधीन खेतुतोए तेना कहेवा प्रमाणे कर्णु, आ वसते तेणे अनंतराय कर्म वांध्युं.  
त्यांथी मुत्यु पापी घणा जब भ्रमण करीने कांइक पुण्यना प्रज्ञावयी अही कुण्ण-  
ना पुत्र थया डे, तेणे वैराग्यथी दीक्षा द्वीधी डे, अने अजिग्रह धारण करेद्वो डे.  
ते गोचरी माटे जेवी रीते जाय छे तेवीज रीते पूर्वना कर्म करीने निक्षा विनाग  
पाचा आवे डे; पण तेनामां केवास पर्वत करतां पण अनंतगुणं स्वर्यं डे, कर्मके ते-  
ने निक्षा मढती नथी तोपण ते उद्देग पापता नथी, तेमज वीजाओनी निदा  
करता नथी; परंतु देनता धारण कर्या विनाग हंमेशां अद्वानपरिपहने सहन क-  
रे डे, अने सर्वे प्रकारे परपुदगळधी उत्पन्न थयेद्वा तथा अनेक जीवनी हिंसादिवडे  
नीपजेद्वा आहारना दोपोतुं चितन करीने अनाहारीना गुणोनी प्रजांसा करता स-  
ता मोटी सकाम निर्जना करे छे. ”

आ प्रमाणे श्री जिनेन्द्रना मुख्यी सांभळीने सर्वे साधुओ आश्र्ये पापी  
दंडणमुनिनी प्रशंसा करवा लाग्या, अनुकमे अद्वानपरिसह सहन करतां दंडण-  
पिने उ मास व्यतीत थया, ते अवसरे प्रज्ञने वांदवा माटे आवेद्वा श्री कुण्णे धर्म-  
देशना थळ रशा पडी प्रज्ञने पूछयुं के “ हे ज्ञगवन् ! अदार हजार शीक्षांगस्त्री  
रथमां वेतेद्वा आ अदार हजार मुनिओमां विशेष छुप्कर कार्य करनार कोण  
छे ? ” विज्ञवनपतिए कर्णु के “ न्हे कुण्ण ! सर्वे साधुओ छुप्कर क्रिया, गुणरत्न-

संवत्सरादि तप, जिनकृष्णनी तुझना अने वारीश. परिपहोतुं सहन करतुं इत्यादि सखजना पाम्या बिना करे डे, तोपण ते सर्वेमां मायारूपी पृथ्वीने विदारण करवामां खेमुत सपान तमारो पुत्र ढंडणपिं हालमां अति उत्कृष्ट डे. ते अदीन मनवडे छ मासधी अद्वाजपरिपहने सहन करे डे. ” ते सांजलीने श्रीकृष्णे विचार कर्यो के “ अहो ! मारा पुत्रना जन्म तथा जीवितने धन्य डे के जेनी शुच द्वच्चनी त्रिकाळना समस्त पदार्थने जाणनार श्री तीर्थकर पोते वार पर्वदानी समक्ष प्रशंसा करे डे. ” पडी श्रीकृष्णे नगवानने पृष्ठयुं के “ ते महामुनि अत्यारे वर्षा डे ते कहो के जेवी हुं तेमने वंदन करुं. ” ते सांजलीने करमां रहेद्वा निर्मल ज़लनी जेम सर्व विश्वने जोनारा प्रत्युप कर्युं के “ हे मुकुन्द ! ते मुनि अत्यारे जिक्काने माटे घारिकापुरीमां गया डे. ते तपे पुरीमां प्रवेश करजो त्यारे जिक्काने माटे आटन करता तपने सामा मळजो. ” ते सांजलीने जेणे अनेक प्राणीओने सिद्धिनी सन्मुखु कर्या डे एवा कृपानिधि श्रीनेमिनाथ स्वामीने प्रणाम करीने श्रीकृष्ण पुरी तरफ चाल्या. पुरमां पेसतांज तेणे दूरयी जेतुं शरीर अति कृश धयेत्तुं हतुं, कङ्कामां जैषे जिक्कातुं पात्र राखेत्तुं हतुं, तीर्थकरे पोतेज प्रशंसा करेही होवार्थी व्रण न्युवनमां जे अद्वितीय सुपात्र हता, अने अनादिकालधी संचित करेद्वा कर्मसूपी दर्जना मूलने जेमणे दातरुं मुकी दीहुं हतुं, एवा ते मुनिने जोइने विचार्युं के “ शुं आज ढंडणपिं हशे के कोइ बीजा साबु हशे ? पण श्री जिनेभरे कर्युं छे के ‘ पुरमां प्रवेश करतां ते तपने सामा मळजो. ’ माटे खोखर आ तेज मुनि डे. अहो ! प्रयम आतुं स्वद्वय देवकुमार जेतुं हतुं, आज केतुं निस्तेज धयेत्तुं डे ? ” एप विचारीने हर्षयी श्रीकृष्णे हाथीपरथी उत्तरी व्रण प्रदक्षिणा पूर्वक पृथ्वीतज्ज सुधी मस्तक नमावी वंदना करीने हाय जोमी निरावाप विहारादिनी पृथ्वा करी. पडी तेमनी स्तुति काला ल्लाग्या के “ हे मुनि ! आजनो दिवस मारो सफल थयो. अत्यारनो काण सुक्ष्मण्यवालो थयो. अने अत्यारनो प्रहर मने सुखदायी थयो, के जेमां आपना वंदननो उत्सव मने प्राप्त थयो. ” इत्यादि स्तुति करता श्रीकृष्णने गोमीने ते निःस्पृही मुनि आगळ चाल्या. आ सर्व इकीकर कोइ शृहस्ये पोताना गोवामां वेत्रा वेत्रा जोइ, जेवी तेणे विचार कर्या के “ अहो ! आ कोइ महामुनि डे के जेने श्रीकृष्णे पोते वंदना करी. ” एप विचारी नीचे उत्तरीने ते शृहस्ये मुनिने पोताने वेर लाइ जाने सिंहकेसरीआ मो-

दक बहोरात्र्या, ते लैने मुनि पञ्च पासे गया, प्रज्ञुना, चरणने नमीने मुनि बो-  
ध्या के “ हे स्वामी ! आजे मारो अन्निग्रह परिपूर्ण थयो. ” पञ्च बोध्या के “ हे-  
हंडण ! ए आहार तारी लब्धियी तने मळयो नथी, पण हस्ति तारी सुति करी,  
तेथी ते बणिके तने प्रतिज्ञानित कर्यां डें; माझे ते हस्तिनी लब्धियी मळयो डें. ”  
आ प्रमाणे परमात्मानु चचन सांजळीने हृष्टुष्ट थयेद्वा मुनि अत्यंत प्रतिज्ञाव पा-  
म्या, घणे पासे आहार मळया डतां पण दोबुपता अने उत्सुकतादिक दोपथी  
रहित, अन्निग्रहमां आसक्त अने प्रज्ञुना परमनक्त एवा ते निःस्पृह मुनिए वि-  
चार्यु के “ परनी लब्धियी मळेद्वी आ जिक्का त्याग करवा योग्य डे. ” एम वि-  
चारीने ते मुनि इट पकवाना नींजामा पासे गया; अने त्यां शुच्छ स्थंभिद्वामां ते  
मोदकनुं चूर्ण करीने राखमां नाखता नाखता पोताना आत्मानी निंदा करवा द्वा-  
ग्या के “ अहो ! अभिग्रहनी अपेक्षा विनानो जे आहार तेना अन्निज्ञापी थ-  
येद्वा मने धिकार डे, अने अहो ! जगवानना झानने धन्य डे के जेणे मारा अ-  
न्निग्रहनुं रक्षण कर्यु. सूक्ष्म झान विना अंतरमां रहेद्वा सूक्ष्म चावने कोण  
जाणी शके ? ” आ प्रमाणे शुक्र ध्यानमां आसूह थयेद्वा मुनिए मोदकनुं चूर्ण  
करवाना मिष्यी सर्व कर्मांने चूरी नांखी तत्काळ केवळङ्गान प्राप्त कर्यु. पडी देवता-  
ओए रचेद्वा सुवर्ण कपळपर वेसी ते केवळी मुनिए पोतानाज अंतराय कर्म संवधी  
देशना आपीने कर्यु के “ हे नव्य प्राणीओ ! आ प्रमाणे अंतराय कर्मनुं फल  
जाणीने कोइए कोइने पण अन्तराय करवो नहीं. ” पडी श्री जिनेश्वर पासे आवी  
पञ्चने प्रदक्षिणा करी ‘ नपस्तीर्याय ’ एम बोद्धीने केवळीनी सजामां वेत्रा. अ-  
नुक्रमे मोक्षपदने पाम्या.

“ कर्मनुं फल अहोंज मठे तो ते सारु डे, केमके ते कर्मने जीतवा माझे  
तेनो प्रतीकार करनार मळी शके. तेथीज हंडणक्रपि जिनेन्द्रज्ञना गुणोरुं ध्यान क-  
रीने सर्व कर्मनो जय करी केवळङ्गानने पाम्या. ”

इत्यद्विनपरिमितोपदेशप्राप्तादगृच्छौ ज्ञाविश्वितमस्तंजस्य

पंचविंशत्यथिकत्रिशत्तमः प्रवृथः ॥ ३७६ ॥

## व्याख्यान ३२६ मुँ.

—  
चित्तनी एकाग्रता विषे.

**तैत्तिरपात्रधरो यद्यज्ञाधावेषोद्यतो यथा ।**

**क्रियास्वनन्यचित्तः स्याङ्गवन्नीतिस्तथा मुनिः ॥ १ ॥**

ज्ञात्वार्थ—“जेम तेजना पावने धारण करनारो, अथवा जेम राधावेष करवाने तैयार धयेद्वो माणस एकचित्ततालो थाय दें, तेप जयवी जय पापेद्वा मुनि पण क्रियाने विषे एकाग्रचित्तताला थाय दें.”

जेम परणना जयवी जय पापेद्वो माणस तेजना पावने धारण करीने प्रमादरहित रहे दें, तेज प्रमाणे मुनि आत्मगुणना प्रात्यवी जय पामीने संसारमां अप्रपादी रहे दें, कोइ राजाए कोइ द्वाक्षणेषु भूमिसने उपदेश आपवा माटे गुणेगार वरावीने तेनो वध करवानी आङ्गा आपी, ते वखते सजाजनोए राजाने विनंति करी के “हे स्वामी ! एनो अपराध माफ करो, तेनो मारो नहीं.” त्यार राजाए कहु के “जो ते तेजस्यो जरेद्वा पोटा थालने धारण करीने स्थाने स्थाने अनेक प्रकारना नाठक अने वाजित्रोदी व्याकुल धयेद्वा आखर नगरगां द्वमण करी तेजनुं एक विकु पण पाड्या विना अहं आवे तो हुं तेनो मारुं नहीं; पण जो तेजनुं एक विकु पण पदे तो सत्काळ तेना प्राणनो नाश करीश.” ए बात प्रेद्वा माणसे कबूल करी, अने तेज प्रमाणे अनेक जनोदी व्याप धयेद्वा मार्गमां नाठक वाजिचादि तरफ हष्टि पण कर्या विना पाथे तेजनो थाल राखी एक चित्ते चाहवामां उपर्योग राख्याने तेजनुं विकु पण पड्या विना आंखुं नगरफरीने आव्यो, तेज प्रमाणे मुनि पण अनेक प्रकारना सुखदुःखव्ययी व्याकुल एवा आ संसारमां आत्मसिद्धिने माटे प्रमादरहित थाय दें. वठी जेम स्वर्यवरमां कन्याने परणवा माटे राधावेष करवा तैयार धयेद्वो माणस स्थिर चित्ततालो थाप, तेप जव्यवी जय पापेद्वा मुनि संसारमां भ्रमण करवाथी अने गुणना आवरणादिक महा दुःखव्ययी जय पामीने समिति गुप्तिल्प क्रियाओपां एकचित्त थाय दें. कहु दे के—

अमिसदुखेण वणे, सीहेण य दाढ़चक्कसंगहिया ।

तह वि हु समाहिपत्ता, संवरजुता मुणिवरिंदा ॥ १ ॥

जावार्य—“ वनने विषे मांसमां लुब्ध थयेद्वा सिंहे दाढ़रूप चक्रथी ग्रहण कर्या, तोपण संवरमां युक्त एवा मुनिवरो समाधिने प्राप्त थया, ” आ अर्थनुं समर्थन कर्त्वा माटे सुकोशद्वा मुनिनो संवध छे ते आ प्रमाणे—

सुकोशद्वा मुनिनी कथा.

अयोध्या नगरीमां कीर्तिशर नाम राजा राज्य करतो हतो. तेने सहदेवी नामे पद्माणी हती. अन्यद्वा राजाए सुकोशद्वा नामनो पुत्र थये सते तेनी वाळ-वयमांज दीक्षा दीधी. सुकोशद्वा मोटो थयो एट्ड्वे देशनो अधिपति थयो. केट्ड्वेक काळे कीर्तिशर मुनि पृथ्वीपर विहार करतां अयोध्या नगरीमां आव्या. मध्याह समये गोचरीने माटे तेपणे नगरीमां प्रवेश कर्यो. ते वस्त्रते सहदेवी राणीए तेने जोइने विचार कर्यो के “ जो कदाच सुकोशद्वा आ तेना पिता कीर्तिधर मुनिने जोशे तो ते नकी दीक्षा देशे. ” एम विचारीने तेणे पोताना सेवकने कहीने ते मुनिने नगर वहार काढी मूकाव्या. ते जोइने सुकोशद्वानी धात्री ( धाव माता ) रुद्धन करवा लागी. सुकोशद्वे तेने पूछ्यु के “ हे माता ! तपे केम रुओ डो ? ” ते बोद्धी के “ नपारा पिना कीर्तिशर मुनिने तपारी माताए नगर वहार कदाची मूक्या, तेथी हुं रोञ्च दुं. ” ते सांचली राजा सर्व समृच्छ सहित मुनिने वांदवा गयो. त्यां मुनिने वांदीने धर्मदेशना सांचली. पत्री राजाए पूछ्यु के “ हे स्थामी ! महान् उपर्सग्म प्राप्त थया उतां पण मुनिजनो पोताना निर्जनता गुणनुं रक्षण शी रीति करता हशे ? ” मुनि बोद्ध्या के—

विषं विपस्य वहनेश्व, वहनिरेव यदौपधम् ।

तत्सत्यं नवनीतानामुपसर्गेऽपि यज्ञ नीः ॥ २ ॥

जावार्य—“ विषनुं आप्य विष भे अने अग्निनुं आप्य अग्नि भे, ते सत्य भे. केपके नवनी जय पामेझाने उपसर्गमां पण जय होतो नयी. ”

जेम कोइ माणस विषयी पीका पाम्यो होय तो ते विषनुं आप्य विषज करे भे. जेम सर्वयी मंखायेझो माणस लीवको विग्रे चावचायी जय पामतो नयी,

अथवा कोइ अग्नियी दग्ध थयेद्वा माणस अग्निदाहनी पीमातुं निवारण करवा माटे फरीयी अग्निनो ताप अंगीकार करे डेः ते सल्य डे. केमके जवथी जय पा-मेद्वा मुनिओ अनादि काळना संचय करेद्वा कर्मनो क्रय करवामां उद्यमर्त्त थयेद्वा होवायी उपसर्गोद्वके घणा कर्मनो क्रय थतो मानीने जयन्तीत थता नथी. केमके मोक्षरूप साध्य कार्यगां निर्जयता गुण सहायकारक डे.

**स्थैर्यं ज्ञवज्ञयादेव, व्यवहारे मुनिर्वज्ञेत् ।**

**स्वात्मारामसमाधौ तु, तदप्यन्तर्निमज्जति ॥ २ ॥**

**ज्ञावार्थ—**“ ज्ञवना ज्ञयधीन एट्ड्वे नरक तथा निगोदादिक्यां प्राप्त थता छुःख उद्भेदादिकथी जय पामीने तत्त्वज्ञानी मुनिएपणादिकव्यावहारिकियामां स्थिरताने धारण करे डे. तेथी ते भवतुं जय पण झानानंदमय आत्मसमाधिर्मादीन थइ जाय डे, एट्ड्वे विनाश पामी जाय डे. अर्थात् आत्मश्यानमां दीन ए-येला सुखछुःखमां समान अवस्थावाला मुनिओने जयनो अर्जावज होय डे.”

आ संसारमां पग्ग थयेद्वा जीवोने ८८मी इच्छाज थती नथी. ईद्रियोना सुखनो स्वाद लेवामां तद्वीन थयेद्वा प्राणीओ मदोन्मत्तनी जेम विवेकरहितपणे ज्यां त्यो जटके डे, छुःखथी उद्भेद पामीने ते छुःखना नाश माटे अनेक उर्पायनां चित्तनयी व्याकुल थइ ज्ञुंफनी जेम महा मोहरूपी ज्ञवसागरमां परिच्छेण करे डे. वधारे शुं कहेवूं ! सर्व सिद्धिने आपनारा ३८मान् वीतरागने वंदनादिक पण करता नथी, अने इन्द्रियो संबंधी विषयसुख मेलववाने पाटे जन्म पर्यंत करेद्वा तप, उप-वास विगोरे कष्टकारी अनुष्ठानने हारी जाय डे. निदानता दोपोने पण गणता नथी. मोक्षना हेतुरूप जैन ज्ञासनने देवादिक सुखना हेतुरूप मानीने मोह पामे डे तथा मिथ्यात्वयी वासित थयेद्वा ते जीवो एव्यर्थादिक मेलववाने माटे मस्त्यनी जेम ज्ञवसमुद्धमां जटके डे, माटे हे सुकोशङ्ख राजा ! जयने विषे निरंतर उद्भेद (वैराग्य) धारण करवी तेज योग्य डे अने तेज मोश उपसर्गोमां पण सहायकारक डे, एम जाणवूं.”

आ प्रमाणे गुहना मुख्यथी उपदेश सांजडीने प्रतियोध पामेद्वा सुकोशङ्ख राजाए तेमनी पासे दीक्षा लीधी. पडी सहदेवी राणी पुत्रना वियोगयी तथा प्रतिपत्तना देष्यी मृत्यु पामीने कोइ वनमां वायण थइ, देवयोगे विहार करतां की-

तिंधर तथा मुकोशब्द-मुनि तेज बनमां डाढी चारुमासिक तप करीने रहा, तपने अन्ते पारणाने दिवसे जिङ्गा माटे जतां वाघणे ते बज्जेने जोया, एट्ट्वे तेनी सामे क्रोधश्ची दोकी, तेने आवतो जोज्ज्ञे बने मुनिए प्राणांत उपसर्ग जाणी कायोत्तरी कर्यो, वाघणे तेमने पासी दीधा ने खावा द्वागी, ते वाघणधी जङ्गण कराता मुकोशब्द मुनि कृपकर्थणोपर आरुद थइ केवलङ्गान पामीने मोक्षे गया, पछी कीतिधर मुनितुं जङ्गण करतां ते मुनिना मुखमां सुर्वर्णनी रेखाधी मंडवा दांत तेहो जोया एट्ट्वे इहापोह करतां तेने जातिस्मरण ज्ञान धर्यु, पोताना पतिने ओळखी-ने तेने अत्येत पथात्ताप थयो, एट्ट्वे तरतज ते वाघणे अनशन अंगीकार कर्यु अने मरण पामीने आउमा सहस्र देवद्वोकमां गइ, कीतिधर मुनि पण शुक्ल ध्याने काळ करीने अजरामर ( मोक्ष ) पदने पाम्या,

“ जवथी उडेग पामेद्वा सुकोशब्द मुनिए उपसर्ग पाम्या छतां पण तच्छृष्टि राखीने दृढतानो त्याग कर्यो नहीं, तेमग कीतिधर मुनिए पण स्थिरतानो त्याग कर्यो नहीं; तेवी रीते वीजा मुनिओए पण तच्छृष्टि अने उपसर्गमां स्थिरता धारण करवी, ”

॥३७॥

इत्यद्विनपरिमितोपदेशप्रासादवृत्तौ जाविंशतितपसंजस्य  
प्रविंशत्यधिकत्रिशततमः प्रवंधः ॥ ३७६ ॥

॥३७॥

## व्याख्यान ३२७ सुं.

### लोकसंज्ञा विषे.

निर्दी एट्ट्वे भवयी विराग्य पामेद्वा अने मोक्षतुं साधन करवामां उथम-वंत थयेद्वा प्राणी लोकसंज्ञामां पोह पामतो नयी, केमके लोकसंज्ञा धर्मना साधननो व्यापात करनारी छे, तेथी त्याग करवा येग्यज छे, वधु ते के—

लोकमाद्वयं कर्तव्यं, कृतं वहुन्निरेव चेत् ।

तदा मिथ्याहृशां धर्मो, न त्याज्यः स्यात् कदाचन ॥ १ ॥

ज्ञावार्थ—“यणा माणसोए जे कर्यु ते करवुं एम जो लोकानुं अवज्ञ-  
धन छइ, तो पची मिथ्यात्वीनो धर्म बदापि तजवा द्वायक थापन नहीं. केमके  
मिथ्या धर्मनुं आचरण यणा लोकी करे डे.”

आ जगतमां झेड्हे आचारानुं आचरण करनारा यणा लोको छे. कर्यु  
डे के ‘अनायों करतां आर्य थोका डे, आयों करतां जनधर्मो थोका डे, अने जे-  
नोमां पण जैन धर्मनी परिणतिवाळा वहु थोका डे; माट यणा लोकोनुं अनुसरण  
करवुं नहीं.’ बड्ही

थ्रेयोऽर्थिनो हि ज्ञूयांसो, लोकें लोकोन्तरे च न ।

स्तोका हि रत्नवणिजः, स्तोकाश्च स्वात्मसाधकाः ॥ १ ॥

ज्ञावार्थ—“‘आ छुनियामां धन, स्वजन अने शरीरादिकना मुखना  
प्रार्थना करनाराओ—तेन इछनाराओ यणा डे; पण अमूर्त आत्माना स्वजावने प्र-  
गट करवा रूप लकड़णवाळा लोकीनर कार्यमां प्रहृति करनारा—तेना अर्थी यणा  
होता नय), ते यंत्रज डे. केमके वधा देपाराओग; रत्नना देपारी थोका होय  
डे, तेमज जीवोमां आत्मानुं सधन करनारा—निरावरणपणुं लत्तन करनारा  
थोका हुंय डे.’”

सर्वशास्यधिगम्यन्ते, पापिनो नेतरे जनाः ।

ज्ञूयांसो वायसाः सन्ति, स्तोका यच्चापयक्षिणः ॥ २ ॥

ज्ञावार्थ—“सर्व स्थाने पापी जनो मळी आवे छे, एण इतर एट्डे धर्मी  
माणसो मळी आवता नयी. केमके छुनियामां कागजाओ यणा डे, पण चाप प-  
कीओ तो थोकाज डे.” आ प्रसंग उपर एक कथा कहे छे—

श्वेतश्याम प्रासादनी कथा.

एकदा श्रेष्ठिक राजानी सनामां श्रेष्ठी, सेनापति, सार्दिवाह, दूत, छा-  
रपाठ, मंदिरीक राजाओ, युवराज, अमाल, महामाल अने सेवको विंगेरे सर्व-

१ आ अवे ईजाने अनुसार कथा छे.

वेंता हुता, तें बखने धर्मचर्चा चाहतां “ आ नगरमां धर्मी लोको घणा भे के अभर्मी घणा भे ” पत्रो प्रश्न थयो, ते बखते सर्व सज्जासदोए कहुं के “ पापी घणा भे अने धर्मिषु थोका भे. ” त्यारे राजाए आग्रह पूर्वक अभयकुमार मंत्रीने पृछयुं, त्यारे ते वीथ्यो के “ हे स्वामी ! धर्मिषु लोको घणा भे, अने पापी थोका छे. ” ते सांजलीने गजाए अति आग्रहयी पृछयुं के “ ते जी रीते ? ” त्यारे अन्नयकुमारे कहुं के “ हुं बतावी आपीजा. ” पत्री तेणे गामनी बहार एक खेत अने एक श्याम एवं वे चित्यो काराओं, अने त्रिक, चत्वर, राजमार्ग अने वीजा मोटा मार्ग विग्रे आत्मा नगरमां पटड घासाव्यो के “ आजे सर्व लोकोए गाम बहार जरुं, तेपां जे ग्रो धर्मी होय तेओए खेत प्रासादमां जरुं, अने जेओ पापी होय तेओए श्याम प्रासादमां जरुं. ” आवी उद्घोषणा सांभळीने सर्व लोको पोतपोतानी संपत्ति अनुसार बद्धादिक पहेरीने खेत चित्यमां गया. मात्र कोइ मामो जाणेज देन जग श्याम चित्यमां गया. पत्री अन्नयमंत्रीनो भेरणाथी सर्व पस्तिवार सहित श्रेणिक राजा गाम बहार पेट्रा चित्य पासे आव्या. त्यां सर्व लोकोने खेत प्रासादमां जोडने राजाए पृछयुं के “ हे पौरजनो ! तेम सर्व खेत प्रासादमां केम पेत्रा भो ? ” ते सर्व वोद्या के “ हे गहाराजा ! अमे सर्व पोतपोताना कुलक्रमयी आवता धर्मनुं आचरण कानारा होवाथी धर्मी भीए, तेवी आ प्रासादमां आव्या भीए. ” ते सांजलीने “ अहो ! प्राणातिपात, मृपावाद, अद्वाचादान, परस्तीगमन अने घृत विग्रे साते व्यसनना दोपनी खाणहृप आ सर्व लोको पोताने धर्मवाला कहे भे. आ प्रमाणे होवाथी अन्नयमंत्रीनुं बचन सत्य धयुं ” एम मानतो राजा श्याम प्रासादमां गयो. त्यां मात्र मागा जाणेजने जोडने तेमने राजाए एक्युं के “ तेम वे आ चित्यमां केम आव्या ? ” तेओ वेद्या के “ हे स्वामी ! अमे पहेडां श्री सुशर्मा स्वामीनो पासे मांस अने मदिरानो नियम लोधो हुतो, ते नियमनो अगे जंग कर्यो, तेपा अमे महा पापी भाए. केमके ‘ ब्रत-लोपी महापापी ’ व्रतनो लोप करनार महापाप। कहेवय छे, तेथी अमे आ प्रासादमां आव्या भीए. ”

दीजी कोइ कथामां एम कहेलुं संजलाय भे के—सुदर्शन श्रेष्ठी के जेणे राजगृह नगरीना लोकोपर अर्जुनमात्र थी थना उपसर्गमुं निवारण कहुं हतुं. ते श्रेष्ठी पोतानी स्त्री सहित मनमां विदार कर्ने ते श्याम चित्यमां गया हुता, अने

वीजा सर्वे वेत चेत्यमां गया हता, वेत चेत्यमां उपर प्रमाणे सर्व लोकोने पूर्वीने र, जा श्रेणिके इयाम चेत्यमां पेसत, ज मुदर्दृन श्रेष्ठीने जोइ अज्ञयदुमारने घुच्यु के “ जेतुं धर्मीपणं वालगोपाल सर्वमां प्राप्तिष्ठ चे, अने जेना धर्मनी कीति ब्रण लोकमां विल्यात चे, एया आ श्रेष्ठी आ पापमासादमां केम पेतेज्ञा चे ? ” मंत्रीए क्युं के “ आप त्यां जह्ने तेने पूजो, जेथी आपना संशयनी निवृत्ति थाय, ” ते सांजडीने राजा परिवार सहित त्यां गया, पावाखोमांथी उत्तरीने तेणे श्रेष्ठीने घुच्यु के “ तमेतो महा धर्मिष्ट ओ, अने आ श्याम प्राप्तादमां केम पेता ओ ? ” देष्टो खोद्या के “ हे स्वामी ! थी महावीर स्वामीए धतोवेज्ञो थावक धर्म पण हुं यथा-विधि पाळी शकतो नथी, केमके निरंतर पद्माय जीवनी हिंसा थाय डे, माट हुं जी रीते धर्मां कहेवार्तुं ? गामरीया प्रवाहनी जेम द्वोकसंज्ञानो त्याग करीने जे धर्मरसिक आवको थी महावीरना बावयने यथास्थित पाले डे तेओज खरा धर्मिष्ट डे, तेमां पण संपूर्ण धर्मरसिक तो मुनिच्छोज हे, केमके—

**प्राप्तः पष्टुं गुणस्थानं, ज्ञवद्गर्जित्वांधनम् ।**

**द्वोकसंज्ञारतो न स्याम्मुनिव्वोकोत्तरस्थितिः ॥ १ ॥**

जावार्थ—“ द्वोकोत्तर स्थितिवाला मुनि ज्ञवद्गपी विषम पर्वतने उद्धृं-घन करनारुं, सर्व विरति रूप, प्रमत्त नामर्तु उद्धुं गुणस्थानक पामीने द्वोकसंज्ञामां आसक्त थता नथी; अर्थात् सर्व द्वोकोए जे कर्तुं ते करवुं एम गतानुग्रात्क न्यायां आसक्त थता नथी—तेमां आश्रदी थता नथी, केमके मुनि द्वोकनी मर्यादा वहार रहेज्ञा डे, द्वोक विषयमां उत्सुक चे अने मुनितो निष्काम हे, द्वोक पुद्गविक संपत्तिने श्रेष्ठ माने डे अने मुनि झानादिक संपत्तिने श्रेष्ठ माने डे, माटे तेवा मुनिने द्वोकसंज्ञाथी श्रुं ? कांइज नहीं, ” कर्तुं चे के—

**आत्मसाद्विकसद्धर्मसिष्ठो किं द्वोक्यात्रया ।**

**तत्र प्रसन्नचन्द्रस्य, नरतस्य च निर्दर्शनम् ॥ २ ॥**

जावार्थ—“ आत्मसाक्षीप सद्धर्मनी सिद्धि थाय डे तो, पत्री द्वोकसंज्ञानी जी जमर डे ? अर्हीं प्रसन्नचन्द्र मुनि तथा नरत चक्रीर्तुं दृष्टांत जाणा ल्लुं, ”

द्वोक्संज्ञानो त्याग करीने आत्मस्वरूपना उपयोगरूपे जोगमुखमां मध्ये थयेद्वा मुनिओ उदय पामेद्वा इंजियमुखने वलता पवां पोताना थरथी थता प्रकाश जेवुं माने डे. केवके तेमां कांड पण मुख नयी। ” इत्यादिक सुदर्शन श्रेष्ठीए प्रकाश करेद्वुं धर्षनुं स्वरूप सांजलीने संशयरहित थयेद्वा श्रेणिक राजाए सुदर्शन श्रेष्ठीने प्रणाम करीने सर्व पौरजनोनी समक्ष तेमने मोडुं सन्मान आपतां कयुं के “अहो! मारुं नगर श्रेष्ठ डे के जेमां तमारी जेवा पवित्र अने धर्षिषु मनुष्यो रहे डे।” इत्यादि स्तुति करीने राजा पोताना मंदिर तरफ गया, अने पौरजनो पण ते श्रेष्ठीनीज प्रशंसा करता पोतपोताने स्थाने गया।

“ द्वोक्संज्ञानो त्याग करीने जिनेन्द्रना पार्गना अनुजवथी आनंद पामेद्वो सन्मतिवालो तच्छङ्ग पुरुष द्वोक्मां प्रतिष्ठा पामीने शुच्छ आत्मर्थमने विस्तरे डे। ”

॥३७८॥

इत्यद्विनपरिमितोपदेशप्रासादवृत्तां द्वाविद्वितिमसंजस्य  
सप्तविंशत्यधिकत्रिशततमः प्रवंशः ॥ ३७८ ॥

॥३७९॥

## व्याख्यान ३२८ मुं.

—\*—

चक्रु स्वरूप.

चर्मचक्रभृतः सर्वे, देवाश्वावधिचक्रुपः ।

सर्वचक्रुर्धराः सिद्धाः, साधवः शास्त्रचक्रुपः ॥ १ ॥

जात्यार्थ—“ सर्वे द्वोको चर्मचक्रने धारण करनारा होय डे, देवताओ अवधिज्ञानरूप चक्रुवाला डे, सिद्धजीवो सर्व चक्रु ( केवलज्ञान ) ने धारण करनारा डे, अने साधुओ शास्त्ररूपी चक्रुने धारण करनारा डे, ”

स्पादादनी रीतिए शास्त्र एवजे जे शासन ( उपदेश ) करे ते, जारी रामायण विंगेरे ग्रंथो आ द्वोक संवंधी शिक्षा मात्र आपनारा होवायी ते ग्रंथो शास्त्रानी संहा पापता नयी। जनागम पण जेने सम्पर्गदृष्टिपणानो परिणति होय तेवा शुच्छ भ्रष्टकेनेज मोक्षनुं कारण थाय चे, पण तेनी मिथ्या प्रस्तुपण। करी दोय तो ते जबरुं कारण थाय चे।

ते विंगे श्री नन्दिसूत्रपां कर्यु बे के “ इश्वर्यं चुच्छसंगं गणिदिनं स-  
म्भज्जपरिगहियं सम्भुञ्चं, मिभज्जपरिगहियं मिभुञ्चं । ” आ छादशांगी ग-  
णिदिनक समकितवंते ग्रहण कर्यु होय तो ते सम्यक्कुशुत कहेवाय चे, अने मिथ्या-  
त्वीए ग्रहण कर्यु होय तो ते मिथ्याशुत थाय चे।

मूळ श्लोकमां ‘ शास्त्र ’ शब्द छे, ते शास्त्र एवजे अनेकांत मत व्यवस्था-  
पक वाक्योनो समूह, ते चक्र जेमने होय तेअनें शास्त्र चक्रवाला निर्ग्रेय साधुओ  
जाणवा, अहीं आर्यरक्षित सूरिनो संवंध चे ते आ ममाणे—

### आर्यरक्षित सूरिनी कथा।

दशपुर नामना नगरमां सोपदेव नामे एक व्याक्तिर-रहेतो हवो, तेने सो-  
मा नामनी पत्नी हती, ते जैन धर्मां दृढ हती। तेपने आर्यरक्षित अने फल्गुर-  
क्षित नामे बे पुत्रो हता, तेमां मोटो पुत्र आर्यरक्षित पाठ्यजीपुर जड्हने सांगोपांग बे-  
दादि शास्त्रोनो अन्यास वरीने पोताना नगरमां आओ, ते यस्ते राजाए मोटा  
उत्सव पूर्वक तेने हस्तीपर वेसारी पुरप्रवेश कराव्यो, अने इनाम विंगेरे आपी  
सन्मान कर्यु, पठो ते राजाए करेवा सत्वार सहित पोतानी माताने बंदन करवा  
घेर गयो, तेने जोइ तेनी माता “ हे पुत्र ! हुं सारो चे ? ” एवजुं योद्धीने मौन  
रही, माताने उदासीन देसीने आर्यरक्षित योद्ध्यो के “ हे माता ! मारो साये  
केम बोझता नयी ? अने सर्व द्वोकने पूज्य एवा सर्व शास्त्राना पारने पापेवा मने  
जोइने तपे कम आनंद पापता नयी ? ” ते सोजलीने तेनी माता बोझी के “ हे  
पुत्र ! स्वपरनो नाश करनारा, हिंसानो उपदेश करनारा अने नरकने आपनारा  
आ शास्त्रो ज्ञानवायी शुं ? आ शास्त्रोना मन्त्रवायी तुं घेर चुखसमुद्रमां पडी-  
“ शा, एवं जाणवायी मने शी रीते आनंद थाय ? माट जो तुं दृष्टिवादनो अन्यास  
को तो मारो आत्मा प्रसन्न थाय. ” विनोत पुत्रे विवेकयी माताने पूज्य के “ ते

शास्त्र क्यां जणाय छे ? ” माता बोद्धी के “ तेसलिपुत्र नामना गुरु पासे, ” पड़ी आर्यरक्षित मातानुं वचन अंगकार करी प्रातःकाले मातानी रजा लंड जणवा चाल्यो, तेवामां तेने मळवा माटे आवतो तेना पितानो मित्र ब्राह्मण सामानव शेर-रूना सांत्रा द्वाज्ञे सामो मळयो. ते ब्राह्मण प्रेमयी आर्यरक्षितने मळीने बोद्ध्यो के “ तपोर माटे हुं आ शेररूना सांत्रा व्याल्यो हुं ते व्यो. ” ते बोद्ध्यो के “ ए सांत्रा मारो माताने आपजो, हुं कार्य माटे जाउं हुं. ” एट्टेते ब्राह्मणे तेनी माता पासे जड्जे सामानव सांत्रा आपी आर्यरक्षित साये थथेद्वी वात कहो. ते सांचल्लीने माताए विचार्यु के “ जसर आ शुकनथी एवं सूचवन थाय छे के मारो पुनर् सामानव पूर्वनो अन्यास करशो. ”

अहीं आर्यरक्षित पोते गुरुने वंदनादिक करवानी रीतिथी आङ्गात हो-वायी दृढरथ नामना श्रावकने साये द्वाज्ञे गुरु पासे गयो, अने श्रावकनी विधि प्रमाणे गुरुने वांदोने वेत्रो. पड़ी ते दृढरथ गुरुने आर्यरक्षितनी जाति, कुळ विगेर कहोने विशेषमां एट्टुं कयुं के “ आ चौद विद्यानो पासगामी थयो छे, अने तेने गइ काले राजाए हस्तापर वेसामीने पुरमेश कराव्यो छे. ” पड़ी आर्यरक्षिते गुरुने कयुं के “ हे गुरु ! हुं दृष्टिवादै जणवा माटे आप पूज्यने आश्रये आ-व्यो हुं. ते जणवीने मारापर कृपा करो. ” ते सांचल्लीने गुरु बोद्ध्या के “ जो एम होय तो तुं दीक्षा ग्रहण कर, जेथी अनुक्रमे तने दृष्टिवादनो आमे अन्यास करावीए. ” ते सांचल्लीने आर्यरक्षिते गुरु पासे दीक्षा दीधी. पड़ी तेणे गुरुने क-हुं के “ मारा अहीं रहेवायी राजा, स्वजनो तथा पौरद्वोको रोगने दीधि व्याल्कारे मने चास्त्रियी ज्ञाए करशो. ” ते सांचल्लीने गुरु गच्छ सहित आर्यरक्षितने द्वाज्ञे अन्य स्थाने गया, आ शिष्यनी चोरी प्रयमज श्री महावीर स्वामीना शासनमां थइ.

पड़ी तोसद्वीपुत्र गुरुने जेट्टुं झान हतुं ते सर्व आर्यरक्षिते ग्रहण कयुं. पड़ी गुरुनी आङ्गाथी वधारे जणवा माटे ते श्री वज्रस्त्रामी पासे जवा नीक-छ्या, मार्गमां कोइ ग्राममां श्री जडगुप्त नामना सूरि हता. तेमने जड्जे आर्यरक्षिते वंदना करी. आर्यरक्षितने सर्वगुणयुक्त जोइ ओळखीने हर्षयी आङ्गिंगन आपी सूरि बोद्ध्या के “ हे वत्स ! मारुं जीवित अद्य खुं डें, तेथी हुं अनशन करवा इच्छुं हुं, माटे हुं मारो निर्यामक थां, एम हुं याचना करुं हुं. ” आर्यरक्षि-

ते तेमनुं बचन अंगीकार कर्युं. पड़ी भजगुप्त सूरिए अनशन लड्जे आर्यरक्षितने कहुं के “हे वत्स ! तुं बज्रस्वामीनी साथे एक उपाध्यमां रहीश नहीं, पण भव स्थाने रहीने तेमनी पासे श्रुतनां अन्यास करजे. केमके जे सोपकम् आयप्यवाणी जीव बज्रस्वामीनी साथे एक रात्रि पण रहे ते बज्रस्वामी साथे मृत्यु पामे एष त्रे.” आ प्रमाणेनुं तेमनुं बचन अंगीकार करी तेमनी निर्यामणा करीने तेमना मृत्यु पाम्या बाद आर्यरक्षित बज्रस्वामीए अद्विकृत करंदी नगरीए गया. प्रथम रात्रि गमनी बहार रह्या, ते रात्रिने पात्रजे पहोरे बज्रस्वामीने स्वप्नुं आव्युं के “मारा पात्रमां रहेल्हुं सर्व दूध कोइ अतिथि पी गयो.” प्रातःकाळे आर्यरक्षित मुनि बज्रमूरि पासे आत्री तेमने विधि पूर्वक बंदना करीने तेमनी पासे वेत्रा; एटजे सूरिए तेने स्वागत पूर्वीने कहुं के “क्या उपाध्यमां तुं रहो छे ?” ते वोद्यो के “हुं गमनी बहार रहो लुं.” त्यारे बज्रसूरि वोद्या के “हे तो सज्जीपुत्रना शिष्य सोम-पुत्र ! तुं बहार रहीने शी रीते अन्यास करी शकीश ?” आर्यरक्षिते कहुं के “हे स्वामी ! श्री जज्जगुप्त सूरिनी शिक्षाधी में निव उपाध्यमो आश्रय कर्यो छे.” ते सांजलीने बज्रस्वामीए उपयोग आप्यो, एटजे ते निमित्त जाणीने वोद्या के “झानना सागर समान ते पूज्य सूरिए तने युक्तज कहुं त्रे.” पड़ी श्री बज्रस्वामीए तेने पूर्वनी वानना आपवा मांझो अने आर्यरक्षिते ग्रहण करत्रायांसी. अनुक्रमे थोका समयमांज तेणे नव पूर्वनो अन्यास करी हीधो. पड़ी दशमुं पूर्व ज्ञानवाने भवतेज्ञा आर्यरक्षित मुनिने गुरुए कहुं के “हवे दशमा पूर्वना यमकने जज्जदी ज्ञान.” एटजे आर्यरक्षिते करिनतवालां यमकने पण शिष्य ज्ञानवा ज्ञान्या.

अहीं आर्यरक्षितना वियोगधी पीडा पापता तेना मातापिताए तेने वोद्यावा भोटे फड्युरक्षितने मोक्ष्यो. एटजे ते नानो जाइ मोदा जाइ पासे आत्रीने वोद्यो के “हे जाइ ! तमे आपणा कुटुंबने प्रतिवोध आपो, मारी साथे घेर चाहो, अने घने पण तमारी दीक्षा आपो.” ते सांजलीने तेणे नाना जाइने दीक्षा आपनि गुहेने विनंति करी के “हे स्वामी ! आपनी आहाहा होयतो हुं मारा मावापने भविवोध करता भोट मारे गाम जानुं.” गुरु वोद्या के “हे वत्स ! तुं अन्यास कर, घेर जा नहीं.” यमकनी विपपत्ताधी खेद पायेज्ञा तेणे फरीदी गुहेने पूछ्यु के “हे स्वामी ! मैं दशमा पूर्वमां बेटज्ञा अन्यास कर्यो ?” गुरु ह-

सोने बोध्या के “ हे वत्स ! दशमा पूर्वतुं एक विष्टुमात्रतें ग्रहण कर्यु छे, अने समुद्र जेड्कुं वाकी रहुं छे; परंतु तुं खेद केम करे छे ? तुं लघ्यमी छो; वढी शुच्छिशाळी छो, तेव्री जड्हदी पार पामी जड्हा.” आ प्रमाणे गुरुए तेने अन्यास करवाने माटे उत्साहित कर्यो, तोपण ते नाना ज्ञाइ सहित वारंवारः गुरुः पासे: ज-इने कहेवा द्वाग्यो के “ आ मारो ज्ञाइ मने बोद्धाववा माटे अर्हां आव्यो छे, माटे आप मने त्यां जवानी आङ्गा आपो..” त्यारे गुरुए शुतनो उपयोग आप्यो.. ते उपरथी तेमने जणायुं के “ आ आर्यरक्षित गया. पडी शीघ्र पागो आवश नहीं, अने मारुं आयुष्य हवे वहु थोहुं रहुं छे, तेवी दशमुं पूर्व तो मारामांज रहेशो, कोइ ग्रहण करजो नहीं.” आ प्रमाणे जावीजाव जाणीने श्री बज्रस्वामीए. तेने ज-वानी रजा आपी. पछी आर्यरक्षित मुनि पोताना ज्ञाइ. फलगुरक्षितनी साथे दश-पुर नगरे आव्या. त्यां धर्मदेशना आपीने पोताना समग्र कुटुंबने प्रतिवोध प्रमाण्यो, अने राजा पण समकित पाम्यो.

एकदा श्री सौधर्मेन्द्र महाविदेह केवरमां विचरता श्री सीमन्थर जिनेश्वर, ने वंदना करवा गया. त्यां पञ्चना मुख्यी सूद्धम निगोदतुं स्वरूप सांजलीने तेणे पञ्चने पूछर्यु के “ हे स्वामी ! जरत केवरमां आवुं सूद्धम निगोदतुं स्वरूप कहेनार कोइ छे ? ” पञ्चए कहुं के “ आर्यरक्षित छे. ” ते सांजलीने इन्द्र जरतकेवरमां आव्या. त्यां आर्यरक्षित सुरिने वंदना करीने सूद्धमनिगोदतुं स्वरूपे पूछर्युं, एव्वें सूरिए सूद्धम निगोदतुं स्वरूप यथास्थित कही वताव्युं. ते सांजलीने हर्ष प्रामेज्वा इन्द्र स्वस्थाने गया. त्यार पडी श्री आर्यरक्षित स्वामीए अनुयोग पृथक् पृथक् स्थापन कर्या, अने प्रांते आयुष्य पूर्ण थतां अनश्वन करीने स्वर्गे गया.

“ कामकीमा संवंधी मुख्यानां स्थानभूत एवी नवोदा स्त्रीनो त्याग करीने नवीन शास्त्रार्थ ग्रहण करवामां उच्यमी द्येवा आर्यरक्षित सूरि देवेन्द्रने पण वंदन करवा योग्य थया. माटे वीजा जब्य प्राणीओए पण तेवी रीते बृत्युं. ”

व्याख्यान ३२९ मुं.

मूर्ति तजवा विषे.

मूर्तिच्छन्नधियां सर्वं, जगदेव परिग्रहः ।

मूर्तिया रहितानां तु, जगदेवापरिग्रहः ॥ १ ॥

नावार्थ—“मूर्तियी जेनी बुद्धि आडादित थयेझी ते एवा माणसोने आखुं जगत परिग्रह रूप भे, अने मूर्तियी रहित थयेझाने जगतज अपरिग्रह रूप भे.”

मूर्तियां मग थयेझा जीवोने सर्वं जगत पोकानुं थयुं नथी, तोपण तेना परिग्रह रूपज भे. केमके ते ‘हुं सर्वं जगतनो स्वामी थाउं, तेनो जोका थाउं’ एवी इचाथी युक्त भे, अने मूर्तिए करीने रहित थयेझा प्राणीने ‘पुद्गविक सर्वं वस्तु आत्माथी निन्न भे अनं अग्राद्य छे.’ एम विचारीने सर्वनो त्याग करवाथी जगत परिग्रह रूपे नथी. अहीं कोइने संदेह थाय के “जीव अने पुद्गल (शरीर) एक केत्र अवगाहीने रहेझा होवाथी जीझेने ते पुद्गलनो परिग्रह केम न कहेवाय ?” तेनो उत्तर कहें भे के ‘जीवने ते पुद्गल उपर रागदेष्पनी परिणति थाय, तोज ते परिग्रहपणाने पामे भे, अने रागदेष्पनी परिणतिनी त्याग करवाथी श्रमण गुण प्रगट थाय भे.’ आ प्रसंग उपर संयत मुनिनो संबंध भे ते आप्रमाणे—

संयत मुनिनी कथा.

कांपीव्यपुर नामना नगरमां संयत नामे राजा राज्य करतो हांतो. ते एकदा मृगपा करवा बनमां गयो. मांसना स्वादमां द्वुच्छ थयेझो ते राजा अथ उपर चढीने त्रास पामेझा मृगोनी पाडल तेमनो वध करवा दोड्यो. ते यनना कोइ एक भद्रेशमां एक मुनि धर्मःयानमां मग रहेझा हता. ते मुनिनी पासे आवता मृगोने ते हणवा लाग्यो. तेवामां मुनिने जोझेने ते जय पास्यो, एट्टे तेने बंदना करीने गा थोड्यो के “हे पूज्य ! आ मृगना वधयी थयेझो मारो अपराध माफ करो.”

मुनि ते ध्यानमां होवाथी मौन रहेक्का हता तेथी तेपेणे राजाने काँइ जवाब आप्यो नहीं, एट्ट्वे तो राजा अधिक जयभ्रांत थयो, अने विचार करवा लाग्यो के “ क्रोध पामेङ्गा आ मुनि कोण जाए शुं करज्ञो ? ” फरीथी ते हाथ जोङ्गीने जयथी वोङ्ग्यो के “ हुं संयत नामे राजा दुं, माटे मारापर कृपा करी मारी साये वोङ्गो, तमे क्रोध पामेङ्गा जणाओ छो, तेथी तेजवके कोटी मतुष्योने जस्त करवा समर्थ दो. ” आ प्रमाणे सांजलीने मुनि वोङ्ग्या के “ हे राजा ! तने अन्नय डे, तने कोइ वालीने जस्त करतुं नयी. ” ए रीते राजाने आधासन आपीने मुनिए तेने धर्मापदेश आप्यो के “ हे राजा ! आ संसार अनित्य छे, तो तुं हिंसामां केम आसक्त थाय डे ? नरकना हेतुचूल हिंसा करवी तने योग्य नयी. जेम तने मृत्युनो जय डे तेम वीजा प्राणीओने पण मरणनो जय डे, माटे परद्वोकना हिततुं कार्य कर, स्त्री, पुत्रो अने आ देह पण जीवतानी पाउळ जीवे डे, अर्थात् तेणे मेल-वेङ्गा ज्वादिकनो उपज्ञोग करे डे. पण ते जीव मृत्यु पामे छे त्यारे ते स्त्री पुत्रादिक तेनी पाउळ जता नयी. माटे तेओ शी रीते आ जीवना सहायतूत थाय ? तेथी ते सर्व कृतद्वीयो उपर आस्या करवी योग्य नयी. माटे तुं सर्व परिहनो त्याग करीने चारित्रिने अंगीकार कर. ” इत्यादि धर्मापदेश सांजलीने राजाए तत्काल राज्यक्रियानो त्याग करीने ते गर्द्जात्रि मुनिनी पासे प्रव्रज्या ग्रहण करी.

ह्ये ते संयत मुनि सामाचारीमां आसक्त यईने अप्रतिवद्धपेणे विहार करता कोइ गाम्मां गया, त्यां कोइ एक मुनि स्वर्गथी चबीने कृत्रिय राजा थयो हुतो, तेने काँइक निर्मित मळवाथी जातिस्मरण झान थयुं हतुं, तेथी वैराग्य पामीने तेणे पण दीक्षा दीधी हुती. ते मुनिए विहार करतां संयत मुनिने जोया. एट्ट्वे तेनी परीक्षा करवा माटे तेणे पूछ्युं के “ हे मुनि ! तमारु नाम दुं ? गोत्र शुं ? अने शा माटे तमे आ प्रव्रज्या अंगीकार करी डे ? ” ते सांजलीने संयत मुनिए जवाब आप्यो के “ मारु नाम संयत मुनि डे, मारु गोत्र गौतम डे. गर्द्जात्रि नामना आचार्य मने उपदेश आपीने जावाहिंसाधी निवृत्ति पमाङ्ग्यो डे, अने मुक्तिरूप फल बतावीने तेनी प्राप्ति माटे मने दीक्षा आपी डे. ” ते सांजलीने संयत मुनिना गुणथी जेनुं चित्त हार्षित थयुं डे एवा ते कृत्रिय मुनिए फरीथी क्षुं के “ क्रियावादि प्रमुख सर्वे एक एक अंशनुं ग्रहण करवाथी यथार्थ वस्तु स्व-

रुपने जाणी शकता नथी अने कही पण जकता नथी. तेथी असत्प्रस्तुपणानो त्याग करीने तपारे सच्चर्पशीक्ष थवुं. ( स्याजाद धर्ममां हठ थवुं. ) वळी—

**परिग्रहग्रहवेशादुर्जपितरजःकिराः ।**

**श्रूयन्ते विकृताः किं न, प्रद्वापा द्विंगिनामपि ॥ १ ॥**

जापार्थ—“ परिग्रहल्पी ग्रह ( जूतादिक ) ना आवेशयी उत्सूत्र जापणरूप रजवमे व्यास थेद्वा अने दोपरूप विकारवाळा जन वेप विनं- वकोना पण मद्वापो ( असंवद्द वचनव्यूहो ) शुं नथी संजलाता ? अर्थात् संजलाय ते. ”

परिग्रहल्प जे ग्रह तेना आवेशयी ग्रस्त अने परिग्रहमां आसक्त थेद्वा मुनिवेषयारी पण झान पृजनादिकनो उपदेश करीने परिग्रह मेलवयानी इच्छाधी उत्सूत्र प्रस्तुपणा झारे ते.

फरीथी पण कृत्रिय मुनिए महा पुरुषोना हषांतवने स्थिर करवा माटे संयत मुनिने कहुं के श्री उत्तराख्यनना अद्वारमा अध्ययनमां कथुं ते के—

**एयं पुण्यपर्यं सोच्चा, अत्थधर्मोवसोहियं ।**

**जरहो वि ज्ञारहं वासं, चिच्चा कामाइ पद्ववए ॥ २ ॥**

जापार्थ—“ आ प्रमाणे अर्ध अने धर्मधी उपशोनित एवं पुण्यपद ( पवित्र पद ) सांजळीने जरत्तकीए पण जरत्तकेत्तनो अने कामादिकनो त्याग करीने प्रवृज्या ग्रहण करी. ”

एकज वचनने सांजलीने संयत मुनि चारित्र पाठवामां चिशेप आदरवाला थपा.  
ते प्रमाणे वीजा विज्ञानोए पण अनुसरुं. ”

॥३३०॥

इत्यद्विनपरिमितोपदेशप्रासादवृत्ता द्वाविंशतिमस्तंजस्य  
नवविंशत्यधिकत्रिशततमः प्रवंधः ॥ ३३० ॥

## व्याख्यान ३३० मुं.

अनुज्ञव विषे.

व्यापारः सर्वशास्त्राणां, दिग्प्रदर्शन एव हि ।

पारं तु प्रापयत्येकोऽनुज्ञवो नववारिधेः ॥ १ ॥

नाथार्थ—“ सर्व शास्त्रोनो व्यापार तो दिग्प्रदर्शन मात्रज डे, परंतु भव-  
समुद्भवा पारने तो एक अनुज्ञवज पमाणे डे. ”

सर्व शास्त्रोनो तथा अनुयोग कथादिकनो ( धर्म व्याख्यानादिकनो ) जे  
व्यापार एटडे अन्यास श्रवण विगेरे डे, ते मात्र दिग्प्रदर्शनज डे. जेम कोइ घटे-  
मार्ग कोइ माणसने कोइ गामनो मार्ग पूछे डे तो ते माणस तेने मात्र मार्गज बतावे  
डे. पण गामनी प्राप्ति तो पौताना पण चब्बाववाथीज थाय डे. ए प्रमाणे शास्त्रोनो  
अन्यास माव तत्त्वसाधनना विधिनेज बतावे डे. पण संसारसागरना पारने तो एक  
अनुज्ञवज पमाणे डे. श्री सुयगमांग विगेरे सूत्रोमां अध्यात्मनावे करीनेज सिच्छ  
कहेढी डे. तेथी सद्गुरुना चरणनी सेवा करनारे आत्मस्वस्फुपना ज्ञासंसार  
तन्मयपणे उपजाववुं. आ प्रसंग उपर आज्ञिरिने उगनार वणिकनी कथा छे ते  
आ प्रमाणे—

इत्यादि गुरुना उपदेशथी प्रतिवोध पोमेद्धा! वणिके गुरुने कहुं के “ हे गुरु ! बंयुदर्गनी रजा-ब्रह्मने दीक्षा देया माटे हुं अहीं पात्रो आवुं, त्यां सुधी आप अहींज रहेजो। ” एम कहीने थेर जड तेणे सर्व स्वजनने तथा पोतानी स्त्रीने कहुं के “ आ छुकानना वेषारथी मने घणो अद्य लाज मले बे, माटे घणो लाज मेलवेदा सारु मारे परदेश वेपार करवो बे; तेने माटे अहीं वे सार्थवाह बे। तेमां एक सार्थवाह एवो बे के ते पोतानुं धन आपीने इष्टित नगरमां लाइ जाय बे अने मेलवेदा धनमां पोते ज्ञाग देतो नथी; अने यीजो सार्थवाह एवो बे के ते पोतानुं धन आपतो नथी अने तेनी सेवा करतां ते प्रथमनुं उपार्जन करेकुं सर्व धन पण लाइ देव बे: तो तमो सर्व कहो के हुं क्या सार्थवाहनी साथे जाऊ ? ” त्यारे सर्व वोद्यो के “ तुं पहेद्वा सार्थवाहनी साथे जा। ” ते सांजळीने ते वणिक सर्व बन्धुओने लाइने वहार उद्यानमां आध्यो, त्यां बंयुओए “ सार्थवाह वर्या बे ? ” एम पूछयुं, त्यारे ते वोद्यो के “ आ दृक्णनी नीचे बेड़वा सिच्छिपुरीना सार्थवाह आ साथु छे, ते पोताना धर्मस्पी धनने आपीने हंमेद्धां वेपार करावे बे, अने तेमां जे लाज मले छे तेमांधी ते लेशमाल पण ग्रहण करता नथी, तेयी आती साथे इच्छेदी एवी सुक्तिपुरीए हुं जड़ा, वीजो सार्थवाह ते स्त्री स्वजन विमरे जाणवा, ते पूर्वनुं धर्मस्पी धन लाइ ज्ञेबे, अने नवुं धन वीजकुल आपता नथी, माटे तपेज मने आनन्दधी कहुं बे के पहेद्वा सार्थवाह जोडे जा, तेयी हुं तमारा सर्वनो संवंध मूकीने आ मुनिनोज आथ्रय करुं हुं। ”

**श्लुदीर्य स वणिग् मुनिपाश्चे, बन्धुमोहंमपहाय महात्मा ।**

**प्राप सानुन्नवधर्मसुदारं, सौभ्यमत्र परत्र च द्वेजे ॥ १ ॥**

**ज्ञावार्य—**“ एम कहीने ते महात्मा वणिक बंयुपस्ना मोहनो त्यां करीने मुनिनी पासेथी अनुनववाला उदार धर्मने अंगीकार करीने आ लोक तथा प्रश्नोक्तं सरव एम्यो। ”

# उपदेश प्रासाद.

स्तंभ २३ मो

व्याख्यान ३३१ मुं.

योग विषे.

मनोवाक्याययोगानां, चापद्वयं छुःखदं सतंम् ॥

तत्यागान्मोक्षयोगानां, प्राप्तिः स्याङ्गिज्ञतादिवत् ॥१॥

जावर्य—“ धन वचन अने कायानी चपलता छुःखदायक कहेही छे। ते चपलतानो त्यांग करवायी उश्मितमुनि विगेरेनी जेम मोक्षयोगनी प्राप्ति थाय छे। ”

उश्मितमुनिनी कथा.

नंदिपुरमां रत्नशेखर नामे राजा राज्य करतो हतो। तेने रत्नमती विगेरे राणीओ हती। तेमने मृतवत्साना<sup>१</sup> दोपने लै। लटझां वाल्को थतां ते सर्व मरी जतां हतां। ते दोपना निवारण माटे तेणे अनक उपायो कर्या, पण ते सर्व निष्फळ थयो। एकदा राणीने एक पुत्रनो मसन थयो। ते पुत्रने मरण पामेझोज शारीने उकरडामां नांखी दीधो। दंववशे ते पुत्र मरण पाम्यो नहीं; तेथी तेने उकरडामां थी पांगो छाइ छीधो। तेनु नाम उश्मित कुंमार पाम्युँ। अनुक्रमे ते युवावस्था पाम्यो। पांतु स्वज्ञावेज मनमां अत्यंत अहंकारी थयो। शरीरको पण एवो अहंकारी थयो के कोइने मस्तक पण नमावे नहीं, तेम बाणीथी पण छुर्वचन थोझनारो थयो। आखां जगत्तेन तुण सपान गणतो सतो रत्ननी जेम अकरु रहीने पोतामा माता-

<sup>१</sup> मरेला वालक थवत्तो तेवो दोय.

पिताने पण नमे नहीं। एकदा तेलेख्यशाळामां गयो, त्यां जणावनार गुरुने उंचेआ-  
सने वेतेवा जोइने तेणे करुं के “ ओ ! हुं अमारा अने अमारी रैयतना आवे-  
ला दाणानो खानार घड्हने उंचा आसनपर घेसे डेहे, अने मने नीचे वेसाने डेहे। ”  
एम कहीने गुरुने व्हात मारी नीचे पाढी दीधो, ते वात सांजळीने ‘ आ कुपुष्ट  
रे ’ एम जाणी राजाए तेने पोताना देशमार्थी दूर कर्यां।

उक्षित कुमार चाक्षतो चाक्षतो एक तापसना आथ्रममां गयो, त्यां पण  
उपर पग चढावीने ते तापसोनी सामे वेतो, एटझे तापसोए तेने शिखामण आपी  
के “ हे जाग्यशाळी ! विनय राख. ” ते वोद्यो के “ मस्तक्पर जटाझुड राखना-  
रा अने आवे शारीरे जस्त चेल्हनारा नम वावाओने विये विनय शो ? ” तेवृंग-  
विष्ठु वचन सांजळीने तापसोए तेने तरत त्यांथी काढी मूक्यो, एटझे ते क्रोधथी  
वोद्यो के “ ओ ! मारा पितानुं हुं राज्य पामीश त्यारे तमारो निग्रह करीश. ”  
एम कहीने वमवर्तो वमवर्तो ते आगळ चाव्यो, मार्गमां तेने एक सिंह मळ्यो, तेने  
जोइने हाथमां तीक्ष्ण खरुग छाझ अहंकारथी तेनी सन्मुख्यन चाव्यो, सिंहनी  
साधे युद्ध थतां सिंह तेने खाइ गयो, ते मरीने गर्देज थयो, त्यांथी मरीने उंट थ-  
यो, त्यांथी मरीने फरीथी नंदिपुरमांज पुरोहितनो पुत्र थयो, वाव्यावस्थामांज ते  
चौद विद्यानो पारगामी थयो, त्यां पण अहंकारथीज मृत्यु पामीने तेज नंदीपुर-  
मां गायन करनारो रुंव<sup>१</sup> थयो, तेने जोइने पुरोहितने तेनापर घणो स्नेह यवा ज्ञा-  
यो, एवामा कोइ केवळज्ञानी ते गामे पथार्यो, तेने पुरोहिते नम्रताथी पूछ्युं के  
“ हे पूज्य ! आ रुवनापर मने घणो भेम थाय डे तेतुं शुं कारण ? ” त्यारे केव-  
ळीए तेना पूर्वजवर्तुं सर्व वृत्तान्त<sup>२</sup>, ते सांजळीने ते गायकने जातिस्मरण ज्ञान  
थयुं, तेयो ते केवळी परमात्मानो वचन सांजळवानो रसिक थयो, पडी ते गायके  
पोताना उच्चारनो उपाय पूछ्यो, त्यारे श्री केवळीए अनेक स्याह्याद पक्षथी यु-  
क्त एवं भन, वचन अने काया रूप ब्रण योगानी शुच्छितुं स्वरूप प्रकाशित कर्यु, त-  
था मोक्षना हेतुरूप पांच योगना स्वरूपतुं पण निहृषण कर्यु, ते आ प्रमाणे—

मोङ्केण योजनाव्योगः, सर्वोऽप्याचार इव्यते ।

विशिष्य स्यानवर्णार्थाद्वन्द्वनैकाभ्यगोचरः ॥ १ ॥

जावार्थ—“ सर्वे आचार मोक्षनी साये योग करनार होवाथी योग रूप कहेद्वा डे, तेमां पण स्यान, वर्ण, अर्थ, आद्वंवन अने एकाग्रता ए पांचने विशेष करीने योगरूप मानेद्वा डे । ”

अहीं मिथ्यात्वादिकना कारणचूत एवा मन, बचन, कायाना योग कर्म-दृच्छि करवाना हेतुचूत होवाथी ग्रहण करवा नहीं ; पण मोक्ष साधनना हेतु-चूत योग्युं ग्रहण करवूँ, समग्र कर्मनो जे क्रय ते मोक्ष डे, मोक्षनी साये जोक्षनार होवाथी ते योग कहेवाय डे. जिनशासनमां कहेद्वो चरण सप्तति, करण सप्तति रूप सर्व आचार मोक्षना उपायचूत होवाथी योग डे. तेमां पण स्यान, वर्ण, अर्थ, आद्वंवन अने एकाग्रता ए पांच प्रकारना योगने विशेष करीने मोक्षसाधनना उपायमां हेतु मानेद्वो डे. अनादि काळथी पर जावामां आसक्त थयेद्वा प्राणी-ओ जबभ्रयण करनार होवाथी पुद्गलना जोगविद्वासमां यथ थयेद्वा होय डे तेमने आ योग प्राप्त थतो नयी. परंतु अमारे तो एक मोक्षज साध्य डे, एम धारीने जे प्राणी गुरुस्मरण तथा तत्त्वजिज्ञासा विगेरे योगव्रक्ते निर्मल, निःसंग अने परमानंदमय आत्मस्वरूपने संजारीने तेनीज कथा सांजल्यमामां प्रीति राखे डे ते प्राणीने परंपराए आ योग सिद्ध थाय डे. पण दूरदेवा मातानी जेम सर्वे प्राणीओ-ने अवृप्त प्रयासे सिद्धि थती नयी. केमके ते महेद्वा माताने तो आशातनादिक दोष अत्यंत अवृप्त हता, तेथी तेने प्रयास विनाज सिद्धि प्राप्त यश्च हती; अने बीजा जीवोने तो आशातनादि दोष अत्यंत होय डे, तेयी गाढ कर्मना वंधनवाला होवाने द्वीघे तेमने तो स्यानादिक कमे करीनेज सिद्धि प्राप्त थाय डे.

तेमां स्यान एट्डे वंदना करवी, कायोत्सर्गे उजा रहेवुं, वीरादिक आसन बालवा तथा मुद्दाओ करवी विगेरे, वर्ण एट्डे अक्रोरोना शुद्ध उच्चार करवा, अर्थ एट्डे वाक्यनो जावार्थ चितव्वो, आद्वंवन एट्डे अहंतस्वरूपवाच्य पदार्थमाज उपयोग राखवो, अने एकाग्रता एट्डे शुद्ध स्वरूपमां निश्चिन्ता थवी. ज्यां मुष्ठी ध्याननी एकता न थाय त्यांमुष्ठी अंगन्यास ( आसन ), मुद्रा अने वर्णनी शुद्धि पूर्वक आवश्यक, चैत्यवंदन, परिक्षेहण विगेरे क्रियाओ उपयोगनी चंपळताना निवारण मार्दे अवश्य करवी. केमके ते सर्वे जीवोने अतिशय हिंतकारी डे, अने स्यान, वर्णना क्रमधीज तत्त्वनी प्राप्ति थाय डे.

हवे ते पांचे योगमां वाय अने अन्यंतर साधकणां वतावे डे. योगपञ्चकमां स्थान अने वर्ण ए डे कर्मयोग वाय डे, अने वाकीना व्रण झानयोग ते अन्यंतर डे. आ पांचे प्रकारना योग देशविरति अने सर्वविरतिने विषे अवश्य होय डे. आ पांच योग चयङ्गतानी निवृत्तिमां कारणस्पृष्ट डे. मार्गानुसारी विग्रेमां आ योग वीज मात्र होय डे.

आ प्रमाणे केवळीना मुख्यी धर्मोपदेश सांजळीने संसारनी अनित्यता जाणी पुरोहित अने कुंव वने शुद्ध धर्मने अंगीकार करी पाकीने स्वर्गे गया. त्याधी द्यवीने अनुकमे मुक्तिने पामझे.

स्थान विग्रे पांच प्रकारना सुयोग मोक्षनी प्राप्तिमां कारणस्पृष्ट डे. ते योगने मन, वचन अने कायानी शुद्धि पूर्वक उद्धित साधुए धारण कर्या. ते प्रमाणे वीजा जब्य जीवोए आ योगने विषे आदर करवो.

इत्यददिनपरिमितोपदेशप्रासादवृत्तौ व्रयोविश्वतितपस्तंजस्य  
एकविश्वादधिकविश्वततमः प्रवंथः ॥ ३३१ ॥

## व्याख्यान ३३२ सुं.

यह विषे.

व्रह्माध्ययननिष्ठावान्, परब्रह्मसमाहितः ।

व्राह्मणो विष्यते नाघैर्निर्यागप्रतिपत्तिमान् ॥ १ ॥

जावार्थ—“ व्रह्म नामना अध्ययनमां निष्ठावालो, परब्रह्ममां अने निरंतर याग जे कर्मदहन तेनी प्रतिपत्तिवालो क्षेपातो नर्थी. ”

आचारांग सूत्रना प्रथम श्रुतस्वर्ण  
र्यादामां वर्तनार, परद्वय एवज्ञे शुद्ध

अने कर्मद्रहन करवा रूप जे याग तेनी अत्यंत निष्पत्तिवालो एवो ब्राह्मण एट्क्षे द्रव्यजावधी ब्रह्मचर्यनुं पावन करनार मुनि पापकर्मधी किस थतो नदी, हवे याग केण यह तेनुं वर्णन करे डे.

यह वे प्रकारनो डे. ज्यव्ययह अने जावयह. तेमां गोमेध, नरमेध, गंजमेध, गागमेध विगेरे द्रव्ययहर्षा अवश्य प्राणीनो वथ थाय डे. ते द्रव्ययहना करावनारा आचार्यो निर्दियताथी एवां वाक्यो बोझे छे के—

यज्ञार्थं पशवः सृष्टाः, स्वयमेव स्वयंज्ञुवा ।

यज्ञोस्य चूत्यै सर्वस्य, तस्माद्यज्ञे वधोऽवधः ॥

इत्यादि.

ब्रह्माए पोते यहने माटेज पशुओ उत्पन्न कर्या डे, अने यह आ सर्व जंगत्ना कल्पाण माटे डे, तेथी यहांना जे वथ थाय ते वथ ( हिंसा ) कहेवाय नहीं. आपाधीओ, पशुओ, वृक्षो, पक्षिओ अने तिर्यचो यहांना मरण पापवाधी उंची गति ( स्वर्ग ) ने पामे डे. तज्ज, वीहि, जब, अडद, जल, मूळ अने फल विधि-पूर्वक आपवाधी मनुव्यो पर पितृदेवताओ एक मास सुधी प्रसन्न रहे डे, मत्स्यनुं मांस आपवाधी वे मास सुधी प्रसन्न रहे डे, हरिणनुं मांस आपवाधी त्रण मास, घेयना मांसथी चार मास, पक्षिना मांसथी पांच मास, वकराना मांसथी छ मास, दृष्ट् जातिना मृगना मांसथी सात मास, एण जातिना मृगना मांसथी आठ मास, रुहजातिना मृगना मांसथी नव मास, चुंक अने महिपना मांसथी दश मास, सस-द्वा अने काचवाना मांसथी अगियार मास, गायनुं मांस, छुध अथवाखीरथी एक वर्ष, अने धरमा वकराना मांसथी वार वर्ष सुधी पितृदेवनी तृसि थाय डे. आ प्रमाणे सृतिमां कहेद्वारी हकीकितने अनुसारे पितृना तर्पणने माटे मूढ़ पुरुषो जे हिंसा करे डे ते पण छुर्गितिने माटेज डे. ए प्रमाणे योगशास्त्रना चीजा प्रकाशमां कायु डे.

प्रबोध चिंतामणिमां स्मृतिने अनुसरनारा स्मार्तोने शिक्षावचन कायु डे के “ जो ब्राह्मणो वेदना मंत्रो शक्तिवाला डे एम कहेता होय तो हणवानो व्यापार कर्या विनाज मान्र मंत्र बोद्धवाधीज वकराओना प्राण जवा जोहए. जो वेदना मंत्रोनी शक्ति विषे कांद पण प्रमाण होय तो हणवाता वकराओने वेदना न थवी ”

( ४४७ ) उपदेशमासाद जापोत्तर-ज्ञाग ५ मो संन श्रृङ् मो.

रांथवानी तपेक्षीमां दैवयोगे अग्राण्यतां सर्वं रंथाइ गयो हृतों, नेथी खाइ रखा पड़ी वामदेवने विष चक्षुं, सुमित्रे नवकारं मंत्रं जणीने ते विष उत्तार्युं, पड़ी सुमित्र तेने केवली पासे छाइ गयो, त्यां वामदेव पोतानो पूर्वं जयं सांजलीने प्रतिबोधं पाम्यो, पड़ी वामदेवे केवली गुरुने जावयहनुं स्वरूपं पूछ्युं, त्यारे केवली बोध्या के—

**इन्द्रियाणि पश्चान् कृत्वा, वेदीं कृत्वा तपोमयीम् ।**

**अहिंसा आहुतीर्दयादेप यङ्गः सनातनः ॥ १ ॥**

जावार्य—“इन्द्रियोने पशुरूप करीने अने तप रूपी वेदी ( कुंक ) करीने अहिंसा रूपी आहुति देवी, ए सनातन जावयहा कहेज्ञो डे.”

केवलीना वाक्यधी प्रतिबोधं पामेज्ञो वामदेव जावयहा करवामां रसिक थयो, पड़ी तेणे पोताना पिताने जह्ने कहुं के “हुं दीक्षा बाँड़ बुं.” पिताए जवाव आप्यो के “तुं पुत्ररहित डे माटे ‘अपुत्रस्य गतिर्नास्ति’ पुत्ररहित माणसनी सद्गति थती न दी.” ते सांजलीने वामदेव बोध्यो के—

**जायमानो हरेदुन्नार्या, वर्धमानो हरेष्वनम् ।**

**भ्रियमाणो हरेत् प्राणान्, नास्ति पुत्रसमो रिपुः ॥ १ ॥**

जावार्य—“पुत्र उत्तम थतांज जार्यानुं हरणं करे डे; मोदे थता धननुं हरण करे डे, अने कटी मरण पार्मे तो माणोनुं हरण करे डे, माटे पुत्रसमान वीजो कोइ शत्रु न दी.”

इत्पादि युक्तिधी मातापिताने प्रतिबोधं पमानीने वामदेवे दीक्षा ग्रहणं करी अने आत्मकार्यं साध्युं.

“केवलीना वाक्यधी द्रव्ययहनो त्याग करीने जावयहा करवामा रसिक थपेज्ञा वामदेवे बक्रतानो त्याग करी झीघ्रताधी शिव सुखं प्राप्त कर्युं.”

॥४४७॥

स्त्यदिनपरिमितोपदेशमासादहर्ता ॥

ज्ञात्रिशदधिकत्रिशततमः ॥

# व्याख्यान ३३३ सं.

द्रव्यपूजा—नावपूजा.

स्थान्तेदोपासनारूपा, ऊव्याचारा गृहमेधिनाम् ।

अनेदोपासनारूपा, साधूनां भावपूजना ॥ १ ॥

नाराय—“ गृहस्थीओने नेदउपासना रूप द्रव्यपूजा होय छे, अने साधुओने अनेदउपासनारूप नावपूजा होय छे. ”

नेदउपासना रूप एड्डे आत्मायी अर्हन् परमेश्वर जुदा छे, प्राप्त थयेज्ञा आत्मानंदना विज्ञासी छे. तेनी उपासना एट्टे निमित्त आद्विवेन रूप सेवा ते रूप ऊव्यपूजा गृहस्थीओने योग्य छे, अने साधुओने तो अनेद उपासना एट्टे परमात्मा थकी पोतानो आत्मा अनिन्द्र एवा प्रकारनी नावपूजा योग्य छे. जोके अर्हन् नगवानना गुणनुं स्मरण कर्खु, तेमनुं बहुमान कर्खु, एवा उपर्योग रूप संविकल्प नावपूजा गृहस्थीओने पण छे, तोपण निर्विकल्प उपर्योगवाली आत्मस्वरूपना एकत्र रूप नावपूजा तो मुनिओनेज योग्य छे. आ प्रसंग उपरे एक संबंध छे ते नीचे प्रमाणे—

धनसार वणिकनी कथा.

श्रीपुर नगरमां जितारि नामे राजा राज्य करतो हतो. ते नगरमां धनसार नामनो एक वणिक रहेतो हतो, ते अत्यंत दरिच्छी होवायी कोइ पण स्थाने आदर पापतो नहीं पर्खु ते स्वजावे सरल हतो, अने हंसेशीं सद्गुरु पासे घर्मोपदेश श्रवण करतो हतो. एकदा तेणे विनय पूर्वक दीनवाणीयी गुरुने पृच्छयुं के “ हे स्वामी ! हुं दरिच्छी, छुःखी अने निर्धन केम थयो ? ” गुरुए कर्खुं के “ ते पूर्व ज्ञवे श्रीनिनेभरनी पूजा करी नयी, तेथी छुःखी ययो छे. हवे आ जन्ममां तुं द्रव्यपूजा तथा नावपूजा कर, जेथी तारा छुःखनो क्षय थाय. तेमां नावपूजातुं स्वरूप पूर्वाचार्योंए एवुं कर्णु छे के— ”

( श्वेत ) उपदेशासाद जापांतर-जाग ५ मो. स्तंन २३ मो.

दयांनसा कृतस्नानः , सन्तोषशुज्ञवस्त्रभृत् ।  
विवेकतिक्षकभ्राजो, जावनापावनाज्ञायः ॥ १ ॥  
नक्षिश्रद्धानघुसृणोनिमश्रपावरजद्वेः ।  
नवव्रह्णांगयुग्देवं, शुद्धमात्मानमर्चय ॥ २ ॥

जावार्थ—“हे उत्तम! जब्य अने जावथी स्वपरना प्राण रक्षण रूप द-  
या रूपी जळवरे स्नान करीने, पुद्गलिक सुखनी इच्छाना अज्ञाव रूप संतोष  
-तद्रूप वस्त्रे धारण करीने, स्वपरना विनागतुं जे ज्ञान-तद्रूप विवेकतुं तिज्ञक  
करीने तथा अरिहंतना गुणगानमां एकाश्रता रूप जावना वसे करीने पवित्र अं-  
तःकरणवालो थइने, नक्षि अने श्रद्धा रूप चंदनथी मिथ्र एवा केसरना द्रवे  
करीने नव प्रकारना ब्रह्मर्चय रूप नव अंगोने धारण करनार अनंत ज्ञानादि पर्यां-  
यवाला शुद्ध आत्मारूप देवनी पूजा कर.”

पत्री क्षमा रूपी पूज्यनी माला अर्पण कर, वे प्रकारना धर्म रूप वे अंग-  
शुहणा आगळ धर, ध्यान रूपी सार अङ्गकारोने तेना अंगमां निवेशन कर  
अप्र मदस्थानना त्याग रूपी अपुर्मंगळ तेनी पासे आलेख, ज्ञान रूपी अग्निमा  
शुज विचार रूपी काकतुंम (अग्रह) नो धूप कर, तेने धर्म  
उत्तारी धर्मसन्ध्यासरूप वहि स्थापन तेने तेषां क्रेति  
सामर्थ्यरूप आरति उत्तार.

इत्यादि ज्ञाव पूजातुं स्वरूप

जिनेभरनी पूजा, स्नाव,  
वार्थी दर्शन रहित (मिथ्यात्वी) जी  
जेने दर्शन गुण प्राप्तथयो होय डे तेने  
पूजा रत्नत्रयीनी प्राप्तिनुं कारण  
डे के “ हे जगवान ! जिनेभरनी  
शुं थाय ? ” जगवाने क्षमुं के “ हे  
जीवेने ज्ञान, दर्शन अने चारित्रियो

करवाथी पुद्गविक संपत्ति पण प्राप्त थाय डे, धन, धान्य, राज्य, चक्रवर्तीपणं तथा इन्द्रपणानी द्वादशी पण प्राप्त थाय डे अने डेवट चिदानंद संपत्ति (मुक्ति) पण प्राप्त थाय डे. ए प्रमाणे श्री जिनेश्वरनी सेवा वन्ने प्रकारनी द्वादशीनी प्राप्तिमां कारणचूत डे. ”

इत्यादि गुरुमुखयी धर्मदेशना सांचलीने धनसारे गुरुने पुढीने “आजधी श्री अर्हन्तनी पूजा कर्या विना मुखमां पाणी पण नांखवृं नहीं” एवो अनिग्रह ग्रहण कर्यो. ते दिवसथीज आरंभीने ते श्रेष्ठी हंमेशां जिनप्रतिमानी केसर, चंदन, कर्पूर (वरास) विग्रे सुगंधी ज्वयोधी अने सुगंधी एवा जाइ, पद्म, चंपो, केतकी, मालती, मचकुंद विग्रेनां ताजां पुष्पोधी पूजा करवा लाग्यो. ए प्रमाणे त्रिकरण शुच्छ वके निरंतर वहुमानयी श्री जिनेन्द्रनी प्रनुताने ज्ञान द्रष्टिस्फूर्त मार्गमां उत्तरीने पूजा करतां ते धनसारे घाणं पुण्य उपार्जन कर्यु. ते पुण्य ना ताल्कालिक उदयथी तेना धर्मां अनेक प्रकारनी द्वादशी प्रगट थइ; एड्झे विशेषे करीने जिननक्ति करता एवा ते श्रेष्ठीए जिनचैत्य, जिनविंश, पुस्तक अने चतुर्ंशिंघ संव ए साते कैत्रमां घाणं धन खरच्यु. ए प्रमाणे हंमेशां द्रव्यपूजा नाव-पूजा करतां धनसार श्रेष्ठी समकित पार्मी, देवतुं आयुष्य वांधी मनुष्यनवनुं आयुष्य पूर्ण घतां प्रथम स्वर्गमां देवता घयो. स्यांथी चवीने महाविदेह कैत्रमां उत्तम कुल्ने विषे उत्पन्न थइ सद्गुरु समीपे दीक्षा लइ मुक्तिसुखने पामरो.

“आ श्राद्धथर्मां धनसार श्रेष्ठीए जिनेश्वरनी पूजानुं फल शीघ्रपणे आ भवमांज मेलब्युं, अने पठीना जवमां चारित्र लाइने जावपूजानी विशुच्छिवके ते मुक्तिने पाम्यो. तेनुं इष्टात सांचलीने अन्य जब्य प्राणीओए पण इव तथा जाव ए वन्ने प्रकारनी पूजा अवश्य करवी.”

इत्यद्विनपरिमितोपदेशप्राप्तादवृत्तौ त्रयोविंशतितपस्तंजस्य  
त्रयस्त्रिंशादधिकत्रिशततमः प्रवर्णयः ॥ ३३३ ॥

## ध्यारव्यान् ३३४ सुं।

ध्यान विषे.

ध्याता ध्यानं तथा ध्येयमेकतावगतं त्रयम् ।

तस्य द्वनन्यचित्तस्य, सर्वद्वःखक्षयो ज्ञवेत् ॥ १ ॥

**ज्ञावार्थ—**“ ध्यान करनार, ध्यान अने ध्येय ते ध्यावाने योग्य-ए ब्रह्मेनी श्रैक्यता रूप ध्यान जेने प्राप्त थयेद्वुँ डे ते एकाग्र चित्तवालाना-तज्जूप चेतनावालाना-अर्हत् स्वरूप ने आत्मस्वरूपने तुद्य उपयोगपणे ग्रहण करनारना आत्मिक गुणने आवरण करनारा-रोकनारा सर्व द्वुःखोनो ( सर्व कर्मोनो ) क्षय थाय डे.” आ प्रसंगपां कृपकमुनिनो संत्रित डे ते आ प्रमाणे—

**कृपक मुनिनी कथा.**

कोइ एक मुनि निरंतर मासकृपणादिक अनेक छुस्तप तपस्यानुं आचरण करता सता एक छधानमां रहीने आत्मस्वरूपनुं ध्यान करता हृता, तेमना गुणधी प्रसन्न थयेद्वा॒ कोइ देवी हंमेशां ते मुनिने वंदन करी तथा स्तुति, करीने कहेती के “ हे मुनि ! मारा पर प्रसाद करीने मारा योग्य कांड कार्य बतावशो 。” एकदा ते मुनि कोइ ब्राह्मणना छुए बचन सांजलीने क्रोध पारी तेनी साथे युद्ध करवा लाग्या, मुनि तपस्यावसे अति कृश थयेद्वा॒ होवाथी ते ब्राह्मण तेने मुष्टि बिंगेना प्रहारथी मारीने पृथ्वीपर पानी नाख्या, फरीधी मुनि क्रोध करीने युद्ध कस्वा लाग्या, तोपण तेने ते ब्राह्मणे प्रहार करी पानी नाख्या, एम अनेक बार ते ब्राह्मणे तेमने प्रहारादिवसे जर्जरित करी नाख्या, एटले ते मुनि पराजय पामीने मांक मांक पोताने स्थाने आव्या, वीजे दिवसे प्रातःकाळमां हंमेशानी जेष ते देवीए आवीने मुनिने वंदना करी, पण मुनिए देवीनी सामुं पण जोखुं नहीं, तेम कांड थो-ध्या पण नहीं, तेथी ते देवीए पूछयुं के “ हे स्वामी ! क्या अपराधयी मारी साथे आजे तमे बोझता नवी ? ” मुनि उंचे स्वरे बोध्या के “ काढ्वे पेज्वा ब्राह्मणे मने मार्यो तोपण ते मारूं रक्षण कर्तुं नहीं, तेमन भारा ते शत्रुनो ते कांड अपकार पण कर्यो नहीं, माझ मात्र मीठां बचन बोझीने प्रोति बतावनारी एवी तने हवे हुं बोझावदा

इच्छतो नथीः” ते सांजलीने स्मितथी अधरोप्तुने कांतिमान करती देवी बोद्धी के “हे मुनि ! ज्यारे तमे वन्ने एक वीजाने वल्लीने युष्म करता हता, ते वखते कौतुक जोवानी इच्छावाली हुं पण त्यांज हती; परंतु ते वखते में तमने वन्नेने समान क्रोधवाला जोया. तेथी ‘आ वेमां सायु कोण अनें व्राद्धण कोण ?’ ए हुं जाणी शकी नहीं. तेथी करीने तमारी रक्षा अनें व्राद्धणने शिक्षा हुं करी शकी नहीं.” ते सांजलीने जेनो क्रोध शान्त थयो डे एवा मुनि बोद्धा के “हे देवी ! तें मने आजे वहु सारी भेरणा करी, तेथी हवे हुं आ क्रोधस्ती अतिचार दोपनुं मिथ्या छुफ्कृत आपुं दुं हे देवी ! में ध्यान रूप शास्त्रविद्यानो घणा यत्त्वथी अच्यास कर्यो डे, श्रवण कर्युं डे अने वीजाने शीखब्युं पण डे, तेमन्न तेनुं अनुमोदन पण कर्युं डे. तोपण खरे वखते ते मने स्मरणमां आव्युं नहीं.

शून्यं ध्यानोपयोगेन, विशतिस्थानकाद्यपि ।

कष्टमात्रं त्वन्नव्यानामपि नो छुर्वर्जनं चरेत् ॥ १ ॥

नावार्थ—“ध्यानना उपयोग विना मात्र कायक्लेशरूप वीश स्थानक विग्रेर तप अनन्य प्राणीओने पण छुर्वर्जन नथी, अर्थात् घणा अनन्य प्राणीओ पण तेवुं तप करे डे.” चित्तनी एकाग्रता रूप जे ध्यान-तेना उपयोगथी शून्य ए-वो वीशस्थानक विग्रेर तपसमूह मात्र कायक्लेशरूपज डे, ते तो अनन्योने पण छुर्वर्जन नथी. वादाचरण तो जैनोक्त पण घणा प्रकारे अनन्योए पूर्वे कर्या डे.

हवे ध्यान करनाराहुं स्वरूप कहे डे—

जितेन्द्रियस्य धीरस्य, प्रशान्तस्य स्थिरात्मनः ।

स्थिरासनस्य नासाग्रन्थस्तनेत्रस्य योगिनः ॥ १ ॥

रुद्रवाद्यमनोवृत्तेर्धारणाधारणारथात् ।

प्रसन्नस्याप्रमत्तस्य, चिदानन्दसुधाविहः ॥ २ ॥

साम्राज्यमप्रतिष्ठान्तरेव वितन्वतः ।

ध्यानिनो नोपमा बोके, सदेवमनुजोऽपि हि ॥ ३ ॥

चार्वार्थ—“ जेणे इन्द्रियोंनो जय करेलो छे, जे आत्मवीर्यना सामर्थ्य-  
वडे परीसह अने उपसर्गोंधी अकंप्य छे, जेना क्रोधादिक कपाय शांत ध्येयां छे,  
जेनो आत्मा साधन परिणतिमां सुखमय होवाथी स्थिर छे, जेणे चपलताना नि-  
रोपने माटे आसन स्थिर करीने नासिकाना अग्रजागे हट्टिने स्थापन करेदी छे  
( रत्नशयमां पम्प छे ), ध्येयमां चित्तने स्थिर कर्खुं ते धारणा तेना आधारधी जेणे  
याद मनोहृत्तिनो रोध करेलो छे, जे मनना काबुल्यधी रहित भसम छे, जे अङ्गाना-  
दिक आउ प्रमादधी रहित अप्रभत्त छे, जेणे चिदानंदरूप अमृतनो स्वाद  
दीधी छे, अने जे अन्तःकरणपांज अद्वितीय साम्राज्यनो एक्षे धायान्यंतर विपक्ष  
रहित स्वगुण संपदारूप स्वज्ञाव परिवारोपेत वकुराइनो स्वाधीन करवारूप  
विस्तार करे छे, एवा ध्यानी मुनिनी उपमा देवताओंमां के मनुष्योंमां काँइ पण नंथी,  
अर्हां तिर्यचने नारक छुर्गति होवाथी ग्रहण करेक्ष नयी, अर्धात् त्रिजुबनमां स-  
हजानंदविवासीनी तुक्कना करी शकाय एवुं उपमा साहश्य छेज नहीं। ”

हे देवी ! आ प्रमाणे अनेक प्रकारना ध्यानशास्त्रनुं उद्घांशन करीने में अ-  
योग्य कर्यु, ते उक्तीक कर्यु नहीं। ”

त्यार पछीधी ते मुनि निरंतर निश्चयचित्तधी ध्यान करवा हाम्या. देवा-  
दिके करेला उपसर्गोंमां पण भयमनी जेप चपलता करी नहीं. मेरुनी जेतुं निश्चल-  
ध्यान ध्याइने अंते स्वर्गे गया. परी ते मुनिने नक्तिपूर्वक नमन करीने पेक्षी देवी  
पोताने स्थाने गइ.

“ ध्यानथी ज्ञाए ध्येय मुनि अङ्गानी जेवोज छे; माटे कण्ठमां पण मुनिए  
ध्याननो त्याग करवो नहीं. ए आ कथानो सार छे. ”

॥३४॥

इत्यददिनपरिमितोपदेशप्रासादृत्यां त्रयोर्विशतितमस्तंजस्य  
चतुर्तिंशदधिकत्रिशततमः पर्यंथः ॥ ३४ ॥

## व्याख्यान ३३५ मुँ.

दुर्ध्यननां ६३ स्थानोरुं स्वरूप.

**त्रिपटिध्यानस्थानानि, उत्पन्नान्यार्तरौडतः ।**

**तत्स्वरूपं द्विखामि द्वितीयप्रकीर्णसूत्रतः ॥ १ ॥**

ज्ञावार्थ—“ आर्तध्यान अने रौडध्यानथी उत्पन्न थयेद्वां त्रेसत्र ध्यान-  
नां स्थानको डे. तेरुं स्वरूप वीजा प्रकीर्ण सूत्रथी ( आउरपचल्लवाणथी ) अ-  
त्रे द्वाणुं दुः । ”

आतुर प्रत्याख्यान नामना प्रकीर्णक सूत्र ( पयना सूत्रमां ) मां “ अश्वाण  
जाणे ” इत्यादि पात्र डे. तेमां दुर्ध्यननां त्रेसत्र स्थानको गणाव्यां डे.

१ अङ्गान ध्यान—“ अङ्गानज कव्याणकारी डे. केमके तेमां व्याख्यान  
वाचुं, जणवुं, जणावरुं चिंगेरे आयासनो आभाव डे. ” एम मनमां विचारवुं, ते  
अङ्गानध्यान कहेवाय डे. ते ध्यान झानपंचमीनी कथामां कहेद्वा चमुदेवाचार्ये क-  
र्युं हतुं, माटे तेवुं दुर्ध्यान ध्यावुं नहीं.

२ अनाचार ध्यान—अनाचार ते छुषाचार—दोपयुक्त आचारण, ते सं-  
वंधी ध्यान ते कौकण साधुए क्षेत्रमां अग्नि सळगाववा रूप कर्युं हतुं. तथा देवता  
थयेद्वा शिष्य कहेवा नहीं आववाथी चारित्रिनो त्याग करवाने इच्छता आपाह सू-  
रिए ते ध्यान कर्युं हतुं.

३ कुर्दीन ध्यान—बौद्धादिक मिथ्यादर्शननुं ध्यान सुरापू आवके  
कर्युं हतुं.

४ क्रोध ध्यान—कुद्दवालुक, गोशालक, पालक, नमुंचि, शिवज्ञुति वि-  
गरेए कर्युं हतुं.

५ मान ध्यान—वाहुवलि, सुचूम चक्री, परशुराम, हृषीथी आवेला  
संगमदेव विगरेए कर्युं हतुं.

६. माया ध्यान—अन्यने उत्तरवाहृप मायाध्यान आपादन्त्रिति मुनिए व्याख्या वहोर्वा भाष्ट कर्यु हतुं.

७. द्वोज ध्यान—सिंहकेसुरिया व्याख्या इच्छक साधुए कर्यु हतुं.

८. राग ध्यान—रागने अन्निष्वंगमात्र समजबो. तेना काम राग, स्नेह राग अने दृष्टि राग ए ब्रण प्रकार डे. तेमां विष्णुश्रीना उपर विक्रमयश राजाने कामराग थयो हतो. दामन्त्रकना सप्तरातुं पोताना पुत्रातुं मरण सांजलीने स्नेह रागने लीथे हृदय फाटी गयुं हतुं, अने कपिलने दृष्टिराग (दर्शननो राग) थवाथी ब्रह्म देवज्ञोक्तपांयी आवीनें पोताना मतना रागधी पोताना शिष्योने 'आसुरे रमसे' इत्यादि कर्यु हतुं. आ ब्रण प्रकारना रागातुं ध्यान न कर्यु.

९. अभीति ध्यान—अभीति एट्ड्वे अन्य उपर ज्ञोहनो अध्यवसाय अथवा द्रेप, ते ध्यान यज्ञनी शरुआत करावनारा मधुर्पिंग अने पिप्पद्व विगेरेने थयुं हतुं, तथा हरिंशनी उत्पत्तिमो वीरक देवने थयुं हतुं.

१०. भोह ध्यान—वासुदेवना ज्ञावने उषामीने ब्र मास सुधी फरनारा यज्ञज्ञने थाय डे ते समजवुं.

११. इच्छा ध्यान—इच्छा एट्ड्वे मनमां धारेलो व्याज मेलवयानी उत्कर्त अन्निष्वापा, तेनुं ध्यान ते इच्छाध्यान. ते वे माया सुवर्णना अर्थी कपिलने कोटी सुवर्णना व्याजमां पण इच्छानो अंत आव्यो नहोतो तेनी जेम समजवुं.

१२. मिथ्या ध्यान—मिथ्या एट्ड्वे विर्यस्त ( अवळी ), दृष्टिपाणु, तेनुं ध्यान ते मिथ्याध्यान. ते जमाल्लि, गोविंद विगेरेने थयुं हतुं.

१३. मूर्ढा ध्यान—मूर्ढा एट्ड्वे मास थयेद्वा राज्यादिक उपर अत्यंत आसक्ति, तेनुं ध्यान ते मूर्ढाध्यान. ते पुत्रोने उत्पन्न थतांज मारी नांखनार अथवा खोल खापणवाला करनार कनकध्वज राजाने थयुं हतुं.

१४. शंका ध्यान—शंकन ते शंका एट्ड्वे संशय करवो—तेनुं ध्यान ते शंकाध्यान. ते आपाद सुरिना अव्यक्तवादी शिष्योने थयुं हतुं.

१५. कांका ध्यान—एट्ड्ले अन्य अन्य दर्शननो अथवा पोताना दर्शननो आ-

यह अर्थात् कांक्षा, तेतुं ध्यान ते कांक्षाध्यान. ते “हे कपिल! त्यां पण धर्म छे अने अहीं मारा मतमां पण धर्म छे.” एम बोद्धनारा मरिचिने थयुं हतुं.

१६ शृंहि ध्यान—एट्टेआहारादिकने विषे अत्यंत आकांक्षानुं ध्यान. ते मयुराचासी मंगुसूस्तिने तथा ब्रतनो त्याग करनार कंमस्तिक राजाने थयुं हतुं.

१७ अशा ध्यान—एट्टेपारकी वस्तु मेलववानी अनिदित्तापानुं ध्यान. ते निर्दिय ब्राह्मणना पायेय प्रत्ये पायेय विनाना मूळदेवने थयुं हतुं.

१८ तृष्णा ध्यान—तृष्णापरिसहना उदयथी उत्पन्न थयेद्वी पीमा, ते पी-माए करीने थतुं जे ध्यान ते तृष्णाध्यान. आ ध्यान पिता साधुनी साथे जतां मार्गीमां तृष्णाथी पीमायेला कुद्रुक साधुने थयुं हतुं.

१९ कुधा ध्यान—कुधाना परवशापणाथी थतुं ध्यान ते कुधा ध्यान. ते राजगृह नगरना उद्यानमां आवेद्वा द्वोकोने मारवा तैयार थयेद्वा द्रपकने थयुं हतुं.

२० पथि ध्यान—एट्टेआधपकाळमां इष्ट स्थाने पहांचवानुं ध्यान. ते ध्यान पोतनपुरना मार्गीने शोधता बद्धकज्ञचिरिने थयुं हतुं.

२१ विपमार्गी ध्यान—घणा विकट मार्गनुं ध्यान. ते सनस्तुमारने शोधनार महेन्द्रसिंहने अथवा ब्रह्मदत्तने शोधनार वरथनुने थयुं हतुं.

२२ निष्ठा ध्यान—एट्टेनिद्राने आधीन थयेद्वानुं ध्यान. ते ध्यान स्त्यानर्चि निष्ठाए करीने पामानुं मांस खानार, हस्तिना दांत रेंची काढनार, तथा मोदकना अनिदित्तापी साधुने थयुं हतुं.

२३ निदान ध्यान—एट्टेवीजा भवमां स्वर्गनी अथवा भनुव्यपणानी सपृच्छि मेलववानी इच्छाथी नव प्रकारनां नियाणां करवा संवेदी ध्यान. ते नंदिपेण, संभूति अने ऊपदी विग्रेने थयुं हतुं.

२४ स्नेह ध्यान—स्नेह एट्टेमोहना उदयथी पुआदिकने विषे थती प्रीतिविशेष. ते ध्यान महूदेवा, सुनंदा अने अर्हवकनी माताने थयुं हतुं.

२५ काम ध्यान—काम एट्टेविष्पनो अभिन्नाप तेतुं ध्यानं ते कामध्यान. ते हासा अने प्रहासा देवीए देखामेद्वा विष्पस्तुस्वना द्वोन्नर्थी कुमारनंदि

( ४५७ ) उपदेशमसाद् भाषांतर-ज्ञाग ५ मो. स्तंन २३ मो.

सोनीने थयुं हतुं, तथा रावणने थयुं हतुं.

३६ अपमान ध्यान—अपमान एट्डे परगुणनी प्रशंसा सांजलीने थती इर्प्पी अथवा चित्तनी कालुप्यता ( मक्किनता ), तेनुं ध्यान ते अपमान ध्यान. ते वाहु अने सुबाहुनी प्रशंसाने नहीं सहन करनार पीछे अने महापीछने तथा स्वद्व-नद्रनी प्रशंसाने सहन नहीं करी शकनार सिंहगुफावासी मुनिने थयुं हतुं.

३७ कबह ध्यान—एट्डे क्षेत्र कराववानुं ध्यान. ते स्विमणी अने स-त्यजामाना संवंधमां तथा कमझामेदाना दृष्टांतमां नारदने थयुं हतुं.

३८ युक्त ध्यान—एट्डे शबुना प्राणव्यपरोपणना अध्यवसाय स्वप्न ध्यान. ते हळ्ठ तथा विहळ्ठ नामना बंधुना विनाश माटे चेमा राजानी साथे युक्त करनारा कौणिकने थयुं हतुं.

३९ नियुद्ध ध्यान—प्राणना अपहार स्वप्न अधम युक्त रहित यष्टि मु-ष्टि विग्रेथी जे जय मेळववो ते नियुद्ध कहेवाय डे, तेनुं ध्यान ते नियुक्त ध्यान. ते ध्यान वाहुबली तथा जरत राजाने थयुं हतुं.

४० संग ध्यान—संग एट्डे त्याग कर्या डतां पण फरीथी तेना संयोगनी अजिज्ञापा, तेनुं ध्यान ते संगध्यान. ते राजीमती प्रत्ये रथनेमिने तथा नागिदा प्र-त्ये जवदेवने थयुं हतुं.

४१ संग्रह ध्यान—अत्यंत अतुस्तिवके घनादिकनो संग्रह करवानुं ध्यान ते संग्रह ध्यान. ते भम्मण श्रेष्ठिने थयुं हतुं.

४२ व्यवहार ध्यान—पेताना कार्यना निर्णय माटे राजादिक पासे न्या-य कराववो ते व्यवहार कहेवाय डे; तेनुं ध्यान ते व्यवहार ध्यान. ते वे सपत्नीओने पेतपेतानो पुत्र उराववा माटे थयुं हतुं.

४३ क्रयविक्रय ध्यान—बाजने माटे अव्य मूद्यवडे वधारे मूद्यवाळी वस्तु खरीद करवी ते क्रय कहेवाय डे; अने थणुं मूद्य छाझने अव्य मूद्यवाळी वस्तु वेचवी ते विक्रय कहेवाय डे. ते क्रयविक्रयनुं ध्यान आजीरीने कपास आ-पनार वणिकने थयुं हतुं.

४४ अनर्थदेव ध्यान—एट्डे प्रयोजन विना हिंसादिक करवानुं ध्यान.

ते अत्यंत उन्मत्तपणाने द्वीधि द्वैपायन मुनिने कष्ट आपनार शब्द विग्रेने थयुं हतुं.

३५ आज्ञोग ध्यान—आज्ञोग एट्ले ज्ञान पूर्वक व्यापार, तेनुं ध्यान ते आज्ञोग ध्यान, ते ब्राह्मणनां नेत्रो धारीने वरुणुदानुं र्देन करनारा ब्रह्मदत्त चक्रीने थयुं हतुं.

३६ अनाज्ञोग ध्यान—अनाज्ञोग एट्ले अत्यंत विस्मरण, तेथी थतुं ध्यान ते अनाज्ञोगध्यान, ते प्रसन्नचंद्रने थयुं हतुं.

३७ ऋण ध्यान—ऋण ते देवुं, ते आपावा माटे थतुं ध्यान ते ऋणध्यान, ते<sup>१</sup>

३८ वैरध्यान—एट्ले मातपितादिकना वथयी अथवा राज्यना अपहारयी उत्पन्न थतुं ध्यान, ते परशुराम तथा सुजूमने थयुं हतुं, अने सुदर्शनना उपर कामरागवाळी व्यंतरी थयेद्वी अन्यारा राणीने थयुं हतुं.

३९ विर्तक ध्यान—विर्तक एट्ले राज्यादिक ग्रहण करवानी चिंता, तेनुं ध्यान, ते नंदराजानुं राज्य द्वेषानी इच्छावाळा चाणिक्यने थयुं हतुं.

४० हिंसा ध्यान—एट्ले पाना विग्रेनी हिंसा करवानुं ध्यान, ते कूवार्पा नोंदेद्वा काढा सौकरिकने थयुं हतुं.

४१ हास्य ध्यान—हास्य करवानुं ध्यान, मित्र सहित चंद्ररुद्र आचार्यानुं हास्य करनार शिष्यने थयुं हतुं.

४२ प्रहास ध्यान—प्रहास ते उपहास, निंदा अथवा सुति रूप तेनुं ध्यान ते प्रहासध्यान, ते ‘हे नैमित्तिक मुनि ! हुं तपने वंदन करुं छुं’ ए प्रमाणे चार्तिक मुनि प्रत्ये मङ्करीमां बोक्तवा चंद्रमध्योत राजाने थयुं हतुं.

४३ प्रदेष ध्यान—अति द्वेषवाळुं ध्यान ते प्रदेषध्यान, ते मरुन्नति तरफ कमठने तथा श्री महावीरस्वामीना कानमां खीद्वा नांखनार गोपने थयुं हतुं.

४४ परुप ध्यान—परुप एट्ले अति निष्ठुर कर्म तेनुं ध्यान ते परुपध्यान, ते ब्रह्मदत्त पुत्र उपर चुक्कणी राणीने तथा युगवाहु जाह उपर मणिरथने थयुं हतुं.

४५ नयध्यान—नय ए पोहनी अंतर्गत रहेद्वी नोकपाय प्रकृति डे, तेनुं ध्यान गमसुकुमाळने उपर्सग करनारा सोमिङ्ग ससराने थयुं हतुं.

<sup>१</sup> तेलकर्मलब्राह्मति भगवन्या इव.

६३ अमुक्तिपरण ध्यान—मुक्ति ते मोक्षगति, तेथी रहित ते अमुक्ति, एट्टेसंसारना मुख्यनी अन्निद्वापा, तेणे करीने परण पामवातुं जे ध्यान ते ‘अमुक्तिपरण ध्यान’ कहेवाय डे. ते ‘मुक्तिने विघ्न करनारुं आ नियाणुं न कर’ एम चित्र नामना पोताना जाइसावुए वारंवार निवारण कर्या छतां पण ‘चक्रवर्तीनी संपत्तिनो अनुज्ञव कर्या विना हुं मुक्तिनी पण इच्छा करतो नयी’ एवा तीव्र अशुज्ज ज्ञावथी नियाणुं करनारा संभूति मुनिने थयुं हहुं.

“ मिथ्या छुफ्ऱत आपदा लायक आ त्रेसउ दुर्ध्याननां स्वरूपने सांजली-ने विवेकी पुरुषोए अनेक मकारनां कर्मेतुं वंधन करावनारां आ सर्व दुर्ध्यानोनो तत्त्वमार्गमां प्रवृत्ति करतां सर्वथा त्याग करवो. ”

॥३४॥

इत्यद्विनपरिमितोपदेशपासादद्वच्चा त्रयोविंशतितपसंज्ञस्य  
पञ्चत्रिशद्धिकत्रिशततमः प्रवंधः ॥ ३४ ॥

॥३५॥

## व्याख्यान ३३६ सुं.

—  
तप विषे.

मूळोत्तरगुणथेणिप्राज्यसाम्राज्यसिध्ये ।

वाद्यमाज्यन्तरं चेत्यं, तपः कुर्यान्महामुनिः ॥ १ ॥

जावार्थ—“ मूळ गुण तथा उत्तर गुणना समूहवर्ण महान् साम्राज्यनी सिद्धिने माटे महा मुनिओए आ वाद्य तथा आज्यन्तर तप करवुं. ”

ज्ञान, चारियादिक मूळ गुणो अनेसमिति, गुप्ति विगेरे उत्तर गुणो कहे-वाय डे, तेनी थेणि एट्टेविशेषे करीने ते गुणोनो उद्भव, तेणे करीने प्रचूर कारण एवा साम्राज्यनी सिद्धिने माटे एट्टेस्वर्कार्य जे गुणनिष्पत्तिस्तूप तेने अर्थे परम निग्रंथ एवा महा मुनिओ वाद्य तथा अज्यन्तर तप करे; सेमां अन्य लोकोने जद्वासनुं कारण तथा

प्रजावनातुं भूल होवाथी वाद्य तप करवानी जहर डे, अने वीजा द्वोकोथी जाणी शकाय तेवृं नहीं रतां आत्मगुणनी एकतास्प होवाथी अन्यंतर तप करवानी आवद्यकता डे. आ प्रसंग उपर नन्दन क्रष्णिनो संवंध डे ते ड्या प्रमाणे—

### नन्दन क्रष्णिनी कथा.

आ जरतक्षेत्रमां भक्तिका नामनी नगरीमां जितशशु नामे राजा राज्य करतो हतो. तेनी जद्गा नामनी पद्मराणीए नन्दन नामना पुत्रेने जन्म आप्यो हतो. ते कुमार अनुक्रमे युवावस्था पास्यो, एटडे तेने पितातुं राज्य मच्युं. राज्यतुं पाद्धन करतां ते नन्दन राजाने जन्मर्थी आरंजीने चोवीश लाख वर्ष व्यतीत थयां. एकदा पोष्टिक्षा नामना आचार्य विहारना क्रमधी ते नगरीमां समवसर्या. तेमने वंदन करवा पाठे नन्दन राजा उद्यानर्मा गया. त्यां गुरुने विधि पूर्वक वंदना करी धर्म श्रवण करवा वेडा. गुरुए आ प्रमाणे उपदेश आप्यो के—

ज्ञानमेव वृधाः प्राहुः, कर्मणां तापनात्तपः ।

तदाभ्यन्तरमेयेष्ट, वाह्यं तदुपवृद्धकम् ॥ १ ॥

ज्ञावार्थ—“आत्म प्रदेशनी साथे संश्लिष्ट घट्ने रहेजाँ कर्मोने तपाववाथी सूक्ष्म ज्ञाननेज पंक्ति पुरुपो तप कहे डे. तेमां प्रायश्चित्तादिक आन्यंतर एवं तप इष्ट डे, अने अनशनादिक वाय तप ते अन्यंतर तपने द्विदि पमारुनार डे, एटडे ज्यव तप ज्ञाव तपतुं कारण डे, तेथी वाद्यतप पण इष्ट छे.”

तदेव हि तपः कार्यं, छुर्ध्यानं यत्र नो नवेत् ।

येन योगा न हीयन्ते, द्वीयन्ते नेन्द्रियाणि च ॥ २ ॥

ज्ञावार्थ—“जे तप करवाथी छुर्ध्यान न थाय, मन, वचन अने कांयाना योगनी हाजि न थाय, तथा इन्द्रियो क्षीण न थाय तेवृंज तप करुं.”

इत्यादि धर्मदेशना सांजळीने प्रतिवोध पामेजा नन्दन राजाए वैराग्यथी पोष्टिक्षाचार्य पांसे दीक्षा दीधी. निरंतर मासद्वयणे करीने चारित्रना गुणने द्विदि पमारुनारा ते नन्दन मुनि गुरु साथे ग्रामादिकमां विहार करवा लाग्या. ते मुनिए वे अगुञ ध्यान (आर्त-रौद्र) नो त्याग कर्यो हतो, सर्वदा त्रण दंस, त्रण गारव अने त्रण जाव्यथी रहित हता. तेमना चार कपाय क्षीण थया हता, चार संझानो

त्याग कर्या हुतो, ते चार प्रकारनी विकथाथी विमुक्त हता, चार प्रकारना धर्ममां आसक्त हता, तथा चार प्रकारना उपसर्गोर्थी तेमनो धर्मउद्यम सखद्वना पापतो नहोतो. ते मुनि पंच महावतंतुं धाम हता, पांच प्रकारना स्वाध्यायतुं स्थान हता, निरंतर पांच समितिने धारण करता हता, अनेहुःसह परिसिहोनी परंपराने सहन करता हता. आ प्रमाणे निःस्पृह एवा ते नन्दन मुनिए एक लाख वर्ष मुधी तप कर्यु. तेमां तेणे अगियार लाख ने ऐशी हजार मासद्वप्तु कर्या; तेमज तेज जन्मामां अर्हद्वन्नक्ति विगेरे वीश स्थानकोना आराधनव ने करीनेते महातपस्वीए हुःसे भेळवी ज्ञाकाय तेवुं तीर्थकरनामर्कम उपार्जन कर्यु. मूल्यीज अतिचारस्य कल्पक रहित चारित्रतुं पाजन करीने आयुष्यना अंतसमये तेमणे नीचे प्रमाणे आराधना करी.

“ अव्यवहार राशिमां अनन्त जन्मुओ साये अथमावाथी जे अकाम निर्जरावके मारुं कर्म कपायुं ते पीमानी पण हुं अनुमोदना करुं दुं. जिनेश्वरनी प्रतिमा, चैत्य, कदम्ब अने मुकुट विगेरेमां जे मारो पृथ्वीमय देह थयो होय तेनुं हुं अनुमोदन करुं दुं. जिनेन्द्रनां स्नात्र करवाना पात्रमां दैवयोगे जे मारो जलमय देह प्राप्त थयो होय तेनुं हुं अनुमोदन करुं दुं. श्री जिनेन्द्रनी पासे धूप करवाना अंगारामां तथा दीवामां जे मारो अग्निमय देह थयो होय तेने हुं अनुमोदन आएुं दुं. अरिहंत पासे धूपने उवेषतां—तेने प्रज्वलित करवामां तथा मार्गमां थान्त थयेद्वा संवनी शांतिने माटे जे मारो वायुमय देह वायो होय तेने हुं अनुमोदुं दुं. मुनिओनां पात्र तथा दंडादिकमां अने जिनेश्वरनी पूजाना उपोष्मां जे मारो वनस्पतिमय देह थयो होय तेनी हुं अनुमोदना करुं दुं. कोइ पण स्थाने सत्कर्मने योगे जिनधर्मने उपकार करनारो मारो त्रसमय देह थयो होय तेने हुं अनुमोदुं दुं. काळ, विनय विगेरे जे आत्र प्रकारे ज्ञानाचार कहेल्लो डे, तेमां कांइ पण अतिचार थयो होय तेने हुं त्रिविधे (पन चचन कायावरके) निंदुं दुं. निःशंकित विगेरे जे आत्र प्रकारे दर्शनाचार कहेल्लो डे, तेमां मने जे कांइ अतिचार लाग्यो होय तेने हुं त्रिविधे वोसिरादुं दुं. मोहथी अथवा लोन्धी जे मैं सूक्ष्म तथा वादर प्राणीओनी हिंसा करी होय तेने पण हुं त्रिविधे वोसिरादुं दुं. हास्य, जय, क्रोध के लोन्धादिकना वशधी मैं जे कांइ असल्य ज्ञापण कर्यु होय ते सर्वनी निंदा करवा पूर्वक हुं आझोचना करुं दुं. रागथी अथवा द्वेषधी थोरुं के घाणे जे कांइ अदत्त परज्यव्यनुं मैं ग्रहण कर्यु होय ते सर्वनो हुं

त्याग करें दुः. मैं पूर्व तिर्थिच, मनुष्य के देव संवंधी मैयुननुं मनथी वचनथी के कायार्थी सेवन कर्युं होय तेने हुं त्रिविषे तजुं दुः. लोजना दोषथी वहु पकारे मैं धन, धान्य अने पशु विग्रेनो जे संग्रह कर्यो होय तेने हुं त्रिविषे तजुं दुः. स्त्री, पुत्र, मित्र; बन्धु, धान्य, धन, घर अने वीजी कोइ पण वस्तुपां मैं जे कांड ममता करी होय तेनो हुं त्रिविषे त्रिविषे त्याग करें दुः. इन्दियोधी पराजय शामीने— रसेक्षीना परवज्ञपणार्थी मैं जे चारे प्रकारनो आहार रात्रे वापर्यो होय ( खाद्य होय ) तेने पण हुं त्रिविषे निंदुं दुः. क्रोध, मान, माया, लोज, राग, द्वेष, क्लेश, चार्नी, परनिंदा, जूँ आल अने वीजुं पण जे कांड चास्त्रिचार संवंधी मैं छुए आचरण कर्युं होय ते सर्वने हुं त्रिविषे तजुं दुः. वाद्य तथा अन्यतर तपने विषे जे कांड अतिचार लाग्यो होय तेने हुं त्रिविषे त्रिविषे निंदुं दुः. धर्मक्रिया करवापां मैं जे कांड छता वीर्यने गोपव्युं होय ते वीर्यचार संवंधी अतिचारनी पण हुं त्रिविषे निंदा करें दुः. जे कोइ मारो मित्र होय अथवा अमित्र होय अने स्वजन होय अथवा शत्रु होय ते सर्व मारा अपराधने खमो, हुं ते सर्वने खमुं दुः अने सर्वनी साथे हुं समान दुः. मैं तिर्थिचना जन्मां तिर्थिचोने, नारकीना जन्मां नारकीओने, मनुष्यना जन्मां मनुष्योने तथा देवजन्मां देवताओने जे कांड छुःखमां स्थापन कर्या होय— छुःख आप्युं होय ते सर्व मारो ते अपराध क्रमा करो, हुं ते सर्वने खमाहुं दुः, अने मारो ते सर्वने विषे मैत्रीज्ञाव डे. जीवित, योवन, लक्ष्मी, रूप अने मियजननो समागम, ते सर्व गायुए चक्षित करेद्वा समुद्धना तरंगनी जेवा चपल डे. आ जगतमां व्याधि, जन्म, जरा अने मृत्युधी ग्रसित थयेद्वा प्राणीओने जिनेश्वरे कहेद्वा धर्म विना वीजुं कोइ शरण नथी. सर्व जीवो स्वजन पण थयेद्वा डे, अने पुरजन पण थयेद्वा डे, तो तेमने विषे कयो पंमित पुरुष जरा पण प्रतिवंध करे ? कोइ न करे. अरिहंत मारूं शरण हो, सिद्ध मारूं शरण हो, साहु मुनिराजनुं मारै शरण हो अने केवलीए कहेद्वा धर्म मने शरणचूत हो. अत्यारथीजीवन पर्यंत हुं चतुर्विष आहारनो त्याग करें दुः, अने डेह्वा भासोभासे आ देहने पण हुं तजुं दुः.”

आ प्रमाणे ते नन्दन मुनिए छुप्कर्फनी निंदा, सर्व जीवोनी क्रमापना, शुच जावना, चार शरण, नमस्कारनुं स्मरण अने अनशन ए उए पकारनी आराधना करीने धर्मगुरुने तथा साहु साध्वीने खपाव्या. पठी समाधिमां स्थित थये-

दा ते मुनि सात दिवसनुं अनशन पालीने पचीश बाख वर्षनुं आयुष्य संपूर्ण करी, ममतारहितपणे काळधर्म पामीने दशमा प्राणत नामना देवज्ञोकमाँ देवपणे उत्पन्न थया. त्यां वीजा सागरोपमनुं आयुष्य तेणे पूर्ण कर्यु. आयुष्यने अंते पण तेऽयो अधिक अधिक कांतिवेदे देवीप्रभान रहा, वीजा देवताओ उ मास आयुष्य वाकी रहे त्यारे अत्यंत कांतिहीन थाय ते अने वधोरे मोह पामे ते; परंतु तीर्थकरोने तो पुएयनो उदय नजीक होवाथी उ मास अवशेष आयुष्य रहे, त्यारे पण देह कांति विगरे घटवाने बदले उबढी अधिक वृच्छिमान थाय ते, ते देव त्यांयो चवीने श्री महावीरस्वामी नामे चरण तीर्थकरपणे उत्पन्न थयो.

“ श्री वर्धमान स्वामीना जीवे समकित पाम्या पडीना मोश पचीशमा ज्वे जे तप कर्यु ते तप अमारा जेवाने महा उत्तम जावंगळस्प थइ अक्षय सुख संपत्ति प्रत्ये आपो. ”

॥३३६॥

इत्यद्दिव्यप्रसिद्धितोपदेशप्रासाददृत्ता व्रयोविंशतितपस्तंनस्य  
पश्चविंशतिदधिकविंशततमः प्रवंधः ॥ ३३६ ॥

## व्याख्यान ३३७ मुं.

—  
रोहिणी व्रत विषे

श्री वासुपूज्यमानम्य, तपोऽलिशयप्रकाशकम् ।

रोहिण्याः सुकथायुक्तं, रोहिणीव्रतमुच्यते ॥ १ ॥

नारायण—“ श्री वासुपूज्य स्वामीने नमस्कार करीने तपना अतिरायने प्रकाश करनारुं अने रोहिणीनी सत्कथाथीं युक्त एवं रोहिणीव्रतनुं स्वरूप कहीए डीए. ”

## रोहिणीनी कथा.

चंपापुरीमां श्रीबासुपूज्य स्वामीना पुत्र भयवा नामे राजा राज्य करता हता. तेने द्वादशी नामे सदाचारवाली राणी हती. ते राणीने आउ पुत्रो उपर एक रोहिणी नामे पुत्री थइ. राजाए ते पुत्रीना जन्म बखते भोग्ये उत्सव कर्यो. अनुक्रमे रूप अने सौनाम्यथी युक्त एवी ते पुत्री युवावस्था पामी. एट्ट्वे राजाए विचार्यु के “आ पुत्रीने योग्य वर मळे तो साहं.” एम विचारीने राजाए स्वयंवरनी इच्छाथी धणा राजकुमारोने आमंत्रण कर्यु. तेथी सर्व देशाना राजकुमारो पोतपोताना वैज्ञव सहित त्यां आवीने स्वयंवरमंडपमा वेडा. रोहिणी पण स्नान तथा विज्ञेपनादि करी, सारां बत्त्वो पहेरी अने मुकुट, तीज्जक, कुंमल, कंठाज्ञरण, प्राक्षंबक, हार, अर्धहार, बाजुरंध, कमां, वॉटी, कटीमेखला, झांझर अने किंकिणी विग्रे अद्विकारो धारण करीने सुखासन (पादखी) मां वेसी मंदपमां आवी. त्यां प्रतिहारीए दरेक राजकुमारोनां पृथक् पृथक् नाम गोत्र विग्रेरुं वर्णन कर्यु; ते सांचलीने रोहिणीए नागपुरना राजकुमार अशोकना कंठमां वरमाळा आरोपण करी, एट्ट्वे राजाए वीजा सर्व राजकुमारोने बत्त्वादिकवर्मे सन्मान करीने रजा आवी. पडी विधिपूर्वक अशोककुमार साये रोहिणीनो विवाह कर्यो. अशोककुमार रोहिणीने लाङ्ने नागपुर आव्यो. केट्ट्वेक काळे अशोकना पिताए अशोकने राज्य सोंपी दीक्षा ग्रहण करी.

अशोक राजाने रोहिणी साये जोगविज्ञास करतां आउ पुत्रो तथा चार पुत्रीओ थइ. एकदा पल्लीनी साये राजा गवाक्षमां वेगो हतो, ते बखते रोहिणीए कोइ एक खीने पुत्रना मरणाथी रुदन करती अने हृदय तथा मायुं कुटती. जोइने हृषीक्षी राजाने पूछ्युं के “हे स्वामी ! आ केवी जातरुं नाटक डे ? ” राजाए कर्युं के “हे मिया ! गर्व न कर.” राणी वोद्वी के “धन, यौवन, पति, पुत्र अने पितामह विग्रे संवंधी सर्व प्रकारना सुखथी हुं पूर्ण हुं, तथापि हुं गर्व करती नदी; परंतु आयुं नाटक में कोइ पण बखत जोयुं नदी.” राजाए कर्युं के “ते खीनो पुत्र मरी गयो डे तेथी ते रुए डे.” राणी वोद्वी के “ते आयुं नाटक क्यां शी-खी हजे ? ” राजाए कर्युं के “द्वे हुं ते तने इशीखरुं.” एम कहीने राजाए लोक-पाज नामनो सौंधी नानो पुत्र जे राणीना उत्संगमां हतो, तेने लाङ्ने वारीधी पमतो मृक्यो.

ते पुत्रने अधरथीज पुरदेवीए जीवी कीधो, अने तेने सिंहासनपर वेसाड्यो। पुत्रना पदवाधी पण राणीने रुदन आव्युं नहीं, तेथी राजाने आश्र्वय थायुं। तेवामां ते नगरमां जिनेश्वरना रूप्यकुंज अने मुवर्णकुंज नामना वे शिव्यो पस्तिवार सहित आव्या, ते जाणीने राजा तेमनी पासे गयो अने तेमने वंदना करीने राजाए नम्रताधी पूर्वां के “ हे पूज्य ! कया कर्मयी मारी राणी छुःखानुं नामं पणं जाणती नवी ? ” गुरु वोद्या के हे राजा ! सांजल—

आ नगरमांज पूर्वं धनमित्र नामे एक श्रेष्ठी रहेतो हतो, तेने छुर्गीथा नामनो अति छुर्जांगी पुत्री हती, ते युवावस्था पामी, तोपण तेने कोइ पुरुष परणवानी इच्छा करतो नहीं, धनमित्र एक कोटी झव्य आपवानुं कहेतो, तोपण तेने कोइ पुरुष परण्यो नहीं, एकदा कोइ चोरने प्राणांत झीक्का थइ, तेने मारवा मोट राजाना सेवको लक्ष जता हता, ते जोडेन श्रेष्ठीए ते चोरने भोकावी पोताने घेर आएयो, ते चोरने छुर्गीथा आयो, रात्रे छुर्गीथाना शरीरना तापथी पीका पामीने ते चोर नासी गयो, त्यार पडी एक दिवस ते गाममां कोइ झानी गुह पधार्या, तेमने धनमित्र श्रेष्ठीए पुत्रीना छुर्जांग्यानुं कारण पूर्वां, त्यारे गुरु वोद्या के “ उज्जयंत पर्वत पासे गिरिपुर नामना नगरमां पृथ्वीपाळ नामे राजा राज्य करतो हतो, तेने सिद्धिमती नामनी राणी हती, एकदा राजा तथा राणी उपननमां गया हता, त्यां मासोपवासी श्रीगुणसागर नामना मुनिने गोचरी जर्ता तेमणे जोया, राजाए मुनिने वंदना करी, अने पडी राणीने कहुं के “ हे मिया ! आ मुनि जंगमतीर्थे भे, मोट हुं घेर जड्ने प्रासुक आहारवदे तेमने प्रतिवाजन, ” राजानी आङ्गाधी इच्छा विना राणी पाडी वळी, अने घेर जड्ह क्रोधथी मुनिने कमवा तुंबमानुं शाक यहोराव्युं, मुनिए तेने कमवुं जाणीने परउववानो विचार कर्यो, पण तेथी अनेक जीवनी हिंसा थवानुं धारीने पोतेजतेनो आहार करी गया, अने शुन्नध्यानवदे केवळ झान पामी मुक्तिसुखने वर्या, राजाए ते वृत्तांत सांजलीने राणीने काढी मूकी, ते राणीने सातमे दिवसे कोढनो व्याधि थयो, तेनी व्याधी आर्तध्यानवदे मरण पामीने ते डाढी नरके गइ, त्यांथी नीकळी तिर्यचनो जव करी असुकमे सर्व नरकमो उत्पन्न थइ, पडी अनुकमे उंटर्मी, कूतरा, झीयालणी, त्रूमणी, धो, उंदरमी, जू, कागमी, चांमाळी अने डेवेट गधेमी थइ, ते गधेमीना जवमां मृत्यु वस्तते तेणे नवकार मंत्र सांजल्यो, तेना पुण्यथी ते मरीने आ तमारी पुत्री थइ भे, पूर्वानुं पाप-

कर्म योमुं वाकी रहेवाथी आ ज्ञवमां ते छुर्जान्धी थइ डे. ” आ प्रमाणे पोतानो पूर्वजन्व सांजलतां छुर्गन्धाने जातिस्मरण उत्पन्न थयुं. पोताना पूर्वजन्वने जोइने तेणे गुरुने पूर्वयुं के “ हे जगवान ! मने आ छुखसागरथी तारो. ” गुरु वोद्या के “ तुं सात वर्ष अने सात मास सुधी रोहिणीतुं व्रत कर. तेमां जे दिवस रोहिणी नक्कल होय ते दिवसे उपवास करीने श्री वासुपूज्य स्वामीतुं ध्यान करवुं, तेमनुं नवुं चैत्य कराववुं, अने व्रत पूर्ण याय त्यारे उद्यापन करवुं. तेमां अशोक वृक्णनी नीचे अशोक तथा रोहिणी सहित श्री वासुपूज्य स्वामीतुं रत्नमय विव जराववुं. ते तपना महिमाथी तुं आवता ज्ञवमां अशोक राजानी रोहिणी नामनी स्त्री थइने तेज ज्ञवमां सिद्धिपदने पामीळ, अने आ तप करवाथी तने घणुं सुख मास थडो. ते उपर दृष्टांत करुं दुं ते सांजल—

सिंहपुरमां सिंहसेन नामे राजा हतो. तेने छुर्गन्ध नामनो पुत्र हतो. ते कुमार सर्वने अनिष्ट हतो, कोइने गमतो नहीं. तेथी राजाए एकदा श्री पद्मपञ्च स्वामीने पूर्वयुं के “ हे जगवान ! कया कर्मयी मारा पुन्हने छुर्गन्धिपणुं प्राप्त थयुं डे ? ” पञ्चु वोद्या के “ हे राजा ! नागपुरधी वार योजन दूर नीझ नामे एक पर्वत डे. त्यां एक शिला डे. तेनी उपर कोइ तपस्वी सायु ध्यान करता हता, तेना प्रजावाथी त्यां पाराधिमां शस्त्रो जीवहिंसामां भवतीं शकता नहीं. तेथी कोइ एक पासधिने मुनि उपर क्रोध चढ्यो. पडी ज्यारे मुनि जिक्काने माटे गामर्मा गया, त्यारे ते शिलानी नीचे तेणे घास तथा लाकमां नांख्यां अने पोते गुस रीते संताइ रहो. थोमी वारे मुनि जिक्का बढ्ने आव्या, अने आहार करीने शिला उपर ध्यान धरीने वेत्ता. ते वखते पेढ़ा पाराधिए ते शिला नीचे अग्रि मूळयो. तेना तापने सहन करता ते मुनि गुज्जध्यानथी केवळज्ञान पामी प्रोके गया. ते पाराधि घोर पापकर्मयी कोटीयो थयो. त्यांयी घणा भवमां ब्रमण करीने कोइ श्रावकने घेर पशुपाळ थयो. त्यां ते नवकार मंत्र जीर्ण्यो. एकदा अरएयमां पशु चारवा गयो. त्यां निष्कावता थयो, तेष्वामां दावानळ द्वागवाथी ते वळवा द्वाग्यो, एट्वे नवकार मंत्रनुं ध्यान कर्यु, तेना प्रजावाथी ते पशुपाळ मरण पामीने तारो पुत्र थयो डे. जेप रहेला पापकर्मना दोषयी आ ज्ञवमां ते छुर्गन्धिपणुं पाम्यो डे. ” ते सांजलीने कुमारने जातिस्मरण थयुं. पडी श्री जिनेश्वरे तेने रोहिणी तप करवानो उपदेश आप्यो. कुमार ते तप करीने शरीरानुं भुगन्धिपणुं पाम्यो, माटे हे छुर्गन्धा ! तुं पण

ते तपतुं आचरण कर ॥

आ प्रमाणे सांजलीने छुर्गन्धाए विधिपूर्वक उद्यपान सहित रोहिणी तप कर्यु, तेना मनावथी तेज जबमां ते सुगन्धपाणुं पामीने स्वर्गे गद, त्यांथी चवी-ने ते मधवा राजानी पुत्री रोहिणी नामे थइ, ते तारी राणी थइ डे. हे अशोक राजा ! ते तपना पुण्यथी जन्मथी आरंजीने ते छुःखने के रुदनने जाणतीज न-धी।” आ प्रमाणे श्रीवासुपूज्य स्वामीना शिष्यना मुखथी सर्व हकीकत सांजली-ने अशोक राजाए फरीथी पूछयु के “ हे गुरु ! अमारे वन्नेने परस्पर अति स्नेह थवातुं शुं कारण ? ” गुरु बोद्ध्या के “ सिंहसेन राजाए सुगन्ध कुमारने रा-ज्य सोंथी दीक्षा ग्रहण करी. पडी सुगन्ध राजा जैन धर्मनुं पाद्मन करीने महा-विदेह केन्द्रमां पुष्कद्वाकती विजयमां पुंद्ररिकिणी नामनी पुरीमां अर्कलीति नामे चक्रवर्ती राजा थयो. त्यां साहुना संयोगथी दीक्षा व्याप्ते अनुक्रमे मृत्युपापी वारमा देवद्वाके देव थयो. त्यांथी चवीने तुं रोहिणीना मनने आनंद आपनारो अशो-क राजा थयो डे. तमे वन्नेए पूर्वे समान तप कर्यु हहुं, तेथी तमारे परस्पर अति-शय मेय छे.

बळी हे अशोक राजा ! तारा मोट्य सात पुत्रो गुणी थया, तेनुं का-रण ए डे के “ मयुरा नगरीमां अग्रिशर्मा नामना ब्राह्मणने सात पुत्रो हता. ते सर्वे दरिखी हता. एकदा तेओए सर्व अब्दंकारथी विज्ञुपित अने महाजाग्यपान राजपुत्रोने क्रीमा करता जोझने विचार्यु के “ आपणे पूर्वे काँइ पण पुण्य कर्यु न-धी, जेथी आ ज्ञेव स्वप्नमां पण सुख जोयु नहां; माझे दीक्षा ग्रहण करीए. ” एम विचारीने ते साते ब्राह्मणना पुत्रोए चारित्र लीयुं. त्यांथी मृत्यु पामीने देव थइ त्यांथी चवी ते साते तारा पुत्रो थया डे; अने सोंथी नानो जे आउमो पुत्र छे ते पूर्वज्ञवे वैताङ्ग्य पर्वत उपर हुँद्रक नामे विद्याधर हतो ते शाखत जिनपतिमा-नी पूजा करीने ते पूजाना प्रभावथी सौर्यम देवद्वाकमां गयो. त्यांथी चवीने आ तारो आउमो पुत्र थयो डे. तेने तें वारीथी नांखी दीधो हहु, पण तेने अधरथी-ज क्षेत्रदेवताए लङ्घीधो हहु.

बळी तारी आ चार पुत्रीओ डे. तेनो हृत्तोत एवो डे के—वैताङ्ग्य पर्वतपर कोइ विद्याधरने चार पुत्रीओ हहु. तेओए एकदा ज्ञानी गुरुने

पृथ्वी के “हे पूज्य ! अमारुं आयुष्य हवे केटबुं वाकी ढे ? ” गुरु बोध्या के “तमारुं आयुष्य धारुं थोरुं वाकी ढे. परंतु तमारुं चारेनुं एकज चखते मृत्यु थशे. ” ते सांजलीने तेओ बोधी के “ थोका आयुष्यमां अमे शु पुण्य करीए ? ” गुरु बोध्या के “ अन्तर्मुहूर्तमात्र पण केटबुं पुण्य निष्फल थतुं नथी, तो तमोने पण मोडुं फळ मळशे; मठे तमे पंचमी तपनुं आराधन करो. ” ते सांजलीने ते चारेए जीवन पर्यंत पंचमीतुं तप अंगीकार कर्युं. पडी गुरुए कल्युं के “ आजेज शुकु पक्कनी पंचमी छे. ” ते सांजलीने ते चारेए उयववासनुं पचखाण करी घेर जइने देवपूजादिक धर्मक्रिया करी. रात्रे एक साथे मळीने धर्म जागरण करवा द्वागी. ते प्रसंगे ‘ आ तप पूर्ण थये आपणे मोडुं उद्यापन करजुं ’ ऐतो ते चारे विचार करती हती, तेवामां अक्सस्मात् ते चारेना मस्तकपर वीजली पर्मी; तेथी मृत्यु पापीने तपना प्रभावथी ते स्वर्गे गइ. त्यांथी चवीने ते चारे आतारी पुत्रीओ थइ ढे. ”

आ प्रमाणे गुरुना मुखथी सांजलीने अशोकराजा विगेरे सर्वे संदेह रहित थइ श्रावकधर्म अंगीकार करीने पोताने घेर गया. पडी केटझेक काळे श्री वासुपूज्य स्वामी पासेज राजा राणी विगेरेण दीक्षा ग्रहण करी अने उग्र तपवदे कर्मनो क्षय करी, केवलङ्घान रूप अक्षय चंमार मेलवीने मोक्षपदने पाम्या.

“ हे जन्य प्राणीओ ! श्री वासुपूज्य स्वामीनी स्तुतिवर्मे, पुजनवर्मे अने त्रिकाल देववंदनवर्मे रोहिणी तपमां यत्न करीने तमे महापुण्यने रुपान्जन करो. ”

इत्यदिनपरिमितोपदेशमासादृत्तौ त्रयोविंशतितमसंजस्य  
सप्तत्रिंशदधिकत्रिंशततमः प्रवंधः ॥ ३३७ ॥

## व्याख्यान ३३८ मुं।



सप्तनय विषे.

**धावन्तोऽपि नयाः सर्वे, स्युच्चावे कृतविश्रमाः ॥**

**चारित्रगुणदीनः स्यादिति सर्वनयाश्रितः ॥ १ ॥**

जावार्थ—“ सर्वे नयो पोतपोताना पक्षतुं स्थापन करवा पाटे दोने डे, तो पण ते सर्वे जावमां एट्ड्वे शुद्ध आत्मर्थमां विश्राम पामे डे अर्थात् स्थिर थाय डे. तेथी मुनिराज पण सर्व नयनो आश्रय करीने चारित्र गुणमां दीन थाय डे. ”

चारित्रनो अर्थ एवो डे के—‘ चय ’ एट्ड्वे आउ कर्मनो संचय, तेने ‘ रिक्त ’ एट्ड्वे खाल्वी करवूं-कर्म रहित थवूं ते चारित्र कहेवाय डे. ते चारित्र रूप गुण तेमां दीन थवूं—वथता पर्यायवाळा थवूं, तेनी अंदर सर्व नयनो आश्रय एवी रीते थाय डे के—ज्यवनयने कारणपणे ग्रहण करवा अने जावनयने कार्यपणे ग्रहण करवा. साधनमां उद्यम रूप क्रियानय द्वेवा अने तेमां विश्रांति रूप झांनेनय द्वेवा. ए प्रमाणे सर्व नयमां आसक्ति राखवी.

थी अनुयोग घारमां काहुं डे के—

**सव्वेसिं पि नयाणं, वहुविहृ वत्तव्ययं निसामित्ता ॥**

**तं सव्वनयविसुद्धं, जं चरणगुणद्विती साहू ॥ १ ॥**

जावार्थ—“ सर्व नयनी वहु प्रकारनी वक्तव्यता सांजडीने सर्व नयथी विशुद्ध एवो जे चारित्र गुण तेने विषे साहु स्थित थाय डे. ”

आ प्रसंग उपर एक कथा डे ते नीचे प्रमाणे—

**एक पोपटनी कथा.**

कोइ एक गच्छमां एक तपस्वी आचार्य वृष्ट होवाथी एक गामपांज रहेता हतो. तेनो एक जिप्प्य अति चपळ होवाथी क्रियामां अनादरवाळो हतो. तेणे एकदा गुरुने काहुं के “ हुं युवान दुं, तेथी मैयुन विना रही शक्तो नथी. ” ते

सांजलीने गुरुए तेने गच्छथी वहार कर्यो. ते साथु वाव्यावस्थामांज समग्र शास्त्रो ज्ञायो हतो, तेथी दोकोने आधीन करीने प्राणटृत्ति करवा लाग्यो. अनुक्रमे आयुष्य पूर्ण थतां ते आर्तिध्यानवके मृत्यु पामीने एक घड़ना कोशरमां पोपट थयो. एकदा कोइ साथुनुं दर्शन थतां तेने जातिस्परण ज्ञान उत्पन्न थयुं, एद्देते एपे योताना पूर्वजवनुं सर्व स्वरूप जाएयुं, अने धर्मनो सर्व प्रवंथ पण समज्यो.

एक दिवस ते वनमां एक निहृ पक्षीओ पक्षरूपा आव्यो, केट्डाक पक्षी-ओ पक्षरूपे ते आ पोपटने पण पक्षवा आव्यो. तेनो एक पग हाथमां आव्यो ते खेंचीने मालामांथी वहार काढतां तेनुं एक नेत्र काणुं थयुं. पडी ते निहृ पक्षी-ओने वेचवा माटे चौटामां गयो, त्यां दोजा पक्षीओने वेचवा माटे जतां पेजा पोपट-ने एक जिनदत्त नामना आवकनी छुकाने मूकी गयो. त्यां ते पोपटे मनुप्यवाणीथी पोतानुं सर्व वृत्तांत जिनदत्तने कहुं. ते सांजलीने तेने साधर्मिक जाणी जिनदत्ते तेने वेचातो दीधो अने एक पांजरामां राख्यो, पडी ते पोपटे जिनदत्तना आखा कुट्ठने शास्त्रधर्मी कर्यु; पण जिनदत्तनो पुत्र जिनदास कोइ श्रेष्ठीनी रूपवती कन्याने जोइने तेनामां आसक्त थयो हतो, तेथी ते धर्म श्रवण करतो नहीं. तेने एकदा पोपटे कहुं के “ केम तारा चित्तमां श्रद्धा थती नवी ? ” त्यारे ते जिनदासे पोताना हृदयनी वात कही संजलावी. ते सांजली पोपट बोध्यो के “ तुं स्वस्थ था, ते श्रेष्ठीपुत्री हुं तेने परणावीश.” एम कहीने ते पोपट त्यांथी उन्हीने ते श्रेष्ठीने घेर गयो. त्यां ज्यारे ते श्रेष्ठीनी पुत्री विवाहनी इच्छाथी छुर्गा देवीनुं पूजन करीने वरनी प्रार्थना करवा लागी, त्यारे ते पोपट प्रच्छन्न रहीने बोध्यो के “ जो तारे वरनी इच्छा होय तो तुं जिनदत्तना पुत्रने वर.” ते सांजलीने ते पुत्री-ए हर्षथी पोताना पिताने देवीनुं वाक्य कही जिनदत्तना पुत्रने परणवानी इच्छा जणावी. तेना पिताए ते वात स्वीकारीने जिनदास साथे तेनो विवाह कर्यो. पडी ते वहु वीजी वहुओमां ‘ हुं देवदत्ता ’ हुं ’ एम कही गई करती अने विरुद्धधर्मी होवाथी पोपटनो उपेदश पण सांजलती नहीं. त्यारे पोपटे सर्व स्वजनोनी सपक्ष हास्य करीने छुर्गादेवीनुं वृत्तांत प्रगट करी वताव्यु. त्यारे तेना स्वजनो ‘ हे वहु ! तमे - देवदत्ता भो के पक्षिदत्ता भो ? ’ एम कहीने तेनुं हास्य करवा लाग्या. तेथी ते वहु पोपटना उपर द्वेष परावा लागी. एकदा सर्व स्वज-

१ देवदत्त आपेलो,

नो गार्घयां व्यग्र हता तेवे वस्ते उपोपश्चनु एक पीछुं खंचीने ते बोझी के “ हे पोप-  
द ! हुं तो पंकित छे ! ” ते सांजलीने पोपटे मनमां विचार्यु के अरे ! आ मा-  
री वाणीना दोपनुं फळ, कहुं ते के—

**आत्मनो मुखदोपेण, वध्यन्ते शुकसारिकाः ।**

**घकास्तव्र न वध्यन्ते, मौनं सर्वार्थसाधनम् ॥ १ ॥**

“ पोतानी वाणीना दोपथी पोपट अने सारिका वंधाय छे, पण वगङ्गा-  
पंधाता नथी, माटे मीनज सर्व अर्थने साधनार छे. ”

एम विचारीने पोपट बोद्ध्यो के “ हुं पंकित नथी, पंकित तो धनश्रेष्ठी  
छे. ” वहुए पूर्वशुं के “ ते शी रीते ? ” त्यारे पोपट बोद्ध्यो के “ कोइ एक  
गाममां घणा आंधला माणसो हता. ते पोतपोताना चोक्मां वेसीने हास्य, गीत  
अने दंजादिक वातो करीने दिवसो निर्गमन करता हता. ते गाममां कोइ शेड  
रहेतो हतो. ते पोतानी छुकाने वेसी सोनामहोरोनी परीक्षा करतो हतो. तेनी  
पासे एफदा एक आंधलो आवीने उच्चो रहो, अने विनयथी ते शेत्रनी प्रशंसा  
करीने बोद्ध्यो के “ हे शेत्रजी ! मने स्पर्श करवा माटे मारा हाथमां एक सोना-  
महोर आपो. ” ते सांजलीने सरद्व स्वनाववाला ते शेत्रे तेना हाथमां एक सोना-  
महोर आपी. ते आंधले सोनामहोर द्वाने पोताना वस्ते डेमे मजबूत गांड वां-  
धीने बुपावी दीधी, थोकीवारे ते शेत्रे सोनामहोर भागी, त्यारे ते आंध बोद्ध्यो  
के “ हे पुण्यशाळी शेत्र ! मैं मारी महोर तपने जोता माटे आपी हरी, ते मैं  
द्वाने मारी गांडे वांधी डे. हुं ते तपने आपीश नहीं, केमके मारी आजीविकाने  
माटे मारी पासे आड्हुंज धन डे; तेनी तपे केम इच्छा करो गो ? ” एम कहीने  
ते आंध पोकार करवा द्वाग्यो के ‘ आ शेत्र मारी महोर द्वाजाय छे. ’ ते सांज-  
लीने त्यां घणा छोको जेला थइ गया, अने ते शेत्रनी निंदा करवा द्वाग्या, तेथी  
ते शेत्र उक्कटो ऊंखवाणो पसी गयो, पडी शेत्रे एक चतुर माणसने पोतानी सर्व  
हकीकत कहीने तेनी सज्जाह पूजी, त्यारे ते चतुर माणसे तेने कहुं के “ हंमेशां  
रात्रे आ गामना सर्व आंधला एक जग्याए एकत्रा थाय डे, अने त्यां पोते मेलबेझा  
झव विगेरेने परस्पर देखाने डे. त्यां तुं जइने गुप्त रीते उच्चो रहेजे, अने ज्यारे  
ते आंध ए महोर बीजाने देखामवा काढे त्यारे तुं द्वाजे लोजे. ” ते सांजलीने ते

शेष आंधलाओने एकत्र मळवाना स्थानके गयो. त्यां पेक्षा आंधलाए हर्षथी पोतानुं पंक्तिय प्रकाश करीने गांडे वांधेद्वी सोनामहोर भोजी बीजा आंधलाने चतावदा माटे पोतानों हाथ लांघो कर्यो, एटद्वे तरतज पेक्षा शेषे ते महोर दृष्टि लीधी. बीजा आंधलाए कहुं के “ केम नथी आपतो ? ” त्यारे पेक्षा आंधलो वोद्यो के “ आपी ते शुं ? ” एम वेक्षतां ते वन्ने आंधलाओने परस्पर मोटुं युद्ध थयुं, अने शेष तो पोतानी महोर मळी जयाथी स्वस्य थड़ पोताने स्थानके चाह्यो गयो. त्यारथी “ अन्यो अन्य पीद्वाय ” एवी द्वोक्षमां कहेवत चाले छे.

आ चातनो उपनय एवो डे के—एकांतवादी सर्व नयो अंथ सद्वा डे अने अनेकांत पक्कने जाणनार नेत्रवाला शेषनी तुद्य छे. तच्चने पण तेज पामे डे, बी-जाओ तच्चने पापता नथी. आ कथामां पेक्षा शेषे मौन धारण करीने पोतानुं कार्य साध्युं, माटे ते पंक्ति डे. ”

आ प्रमाणे पोपटना मुखयी कथा सांजलीने ते वहु जती रही. फरीधी पाडी आम तेम जतां ते वहुए पोपटनुं वीजुं पीडुं खेचीने कहुं के “ हे पोपट ! तुं तो पंक्ति छे ! ” ते सांजलीने पोपटे हजामनी खीनी कथा कही. ए प्रमाणे कथाओ कहीने पोपटे आखी रात्रि निर्गमन करी. प्रातःकाले तदन पांखो चिनाना थड़ गयेद्वा ते पोपटने पांजरानी वहार काढ्यो. तेवामां एक झेने पक्कीए तेने मुखमां ग्रहण कर्यो, तेवामां वीजो झेने पक्की आव्यो. एटद्वे ते वन्नेनुं युद्ध थयुं. ते वस्ते पहेला श्येनना मुखमांथी पोपट पदी गयो. ते अशोकवासीमां पड्यो. त्यां तेने पक्तांज कोइ दासपुत्रे छाइने तेने एकांतमां राखी साजो कर्यो. पछी ते दासपुत्रे पोपटने कहुं के “ हे पोपट ! मने आ गामनुं राज्य अपाव. ” पोपटे कहुं के “ प्रयत्न करीश. ”

हवे ते गामनो राजा वृष्ट हतो अने अपुत्रीओ हतो, परंतु ते बीजा को-इने राज्य आपवानी इच्छा धरावतो हतो. तेथी राजा कुलदेवीनुं ध्यान करीने रात्रे मुतो हतो. ते समेय पेक्षा पोपट राजाना पञ्चगने माथे रहेद्वा क्रीमामयूसना देहमां प्रवेश करीने वोद्यो के “ हे राजा ! तुं दासपुत्रने राज्य आपजे, बीजाने आपीशा तो सात दिवसमां राज्य नष्ट थड्ये. ” ते सांजलीने ‘ आं कुलदेवीनुं वाक्य छे एम जाणी राजाए दासपुत्रने राज्य आप्युं. दासपुत्रे ते पोपटनेज राजा

कर्यो, अने तेनी आङ्गा वये जाहेर करी. पछी ते पोपटे धर्मना उपदेशधी जिन-दास श्रावकना कुटुंबने तथा पेढ़ा महेश्वरी ( मेश्री ) अष्ट्रीना कुटुंबने प्रतिवोध प-पासी शुभ श्रावक कर्पा अने तेघने वैराग्य लपजाव्यो. प्रांते पोते संवेग पामीने अनशन कर्यु; अने मृत्यु पामीने शुच ध्यानना प्रजावधी सहस्रार नामना आउमा देवज्ञोकमां देवपणे उत्पन्न थयो.

देवज्ञोकमां पण ते परम श्रावक हेवाथी धर्षकथा करवा लाग्यो. तेथी सर्व देवोर्मां ते अति विज्ञान गणायो. त्यांथी चवीने महाविदेह क्षेत्रमां मनुष्यपणे उत्पन्न थड्ड सिद्धिपदने पामर्यो.

ज्ञानवान् मनुष्य अवग्य संवेगातुं जाजन थाय डे. तेथी करीनेज जग-वती सूत्रमां काणु डे के ' ज्ञान आ दोकमां, परद्वोकमां अने तेथी पण आ-गळना ज्ञवमां हितकारी डे. ' वळी ज्ञानक्रियाच्यां मोङ्कः स्यात्—'ज्ञान अने क्रियाथी मोङ्क थाय डे. ' एम पण काणु छे माटे ज्ञान अने क्रिया वैनेनो खप करवो.

" सर्व नयनु रहस्य संयम कहेलुं डे. माटे हमेशां ज्ञान अने क्रियावर्ने आप पुरुषोए तेनु सेवन करवुं. "

इत्यददिनपरिमितोपदेशमासाददृत्ता श्रयोविंशतितमस्तंजस्य  
अष्ट्रिंशदधिकविशततमः प्रवंधः ॥ २३७ ॥

शीघ्र दृष्टा विषे.

स्त्रीनी साथे वांग व्रतनो सद्व्रास व्रतां पण उचम पुरुषो पोतानी ह-  
दनाने छोटा नथी. करुं छे के—

दिनमेकमपि स्थातुं, कोऽज्ञं स्त्रीसन्निधो तथा ।

चतुर्मासीं यथाऽतिष्ठत्, स्यूलन्नज्ञोऽङ्गतव्रतम् ॥ १ ॥

जावार्थ—“ जेवी रीते स्यूलभज मुनि व्रतनो जंग कर्या विना चार मा-  
स मुधी स्त्री समीपे रहा, तेवी रीते वीजो कयो पुरुष एक दिवस पण रहेवाने स-  
मर्थ छे ? कोइज नर्थी.”

### स्यूलन्नज्ञ मुनिनी कथा.

एकदा वर्षाङ्कतु आवतां श्रीसंज्ञतविजय सुरिने बंदना करीने त्रण  
मुनिओए जूदा जूदा अनिग्रह दीधा. तेमां पहेवा मुनिए करुं के “ हुं चार मास  
मुधी सिंहनी गुफाने मोडे उपवास करीने कार्यात्सर्गं रहीश.” वीजा मुनिए करुं  
के “ हुं चार मास मुधी दृष्टिविपर्सना वीज्ञने मोडे कार्यात्सर्गं धारण करीने  
उपेषित रहीश.” अने वीनाए करुं के “ हुं चार मास मुधी दृवाना जावट  
उपर कार्यात्सर्गं करीने उपेषित रहीश.” ते त्रणे मुनिओने योग्य जाणीने गुरु-  
ए तेमने आङ्गा आपी. पठी स्यूलन्नज्ञ मुनिए उत्तीने गुरुने विज्ञप्ति करी के “ हुं  
चार मास मुधी उग्र तप कर्या विना पद्मसंबोधा जोगननो आहार करीने कोशा  
पिदपाना परमां रहीश.” गुरुए उपयोग दझने तेने योग्य पारीने तेप करवानी आ-  
ङ्गा आपी. पठी सर्व मुनिओ पोते अंगीकार करेवा स्याने गया. ते वर्षने शमना  
गुणवाला अने उग्र तपने धारण करनारा ते मुनिवरोने जोइने ते सिंह, सर्व अने  
दृवानो रेट फेरवनार ए द्राणे शांत भद्र गया.

स्यूलन्नज्ञ पण कोशाने घेर गया. त्वां तेमने आवता जोइने कोशाए विचा-  
र्यु के “ आ स्यूलन्नज्ञ चास्त्रिवी उद्देग पापी व्रतनो जंग करीने आव्या जाणाय  
छे, पाटे हुण मुधी माझे जाग्य जागतुं छे.” एम विचारीने कोशा एकदम उत्ती

मुनिने पोतीथी वधावी वे हाथ जोकी उन्हीं रहीने बोड़ी के “ पूज्य स्वामी ! आप जब्ते पधार्या, आपना आगमनथी आने अंतराय क्षय धयाने दीधि मारुं पुण्य प्रगट थयुं डे. आने मारापर चिंतामणि, कामपेतु, कव्यवृक्ष तथा कामदेव विंगेरे देवताओं प्रसन्न थया एम हुं मानुं छुं. हवे हे नाथ ! प्रसन्न थइने मने जब्तदीथी आङ्का आपो. आ मारुं चित्त, विच, शरीर अने घर ए सर्व आपनुं डे, मारुं यौवन प्रथम आपेज सफल कर्युं डे. हमणां हीमथी वळी गयेद्वारी कमङ्गिनीनी जेम आपना विरहथी दग्ध थयेद्वा आ मारा शरीरने निरंतर आपना दर्शन तथा सर्व वक्ते आनंदित करो.” ते सांजळीने स्यूब्बनज्ज वोद्वा के “ आ कामशास्त्रने अनु-सारे बनावेद्वी तारी चित्रशाला मने चार मास सुधी रहेवा आप.” ते सांजळीने कोशाए तरतज चित्रशाला साफ करीने रहेवा आपी. त्यां मुनि समाधि धारण करीने रहा. कोशाए आपेद्वी कामदेवने प्रदीप करनार पम्भसयुक्त आहार करीने पण मुनि स्थिर मन राखीने रथा. कोशा बह्नाचूपण पहेरीने अनेक प्रकारना हावजाव करती मुनिने क्लोन पमाकवा तेमनी पासे आवी. ते बखते मुनिए कहुं के “ सामा त्रण हाथ दूर रहीने तारे वृत्त विंगेरे जे कर्युं होय ते कर्युं.” पर्ही ते कोशा सामा त्रण हाथ दूर रहीने कटाक्षथी मुनि सामुं जोवा द्वागी, द्वजानो त्याग करीने पूर्वे करेद्वी क्रीमानुं स्मरण कराववा द्वागी, अने गातने वालवानी चतुराइथी त्रिवलीवके सुंदर एवो मध्य जाग देखास्ती, तथा बहनी गांउ वांधवाना मिपथी गंजीर नाजिरूपी कूपने प्रगट करती कोशा तेमनी समक्ष विभवे मोह पमाडनारुं नाटक करवा द्वागी. तोपण स्यूब्बनज्ज जरा पण क्लोन पाम्या नहीं. पर्ही ते कोशा पोतानी सखीओने बङ्गने आवी. तेमांथी एक निपुण सखी बोड़ी के “ हे पूज्य ! कठिनतानो त्याग करीने उच्चर आपो. केमके मुनिओनुं मन हमेशां करुणाए करीने कोमळ होय डे. जाग्यहीन पुरुषोज प्राप्त थयेद्वा जोगने गुमावे डे, माटे हे पाप रहित मुनि ! आपना वियोगथी कृश थयेद्वी अने आपनेज माटे मरवाने तैयार थयेद्वी आ तपारी कापातुर मियाना मनोरथने सफल करो. फरीथी पण आ तपस्या तो सुखे प्राप्त थये, पण आवी भेमी युक्ती फरीथी मळज्जो नहीं.” ते सांजळीने मुनिए कोशाने कहुं के “ अनेतीवार अनेक जवर्णा कामकीमादि कोक्ष डे, तोपण हजु सुधी शुं तुं तेनीज इच्छा करे डे ? शुं हजु तने तुसि थइ नयी के जेयी मारी सन्मुख आ वृत्तादिक प्रयत्नो करे डे ? जो कदाच आवुं वृत्त प्रशस्त जावडे परमात्मानी सु-ति पूर्वक तेमनी पासे कर्युं होय तो सर्व सफल थाय. परंतु तुं तो जोगनी इच्छा-

यी दीन वाणी बोझे रे, अने सखीओने द्वावीने जोगपासिने माटे प्रयत्न करे रे, परंतु हुं शामटे आ जन्म तथा जीवने दृष्टा गुमावे रे ? हे शुचिशाळी कोशा ! ते सर्व प्रयत्न पोताना आत्मना हितने विषेज कर. ” आ प्रमाणेनां स्थूलजड़ मुनिनां बचनो सांजड़ीने कोशाए विचार्यु के “ आ मुनिनुं जितेन्द्रियपणुं मारा जेवी असंख्य चतुर नायिकाथी पण जीती शकाय तेहुं नशी. ” एम विचारीने ते योद्धी के “ हे मुनिराज ! मैं अह्लानताने दीधे आपनी साथे पैर्वं करेद्वी क्रीमाना द्वोज्ञथी आजे पण क्रीडानी इच्छावर्मे आपने क्षोज्ज पमानवा माटे अनेक उपायो कर्या रे, हवे ते मारो अपराध क्रमा करो. ” पत्री मुनिए तेने योग्य जाएनि श्रावकर्थमनो उपदेश कर्यो. ते पण प्रतिवेष पामीने श्राविका थइ, अने “ नंद राजाए मोक्षेद्वा पुरुष विना वीजा सर्व मारे वंहु समान रे ” एवो अनिग्रह द्विधो.

हवे वर्षाक्रम्यु पूर्ण धइ त्यारे पेढ़ा त्रणे साधुओ पोतपोताना अनिश्चिह्ननुं यथाविधि प्रतिपाद्नने करीने गुरु पासे आव्या. तेमां प्रथम सिंहनी गुफा पासे रहेनार साथुने आवता जोइने गुरु कांझक उठीने बोद्ध्या के “ हे वत्स ! छुप्कर कार्य करनार ! तुं जब्बे आव्यो, तने साता रे ? ” तेज प्रमाणे वीजा वे साधुओ आव्या, त्यारे तेमने पण तेज रीते गुरुए आवकार आप्यो. पत्री स्थूलजड़ने आवता जोइने गुरु उच्चा थइने बोद्ध्या के “ हे महात्मा ! हे छुप्कर छुप्कर कार्यना करनार ! तुं जब्बे आव्यो. ” ते सांजड़ीने पेढ़ा त्रणे साधुओए इर्पायी विचार्यु के “ आ स्थूलजड़ मंत्रीनो पुत्र होवाथीज तेमने गुरु वहुमानयी बोद्धावे रे. चित्रशाळामां रहेद्वा, परस्त ज्ञोजननो आहार करनारा अने स्त्रीओना संगमां वसेद्वा आ स्थूलजड़ने गुरुए अति छुप्कर कार्य करनार कहो, तो हवे अमे पण आवता चातुर्मासमां तेवोज अनिग्रह करशुं. ” एम विचारीने महा कहे आउ मास व्यतीत कर्या. पत्री वर्षाकाल आव्यो त्यारे सिंहगुफावासी अनिमानी साधुए सूरिने कहुं के “ आ चातुर्मास हुं स्थूलजड़नी जेम कोशाना घरमां रहीश. ” गुरुए विचार्यु के “ जहर आ साधु स्थूलजड़नी स्पर्धायी आवो अनिग्रह करे रे. ” पत्री गुरुए उपयोग आपीने तेने कहुं के “ हे वत्स ! ए अनिग्रह हुं न क्षे, ते अनिग्रहनुं पाहन करवामां ते स्थूलजड़ एकज समर्थ रे, वीजो कोइ समर्थ नयी, केमके—

अपि स्वयंभूरमणस्तरीतुं शक्यते सुखम् ।

अयं त्वनिग्रहो धर्तुं, छुप्करेऽयोऽपि छुप्करः ॥ १ ॥

“ कदाच स्वयंजूरमण समुद्र पण सुखेयी तरी शकाय, पण आ अनिग्रह धारण करवो ते तो छुप्करेयी पण छुप्कर डे. ”

आ प्रमाणेना गुरुए कहेद्वा बचननी अवगणना करीने ते वीरमानी साहु कोशाने घेर गया, कोशाए तेने जोइने विचार्युके “ जहर आ साहु मारा धर्मगुरुनी स्पर्धाथीज अहों आव्या जणाय डे. ” एम विचारीने तेणे ते मुनिने वंदना करी, मुनिए चतुर्मास रहेद्वा माटे चित्रशाळा मार्गी, ते तेणे आपी, पञ्ची कामदेवने उदीपन करनार पड्ग्रस भोजन कोशाए मुनिने वहोराव्युं, मुनिए तेनो आहार कर्यो, पञ्ची मध्याह समये प्रथमनीज जेम बहामूलण पहेरीने कोशा मुनिनी परीक्षा करवा आवी, तेना हावजाव, कटाक्ष तथा नृत्यादिक जोइने मुनि क्षणवारमांज कोन पाम्या, अग्नि पासे रहेद्वा लाव, धी अने मीणनी जेम ते मुनिए कामावेशाने आधीन थइने जोगनी याचना करी, त्यारे कोशाए तेने कहुं के “ हे स्वामी ! अमे वेद्याओ इन्द्रनो पण द्रव्य विना स्वीकार करती नवी, ” मुनि वोद्या के “ मने कामज्वरधी पीमा पामेद्वाने जोगसुख आपीने प्रथम जांत कर, पञ्ची द्रव्य मेलवतारुं स्थान पण तुं बतावीश तो त्यां जइने ते पण हुं तने मेलवी आपीश. ” ते सांजळीने तेने वोध करवा माटे कोशाए तेने कहुं के “ नेपाल देशनो राजा नवीन साहुने लक्ष मूद्यवाल्मी रत्नकंबल आपे डे, ते तमे मारे माटे लह आवो; पञ्ची वीजी वात करो. ” ते सांजळीने अकाले वर्षीश्वरुमांज मुनि ने-पाल तरफ चाल्या, त्यां जह त्यांना राजा पासेयी रत्नकंबल मेलवीने कोशारुं ध्यान करता ते मुनि तरतज पाला फर्या, मार्गामां चोर लोको रहेद्वा हता, तेमने तेना पालेद्वा पक्कीए कहुं के “ लक्ष धन आवे डे. ” एम वारंवार ते पक्कीए कहुं, तेवामां मुनि पण ते चोरनी नमीक आव्या, एउट्टे तेने पक्कीने चोर लोकोए सर्व जोहुं, पण काँइ द्रव्य जोवामां आव्युं नहीं, तेवी मुनिने लोकी मूद्या, फरीधी ते पक्कीए कहुं के “ लक्ष द्रव्य जाय डे. ” ते सांजळीने फरीधी साहुने पाला वोद्यावीने चोरना राजाए कहुं, के “ अमे तने अन्य आध्युं, पण सत्य वाल, तारी पासे शुं डे ? ” त्यारे साहु वोद्या के “ हे चोरो ! सत्य वात सांजळो,

आ वांसनी पोद्वी काकरीमां में वैश्याने आपवा माटे रत्नकंबड़ राखेलुं डे.” ते सांजलीने चोरोए तेने रजा आपी, साहुए आवीने कोशाने ते रत्नकंबड़ आ-प्युं. ते दृष्टने कोशाए तेने धरनी खालना कादवमां नाखी दीधुं. ते जोइने साहुए खेदयुक्त घड़ कहुं के “ हे सुंदरी ! घणी मुझकेद्वीथी आणेलुं आ महा मूद्य-वालुं रत्नकंबड़ तें कादवमां केम नाखी दीधुं ? ” कोशाए कहुं के “ हे मुनि ! ज्यारे तमे एम जाणो गो, त्यारे गुणरत्नवाला आ तमारा आत्माने तमे नरकस्थपी कादवमां केम नांखो गो ? त्रण जुवनमां छुट्टेज एवा रत्नवयने नगरनी खाल जे-वा तमारा अंगमां केम फोगट नांखी दोछो ? अने एक बार वयन करेद्वा संसारना जोगने फरीने खावानी इच्छा केम करो गो ? ” इत्यादि कोशानां उपदेशवालां वाक्यो सांजलीने प्रतिवोध पामेद्वा मुनिए वैराग्यथी कोशाने कहुं के “ हे पापरहित सु-शीक्षा ! तें संसारसागरमां पमतां मने बचाव्यो ते वहु सारु कर्यु. हवे हुं अति-चारथी उत्पन्न धरेद्वा छुप्कर्य रूप मेघने धोवाने माटे झानरूप जलथी जरेला गुरु स्थपी झहनो आथथय करीजा, ” कोशाए पण तेमने कहुं के “ तमारे विषे मारु मिथ्या छुक्कत हो, केमके हुं शीक्षावतमां स्थित हती डतां तमने में कामोत्यादंक क्रियावरे खेद पमाड्यो डे; परंतु तमने योध करवा माटेज में तमारी आशातना करी डे ते कृपा करजो, अने हंमेशां गुरुनी आङ्गाने मस्तकपर चकावजो, ” ते सां-जलीने ‘ इच्छामि ’ एम कही सिंहगुफावासी मुनि गुरु पासे आव्या.

गुरु विगेरेने बंदना करीने “ हुं मारा आत्माने निंदुं दुं ” एम कही ते मुनि वोद्या के “ सर्व साधुओमां एक स्थूलजन्मज अति छुप्कर कार्यना करनार डे, एम जे गुरुए कहुं हतुं ते योग्य डे. पुष्पफलना रसने (स्वादने), मदना रसने, मांसना रसने अने स्त्रीविद्वासना रसने जाणीने जेओ तेनाथी विरक्त थाय डे ते अति छुप्कर कार्यना करनार डे. तेने हुं बंदना करुं दुं. वली सत्त्व विनानो हुं क्यां अने धीर बुद्धिवाला स्थूलजन्मज क्यां ? सर्पवनो कण क्यां अने हेमाद्वि पर्वतक्यां ? खद्योत क्यां अने सूर्य क्यां ? ” आ प्रमाणे कहीने ते मुनि आङ्गाचेना दृष्ट छुप्कर तप करवा द्वाग्या.

अहीं कोशा पोताना स्थूलजन्मज गुरुनी नीचि प्रमाणे स्तुतिकरवालागी—  
सार्धद्वादशकोटीनां, स्वर्ण यो मामदाढूगृहे ।

स छादशव्रतान्येवं, साधुत्वेऽपि ददावहो ॥ १ ॥

(३७४) उपदेशप्रासाद नार्यातर-नारा ५ मो. स्लेज १३ मो.

ज्ञावार्थ—“ जेणे सामवार करोर सोनामहोरो मारा परमां आवीने मने आपी हती तेणज साहुअवस्थामां पण मारे त्यां आवीने मने वार ब्रत आयां । ”

येन दत्तं पुरा दानं, तेनैव दीयते पुनः ।

चातको रटते नित्यं, दानं यच्छ्रेत् पयोमुचः ॥ २ ॥

ज्ञावार्थ—“ जेणे प्रथम दान आप्युं होय डे तेज फरीथी पण दान आपे डे, जुओ ! चातक पढी जलने माटे निरंतर याचना करे डे अने भेष निरंतर दान आपे डे । ”

धनदानाद्याचित्वमाजन्म निर्मितं सुखम् ।

ब्रतदानाङ्गवेऽनन्ते, सौख्यदो मम सर्वदा ॥ ३ ॥

ज्ञावार्थ—“ सूड्गन्धे धनतुं दान आपीने आ जन्म पर्यंत अयाचक ई-  
चितुं मने सुख आप्युं, अने ब्रततुं दान आपीने अनंत जबतुं सुख मने आप्युं;  
एटझे सर्वदा ते तो मने सुख आपतारज थया । ”

आ सूड्गन्ध मुनीन्धना गुणतुं वर्णन चोराशी चोवीशी सुधी सर्व ती-  
र्थकरो करवो,

“ पणा दिवस सुधी स्त्रीओना संगमां रहा उतां पण सूड्गन्ध मुनिए  
पोताना शीब्बनो जंग कयो नहीं, ते जोइन वीजा साहुओए पण सिंहगुफार्वा-  
सी-मुनिना जेहुं खोना संघंथमां निःङ्क मन करतुं नहीं । ”

इत्यद्विनपरिमितोपदेशप्रासादहत्तौ ब्रयोविंशतितमस्तंजस्य

एकोनचत्वारिंशदधिकत्रिशततमः प्रवर्थः ॥ ३३६ ॥

# व्याख्यान ३४० मुं.

मनुप्यज्जनी छुर्वंजता विषे.

संवन्धैर्दशजिङ्गेयो, मनुप्यज्जवछुर्वंजः ।

तन्मध्ये पाशकङ्गातं, द्विख्येते पूर्वशास्त्रतः ॥ १ ॥

जावार्थ—“दश दृष्टिं करीने मनुप्यज्जव छुर्वंज डे एम जाणवुं. ते दश दृष्टांतमांयी तेपां आ स्थले पूर्व शास्त्रने अनुसारे पाशानुं दृष्टांत लक्खीए डीए.

पाशानुं दृष्टांत ( चाणाक्यनी कथा ).

गोद्वादेशमां चणक नामनो एक जैन ब्राह्मण रहेतो हस्तो. तेने चणेश्वरी नामनी पत्नी हड्ठी. ते स्त्रीधी चाणाक्य नामनो जन्मथीज दांतवालो पुत्र थयो हत्तो. एकदा तेने धेर कोइ झानी मुनि आहार माटे आव्या. ते वरते मुनिने न-मीने ते दंपतीए पूछ्यु के “हे पूज्य ! आ पुत्र दांत सहित जन्मयो डे तेनुं शुं फळ ?” मुनि बोव्या के “ए वाळक राजा थशे.” ते सांजळी चणकने खेद थयो; अने “मारो पुत्र राज्यना आरंजयी अधोगति न पासो” एम विचारीने तेणे ते वाळकना दांत घसी नांख्या. पडी ते वात चणके फरीने पाडी तेज मुनिने कही. त्यारे मुनि बोव्या के “हवे ते वाळक प्रधानथ्रेषु थशे.”

अनुक्रमे वृच्छि पामतो चाणाक्य सकळ कलामां कुशाल थयो. ते युवान थयो त्यारे एक ब्राह्मणनी कन्या साये परएयो. ते निर्धन हत्तो, तोपण संतोषी हो-वार्थी धनने भाटे वहु भयत्न करतो नहीं. अन्यदा तेनी स्त्री पोताना जाइना द्वाग्न होवार्थी पिताने धेर गळ; पण निर्धनताने लीधे तेना भाइओनी स्त्रीओ विग्रेए तेने आदरमान आप्युं नहीं, अने ज्ञाननादिकमां पण पंक्तिजेद कर्यो. ते जोइ पोताना अति छुर्भाग्यवी दज्जा पामीने ते पतिने धेर आव्वा. तेने अस्यांत शोकातुर जोइने चाणाक्ये आग्रहवी शोकनुं कारण पूछ्युं. त्यारे अथृनी वृष्टि करती तेणे पोताना पराजयनी वात कही संजळावी. ते सांजळीने चाणाक्ये विचार्यु के—

कद्वावान् कुलवान् दाता, यशस्वी रूपवानपि ।

**विना श्रियं जघेन्मत्योँ, निस्तेजाः क्षीणचन्द्रवत्॥ १ ॥**

“ कङ्गवान्, कुङ्गवान्, दातार, यशस्वी अने स्वप्नान् छतां पण मनुष्य जो छक्षमी विनानो होय तो ते क्षय पापता चंद्रनी जेम तेजरहित देखाय डे.”

माटे नन्द राजा ब्राह्मणोने धारुं धन आपे डे तेथी त्यां जाऊं. एम विचारीने चाणाक्य तरतज पाठ्वीपुर गयो. त्यां राजसनामां जड्ने राजानाज सिंहासन पर वेत्रो. थोकीवारे एक निमित्त जाणनार सिंच्चपुत्रनी साथे नन्द राजा सनामां आव्या. त्यां सिंहासन पर वेत्रेद्वा चाणाक्यने जोइने ते सिंच्चपुत्र बोद्ध्यो के “ आ ब्राह्मण नंदवंशानी डाया (मर्यादा)नुं उद्घांघन करीने सिंहासन पर वेत्रो डे.” ते सांजळीने राजानी दासीए चाणाक्यने कयुं के “ हे पूज्य ! आ वीजा सिंहासन पर वेसो.” ते बोद्ध्यो के “ आ वीजा आसन पर मार्ह कमंडलु रहेशे.” एम कहीने ते वीजा आसनपर कमंडलु मूर्खयुं, अने पोते ते सिंहासनपरथी उठ्यो नहीं. त्यारे दासी वीजुं सिंहासन लावी, तेनापर चाणाक्ये दंड मूर्ख्यो, दासी चोयुं आसन लावी, तेनापर तेणे अकुमाळा मूर्खी, अने पांचमा आसन पर तेणे ब्रह्मसूत्र पूर्खयुं. त्यारे दासी बोद्धी के “ अहो ! आ ब्राह्मण केवो धृष्ट अने मूर्ख डे ? ” ते सांभळीने क्रोध पामेद्वा चाणाक्य दासीने पगनी लात मारीने सर्व द्वोक सांजळतां बोद्ध्यो के—

**कोऽजैश्च भृत्यैश्च निवध्धमूढां, पुत्रैश्च मित्रैश्च विवृध्धशाखम् ।**

**उत्पाद्य नन्दं परिवर्तयामि, महाङ्गुमं वायुरिचोग्रेवेगः ॥ १ ॥**

नारायण—“ जंकार अने भृत्योवरे जेनुं मूळ मजबूत थयेद्वुं डे, अने पुत्रो तथा मित्रोवरे जेनी शाखाओ रुच्छि पामेद्वी डे एवा नन्द स्वपी महाप्रद्वाने उग्र वेगवाळा वायुनी जेम हुं मूळथी उखेद्वीने जमावीश.”

ते सांजळीने “ आ जिकुक ब्राह्मणाथी द्वुं थवारुं डे ? ” एम थारी राजाए पण तेनी उपेक्षा करी. एक्ष्वे ते चाणाक्य त्यांथी नीकळीने जमतो जमतो नन्द राजाना मयूरपोषकना गामामां आव्यो. त्यां ते परिवाजकनो वेप धारण करीने रुओ. ते गामना ग्रामणी ( गामेती )नी पुत्रीने चंद्र धीवानो दोहद थयो हृतो, ते दोहदने पूर्ण करवा कोऽ समर्थ थयुं नहोतुं. तेथी तेना पिताए चाणाक्यने कयुं, त्यारे ते बोद्ध्यो के “ जो ते पुत्रीना गर्जेमां रहेद्वा पुत्र मने आपवानुं कलुङ्ग करो



ने अनुसारे सर्व मकानो जोवा लाग्यो, तेवामां एक स्थाने महा प्रतापी सात देवीओ—इन्जनी कुमारीकाओनी मूर्तिओ तेणे जोइ. पछी तेमना प्रजावधीज आ पुरनो जंग थतो नवी, एम जाणीने ते देवीओने उखेनी नांखवानो उपाय चिचाखा लाग्यो, तेवामां पुरना रोधयी कायर थयेज्ञा पौरजनोए ते जिक्कुने पूछ्यु के “ हे पूज्य ! आ पुरनो रोध क्यारे मट्झो ? ” चाणाक्ये जवाब आप्योके—“ ज्यांसुधी आ सात देवीओनी प्रतिपाओ अहीं प्रतिष्ठित छे, त्यांसुधी पुरनो रोध शी रीतें मठे ? ” आ प्रमाणेना ते धूर्तना कहेवाथी छेतराएला लोकोए ते देवीओने तेना स्थानथी तरतज उखेनी नांखी. तेज वस्ते चंद्रगुप्ते तथा पर्वते ते पुर जीती लीधुं. आ प्रमाणे तेणे प्रथम नंदराजानो देश साधीने पछी पाट्डी-पुर लीधुं ते वस्ते नंददुँ पुण्य कीण थयेद्युं होवाथी तेणे चाणाक्य पासे धर्मघार माग्युं, त्यारे ते वोब्यो के “ हे नंदराजा ! तुं एक रथमां जेट्डुं लङ्घ जवाय तेव्हुं लङ्घने निर्जयताथी पुर वहार चाव्यो जा. ” नंद पण पोतानी वे स्त्रीओ, एक कन्या अने सारचूत द्रव्य रथमां लङ्घने नगर वहार नीकव्यो, तेज वस्ते चंद्रगुप्त विग्रे सौ नगरमां पेता. सामसामे मलतां नंदनी कन्या अनुरागथी चंद्रगुप्तनी सामुं जोइ रही. ते जोइने नंदराजाए पुर्वीने कहुं के “ हे पुत्री ! जो आ पति तने पसंद होय तो खुशीथी तेने अंगीकार कर. पितानी आज्ञा थवाथी ते कन्या पोताना रथमांथी उतरीने चंद्रगुप्तना रथ उपर चढवा लागी. तेना चढतांज चंद्रगुप्तना रथना चक्रना नव आरा जांगी गया, तेथी “ आ स्त्री अमंगल करनारी दे ” एम धारीने चंद्रगुप्ते तेने अट्कावी, एट्ले चाणाक्य वोब्यो के “ हे वत्स ! ते स्त्रीनो तुं निषेध न कर. आ आराना जंग रूप शुकनयी तारी नव प्रेढी सुधी तारो वंश रहेजो. ” ते सांजडीने चंद्रगुप्ते ते कन्याने पोताना रथमां वेसानी, अने नंदना राजारमां आव्यो.

राजमहेक्षमां एक कन्या वहु रूपवती हत्ती. तेने जन्मथीज नंदराजाए धीमे धीमे महा उग्र विष खबडाववा मार्मधुं हतुं, एट्क्षे ते विषकन्या थइ गइ हत्ती. ते विषकन्याने जोइने पर्वतराजाए विषयध थइ तेनो संग कयों, तेथी ते कन्यातुं विष तत्काळ पर्वतने चढद्युं. तेणे चंद्रगुप्तने कहुं के “ मने विष व्याप्त्युं छे, माडे तेनो जद्वदीथी कांइ उपाय कर. ” ते सांजडीने चंद्रगुप्त तेनो उपाय करवा उत्सुक थयो. ते वस्ते चाणाक्ये नेत्रनी संझाथी चंद्रगुप्तनो निषेध कयों, अने शिखामण

अहींथी जतो हुतो, तेने तें जोयो डे ? ” ते वोल्यो के “ ते आ सरोवरमां पेत्रो डे, ” ते सांजलीने ते स्वार मात्र लंगोटी मारीने ते सरोवरना जल्मा पेत्रो, एट्ट्वे चाणक्ये तेनुं सफ द्वाज्ञे तेनुं मार्यु डेदो नारुल्युं. पत्री तेना योमा उपर चंडगुसने वेसानीने चाणक्य आगळ चाल्यो. चालतां चालतां तेण चंडगुसने पूर्छुं के “ हे वत्स ! ज्यारे में ते घोडेस्वारने सरोवरमां मोक्ष्यो, त्यारे तें शुं धार्यु ? ” ते वोल्यो के “ जे उत्तम पुरुषो करे डे ते उत्तमज होय डे, एम में धार्यु हुं. ” आ प्रमाणेना तेना विनयवाळा वाक्यथी चाणक्य घणो खुशी थयो. थोरे दूर जतां चंडगुसने कुभित जाणीने चाणक्ये जोजनने माटे जतां मार्गमां कोइ ब्राह्मणने तर- तनोज कर्त्तो खाज्ञे आवतो जोइ तेनुं पेट चीरी तेमांथी ते जोजन ब्रह्म तेवती चंडगुसने जपाल्यो. चंडगुस ज्ञुल्यो होकाठी जोजनना रसनो विर्यय जाणी शक्यो नहीं.

पत्री ते मौर्यवंशी चंडगुसनी साथे संध्यासमये एक गाममा आल्यो. त्यां जिक्काने माटे भपतां ते एक दरिंदीने घेर गयो. ते वसते एक मोसीए पोतानां वाळकोने उनी उनी राव पीरसी हती. तेमांथी एक वधारे नारुल्या वाळके वचमां हाथ नांख्यो, तेथी तेनी आंगलीओ दाई एट्ट्वे ते रोवा द्वाख्यो. तेने पेढ्वी मोसीए कार्यु के “ ओरे पूढ ! तुं पण चाणक्यना जेवो जन जणाय छे. ” ते सांजलीने निकुरुप चाणक्ये नोसीने पूछर्यु के “ हे माता ! तपे अहीं चाणक्यतुं दृष्टांत केम आप्युं ? ” नोसी बोझी के “ जेम चाणक्ये आजुवाजुनो देश साध्या विना पहेलां पाट्ट्वीपुरनेज रुच्युं, तेथी ते मूर्ख निवाने पाव थयो, तेम आ वाळके पण प्रथम धीमे धीमे अभस्ते पमखेथी राव चाण्या विना वचमांज हाय नांख्यो, तेथी ते चाणक्यनी उपमाने पाम्यो. ” ते सांजलीने चाणक्ये नोसीनी शिक्का सत्य मानी.

पत्री अनुकमे चाणक्ये पर्वत नामना एक राजानी साथे भाद मित्राइ चां-धी. एकदा तेणे पर्वत राजाने कहुं के “ जो तमारी इच्छा होय तो नंद राजानुं उ-भुवन करीने तेनुं राज्य आपणे वहेंची ब्रह्म. ” ते वात कबूल करीने पोताना सैन्य सहित पर्वत राजा चंडगुसने साथे राख्यने नंद राजानो देश साधवा दायो. ब्रवड नंदनी राजधानी पाट्ट्वीपुत्रने घेरो घाल्यो. पण ते नगरी वल्थी ब्रह्म शक्य तेवं नयी, एम धारीने निकुनो वेप लळ चाणक्य ते पुरमां पेत्रो. लां चास्तु शास्त्र-

ने अनुसारे सर्व मकानो जोवा लाग्यो. तेवामां एक स्थाने महा प्रतापी सात देवीओ—इन्हनी कुमारीकाओनी मूर्तिंओ तेणे जोइ. पछी तेमना प्रजावधीज आ पुरनो जंग थतो नदी, एम जाणीने ते देवीओने उखेनी नांखवानो उपाय चिचारवा लाग्यो. तेवामां पुरना रोधयी कायर थयेल्ला पैरजनोए ते जिझुने पूछयुं के “ हे पूज्य ! आ पुरनो रोध क्यारे मटडो ? ” चाणाक्ये जवाब आप्यो के—“ ज्यांसुधी आ सात देवीओनी प्रतिमाओ अहीं प्रतिष्ठित छे, त्यांसुधी पुरनो रोध जी रीतें मटे ? ” आ प्रमाणेना ते धूर्तना कहेवाथी छेतराएल्ला लोकोए ते देवीओने तेना स्थानयी तरतज उखेनी नांखी. तेज वर्खते चंद्रगुप्ते तथा पर्वते ते पुर जीती द्वीयुं. आ प्रमाणे तेणे प्रथम नंदराजानो देश साथीने पछी पाइँडी-पुर द्वीयुं ते वर्खते नंदनुं पुण्य कीण थयेद्वीयुं होवाथी तेणे चाणाक्य पासे धर्मघार माग्युं. त्यारे ते वोद्यो के “ हे नंदराजा ! तुं एक रथमां जेटद्वीयुं लइ जवाय तेव्वुं द्वैने निर्जयताथी पुर वहार चाह्यो जा. ” नंद पण पोतानी वे स्त्रीओ, एक कन्या अने सारचूत द्रव्य रथमां द्वैने नगर वहार नीकल्यो. तेज वर्खते चंद्रगुप्त किंत्रे सौ नगरपां पेता. साम्पसामे मळतां नंदनी कन्या अनुरागयी चंद्रगुप्तनी सामुं जोइ रही. ते जोइने नंदराजाए पुत्रीने कहुं के “ हे पुत्री ! जो आ पति तने पसंद होय ती खुशीयी तेने अंगीकार कर. पितानी आङ्गा थवाथी ते कन्या पोताना रथमांयी उतरीने चंद्रगुप्तना रथ उपर चढवा लागी. तेना चढतांज चंद्रगुप्तना रथना चक्रना नव आरा जांगी गया, तेथी “ आ स्त्री अमंगल करनारी छे ” एम धारीने चंद्रगुप्त तेने अटकावी. एटले चाणाक्य वोद्यो के “ हे वत्स ! ते स्त्रीनो तुं निपेथ न कर. आ आराना जंग रूप शुक्लयी तारी नव पेढी सुधी तारो वंश रहेशो. ” ते सांजळीने चंद्रगुप्त ते कन्याने पोताना रथमां वेसानी, अने नंदना राजघारमां आव्यो.

राजमहेलामां एक कन्या वहु रूपवती हहती. तेने जन्मधीज नंदराजाए धीमे धीमे महा उग्र विष खबडाथवा मांसयुं हतुं, एटझे ते विषकन्या थइ गइ हहती. ते विषकन्याने जोइने पर्वतराजाए विषयध थइ तेनो संग कर्यो. तेथी ते कन्यानुं विष तल्काल पर्वतने चढयुं. तेणे चंद्रगुप्तने कहुं के “ मने विष व्याप्युं छे, माटे तेनो जलदीयी कांइ उपाय कर. ” ते सांजळीने चंद्रगुप्त तेनो उपाय कर्या उत्सुक थयो. ते वर्खते चाणाक्ये नेत्रनी संझाथी चंद्रगुप्तनो निपेथ कर्यो, अने शिखामण

आपी के—

तुल्यार्थं तुल्यसामर्थ्यं, मर्मङ्गं व्यवसायिनम् ।

अर्धराज्यहरं मित्रं, यो न हन्यात्स हन्यते ॥ १ ॥

“ तुल्य संपत्तियाला, सपान सामर्थ्यवाला, गुप वात जाणनार, सरखो व्यापार करनार अने अर्धा राज्यनो जागीदार एवा मित्रने पण जे हणतो नथी ते पोतेज हणाय छे. ”

पछी चिपधी व्यास घेड्हो ते पर्वत तरतज मृत्यु पाम्यो, एड्हे तेउं राज्य पण चंद्रगुप्तने आधीन घयुं.

हुवे चंद्रगुप्तना राज्यमां नंदना माणसो चोरी करवा द्वाग्या. तेथी चाणाक्य कोइ वीजा रक्क ( कोटवाळ ) नी शोष करवा द्वाग्यो. शोषतां शोषतां ते नद्वद नामना तंतुवायने घेर गयो. ते वर्खते ते तंतुवाय मकोडाना विक्रमां अग्नि नांखतो हहो. ते जोझ्ने चाणाक्ये तेने पूछयुं के “ आ तुं शुं करे ते ? ” कुविंदे जवाव आप्यो के “ आ शुष्ट मकोडा मारा पुत्रेन रंखे छे, माटे सर्व मकोडानो उच्छ्रेद कर्खा माटे तेना विक्रमां हुं अग्नि मृकुं बुं. ” आ प्रमाणे ते कुविंदनी वाणीथी तेने लघ्यमी जाणीने चंद्रगुप्त पासे तेने पुरना अध्यक्षनी जग्या अपावी. एड्हे मार्य वंशालुं साम्राज्य कंटक ( शत्रु ) रहित ययुं.

एकदा चंद्रगुप्त पासे धन नथी एम जाणीने चाणाक्ये पुरना झोकोनी साये मध्यपाननी गोष्ठी करी. मदिराना आवेशायी पुरना द्वोको उन्मत्त यझ्ने नाच करवा द्वाग्या अने पमवा द्वाग्या. ते वर्खते अवसरले जाणनार चाणाक्य पण गांमो वनीने बोव्यो के “ मारे धातुनां रंगेद्वां वे वद्वो ते, विदं ते, अने सुवर्णनी कुर्नी ते, तेमज राजा मारे आधीन छे, माटे मारा नामनी जांज पत्वाज वगामो. ” ते सांजळीने जांज वगामनाराओए चाणाक्य मंत्रीना नामनी जांज वगामी. ते सांजळीने एक गृहस्थ पुरुपे मदिराना उन्मत्तपणाथी हाथ उंचो करीने कोझ्ने पण नहीं कहेवी एवी पोतानी लक्ष्मीहुं वर्णन करतां कहुं के “ अरे ! एक हजार योजन सुधी कोइ शेठ चाक्षे तेने पाव्हे पाव्हे दाख दाख द्रव्य आपुं, तेड्हा धननो हुं स्वामी हुं, माटे मारा नामहुं बोद्धाकुं वगामो. ”

— ते सांजळीने हुं पहेलो बोलुं, हुं पहेलो बोहुं, एवी चमसाचमसीधी

बीजो बोध्यो के “ एक आढक तलने यावीए, अने ते सारी रीते फळीने तेमांथी जेट्टा तद्वा नीपजे तेट्टा लक्क दीनार मारा घरमां डे; तेथी मारा नामतुं ढो-लकुं वगाडो. ”

बीजो बोध्यो के “ वर्षाक्तुनी पहेळी वृष्टिथी गिरिनी नदीमां जेट्टुं पूर ओवे, ते पूरने एक दिवसना माखण्यी पाळ वांधीने हुं रोकी शकुं तेट्टुं माखण दररोज मारे त्यां थाय डे; माटे मारा नामतुं ढोलकुं वगाडो ”

चोथो बोध्यो के “ मारे घेर एट्टा वथा अभ्यो डे के एक दिवसेज उत्तम थयेद्वा वछेरानी केशवाळीथी आखुं नगर वींद्याइ जाय; माटे मारा नामतुं ढो-लकुं वगाडो. ”

पांचमो बोध्यो के “ मारा घरमां एक शाली ( मांगर )नो दाणो एवो छे के ते जूदी जूदी जातना शालिना बीजोने उत्पन्न करे डे, अने बीजो शालिनो दाणो एवो डे के तेने वारंवार द्वाणीए छतां वारंवार उग्याज करे डे, आवे रत्नो मारे घेर डे; माटे मारा नामतुं ढोलकुं वगाडो. ”

आ प्रमाणे मथना आवेशयी सर्व जनोए पोतपोतार्नी समृच्छ प्रगट करी. कहुं डे के—

कुविअस्स आउरस्स य, वस्सणपत्तस्स रागरत्तस्स ।

मत्तस्स मरंतस्स य, सप्नावा पायना हुंति ॥ १ ॥

जावार्थ—“ कोपमां आयेद्वो, महा व्याधिवाळो ( आतुर ), फुःखमां पमेद्वो, रागमां आसक्त थयेद्वो उन्मत्त थयेद्वो अने मरवा तैयार थयेलो—आट्टा माणसो पेतानी सत्य वात प्रगट करे डे. ”

पडी चाणाक्य मंत्रीए सर्व स्वस्य थया त्यारे तेमनी पासेथी योग्यता प्रमाणे थोरुं थोरुं धन द्वीधुं, त्यार पडी फरीथी लोकोनुं धन द्वेवा माटे तेणे दिव्य पासा बनाव्या. पडी सोनामहोरेनो थाळ जरीने ते चौटामां लङ जङ माणसो प्रत्ये बोध्यो के “ जे माणस मने यूतमां जीते तेने आ सर्व महोरा आपी दबुं, अने जो हुं जीतुं तो मात्र एकज सोनामोहोर लङ. ” ते सांजळीने लोजने आधीन थयेद्वा लोको तेनी साधे रमया झाग्या, परंतु यूतकीमार्मा हुशोआर एवो कोइ

एष माणस ते मैत्रीने जीती शक्यो नहीं, संपत्तिना पाश रूप अने पोतानी इच्छा-  
नुसार पड़नारा ते पासाना प्रनामधी क्षोकोने जीतीने चाणाक्य मंत्रीए चंद्रगुप्तनो  
नंभार सुवर्णीयी जरो दीधो.

“ कदाच दिव्य प्रनाम विग्रे वल्थी कोइ माणस आ चाणाक्य जेवा मं-  
त्रीने पण जीती शके, परंतु जे माणस प्रमादधी मनुष्यजन्मने हारी जाय ते फरी-  
धी मनुष्यजन्मने पामी शकतो नव्ही। ”

३४०

इत्यद्विनश्चित्पितोपदेशप्रापादहृत्तो व्रयोविशतितमस्तंजस्य  
चत्वारिंशदधिकविशततपः प्रवधः ॥ ३४० ॥

३४१

### व्याख्यान ३४१ मुं.

उत्पातिकी बुद्धि विषे,

औत्पत्तिक्रयादिबुद्धिङ्गो, रोहको जतनासु यत् ।

महामान्योऽनूत्तथा धार्यो, धर्मवज्जिर्युणोत्तरः ॥ १ ॥

जावार्थ—“ उत्पातिकी विषे बुद्धिने जाणनार रोहक जेम द्वोकोमो  
अति मान्य थयो, तेम धर्मी माणसोए ते श्रेष्ठ गुणने धारण करवो। ”

### रोहकनी कथा.

अबन्ती नगरीनी पासे नट नामना गायमां जरत नामे एक नट रहेतो हू-  
तो, तेनी पहेली स्त्री प्रण धरणी हती, पण ते स्त्रीधी उत्पन्न थयेद्वारा, उत्पातिकी  
बुद्धिवालो रोहक नामे एक पुत्र हतो, जरन वीजी स्त्री पराण्यो हतो, ते स्त्री रो-  
हकने खावा पीवानु वरावर आपतो नहीं, तेथी एक वस्तर रोहके तेने वहु के-  
“ हे मा ! तु मने सारी रीते राखतो नव्ही, तेनु फळ हुं तने वतावीश, ” त्यो  
तेनी के “ हे जोकना पुत्र ! तु मने शुं करवानो हतो ? ” ते बोल्यो के “ हुं

एवं करीश के जेथी तु मारा पगमां पक्षीश." आम कद्दा उतां पण ते रोहकने गणकारती नहीं. एक दिवस रात्रे रोहके एकदम उठीने तेना पिताने कहुं के "रे रे पिता ! आ कोइ पुरुष आपणा घरमांथी नीकब्बीने नासी जाय डे, जुओ ! " ते सांभळीने जरते शंका बाबीने विचार्यु के " जरुर मारी ही कुञ्जया छे. " एम वहेम बाबीने ते तेना पर प्रीतिरहित थयो. तेनी साथे बोद्धुं पण वंध कर्यु. तेथी ते ह्यै 'आ रोहकनुं काम छे' एम जाणीने पुत्रने कहुं के " हे पुत्र ! आ तें शुं कर्यु के जेथी तारा पिता एकदम माराथी पराङ्मुख थया ? हे पुत्र ! मारो अपराध कमा कर. " रोहक बोद्ध्यो के " त्यारे डीक डे, हवे तुं खेद करीश नहीं, हुं पाङ्मुं उकाणे बाबीश. " पछी ते ह्यी रोहकनी मर्जी वरावर साचवा बागी. पछी एक दिवस रात्रे तेना पिता चांदनीमां बेत्रा हत्ता, तेव्हते तेनी शंका दूर करवा माटे रोहके वाळचेष्टाथी पोताना शरीरनी ब्रायाने आंगढी वती बतावीने पिताने कहुं के " हे पिता ! आ कोइ माणस जाय डे, जुओ ! " ते सांजलीने जरते हायमां खड्ग बाझने पूछुं के " अरे क्यां जाय डे ? बताव. " त्यारे रोहके आंगढीवरे पोतानी ब्राया बतावीने कहुं के " आ रहो, मैं तेने रोकी राख्यो डे. " ते जोझने जरते विचार्यु के " खरेखर पहेद्दां पण आवोज माणस तेणे दीडो हरो. तेथी मैं मारी सुझीक प्रियापर शंका करी, ते डीक कर्यु नहीं. " एम निश्चय करीने ते पांडो पोतानी ह्यी पर प्रेमी थयो, पण रोहके विचार्यु के " मैं मारी अपरमात्मा अभिय कर्यु डे, तेथी कोइक वस्त्र ते मने विप विगोरेथी मारी नांखदो, माटे तेनाथी चेतता रहेहुं. " एम विचारीने ते हमेशां पोताना पितानी साथेज जमवा बाग्यो.

एकदा रोहक तेना पितानी साथे अवंती नगरीए गयो, ते नगरीनी शोजा जोझने ते विस्मय पाम्यो. पडी पितानी साथे घेर जवा ते नगरी बहार नीकब्ब्यो. बहार आवतां कांइ चीज नूजी जवाथी रोहकने त्यां किंपा नदीने कांउ मूकीने जरत पांडो नगरीमां गयो. रोहके नदीनी बालुकामां बेत्रा बेत्रा किंद्वा सहित आखी अवन्ती नगरी आलेखी. तेवामां अभ उपर चढीने तेज नगरीनो राजा त्यां आव्यो. ते रोहके चित्रेझी नगरीनी वच्चे यझने चालवा बाग्यो, एवंजे रोहके तेने कहुं के " हे राजपुत्र ! आ मार्गे न चालो. " राजाए तेनुं कारण पूछुं. त्यारे ते बोद्ध्यो के " अरे ! आ राजदरवारने तमे जोता नयी ? " राजाए नीचे उत्तरीने

आखी नगरी यथार्थ चीवेक्षी जोइने पूछतुं के “रेवाळक ! पहेलां ते आ नगरी जोइ हती, के आजेन प्रथम जोइ ?” ते वोद्यो के “ना, मैं कोइ वसत जोइ नयी, मात्र आजेन नठगामयी अर्हीं आव्यो बुं.” ते सांजलीने राजाए आर्थर्य पामीने विचार्यु के “अहो ! आ वाळकनी बुच्छि केवो तीव ते ?” पर्डी राजाए तेतुं नाम पूछतुं, त्यारे ते वोद्यो के “मार्ह नाम रोहक ते.” तेवार्मा रोहकनो पिता गाममांथी आव्यो, एटझे तेनी साथे रोहक पोताने गाम गयो.

अर्हीं राजाए विचार्यु के “मारे चारसेने नवाणुं मंत्रीओ ते; परंतु ते सर्वनी बुच्छि एकन मंत्रीमां होय एवो एक मंत्री जोइए, जेवी राज्यर्तु तेन बुच्छि पामे.” एम विचारीने रोहकनी परीक्षा करवा माटे राजाए नट गामना मुख्य माणसोने उद्देश्यीने हुकम कर्यो के “तपारा गामनी वहार एक मोटी शिक्षा ते, ते शिक्षाने उपाड्या विनाज राजाने वेसवा योग्य एक मंकप करी तेतुं ढांकण ते शिक्षानुं करो.” आ प्रमाणे राजानी आङ्का सांजलीने सर्व द्वोको अनेक प्रकारनी चिंता करवा द्वाया, विचार करतां मध्याह्न समय धयो; तेवार्मा रोहके आवीने तेना पिताने कयुं के “हे पिता ! मने वहु जूख द्वागी ते, तेवी जोजन करवा माटे पेर चाङ्गो.” जरत वोद्यो के “हे वत्स ! तुं तो निर्दित ते गामना कष्टने तुं कोइ जाएतो नयी.” रोहक वोद्यो के “शुं कष्ट ते ?” त्यारे जरते राजानी आङ्का कहीं देखानी, ते सांजलीने रोहक वोद्यो के “चिंता न करो, तमे राजाने योग्य मंकप करवा माटे ते शिक्षानी नीचे खोदो. पर्डी उर्यां उर्यां घटे त्यां त्यांतेनी नीचे धांजल्याओ गोठवो, अनेते शिक्षाने उपाड्या विनाज जॉयरानी जेम फसती जाँत विगेरे करो.” ते सांजलीने सर्व द्वोको हर्ष पामी जमवा उछ्या. पर्डी जेनन करीने रोहकना कहेवा प्रमाणे मंकप तैयार कर्यो. राजा पण ते मंकपने जोइने प्रसन्न थयो. पर्डी तेणे गामना द्वोकोने पूछतुं के “आ कोनी बुच्छियी मंकप कर्यो ?” द्वोको वोद्या के “जरतना पुत्र रोहकनी बुद्धिथी.”

एकदा राजाए ते गाममां एक मेंदो मोकड़ीने हुकम कर्यो के “आ मेंदो अत्यारे जेझों तोद्वार्मा ते, तेझोंज पंदर दिवसे पालो आपवो. तोद्वार्मा जरा पण न्मूलाधिक थवो न जोइए.” ए प्रमाणे राजानो निर्देश सांजलीने सर्व जनो गाम वहार सजा करी एकत्र थया. पर्डी रोहकने वोद्यावीने राजानो हुकम कही वताव्यो. त्यारे रोहक वोद्यो के “एक वरु पकडी द्वावीने तेनी पासे आ मेंदाने वा-

धरो, अने तेने सारो खोराक आपी पुष्ट करवो. ” ते सांजळीने लोकोए ते प्रमाणे कर्युः पंदर दिवसे ते मेहो राजाने पाओ सौख्यो. राजाए तेने तो व्योग्योः तो तेव्वो ज तो द्वामां थयो, पड़ी राजाए एक कूकमो मोकद्वयो, अने कहेवराव्युं के वीजा कूकमा विना आ कूकमाने युद्ध कराव्युं. ” ते सांजळीने लोकोए रोहकना कहेवाथी ते कूकमानी सामे एक आरीसो मुक्यो. तेमां ते कूकमाए पोतानुः प्रतिविव जोझे वीजो कूकमो छे एम जाणी ते प्रतिविव साथे अहंकारथी युद्ध करवा मांडथुं. ते चात राजाने चरपुरुषोए कही, ते सांजळी राजा खुशी थयो. पड़ी राजाए आङ्गा करी के “ नदीनी रेतीनां दोरमां वणीने अहीं मोकद्वावो. ” त्यारे रोहकना कहेवाथी लोकोए प्रत्युत्तर कहेवराव्यो के “ हे राजा ! तमारा चंमारमां रेतीनां जूनां दोरमां पञ्चां हशे, तेमांथी एक दोररुं नमुना माटे मोकद्वो के जेथी तेने अ-तुसरे अमे दोरमां वणीने मोकद्वीए. ” ते सांजळीने राजा मौन थइ गयो. एकदा राजाए मरवानी तैयारीबाबो, रोगी अने शुद्ध हाथी नट गाममां मोकद्वावीने कहेवराव्युं के “ आ हाथी मरी गयो एम कहा विना हमेशाँ तेना खवर मने मोकद्वावा. ” अहीं तो तेज रात्रे हाथी मृत्यु पाम्यो. प्रातःकाले राजाने केवी रीते खवर आपवा तेनो विचार न सूझतां लोकोए रोहकने पूछथुं. एद्दो तेना कहेवा प्रमाणे गामता अधिपतिए राजा पासे जइ निकेदन कर्यु के “ हे देव ! आजे हाथी वेसतो नथी, उत्तो नथी, आहार के नीहार करतो नथी, अने वीजी कांड पण चेष्टा करतो नथी. ” राजाए पूछथुं के “ अरे ! शुं हाथी मरी गयो ? ” तेणे कर्यु के “ हे राजा ! आप एवुं वोझो गो, अमे एम वोद्वता नथी. ” ते सांजळीने राजा मौन थयो. पड़ी फरीथी राजाए नट गाममां हुकम मोकद्वयो के “ तमारा गामनो कूवानुं पाणी घणुं सारुं छे, माटे ते कूवो अहीं जज्जदीथी मोकद्वो. ” त्यारे लोकोए रोहकनी बुद्धियी राजाने विज्ञप्ति करी के “ हे देव ! गाममीयो कूवो स्वज्ञावथीज वीकण होय छे, माटे नगरनो मार्ग वतावनार एक अहींनो कूवो त्यां मोकद्वो, के जेथी ते कूवानी साथे अमारो गाममीयो कूवो आवी शके. ” ते सांजळीने राजा मौन रहो, अन्यदा राजाए आदेश कयां के “ अग्निना संवंध विना खीर रांधीने मोकद्वो. ” त्यारे लोकोना पूज्याथी रोहके तेमने कर्यु के “ चोखाने घणा जळमां पञ्चालीने सूर्यनां किरणथी तपावी करीप अने पञ्चाल विगेर घासनी वाफमां ते चोखा ने इधथी जरेझी तपेझी मूको; जेथी खीर थइ

जगे,” द्वोक्षोए ते प्रमाणे करीने खीर राजाने मोक्षाची, ते जोइने राजा अति विस्मय पायो. पर्ही रोहकनी बुच्छितुं अतिशयपाणुं जाणीने तेने पोतानी पासे आवशानी आळा करवा साथे कहेवराव्युं के “ शुक्ष पक्षमां के कृष्ण पक्षमां आवरुं नहीं, रात्रे अथवा दिवसे आवरुं नहीं, ग्रामां अथवा तमके आवरुं नहीं, अधर रहीने अथवा परे चालीने आवरुं नहीं, मार्गे के उन्मार्गे आवरुं नहीं, अने स्नान करीने अथवा स्नान कर्या विना आवरुं नहीं.” आ प्रमाणेनो हुक्म सांजलीने रोहके कंतु सुधी स्नान कर्यु, अने गामाना पैमाना वे चीक्काना मर्य जागने रस्ते, नाना घेटा उपर वेसीने माथे चालणीतुं ब्रव धारण करीने, संघर्ष समये अमावाश्या उपरांत पडवाने दिवसे ते राजानी पासे गयो. त्यां “ सांखी हाथे राजातुं, देवतुं अने गुरुतुं दर्शन करवुं नहीं ” एवी द्वोक्षुनि जाणीने पाठीनो एक पींक हाथपां राखीने राजाने प्रणाम करो ते पींक राजानी पासे जेड तरीके धर्यो. राजाए पूछयुं के “ हे रोहक ! आ तुं शुं द्वाव्यो ? ” तेणे जवाव आप्यो के “ हे देव ! तमे पृथ्वीना पति तो, तेवी हुं पृथ्वी द्वाव्यो दुं. ” ते सांजलीने राजा प्रसन्न थयो. ते रात्रे राजाए रोहकने पोतानी पासे सुवाढ्यो. स-त्रिनो पहेलो प्रहर गयो त्यारे राजाए तेने वोङ्गाव्यो के “ अरे रोहक ! तुं जागे ते के उंधे ते ? ” ते वोद्यो के “ देव ! जागुं दुं. ” राजाए पूछयुं के “ शुं विचार करे ते ? ” रोहक वोद्यो के “ हे देव ! दुं एवो विचार करतो हूतो के—पीपळाना पांदकातुं झीट मोटुं के तेनी शिखा मोटी ? ” ते सांजलीने राजाने पण संशय थयो. तेवी तेणे कंठु के “ ते तीक विचार कर्यो, पण तेनो निर्णय शो कर्यो ? ” ते वोद्यो के “ ज्यां सुधी जिखानो अप्रज्ञाए सूकाइ न जाय त्यां सुधी वने स-रखां होय डे. ” पर्ही वीजो प्रहर पूर्ण यतां राजाए पूछयुं के “ अरे ! जागे ते के उंधे ते ? ” रोहक वोद्यो के “ देव ! जागुं दुं. ” राजाए पूछयुं के “ शुं विचार करे ते ? ” त्यारे ते वोद्यो के “ हे देव ! वकरीना पेटमार्यी जाणे सराणे उत्तरेद्वी होय तेवी तेनी वीनीओ वरायर गोळ यडने वहार नीकळे छे; तेनुं शुं कारण ? ” राजाए रोहकनेन तेनुं कारण पूछयुं, त्यारे ते वोद्यो के “ वकरीना उद्दमां संवर्तक नामनो वायु रहे छे, तेना मज्जावयी वीनीओ एवी गोळ थाय डे. ” पर्ही रोहक सुझ गयो. राजाए त्रीजे प्रहरे रोहकने वोङ्गाव्यो के “ अरे जागे ते के उंधे ते ? ” ते वोद्यो के “ जागुं दुं. ” राजाए पूछयुं के “ शुं विचार करे ते ? ”

ते बोध्यो के “हे देव ! स्वीसकोद्धीनुं जेट्टुं मोडुं पूँछमुं भे तेष्ट्वुं तेनुं शरीर पण हशे के कांड न्यूनाधिक हशे ? ” राजाए तेनो निर्णय तेनेज पूछ्यो, त्यारे ते बोध्यो के “हे देव ! वने सरखां होय भे.” पडी रोहक सूझ गयो. राजा प्रातःकाळे जाग्यो, त्यारे रोहकने बोद्धाव्यो, पण निष्ठावश होवाथी तेणे जवाव आप्यो नहीं. त्यारे राजाए क्रीडाथी रोहकने जराक सोटी लगामी, एट्टे रोहक जागी गयो. राजाए पूछ्युं के “अरे केम उंये भे के ? ” ते बोध्यो के “देव ! जागुं दुं.” राजाए कहुं “के त्यारे केम घणीवारे बोध्यो ? ” रोहके जवाव आप्यो के “हे देव ! हुं विचार करतो हतो के राजा केट्ट्वा पुरुषथी उत्पन्न थयो हशे ? (राजाने केट्ट्वा वाप हशे ? ) ” ते सांजलीने राजा द्वजा पामीने जरावार मौन रहो, पडी थोकीवारे पूछ्युं के “अरे ! बोब ! हुं केट्ट्वा पुरुषथी उत्पन्न थयो दुं ? ” रोहक बोध्यो के “पांच पुरुषथी.” फरीथी राजाए पूछ्युं के “क्या क्या पांचथी ? ” ते बोध्यो के “एकतो कुवेर चंमारीथी, केमके कुवेर चंमारीना जेवी, तमारामां दानशक्ति भे. वीजा चंमालथी, केमके शत्रुना समूह प्रत्ये तमे चंमालनी जेवो कोप करो डो. वीजा धोवीथी; केमके जेम धोवी वस्त्र नीचेवीने पाणी काढी नांसे भे तेम तमे पण माणसोने नीचेवीने तेनुं धन लइ द्यो डो. छोथा वांडीथी, केमके तमे भरनिज्जामां सूतेवा वाल्कने पण निर्दय वांडीनी जेम सोटी मारीने पी-मा उपजावो डो, अने पांचमा तमारा पितायी तमे उत्पन्न थया डो, के जेणे राज्यमां अने न्यायमां तमने स्थापन कर्या डो. ” ते सांजलीने राजा वहु आश्वर्य पाम्यो, पडी राजाए पेतानी मा पासे एकांतमां जड्ने नमन करी पूछ्युं के “हे माता ! कहो, हुं केट्ट्वा पुरुषथी उत्पन्न थयो दुं ? ” माताए कहुं के “हे वत्स ! ए तुं शु पूँचे छे ? तरा पितायीज तुं उत्पन्न थयो डे. ” त्यारे राजाए रोहके कहेद्दी वात करीने कहुं के “हे माता ! ते रोहक प्राये खोटी शुच्चिवालो नर्वा। माटे सत्य कहो. ” एम वहु आग्रहथी राजाए पूछ्युं. त्यारे तेनी माताए कहुं के “हे वत्स ! ज्यारे तुं गर्जमां हतो त्यारे एक दिवस हुं गाम वहार उद्यानमां कुवेर देवनी पूजा करवा गइ हती. ते प्रतिमानुं अत्यंत स्वरूप जोइने में तेनो हायवन स्वर्ण कर्यो, तेथी मने काम व्याप थवाथी जोगनी इच्छा थइ हती. त्यांधी पाडी आश्रता मार्गमां एक स्वरूपवान चंमालने जोइने तेनी साथे जोगनी इच्छा थइ हती. आ-

राजाए ते अभ्यं गामां तेने वेर मोकङ्गी दीयो. पोताना प्रिय स्थामी विना तेनां वस्तु तथा अभ्यने रुधिराङ्गां जोइने “ हाय ! हाय ! मृग्या रम्या गयेज्ञा मारा ४- तिने कोइ सिंहादिके भारी नांख्या ” एम धारीने सरस्वती जाणे वर्मची हणापङ्गी होय तेप भूमिपर पडीने परण पामी. ते वात जाणीने राजाने अत्यंत खेद घयो. पडी ते जातु मंत्री प्रियावियोगना छुःख्यी योगी धज्जे गंगाकिनारे गयो. ते सर-स्वती मल्तु पामीने गंगा तरीने किनारे आवेज्ञा भद्रारथपुरना राजानी पुत्री धइ. जातु मंत्री वार वर्ष व्यतीत थापा पडी जिज्ञाने माटे अटनकरतोते राजमंदिरे गयो. त्यां ते कन्या तेने जोइने जिज्ञा धइ तेने आपना आवी, पण ते मंत्रीना दर्जानयी जाणे चिरमां आलेखद्वी होय तेप स्तव्य धइ गइ. तेना हाथमां रहेद्युं अन्न अ-गमा धइ गया, पण ते योगीने आपी शकी नहीं. योगी तो कांझक जोइ विचारीने अन्यत्र चाल्यो गयो. पडी ते कन्याए पोतानी वे सखीओ साये संकेत कर्यो के “ आ जयमां तो ए योगीज मारा पति डे, बीज कोइने हुं इच्छती नवी. ” ते दृष्टांत राजाना जाणवामां आवाहावी तेणे सर्व योगीओनं एकत्र कर्या, तेमांयी से कन्याए ते मंत्रीयोगीने ओळखी कङ्कयो. पडी ते कन्याने जातिस्मरण थवावी तेणे पोताना पुर्व जबनी वात कही वतावी. ते सांजलीने राजाना कहेवावी यो-गोए ते कन्यानो स्वीकार कर्यो ; ते वस्ते अवसरने जाणनार पंकितो वो द्या के—

भानुश्च मंत्री दयिता सरस्वती, मृत्युं गता सा नृपकैतवेन ।  
गंगागतस्तां पुनरेव द्वेजे, जीवद्वारे जडशतानि पद्यति ॥१॥

जावार्थ—“ जातु मंत्रीने सरस्वती नामे स्त्री हती. ते राजाना कपटर्ध मृत्यु भासे हती. वे द्वीने गंगाकिनारे गयेज्ञे मंत्री करीथी पण पाम्यो, मार जीवतो माणस संकरो कव्याणो जुए डे. ”

आ दृष्टांत द्वीने आधीने कहुं. हवे पुख्यने आधीने वीजुं दृष्टांत आ प्राणे डे—कोइ बणिकने रूपवती युवती हती. ते बनेने परस्पर गाढ सेनह हतो एकदा वेपारने माटे परदेश जवानी इच्छावी तेणे स्त्रीनी रजा मारी. ते सांजली नेज ते स्त्री मूर्दी पामी. तेने इति उपचारमे सज्ज करी, त्यारे तेणे पतिने कह के “ जो तमारे अवश्य परदेश जरुंज होय तो तमारी एक प्रतिमा करीने मं-

आपो, जेथी तेने आधारे हुं दिवसो निर्गमन करुं।” ते सांजळीने ते श्रेष्ठी पोतानी मूर्ति करीने प्रियाने आपी देशांतर गयो. ते स्त्री ते प्रेतिमानुं निरंतर देवथी पण अधिक आराधन करवा लागी. एकदा ते गाममां चोतरफ अग्निनो उपद्रव ययो, ते वरते ते स्त्री पोताना पतिनी प्रतिमा हाथमां राखीने स्थिर वेसी रही. पोतानुं शरीर वळीने जस्म थइ गयुं, तोपण तेणे हाथमांथी! प्रतिमा मूर्की नहीं. केहज्ञाएक दिवसो पडी ते वणिक परदेशी घेर आओ. ते वरते पोतानी प्रियाने जोइ नहीं, एट्ट्वे तेणे तेनी सखीने पूज्युं के—

\*नवसतशसिसमवदनि, हरहाराहारवाहना नयणि।

जद्गुसुतरिपुगतिगमणि, सा सुंदरि कल्य हे सयणि ॥

“हे सखी! सोळ कल्यायुक्त चंचना जेवा मुखवाळी, मृग सरखां नेत्रवाळी अने हुंस जेवी गतिवाळी मारी मनहर प्रिया क्यां भे?” सखीए जवाब आपो के “हे सखीना नाथ! सांजळो, आ नगरमां चोतरफथी अग्निदाग्यो हतो, ते वरते जयने छीधे तमारी मूर्तिने जावीने ते वेसी रही हती. तेमां तेनुं शरीर वळीने भस्म थइ गयुं, एट्ट्वे तेना प्राण बुव्या; पण तमारी मूर्तिने वळ-गेज्ञा तेना पाणि एट्ट्वे हाथ बुव्या नहीं.” आ प्रमाणे सखीनी वाणी सांजळतांज ते वणिकना प्राण चाल्या नया.

अहीं कोइने शंका थाय के राग अने स्नेहमां शो तफावत भे? तो तेनो जवाब ए भे के स्थादिक जोवायी जे प्रीति उत्पन्न थाय ते राग; अने सामान्य रीते स्त्रीपुत्रादिक उपर जे प्रीति थाय ते स्नेह कहेवाय भे.

आ प्रमाणे वण प्रकारना अश्यवसायथी आयुष्यनो क्षय थाय भे (१). वीर्जुं निमित्तथी एट्ट्वे दंर, शस्त्र, रज्जु, अग्नि, जळपां पतन, मूत्र पूरीपनो रोध अने विपनुं नक्षण विगेरे कारणोथी पण आयुष्यनो क्षय थाय भे (२). आहार-थी एट्ट्वे याणुं सावाथी, थोरुं सावाथी अथवा विवकुञ्ज आहार नहीं मळवाथी आयुष्यनो क्षय थाय भे. संप्रति राजाना पूर्व जवनो जीव मक के जे साथु थयो हतो ते दीक्षानेम दिवसे अति आहारथी भृत्यु पाम्यो हतो (३), वेदनाथी एट्ट्वे

क्षनव ने सात खोळ कच्छवुक्त चंद. हर एट्ले शीव, तेना हार सर्प, तेनो आहार पवन, तेनुं वाहन हरण. अने जळ एझेल समुद्र तेना मुत्र नोती, तेना शत्रु-तेनो आहार करनार हैस. आ प्रमाणे अर्ध समजवो.

(४४४) उपदेशमासाद नापांतर-नाग ५ मो. स्तंज ४३ मो.

शूल विग्रेषी तथा नेत्रादिकना व्याधियी आयुष्यनो क्षय थाय डे (४). पराप्रातर्थी एट्टेजे नांति, जेखड विग्रे पक्षवाथी अधवा बीजली विग्रेना पक्षवाथी आयुष्यनो क्षय थाय डे (५). स्पर्शयी एट्टेजे त्वक् विषादिना समुद्भवयी तथा सर्पे विग्रेना स्पर्शयी (मंजाथी) आयुष्यनो क्षय थाय डे. बस्तदच चक्रीना मृत्यु पछी तेना पुत्रे चक्रीना स्त्रीरत्ने कर्णु के “मारी साथे जोगविज्ञास कर.” त्यारे स्त्रीरत्ने कर्णु के “हे वत्स! मारो स्पर्श पण तुं सहनकरी शकीश नहीं.” ते वात तेषे साची मानी नहीं. त्योरे ते स्त्रीरत्ने एक अश्वने तेना पृष्ठयी कटी सुधी स्पर्श कर्यो, एट्टेजे तरतज ते अश्व सर्वे बीर्यना क्षययी तत्काळ मृत्यु पाम्यो. एज प्रमाणे एक लोडाना पुरुषने स्पर्श कर्यो तो ते पण द्वय पामी गयो (गली गयो) (६). श्वासोभासधी एट्टेजे दम विग्रेना व्याधिने द्वीषे घणा श्वासोभास होवाथी अधवा श्वास रुधावाथी आयुष्यनो क्षय थाय डे (७). आ सात प्रकारना उपक्रम सोपकमी आयुष्यवालाने होय डे.

त्रेसठ शक्षाका पुरुष विग्रे उच्चम पुरुषो, चरम देहधारी<sup>१</sup>, असुख्यात वर्षना आयुष्यवाला (जुगल्लीया) मनुष्य अने तिर्यचो, देवताओ तथा नारकी जीवो निरुपक्रम आयुष्यवाला होय डे. ते शिवाय बीजा सर्व जीवो सोपकम अने निरुपक्रम एवा वन्ने प्रकारना आयुष्यवाला होय डे. अहीं कोइने शंका थाय के “स्कन्दकाचार्यना पांचसो शिव्यो तथा अणिकापुत्र आचार्य, जांकरिया मुनि विग्रे मुनिओ चरमशरीरी होवाथी निरुपक्रम आयुष्यवाला होवा जोइए, ठां तेओ उपक्रमधी केम मृत्यु पाम्या?” तेनो उच्चर ए डे के “ते मुनिओने जे जे उपक्रमो थया ते मात्र तेमने कहने अर्थे समजवा; आयुष्यना क्षयमां कारणन्तर समजवा नहीं. तेमनु आयुष्य तो पूर्णज थयुं हर्तुं, माटे तेमने निरुपक्रम आयुष्यवालाज जाणवा.”

सोपकम आयुष्यवाला जीवो पोताना आयुष्यने त्रीजे जागे, नवमे जागे के सतावीशमे जागे अधवा डेवट मरण वस्ते डेवडा अंतमुहूर्ते आवता जबतुं आयुष्य वाये डे. अहीं कोइ आचार्यों सतावीशमा जागथी उपर पण आवता जवना आयुष्यना वंधनी कव्यना करे डे, तेमन तेण त्रण जागनी कव्यना पण डेवडा अंतमुहूर्त मुधी करे डे.

<sup>१</sup> तेज भवनो मेक्षे जवाहाय देवाथी छेन्डज दर्शन भरवावाला,

निरूपक्रम आयुष्यवाला जीवोने माटे आयुष्यना वंधनो काळ एवो डे के देवताओं, नारकीओं तथा असंख्यता वर्षना आयुष्यवाला तिर्यच अने प्रत्ययो ( जुगल्कीको ) पोतानु आयुष्य ड मास वाकी रहे त्यारे आगामी जन्मनु आयुष्य वांधे डे, ते शिवायना बीजा निरूपक्रम आयुष्यवाला ( चरमशारीरी शिवायना चक्रवर्ती, वल्देवादिक शक्तिका पुरुषो ) जीवो पोताना आयुष्यने ब्रीजे जागे अवद्य आगामी जन्मनु आयुष्य वांधे डे.

अहीं सोपक्रम आयुष्यना विषय पर कोइ शिष्य प्रश्न करे छे के “जो कोइ पण कर्म तेनो काळ प्राप्त थया बिना जोगवाय, तो कृतनाश अने १ अकृतागम ए वेने छुपणो प्राप्त थजो. केमके पूर्वे घणी स्थितिवालुं कर्म ( आयुष्यकर्म ) वांध्युं हत्तुं ते तेक्ष्णी मुदत सुधी जोगवायुं नहीं; माटे कृतनाश नामनो दोप आव्यो; तथा आत्माए अद्वय स्थितिवालुं कर्म ( आयुष्यकर्म ) वांध्युं नहोत्तुं ते जोगव्युं, माटे अकृतागम नामनो दोप प्राप्त थयो.” आ प्रश्ननो गुरु जवाव आपे डे के “ हे शिष्य ! मोटी स्थितिवाला कर्मनो काइ उपक्रमे करीने नाश थतो नयी, परंतु अध्यवसाय विशेषथी ते कर्म उतावले थोकी मुदतमां जोगवी द्वेवाय डे. अहीं युक्तिथी एम समजवानुं डे के सोपक्रम आयुष्यवाला जीवो जेम घणा काळ सुधी जोगववा द्वायक आयुष्यकर्मने एकतुं करीने थोका काळमां जोगवी द्वे छे, एवीज रीते स्थिति, रस, प्रदेश विग्रेना खंडनने प्राप्त थयेद्वां अनिकाचित एवां सर्व कर्मने उपक्रम द्वागे डे. केमके प्राये सारां मात्रां अनिकाचित एवां सर्व कर्मनी शुन्नाशुन्न परिणामादिना वशथी अपवर्तना थाय डे, तथा निकाचित कर्मनी पण तीव्र तपवर्के स्फुरणायमान थता शुन्न परिणामना वशथी अपवर्तना थाय डे, ते विषे पूज्यपाद श्री जिनजद्गणि क्षमाश्रमणे कर्हुं डे के—

सद्वपगद्दणमेवं, परिणामवसाडुवक्ष्मो होजा ॥

पायमनिकाद्याणं, तवसाओ निकाद्याणं पि ॥ १ ॥

जावार्थ—“ प्राये करीने अनिकाचित एवी सर्व कर्मप्रकृतिने एज प्रमाणे परिणामना वशथी उपक्रम थाय डे, अने निकाचित प्रकृतिने पण उग्र तपथी उपक्रम द्वागे डे.”

जेम घणा काल सुधी चाक्षे तेव्हां घाणं धान्य पण कोइ माणस नसक  
चातना व्याधिथी थोडा काळमांज खाइ जाय ते, एटके ते धान्यनी वर्तमान स्थि-  
तिनो नाश थाई गयो एम धारुं नहीं; परंतु व्याधिना वलथी घाणं धान्य थोडा  
काळमां खवाइ गयुं; तेवीज रीते झाँवी मुदत मुधी जोगवा झायक कर्म थोडी  
मुदतमां जोगवी लीऱुं एम जाणतुं; अथवा जेम आम्रफल विगेरेने खाकामो नांतो  
उपर यास विगेरे ढांकी राखीए तो ते फळ थोडी मुदतमां पाकी जाय ते, तेवी  
रीते तेवां अनिकाचित कर्म पण थोडी मुदतमां जोगवाइ जाय ते. ”

बळी शिष्य प्रश्न करे डे के “ अपर्वतना करवाई थोडा काळमां अथवा  
अपर्वतना न करे तो जेव्हां स्थितिवाळुं होय तेव्हां चिरकाळे पण जे कर्म वांश्युं  
होय ते सर्व जो आपाणा कहेवा प्रमाणे अवश्य जोगवांज पर्हतुं होय ते प्रसन्नचंद्र  
विगेरेण सातमी नरकने योग्य कर्म वांश्युं हतुं, तेने तेवा मकारना कुःखविपाकनो  
जोग तो सांजळवामां आवतो नवी, ते तो शुज जावयी थोडा काळमांज केवळ-  
ज्ञान पास्या डे, तो ‘ सर्व कर्म वेदवृंज पर्हे डे ’ एम जे आपे कायुं ते व्यर्थ थशे. ”

आ प्रश्नतुं गुरु महाराज समाधान आपे डे के “ जे कर्म वांश्युं छे ते  
कर्मप्रदशाधी तो सर्व जीवो अवश्य भोगवेचेज; पण रसना अतुजायवी तो को-  
इक कर्म जोगवाय डे, अने कोइक कर्म नवी पण जोगवातुं, तेनुं कारण ए डे के  
शुज परिणामना वशाधी ते कर्मना रसनी अपर्वतना ( क्षय ) थाय डे. तेवी प्रसन्न-  
चंद्रादिके सातमी नरक योग्य कर्मोना परंदो नीरस ( रस विनाना ) जोगवा डे,  
पण विपाक उदयथी जोगव्या नवी. ”

बळी शिष्य कहे डे के “ ज्योरे प्रसन्नचंद्रादिके जे कर्म रसवाळुं वांश्युं  
हतुं ते कर्मने नीरसपणे जोगव्युं, त्यारे तो पूर्वनीज जेम कृतनाश अने अकृतागम  
नामना बन्ने दोषो प्राप्त थया. ”

गुरु तेनो खुशासो आपे डे के—“ तथाप्रकारना उच्चम परिणामधी जो  
कर्मनो रस क्षय पामे तो तेमां शुं अनिष्ट थयुं ? जेम सूर्यना उग्र तापथी इकुना  
सांयामां रहेवो रस सूकाइ जाय, तो तेमां छुतनो नाश ने अकृतनो आगम शुं  
थयो ? हे बुच्छिमान ! ते तुं कहूँ, बळी जो कदाच जे कर्म जेवी रीते वांश्युं ते कर्म  
तेवीज रीते अवश्य जोगवांज पर्हतुं होय, तो पापनो क्षय नहीं थतो होवाई सर्व  
तपनो विधि व्यर्थ थवो, तेपन जेन ज्ञवामा सिन्हि पापनार जीवोने पण कर्म अ-

वशेष रहेश, एट्टेकोइनी पण मुक्ति थशे नहीं. माटे कोकाकोकी सागरोपमनी स्थितिवाळुं कर्म पण प्रदेशो करीने नीरसपणे जोगवाय डे, एम मानवुं वळी हे शिष्य! असंख्य जवामां वांधेद्युं जिन्न जिन्न गतिने आपनाहुं कर्म ते जवे पण सचामां होय डे. तेथी जो सर्व कर्मनो विपाकवदेज अनुजव दोवो पमतो होय तो ते एक जवामां जिन्न जिन्न जवना अनुजवनो संजव थवो जोझए, परंतु तेम थतुं नवी. वळी औपथ्यी साध्य रोगनो जेम नाश थाय डे तेम जे कर्म वांधती वर्खते तेवा प्रकारना परिणामवदे वांध्युं होय ते कर्म उपक्रमयी साध्य थाय डे; अने असाध्य रोग जेम औपथ्यी जतो नवी तेम तेवा प्रकारना अध्यवसाय (परिणाम)-धी जे कर्म वांध्युं होय ते योग्य काळे विपाकवदे जोगववायीज नाश पामे डे. केपके कर्मवंधना अध्यवसाय स्थानको विचित्र डे, अने असंख्य द्वोकाकाशना प्रदेश प्रमाण डे. ते स्थानकोमां केट्टांएक सोपक्रम कर्मने उत्पन्न करनारां डे, अने केट्टांएक निरुपक्रम कर्मना वंधने उत्पन्न करनारां डे. तेथी जेवा अध्यवसायी जे कर्म वांध्युं होय ते कर्म तेवी रीते जोगवद्युं पमे डे. आं प्रमाणे होवायी तें कहेला दोपनो अहीं जरा पण अवकाश नवी. वळी जेम घणा शिष्यो एकज शास्त्र साथेज जणता होय तेमां बुद्धिनी तरतमतायी जेद पमे डे; तथा जेम अमुक योजन लांवा मार्गमां घणा माणसो एक साये चाल्या होय डतां तेमनी गतिनी तरतमतायी जवाने स्थाने पहोंचवाना काळमां जेद देखाय डे (कोइ वळेद्वा पहोंचे डे, कोइ विद्वंवे पहोंचे डे), तेवीज रीते एक सरखी स्थितिवाळुं कर्म घणा जीवोए वांध्युं होय, तेमां पण परिणामना जेदधी तेनो जोगकाळ जिन्न जिन्न थाय डे. द्वोकप्रकाशमां कर्युं छे के—

**पिंडीभूतः पटः क्षितिश्चिरकालेन शृण्यति ।**

**प्रसारितः स एवाशु, तथा कर्माप्युपक्रमैः ॥ १ ॥**

जावार्य—“जेम जीतुं वस्त्र पिंड रूप करीने मुक्युं होय तो ते द्वांवी मुदते सूकाय डे, अने तेज वस्त्र द्वांतुं कर्युं होय तो जद्वदी सूकाइ जाय डे, तेवीज रीते कर्म पण उपक्रमोयी जद्वदी क्य पामे डे.”

आ सर्व हकीकत उपरयी समजवातुं ऐ डे के जे जवामां प्रथम कहेद्वा सात उपक्रमो निरंतर आयुष्यक्षयना हेतु रूप उपस्थित डे, अने तेथी ते आ-

(पृष्ठ) उपदेशमासाद नापांतर-नाग ५ मो. स्तंन. २३ मो.

वैरादास्कन्दकाचार्य, मुनिपंचशतीं घनतः ।

न कश्चिदन्नवद्वाता, पादकादन्तकादिव ॥ २ ॥

भावार्थ—“स्कन्दकाचार्य सहित पांचसो मुनिने हणनार यमराज जेवा पादक पुरोहितशी तेतुं रुक्षण करवाने कोव पण समर्थ थयुं नहीं.”

पष्टिपुत्रसहस्राणि, सगरस्यापि चक्रिणः ।

तृणवद्वाणारहितान्यदहज्जवदनप्रज्ञः ॥ ३ ॥

भावार्थ—“सगरचक्रीना पण शरण रहित सात्र हजार पुत्रोने तृणनी जेव ज्वलनप्रज्ञे (जुवनपतिना इंद्रे) वाळी नांख्या हुता.” ते कथा आ प्रमाणे—

सगर चक्रीना पुत्रोनी कथा.

अथोध्या नगरीमां जितशब्दु नामे राजा हुता. तेने विजया नामे पत्नी हती. ते थकी अजितनाथ स्वामी उत्पन्न थया हुता. जितशब्दु राजानो नानो जाह मु-मित्रविजय नामे हुतो. तेने यशोमती नामनी खींधी सगर नामे पुत्र उत्पन्न थयो हुतो. ते सगर चक्रवर्ती थया हुता. तेने सात्र हजार पुत्रो हुता. तेयां सौधी मोटो जहनुकुमार नामे हुतो. तेये एकदा चक्रीने प्रसन्न कर्या, त्यारे चक्रीए तेने वरदान आयुं. एव्वेजे जहनुकुमार बोध्यो के “आपनी कुपाथी सर्वे जाइओ सहित दंजादिक स्तनने लाइने समग्र पृथ्वी जोवानी मारी इच्छा थइ डे.” ते सांजलीने चक्रीए सन्य सहित तेने जवानी रजा आपी.

जहनुकुमार आगळ जर्ता चार योजन विस्तारवाळा अने आउ योजन उंचा आग्रापद पर्वतने जोझने जाइओ सहित तेना उपर चढ्यो. त्यां तेणे वे, कोश पहोळुं, त्रण कोश उंचुं अते चार कोश लाईं, चार लारवाळुं स्तनप्रय चैत्य जोयुं. तेमां रहेड्ही पोतपोताना देह सरखा प्रमाणवाळा कृपनदेव विग्रे चोबीजोतीर्थकरोनी प्रतिमातुं पूजन करीने जरत विंगेतेना सो जाइओना सो स्तूपोने वंदना करी. पडी ते पर्वतनी शोजा जोझने सगरनो पुत्र जहनुकुमार घणो हर्ष पाम्यो. पडी “आ चैत्य कोणे करावेतुं छे?” एम तेणे पंत्रीने पूड़युं. पंत्रीए करुं के “हे, कुमार! तपारा पूर्वज जरतचक्रीए आ चैत्य कराव्यु डे.” ते सांजलीने जहनुए सेवकोने आज्ञा करी के “आ जरतकेत्रमां आवो वीजो पर्वत तमे शीघ्र शोधो

बाबो के जेथी आपणे पण तेना उपर आवुं चैत्य करावीए। ” तेनी आङ्गा थत्ता अनेक सेवकोए चारे दिशामां जोइ जोइने पाण्य आवी कहुं के “ हे कुमार ! आवो पर्वत वीजे क्यांइ पण नयी। ” त्यारे जहनुकुमार बोध्यो के “ ठीक डे, त्यारे आपणे आ पर्वतनीज रङ्गा करीए, आगळ उपर काळना अनुज्ञावयी दोको दुध्ध थशे, तेथी तेओ अहीं आवीने उपदध करशे, माटे आनी रङ्गा करवी ते पण महा फळदायी डे। ” एम कहीने जहनुकुमारे दंकरत्नवमे ते पर्वतनी फरती एक हजार योजन लंगी खाइ क्षणवारमां खोदी। ते दंकरत्नवमे पृथ्वी खोदती बखते नागकुमारोना क्रीमायद्दो माटीना वासणनी माफक जांगी गया। ते जोइने उपदधवयी जय पामेद्वा नागदेवोए पोताना ईंझ ज्यञ्जनप्रन पासे जइने ते दृचांत कशो। ते सांजलीने कोपायमान थयेद्वा ज्यञ्जनप्रने सगर चक्रीना पुत्रो पासे आवीने कहुं के “ हे मूर्खो ! आ पृथ्वीने शामाटे खोदी नांखी ? नागकुमार देवो क्रोध पापसे तो तपने सर्वेने हणी नाखशे। ” ते सांजलीने जहनुकुमार बोध्यो के “ तीर्थनी रङ्गा करवा माटे अमे आ काम कर्युं डे, माटे हे सर्वेन्द्र ! अङ्गानयी थयेद्वा आ अपराधने आप हळमा करो। ” ते सांजलीने “ हवे आवुं काम करजो नहीं ” एम कहीने सर्वेन्द्र स्वस्थाने गयो।

ईदना गया पडी जहनुकुमारे पोताना जाइओ साथे विचार कर्यां के “ आ खाइ पाणी विना काळे करीने धूलयी पूराइ जशे, माटे तेने गंगा नदीना जळयी जरी दश्ये तो ठीक। ” ते बात सर्वेए स्वीकारी, एक्षे जहनुकुमारे दंकरत्न वमे खेंचीने गंगा नदीनो श्वाह द्वावी ते खाइमां नांख्यो। तेथी तेना जळवमे सर्पिना घरोमां फरीयी विशेष उपदध थयो। फरीयी सर्व द्वोक्लेन क्लोन पामेद्वो जोइने क्रोधायमान थयेद्वा ज्यञ्जनप्रने तेमना वधने माटे पोटा हृषिविप सर्पेने मोकद्या। तेओए वहार आवीने सगरना पुत्रो सामुं विपनी हृषि करनारी हृषिवमे जोयुं के त्रतज ते सगरना सर्वे पुत्रो नस्मीचूत थइ गया। ते जोइने शोक करता सैन्यने सान्त्वन आपीने भंत्री बोध्या के “ हवे शोक करवायी सर्वुं ! कोइ पण जावने उद्द्विष्टन करी शर्करुं नयी। ”

पडी ते सर्वे सामन्तादिक सैन्य सहित अयोध्या तरफ आवतां तेमणे वि-

चार्यु के “स्वामीना सर्वं पुत्रो नस्म थया, अने आपणे अकृत शरीखाला आव्या ते घर्णुन द्वजास्पद छे, तेथी चक्रीनी पासे आपणाथी आ वात दी रिते कहे-वाहो ? ” एम विचारीने तेओर निरंतर शोकातुर रहेता हता. ते दृचांत जाणने कोइ एक ब्राह्मणे तेमने ते हृकीकृत पुठी, एटझे तेओरैष सर्वं वात कही वतावी. ते सांजळीने पेढ्ठा आपणे तेमने कर्यु के “ तमारे कांड फिकर करवो नही, हुं राजाने ए वात निवेदन करीश.” पडी ते ब्राह्मण कोइ अनाथ भर्षु उपासीने राजमंदिर पासे दृश्य गयो. त्यां ते शब्दने मुकीने मोटे स्थेर विद्वाप करवा लायो. ते सांजळीने चक्रीए तेने रोबासुं कारण पुञ्चयुं, त्यारे ते ब्राह्मण घोट्यो के “ मारे आ एकज पुत्र छे, तेने मोटो सर्वं फस्यो छे, तेथी ते निवेष्ट घड्य गयो छे. माटे हे देव ! तमे तेने जीवानो. ” ते सांजळीने राजाए विपर्वैद्योने बोकावी तेनो उपाप करवा फरमावयुं. तेवायां कोइ माणसे त्यां आवीने कर्यु के “ जेना घरमां आग सुधी कोइ माणस मरण पास्युन न होय तेना घरमांथी नस्म द्वावो, तो हुं आने जी-वतो करे. ” ते सांजळीने राजाए आखा नगरसां सर्वं घेर तेवी नस्म द्वाववाने मोटे माणसो घोकव्या. तेओरो पाडा आवीने घोट्यो के “ हे स्वामी ! आपे आवी नगरी जोइ, पण ज्यां कोइ माणस मरण पास्यु न होय एवं एक पण घेर मच्यु नहीं. ” ते सांजळी चक्री पण घोट्यो के “ अभारा घरमां पण घणा पूर्वजो मरण पापेद्वा ग्रे; तो सर्वने विषे सामान्य रिते प्रवर्तनार्ह जे गृह्यु तेनी प्राप्तियी हे आ-ह्याए ! तुं शामाटे खेव करे छे ? मोरेद्वा पुत्रनो तुं शामाटे शोक करे छे ? शोक तजी दृश्ने कांझक आत्म साप्तन कर; केमके तुं पण अजरापर नवी. ” ते सांभळी पेढ्ठो ब्राह्मण घोट्यो के “ हे देव ! ते सर्वं हुं जाणुं छुं, पण आ पुत्र विना आजेन मारा कुळनो क्रूय थसे, माटे हे स्वामी ! कोइ पण प्रकारे आने जीवानीने मने पुत्रजिका आयो. ” राजा घोट्यो के “ हे ब्राह्मण ! मंत्र, तंत्र तथा शास्त्रोने अगोचर अने अदृश्य शब्दुरूप विधिना उपर कयो पंमित पुरुष पण पराक्रम करी शके ? कोइ न करी शके, माटे तुं शोकने तजी दे. ” ब्राह्मण घोट्यो के “ स्वामी ! सर्वं वस्तुनो विरह सहन थइ शके ग्रे, पण कुळने उद्योत करनार पुत्रनो विरह कोइ सहन करी शकतुं नवी. ” चक्रीए कर्यु के “ अनन्ता जवोयां अनन्ता पुत्रो थया छे, पोते पण अनंतीवार अनंत कुळोयां पुत्रपणे उत्पन्न थयो ग्रे. तेमां कोरुं कुळ दीपाच्युं अने कोडुं नहीं ? माटे हे ब्राह्मण ! फोगट शामाटे शोक करे छे ? कर्यु छे के—

अशरणयमहो विश्वमराजकमनायकम् ।

यदेतदप्रतीकारं, ग्रस्यते यमरक्षसा ॥ १ ॥

“ अहो ! आ विश्व शरण विनामुं, राजा विनामुं अने नायक विनामुं डे. केंपके जेनो कांइ उपायज नथी, एवी रीते आ विश्वने यमरूपी राहस गळी जाय डे. ”

योऽपि धर्मप्रतीकारो, न सोऽपि मरणं प्रति ।

शुनां गर्ति ददानस्तु, प्रतिकर्तेति कीर्त्यते ॥ २ ॥

“ जे धर्मरूप उपाय डे ते पण मरणनो उपाय नथी; परंतु ते शुन ग-  
तिने आपनार डे माटे तेनी प्रशंसा थाय डे. ”

ते सांजळीने ब्राह्मण वोद्यो के “ हे स्वामी ! वीजाने छुःखी जोझ्ने  
घणा द्वोको वैराग्यमुं वर्णन करे डे, पण ज्यारे तेवृं छुःख पोतानेज प्राप्त थाय त्यारे  
जेनुं चित्त स्थिरता न मूके तेज प्रशस्य कहेवाय. ” चक्रीए कहुं के “ जेओ  
पोतामुं वचन पाले नहीं तेओने मायावीज जाएवा. ” ब्राह्मण वोद्यो के “ त्यारे  
हे राजा ! तमारा साते हजार पुत्रो एकज समये मृत्यु पाम्या डे, माटे तमे पण  
शोक करवाओ नहीं. ” ते सांजळीने एकदम द्रांतिमां पफेद्वा राजा कांइक विचार  
करे डे, तेद्वामां तो प्रथमधी संकेत करी राखेद्वा ते सामन्तादिके आवीने सर्व  
दृचांत कहुं. ते सांजळीने चक्री जाणे वन्नथी हणायो होय तेम तत्काळ मूर्त्ति  
पामीने पृथ्वीपर पड्यो. पर्वी सेवकोना करेद्वा अनेक उपचारोथी सावध थयो सतो  
अनेक प्रकारे विद्वाप करवा लाग्यो. त्यारे ते ब्राह्मण वोद्यो के “ हे स्वामी ! मने  
शोक करवानो निषेध करीने अत्यारे आपज केम शोक करो बो ? वियोग कोने  
छुःसह नं होय ? परंतु जेम वक्षाभिने समुद्ध सहन करे डे, तेम धीर पुरुष तेवा  
विरहना छुःखने सहन करे डे. वीजाने शिखामण आपवी त्यारेज शोजे डे के  
ज्यारे समय आवे त्यारे पोताना आत्माने पण शिखामण आपे. ” आ प्रमाणेनां ते  
ब्राह्मणनां वास्योथी वहुवारे चक्रीए धैर्य लावीने ते पुत्रोनी जार्जेदेही क्रिया करी.

एवा अवसरे अष्टापद पासेना पदेशोमां रहेनारा मनुप्योए आवीने च-  
क्रीने विङ्गसि करी के “ ॥ आपना पुत्रोए जे गंगानदीनो प्रवाह अष्टा-

पदनी खाइमां द्वावीने नाख्यो डे ते खाइने पूर्ण करीने हवे गामोने दुवावना द्वाव्यो डे, माटे तेरुं निवारण करी अमारुं रक्षण करो.” ते सांजबीने राजाए जहूनुना पुत्र जगीरथने ते कार्य माटे आङ्हा करी; तेथी जगीरथे त्यां जड्ने अचम तप करवावने सर्पराजने प्रसन्न करी तेनी आङ्हाथी दंकरत्नवने खेंचीने ते प्रवाहने गंगानदीमां पाडो द्वाइ जइ पूर्व तरफना समुद्रमां उतार्यो. त्यारथी गंगा अने सागरना संगमनुं ते स्वल तीर्थरूप थयुं, अने गंगा नदी पण जहूनु द्वाइ जवाथी जाहवी अने जगीरथे तेने समुद्रमां उतारी, तेथी जागीरथी पवा नामधी प्रसिद्ध घइ. पडी जगीरथे पाडा आवीने मोटा उत्सवथी अयोध्यामां प्रवेश कर्यो.

त्यार पडी चक्रीए शुञ्जयगिरिनो सातमो उम्बार करी अजितनाथ स्वामी पासे दीक्षा द्वाइ उग्र तप कर्युं, अनुक्रमे केवलङ्कान पामीने बोतेर द्वाख पूर्वुं आयुष्य पूर्ण करी मोक्षपदने पाम्या.

अन्यदा जगीरथ राजाए श्री जिनेश्वरने पूज्युं के “हे स्वामी ! जहूनु कुमार विमेरे साठे हजार नाइओ सर्वे समान आयुष्यवाळा केम थया ? ” स्वामीए कल्युं के “ पूर्वे कोइ मोटो संघ यावाने माटे संपेताद्रि तरफ जतां मार्गमा कोइ नाना गामना पासे आव्यो. त्यां साठे हजार चोरो रहेता हता, तेमने कोइ एक कुंजारे थणा वार्या, तोपण तेओरे ते संघने दुँव्यो. त्यांथी संघ महाकाटे आगळ गयो. ते वरते ए साठे हजार लुंदाराओरे एक साथे निकाचित पापकर्म वांधुं, एकदा ते गामना रहीशा कोइ चोरे वीजा गामर्मा जड्ने चोरी करी. ते चोरने पगद्वे पगद्वे गामना रक्षको ते चोरना गाम सुधी आव्या, पडी आ गाममां वथा चोरज वसे डे, एम निथय थवाथी तेपणे ते गामना दरखाजा वंध करीने चोतरफयी अनिन सलगाव्यो. ते दिवसे पेढ्वो कुंजार कार्य माटे वीजे गाम गयो हतो, तेथी तेना विना वीजा सर्वे मृत्यु पाम्या. त्यांथी मरीने ते सर्वे अरण्यमां चुमेदाना गुच्छ क्षेपे उत्तन थया. त्यां सर्वे एकत्र थज्ने परेला हता, तेवार्मा कोइ हस्तीए आवीने तेमने पगवमे चांपी नाख्या. तेथी मरण पामीने अनेक कुयोनिमा चिक्काळ सुधी परिज्ञामणे कर्युं. डेवडे आ जवना आगद्वा जवमां कांझक पुण्य उपर्जन कर्युं, तेना प्रजावयी ते साठे हजार चक्रीना पुत्र थया. परंतु पूर्वे करेला पापकर्मना कांझक अवेशप रहेवाथी तेओरे एक साथेज मरण पाम्या. पेढ्वो जे कुंजार हतो तेनो

<sup>१</sup> मानूवाहक नामना वेदविर्जनो.

जीव अनेक ज्ञानों फरीने आ तुं जगीरथ थयो डे.” आ प्रमाणे जहनुकुमारादिनो तथा पोतानो पूर्वज्ञव सांजळीने जगीरथे प्रतिबोध पामी थावकर्थम् अंगीकार कर्यो. तेहुं प्रतिपादन करीने अतुक्रमे ते सदगतिने पाम्यो.

“ उण द्वांकने जयंकर एवो यमरूपी राक्षस आ अनाथ जगतने हणवा माटे निरंतर इच्छा कर्या करे डे. तेथी तेना जयना निवारणे माटे सर्वदा अशरण जावना जावी, के जेथी सुखना स्थानरूप वैराग्यनी प्राप्ति थाय.”

इद्यद्विनपरिमितोपदेशप्रासाददृच्चौ त्रयोविंशतिमस्तंजस्य  
त्रिचत्वारिंशदधिकत्रिशततमः प्रवंधः ॥ ३४३ ॥

## व्याख्यान ३४४ सुं.

### संसारनी असारता विषे.

संसारासारतां वीद्य, केचित्सुवज्ञवोधिमः ।

श्रीघ्रं गृहन्ति साम्यत्वं, श्रीदत्तश्रेष्ठिवद्यथा ॥ १ ॥

जावार्थ—“ केव्वाएक सुवज्ञवोधी जीवो संसारनी असारताने जोझ्ने श्रीदत्त श्रेष्ठीनी जेम तत्काळ समताने धारण करे डे.” ते कथा आ प्रमाणे—

**श्रीदत्त श्रेष्ठीनी कथा.**

मंदिरपुरमां सुरकांत नामे राजा हतो. ते गामपां सोमश्रेष्ठी नामे नगरज्ञे रहतो. ते राजानो मानीतो हतो. तेने सोमथ्री नामनी पत्नी हती. तेनाथी उत्पन्न थयेद्वा श्रीदत्त नामे तेमने पुत्र हतो. एकदा सोमश्रेष्ठी पोतानी जार्या साथे बनर्मा क्रीमा करवा गयो हतो. त्यां पाऊळवी सुरकांत राजा पण आव्यो. राजा सोम थ्रीने जोझ्ने तेनापर आसक्त थयो. तेथी तेने बालकार्यी बह जड्ने पोताना

अंतःपुरमां राखी, सोमध्रेष्टु पियाना विरहथी पारावार खेद पामीने घेर आव्यो. पडी तेणे प्रधानमंकळ पासे ते वृत्तांत कही राजाने समजाववानुं कर्युं. ते प्रधानोए पण राजाने घणी रीते समजाव्यो, परंतु राजाए मान्यु नहीं, तेची प्रधानोए आवीने शेत्रने कर्युं के—

माता यदि विषं दद्यात्, पिता विक्रयते सुतम् ।

राजा द्वरति सर्वस्वं, का तत्र प्रतिवेदना ॥ ३ ॥

ज्ञावार्थ—“ ज्यारे माताज पुत्रने विष आपे, पिताज तेने वेचे, अने राजाज सर्वस्व हरी द्वे, त्यारे तेनो शो इवाज ? काई नहीं. ”

पडी श्रेष्टुए घेर आवीने पोताना पुत्रने कर्युं के “ हे बत्स ! आपणा धरमां ड लाख द्रव्य छे तेमांधी साका पांच लाख द्रव्य लाझ्ने हुं जाऊं दुं. ते कोइ बळवान राजाने सेवीने ते राजाना बळथी तारी माताने हुं गोमावीश. ” एम कहीने श्रेष्टु तेक्कुं धन लाइ कोइ दिशामां चाल्यो. श्रीदत्त घरे रहो. तेने केढ-द्वेक काळे एक पुत्री थइ. ते बखते तेणे विचार कर्यो के “ मातापितानो विरह, धननो नाश, पुत्रीनो जन्म अने नामनो राजा विलङ्घ-अहो देव ! अबदुं होय त्यारे शुं शुं न थाय ? ” पडी पुत्री ज्यारे दशा दिवसनी थइ त्यारे श्रीदत्त शंखदत्त नामना मित्रनी साथे वेपार करता माटे वहाणमां वेसीने परदेश चाल्यो. क्रमे करीने बन्ने मित्रो सिंहदर्ढीप आव्या. त्यां नव वर्ष मुधी वेपार करीने विशेष लाजनी द्विधार्थी ते बन्ने मित्रो कटाहर्ढीपे गया. त्यां पण वे वर्ष रहा. एकदंदर आठ करोड द्रव्य उपार्जने करीने घली जातानां करीयाणां, हावी, घोमा विंगेरे लाझ्ने पोताना देश तरफ चाल्या. मार्गामां एक बखत ते बन्ने मित्रो वहाणनी उपद्वी भूमिपर वेता वेता समुद्रनी शोज्ञा जोता हता, तेवामां समुद्रना जळमां तरती एक पेटी तेमणे जोइ. ते जोइने बन्ने खोल्या के “ आ पेटीमां जे कांइ होय ते आपणे वज्र-ए वहेची द्वेषुं. ” पडी तेणे पोताना सेवको पासे ते पेटी कडावीने उघासी, तो तेमां द्विवकानां पांदकामां जारेही कांइक इयाम वृणवाळी एक अचेतन थइ गयेही कन्या दीर्घी. तेने जोइने “ आ शुं ? ” एम सर्वे वोल्या. त्यारे शंखदत्ते कर्युं के “ खोखर आ बाळाने सर्वेदंश थवाथी मरेही. घारीने कोइए पेटीमां नांखी सम-

द्रमां मूकी दीधी डे, पण जुओ ! हुं तेने हमणाज जीवती कहं हुं। ” एम कहीने जळ मंत्रीने तेनापर डांट्युं के तरतज ते कन्याने चेतन आव्युं। पड़ी तेने खान, पान, स्नान अने अंगद्वेषन विंगे उपचारो कर्या, एटझे ते सर्वं अंगे सुंदर देखावा लागी। एकदा शंखदत्ते श्रीदत्तने कहुं के “ मैं आने जीवती करी डे, माटे हुं तेने परणीश। ” त्यारे श्रीदत्त बोद्ध्यो के “ एम बोद्ध नहीं, एमां आपणा व-बेनो जाग डे, माटे तुं मारी पासेथी तेनुं जे मूद्य थाय तेना अर्धा नाणा डे। तेने तो हुंज परणीश। तें तो तेने जीवित दान आप्युं छे, माटे तुं तो तेनो पिता तुद्य थयो। ” ए प्रमाणे ते वन्ने मित्रो विवाद करवा लाग्या, कहुं डे के—

हा नायों निर्मिताः केन, सिद्धिस्वर्गार्गिकाः खलु ।

यत्र स्वद्वन्ति ते मूढाः, सुरा अपि नरा अपि ॥१॥

ज्ञावार्थ—“ अहो ! मोक्षनी अने स्वर्गनी अर्गद्वारूप स्त्रीओने कोणे वनावी ? के ज्यां देवताओ अने माणसो मूर्ख बनीने स्वद्वन्नाने पामे डे। ”

ते बनेनो विवाद जोइने वहाणना माद्वेके कहुं के “ हे शेठीयाओ ! आ वहाण आजधी वे दिवसे सुवर्णपुरने काँडे पहोचेश, त्यां माहा माणसो तपारा विवादनो निर्णय करी आपशे, माटे त्यां सुधी तपे ऊगनो वंध राखो। ” ते सांज़-ळीने बने जण मौन रहा। पड़ी श्रीदत्ते विचार्युं के “ आ मारा मित्रे आ कन्याने जीवितदान आप्युं डे, माटे लोको तो तेनेज ते कन्या आपवानुं कहेशो, तेथी हुं अत्यारथीज ते कन्याने मेलववानो उपाय करुं। ” एम विचार्तीने नावनी उपक्षी जूमिपर वेसीने तेणे एकदम मित्रने बोद्धाव्यो के “ हे मित्र ! जलदी अहीं आव, अहीं आव, मोटुं कौतुक जोवानुं डे। वे मुखवालो मत्स्य वहाणनी नीचे जाय डे। ” ते सांज़ळीने शंखदत्त आवीने नीचे जुए छे, तेष्टामां तेने तेणे समुद्रमां नांखो दीधो। पड़ी नावना लोकोने विश्वास पमानवा माटे ते फोगटनो पोकार करवा लाग्यो। अनुक्रमे तेना वहाणो केमकुञ्जळ सुवर्णपुरे पहोच्या। त्यां श्रीदत्त ते कन्याने लाइने रहो। पड़ी त्यांना राजा पासे जइने तेणे मोटी जेट करी, एटझे राजाए तेनुं घाणु सन्मान कर्युं। पड़ी श्रीदत्त ते कन्यानी साथे लग्न करवां माटे सारूं मुहूर्त शोधवा लाग्यो।

हवे ते हमेशां राजसभामां जतो हतो; त्यां एकदा तेणे राजानी चमरथा-

रिणीने जोइ, एट्ट्वे तेना सौन्दर्यर्थी मोह पामीने तेणे कोइ माणसने तेनुं स्वरूप पूछतुं, त्यारे ते माणस बोद्ध्यो के “आ मुवर्णरेखा नामनी वेद्यारे. आ वेद्यानी सामे एकवार वात पण ते करी शके रे के जे तेने एकसाथे पचास हजार छव्य आपे रे.” ते सांचलीने तेनापर आसक्त थयेला श्रीदत्ते पचास हजार छव्य मोक्षीने ते मुवर्णरेखाने पोताने त्यां बोद्धावी. पडी पेढ़ी कन्याने तथा वेद्याने-बनेने एक रथमां वेसामीने ते श्रीदत्त क्रीमा करवा माटे बनमां गयो. त्यां एक वानर घणी बानरीओ साथे क्रीमा करतो करतो ते बनमां आव्यो. तेने जोइने श्रीदत्त बोद्ध्यो के—

धिग्जन्म पशुजन्तूनां, यत्र नास्ति विवेकता ।

कृत्याकृत्यविज्ञागेन, विना जन्म निरर्थकम् ॥ १ ॥

**जावार्थ—**“पशुओना जन्मने धिक्कार रे के जेनामां बीबुकुल विवेक र-हेद्दो नथी. कार्य अने अकार्यना विवेचन विना तेनो जन्म निरर्थक रे.”

अहो! माता, पिता, बहेन विंगेरेना विवेकरहित एवो आ पशुओनो जन्म शा कामनो?” ते सांचलीने क्रोधायमान थयेद्दो ते वानर दांत पीसीने बोद्ध्यो के “रे छु-राचारी! तुं दूर सलगता पर्वतने जुए रे, पण पानी नीचे रहेद्दा अभिने जोतो नथी? राइ अने सरसव जेवडां परनां डिङ्गोने जुए रे पण पोताना मोटां बीकां जेवका दोपोने जोतो नथी? अरे अधमां पण अधम! भिन्ने समुद्धमां नाखीने जोगने माटे पोतानीज माताने तथा पुत्रीने पमखामां राखी बेत्रो रे अने मारी निंदा करे रे?” ए प्रमाणे ते वानर तेनी निर्जर्त्सना करीने कुदका मारतो पोताना यूथमां दाखल घइ गयो. श्रीदत्त विचार करवा द्वाग्यो के “आ वेद्या मारी माता शी रीते? अने आ कन्या मारी पुत्री शी रीते? ते तो समुद्धमांयी मळी रे, अने मारी माता तो काँझक श्याम वर्णवाळी अने शरीरे ऊंची हती, अने आ वेद्या तो गौर वर्णवाळी अने शरीरे नीची रे.” एम विचारीने तेणे वेद्याने पूछतुं, त्यारे ते बोद्धी के “अरे शेठ! हुं तो तमने अंगेखतीए नथी. पशुना वचनर्थी तमें केम त्रांतिमां पमो रे?” तोपण श्रीदत्तनी शंका मटी नहीं, तेवी ते वानरने जोधरा माटे आप तेम फरवा द्वाग्यो, तेवामां त्यां तेणे एक मुनिने जोया. तेमने बंदना करीने श्रीदत्ते पोतानो संदेह पूछ्यो, एट्ट्वे मुनि बोद्ध्यां के “हुं अवधिङ्गानथी जाणुं दुं; तेवी कहुं दुं क-

वानरे जे कहुं देते सत्य देते, प्रथम तारी पुत्रीनी वात कहुं छुं—तुं: तारी पुत्रीने दश दिवसनी पूकीने वहाणमां वेसी परदेश गयो हतो. त्यारपत्री तारा गाममां शत्रुना सैन्यनो उपद्रव थयो ते बखते तारी ल्ली पुत्रीने द्वाइने जागी, ते गंगाने कि-  
नारे आवेदा सिंहपुरमां पोताना जाइने देर गङ्गा, त्यां ते अगियार वर्प सुधी रही.  
एकदा ते कन्याने सर्प फस्यो. तेनी माताए तथा मामाए तेना अनेक उपायो कर्या,  
पण विष उतर्यु नहीं. तेथी तेने मरेद्वी धारीने माताए स्नेहने ल्लीधे एक वेटीमां  
नांस्त्रीने गंगानदीमां वहेती मूकी. ते पेटी तने मढी. तेथी आ कन्या तारी पुत्री  
देते. हवे तारी मातानुं वृत्तान्त सांभळ—सूरकांत राजाए तारी माताने अन्तःपुरमां  
राखी हती. तेने डोकाववा माटे तारो पिता साका पांच लाख ऋब्य द्वाइने गुप्त  
रीते सपर नामना पद्धतीपति पासे जइ तेनी सेवा करवा लायो. तेना कहेवायी  
पद्धतीपतिए मोटा सैन्य साये आवीने ते गाम जांग्युं. सूरकांत राजा त्यांथो नासी  
गयो. पडी तारा पिताने आगळ करीने ते पद्धतीपति पुरमां प्रवेश करतो हतो,  
तेवामां तारा पिताना कपाळमां एक वाण लागवायी ते तरतज मृत्यु पाम्यो.

अन्यथा चिंतितं कार्यं, दैवेन कृतमन्यथा ।

वर्पति जबदाः शैद्वे, जबमन्यत्र गच्छति ॥१॥

अन्यथा चिंतितं कार्यं, दैवेन कृतमन्यथा ।

प्रियाकृते हि प्रारंजः स्वात्मघाताय सोऽन्वत ॥२॥

“अन्यथा प्रकारे चिंतवेदुं कार्यं दैवयोगे अन्यथा ( विपरीत ) थयुं. केमके  
वर्पाद तो पर्वतपर वरसे रे; पण पाणी अन्य स्थाने जतुं रहे छे, तेवीज रीते  
जे कार्य जुदी रीते चिंतव्युं हतुं ते कार्य दैवयोगे विपरीत थयुं. केमके प्रियाने डो-  
काववा माटे करेद्वो प्रारंज पोतानाम घातने माटे थयो.”

पडी तारी माता कोइ जिद्धना हाथमां पक्काइ। त्यांथी पण नासीने  
वनमां जटकर्ता तेणे कोइ दृक्कना फलनुं जक्कण कर्यु. ते फलना प्रभावयी  
तेतुं जारीर काँइक नीचुं अने गौर वर्णवालुं थयुं. मणि, मंत्र तथा औपथिनो  
महिमा अचित्प छे. त्यांथी कोइ देश तरफ व्यापारार्थे जता कोइ वणिक लोकोए  
तेने जोझ्ने “आ कोइ वनदेवता रे” एम ज्रांति पामीने “तुं कोण रे ? ” एम  
पूछ्यु, त्यारे ते वोद्वी के “हुं कोइ देवी नवी, पण मनुष्यणी हुं.” तेथी ते

वणिक द्वाकोए तेने द्वाइने सुवर्णपुरमां बेची. ते रुपवान होवाथी विज्ञमवती नामनी बेश्याए एक लहू द्रव्य आवीने तेने बेचाथी दीधी. पड़ी तेने नृत्य बिगेरे शीखवी तेहुं सुवर्णरेखा एवुं नाम राख्युं. ते क्रमे करी राजानी चमर बींजनारी थइ. ते आ सुवर्णरेखा तारी माता डे. तेणे तने ओलख्यो डे, पण द्वाज्ञाथी तथा दोभथी तेणे पोतापणुं प्रगट कर्युं नवी. ” ते सांजळीने श्रीदचे पूज्यु के “ हे स्वामी ! आपनुं बचन सत्य डे, परंतु बानरने आ बातनी क्यांथी खबर ? ” मुनिए कर्णु के “ तारो पिता तारी माताना ध्यानयीज मरीने व्यंतर थयो डे. तेणे अहीं जमतां तने तथा सोमश्रीने जोइने अकार्य करवा पर्वत थयेद्वा एवा तने बानरना शरीरमां प्रवेश करीने ते कार्यनो निषेध कयों डे. ” ते सांजळीने श्रीदचे विचार्यु के “ अहो ! कर्मनी केवी विषम गति डे ! ” फरीथी मुनि बोद्ध्या के “ ते व्यंतर फरीथी पांडो आवीने पूर्वना मोहने दीधि पोतानी प्रियाने द्वाज्ञ जदो. ” तेवामां तेज बानर आवीने सोमश्रीने उपादी वीजा बनमां चाल्यो गयो, ते जोइ श्रीदत्त मार्युं धुणावतो मुनिने नभी कन्या सहित स्वस्थाने गयो.

अहीं वृष्ट बेश्याए दासीने पूज्यु के “ सुवर्णरेखा क्यां डे ? ” दासीए कर्णु के “ पचास हजार द्रव्य आपीने श्रीदत्त श्रेष्ठी तेने द्वाइ बनमां गयो डे. ” वृष्ट बेश्याए कर्णु के “ तेने बोद्धावी द्वाव. ” एट्ट्वे दासीए आवीने छुकाने बेरेद्वा श्रीदत्तने पूज्यु के “ अमारी स्वामिनो क्यां डे ? ” श्रीदत्त बोद्ध्यो के हुं जाणतो नवी. ” ते सांजळीने दासीए छुद बेश्याने ते श्रीदत्तनुं बचन जणाव्युं, एट्ट्वे वृष्ट बेश्याए राजा पासे जइ पोकार करीने कर्णु के “ हे स्वामी ! हुं बेतराणी हुं, श्रीदचे सुवर्णरेखाने द्वाज्ञ जडने काँइक संतानी दीधी डे. ” ते सांजळीने राजाए श्रीदत्तने बोद्धावीने पूज्यु. त्यारे “ हुं सत्य बात कहोश तो कोइ मानशे नहीं ” एम जाणीने तेणे काँइ पण जवाब आप्यो नहीं. तेथी राजाए तेने कारागृहमां नांख्यो अने तेनी पुत्रीने दासी करवाना द्वेतुथी पोताने धेर राखी. पछी कारागृहमां रहेद्वा श्रीदचे विचार्यु के “ सत्य बात कहेवाथीज कोइ पण रीते हुं नृटी शकीज. ” एम धारीने कारागृहना रक्कडारा तेणे राजाने विझ्ञप्ति करी के “ हे स्वामी ! हुं सत्य बात कहुं हुं. ” त्यारे राजाए तेने सजामां बोद्धाव्यो. एट्ट्वे तेणे बानर उपादी गया संवंधी वृत्तांत कही संज्ञाव्यु. ते सांजळीने सर्व जन-स्मवा द्वाग्या के अहो ! केहुं सत्य बोद्ध्यो ? कर्णुडे के—

असंज्ञाव्यं न वक्तव्यं, प्रत्यक्षं यदि दृश्यते ।

यथा वानरगीतानि, तथा तरति सा शिक्षा ॥ १ ॥

ज्ञावार्थ—“ जोके प्रत्यक्ष जोयेत् होय तोपण असंज्ञवित वात वोद्धवी नहीं, जेवी रीते वनमां वानराओ गोत गाय भे ए असंभवित हतुं तेम जलमां शिक्षा तरे भे ते पण असंज्ञवित छे. ” आ दण्ठांत अन्य स्थलेथी जाणी बोवुं.

पडी ते सांजळीने “ आ वणिक हजु पण सत्य वोद्धतो नयी. ” एम धारी-ने क्रोध पामेल्ला राजाए तेने मारवानो हुकम कर्यो. एट्ट्वे श्रीदत्ते विचार्यु के “ पूर्वे करे-द्वा अशुन्न कर्मनो उदय थयो भे, तो हचे खेद कस्वार्थी शुं थाय ? ” ते अबसरे उद्यानपाळे आवीने राजाने कहुं के “ हे देव ! उद्यानमां मुनिचंद्र केवळी पथार्य भे. ” ते सांजळीने राजा परिवार सहित उद्यानमां गयो. मुनिने वांदीने राजाए देशनानी याचना करी. त्यारे केवळी वोद्व्या के “ हे राजा ! सत्यवादी श्रीदत्तने मारवानो तें हुकम आप्यो भे ते तेने धर्मश्रवणनी अज्ञिक्षापावाळाने योग्य नयी. ” ते सांजळीने राजा छाना पाम्यो. पडी श्रीदत्तने वोद्धवी पोतानी पासे वेसाईने राजा तेनुं स्वरूप पुछे भे, तेवामां ते वानर मुवर्णरेखाने पृष्ठपर राखीने त्यां आवो, अने पृष्ठपर्यी तेने उतारीने ते सज्जामां बेतो. ते जोइने सर्व माणसो आर्थ्य पामी श्रीदत्तनी प्रशंसा करवा द्वाग्या. पडी श्रीदत्ते केवळीने पूछ्युं के “ हे स्वामी ! कया कर्मने दीधि मने माता तथा पुत्री साथे विषयनी अज्ञिक्षापा थइ ? ” मुनि वोद्व्या के “ पूर्वना संवंधथी थइ भे, ते हकीकत सांजळ—कांपीव्यपुरमां चैत्र नामनो एक ब्राह्मण हतो. तेने गौरी अने गंगा नामनी वे स्त्रीओ हती. ते एकदा मैत्र नामना मित्रनी साथे जिक्काष्टत्तिने माटे कोकण देशमां गयो. त्यां वन्ने मित्रोए घण्ठं धन मेलव्युं. एकदा चैत्रने मुनेज्जो जोइने मैत्रे विचार्यु के “ आने हणीने हुं सर्व धन द्वाइ छान. ” फरीधी पागो तेने विचार थयो के “ मने विभासघातीने धिक्कार भे ! ” एम विचारीने ते पाडो स्वस्य थयो. पडी ते वन्ने मित्रो ल्लोज्जथी जमता जमता एक वनमां पेत्रा. ते वनमां वैतरणी नदी हती. तेनी खबर जहाँ हो-वायी ते वन्ने तेने उत्तरवा द्वाग्या. एट्ट्वे तेमां बूझीने मरण पाम्या. त्यांथी अनेक जवामां भ्रमण करीने चैत्रनो जीव तुं थयो, अने मैत्रनो जीव शंखदत्त थयो. ते शंखदत्ते पूर्व जबे तेने मारवानुं धार्युं हतुं. ते कर्मथी तें तेने आ जन्ममां समुद्धमां

नांख्यो. चैत्रनी स्त्रीओ जे गौरी अने गंगा हृती ते पतिना वियोगधी वैराग्य पामीने तापसणी थइ. एकदा गौरीए अति तृपा द्वागवाथी सेवा करनारी पासे पाणी मार्यु. ते बखते ते दासीने निजा आवती हृती, तेथी आल्सने द्वीधे तेणे उच्चर आप्यो नहीं. त्यारे गौरी क्रोधयी बोली के “ अरे ! शुं तने साप करड्यो डे के मरेला जेवी थइने उच्चर पण आपती नवी ? ” ते वचनयने गौरीए दृढ पापकर्म वांध्यु. गंगाए पण एकदा पोतानी काम करनारीने कांड कार्य माटे मोकळी हृती ते बहुवारे पानी आवी त्यारे गंगाए तेने कहुं के “ अरे ! आटवी वार तने कोइए वंधीखाने नांखी हृती ? ” एम बोलतां ते गंगाए पण छुष्ट कर्म वांध्यु. त्यार पडी एक दिवस कोइ वेश्याने घणा पुरुषो साथे विज्ञास करती जोझने गंगाए विचार्यु के “ आ वेश्याने धन्य डे के जे ज्ञमरोथी पुष्पद्वतानी जेम अनेक कामी पुरुषो-थी वीटायेढी डे, हुं तो मंदज्ञानी हुं के जेनो पति पण तजीने दूर देश गयो डे. ” आवा विचार्यी तेणे छुष्ट कर्म उपार्जन कर्यु. त्यांथी मरण पार्मीने ते बन्हे ज्योतिषी थइ. त्यांथी चवीने गौरीनो जीव तारी पुत्री थयो अने गंगानो जीव तारी मातापणे उत्पन्न थयो. तेमनी साथे पूर्वज्ञवे पत्नीनो संबंध होवाथी तने तेनापर कामराग उत्पन्न थयो.” आ प्रमाणेहुं संसारहुं स्वरूप सांजळी वैराग्य पामेढो श्रीदृच बोद्ध्यो के “ हे स्वामी ! मने पापीने मारा मित्रनो मेळाप थशे के नहीं ? ” गुरुए कहुं के “ खेद न कर, एक कणवारमांज ते अहीं आवरो. ” एम वातो करे डे तेवामां त्यां शंखदृच आप्यो. श्रीदृचने त्यां बेठेढो जोझने शंखदृचनी आंखो क्रोधयी द्वादृ थइ गइ. ते जोझने गुरुए शंखदृचने कहुं के “ हे जज्ज ! कोप न कर, केमके क्रोधरूपी अग्निथी गुणरूपी रत्नो वळी जाय डे, ते अग्निने जे उपशमरूपी जळवमे बुजायतो नवी ते सेकमो छुःख सहन करे डे. देहरूपी घरमां क्रोधरूपी अग्नि प्रवेश करे डे, त्यारे ते त्रण दोप ( त्रिदोप ) उत्पन्न करे डे. पोताने तपावे, परने तपावे, अने परसाधेना स्नैहनो नाश करे. ” ते सांजळीने शंखदृच कांडक जांत-चित्त थयो. पडी श्रीदृचे उठीने तेने पोतानी पासे वेसानी केवळी प्रत्ये पूज्युं के “ आ मारो मित्र समुद्भावी शी रीते नीकळीने अहीं आप्यो ? ” गुरु बोद्ध्या के “ समुद्भावं तेने एक काष्ठानुं पाटीयुं हाथपां आव्यु. तेने आयारे तरीने ते सात दिवसे सारस्वत नगर पासे नीकळ्यो. त्यां तेने तेनो मामो मळ्यो. तेणे तेने स्वस्थ कर्यो. पडी तेणे तेना मामाने “ मुवर्षकुळ अहींथी केड्युं दूर डे ? ” एम पूज्युं.

त्यारे तेना मामाए कर्युं के “ अर्हींधी वीश योजन दूर छे, त्यां हाथीओथी जरे-  
द्वां बहाणो आब्यां डे एम संजलाय डे. ” ते सांजलीने मामानी रजा दृष्टने ते  
अर्हीं आब्यो, अने अर्हीं तने जोइने तेने क्रोध उत्पन्न थयो. ” आ प्रमाणे क-  
होने पड़ी गुरुए शंखदर्शने फरीथी तेनो पूर्व जव कहीने बोध पमाड्यो.

आ प्रमाणे केयळीनी देशना सांजलीने राजाए श्रावकना वार व्रतो ग्रहण  
कर्या. श्रीदचे शंखदर्शनी साये पोताने घेर जइने अर्हु इव्य तथा पोतानी पुत्री  
तेने आपी, अने पोतानुं धन जिनजुवन, विवप्रतिष्ठा, ज्ञानजक्कि इत्यादि सात  
क्षेत्रमां खरचीने मोटा उत्सव पूर्वक केयळी पासे जइने दीक्षा ग्रहण करी. अनु-  
क्रमे निरतिचार चारित्र पालीने मोक्षपद प्राप्त कर्यु.

३४४

स्त्वद्विनपरिमितोपदेशप्राप्तादवृत्तौ त्रयोविंशतिमस्तंजस्य  
चतुर्थत्वार्थिंशदधिकत्रिशततमः प्रवर्यः ॥ ३४४ ॥

## व्याख्यान ३४५ मुं.

हुताशिनीना पर्व विषे.

पर्व हुताशिनीसंज्ञं, लोकिकं पापरूपकम् ।

हेयं लोकोत्तरधर्मज्ञै नैवसंततिवर्धकम् ॥ १ ॥

ज्ञावर्थ—“ हुताशिनी ( होली ) नामनुं पर्व लोकिक अने पापरूप  
होताथी लोकोत्तर धर्मने जाणनारा उत्तम जीवोए जबनी परंपराने वधारनार ते  
पर्वनो त्याग कर्त्तो. ” आ अर्थनुं समर्थन करवा माटे हुताशिनीनो संबंध जाणवा  
योग्य डे ते आ प्रमाणे—

### हुताशिनी ( होल्ली )नी कथा.

आ नरतकेवमां जयपुर नामनुं एक नगर हतुं, जेर्मा  
बत्रेपु दंनश्चिकुरेयु वन्धः, शारीपु मारिश्च मदो गजेपु ।

होरेपु त्रै छिष्विद्वौकनानि, कन्याविवाहे करपीक्षनं च ॥१॥

“ उत्रने विषेज दंद हतो, स्थीओनाकेशापात्राने विषेज वंथ थतो, क्रीमाना  
सेगउनिज पार एम कहेवार्मा आवतुं, हस्तीओने विषेज मद रहेतो, मुक्काफव्यना  
हारने विषेज डिष्व जोवामां आवतां, अने कन्याना विवाहमांज करपीक्षन करवामां  
आवतुं ( हाय पक्षवामां आवतो ); पण ते नगरना लोकोमां दंद, वंथन, मारी,  
मद, छिष्व के करपीक्षन हतुं नहीं. ”

ते नगरमां अनेक चतुर पुरुषो बसता हता, मोटा मोटा शिखरखाला प्रा-  
सादो ( मंदिरो ) अने मोटा मोटा महेलो जेमां होय ते काँइ नगर कहेवातुं नयी;  
पण ज्यो विद्वान लोको घणा रहेता होय ते जोके गामनुं होय लोपण नगर क-  
हेवाय ढे. ते नगरमां कोइ मागण तो देरवातोज नहीं, छतां कदाच कोइ देखातो तो  
ते लोकोने प्रतिवोध करवा माटेज जमतो हतो, कहुं ढे के—

धारं धारमटन्तो हि, भिक्षुकाः पात्रपाण्यः ।

कथयन्त्येव लोकानामदत्तफलमीदशस् ॥ १ ॥

“ हाथमां पात्र राखीने घेर घेर जटकता जिक्षुको लोकोने एम कहे ढे  
के दान नहीं देनारेन आवुं ( अमारा जेवुं ) फल भले ढे. ”

ते नगरमां जयवर्मा नामे राजा हतो, अने ते राजाने माजवा लायक म-  
न्नेरथ नामे झेउ हतो, तेने लक्ष्मी नामनो स्त्री हती), ते स्त्रीधी झेउ वहु सुखी ह-  
तो, कहुं ढे के—

संसारथान्तदेहस्य, तिलो विश्रामनूमयः ।

अपत्यं च कलत्रं च, सतां संगतिरेव च ॥ १ ॥

संसारमां श्रांत थयेद्वा देहने ( मनुष्यने ) त्राणं विश्रान्तिनां स्थानक  
डे, पुत्र, स्त्री, अने सज्जनोनी संगति. ”

ते श्रेष्ठीने जार पुत्रो हता अने एक अनेक देवोनी पूजाजक्षित चिंगरेथी प्राप्त थयेक्षी होतिका नामनी पुत्री हती, ते पुत्री युवावस्था पामी. त्यारे तेने तेना पिताए कोइ श्रेष्ठीना पुत्र साथे परणावी. फिर तेनो संसारसंबंध थया अगाउज ते श्रेष्ठिपुत्र विसूचिकाना व्याधिथी मरण पाम्यो. पूर्व जबे जिनेवरनी आङ्गालुं आराधन करेलुं न होवाथी वाय्यावस्थामांज होतिकाने विधवापणुं प्राप्त थयुं. ए वनावथी तेना मावापने पण वणुं छुख थयुं. कहुं डे के—

पुत्रश्च मूखों विधवा च कन्या, शठं च मित्रं चपलं कलत्रं ।

विलासकाले धनहीनता च, विनाग्निना पंच दहन्ति कायम्॥१॥

“ मूर्ख पुत्र, विधवा कन्या, शठ मित्र, चपल ही अने विद्वास करवाने वस्ते ( युवावस्थामां ) निर्धनता—ए पांच अग्नि विनाज मनुष्यना शरीरने वाली नांखे डे. ”

वाळविधवापणुं प्राप्त थवाना संबंधमां कहुं डे के—

कुरंगरडंतण दोहगाइ, विङ्गत्त निंदू विसकन्नगाइ ।

जम्मतरे खंनियवंभधम्मा, ताऊण कुज्जा दढसीखज्जावं ॥

“ कुशिळणीपणुं, वाळविधवापणुं, झुर्जागीपणुं, वंद्यापणुं, काकवंध्यापणुं<sup>१</sup> अने विषकन्यापणुं, इत्यादिक जन्मातरमां ब्रह्मचर्य खंमन करवाथी प्राप्त थाय डे, माटे शीळवतमां दढ जाव राखवो. ”

पडी ते होतिकाने तेना मावापे पोताने धेर झावीने राखी. होतिका निरंतर घस्ती मेही उपर गोखमां वेती रहेती हती, अने मदोन्मत्तनी जेम काम-व्यथाथी पीमा पाम्या करती हती. कहुं डे के—

वाल्वरंका तपस्वी च, कीझवध्यथ घोटकः ।

अन्तःपुरगता नारी, नित्यं ध्यायन्ति मैयुनम् ॥ १ ॥

“ वाल विधवा, तापसी, सीळे वांधी राखेलो अश्व अन्तः-पुरमां रहेली ही—ए निरंतर मैयुनमुंज ध्यान करेडे”. वली—

१ युत उत्रो प्रसेव ते.

नर सासरे स्त्री पीढ़रे, यति कुसंगतवास ।

नदीतीरे तरु माल कहे, यदि तदि होय विणास ॥२॥

“ पुरुष सासेर रहेवाथी, स्त्री पीयरमां रहेवाथी, यति कुसंगतमां चसावाथी अने दृक्षो नदीने काठे रहेवाथी ज्योर त्यारे पण विनाश पामे छे. एम माल कवि कहे डे. ”

शास्त्रमां पण करुं डे के—

सीसा य जे संजमजोगजुत्ता, पुत्ताय जे गेहज्जरे नियुत्ता ।

वियारखुधी कुलवालियव्वा, होउण तेसि उवसंतिमेइ ॥१॥

ज्ञावार्थ—“ जेओ संयमयोगवी युक्त होय तेज शिष्यो कहेवाय डे, जेओ गृहज्जरमां जोकायेद्वा होय तेज पुत्रो कहेवाय डे, अने जे सच्चिदात्मक उच्चित्ताळी होय तेज कुलवालिका कहेवाय डे. तेमने कदि विकारखुच्छ थाय छे तोपण ते उपशांतिने पामे डे. ”

माटे शिष्यने, पुत्रने तथा कुलवर्यूने पोतपोताना कार्यमां आवर्जन सहित एट्ट्वे जोकायेद्वा राखवा. आ होलिका तो तदन आवर्जन रहित बीझकुड़ नवरी हुती, तेथी तेना कामविकार केम दृद्धि न पामे ? करुं डे के—

यौवनं धनसंपत्तिः, प्रज्ञुत्वमविवेकिता ।

एकैकमप्यनर्थाय, किमु यत्र चतुष्टयम् ॥२॥

ज्ञावार्थ—“ युवावस्था, धनसंपत्ति, प्रज्ञुत्व ( अधिकारीपणुं ) अने अविवेकीपणुं, आमांतुं एक एक पण अनर्थकारी डे, तो ज्यां चारे जेगा होय तेमां शुं कहेवूं ? ”

एकदा ते होलिका पोताना महेद्वना गोखमां वेत्री हुती. ते वरवते वंगदेशना राजानो पुत्र कामपाल कीका माटे जतां अध्यर वेसीने त्यांथी नीकछयो. तेते जोइन ते होलिकाए तेना पर कामदेवना वाणल्प कटाक नांख्या. एट्ट्वे कामपाल पण तेना रूपवी मोह पामीने चारंबार तेनी सामुं जोशा द्वारयो. करुं डे के,—

दिढ्ठि दिढ्ठपसरो, पसरेण रङ्ग रङ्ग सज्जनावो !

सद्ज्ञावेण यं नेहो, पंच य वाणा अणगस्सः ॥ १ ॥

जावार्थ—“प्रथम जोंहुं, जोवायी हप्तिनो प्रसार, हप्तिप्रसारथी रति, रतिथी सद्ज्ञाव अने सद्ज्ञावयी स्नेह उत्पन्न थायडे, ते पांचे कामदेवनां वाणो डे.”

आ प्रमाणे बनेने परस्पर स्नेह यवायी पोतपोताने घेर पण तेओ परस्पर-  
तुं ध्यान करवा लाग्या. खावामां, पहेल्वामां के वीजा कोइ पदार्थमां तेओ प्रीति  
पाम्या नहीं. कर्हुं डे के—

नेह म करजो कोइ, गोरसु नितु इम जणे ।

नेह पसाइ योय, जिम दहिंयको विक्षोन्निज ॥ २ ॥

आइ फिरो सहु कोइ, अणगमतो आठे पुहर ।

जो मन विसम्यो होइ, सो मुझ किमे न विसरे ॥ २ ॥

जावार्थ—“कोइ पण स्नेह करजो नहीं” एम हेमेशां गोरस कहे छे.  
केमके स्नेह ( माखण )ना वशथी दहीने वद्वोवाहुं पर्ने छे.” ?

“अणगमता माणसो आठे पहोरे जल्ले आव जाय, पण जेना पर मन  
विश्राम पाम्युं डे तेमने कोइ रीते विसरतुं नथी.” ४

एकदा होल्किने तेना पिताए पुञ्चुं के “हे पुत्री ! तुं केम दुःखित,  
म्हान मुखवाळी अने अति कुश देखाय डे ? ” ते सांजलीने तेणे कांइ उच्चर  
च्याप्यो नहीं. त्यारे पिताए विचार्युं के “आ विचारी वाळविधवा शुं चोबे ? पूर्व  
कर्मना उदयथी ते अति दुःखीयारी यइ डे. केमके हजारो गायोमां पण वाडमा  
जेम पोतानी माताने ओळखी तेनी पासे जाय छे, तेम पूर्वे करेदुं कर्म पण तेना  
कर्तीनी पासेज जाय डे. तोपण आ पुत्रीने हुं काईक जणवा विगेरेतुं अवज्ञावन  
करी आपुं के जेथी तेना दिवसो निर्गमन थाय.”

हबे ते नगरमां एक चंद्ररुद्र नामे ब्राह्मण रहेतो हतो. ते घव्यना द्वोजथी  
जांकचेष्टा करतो हतो, तेथी ते जांकना नामेज ओळखातो हतो. तेने हुंदा नामनी  
एक पुत्री हती. ते युवावस्था पामो, तोपण तेने कोइ ब्राह्मण परएयो नहीं. तेथी  
चंद्ररुद्र तेने अचक्कनूति नामना कोइ जांड साथे परणार्वी; एटद्वे सरखे सरखो  
योग मल्यो. जुगारीन। पुत्रीनं गंडीचोरनो पुत्र परएयो; ए जुगते जुगनी जोम मळी.

जाए रत्नाकरमां रत्न मळी गयुं ! उंटना विवाहमां गधेमा गीत गानार थया, पढ़ी परस्परना वलाण करे, गधेमा कहे के—‘ अहो ! उंटभाइतुं केवुं सुंदर रूप डे ? ’ त्यारे उंट कहे के ‘ अहो ! गधेमाजाइतुं केवुं सुंदर गायन छे ? ’ हवे ते दुंगा पर-णी के तरतज पिताना तथा पतिना वनेना कुळनो क्षये थयो, तेथी उदरनिर्वाह-ने माटे ते दुंगा परिवाजिकानो वेप धारण करीने कामण, मारण, उच्चाटन विग्रे पापकर्मयी आजीविका करवा लागी।

एकदा ते दुंगा भिक्षाने माटे ज्ञमण करती मनोरथ ऐप्पीने धेर गद्द ऐप्पीए तेने वेसवा माटे आसन आपी कुशलता पूऱी, त्यारे ते धर्मना अक्षरो खोजी के—

काळा कुशल किम पूछीए, नितु उगंते ज्ञान ।

जरा आवे जोवण खसे, हाणी विहाण विहाण ॥ १ ॥

जावार्थ—“ हे काळा शेऊ ! तमे कुशलता शी पूऱो डे ? हंमेशां सूर्य उगे डे के युवावस्था धेटे डे ने जरावस्था आवे डे; वहाणे वहाणे हानि थती जाय डे, त्यां कुशलतानी शी वात ? ”

काया पाटण हंस राजा, पवणु फिरे तबारो ।

तिण पाटण वसे जोगी, जाए जोग विचारो ॥ २ ॥

जावार्थ—“ कायारूपी नार डे, त्यां हंसरूपी राजा रहे डे, तेमां पवन रूपी कोट्याळ फेरे डे, ते नगरमां एक जोगी वसे डे, ते जोगना विचारो जाए डे.”

इक खोद्दमि पंचहिं जाए रुंधी, तिन्ह सगळहि जूजूझ्युद्धि ।

कह जाऊ सा धरु किम नंदे, जत्थ कुदुंवउ अप्पण उंदश ॥ ३ ॥

जावार्थ—“ एक रुंपमी पांच जाए रुंधी डे, ते पांचे जाणनी जूदी जूदी शुद्धि डे, तो हे जाइ ! कहे के ज्यां आखुं कुडुंव स्वर्चंद चालें डे, ते धरं शुं आनंद आपे ? ”

जर कुत्तो जोवण ससा, काल आहेनी मित्त ।

विहु वयरि विच लुंपगा, कुशल किं पूऱे मित्त ॥ ४ ॥

जावार्थ—“ हे मित्त ! जरा रूपी कूतरो डे, जोवन ( युवावस्था ) रूपी

सप्तद्वारो थे; अने काळ रूपी आहेमी ( शिकारी ) थे. तेमांना वे मुश्यमननी वच्चे आ शरीररूपी ऊंपुं रहेद्वां थे. तेमां हे मित्र ! तमे शी कुशब्दता पूछो थो ? ”

तेनां आवां वचनो सांभळीने श्रेष्ठीए विचार्ये के “ अहो ! युवावस्था उत्तां पण आनामां केवो विस्मय उत्पन्न करे तेवो वैराग्य छे ? ”

**धातुपु कीयमाणेपु, शमः कस्य न जायते ।**

**प्रथमे वयसि यः साधुः, स साधुरिति मे मतिः ॥ १ ॥**

जावार्थ—“ धातुओ कीण पामे त्यारे तो पडी कोने शमता न उत्पन्न याय ? सौने याय; पण प्रथम वयमां जे साधु ( वैराग्यवान ) होय तेज खरो साधु, एम हुं तो मारुं दुं. ”

पडी श्रेष्ठीए तेने विनंति करी के “ हे स्वामिनी ! मारी पुत्री वाळ विधवा थे, तेने तमे धर्मनो अन्यास करावो, के जेवी तेना चित्तमां वैराग्य उत्पन्न याय. केमके जे माणस जेवो संग करे तेवो स्वद्य काळमां थइ जाय थे. पुष्पनी साधे रहेवारी तज्ज पण सुगंधी याय थे, अने चंदनना बनना संगथी वीजां दृक्षो पण चंदनरूप थइ जाय थे; मात्र जेना हृदयमां गांठ थे एवा वांसज चंदन रूप घता नयी. ” ते सांजळीने दुंदा वोळी के तपस्वीओने गृहस्थीओने संग करवो गुणकारी नयी. कायुं थे के—

**धाविमौ युरुपौ लोके, शिरःशूलकरौ परौ ।**

**गृहस्थश्च निराळंवी, साळंवी च यतिर्भवेत ॥ २ ॥**

जावार्थ—“ गृहस्थ आळंवन रहित ( दरिंदी ) होय, अने यति आळंवन सहित ( मायावी-ज्ञव्यवान ) होय तो ते वे पुरुषो आ मुनियामां अत्यंत मस्तकमां शूल उत्पन्न करनारा थे. ”

दंजी माणसोने नकार ( ना कहेवी ते ) गुणकारी थे. केमके—

मनमांहि जावे मुंमु द्वलावे, नं नं कही कही लोक सुणावे ।

मनकी वात कवहु को जाणे, कपट चिन्ह ए माळ वखाणे ॥ २ ॥

जावार्थ—“ मनमां गमनुं होय पण मायुं हवावे, ना ना कहीने लोकोने

समजाए, पण मननी वात कोण जाए ? आ प्रमाणे माझ कविए कपड्यां चिन्ह कहेलुं डे.”

पडी हुंदाए पोतानो अनिप्राय जणाव्यो के “ कुण माणसनो मोटो पवळा महेक्ष होय तोपण ते शा कामनो ? पण ज्यां पंथीजनोने विश्रांति मळती होय तेवुं कुण्ठुं याणुं सारूं.”

आ प्रमाणेनां तेनां निस्पृहतानां वचने सांजलीने श्रेष्ठी तेने मान पूर्वक होलिकां पासे लळ गयो, अने तेने कशुं के “ हे पुत्री ! आ तारी गुरुणी डे. तेनी पासे तुं अन्यास करजे अने तेनी सेवा करजे.” त्यारथी आरंजीने ते होलिका हुंदा सापे रहेवा लागी, पण मनमां कामपाळना संगनी इच्छा होवाची ते जणती नहीं. कशुंते के “ जेने कांड सहज पण वोध नवी तेनी पासे घणी वतो करवाची पण शुं ? कूतरातुं पूऱ्हरुं निरंतर नवीमां राख्युं होय तोपण ते सरळ धतुं नवी ? ” एकदा हुंदाए पूऱ्हशुं के “ हे पुत्री ! तुं सदा उक्षिम केम जणाय डे ? ” त्यारे होलिकाए पोतानी सत्य वात तेने कही. ते सांजलीने हुंदा वोळी के “ तुं जरा पण उद्देश करीश नहीं. हुं तारूं काम थोका काळमांज सिद्ध करी आपीश.” एम कंहीने हुंदाए कामपाळने घेर जड्णे तेने कशुं के “ तमारा चित्तने हरण करनारी होलिकाने तमारो संबंध नहीं थाय तो तमारा विरहनी पीकाढी ते मरण पामदो. ” ते सांजलीने कामपाळ वोळ्यो के “ अमारा बन्नेनो मेळाप कणे स्थाने थाय ? ” ते वोळी के “ सूर्यना मंदिरमां तमारे आवरुं, त्यां ते पण आवडो.” ते सांजलीने कामपाळ हृष्प पाम्यो, पण ते मूर्खे विचार न कयों के परत्ती साये भेम राखतां केटळी मुदत सुधी केमकुशल रहेशे ? केमके सापने सायरे सुनारने क्यां सुधी केम रहे ? परत्तीना भेमधीज तोरण सहित बळका नगरी वढी गइ, अने वनो इयाम वर्ण थइ गयां. माटे परत्ती साये भेम करनारना शिर उपर कान ज नवी एम जाणवुं, पडी कामपाळे पोतानुं कार्य साखवा माटे ते हुंदाने सन्मान पूर्वक विदाय करी. कशुं डे के—

सत्त सायर मि फिर्या, जंबूदीव पझट ।

कारण विण जो नेहनो, सो में कहीं न दिठ ॥१॥

जावार्थ—“ जंबूदीपनी प्रदक्षिणा देतो देतो सात सागर हुं फयों, पण

व्याख्यान ३४५ मुं. हुताशिनीना पव विषे. ( ३७१ )

के “ आपणं कार्यं तो सिद्धं थँयुं, पण आ ढुंदा, आपणो सर्वं मर्मं जाणे बे, तेथी ते कोऽवार आपणने छुखदायी थशे, माटे तेने मारी नांखबी योग्य बे. कहुं बे के—

**उपाध्यायश्च वैद्यश्च, नर्तक्यश्च परस्त्रियः ।**

**सूतिका दूतिका चैव, सिद्धे कार्ये तृणोपमाः ॥१॥**

नावार्थ—“ उपाध्याय ( महेताजी ), वैद्य, वृत्य कस्तारी, परत्वी, सूतिका ( सुयाणी ) अने दूती ( संदेशा द्वाद जनारी ) ए वधां कार्यं सिद्धं यथा पञ्ची तृणं समानं छे. ”

मंत्रघीजमिदं पववं, रक्षणीयं यथा तथा ।

मनागपि न ज्ञियेत, तज्जिन्नं न प्ररोहति ॥ २ ॥

नावार्थ—“ आ मंत्रस्त्वपि<sup>१</sup> परिपक् वीजतुं एवी रीते रक्षणं करवुं के ते जरा पण ज्ञेदाय नहीं, केमके ज्ञेद पामवायी ते उगतुं नव्ही. ”

सुगुप्तस्यापि दंनस्य, ब्रह्माप्यन्तं न गच्छति ।

कोऽविको विष्णुरुपेण, राजकन्यां नियेवते ॥ ३ ॥

नावार्थ—“ सारी रीते द्वुपावेज्ञा दंननो पार ब्रह्मा पण पापी शक्ता नव्ही. जुओ एक कोळी विष्णुतुं रूप धारण करीने राजकन्या जोगवतो हतो. ” आ दृष्टांतं पंचतंत्रादिकथी जाणी द्वेवुं.

पछी होऽविकाए ते पर्णकुटीनी फरतां काष्ठ विगेरे गोठवीने तेमां एक मनुष्यतुं शब नांखीने ढुंदा सहित ते छुंपझी वाळी दीघी. पछी होऽविकिंका तथा कामपाळ ल्यांधी नासीने देशान्तर गया. रागातुर थयेझी पापी नारी शुं नव्ही करती ? कहुं बे के—

मारङ्ग पियज्जत्तारं, हणङ्ग सुयं तहं पणासए अथयं ।

नियगेहंपि पलिवड्ड नारी रागातुरा पावा ॥

“ पेताना प्रिय नर्तीरने मारे बे, पुत्रने हृणे बे, छब्बनो नाश करे बे,

१ युप हकीकत-द्युम्न करेवं कार्य.

होलिकाना आवां वचनो सांजढीने तेना मातपिताए शिखामण दीधीके  
“ हे पुत्री ! तुं केम वहु आग्रह करे छे ? तेणे अजाणतां ब्रांतिथी तारो सर्व  
कर्यो भे, तेथी निविंकारीने तेनो दोष लागतो नयी. कहुं भे के—

गृहणाति दन्तैः शिगुमाखुमोतुः, पद्मं च वंशं दशति छिरेकः ।  
ज्ञायां सुतां शिष्यति वै मनुप्यस्तत्रापि निलं मनसः प्रमाणम्॥१॥

जावार्थ—“ विद्वान्मी पोताना दांतवके पोताना वचनाने पक्के भे तथा  
ठंदरने पण पक्के भे, जमरो कमळने नसे भे तथा वांसने पण नसे भे, अने पुरुष  
पोतानी स्त्रीने आङ्गिंगन करे भे तथा पुत्रीने पण आश्लेष करे भे; परंतु ते सर्वमां  
मनज प्रमाण छे.”

इत्यादि उपदेश आपी तेने समजावीने तेनो पिता तेने घेर तेमी गयो.  
आहूचांत जाहेरमां आववाधी लोकेमां ते होलिका महासतीना नामधी प्रख्यात  
यदि. पडी ते प्रातःकाळे, सायंकाळे, रात्रिए, गमे ते वस्ते स्वेच्छाधीज दृंढाने भेत-  
री-तेने साथे राख्या विना सूर्यचंत्यमां जवा द्वागी. कहुं भे के—

यात्रा जागर दूरवारिन्नरणं मातुर्गृहेऽवस्थिति—

र्वस्त्रथं रजकोपसर्पणमपि स्याचर्चिकामेवनम् ।

स्थानञ्चंश सखीनिवासगमनं नर्तुः प्रवासादिका,

व्यापाराः खदु शीदखंमनकराः प्रायः सतीनामपि ॥१॥

जावार्थ—“ एकद्वा यात्राए जवुं, वीजी स्त्रीओनी साथे जागरण करुं,  
दूर पाणी भरवा जवुं, माने घेर ( पियर ) वधारे रहेवुं, दुगमां देवा देवा माटे  
पोवीने घेर जवुं, गरबे रमवा जवुं, स्थानधी ड्राप्ट थवुं ( पारके घेर जवुं ), सखी-  
ना निवासमां जवुं अने पतिनुं परदेशगमन थवुं, इत्यादि व्यापारो सती स्त्रीओ-  
ने पण माथे शीदखंमन करनारा थाय छे.”

एकद्वा फागण मासनी पूर्णिमानी रात्रीए होलिका सूर्यना चैत्यमां गङ्गा  
त्यां कामपाठ पण आव्यो हतो. वने जग कीमा करता सता गुखे वेंडा हतो. दुं-  
डा तापसी चैत्यनो पासेनी पर्णकुटी सुती हती. ते वस्ते ते वन्देए विचार कर्यां

के “ आपणं कार्यं तो सिद्ध थयुं, पण आ हुंदा आपणो सर्वं मर्मं जाणे डे, तेथी ते कोइवार आपणने मुःखदायी थजो, मटे तेने मारी नांखवी योग्य डे. कहुं डे के—

**उपाध्यायश्च वैद्यश्च, नर्तक्यश्च परस्त्रियः ।**

**सूतिका दूतिका चैव, सिद्धे कार्यं तृणोपमाः ॥१॥**

जावार्थ—“ उपाध्याय ( महेताजी ), वैद्य, वृत्त करनारी, परस्त्री, सूतिका ( मुयाणी ) अने दूती ( संदेशा लड्ड जनारी ) ए वधां कार्यं सिद्धं थया पडी तृणं समानं छे. ”

**मंत्रवीजमिदं पक्वं, रक्षणीयं यथा तथा ।**

**मनागपि न ज्ञियेत, तज्ज्ञानं न प्ररोहति ॥ २ ॥**

जावार्थ—“ आ मंत्रस्ती<sup>१</sup> परिपक्व वीजतुं एवी रीते रक्षण करवुं के ते जरा पण जेदाय नहीं, केमके जेद पापवायी ते उगतुं नवी. ”

**सुगुप्तस्यापि दंजस्य, ब्रह्माप्यन्तं न गच्छति ।**

**कोऽक्षिको विष्णुरुपेण, राजकन्यां निषेवते ॥ ३ ॥**

जावार्थ—“ सारी रीते दुपावेद्वा दंजनो पार ब्रह्मा पण पापी शक्ता नवी. जुओ एक कोळी विष्णुरुं रूप धारण करीने राजकन्या नोगवतो हत्तो. ” आ वृष्टांतं पंचतंत्रादिकथी जाणी लेवुं.

पछी होऽक्षिकाए ते पर्णकुटीनी फरतां काष्ठ विग्रे गोठवीने तेमां एक मनुष्यनुं जाव नांखीने हुंदा सहित ते जुंपमी वाळी दीधी. पछी होऽक्षिका तथा कामपाळ त्यांयी नासीने देशान्तर गया. रागातुर थयेडी पापी नारी शुं नवी करती ? कहुं डे के—

**मारइ पियन्त्तारं, हणइ सुयं तह पणास्तए अथ्यं ।**

**नियगेहंपि पलिवइ नारी रागातुरा पावा ॥**

“ पोताना प्रिय नर्तारने मारे डे, पुत्रेन हणे डे, अब्जनो नाजा करे छे,

<sup>१</sup> गुप्त द्वैकल-द्वारुं करेतुं कार्य.

अने पोताना घरने पण वाली मूके डे. रागातुर पापी स्त्री एव्वां बानां करे डे. ”

**ज्ञावार्थ—**पठो प्रातःकाळे ते चेत्य पासेनी छुंडी बळेझी जोइने द्वोको परस्त  
पृथ्वा द्वाग्या के “ अरे ! आ गुं थयु ? ” तेवामां जट्ठिक मनोरथ ऐप्पी पोताना  
घरमां हुंदा तापसीने तथा होक्षिकाने नहीं जोवाई खेद पामीने बोध्यो के “ जहर  
एक चितामां ए बने जणी बळी मरो. प्रथम में महा प्रयत्ने तेने अग्नि प्रवेश  
करतां अटकावी हती; परंतु पोताना पापनी निहृति माटे तेणे पोतातुं सतीपणु  
सत्य करी बताव्यु. तापसी पण तेनी साथेना स्नेहने दीधे बळी मुइ. ” ते सांज-  
छीने—“ अहो ! आ होक्षिका सतीनी जस्त महा पवित्र छे, तेनुं अंगपर विज्ञ-  
पन कर्याई जहर सर्व दुःखनो नाश थाय. ” एम बोद्धना द्वोको तेनी चिताने पो-  
द्वाग्वा द्वाग्या अने तेनी जस्त द्वज्ज्ञे माथे चढावना द्वाग्या. त्यारपञ्ची दर बर्चे  
फाल्गुन शुद्धी पूर्णिमानी रात्रिए ते स्थाने सर्व द्वोको इन्धन, ब्राणो विग्रेसो  
दग्धो करीने हुताक्षिनी सळगावना द्वाग्या. ए प्रमाणे सर्वत्र होलीतुं पर्वे  
प्रख्यात थयुं.

एकदा कामपाले होक्षिकाने कहुं के “ धन विना मनोरथ पूर्ण धना नयी,  
माटे हुं जब्बने माटे परदेश जाउं. ” ते सांजछीने होक्षिका बोली के “ हे स्त्रामी !  
तपारे माटे में जाति कुलादिकनो त्याग कर्यो डे, तपारो विरह एक कण पण हुं  
सहन करी शक्तुं तेम नयी. ” ते सांजछीने कामपाले मोहने दीधे तेनुं बचन  
सत्य मान्युं, अने जवानो विचार बंध राख्यो. केमके “ द्वीजावाली स्त्रीओना  
स्वाज्ञाविक विद्वासो पण मूढ़ पुरुषना हृदयमां स्फुरणायमान थया करे छे. कमल  
उपर स्वाभाविक राग होवाई स्त्रीं भपराओ वृथा ज्ञापण कर्या करे डे. ”

अन्यदा होक्षिकाए कहुं के “ हे मिय ! मे सर्व विचार कर्यो, पण मारा  
पिताना घर शिवाय बीजे कोइ स्थाने धननो द्वाज जणातो नयी. ” त्यारे काम-  
पाल बोध्यो के “ आपणे मोडुं अर्कार्य करीने नीकली गया डीए, तेथी हवे पाडुं  
त्यां इरी रिते जवाय ? ” ते बोद्धी के “ हुं एकी दंजरचना करीजा के जेयी पिता  
विग्रेर सर्व जनो अनुकूल थरो. आपणे नीकल्या पडी ते गाममां महापूज्य अने  
पान्य पुं होक्षीतुं पर्वे द्वोकोमां प्रसर्यु डे, माटे त्यांज जवुं योग्य डे. ” एम विचा-  
रीने ते बने जयपुर गामनी नजीक आव्या. पडी होक्षीए कामपालने कहुं के  
“ तपे मारा वापनी छुकाने जज्ज्ञे एम कहो “ के हे शेत्र ! मारी स्त्रीने माटे एक

सामी मूळ्य द्वाज्ञे आपो. ” ते सांजलीने कामपाळ मनोरथ शेत्रनी छुकाने ज-इन तेनी पासेथी मूळ्य आपीने एक सामी लड्ह होली पासे आव्यो. ते सामी जोइने होलीए कहुं के “ आवी सामी शुं कामनी ? वीजी सारी लड्ह आवो. ” एट्टेके कामपाळे फरीथी जइने वीजी सामी लावी बतावी. ते सामी पण होलीए पाडी मोकझी. त्यारे मनोरथ शेठे कहुं के “ तमे वारंवार जाव आव करो छो ते करतां तमारी स्त्रीनेज अहां लावो, एट्टेके तेने गमे तेवी सामी लड्ह ल्वे. ” ते सांजलीने कामपाळे होलीने जइने ते शेत्रनुं वाक्य कहुं. एट्टेके तरतज होली शेत्रने होटे गइ. त्यां ते वीजी वीजी सामीओ जोवा लागी. ते वखते शेत्र अनिमेप दृष्टिए ते होलीनी सामुं वारंवार जोवा लाग्यो, एट्टेके प्रथमधी शिखवी राख्या प्रमाणे कामपाळ बोध्यो के “ हे शेत्र ! तमे सुपात्र धज्ञे परखीना सामुं केम जोया करो डो ? ” शेत्रे कहुं के “ हुं कामना विकारथी जोतो नथी, पण मारी पुत्रीना जेवुं आनुं रूप लावएय जोइने मने विचार थयो के शुं तेज मारी पुत्री फरीथी मनु-प्यह्ये अहां आवी डे ? केमके ते तो अग्निमां प्रवेश करीने सती यड डे. ” कामपाळ बोध्यो के “ आ स्त्रीतुं नाम पण होलीज डे, पण आ तो मारी पत्नी डे. ” आ प्रमाणेना भ्रमधीज पूर्वे में पण सूर्य चंचलमां मारी पत्नी धारीने तमारी पुत्रीने आदिंगन कर्युं हहुं. आजे तमने पण मारी पत्नी उपर पोतानी पुत्रीनो ब्रह्म थयो, पण सरखां रूपलावएयवालां घणां स्त्री पुरुषो आ दुनियामां होय डे; तेमां तमारो कांड दोप नथी. ” ते सांजलीने शेत्रे स्नेहथी ते वन्नेने पुत्री तथा जमाइ करीने घेर राख्या. अहो ! स्त्रीओनी केवी गृह मति होय डे ! कहुं डे के—

बज्जनेह वारिहि पारं, बज्जनेह पारं च सव्वसत्थाणं ।

महिलाचरियाणं पुणो, पारं न लहेह वंजा वि ॥१॥

**नावार्थ—**“ समुद्रनो पार पामी शकाय, तथा सर्व शास्त्रोनो पार पण पामी शकाय, परंतु स्त्रीचरित्रना पारने ब्रह्मा पण पामी शकता नथी. ”

हवे पेढी हुंदा तापसी के जे पर्णकुटीमां वळी गइ हह्ती ते शुज्ज अध्य-वसाये मरीने व्यंतर जातिमां देवी यड हह्ती. तेणे विजंग ज्ञानथी पोतानो पूर्वे जब जाणीने जयपुरना द्वोको उपर कोप करीने विचार्युं के “ अहो ! आ द्वोको महा असती अने जीवती एवी होलीने पूजे डे अने तेनी स्तुति करे डे, पण पने तो

कोइ संजार्तु पण नवी. ” एम विचारीने ते गाम उपर एक मोटी शिळा बिकु-  
धाने ते बोद्धी के “ मने संतोष आपनार एक मनोरथ श्रेष्ठी विना वीजा सर्वने हम-  
णांज आ शिळाथी चूर्ण करी नांखीज. ” ते सांजलीने राजा विगेरे सर्व लोक  
जय पामीने मनोरथ श्रेष्ठीने शरणे गया. त्यारे ते श्रेष्ठीए पूजा वक्षिदान विगेरे क-  
रीने कल्यु के “ देव के दानव जे कोइ होय, ते प्रगट थइने जे इच्छा होय ते कहो,  
अमे नगरना सर्व लोको ते प्रमाणे करङ्गु. ” ते सांजलीने दुंडा व्यंतरी पूर्वनो सर्व  
हृत्तांत कहीने बोद्धी के “ होलीतुं पर्व आवे त्यारे सर्व पौरजनो नांकचेष्टा करे,  
परस्पर गालो दे, शृळ उत्त्राळे, शरीरे कादब चोळे इत्यादि करे तो आ उपद्रव हुं  
शांत करुं. ” ते सांजलीने लोकोए ते प्रमाणे अंगीकार कर्यु. त्यारथी भूल्टीतुं  
पर्व सर्वत्र प्रसर्यु. “ लोक गामरीया प्रवाह जेवो डे, ते परमार्थने समझतो नवी.”

अहीं उपदेशवचन आ प्रमाणेनां धारी राखवां के “एक असंविध वाक्य  
बोद्धाथी—गालि प्रदानादि करवाथी जीव अनेक जवाहां जोगवर्तु पर्मे तेवुं पाप-  
कर्म वांधे डे, माटे अशुन्ज प्रदापनो त्याग करीने ऋच्यवी हुताशिनी पर्वने सर्वया  
तजवुं, अने जावाथी बुच्छि पूर्वक शुन्ज वाक्यने अंगीकार करवुं. स्वपरेने हितकारी  
वाक्यो बोद्धवां.”

“ दृष्ट वाक्यना विस्तारवालुं, मिथ्यात्वधी नरेलुं अने संसारसागरमां  
रुचावनाह आ होली अने रंजेनुं लौकिक पर्व श्री जितन्द्र आगमना तत्त्वनी इच्छा-  
वाला लोकोए अवश्य त्याग करवुं. ”

॥ इत्यद्विनपरिमितोपदेशमासादद्वच्चा त्रयोविंशतितमस्तंनस्य  
पञ्चतत्त्वार्थिदधिकत्रिशततमः प्रवंधः ॥ ३४५ ॥

॥ संपूर्णोऽयं त्रयोविंशतितमः स्तंनः ॥

# श्री उपदेश प्रासाद.

स्तंभ २४ मो.

व्याख्यान ३४६ मुं.

यशोनन्दसूरि अने वद्वन्नन्दसूरि मुनि.

तपस्वी रूपवान् धीरः, कुबीनः शीक्षदार्ढ्ययुक् ।

पट्टिंशद्गुणाल्योऽनूच्छ्रीयशोन्नन्दसूरिराद् ॥ १ ॥

जार्य—“ तपस्वी, रूपवान्, धीर, कुबीन अने शीक्ष पाल्यामां दृढता  
वाला थी यशोनन्दसूरि आचार्यना ड्रीश गुणोथी युक्त थया । ” तेनी कथा  
नीचे प्रमाणे—

यशोनन्दसूरिनी कथा.

पद्मीपुरीमां ज्यारे श्री यशोनन्द मुनिने आचार्यपदवी मळी, ते वखते  
तेणे जीवन पर्यन्त हमेशां आठ कवलवरेज आंवित्त करवानो अनिग्रहदीधो, एवो  
नियम धारण करीने इर्यासमितिपूर्वक मार्गमां विचरता ते सूरिने एक महिमावाळी  
सूर्यनी प्रतिमाए जोड्ने मनमां विचार्यु के “ अहो ! आ सूरि जो मारा ज्ञुवनर्मा  
पथारे तो मारो जन्म सफल थाय । ” एम विचारीने सूर्य आकाशमां चादलां विकु-  
र्वीने जलनी दृष्टि करवा मांझी, ते वखते ‘माराथी अप्कायनी विराधना न थाओ’  
एम धारीने सूरिए समीप होवाथी ते सूर्यनाम चैत्यमां प्रवेश कर्यो, ते सूरिना तपना  
प्रजावधी सूर्य प्रत्यक्ष थइने वरदान मागवानुं कहुं, केमके देवतुं दर्शन निष्फल होतुं  
नयी; तोपण इच्छारहित सूरि काँइ पण माग्या विनाम पोताना उपाथ्रये गया,  
त्यारे सूर्य व्रासणनुं स्वप द्वाइने स्वर्ग नरकादिकमां रहेद्वा सर्व जीवोने जोइ शकाय  
तेवी एक अंजननी शीज्जी तथा एक दिव्य पुस्तक सूरिने आप्युं, ते पुस्तक मात्र  
वांचवायीज सूरिने सर्व विद्याओ पात्रसिद्ध थइ गइ, पडी ‘ आ विद्याओ पाश्चात्य  
मुनिओने अप्योग्य भे ’ एम विचारीने सूरिए पोताना शिव्य वंदन्नन्द मुनिने वो-

द्वावीने कहुं के “ आ पुस्तकने उधाड़ा विनाज एम ने एम सूर्यना चैत्यर्मा ज़इने तेने आपी आव. तेने कहेजे के मारा गुरुने तेपे जे धापण आपी हती ते पाड़ी द्व्यो. ” ए प्रमाणे कहीने गुरुए बळजन्ज मुनिने योक्त्या. गुरुए ते पुस्तक उधाड़वानी सखत मना करी हती, तोपण तेणे त्यां ज़इने चैत्यनी बहार ते पोथी ग्रो-मीने तेमांधी मंत्रोनी आम्नायनो त्रण पानो चोरीने गुप राख्यां, पछी चैत्यर्मा ज़इने सूर्यनी प्रतिमाने गुरुनु वचन कही ते पुस्तक आप्युं, एट्झे ते प्रतिमाए पण हाय लांबो करीने ते लङ्घ द्वीधुं, पड़ी बळजन्ज मुनि चैत्यनी बहार आवीने उप भे तो संतामेद्वां पानां जोयां नहीं; तेथी ते पोताना आत्माने उपाद्वंज देवा द्वाव्या के “ मने धिकार छे ! केमके में गुरुनी आङ्गा उद्धंधी अने संतामेद्वां पत्र पण कोण जाए क्यां गयां ? ” एम खेद करतां तेनां नेत्रोमां अशु जराइ गयां. ते जोइने मूर्ये तेने कहुं के “ हे मुनि ! शामाटे खेद करो ग्रो ? द्व्यो आ त्रण पत्रो, तेवरे शासननी उच्चति वधारजो. ” ते द्वाइने तेणे ते त्रण पत्रोमां रहेद्वी विद्याने पात्र-मात्रथीज सिष्ठ करी द्वीधी.

एकदा गुरु बहिर्वृभि ( स्वंभिज्ञ ) गया हता अने प्राप्तुक ज़लने तेने माटे कहेद्वा काल्यी कांक्ष अधिक काल सुधी प्राप्तुक राखवा माटे बकरानी द्वीमीओ आणी राखेद्वी पासे पमी हती, ते बखते बळजन्ज मुनिए चूळी न जवाय तेट्ड्वा माटे संजीविनी विद्यानी आवृत्ति करी. ते विद्याना प्रज्ञावधी जेट्ड्वी द्वीमीओ हती तेड्लां बकरा बकरीओ थङ्ग गयां; तेवामां गुरु बहिर्वृभियी आव्या. उपाध्यमां बकरांओनो वृक्तार शब्द सांजडीने गुरुए बळजन्ज मुनिने उपाद्वंज आप्यो. त्यारे ते मुनिए कहुं के “ हे गुरु ! थयुं न थयुं थवानु नथी. हवे हुं शुं करुं ? आप आङ्गा आपो. ” गुरु वोक्त्या के “ जीवरक्हाने माटे अजापाळ ( गोवाळ ) हुं स्वस्त्रप धारण करीने तथा साधुवेषने गुप करीने वे वामा जिच जिच करी एकमां बकरीओ अने एकमां बकरीओ राखवा. तेमनी संततिनी दृच्छि न थवा देवा माटे बकरा तथा बकरीनो मेलाप थवा देवो नहीं. तेच्योने ज़क्षण पण अचित आप्युं. आ प्रमाणे ते सर्व जीवे त्यां सुधी यलथी तेमनुं रक्षण करुं. ” आ प्रमाणे ते बकरानी रक्षानो उपदेश करीने सूरिए अन्य स्थाने विहार कयों.

पड़ी बळजन्ज मुनि गुरुमद्वाराजनी आङ्गानो स्वीकार करीने कोइ गिरिनी

गुफामां रही अव्यक्त वेषे बकरांना टोळाने औपंथी (सुकुं धास) चराववा लाग्या, अने तेनी दृष्टीओवेहोम करवा लाग्या. त्यां अतुक्रमे तेणे घणी विद्याओ सिद्ध करी.

एकदा रैवतगिरिनुं तीर्थ वौद्ध लोकोए दवाव्युं, अने 'रायखेगार राजाने तथा तेनी राणीने तेओए पोताना उपासक वौद्धधर्मां कर्या. तेथी एवुं थेयुं के खेतांवरोनो ते तीर्थमां प्रवेश पण वंथ ययो. एकदा त्यां खेतांवरना चोराशी संघो एकठा यया. तेमणे दर्शन करवा जवानी मांगणी करी, ते वरते राजाए आळा करी के "वौद्ध धर्मनो अंगीकार करीनेपडी देवने वंदन करवा जाओ." ते सांजळीने सर्वे अत्यंत खेद पाम्या. पडी कोइ कन्याना देहमां अंवा देवीने उतारीने तेने खेतांवरोए कहुं के "हे देवी! संघना विघ्नतुं निवारण करवामां सहायतूत थाओ." देवीए कहुं के "वौद्धना व्यंतरोए तीर्थ रुद्ध्युं छे, तेथी वीजा सहायकारक विना एकदी मारी जक्की तेनी सामे चाढे तेप नयी. ज्ञासननो उद्योत करवामां सूर्य समान अने जीवन पर्यंत तपमां आसक्त एवा थी यशोनन्द स्वामी तो स्वर्गे गया डे; परंतु एक वल्लभ मुनि अमुक स्थाने वीराजे डे, ते मुनिने जो तमे द्वावो तो तीर्थ पालुं वळे." ते सांभळीने संघपतिओए ते मुनिने वोलाववा माटे एक सांदणी मोकळी, तेना पर वेसीने केटव्याक माणसो वल्लभ मुनिवाळा वनमां गया. त्यां एक माणस वकरां चारतो हृतो, तेने तेओए पुञ्चुं के "अर्हो वल्लभ मुनि क्यां रहे डे?" ते सांजळीने अनापादननो वेप धारण करनार ते वल्लभ मुनिज वोद्या के "अमुक गुफामां जाओ, त्यां ते वेता छे." एम कहीने ते माणसो ते स्थाने पहँच्या पहेडां वल्लभ मुनि त्यां जइने सावुवेषे वेता. पडी ते ऊंट पर वेसीने आवेदां थावकोए त्यां आवीने तेपने संघनी कहेवरावेली विझसि कही संजलावी. ते सांजळीने वल्लभ मुनि वोद्या के "तमे त्यां जाओ, हुं जळदीयी आतुं दुं." एम कहीने तेओने रजा आपी. पडी पोते आकाशमार्गे संघनी जक्की करवा त्यां गया, अने जीर्णदुर्ग (जुनागढ) ना राजा खेगार पासे जइने तेने कहुं के "हे राजा! संघनी यावामां अंतराय न कर. आ तीर्थ वौद्ध लोकेतुं नयी." राजा वोद्यो के "वौद्ध धर्म अंगीकार करे तोम देवने वंदन थवातुं डे, ते शिवाय थवातुं नयी." ते सांभळीने मुनिए राजाना जारीर उपर मंत्रेद्वा अकृत छांटवा विगेरधी तेने वेदना उत्पन्न

<sup>१</sup> आ रायखेगार हमण सिद्धराज जर्वीसहा वसतमा यह गया छे त न समजवा.

करी. पछी संघर्षां आवीते विद्यावक्षयी संघर्षी फरतो अग्निनो किल्जो अनेतेने फरती जळनी खाइ बनावीते अंदर सुखेयी रहा।

अर्धा असद्य व्याधिनी पीमाथी रुग्मान थयेद्वा राजाए संघर्षो संहार कर्वा माटे सैन्य सहित सेनापतिने मोकड्यो, ते सेनापति संधना प्रजाव पासे आव्यो, पण तेनी फरतो अग्निनो प्राकार तथा जळनी खाइ जोइने जय पाम्यो; एट्झे तेणे दूरथी मुनिने विनंति पूर्वक कहुं के “ हे मुनि ! राजाने कोपायमान न करो। ” ते सांजळीने पोतानो अतिशय ( शक्ति ) वताव्या माटे मुनिए ते सेनापति अथवा मंत्रीने कहुं के “ मारू वळ केटहुं छे ते जुओ। ” एम कहीने राता कणेरना वृक्षनी एक सोटी संहारनी रीते चोतरफे केरवी, एट्झे समीपे रहेद्वा सर्वे वृक्षोनां शिखरो पृथ्वीपर पक्षी गयां. ते जोइने मंत्रीए मुनिने कहुं के “ उंदर पात्र उपरनी ढांकणी पानी नांखवाने समर्थ होय छे, पण ते पाढी ढांकवाने समर्थ होतो नयी। ” ते सांजळीने वाळजळ मुनिए भेत कणेरना वृक्षनी सोटी लझ्ने तेने मृष्टिनी रीते केरवी, एटले ते वृक्षोनां शिखरो हत्ता तेवां पाढां जोकाइ गयां. ते जोइने चमल्कार पामेला मंत्रीए राजा पासे जळने राजाने मुनिनुं सामर्थ्य जणाव्युं, तेथी जय पामेलो राजा मुनि पासे आवी तेने वंदना करीने बोद्ध्यो के “ हे महाराजा ! मारो अपराध क्षमा करो, वाळक पितानी अवङ्गा करे त्रे, पण पिता तेनापर क्रोध करता नयी। ” मुनि बोद्ध्या के “ जो तुं जैनर्धमं अंगीकार करीजा तो तने आराम थवो। ” ते सांजळीने मुनिना वचनथी राजाए जैनर्धमं अंगीकार कर्यां. पछी श्रीसंघे मोटा उत्सवधी श्रीरूप गिरि तीर्थना अधिप श्रीनेमिनाथजीनी यात्रा करी।

“ यशोजळसुरि तथा वल्लजळ मुनि जैन शासनना प्रजावक थया. तेमने हुं जक्किगुण धारण करीते निरंतर वंदना करुं दुं अने तेमनी सुति करुं दुं। ”

१—२ आ संहोण ने दृष्ट्या बने प्रकारनी विदेष समजण युद्धमर्या मेल्यवा।

इत्यद्विनपरिमितोपदेशमासादवृत्तौ चतुर्विशतितमस्तंजस्य  
पद्मत्वार्थशदधिकविशततमः प्रवधः ॥ ३४६ ॥

सुखनवोधितुं स्वरूप.

द्वोन्निता वहुन्नितोग्नैः, पित्रादिन्निरन्तरम् ।

धर्मग्रासिं समीहन्ति, ते स्युः सुखभवोधिनः ॥ १ ॥

जावार्थ—“ पिता विग्रेष निरंतर घणा प्रकारना जोगथी द्वोन्न पमाड्या छतां पण जेओ धर्मनी प्राप्तिनेज इच्चे देव तेओ सुखनवोधि कहेवाय देवः ” आ श्लोकनो जावार्थ नीचे जणावेज्ञा दृष्टांतयी जाणवो.

### उ मुनिओनी कथा.

चित्र अने संभूति मुनिना जीव पूर्व जबे क्रितिप्रतिष्ठ नामना पुरमां वे गोप हता, ते परस्पर अति प्रीतिवाळा हता. अन्यदा ते बन्ने गोपो साधुना संगथी चारित्र लक्ष तेनुं प्रतिपादन करी देवता थया. त्यांथी चवीने पृथ्वीपुर नगरमां कोइ एक श्रेष्ठीना सहोदर पुत्रो थया. ते बन्नेने वीजा चार महार्घ्क श्रेष्ठीपुत्रो मित्र थया. ते उप मित्रोए चिरकाळ सुधी संसारना सुखनोग जोगवीने एकदा गुरु पासे धर्मोपदेश सांजली इन्द्रियोनुं दमन करी हर्षथी चारित्र ग्रहण कर्यु. पडी तेओ विविध प्रकारनां शास्त्रा जणीने देवट अनशन करी प्रथम स्वर्गमां नदिनी-गुद्ध नामना विमानमां चार पद्मोपमना आयुष्यवाळा देवो थया.

त्यांथी आयुष्य पूर्ण थतां वे गोपना जीवो विना धीजा चार जीवो प्रथम चव्या. तेमां एक कुरुदेशमां इषुकारपुरनो राजा इषुकार नामे थयो, वीजो देव ते राजानी राणी थयो, वीजो तेज राजानो भृगु नामनो पुरोहित थयो अने चोथो ते भृगु पुरोहितनी यशा नामे पल्ली थयो. हवे ते पुरोहित शृद उमरनो थवा आव्यो; तोपण तेने कांइ संतति थइ नहीं. त्यारे ते पुत्रनी चिंताथी मनमां अल्खंत आकुळव्याकुळ थवा द्वागयो.

अन्यदा पेज्ञा वे गोप देवो अवधिज्ञानथी ‘अमे भृगु पुरोहितपुत्रो थइयुं’ एम जाणीने साधुना बेपे भृगुने धेर आव्या. तमने जोइने हर्षथो भृगु तंया

तेनी ही तेमने नम्या. पड़ी तेमना उपदेशाधि श्रावकर्थम् पामीने जूगुए पृच्छु के “ हे पूज्य ! मारे पुत्र धरो के नहीं ? ” मुनि बोध्या के “ तमारे वे पुत्रो थये, पण ते बाध्यावस्थामांज दीक्षा ग्रहण करशे, ते बखते तमारे तेने अंतराय करवो नहीं. ” ते सांजलीने दंपतीए तेमनुं वचन अंगीकार कर्युं, देवो स्वस्थाने गया.

अन्यदा ते बन्ने देवो स्वर्गधी चवीने यशानी कुक्षिपां अवतर्या. त्यारे भूगुण विचार्यु के “ मारा पुत्रो जन्मथीज कोइ पण साधुने जुए नहीं तो डीक. ” एम धारीने ते ज्ञार्या सहित कोइ नाना गाममां जड़ने रहो. पड़ी समय पूर्ण थये यशाए वे पुत्रोने जन्म आप्यो. ते पुत्रो वृच्छि पामतां विद्या ज्ञानवाने योग्य वयना थया. ते बखते तेना मातापिताए तेमने शीखबृंशु के “ हे पुत्रो ! जे मुनिओ माये मुरुन करेहा, हाथमां दंम धारण करनारा अने नीची दृष्टि रखीने दंनथी वग़ज्जानी जेम चाक्खनारा होय छे तेओ वाल्कोने पकर्नीने मारी नांखे डे अने राक्षसीनी जेम तेमनुं मांस खाय डे, माटे तमारे ते साधुओनी पासे जवुं नहीं. तेओ प्रथम विश्वास उत्पन्न करीन पड़ी मारी नांखे डे. ” आ प्रमाणे सांजलीने ते वाल्को साधुने जोवा पण इच्छता नहीं.

अन्यदा ते बन्ने ज्ञाइओ स्वेच्छाए कीमा करता गाम बहार गया हत्ता; तेवार्मा दैवयोगे गाममांथी बहार नीकलीने तेमनी सन्मुख आवता मुनिओने जो-इने ते बन्ने ज्ञाइओ त्रास पामी बन तरफ नाभा. मार्गमां एक मोटो बट्टक्क आप्यो, तेनापर ते बन्ने चम्पी गया. साधुओ पण तेज बट्टक्कनी नीचे आव्या अने पृ-थ्वी प्रमार्जने जयणार्थी जीवोने दूर करी गाममांथी पात्रमां आणेलुं जोजन खावा बेता. ते जोजनमांथी एक दाणो पण पृथ्वीपर पकवा दीपो नहीं, तेमन जमतां वचकारानो शब्द पण कर्यो नहीं. ए प्रमाणे ते साधुओनुं चाक्खरुं, बोझरुं, खावुं तया जोदुं चिंगेर समय चैष्टन जीवरकार्पूक जोइने बट उपर रहेहा ते बन्ने ज्ञाइओए विचार कर्यो के “ आ मुनिओ तो अब खाय छे, मांस खाता नथी, माटे आपणा मातापिताए आपणने खोया समजाव्या छे, अने तेथी आपणे अत्यार सुधी खोटी ज्ञातिपां रदा डीए; परंतु आवा साधुओ आपणे पूर्वे कोइ पण स्थाने जोपा डे खरा. ” एम ध्यान करतां बन्नेने जातिस्मरण झान थयुं. तेथी पूर्वे ग्रहण करेहा चास्त्रिनुं स्मरण करीने प्रतिवेद पामेहा ते बने विचार करता लाग्या के “ अहो ! मातापिताए मोहने वृश यज्ञे आपणने मृपावाणीथी छेतर्या डे. ”

एम विचारीने बन्दे ज्ञान्योग वट उपरथी नीचे उतरी मुनिओने वंदन कर्युं, तेमनी स्तुति करी. पर्वी पोताने घेर आवी पिताने कहुं के—

असासयं दहुभिमं विहारं, वहु अंतरायं न हि दीहमाजं ।

तम्हा गिहंमि न रहं लज्जामो, आमंतयामो चरिसामु मोणं ॥१॥

**ज्ञानार्थ—**“ आ प्रत्यक्ष विहार एठ्ले मनुष्यजननी स्थिति अशाख्यत ए-  
ट्ट्वे अनित्य-क्षणज्ञंगुर जोऽने तथा तेमां रोगादिक घणां विज्ञो अने अव्य  
आयुष्य (क्रोड पूर्वानुं नहीं) जोऽने अमे गृहस्थाथमां किंचित् पण प्रीति पामता  
नयी, माटे अमे मौनवत एट्ट्वे चास्त्र ग्रहण करवा तपारी रजा मागीए डीए.”

ते सांजळीने तेना पिता बोद्धा के “ हे पुत्रो ! तमे वेदनुं वचन जाणता  
नयी. वेदमां कहुं छे के ‘ अनपत्यस्य द्वोको नास्ति ’ पुत्ररहित मनुष्यनी गति  
नयी; तथा ‘ पुत्रेण जायते द्वोकः ’ पुत्रयी द्वोक उत्पन्न थाय डे. ए प्रमाणे वेदमां  
कहुं डे. वक्ती ‘ अथ पुत्रस्य पुत्रेण स्वर्गद्वोकेमहीयते ’ पुत्रनो पण पुत्र होय तो तेथी  
ते स्वर्गद्वोकमां पूजाय डे, एम पण कहुं डे. ते माटे तमे वेदनो अन्यास करीने,  
ब्राह्मणोने संतोष पमाहीने, पुत्रोने घेर मूकीने तथा श्रीओना विज्ञास, जोगवीने  
पर्वी दीक्षा ग्रहण करजो.” आ प्रमाणे सांभळीने बन्दे पुत्रो बोद्धा के “ हे पिता !  
वेद भणवाथी ते वेद शरण के रक्षण करी शकता नयी; केमके तेने नृणां  
मात्रथी ते कांड झुर्गतिमां पमतानुं रक्षण करी शकता नयी. स्मृतिमां कहुं छे के—

अकारणमधीयानो, ब्राह्मणस्तु युधिष्ठिर ।

दुःकुवनाप्यधीयन्ते, शीक्षं तु मम रोचते ॥ १ ॥

**ज्ञानार्थ—**“ हे युधिष्ठिर ! ‘ वेद जप्तो माटे ते ब्राह्मण डे, ’ एम वेदा-  
ध्ययन कांड ब्राह्मणपणानुं कारण नयी. केमके वेद तो नीच कुल्याळा पण जणे  
डे, परंतु हुं तो शीक्षनेन पसंद करु छुं. एट्ट्वे के जे सदाचरणी छे तेन ब्राह्मण  
डे. ” वक्ती—

शिल्पमध्ययनं नाम, वत्तं ब्राह्मणब्रह्मणम् ।

वत्तस्थं ब्राह्मणं प्राहुर्नेतरान् वेदजीवकान् ॥ २ ॥

१ श्री उत्तरार्थ्यन सुदूरना २०२ अथवनमां आ गाथा छे.

**ज्ञावार्थ—**“ भण्डुं, ते तो एक जातनी शिष्यकला डे पण आधाणतुं क्ष-  
क्षण तो सारां आचरण डे, माटे सदाचरणमां रहेक्षा होय तेज वाक्षण कहेवाय  
डे; वीजा वेदव्यी अग्नीविकाना करनारा ते कांइ वाक्षण कहेवाता नथी। ”

बळी हे पिला ! आपे विमोने संतोष पमामवातुं जे कँयुं ते तो नरकमां  
नारखवानोज हेतु डे, कारणके तेओ कुपार्गनी प्रश्नणा करे छे, अने पशुवधादिमां  
प्रवर्ते डे, तेपन पुत्रादिक पण नरकमां पमता जीवोने शरण स्वप थता नम्ही. वेद  
जाणनार पण कहे डे के—

यदि पुत्राङ्गवेत्स्वगों, दानधर्मो न विद्यते ।

मुपितस्तत्र द्वोकोऽयं, दानधर्मो निरर्थकः ॥ १ ॥

**ज्ञावार्थ—**“ जो कदाच पुत्रव्यी स्वर्ग मळतुं होय अने दानधर्मनी जहर  
न होय, तो पठी सर्व जगत डेतरायुं डे अने दानधर्म निरर्थक जणाय डे। ” अ-  
र्थात् दानधर्मतुं जात्खर्मा थवण्य करीने तेमां प्रवर्तता द्वोको छेतराया डे एम जणा-  
य डे, पण खरी रीते तेम नथी. दानादि धर्मज स्वर्गने आपनार डे; पुत्रपी स्वर्ग  
मळतुं नथी. जुओ—

वहुपुत्रा छुली गोधा, ताम्रचूमस्तथैव च ।

तेपां च प्रथमं स्वर्गः, पश्चाद्द्वोको गमिष्यति ॥ २ ॥

**ज्ञावार्थ—**“ जो पुत्रव्यीज स्वर्गनी भासि थती होय तो गरोलीने, गोधाने  
तथा कूकमा विगोरेने घणा पुत्रो होय डे; तेथी प्रथम तेओ स्वर्गं जशे अने पठी  
द्वोको जशे. ” परंतु ए बात असत्य डे.

बळी तेपे हीविज्ञासतुं मुख जोगवातुं कँयुं पण ते तो क्षणजनंगुर डे. ते  
विपे श्री उचराध्ययनना दूजना चौदमा अध्ययनमां परमात्माए कँयुं डे के—

खण्मित्तसुखा चहुकाद्भुखा, पगामछुखा अनिगामसुखा ।

संसारसुखस्स विवर्खभूया, खाणी अणत्याण उ कामज्ञोगा ॥ १ ॥

**ज्ञावार्थ—**“ स्त्रीना कामभोगतुं मुख एक क्षण मात्रहुं डे अने तेमां घणा  
काळहुं छुख रहेहुं डे. बळी तेमां छुख घणुं डे अने मुख अल्प डे. संसारवी

मुक्त थवानी इच्छावालानो ते शशुभ्रत डे तथा अर्नथनी खाणरूप डे. ”

“वळी हे पिता! निरंतर संसारनां कार्यो कर्या करीए, तोपण जांदगी पर्यंत तेनी समाप्ति थती नयी, माटे धर्मां प्रमाद करवो ए केम योग्य कहेवाय? ने दिवस गया ते फरीने आवता नयी, तेथी धर्म नहीं करनारना दिवसो निष्फल जाय डे. वळी अर्धर्मतुं मूळ कारण गृहस्थाश्रम डे, माटे तेनो त्याग करवो तेज कव्याणकारी डे. ”

आ प्रमाणेनां पुत्रोनां वचनथी प्रतिवोध प्राप्तीने भृगु पुरोहित बोद्ध्यो के “ हे पुत्रो! तमे कद्युं ते सत्य डे, परंतु हात्तमां आपणे गृहस्थाश्रममां रहीने तमे अने अर्मे सर्वं साये देशविरति ग्रहण करीए; पछी योवनावस्था व्यतिक्रमे बृद्धावस्थामां आपणे सर्वं चास्त्रिं ग्रहण करणुं. ” पुत्रो बोद्ध्या के “ हे पिता! जेने मृत्युनी साये मित्राइ होय, अथवा जे मृत्युना पंजामांथी नासी शके तेम होय अथवा जे एम जाणे के हुं मरवानो नयी तेने तेम करवुं योग्य छे; पण तेवुं तो कांड पण नयी, तेथी तेवुं धारनारने मूर्ख जाणवो, केमके मृत्युने नहीं आववानो कोइ पण वरत नयी, ते तो तेने गमे त्यारे आवे डे. माटे आपणे आजेज धर्मने ढंगीकार करीए, विषयादिकनां सुख तो आपणे अनन्तीवार पाम्या डीए. ” इत्यादि पुत्रोनां वचन सांजळीने वतनी इच्छावालो थयेद्वा० भृगु पोतानी त्वीने धर्मां विघ्न करनार जाणीने तेना प्रत्ये बोद्ध्यो के “ हे वसिष्ठगोव्रमां उत्पन्न थयेद्वी त्वी! आ पुत्रो विना पारे गृहस्थाश्रममां रहेवुं योग्य नयी, जेम शाखा विनानो दृक् अने भूत्य विनानो राजा शोजतो नयी, तेम हुं पण पुत्ररहित शोजतो नयी; माटे हुं तेमनी साये दीक्षा लेवा इच्छुं दुं. ” ते सांजळीने यशा बोद्धी के “ हे स्वामी! आ प्रत्यक्ष मळेद्वा० कामज्ञोगो तजवा योग्य नयी, दीक्षा ग्रहण करवी ते वीजा ज्ञवामां जोग मेल्ववानी इच्छाथी डे, ते जोग तो आ जन्ममांज प्राप्त यवा डे; तो पडी दीक्षा शापाट ग्रहण करवी? ” त्यारे नूगु बोद्ध्यो के “ हे प्रिया! हुं असंयमरूप जीवितने माटे एट्डे के परक्कोकना सुखने माटे दीक्षा ग्रहण करतो नयी, पण संयम विनानुं जीवित निष्फल डे; माटेज हुं जोगाने तजुं दुं. वळी जीवित, मरण, लाज, अक्षाज्ज, सुख अने कुःख विग्रेमां समपणानी जावना करीने मुक्ति मेल्ववा माटेज दीक्षा लेवी योग्य डे. ” आ प्रमाणेना तेना वाक्यथी प्रतिवोध पामेद्वी ते बोद्धी के “ आपणा पुत्रोने धन्य डे के जेओ आपणी पहेद्वांज व्रत

ब्रेवानी इच्छावाला थया. तेओरोनी स्थिरताज आपणने पण धर्म आपनार थइ डे. ” आ प्रमाणे सर्व प्रतिवोध पामवाथी चार जणाए साथे दीक्षा ग्रहण करी.

आ वृचांत सांजळीने इषुकार राजा भृगुए त्याग करेद्वा तेना यृहादिक-  
तुं ग्रहण कर्त्वा माटे तेने घेर आव्यो. ते बखते तेनी कमळा नामनी राणी राजाने  
वारंवार कहेद्वा द्वागी के “ व्राह्मणे वमन करेद्वा यृहना सारने तपे खावा इच्छो  
डो; तेथी तपे वमनतुं नक्षण करनारा थाव्यो डो, ते तमारा जेवाने उचित नथी.  
वळी तमारी आवी उल्कट इच्छा पूर्ण धवा माटे समग्र जगतनुं धन तमारे आधीन  
होय तोपण ते पूर्ण थाय तेम नथी, तेमन ते जरापरणना डुःखने अटकाववा  
समर्थ नथी. केमके आ जगतमां जन्म धारण करनारने अचङ्ग भरण प्राप्त थायडे.”  
कण्ठे डे के—

कश्चित्सखे त्वया हृष्टः, श्रुतः संज्ञावितोऽयवा ।

किंतौ वा यदि वा स्वर्गं, यो जातो न मरिष्यति ॥१॥

जावार्थ—“ हे मित्र ! आ पृथ्वी उपर अथवा स्वर्गमां तें एवो कोइ  
प्राणी जोयो डे, सांजळ्यो डे, अथवा संज्ञावना पण करी डे के जे जन्मेद्वारा  
मृत्यु न पामे ? अर्थात् एवो कोइज नथी. ”

माटे हे स्वामी ! धर्म विना वीजुं कोइ रक्षण करनार नथी. आ चोए  
आ सर्व अनित्य जाणीनेज तेने तज्जुं डे, अने हुं पण ते जाणीने परिह्रहारं-  
नथी निवृत्ति पामी हुं, माटे हे नाथ ! हुं व्रत ग्रहण करीश. ” आ प्रमाणेनी रा-  
णीनी वाणीथी तेज बखते प्रतिवोध पामेद्वारो राजा राणी सहित डुस्त्यन काम-  
जोगने तथा भोटा राज्यने तमीने निंग्रेय घयो.

आ प्रमाणे उपर कहेद्वा डए जीवो कहेद्वा क्रम प्रमाणे प्रतिवोध पाम्या,  
अने सर्व भोहनो त्याग कर्यो. तेओरोना चिच्च पूर्वे जन्ममां करेद्वा धर्मना अन्न्यासनी  
जावनाथी जावित थयेद्वां हतां; तेथी अद्वयकाळमांज तेओए केवळज्ञान पापाने  
अजरापरपदने प्राप्त कर्तुं.

“ पूर्व जवे अरिहंतना शासनमां ते ड जीवोनां चिच्च धर्मथी वासित

यथा हतां; तेथी तेओने जगदीथी आत्मतत्त्वनी प्राप्ति थइ. आवा प्राणीओ सुवर्जनोधि कहेवाय त्रे. ”

३४७  
स्त्यद्विनपरिमितोपदेशप्रासादवृत्तौ चतुर्विशतिप्रस्तंजस्य  
सप्तचत्वारिंशदधिकविशततमः प्रवंधः ॥ ३४७ ॥

## व्याख्यान ३४८ मुं.

प्रत्येकबुद्ध विषे.

जे चार प्रत्येकबुद्ध एक साथेज सर्वमांथी चब्या, साथेज दीक्षा ग्रहण करी, साथेज केवलज्ञान पाम्या अने साथेज मोक्ष गया तेमनुं स्वरूप अहीं कहीए डीए—

तत्रादौ वृपभं वीढ्य, प्रतिबुद्धस्य धीनिधेः ।

करकंमुमहीजानेश्वरितं वच्चिम तथथा ॥ १ ॥

नावार्थ—“ ते चार प्रत्येक बुद्धोमां प्रथम वृपनने जोइने प्रतिवोध पामेजा बुच्छिना नंजाररूप करकंरु राजानुं चरित्र कहीए डीए. ” ते आ प्रमाणे—

करकंरु राजानी कथा.

चंपापुरीमां दधिवाहन नामे राजा हतो, तेने पञ्चावती नामे राणी हती. ते एकदा गर्जिए थइ, त्यारे गर्जना प्रजावयी तेने एवो दोहद थयो के हुं राजानो वेप धरण करीने, राजाए जेने माथे ब्रह्म धारण कर्युं ते एवी. पट्टहस्तीपर वेसीने उद्यानादिकमां विचहं, ते दोहद पूर्ण नहीं थवायी कुण्ठपक्षन्य चंद्रनी जेम ते प्रतिदिन कुश पवा द्वागी. राजाए तेनुं कारण पूर्ण, त्यारे राणीए दोहदनी बात कही. तेथी राजाए तेनो दोहद पूर्ण करवा माटे तेन। साथेज हाथीपर वेसी। राणीने माथे ब्रह्म धारण कर्युं, अने तेबी रीते राजा बनमां गयो. ते ब्रह्मते अकस्मात् जळटृष्टिथइ. ते

वृष्टिप्रथम होवाथी पृथ्वीमांथी गन्धं प्रगट थयो, ते गन्ध सुंघवाथी मदोन्मत्त थयेद्वा हाथी बन तरफ दोङ्यो. राजाए तेने अंकुश विग्रेथी घणो निवार्यो, पण ते अ-ख्यो नहीं; तेथी कायर थझ्ने राजाए राणीने कस्यु के “हे प्रिया ! दूर पेझो कड-धृक् देखाय डे, तेनी नीचे थझ्ने आ हाथी नीकल्द्वा, ते बखते तुं ते बट्ठी शाखा मजबूत रीते पकडी लोजे, हुं पण पकडी लाइशा. पडी हाथीने जवा दझ्ने आपणे नगर तरफ जड्हायुं.” पछी व्यारे ते हाथी बट्ठी नीचे थझ्ने नीकल्द्वयो, त्यारे राजाए तो तत्काळ तेनी शाखा पकडी लीधी, पण राणी ते शाखा पकडी शकी नहीं; तेथी प्रियानो वियोग थवाथी राजा विज्ञाप करतो पाडो वळीने ते हाथीनांज पागद्वाने अनुसारे चंपानगरीमां गंयो. अर्हीं हाथी चालतां चालतां अति दृष्टातुर थयो; तेथी ते मोटा अरण्यमां एक तबाव आव्युं तेमां पेत्रो; ते अवसर जाणीने राणी तेनापरथी उतरी तबावना पाणीने तरीने कांचे आवी. पडी तेणे विचार्यु के ‘पूर्वना अशुञ्ज कर्मने लीधि मारे अकस्मात् आपनि आवी पमी डे; परंतु हवे रुद्धन करवाथी तो उल्लयो सात कर्मनो दृढ-वंथ थझो, माटे हमणां तो आ अरण्यनुं उद्भवन करूं त्यां सुधीने माटे सागारी अनशनन अंगीकार करूं’

पडी ए प्रमाणे अन्निग्रह लाइने ते कोइक दिशामां चाल्वी. मार्गमां एक तापसे तेने दीडी. एट्ले पूर्वयुं के “अरे तुं बनेद्वी डे के किनरी डे ?” त्यारे ते बोड्वी के “हुं जैनधर्मां चेटकराजानी पुत्री मनुप्यणी हुं.” एम कहीने पोतानुं सर्व वृत्तांत तेणे ते तापसने कही संज्ञाव्युं. ते सांभळीने तापस वोद्यो के “हुं तारा पितानो जाइ हुं, माटे तुं जय पामीश नहीं.” एम कहीने ते तापसे तेने आध्यासन आपी बन फलादिकवर्मे तेनो सत्कार कर्यो. पडी तेने नजीकना कोइ नगरमां ते तापसे पहांचावी. ते राणी कामज्ञांगद्यी निर्विद पार्मीने साध्वीओनी पासे जड तेमने वांदीने वेत्री. त्यारे साध्वीए तेने पूर्वयुं के “हे श्राविका ! तुं क्यांथी आवी डे ?” त्यारे राणीए दीक्षा देवानी इच्छाथी एक गर्ज विना वीजी सर्व वात कही संभळावी. ते सांचलीने साध्वी वोद्या के “हे रत्नम आशयवाळी ! विशुद्ध जेवा चपड सांसारिक मुखनो आशा छोडने चास्त्रिं ग्रहण कर.” ते सांचलीने विरक्त थयेज्जी राणीए दीक्षा ग्रहण करी. पडी अनुक्रमे तेना गर्जनी उद्दि जोहने साध्वीओए पूर्वयुं, त्यारे तेणे सत्य वात कही. पडी साध्वी-नगोप तेने सार्वा, मर्चसमय पूर्ण थतां तेणे शय्यातरने घेर एक पुन्ने

जन्म आप्यो. पड़ी ते पुत्रने तेना पिताना नामवाळी मुद्रिका पहेरावी रत्न कंवद्व-  
मां वीर्यीने तेणे स्मशानमां मूकी दीधो, अने तेने कोण बइ जाय भे ते जो-  
वा माटे संताइने उन्ही रही. तेवामां ते स्मशाननो धणी त्यां आव्यो. तेणे ते पुत्रने  
जोइ उपासी बाइने पोतानी स्त्रीने आप्यो. ते चांमाळनी पाडल जइ तेनुं घर जो-  
इने राणी उपाश्रये पाढी आवी. पड़ी हुंमेशां राणी तेने घेर जइने मोदक विगेरे  
आपी मोहवी तेने बाम बमाववा द्वागी. ते पुत्रना शरीरमां जन्मथीज कंमु एटद्वे  
खरजनो व्याधि थयो. एकदा ते पुत्र वीजा वाळको साये क्रीमा करतां बोद्यो के  
“हुं तमारो राजा लुं, माटे तमे मने कर आपो.” वाळको बोद्या के “जुं आपीए?”  
तेणे कहुं के “तमे तमारा करथी (हाथयी) मने खुब खजवाळो, तेथी हुं प्रसन्न यझा.”  
पड़ी वाळको तेने खजवाळता सता करकंमुना नामयी बोद्याववा द्वाग्या. अनु-  
क्रमे ते पुत्र युवावस्था पाम्यो, त्यारे ते स्मशाननी रक्षा करवा द्वाग्यो.

एकदा वे मुनि विहार करता त्यां आव्या. तेमां एक मुनि दक्षण  
शास्त्रना जाण हुता तेणे वांसनी जाळमां एक दंम जोइने वीजा मुनिने कहुं के  
“आ दंम हजु चार आंगल मोयो थाय त्यां सुधी राह जोया पड़ी तेने जे माणस  
ग्रहण करे ते राजा थाय.” ते वाक्य एक करकंमुए अने एक ब्राह्मणे सांच्चयुं.  
पड़ी ते दंड ज्यारे चार आंगल वध्यो त्यारे ते ब्राह्मणे तेने खोदाने काढ्यो. ते  
जोइने करकंमुए तेनी साये मोटो कनीओ करीने ते दंम बइ दीधो. द्वोकोए ह-  
सीने तेने पूछ्युं के “तुं आ दंमने जुं करीज ?” त्यारे ते बोद्यो के “आना  
प्रजापथी हुं राजा यझा.” द्वोकोए कहुं के “तुं राजा थाय त्यारे आ ब्राह्म-  
णने एक गाम आपजे.” ते वचन अंगीकार करीने करकंमु पोताने घेर गयो.  
पेढ़ा ब्राह्मणे विचार्युं के “करकंमुने हणीने पण दंम बउं.” तेनो आवो अन्न-  
भाय जाणीने जय पामेज्जो करकंमु त्यांथी नासीने कांचनपुरे गयो. त्यां थाकी ज-  
वाथी गाम वहार उथानमां ते सुतो. तेज दिवसे ते गामनो राजा पुत्र विना मरी  
जवाधी प्रथानोए पांच दिव्य प्रगट कर्या. ते दिव्योथी करकंमुने राज्य मच्युं;  
एटद्वे ते हस्तीपर आरुढ थझने नगरप्रवेश करतो हतो, तेवामां पेढ़ा ब्राह्म-  
णे आवीने तेने अटकाव्यो अने बोद्यो के “अरे चांफळ ! तने राज्य  
घटे नहीं.” ते सांचलीने करकंमुए पेढ़ो दंम हायमां बाइने जमाल्यो, एटद्वे जय  
पामीने ते ब्राह्मण नासी गयो. पड़ी प्रथानोए तेने राज्यान्निपेक कर्यों. पड़ी क-

रक्खु राजाए सर्वे चांडालोने ब्राह्मण कर्या, करुं छे के—

**दधिवाहनपुत्रेण, राजा च करकंसुना ।**

**वाटधानकवास्तव्याथांमाला ब्राह्मणीकृताः ॥ १ ॥**

जापार्थ—“दधिवाहन राजाना पुत्र करकंसु राजाए वाटधानकना रहीँ  
चांडालोने ब्राह्मण कर्या.”

एकदा पेढा ब्राह्मण आवीने करकंसुने करुं के “हे राजा! तपे संन  
पूर्वे एक गाम आपचानु बचन आपुं डे ते गाम आपो.” राजाए करुं के  
“यांदा, तने करुं गाम आपुं?” त्यारे ते वोट्यो के “मने चंपानगरीनी ननी-  
कमां एक गाम आपो.” ते सांजलीने करकंसु राजाए चंपापुरीना राजा दक्षि-  
वाहन उपर द्वेष द्वयी आप्यो के “आ ब्राह्मणने एक गाम आपनो.” ते  
ब्राह्मणे चंपापुरी जड्ने दधिवाहन राजाने ते कागळ आप्यो. ते यांचीने क्रोधयी  
रक्त नेत्रवालो थयेद्वा दधिवाहन राजा वोट्यो के “अरे ब्राह्मण! चांडाला  
हाथे द्वयेद्वा कागळनो स्वर्ण करवायी हुं मझीन थयो हुं; माटे तुं सत्तर चा-  
द्यो जा, नहीं तो तुं पण हमणां मारा कोपाश्रियां पतंगरूप थइ जड्न.” ते  
सांजलीने ब्राह्मणे त्यांथी इीघ्रपणे करकंसु पासे जड्ने ते वृचांत करुं; तेवी क्रोध  
पामेद्वा करकंसु ए पोट्टे सेन्य द्वज्ञे चंपापुरी घेरी द्वीधी. वने राजाना संन्योने पर-  
स्पर महा युद्ध थयुं. ते वात दधिवाहननी राणी जे साध्वी थयेद्वा हता तेमणे  
सांजली, तेवी ते प्रथम करकंसु पासे आव्या. एट्ड्वे करकंसु उठीने सामो जड्न  
तेमणे नम्यो. एती साध्वीए तेने एकांतपां जड्न जड्ने पूर्वीनी सर्वे हकीकत कहीने  
करुं के “हे पुत्र! पोताना पिता साथे युद्ध करुं ते योग्य नयी. कदाच तने आ  
वातनो विभास न आवतो होय तो जन्मवसते तारा हाथपां मे पहेरावेद्वा! तारा  
पिताना नामवाळी मुडिका जो.” करकंसु ते जोड्ने शंकारहित थयो सतो वोट्यो  
के “हे माता! तपे मारा पितानी पासे जड्न आ वातनो योध करो.” एट्ड्वे ते  
साध्वी त्यांथी दधिवाहन पासे गया, अने तेने पण पूर्वुं सर्वे वृचांत करुं. राजाए  
पूर्वुं के “ते गर्ज क्यां गयो?” साध्वी योद्या के “हे राजा! जेणे तपार्ह  
नगर धेर्युं डे तेज ते गर्ज छे.” इत्यादि सर्वे वृचांत सांजलीने आनंद पामेद्वो  
राजा पुत्रने मळवा उत्कंचित थइ तेनां साध्ये चाढ्यो. तेमणे आवता जोइ करकंसु

पण पगे चाहतो सन्मुख गयो, अने पिताना चरणमां पड्यो. पिताए तेने वे हाथे पकड़ी दृश्ने आक्रिंगन कर्यु. पत्री अनुश्रम्य दधिवाहन राजाए तेने राज्य सोंपीने दीक्षा ग्रहण करी. करकंकु राजा न्यायथी वन्ने राज्य चक्रवाचा द्वाग्यो.

एकदा करकंकु राजा गोकुल (गायेनो वाडो) जोवा गयो. त्यां तेणे रूपा जेवो अति श्वेत एक वाडमो ज्ञायो. तेने जोतांज तेनापर अति भेम आवासी तेमणे गायो दोनारने कहुं के “आ वाडरमाने मात्र तेनी मानुंज दूध पावुं एम नहीं, पण वीजी गायेलुं दूध पण तेने हमेशां पावुं.” ते सांभळीने ते गोपालक पण ते प्रमाणे करवा द्वाग्यो. एट्टो ते वाडमो चंद्रनी कांति साथे पण स्थर्धी करे तेवो अने अत्यंत पुष्ट थयो. राजा तेने वीजा दृपजो साथे युद्ध करावतो, पण कोइ सांढ तेने जीती शकतो नहीं. पत्री केव्वोक काळ व्यतीत थया पत्री एकदा राजा गोकुल जोवा गयो. त्यां नाना वाडरमाओ जेने द्वात प्रहार करे भे एवो एक दृद्ध दृपज जोइने राजाए गोपालने पूछ्युं के “पेद्वो महावीर्यवालो पुष्ट दृपज क्यां छे ?” गोपाले कहुं के “हे देव ! तेज आ दृपम छे, पण ते दृष्टावस्थायी व्याप थयेद्वा छे.” ते सांचलीने राजाए विचार्यु के “अहो ! सर्व पदार्थो अनित्य छे. प्रत्यंचाना टंकार शब्दयी पक्षीओनी जेम जेना जंजारवधी (धनुकवासी) वळवान दृपजो पण नासी जता हृता ते आजे नाना वाडरमाओनी द्वातोना प्रहारने सहन करे छे. जेनुं स्वस्त्रप जोइने चंद्रना दर्शननी पण इच्छा थती नहीं ते आजे तेनी सामे जोवाथी पुरीपनी जेम जुगुप्सा उत्पन्न करे भे; तेथी आ पराक्रम, आ वय, आ रूप, आ राज्य अने आ वैज्ञव विगेरे सर्व ध्वजाना छेनानी जेवां चंचल छे एम प्रत्यक्ष ज्ञास थाय भे; तेम भतां पण माणसो अङ्गानने द्वीधे ते वातने समजता नथी. माटे हुं तो आत्मतत्त्वने प्राप्त करनार स्वज्ञावधर्मानुयायी धर्मनुं सेवन करी जन्मतुं साफव्य करुं.” ए प्रमाणे विचार करीने पोतेज पोताना हाथवरू मस्तक परना केशानो द्वोच करीने देवताए आपेक्षा मुनिवेपने धारण करी आत्मधर्मपां रागी थयेद्वा ते प्रत्येक बुद्ध करकंकु मुनि पृथ्वी पर विहार करवा द्वाग्या.

इत्यद्विनपरिमितोपदेशपासाददृच्छा चतुर्विंशतितमस्तंजस्य

अष्टुचत्वारिंशदधिकविशततमः प्रवंधः ॥ ३४८ ॥

# व्याख्यान ३४९ मुं.

बीजा प्रत्येकबुद्धि विषे.

अथ प्रत्येकबुद्धस्य, बुद्धस्येन्द्रध्वजेक्षणात् ।

राङ्गो छिसुखसंक्षय, ज्ञातं वद्यामि तद्यथा ॥ २ ॥

नायार्थ—“ हवे इन्द्रध्वज जोवाधी बोध पामेद्वा ( बीजा ) प्रत्येकबुद्ध  
छिसुख नामना राजातुं चरित्र कहीए डीए 。”

## छिसुख राजानी कथा.

कांपिव्यपुरमां हरिवंशी यव नामे राजा राज्य करतो हतो. तेने गुणमादा  
नामनी राणी हती. एकदा सजामां वेदेद्वा राजाए देशांतरथी आवेद्वा दूतने पूँ  
छुं के “ हे दूत ! बीजा राज्यमां छे एवं मारा राज्यमां शुं नयी ? ” दूते कछुं के  
“ हे देव ! आपना राज्यमां एक चित्रसज्जा नयी. ” ते सांचलीने राजाए चित्र-  
कारोने तथा सुतारोने बोक्षावीने कछुं के “ मारे माट एक चित्रसज्जा ताकीदे तैयार  
करो. ” तेओए राजानी आङ्गाधी शुन्न समये सजातुं खातमुहूर्ची करीने पायो  
खोदवानो आरंज कर्या. खोदतां खोदतां पांचमे दिवसे पृथ्वीना तल्घांयी कांति-  
वके अत्यंत देदीप्यमान एक मुकुट प्रगट थयो. ते रत्नमय मुकुट जोइने हर्ष पामेद्वा  
राजाए सर्व कारीगरोने बस्त्रादिक्नी पहेरामणी करीने खुशी कर्या. अनुक्रमे का-  
सिगरोए सुरोजित पुत्रीओ विग्रेथी शोजायमान देवसभाना जेवी सजा तैयार  
करी. परी शुन्न दिवसे राजा ऐस्तो दिव्य मुकुट धारण करीने ते नवी सजामां  
वेठो ते बखते नवरत्नवाला हारना प्रजावयी जेम रावणना दश मस्तक देखाता  
हता, तेम ते मुकुटना प्रजावयी राजाना मुख वे देखावा लाग्या; तेथी होकमां ते  
राजातुं छिसुख एवं नाम प्रसिद्ध थयुं. ते राजाने अनुक्रमे सात पुत्रो थया, पण  
एके पुत्री थइ नहीं. तेथी कोइ यक्षनी आसाधना करीने तेणे एक पुत्री मासी. तेना  
प्रजावयी मदनमंजरी नामनी गुणवान अने रूपवान एक पुत्री थइ.

एकदा उज्जितीना राजाए दूतना मुखयी सांचब्युं के “ कांपिव्यपुरना

राजाने मुकुटना प्रजाधर्थी वे मुख थयो छे। ” ते सांचलीने लोन्धी चंदप्रद्योत् राजाए ते मुकुटने माटे एक चतुर दूतने तेनी पासे मोकध्यो, ते दूत छिमुख राजा पासे आवी तेने नमीने चोब्यो के “ तमारा मस्तकपर रहेद्वा मुकुटरत्नने अमारा राजा माटे सत्वर आपो, नहींतो युक्त करवाने माटे तैयार थाओ। ” ते सांचलीने छिमुख राजा चोल्यो के “ जो तारो राजा मने चार वस्तुओ आपे तो हुं आ मुकुटरत्न आपुं, ते चार वस्तु आ प्रमाणे अनलगिरि नामनो गन्धहस्ती, अथिनीह रथ, शिवा नामनी पद्मिनी रणी अने लोहजंघ नामनो दूत। ” ते सांचलीने दूते जड्ने चंदप्रद्योत् राजाने ते दृत्तांत कहुं, तेथी कोपाग्रिधी पञ्चलित थयेद्वा प्रद्योत् राजाए तरतज प्रयाणजेरी वगमावी, अने सैन्य सहित ते अवंति ( पांचाळ ) देश तरफ चाल्यो, तेना सैन्यमां वे द्वाख हाथीओ, पचास हजार अध्यो, वे हजार अध्ययो अने शत्रुने विपत्ति आपनारा सात करोड़ पत्तिओ ( पाषदळ ) हता, छिमुख राजा पण चरना मुखथी प्रद्योतने आवतो सांचली सैन्य सहित समुख चाल्यो।

वे सैन्य एकदा मळ्या एटले प्रद्योते पोताना सैन्यमां अति छुर्भेद गरुद-व्यूह रच्यो, अने छिमुखे पोताना सैन्यमां वार्चिद्व्यूह रच्यो, वन्ने सैन्य वचे महा युक्त थयुं; पण दिव्य मुकुटना प्रभावर्थी छिमुख राजा जीतायो नहीं, एटद्वे थांत थयेद्वो प्रद्योत् राजा नाउं, तेने छिमुखे सप्तद्वारी जेम पकड़ी ढीधो, अने क्रौंचवंधनथी वांधी पगमां दृढ़ वेदो नांखी केद कर्यो, कहुं डे के—

**महानपि जनो लोन्धात् कां कां आपदं नाश्नुते ।**

“ मोटा माणसो पण लोन्धने वश थवायी कइ कइ आपत्तिने पामता न-धी ? अर्थात् वधी आपत्तिओ पामे डे। ”

थोडा वरत पड़ी अनुक्रमे तेने वंयनमुक्त करीने राजाए मानथी पोताना अर्ध आसनपर वेसाड्यो, एकदा राजपुत्री मदनमंजरीने जोइने तेनापर गाढ अनुराग थवायी प्रद्योत् अत्यंत आकुलव्याकुल थयो, कामज्वरना दाहथी पुष्पशश्यामां पण ते किंचित् शांति पाम्यो नहीं, वर्ष जेवमी मोटी थइ पमेद्वी ते रात्रिने, महा कष्टे निर्गमन करीने प्रातःकाले ते राजसन्नामां आव्यो, तेने अति उद्धिश थयेद्वो जोइने छिमुख राजाए पूर्वुं के “ हे अवन्तीपति ! तमारा मनमां श्री चिंता पेरी

वे के जेथी हिमथी कमलिनीनी जेम तपाहुं मुख ग्वानि पामेलुं जणाय वे ? अंगुला जणाव्या शिवाय तेनो उपाय शी रीते घइ शकरो ? ” ते सांजड़ीने प्रयोग दीर्घ भाव ; कीने द्वजानो त्याग करी बोध्यो के “जो माहुं कुञ्जल इच्छता हो तो तपारी पूरीं आपो, नहीं तो हुं अश्रियां प्रयोग करीश.” ” ते सांजड़ीने पुत्रीने पांग रुं प्राप्ति घयेज्वी शानी मोटा उत्सवथी द्विमुखे पोनानी पुर्खी तेने परणाची, वडी घोत राजा पोताना जन्मनी सफळता मानी द्विमुखनी रजा झाइने हर्षयों पुरीए गयो.

एकदा इंजोत्सवनो दिवस आवायी द्विमुख राजाए पांरजनोने इच्छा स्थापन करवानी आळा करी; तेवी पांरजनोए इच्छावनना संन्देश उनो कीरीं ले भेत घजाओ, पुण्यावाओ अने पुनक्ल पुष्यरीओयी शणगायों, पड़ी बालिन नाद पूर्वक तेनी पुण्यकलादिकरणं पूजा करी. पड़ी केटझाएक तेनी ले शृत्य करवा लाग्या अने केटझाएक गीत गाया ज्ञाग्या, ए प्रमाणे सात दिन शुभी महोत्सव प्रवत्तयों, आउपे दिवसे पूर्णिमाने रोज राजाए पण मोटी समृद्धि त्यां आवीने तेनी पूजा करी. उत्सव पूर्ण थया पड़ी पांरजनो ते इच्छावनने शी जाववा माटे घरावेज्वा पोनानोताना बद्धादिक झइ गया, अने काढु मात्र शाकी रहेन ते संन्देश पानीने पृथ्वीपर नासी दीधो.

बीजे दिवसे विश्व अने पवयी दींपायेज्वो, अपवित्र स्थाने पकेज्जो ड्रे बाल्को जेनापर चमने कीदा करे वे एयो ते संन्देश वहार नीकलेज्वा राजाए जेन्दे ते जोइने वैराग्य पामेला राजाए विचार कर्यो के “ जे महाव्यज गङ्ग राहे से द्वोकोयी पूजातो हतो तेज महाव्यज आजे मोटी विमंवनाने पामे वे, माटे उन्होंनी शोज्ज्ञा सर्व क्षणजंगुर वे. करुं वे के—

आयाति याति च द्विष्टं, या संपत् ।  
पांसुद्वायामिव प्राङ्मास्तस्यां को ॥

जावार्य—“ जे संपत्ति नदीना पूनी ॥  
जबदी आवे वे अने जबदी जाय वे ते पां—  
काया पुरुषो ! कोण आसक्ति करे ? ”  
माटे हुं शायः विमंवनाचूत एवी

नारी समता रूप साम्राज्यसंपदानो आश्रय करुं, ” एम विचारी जेनो ममता रूपी अभिशांत थयो भे एवा ते छिमुख राजाए तेज खत्ते पेतेज केशनो द्वोच करीने देवदत्त मुनिवेषने धारण करी पृथ्वी पर विहार कर्यों।

श्रीउत्तराध्ययन सूत्रना नवमा अध्ययनमां श्री वीर स्वामीए कर्णु भे के-  
करकंरु कक्षिंगेसु, पांचालेसु डमुहो ।

नमिराया विदेहेसु, गंधारेसु च नगर्इ ॥ १ ॥

ज्ञायार्थ—“ कक्षिंग देशमां करकंरु राजा, पांचाल देशमां छिमुख राजा,  
विदेह देशमां नमि राजा अने गांधार देशमां नगति राजा थया भे। ”

आ चारे राजाओ पुणोचर विमानथी एक काळे चब्बा, एक काळे दीक्षा  
दीधी, अने एक काळे मोक्षपदने पाम्या भे।

आ चारे राजाओ मुनि थया पडी एकत्र मलतां तेमने परस्पर संबाद  
थयो हतो, ते हकीकत आ प्रमाणे भे—आ चारे मुनिओ विहार करतां करतां एकदा  
क्षितिप्रतिपुरुषां आव्या, त्यां गामनी वहार कोइ एक यद्दनुं चार घारवालुं चैत्य  
हतुं, तेमां पूर्वान्निमुखे ते व्यंतरनी प्रतिमा रहेद्वी हती, तेमां प्रथम पूर्वना घार-  
थी करकंरु मुनिए प्रवेश कर्यो, पडी दक्षिण तरफना घारथी छिमुख मुनिए प्रवे-  
श कर्यो, ते खत्ते यक्षे विचार्यु के “ हुं साहुथी पराड्मुखे केम रहुं ? ” एम  
धारीने तेणे दक्षिण तरफ वीजुं मुख कर्यु, पडी नमि मुनिए पश्चिमना द्वारथी प्रवे-  
श कर्यो, ल्यारे पण ते यक्ष वीजुं मुख करीने सन्मुख रहो, पडी उच्चरना घारथी  
नगति मुनिए प्रवेश कर्यो, त्यारे यक्षे ते तरफ चोयुं मुख कर्यु, आ प्रमाणे ते यक्ष  
मुनिनी जक्किथी चतुर्मुख थयो।

हवे करकंरु मुनिने ते द्वुखी खरज हजु सुधी पण देहमां हती, तेथी  
शरीरे खरज आववाथी तेणे खरज खण्वानुं अधिरुरण द्वान्ने खरज खणी, पडी तेने  
संतानता जेइने द्विमुख मुनि वोद्या के “ हे करकंरु मुनि ! तमे राज्यादिक  
सर्वनो त्याग कर्यो छे त्यारे आटझी आ खरज खण्वानी वस्तुनो संचय ज्ञामाटे करो  
गो ? ” त सांनळीने करकंरु मुनि तां कांइ वोद्या नहीं, पण नमि राजर्यिए द्वि-  
मुख मुनिने कर्णु के “ हे मुनि ! तमे राज्यादि सर्व कार्यनो त्याग करीने निश्चय  
थया छो, तोपण अन्य दोपने जोवा रूप कार्य तो हजु करो गो, ते हवे तमने

निःसंगने योग्य नवी। ” ते सांजलीने छुर्गतिरहित थयेझा नगति मुनिए नमि  
मुनिने कहुं के “ हे मुनि ! तमे एमने कहो छो, पण तमे ज्योर सर्वनो त्याग करीने  
मोक्षने माटेज उद्धमी थया डो, त्यारे शामाटे यथा अन्यनी निंदा करो डो ? ”  
पड़ी करकंरु मुनि सर्वने उद्देशीने बोह्या के मोक्षनी इच्छावाला मुनिओने  
अहितयी रोकनार साहु, निंदक शी रीते कहेवाय ? केमके—

या रोपात् परदोपोक्तिः , सा निन्दा खबु कथ्यते ।

सा तु कस्यापि नो कार्या, मोक्षमार्गं नुसारिन्निः ॥१॥

जावार्थ—“ क्रोधयी परनो दोप कहेवो ते निंदा कहेवाय डे. ते निंदा  
मोक्षमार्गने अनुसरनारा मुनिओए कोइनी पण कर्वी नहीं। ”

हितबुद्ध्या तु या शिक्षा, सा निन्दा नाज्ञिधीयते ।

अत एव च सान्यस्य, कुप्यतोऽपि प्रदीयते ॥ २ ॥

जावार्थ—“ हितबुद्ध्यी जे शिखामण आपवी ते निन्दा कहेवाती  
नवी, माटे तेवी शिक्षा सामो माणस कोप करे तोपण आपवी। ”

आगममां पण कहुं डे के—

सुसउ वा परो मा वा, विसं वा परिश्रित्तु ।

ज्ञासिश्ववा हिआ ज्ञासा, सपरक्षुणकारिया ॥ ३ ॥

जावार्थ—“ सामो माणस कोप करो अथवा न करो अथवा तो  
विष जेवी कमवी ढागो परंतु शबुने पण गुण करे तेवी हितकारी ज्ञापा बोझवी। ”

आ प्रमाणे श्री करकंरु मुनिए उपदेश आप्यो ते त्रण मुनिओए हृष्यवी  
अंगीकार कर्यो; अने करकंरु मुनि शरीर खण्वानी वस्तुनो त्रिविधे त्रिविधे त्याग  
करीने संपूर्ण निःसृही थया. त्यारथी खरज आवे ते खखते पण तेने खण्वा  
सूप तेनो सत्कार तज्जा दीधो. द्विमुख मुनिए विचार्यु के “ मैं साहु थझेण पण कर-  
कंरु मुनिने खजवाळतां जोइ तेनी निंदा करी, ते मैं योग्य कर्यु नहीं. माटे आजधी  
मारे समताज राखवी। ” आ प्रमाणे सर्वे मुनिओए पोतपोताना वचनने ज्ञाम्य  
रहित अयोग्य मानीने विशेषे समता धारण करो. पड़ी तेओए यथारुचि त्यांधी

व्याख्यान ३५७ मुं. प्रत्येकबुद्ध नगगतिनुं चरित्र.

( ३४५ )

विहार कर्यो. ब्रेवट ते चारे साथेज केवल ज्ञान पामी मोर्कौ गया.

आ प्रमाणे शमगुणधी शोजता चारे प्रत्येकबुद्धोनुं संप्रदायने अनुसारे दुँकुं चरित्र अहीं व्यख्युं भे.

इत्यद्विनपरिमितोपदेशप्रासादवृत्तौ चतुर्विंशतिमस्तंभस्य

नवचत्वारिंशादधिकत्रिशततमः प्रवंधः ॥ ३४६ ॥

## व्याख्यान ३५० मुं.

प्रत्येकबुद्ध नगगतिनुं चरित्र.

अथ नगगतिसंज्ञस्य, संबुध्यस्याम्रपादपात् ।

तुर्यप्रत्येकबुध्यस्य, कथां वद्यामि तव्यथा ॥ १ ॥

नाराय—हवे आम्र वृक्षने जोझने वोथ पामेद्वा नगगति नामना चोथा प्रत्येकबुध्यनी कथा कहेगामां आवे भे ते आ प्रमाणे—

गांधार देशमां सिंहरथ नामे राजा हो. तेने एकदा विपरीत शीखेद्वा वे घोमाओ जेटमां आव्या. ते अध्यनी गतिनी परीक्षा करवा माटे एक अध्यपर चमीने राजा क्रीमा करवा गयो. ते विपरीत शिक्षा पामेद्वो अध्य नदीना पूर्नी जेम दोमतो वार योजन दूर नीकली गयो अने एक महारण्यमां राजाने द्वावी मुक्यो. राजाए ते अध्यनी लगाम खेंची खेंचीने श्रांत थवाथी तेने मूकी दीधी. एव्वेत तरतज ते अध्य त्यां उनो रहो. पछी राजाए नीचे उतरीने अध्यने वृक्ष साथे वांधी फलादिक्यी प्राणवृत्ति करी. पंडी रात्रिवासो करवा माटे ते पासेना पर्वत पर चल्यो. त्यां एक सात माळनुं मंदिर जोझने राजा तेमां पेत्रो. ते महेद्वामां एक भूग सरखां नेत्रवाढी कन्या तेना जोवामां आवी. ते कन्याए राजाने जोझने तरत उनी थइ तेने आसन आप्यु. पछी राजाए तेने पूज्यु के “ हे सुन्नगा ! तुं कोण

( ३४६ ) उपदेशप्राशाद ज्ञापांतर-ज्ञाग ४ मो. स्तंज २४ मो.

हे ? अने अहीं एकझी केम रहे हे ? ” ते बोढ़ी के “प्रथम तमे मने गान्धर्व विवाहयी परणो, पड़ी हुं मारूं सर्व वृचांत तमने कहीशा, ” ते सांजलीने राजाए तेनी साथे गान्धर्व विवाह कर्यो. पड़ी ते स्त्री पोतानुं वृचांत कहेवा द्वागी के “ हे स्वामी ! आ नरत केत्रमां क्षितिपुर नामे नगरमां जितशत्रु नामे राजा हतो. तेण एकदा चित्रशाळा करवा माटे चित्रकारोने बोद्धावीने आइङा करी के “ आ शहेरमां तमारां जेठझां घर होय तेझ्डा विजाग करीने तमे आ सज्जा चीतरो. ” चीतारा-ओ ते प्रमाणे ज्ञाग पाडीने सज्जा चितरवा द्वाग्या. ते चित्रकारोमां एक वृद्ध चित्र-कार हतो. तेने सहायचूत कोइ नहोतुं. मात्र एक कनकमंजरी नामे तेने पुत्री हती. ते हेमशां पिताने माटे त्यां खावानुं लाइन आवती. ते वृष्द चित्रकार ज्योर खावानुं आवतुं त्यारे शौच माटे बहार जतो. एकदा कनकमंजरी जोजन लाइने राजमार्गे आवती हती ते बखते राजा धोरेस्वार थाइने धोमो दोमावतो त्यांथी नीकल्यो. तेने जोइने जय पामेढी कनकमंजरी दोमीने सज्जामंकपमां आवती रही. ते समये राजा एण सज्जा जोवा माटे त्यां आव्यो. तेणे चित्र जोतां जोतां भौतपर चित्रेदुं एक मोरुं पीडुं लेवा माटे एकदम् पोतानुो हाथ तेनी ऊपर नाल्यो. एट्डे

सांजलीने तेने सत्य मानी राजाए विचार्यु के “ आनी साथे द्वम् करीने पारो जन्म सफल करुं. ” पड़ी राजाना कहेवाथी मंत्रीए तेना पिता पासे कनकमंजरीनी मागणी करी, तेथी हर्ष पारीने तेणे पोतानी पुत्री राजाने परणावी,

एकदा कनकमंजरी पोतानो वारो द्वोवाथी दासीनी साथे राजाना शयन-गृहमां आवी. राजा सुतो, त्यारे प्रथमधी संकेत करी, राखेद्वी दासीए कनकमंजरीने कल्यु के “ हे देवी ! तमने अद्भुत कथाओ घणी आवेदे, माटे तेमाथी एक आजे, कहो. ” त्यारे ते बोद्धी के “ राजा उंधी जशे त्यारे कहीश. ” ते सांजलीने तेनी वार्ता सांजलवानी इच्छाथी राजाए खोटी निजानो देखाव कर्यो. एट्झे कनकमंजरीए वार्ता कहेवा मांकी के “ एक श्रेष्ठीए एक हाथरुं चैत्य कराव्युं, अने तेमां चार हाथनी देवप्रतिमा स्थापन करी. ” ते सांजली दासीए पूज्युं के “ एक हाथना चैत्यमां चार हाथनी प्रतिमा केम रही शके ? ” ए मारा संशयने दूर करो. त्यारे राणी बोद्धी के “ अत्यारे तो निजा आवे डे, काळे कहीश. ” एम कहीने राणी सुइ गइ. वीजे दिवसे तेनुं समाधान सांजलवानी इच्छाथी राजाए तेनेज वारो आप्यो. पड़ी पढेद्वी रात्रिनी जेम राजा खोटी निजा देवा लाग्यो, त्यारे दासीए पूज्युं के “ हे स्वामिनी ! काळनी शंकानो जवाव आपो. ” त्यारे राणी बोद्धी के “ चार हाथनी प्रतिमा एट्झे ते प्रतिमाने चार बाहु हत्ता, पण ते चार हाथ उंची नहोती, अर्थात् उंचाइमां तो एक हाथथी नानी हत्ती, तेथी एक हाथ उंचा चैत्यमां ते रही शकी. ” पड़ी दासीए वीजी वार्ता कहेवानुं कल्यु, त्यारे राणी बोद्धी के “ कोइ वनमां रातो अशोक दृक् हत्तो. तेने सेकमो शाखाओ हत्ती, पण तेनी डाया पृथ्वीपर वीद्वकुल पदती नहोती. ” त्यारे दासीए पूज्युं के “ एवना मोटा दृक्सने डाया केम न होय ? होवीज जो-इप. ” राणी बोद्धीके “ अत्यारे तो निजा आवे डे. काळे जवाव आपीश. ” एम कही सुइ गइ. वीजे दिवसे पण राजाए तेने वारो आप्यो. एट्झे रात्रे पूर्वनी जेम दासीए पूज्युं, त्यारे राणीए तेनो खुझासो आप्यो के “ ते दृक् कूवा उपर हत्तुं, तेथी तेनी डाया कूवामां पमती हत्ती, एट्झे ते पृथ्वीपर पमती नहोती. ” आ प्रमाणे कनकमंजरीए छ मास सुधी वार्ताओ कहीने राजाने वश कर्यो. तेथी वीजी राणीओ कनकमंजरी उपर कोपायमान थझेने तेनां बिजो शोधवा द्वागी.

हवे कलकर्मजरीने एवो नियम हतो के ते हंमेशां एकवार ओरमो बंध करीने पोताना पिताना घरनां द्वूगमां पहेरी राजाए आपेक्षां उचम वस्त्रो तथा आभूषणो काढी नांखीने पूर्वावस्थातुं स्मरण करी पोताना आत्मानी निंदा करती के “ अरे जीव ! तु मद करीश नहीं, कृच्छिगौरव करीश नहीं, केमके कदाचित् राजा कोहेद्वी कृतरीनी जेम तने घरमांधी काढी पण मूके; माटे अहंकारन करीश।” आ प्रमाणेनी तेनी चेष्टा मात्र जोइने बीजी राणीओए राजाने कवुं के “ हे स्त्री ! चितारानी दीकरी जे तपारी मानीती डे ते हंमेशां काँइक कामण करें, माटे ते तमे जाते प्रमाद मूकीने जुओ अने तपारी खात्री करो; नहीं तो तेनी उपरना मोहर्थी तमे काँइ पण काम करवा जेवा रहेशो नहीं (नकामा थड जशो)। ” ते सांचबीने राजा पोते प्रछुब्र रीते ते जोवा माटे गयो, ते वखते कलकर्मजरीने हंमेशनी जेम पोताना आत्माने शिखामण आपती जोइ. तेनां तेवां वचनो सांभळीने संतुष्ट यथेद्वा राजाए विचार कर्यो के—

**मदोन्मत्ता ज्ञवत्सन्ये, स्वदृपायामपि संपदि ।**

**असौ तु संपदुत्कर्प, संप्रासापि न माद्यति ॥**

“ बीजी खीओ योर्नी संपत्तियां पण मदोन्मत्त धयेद्वो डे, परंतु आ तो मोटी समृच्छि पाम्या इतां पण गर्व करती नधी। ” मारी बीजी राणीओ इर्प्पी-थी आना गुणने पण दोष रूपे जुए डे; परंतु छुर्जननो एवो स्वज्ञावज होय डे. कवुं डे के—

**जाड्यं हीमति गण्यते व्रतरुचौ दंनः शुचौ कैतवं ।**

**शूरे निर्धृणता ऋजौ विमतिता दैन्यं प्रियाद्वापिनि ॥**

**तेजस्विन्यवलिप्तता मुखरता वक्तर्यज्ञकितः स्थिरे , ।**

**तत्को नाम गुणो ज्ञवेत् स गुणिनां यो छुर्जनैनांकितः ॥ १ ॥**

ज्ञावर्थ—“ छुर्जनो ज्ञजावंतने विषे जमता गणे डे, विषे दंननो आरोप करे डे, पवित्रने विषे कण्ठ कहे डे, शूरव सरळ स्वज्ञाववालाने मूर्ख कहे डे, प्रिय वचन वोड्वनारने होय तो मर्हिष कहे डे, वक्ता होय तो चाचाल—

तो अशक्तिमान कहे छे, माटे एवो कयो गुण भे के जेने फुर्जनोए कञ्जकित कर्यो नवी ? ” अर्थात् तेण सर्व गुणोने कञ्जकबुद्धे अंकित करेद्वा भे.

आ प्रमाणे विचारीने राजाए तेने पट्टराणी करी. एकदा राजाए पट्टराणी साये धर्मपदेश सांजलीने आवकर्म अंगीकार कर्यो. पर्वी अतुक्रमे ते चित्रकारनी पुत्री धर्मनुं आराधन करीने स्वर्गं गइ. त्यांधी चबीने ते बैताढ्य पर्वत उपर दृढ़जक्ति राजानी पुत्री धइ. ते पुत्री ड्यारे युवावस्था पामी ल्यारे तेने जोझेने मोह पामेद्वां वासव नामनो खेचर तेनुं हरण करीने आ पर्वतपर द्वाव्यो. अहीं विद्याना प्रज्ञावयी आ शासाद् बनावीने ते परणवाने तंपार ययो. तेवामां ते कन्यानो मोदे जाइ अहीं आव्यो एट्ट्वे वासवनुं ने तेनुं युष्ट धयुं, तेने परिणामे बने जणा मृत्यु पाम्या. पोताना जाइना मरणथी ते कन्या शोकातुर थइ, अने अत्यंत रुदन करवा द्वागी. तेवामां कोइ व्यंतर देवे आवीने तेने कहुं के “ हे बत्से ! तुं केम रुदन करे भे ? ” तेनो जवाव ते आपे भे, तेट्ज्ञामां ते कन्याना पिता त्यां आव्यो. तेने आवतो जोझेने ते देवे ते कन्याने शब्दरूप करी नाखी. दृढ़जक्ति राजाए पुत्रने तथा पुत्रीने मरेद्वां जोझेने उच्छेग पामी संसारनी असारता जाणी पोताने हाथे द्वोच करी चास्त्र अंगीकार कर्यु. त्यार पछी ते देवे मायानु हरण करी ते कन्याने संचतन करी, अने ते बन्नेप सुनिने वंदना करी. पर्वी सुनिना पूज्याथी ते कन्याए पोताना जाइनु उच्चांत कहुं. त्यारे मुनि वोद्यो के “ मैं हमणां त्रण शब केम जोयां हतां ? ” एट्ट्वे ते देव वोद्यो के “ मैं पारी माया तमने बतावी हती. ” मुनिए पूज्युं के “ शामोटे ? ” देव वोद्यो के “ आ कन्या पूर्वे चित्रकारनी पुत्री, जित-शत्रु राजानी राणी अने परम श्राविका हती. तेण पोताना पिताना मृत्युसमये पंच नमस्कारादिक्रमे तेनी निर्यामणा करी हती; तेथी तेचित्रकार मरीने व्यंतरदेव थयो भे ते हुं दुं. मैं अवधिज्ञानथी आ मारी पूर्वजनवनी पुत्रीने शोकातुर जोझेने पूर्वजनवना प्रेमधी तेनी आश्वासना करी. ते वखते तमने आवता जोझेने मैं विचार्यु के हवे आ पुत्री तेना पिता साये जती रहेहो; तेथी मने तेनो विरह धर्शे, एम जाणीने मैं तेने चेष्टारहित करी हती. पर्वी तमने निस्यही ( मुनि ) धयेद्वा जो-झेने मैं पारी माया दूर करी. हे मुनिराज ! ते पारा अपराधने क्रमा करो.” मुनि वोद्यो के “ तमे मने धर्मप्राप्तिमां हेतुभूत धवाधी मारा उपकारी धया छो. ” एम कहीने मुनिए त्यांधी अन्यत्र विहार कर्यो.

पती ते कन्याने जाति स्परण यवाची पोताना पूर्वजनवना पिता ते देवने ओळखीने तेणे पूर्वयुं के “ हे पिता ! मारो पति कोण घडो ? ” देवे अवधि झानयी जाणीने कर्तु के “ हे पुत्री ! तारो पूर्वजनवनो पति स्वर्गयी चवीने सिंहरथ नामे राजा यथो डे. ते अभ्यवने हरण कराइने अहीं आवरो अने ते तारो पति घडो, माटे धीरज राखीने तुं अहींज रहे. ” आ प्रमाणे प्रियाएकहेतु वृत्तांत सांजळीने सिंहरथ राजाने पण जातिस्मरण यवाची ते संदेहरहित घयो. पती ते स्त्रीनी साथे राजा एक मास सुधी त्यांज आनंदयी रहो.

एकदा ते स्त्रीए राजाने कर्तु के “ हे मिय ! तमाह नगर अहींयी यणे दूर डे, माटे मारी पासेवी तमे भङ्गसि विद्या ग्रहण करो. ” राजाए ते विद्या ग्रहण करीने विधि पूर्वक तेनुं साधन कर्तु. पती विद्या सिद्ध करीने राजा आकाशमार्गे पोताना नगरमां गयो, त्यांची पाढो ते पर्वतपर आव्यो. एवी रीते ते राजा वारंवार पर्वत ऊपर जतो अने पाढो पोताना नगरमां आवतो; तेथी लोकोए नग एडवे पर्वत पर आनी गति छे एम जाणीने तेनुं नगगति एवुं सार्यक नाम पाहयुं. ते विद्यापर्नी पुत्री कनकपाढा तो ते व्यंतर देवना कहेवाची ते पर्वतपरज रही. तेथी नगगति राजाए त्यां नवुं नगर वसाव्युं.

एकदा कातिंकी पृष्ठिमाने दिवसे राजा सैन्य सहित नगर बहार नीकळी-ने रघवानीए जवा चाढ्यो. त्यां नवीन पद्मबोधी रक्त अने मांजरोची पीत देखातो एक सदा फळवाळो उत्राकार आम्रवृक्ष जोयो. एडवे ते मनोहर वृक्षनी एक मांजर राजाए मंगलिकने माटे ग्रहण करी अने त्यांची आगळ चाढ्यो. पाढळयी आसदा सैन्ये तेनां पत्र, पद्मव अने मांजर लाझने ते वृक्षने दुंगारूप करी नांख्यु. घोरो ओरे राजा पाढो वळी तेन जग्याए आव्यो त्यारे वेणे “ ऐझो आंदो यांडे ? ” एम मंत्रीने पूर्वयुं. त्यारे मंत्रीए ते हुंदुं वताव्यु. ते जोझने फरीयी राजाए पूर्वयुं के “ ते आव्यो केम यइ गयो ? ” मंत्रीए कर्तु के “ हे स्त्रामी ! आ वृक्षनी एक मंजरी प्रथम आपे ग्रहण करी. त्यार पती सैन्यना सर्व लोकोए तेनां पत्र, पुण्य तथा फळ विरो लाझने जेम चोर. लोको भनिकने वृक्षभी विनानो करी नात्वे तेम तेने शोजारहित करी नाख्यो. ” ते सांजळीने राजाए विचार कयों के “ अहो ! वृक्षमी (शोजा) कवी चंचळ डे ? लुओ ! आ अद्भुत वृक्षीयाळो आम्रवृक्ष कणवासमां वृक्षमी रहित यइ गयो. जे प्रथम संतोष करनार होय ते क्षणांतरमांज वमन

व्याख्यान ३५? मुं. केद्वाक बज्जार्थी ग्रहण करेद्वा व्रतने तजता नर्थीते विषे. ( ३५? )

करेद्वा जोजननी जेम जोगा योग्य पण रहेतुं नर्थी. जेम जळना उद्दुदो (परपोटा) अने संध्यासमयनी कांति स्थिर रहेती नर्थी, तेम सर्व संपत्तिओ पण अस्थिर डे; एम निश्चय याय डे. ”

आ प्रमाणे विचार करीने पोतानी मेले केजानो द्वोच करी देवदत्त मुनि-  
वेप धारण करीने गान्धार देजाना राजा नगगतिए चास्त्र अंगीकार कर्ये, अने त्यां-  
धी ते चोथा प्रत्येकलुम्बे पृथ्वीपर विहार कर्यो.

॥३५७॥

इत्यद्विनपरिमितोपदेशप्रासाददृच्छा चतुर्विंशतितमस्तंजस्य  
पंचाशदधिकत्रिशततमः प्रवंधः ॥ ३५७ ॥

॥३५८॥

## व्याख्यान ३५९ मुं.

केद्वाक बज्जार्थी पण ग्रहण करेद्वा व्रतने तजता नर्थी ते विषे.

बज्जातो गृहीतां दीक्षां, निर्वहति यदा नरः ।

तदा सत्त्वेषु योग्यात्मा, बद्धयते ज्ञवदेववत् ॥ १ ॥

नार्थ—“ ज्यारे माणस बज्जार्थी पण ग्रहण करेद्वी दीक्षातुं पाद्धन करे डे, त्यारे ते ज्ञवदेवनी जेम धैर्यवान पुरुषेमां योग्य आत्मा जणाय डे. ” आ अर्थतुं समर्थन करवा माटे संप्रदायागत ज्ञवदेवनो संवंध कहेवामां आवे डे.

### ज्ञवदेवनी कथा.

सुग्राम नामना गाममां रात्रेऽवंशी आर्यवान् नामनो एक कौटुंबिक (कण्ठी) रहेतो हतो. तेने रेवती नामे ही हती, अने ज्ञवदत्त तया भवदेवं नामे वे पुत्रो हता. तेमाना ज्ञवदत्ते संसारयी विरक्त धृज्ञे वैराग्यथी मुस्तित नामना आचार्य पासे दीक्षा दीधी. गुरुनी साथे विहार करतां ते ज्ञवदत्त मुनि गीतार्थ धया.

एकदा कोइ साथु गुरुनी रजा लङ्घने पोताने गाम पोताना नाना जाइने प्रतिवेष आपवा माटे गया; पण स्यां तेनो जाइ तो विवाहना कार्यमां व्यग्र होते तेथी तेणे पोताना मोटा जाइ मुनिने आवेदा पण जाएया नहीं। एटबे खेदयुक्त यड्ठने ते मुनिए गुरु पासे पाडा आवी सर्व वृत्तांत कर्णु, ते सांजलीने जवदच मुनि वोद्या के “ अहो ! तमारा जाइनु हृदय तो वहु कउण लांग छे के जेथी तमारो सल्कार पण तेणे कर्यो नहीं। ” त्यारे ते मुनि वोद्या के “ त्यारे तमे तमारा नाना जाइने दीक्षा अपावो। ” ते सांजली जवदच वांद्या के “ ज्यारे गुरु ते देश तरफ विहार करदो त्यारे ते कौतुक तपने बतावीश। ”

अन्यदा गुरु महाराज विहार करतो करतो जगदचना गाम तरफ गया, त्यारे गुरुनी आळा लङ्घने जवदच पोताने धेर गया, ते वखते जवदेव नागदचनी नागिज्ञा नामनी कन्याने तरतमांज परएयो होतो, भवदच मुनिए जाइने धेर जइ धर्मज्ञान आप्यो त्यारे तेना स्वभन्नोए तेपने प्रामुक अन्वयी प्रतिवाच्या, ते समये कुछाचारने लीधे जवदेव पोतानी स्त्रीने शणगारवाना पारंजमां तेना वक्षस्थळ पर चंदनना रसधी अंगराग करतो होतो, स्यां तेणे मोटा भाइने आवेदा सांजव्या; एटबे तेने अर्पी शणगारेल्ली पक्ती भूकीने तरतज ते मुनिने वांद्वा आव्यो, एची जवदच मुनिए त्यांवी पाडा वक्ती गुरु पासे आवतां नाना जाइना हायमां पीनुं पात्र आप्युं, तेपने वलाववा पाटे आवेदा सर्व स्वजनो थोके दूर जड्ठने अतुक्मे पाडा वद्या; पण जवदेव तो जवदच मुनिए करवा मार्मेद्वी वाद्यकीमानी वातो सांजलतो सांजलतो भाइनी (मुनिनी) साथेज चाव्यो, अतुक्मे पोताना जाइ सहित जवदच मुनिने आवता जोइने सर्व साथुओ वहु विस्मय पाम्या, अने तेपनी प्रशंसा करवा द्वाग्या के “ अहो ! आ जवदेव शुं वाद्यवयमांज दीक्षा लेशे ? ” पछी जवदच मुनि गुरुने नमीने वोद्या के “ आ पारो जाइ आपनी पासे दीक्षा लेवा आव्यो छे, ” त्यारे गुरुए जवदेवने पूछ्युं के “ तारे दीक्षा लेवी सांजली जवदेव विचार्यु के “ पारा मोटा भाइनुं वन्नन मिथ्या, विचारीने ते वोद्यो के “ हे गुरु ! हुं दीक्षा माटेन आव्यो, गुरुए तेने दीक्षा अंगी, अतुक्मे ते वृत्तांत तेना, आव्या, पण तेणे दीक्षा लीधेल्ली देखीने पाढ़ु, हुं जवदेव मुनि मोटा जाइना

व्याख्यान ३५? मुं. केद्वाक लज्जार्थी पण ग्रहण करेद्वा व्रतने तजता नवीते विषे. (३५३)

येतीना हृदयमां परमात्मानी जेम तेना हृदयमां नागिन्नानुं चिंतन थया करतुं हतुं। केद्वाक वर्ष पड़ी जबदत्त मुनि अनशन ग्रहण करीने सौर्यम् देवद्वोकमां देवता थया, त्यारे जबदेवे विचार्यु के “अहो जबदत्त तो स्वर्णं गया; हवे मारे व्रतने परिश्रम शामाटे करवो ? मारा जीवितने धिक्कार छे ! केमके हुं अर्धीं शणगरेढी प्राणप्रियानो त्याग करीने अर्हीं आव्यो छुं, माटे हवे तो धरे पाढो जउं.” एम विचारीने संयमयी ज्ञान मनवालो धइ ते पोताना नगर तरफ चाल्यो, त्यां नगरनी बहारना उपवनमां एक छुद्ध स्त्रीने वीजी कांडक जरा आवेढी स्त्री साथे जोइने तेणे पूर्खुं के “हे नोझी ! आ गाथमां जबदेवनी स्त्री नागिन्ना रहे रे ते कुशल छे ?” ते सांजळीने कांड जरा आवेढी स्त्री नागिन्नाज हती तेथी तेणे जबदेवने ओळ-स्त्रीने पूर्खुं के “हे मुनि ! शुं तमेज नागिन्नाना पति छो ?” जबदेव वोल्यो के “हा, तेज हुं छुं, मारा मोटा जाइ काळ करी स्वर्णं जयार्थी जोगमां उत्सुक एवो हुं अर्हीं आव्यो छुं, माटे तुं मने नागिन्नाना खवर आप.” ते सांजळी नागिन्ना वोल्यी के “हे महात्मा ! हुंज ते नागिन्ना छुं, मारा देहमां तमे शुं लावण्य जुओ गो ?” इत्यादि घणी रीते तेने उपदेश कयों, तोपण जबदेवनी आसक्ति ओरी अह नहीं, तेवामां नागिन्नानी साथे हती ते सखीना, पुत्रे त्यां आवीने कर्युं के “हे माता ! एक वासण लावो, एट्डो में प्रथम खालेढी स्त्रीर हुं तेमां ओकी काढुं, मारे आज जमवानुं नोतरह आव्युं गे, माटे हुं त्यां जइने जमी आवीजा, पड़ी ज्यारे मने जूख लागेणे त्यारे हुं ते ओकी काढेढी स्त्रीर खाल्या.” ते सांजळीने ते दृष्टा वोल्यी के “हे पुत्र ! श्वानयी पण अधिक जुगुप्सा करवा लायक आ कार्य करतुं ते तने योग्य नवी,” जबदेव पण वोल्यो के “हे वाल्क ! चमन करेद्वाने खावानी इडा करवायी तुं श्वानयी पण हङ्को गणाल्या.” त्यारे नागिन्ना वोल्यी के “हे महात्मा ! तमे एवुं जाणो गो, छतां प्रथम वमन (त्याग) करेढी एवी जे हुं तेने हवे पाडा केम चाहो गो ? लाजता नवी ? छुर्गयी एवा मारा देहमां सारुं शुं जुओ गो ?” इत्यादि नागिन्नानी युक्तियुक्त वाणीयी प्रतिवोध पामेझो जबदेव फरीयी गुरु पासे गयो, अने फरीयी चारित्र ग्रहण करी गुरुए कहेद्वा तप्तनो स्त्रीकार करी छेवटे अनशनयी काळ करीने सौर्यम् देवद्वोकमां देवता थयो.

त्यां चवीने ते शिवकुमार थयो, त्यां दीक्षा लेवा उत्सुक वतां ज्यारे मातापिताए तेने दीक्षानी आज्ञा आपी नहीं त्यारे घेर रहीने भावमुनि थइ नि-

रंतर उठने पारणे आविन्न तप करवा लायो. एवी रीते बार वर्ष सुधी तप करी-  
ने ते जावसुनि काळ करीने ब्रह्म देवब्लेकमां अद्भुत कांतिवाळो विद्युन्माळी दे-  
वता थयो.

“ ओ प्रमाणे जबदेवे प्रथम लग्जाना वशथी दीक्षा लइने तेनुं झव्यधी-  
यणां वर्ष सुधी पांड्वन कर्यु; पर्वी ह्योना वघनणी प्रतिबोध पामीने शुच्च व्रत धार-  
ण कर्यु, अने तेनुं प्रतिपाद्धन करी सदगतिनुं जाजन थयो. ”

इत्यद्विनपरिमितोपदेशमासादवृत्तौ चतुर्विशतिमस्तंजस्य

एकपञ्चाशदधिकत्रिशततमः प्रवृथः ॥ ३५? ॥

## व्याख्यान ३५२ मुं

जंयुस्वामीनुं चास्त्रि.

गणाधिपेऽय संप्राप्ते, पंचमे पंचमीं गतिम् ।

जंयुर्विकासयामास, शासनं पापनाशनम् ॥ १ ॥

जावार्व—“ पांचमा गणधर सुधर्षास्यामी पांचमी गति ( मोक्ष ) पास्ये  
सते श्रीजंयुस्वामीए पापने नाश करनारा जनशासननो विकास कर्यो. ”

श्रीजंयुस्वामीनी कथा.

एकदा वैज्ञारगिरि उपर श्रीमहावीर स्वामी समवसर्या, ते सांजलीने थे-  
णिक राजा सर्वे समृद्धिधी लां जह प्रज्ञुने वांदी देशना सांजलवा वेगा, ते स-  
ज्ञापां चार देवीओ सहित वेंद्रा कोइ अति देवीप्रभान कांतिवाळो देवने जे-  
इने राजाए प्रज्ञुने पूज्यु के “ हे स्वामी ! सर्व देवोपां आ देव अति कांतिमान  
बे तेनुं शुं कारण ? ” लारे प्रज्ञु वोद्या के “ पूर्वे तपाराज देशमां जगद्वच अने  
नवदेव नामना वे जाइओ हता, तेपां मेदा जाइ जबद्वचे चास्त्रि ग्रहण कर्यु ह-

तुं. पड़ी केट्टोक काळे जबदत्तना आग्रही जबदेवे पण अर्थी शणगारेखी नामिद्वा नामनी. पत्नीनो ल्याग करीने चारित्र ग्रहण कर्यु. केट्टोक वर्षे भवदत्त मुनि स्वर्गे गया पड़ी जबदेव चारित्री जप्त परिणामवालो थयो, तेने फरीथी लागिद्वा-एज स्थिर कर्यो. ते जबदेव मृत्यु पामीने सौर्यम् देवद्वांकर्सा देवता थयो.

जबदत्तनो जीव स्वर्गीयी चबीने विदेह क्षेत्रमां पुंमरीकिणी. नामनी. पुरिमां वज्रदत्त नामना चक्रीनी पशोधरा नामनी राणीयी पुत्रपणे उत्पन्न. थयो. ते कुमार अनुकमे युवावस्था पाम्यो. ल्यारे पिताए तेने पणी कन्याओ परणावी. एकदा ते राजकुमार पोतानी स्त्रीओ सहित महेश्वरी अगाशीमां बेत्रो हतो, ते घरते आकाशमां विचित्र वर्णवालां वादलांओ तथा मेघ जोइने ते आनन्द पाम्यो. कणवारमां प्रचंद वायु वाचा द्वाग्यो, एट्टे सर्व वादलांओ अने मेघ वीख-राइते जातो रहो. ते जोइने राजकुमारे विचार्यु के “आ वादलांओनी जेम यौवन, धन, सैन्दर्ध विगेरे सर्व अनित्य डे.” एम निश्चय करीने गुरु पासे जइ तेणे दीक्षा द्वीयो. अनुकमे अवधिज्ञान पामी पृथ्वीपर विहार करवा द्वाग्या.

तेज विदेह क्षेत्रमां चीतशोक नामनो पुरमां जबदेवनो जीव सौर्यम् देवद्वाकमांयी चबीने शिवकुपार नामे राजपुत्र थयो. ते एकदा पोताना महेश्वरना गवाक्षर्पा बेत्रो हतो, लेवामां ते मुनि के जे पोताना पूर्वजनना जाइ हुता ते त्यांयी नीकल्या. तेने जोइने शिवकुपार अति हृष पाम्यो. पड़ी मुनि पासे जइ वंदना करीने तेणे पोताना स्नेहतुं कारण पूछ्यु. त्यारे ते झानी मुनिए पूर्वनी सर्ववात कही. संजलावी. ते सांजढीने ते दीक्षा देवा उत्सुक थयो; परंतु मातपितानी आहा नर्ही मलवाधी ते खेद पामीने पौपयशालामां जइ निरंतर उच्च तप करी पारणाने दिवसे आचामन्त्र करवा द्वाग्यो. ए प्रमाणे वार वर्ष सुधी तप करी जावयतिपण्डुं स्वीकारी त्यांयी काळ करीने ब्रह्म देवद्वाकमां आ विद्युन्माली नामे देव थयो डे.” ते सांभळीने थ्रेणिक राजाए तेतुं जावि दृत्तांत पूछ्यु, त्यारे थ्री जिनेश्वर बोध्या के “आजयी सातमे दिवसे आ देव चबीने आज नगरीमां क्रपञ्ज नामना थ्रेष्ठीनी धारिणी नामनी स्त्रीना गर्जयी जंयु नामे पुत्र थयो. ते आ अवसरिणीमां डेवद्वाकेबळी थयो.” आ प्रमाणे भगवाननी देशना सांजढी सर्व जनो स्वस्याने गया.

पड़ी सातमे दिवसे ते देव स्वर्गीयी चयवी धारिणीनी कुक्कियी पुत्रस्ये उत्पन्न थयो. तेतुं मातपिताए जंयु नाम पाम्यु. ते अनुकमे युवावस्था पाम्यो. एकदा वैज्ञा-

रमिरि उपर श्री मुधर्मा स्वामी समवसर्या, तेने नमवा माटे जंबुकुमार गयो। 'मुधर्मा स्वामीने वांदीने योग्य स्थाने बेसी अपृत जेवी उज्ज्वल देशना सांजबीने ते पोताना घर तरफ पाडो बढ़यो, गामना दरवाजा पासे आवतां ते दरवाजे शब्दने मारवा माटे चक्र विगेरे गोठवेदां हृतां ते जोइ जंबुकुमारे विचार्यु के "कदाच आ मारण-चक्रादिक मारा उपर पर्ने, तो हुं धर्म कर्या विना केवी गति पासुं ? माटे हुं पाडो बढ़ीने गणधर पासे जइ जीवन पर्यंत व्रह्मचर्यनुं पञ्चलखाण तो लाइ आवुं।" एम विचारी गणधर पासे जइ व्रह्मचर्यनुं पञ्चलखाण लाइने ते घेर आव्यो। पडी मात-पिताने तेणे कहुं के "हुं आपनी आङ्गाधी श्री मुधर्मा स्वामी पासे दीक्षा लेवा इच्छुं नुं।" आ प्रमाणेनुं काव्यकूटना जेबुं तेलुं बचन सांजबीने मातापिताए पुत्र-परना स्नेहधी मोह पामीने संयमनी छुप्करता विगेरेनुं वर्णन कर्यु, तेना अनेक उचरो आपीने जंबुकुमारे मातपिताने निहतर कर्या, एट्टो फरीधी ते बोद्ध्या के "हे बत्स ! तारे माटे प्रथमधी नकी करी राखेद्दी आउ कन्याओने परणीने अपारा मनोरथ पूर्ण कर, पडी तारे गमे ते करजे।" 'आ प्रमाणे कहेयामां तेना मातपिताए "खीओना प्रेमां परवाधी पडी ए जइ शक्ये नहीं।" एतो निथय करीने तेने परणवानो आग्रह कर्यो, पडी मोटा उत्सवधी जंबुकुमारे आउ कन्या-ओ साथे पाणिग्रहण कर्यु, जंबुकुमारे परण्या पहेदां ते आउने पोतानो मनोरथ कहेयराव्यो हतो, त्यारे ते आउए कहुं हृतुं के "आ लोकमां अथवा तो परलोकमां पण अमारे तो जंबुकुमारज स्वामी डे, शुं कुमुदिनी चंद्र विना वीजा वरने कदापि इच्छे डे ?" एम कहीने ते जंबुकुमारने परणी हती, लग्न थया पछी सृहा रहित जंबुकुमार वासगृह (शयनगृह)मां गयो, खां कामदेवधी पीमाती ते खीओ साथे विकार रहित कुमार वातो करवा लाभ्यो, ते बखते ते खीओए स्नेह दृष्टि पामे तेवी आउ वार्ताओ कही, तेना उत्तरमां कुमारे वैराग्य उत्पन्न थाय तेवी आउ वार्ताओ कही, हवे ते उपदेशने समयेज पांचसो चोरो सहित प्रजन नामनो राज-पुत्र अवस्थापिनी अने ताज्जोद्याटिनी (तालूं उघाडे तेवी) विद्याना प्रजावधी जंबुकुमारना घरमां आवीने चोरी करवा लाभ्यो हतो, ते बखते कोइ देवताए ते सर्वने स्तंनित कर्या, एट्टो प्रजवे विचार्यु के "आ महात्माधीज हुं परिवार सहित स्तंनित थयो लुं।" एम विचारीने सर्व खीओने उचर प्रत्युत्तर आपीने समजावता जंबुकुमारने तेणे कहुं के "हे महात्मा ! हुं आ छुए व्यापार-चौर्यकर्मधी नि-

हृत्त थयो दुं, माटे मारी पासेद्वी आ वे विद्या व्यो अने तमारी स्तंजनी विद्या  
मने आपो। ” ते सांजलीने जंशुकुमार बोद्धो के “ हुं तों प्रातःकाळमांज आ गृहा-  
दिकना वंधननो ल्याग करीने श्रीमुखर्मा स्वामी पासे दीक्षा देवानो दुं, मरे तारी  
विद्यानी कांइ पण जहर नवी, बडी हे जद ! मे कांइ तने स्तंजित कर्यो नवी,  
पण कोइ देवताए मारा परनी जक्किथी तने स्तंजित कर्यो हशे, तेमने जवनी वृद्धि  
करे तेवी विद्याओ हुं द्वेतो के देतो नवी; पण समस्त अर्थने साधी आपनारी  
श्री सर्वज्ञानापित ज्ञानादिक विद्यानेज ग्रहण करवाने हुं इच्छुं दुं। ” एम कहीने  
तेणे चमत्कार पामे तेवी धर्मकथाओ तने विस्तारधी कही। ते सांजलीने प्रज्ञव रो-  
द्यो के “ हे जद ! पुण्यथी प्राप्त थयेद्वा ज्ञोगोने तेम शा माटे ज्ञोगवता नवी ? ”  
जंशुकुमारे जबाब आपो के “ किंपक वृक्षना फळनी जेम अंते दाखण काणे, अ-  
पनारा अने देखीताज मात्र मनोहर एवा विषयोने कयो नाहो माणस जोखे !  
कोइ न ज्ञोगवे। ” एम कही तेणे प्रथम मधुविंश्तुं दृष्टांत कहुं, फरीधी प्रज्ञवेद्वं दुं  
“ तमारे पुत्र थाय ल्यारपछी दीक्षा देवी योग्य हे, केमके पिंड आपनार उक्त  
हितने स्वर्णनी प्राप्ति थती नवी। ” ते सांजलीने जंशुकुमारे हास्य करीने अंते  
“ जो एम होय तो सूकर, सर्प, खान, गोधा विगेरेने घणा पुत्रो होय हे, कुण्डे  
ओज स्वर्णे जंडो, अने वाल्यावस्थाधीज व्रह्मचर्य पाळनारा स्वर्णे नहीं जद  
आ प्रसंग उपर महेश्वर वणिकतुं दृष्टांत कही। वताव्युं, पर्वी जंशुकुमारी अंते  
स्त्रीओ अनुक्रमे बोद्धी। तेमां प्रथम मोटी समुद्धथी बोद्धी के “ हे स्त्री ! स्त्री  
थी प्राप्त थयेद्वी आ लक्ष्मीनो ल्याग करीने तेम केम चारित्र देवा इच्छुं हे। ”  
जंशुकुमारे जबाब आपो के “ वीजलीनी जेवी चपल लक्ष्मीनो अंते जिल्ला  
माटे हे प्रिया ! ते लक्ष्मीने मूकीने हुं दीक्षा ग्रहण करवा इच्छुं दुं, अंते  
पद्मथी बोद्धी के “ छाए दर्शननो मत एवो छे के दानादिक धर्माद्वं दुं  
वाने लीभे गृहस्थाश्रमीनो धर्म थेष्ठु छे, कहुं ते के—

हितं ज्ञवद्यस्यापि, धर्ममेतमगारिणाम् ।

पालयन्ति नरा धीरास्त्यजन्ति तु ततः परे ॥

जावार्थ—“ आ दानादिक धर्माद्वं दुं देवी धर्म अंते जिल्ला लक्ष्मीनो अंते  
होवाथी तेनु धीर पुरुषो पालन करे ॥ अंते जिल्ला लक्ष्मीनो अंते जिल्ला लक्ष्मीनो अंते

जंयुए कर्णु के “. सावधतुं—पापयुक्त क्रियाओनुं सेवन करवाधी एहीर्वप्य  
शी रीते थ्रेषु कहेवाय ? केमके यही अने मुनिना धर्ममा मेरु अने सर्वत तथा सु-  
र्य अने खद्योतना जेटनुं अंतर छे.” पडी त्रीजी पप्रसेना बोझी के “ कदम्भीना  
गर्ज जेतुं कोमळ तमारुं शरीर संयमनां कष्टे सहन करवाने योग्य नयी.” जंयुए  
कर्णु के “ ओर ! कृतघ्नी अने कृष्णनंगुर एवा आ देह उपर बुद्धिमान पुरुष शी  
रीते प्रीति करे ? ” पडी चोथी कनकसेना बोझी के “ पूर्वे जिनेभरोए पण प्रथम  
राज्यनुं पालन करी संसारना ज्ञाग ज्ञोगवीने पडी व्रत अंगीकार कर्तुं हर्तुं, तो तपे  
शुं कोइ नवा मोक्षनी इच्छावाला धया छो ? ” जंयुए कर्णु के “ जिनेभरो अवधि-  
क्षानवाला होवाधी तेओ पोताना व्रत योग्य समयने जाणी शके छे; माटे द्वाधी  
साथे गधेमानी जेप तेमनी साथे आपणी जेवा सामान्य मनुष्योनी शी स्पर्धी ?  
प्राणीओना जीवितरूपी महा अमृत्यु रत्नने कामरूप तस्कर अचित्यो आधीने  
मूलध्याधी चोरी ले छे, तेवी माला पुरुषो संयमरूपी पाथेय झाइने तेनावडे मोक्षपु-  
रने पामे छे के ज्यां आ काळरूप चोरनो जरा पण जय होतो नयी.” पछी  
पांचमी नभसेना बोझी के “ हे प्राणनाथ ! आ प्रत्यक्ष अने स्वाधीन एतुं कुडंवतुं  
मुख प्राप थयुं छे, तेने गोमीने देह विनाना मुखनी ( मोक्षमुखनी ) शा माटे  
इच्छा करो गो ? ” जंयुए जवाब आप्यो के “ हे प्रिया ! श्रुता, दृष्टा, मूत्र, पुरीप  
अने रोगादिकथी पीमा पामता आ मनुष्यदेहमां इष्ट वस्तुना समागमयो पण शुं  
मुख गे? कांइ नयी.” पछी रठी कनकधी बोझी के “प्रत्यक्ष मुख पाम्य उत्तर तेने त-  
जीने परोक्ष मुखनी वातो करवी ते फोगट छे. ज्ञोगनी प्राप्ति-माटे व्रत ग्रहण  
कर्तुं तो ज्यारे ते ज्ञोगन प्राप थया होय त्यारे व्रतना आचरणधी शुं ? खेतरमां  
दृष्टिधीज अन्न पाकयुं होय तो पडी कोण कूचामांथी पाणी खेत्रीने पावानो प्रयास  
करे ? ” कुमारे तेने जवाब आप्यो के “ हे प्रिया ! तारी बुद्धि घरावर रुक्षी रीते  
चाज्जती नयी. वळी आतुं बोझवाधी तारुं अदीर्घदर्ढांपाणुं प्रगट थाय छे, अने  
ते अन्य जनने हितकारी थतुं नयी. केमके स्वर्ग तथा मोक्षने आपनार एवा आ  
मनुष्यदेहने जे माणसो ज्ञोगमुखमां गुमावे छे, तेओ गुज्जधन खानारानी जेप  
परिणामे अतिशय छुखने प्राप थाय छे, माटे हे प्रिया ! जद्वदीधी नाश पामनारा  
एवा आ मनुष्यजन्मने पामीने हुं एवी रीते करीश के जेथी कोइ पण बखत प-  
धाचाप करवो न पमे.” पडी सातमी कनकवती बोली के “ हे नाथ ! ‘ द्वाधीर्मा

रहेका रसने ढोकी नाखीने पात्रना कांडा चाटवा' ए कहेवतेन तमे सत्य करी व-  
तावो गो." जंतुए कयुं के "हे गौर अंगवाळी प्रिया ! जोगो हाथमां आव्या ब्रतां  
पण नाश पामी जाय डे, तेथी तेमां मनुष्योनुं स्वाधीनपणुं डेज नहीं. ब्रतां जेओ  
तेने हाथमां आवेद्वा माने डे तेओने ज्ञूतनी जेवो भ्रम येद्वा डे एम समजवुं.  
विवेकी पुरुषो पोतेज जोगना संयोगोनो त्याग करे डे, अने जे अविवेकी पुरुषो ते-  
नो त्याग करता नयी तेओनो ते भोगोज त्याग करे डे." पडी बेद्वी ( आठमी )  
जयश्री बोद्वी के " हे स्वामी ! तमे सत्य कहो गो, परंतु तमे परोपकार रूप उ-  
चम धर्मने अंगीकार करनारा गो, माटे जोगने इच्छया विना पण अमारापर  
उपकार करवा माटे अमने सेवो. वृक्षो मनुष्योना तापने दूर करवा रूप उपका-  
रने माटे पोते तापने सहन करे डे. वळी कार समुद्रतुं पाणी पण मेवना  
संयोगयी अमृत समान थाय डे, तेवी रीते तमारा संयोगयी प्राप्त येद्वा  
जोग पण अमने सुखने माटे थशे." कुमारे कयुं के " हे प्रिया ! 'भोगोथी कृ-  
ण मात्र सुख थाय डे, पण चिरकाळ सुधी छुःख थाय डे' एवा प्रमात्माना  
वचनयी मारुं मन तेनाथी निवृत्ति पायुं डे, अने तेमां तमारुं पण कांड  
कव्याण होय एम मने जासतुं नयी. माटे हे कमळना जेवा नेत्रवाळी प्रिया !  
तेवा प्रांते अहितकारी जोगमां आग्रह करवो ते कव्याणने माटे नयी. कु-  
मनुष्योमां, कुदेवोमां, तिर्यचोमां अने नरकमां भोगी जनो जे छुःख पामे : डे  
ते सर्व झानीज जाणे डे."

आ प्रमाणेनी कुमारनी वाणी सांजळीने ते आठे स्त्रीओ वैराग्य पामी,  
एट्ट्वे तत्काळ हाथ जोनीने बोद्वी के " हे प्राणनाथ ! तमे जे मार्गनो आश्रय  
करो तेज मार्ग अमारे पण सेव्य डे. "

ते वर्खते प्रज्ञव विचार करवा द्वाग्यो के " अहो ! आ महात्मानुं विवे-  
कीपणुं तथा परोपकारीपणुं केवुं डे ? अने मारुं पापिष्ठपणुं तथा पूर्खपणुं केवुं  
डे ? आ महात्मा पोताने आधीनएवो पण लक्ष्मीनो त्याग करे डे अने निर्द्वज एवो हुं  
तेज लक्ष्मीनी अनिज्ञापा करुं दुं, पण ते प्राप्त थती नयी. माटे हुं अत्यंत निं-  
द्य दुं. मने अधर्मीने धिक्कार डे ! " आवा विचारयी परिवार सहित वैराग्य पा-  
मेलो प्रज्ञव बोड्यो के " हे महात्मा ! मने आज्ञा आपो, मारे दुं करवुं ? " जं-

राजा स्यांथी नीकल्यो. तेणे ते वाळक जोइने तेने खड़ पोतानी खीने आयो, अने पुत्र तरीके तेनुं पाढ़न करवा मानयुं.

अर्हा श्रीकृष्णने पुत्रहरणनी सबर थर्ता तेना वियोगथी तेने पीका थइ, ते जोइने नारदमुनि श्रीसीमंधर स्वामी पासे गया, स्यां नारदना पृथ्वाथी स्वामीए धूमकेतुना हरणथी आरंजनीने प्रश्नमनुं सर्व वृत्तांत कही वतान्युं, ते सांचलीने नारदे कृष्ण अने रुक्मिणी पासे आवी प्रश्नमनुं सर्व वृत्तांत कहीने कहुं के “ पूर्वजवे रुक्मिणीए मयूरीनां इकानो सोळ प्रहर सुधी वियोग कराव्यो हतो, ते कर्मयी तेनो पुत्र तेने सोळ वर्षे पाड़ो मळजो. ” ते सांचलीने रुक्मिणी हपित थइ.

अर्हा प्रश्नमन युवावस्था पास्यो. अन्यदा तेना स्वरूपथी मोह पामेखी ते कालसंवर विद्यापरस्नी खी कनकमालाए कामज्वरथी पीका पामीने प्रश्नमने कहुं के “ हे जाग्यवान ! मारी साथे जोग जोगव. ” ते सांचलीने खेद पामेखो प्रश्नमन बोध्यो के “ हे माता ! आयुं बोद्धार्थ तमने घटानुं नयी, ” ते बोद्धो के “ हुं तारी माता नयी. मारा पतिने तुं कोइ स्यानेथी हाथ आव्यो भे, मैं तो तने इक्कनी जेम दृष्टि पमाल्यो भे. तेथी हुं तारी पासेथी जोगहृप फळ ग्रहण करवा इच्छुं भुं. मारी पासेथी तुं सर्वत्र विजय आपनारी गौरी अने प्रझसी नामती वे विद्याओं ग्रहण कर. ” त्यारे प्रश्नमने हा पामीने तेनी पासेथी वने विद्या ग्रहण करी. पड़ी कनकमाला बोद्धी के “ हे प्राणमिय ! हवे मारा देहमां व्यास थयेझा कामज्वरालुं निवारण कर, अने पोतानी वाणीने सत्य कर. ” ते सांचलीने प्रश्नमन बोध्यो के “ हे माता ! तमे मारा विद्यागुरु थइने आवी अयोग्य मागणी केम करो दो ? ” एम कहीने प्रश्नमन नगर्नी वहार गयो. ते वखते पोताना नखबने पोताना वक्षस्थलादिकतुं क्रोधथी निर्दय रीते विद्यारण करीने कनकमाला पोकार करवा लागी अने मोटे स्वरे बोली के “ अरे पुत्रो ! दोमो, दोमो, आ छुष्ट जोगनी इच्छाथी मारी आवी कदर्यना करीने जतो रह्यो भे. ” ते सांचली तेना पुत्रों प्रश्नमनी पाड़ल युद्ध करवा दोख्या. प्रश्नमने विद्यावलय। ते सर्वने हण्ठ। नारुपा. पुत्रोने हण्ठपेझा सांचलीने तेनो पिता जाते युद्ध करवा गयो. तेने पण प्रश्नमने क्रीका मात्रपां जीतीने वांधी लीधो. त्यारे ते बोध्यो के “ हे पुत्र ! शा मोटे मारी कदर्यना करे भे ? सत्य बोझ. ” त्यारे कुमार बोध्यो के “ हे पिता ! आ

तमारी ही सारी नथी, हुं तेहुं चेष्टित कही शकुं तेम नथी। ”

आ प्रमाणे वात थाय रे तेवामां अकस्मात् नारदे त्यां आवीने प्रद्युम्न कुमारने कहुं के “ हे कुमार ! तारा पिता कृष्ण अने तारी माता रुक्मिणी तारा वियोगथी पीका पापे रे, वढ़ी तारी ओस्मान मातानो पुत्र जानुकुमार जो प्रथम परणशे तो सरत प्रमाणे तारी माताने पोतानी वेणी कापीने तेने आपवी परक्षे, अने केश आपवाना कटृथी तथा तारा वियोगना शोकथी छुःखी यथेद्वी तारी माता तारा जेवो पुत्र भर्ता पण मरण पामशे। ” ते सांभळीने हृषि पापेद्वो प्रद्युम्न विमानमां वेसीने नारदनी साधे धारकाना उपवनमां आज्यो। पड़ी विमान सहित नारदने त्यां ज मूकीने प्रद्युम्ने वेष परावर्तन करी जानुना विवाह माटे आणेद्वी कन्यानुं हरण कर्तुं, अने तेने नारद पासे मूकी। पड़ी श्रीकृष्णना उधानने विधाना वल्थी पुण्य, फळ अने पवरहित करी दीयुं; तथा विवाहने माटे एकवां करेद्वां जळ, घास विगेरेने पण विद्याना वल्थी अदृश्य कर्या। पड़ी एक मायावी अश्व वनावीने तेने गाम वहार खेद्वाववा द्वाग्यो, ते अश्वना वेगने जोवानी इच्छाथी जानुकुमार तेनी पासेथी ते अश्व मागीने तेनापर चब्बो, अने तेने खेद्वाववा द्वाग्यो। एट्डे प्रद्युम्ने विद्यावरे तेने अश्वपरथी पानी नांख्यो, ते जोझने द्वोको जानुने हसया द्वाग्या। पड़ी प्रद्युम्न ब्राह्मणनो वेष धारण करीने गाममां गयो, त्यां कोइ वेपारीनी छुकाने उन्नेद्वी सत्यजामानी कुब्जा दासीने मुष्टि मारीने सरळ अने स्वरूपवाढ़ी करी दीधी। एट्डे ते दासी तेने वहु मानथी सत्यजामाने घेर तेनी गइ, अने सत्यजामाने पोतानी वात कही संजलावी ते ब्राह्मणनी श्लाघा करी। ते सांचलीने सत्यजामाए ते ब्राह्मणने नमीने कहुं के “ हे चिप ! मने रुक्मिणी करतां अधिक रूपवान करो। ” त्यारे ते वोद्यो के “ तमे प्रथम शिरमुंडन करावीने जीर्ण वस्त्रो धारण करी एकांत स्वल्पे वेसी आ मंत्रनो जप करो, एट्डे तमारं इच्छित थशे। ” ते सांचलीने सत्यजामाए ते प्रमाणे करीने जाप जपवा मार्द्यो।

पड़ी प्रद्युम्न रुक्मिणीने घेर जड़ौ। कृष्णना सिंहासनपर वेत्रो, से जोझने रुक्मिणी वोद्वी के—

कृष्णं वा कृष्णजातं वा, विना सिंहासनेऽत्रहि ।

अन्यं पुमास्तमासीनं, सहंते नहि देवता ॥

“ आ सिंहासनपर कृष्ण अथवा तेना पुत्र सिवाय वीजो कोइ वेसे तो ते देवताओ सहन करी शकता नयी। ” त्यारे ते बोल्यो के “ हुं महा तपस्यी हुं, सोळ वर्षे आज पारणाने माटे हुं अर्हां आब्यो हुं, तेथी तमे मने पारणु करावो, नहींतो हुं सल्लज्ञामाने, घेर जडश। ” त्यारे रुक्मिणीए तेने कीर खावा आपीने विज्ञापि करी के “ हे पूज्य ! मने देवताए कणुं छे के सोळ वर्षे तारो पुत्र लने मळशे, ते हजु मुधी आब्यो नयी, मने पुत्रवियोगतुं वहु छुख डे। ” त्यारे ते बोल्यो के “ पारे पारी पातानो वियोग छे पण तुं करीए ? परंतु ज्योतिष शाखाने आधारे हुं कहुं हुं के—आपण वनेतुं विरहद्धुःस योकाज काळमां नए घेश, तमे मने आ कीर खावा आपी छे ते मने जावती नयी, तेथी धीकृष्णा ने माटे करेद्वा मोदक मने आपो। ” त्यारे ते बोल्ली के “ ते मोदक कृष्णनेन खावा ल्लायक डे, वीजाने ते मोदक जरे, तेवा नयी। ” तेणे कर्तुं के “ तपस्यीने शुं छुर्जर डे ? ” ते सांभद्री शंका सहित रुक्मिणीए एक मोदक तेने आप्यो, ते खाइने तेणे वीजो मायो, एम वारंवार मागी मागीने खातां सर्व मोदक लाइ गयो, अनुक्रमे पात्र खाली, यह गयेद्युं जोइने ते बोल्ली के “ हे मुनि ! तमे तो अति वलवान जणाओ डो, केमके आटद्वा वया मोदक खाधा तोपण दूस थया नहीं। ”

अर्हां सत्यज्ञामा एकांतमां वेसीने जप करती हती, तेनी पासे आधीने तेना सेवकोए कर्तुं के “ विवाहने माटे एकरी करेद्वी सर्व सामग्री तथा कन्याने कोइ देव हरण करी गयो जणाय डे, ” ते सांभद्रीने ते अत्यंत खेद पायी, पडी क्रोधी तेले रुक्मिणीना केश ल्लाववा माटे दासीओने दोपद्वी आपीने रुक्मिणीने घेर मोकड्डी, ते दासीओए आवीने रुक्मिणी पासे केज्ज माग्या, त्यारे ते पाया साधुए मायार्थी दासीओना मस्तकना केज्जार्थीज ते दोपद्वी जरी आपी, दासीओए पोतानां शिर मुँफन थयां ते जाएर्यु नहीं, पडी ते दासीओ केश सङ्ने सत्यज्ञामा पासे आवी, त्यां तेऽग्रोनेज मुँमित थयेली जोइने अति खेद पायेद्वी सत्यभामा साक्षी राखेद्वा कृष्ण पासे जडने क्रोधी बोल्ली के “ मने रुक्मिणीना केश अपावो। ” कृष्ण कर्तुं के “ प्रथम तुंज मुँमित यह डे, हवे बीजीने ज्ञापाटे विरूप करवा इच्छे डे ? ” ते बोल्ली के “ हास्य करवायी सर्व अर्धात् हासी न करो, मने तेना केश अपावो। ” त्यारे कृष्णे केश माटे वलरामने रुक्मिणी पासे मोक-

व्या. त्यां प्रयुम्ने करेलुं कृष्णानुं स्वरूप सिंहासनपर वेतेद्वा जोइने द्वजा पामी व-  
ळराम पाडा फर्या. पाडा आवीने जुए ठे तो त्यां पण कृष्णाने जोया. एट्ले वंदगामे  
कांचु के “ तमे वे रूप करीने मने द्वजित कर्यो. ” कृष्ण योद्धा के “ हुं सोगन  
पूर्वक सत्य कहुं दुं के हुं त्यां गयोज नवी. ” त्यारे सत्यभामाए कांचु के “ सर्वत्र  
तपारंज चेप्ति जणाय ठे. ” ते सांजलीने विद्वत्वा योद्धा कृष्ण रुक्मिणीने  
धेर आव्या. तेज वस्ते नारदे आवीने कृष्ण तथा रुक्मिणीने कांचु के “ जेणे  
अर्हां कृष्णानुं रूप कर्युं हहुं तेज तपारो पुत्र आ प्रयुम्न ठे. ” ते सांजलीने तर-  
तज प्रयुम्न मातापिताना चरणमां नभीने हाथ जोकी योद्धो के “ हुं तपारो  
पुत्र ज्यां सुधी सर्व यादवोने कांडक अपूर्व चमत्कार न वतावुं त्यांसुधी तमे मौनं  
रहेजो. ” ते सांजलीने ते वन्नेए तेने आद्विंगन करीने तेलुं वचन स्वीकार्यु.

पत्री प्रयुम्न पोतानी माताने रथमां वेसामीने चाढ्यो, अने शंख वगामी-  
ने यादवोने क्षोज्ज पमाडतो सतो ते योद्धो के “ हुं आ रुक्मिणींहुं हरण करुंदुं,  
तेथी जो कृष्णानुं वळ होय तो तेनी रङ्गा करो. हुं एकलोज सर्व वरीओनो नाश  
करवा सर्पथ दुं. ” एम योद्धतो ते गाम वहार नीकव्यो, ते वस्ते कृष्ण विचार्यु  
के “ जस्तर आ कोइ मायावी मने पण वेतरीने मारी पत्नींहुं हरण करी जाय ठे,  
माटे पारे तेने हण्वो जोइए. ” एम विचारीने सर्व आयुधो अने सैन्य सहित ते  
तेनी पात्रळ गया. प्रयुम्ने तरतज सर्व सैन्यने जग्न करी दझे हाथीने दांतरहित  
करे तेम कृष्णाने पण शश्रहित करी दीधा, तेथी कृष्ण खेद पायवा द्वाग्या.  
एट्ट्वे तेज वस्ते नारदे आवीने तेनो संशय दूर कर्यो. पत्री प्रयुम्न आवीने पिता-  
ना चरणमां पड्यो अने योद्धो के “ हे पिता ! मारो अपराध कङ्गा करो. मे मात्र  
कौतुकने माटेज आ चमत्कार वताव्यो ठे. ” पत्री कृष्ण हर्ष पूर्वक मोटा उत्सवयी  
पुत्रने पुरप्रवेश कराव्यो.

ए अवसरे छुर्योधने आवीने कृष्णाने कांचु के “ मारी पुत्री अने तपारा  
पुत्र जानुनी वहु ( तपारी स्तुपा ) तेलुं कोइए हरण कर्यु ठे, तेथी तेनी शोध  
करो. ” कृष्णे कांचु के “ शुं करीए ? घणी शोधी पण कांड पत्तो द्वागतो नवी. ”  
एम कहीने खेद पायेद्वा पिताने जोइने प्रयुम्न योद्धो के “ हुं हमणा मारी चि-  
द्याथी तेने शोधीने अर्हां द्वावुं दुं, तमे खेद करद्वा नहीं. ” एम कहीने तरतज  
ते कन्याने ते द्वाइ आव्यो. पत्री कृष्णे तदा छुर्योधने कांचु के “ हे प्रयुम्न ! तुंज

आ कन्याने परण, ” ते वोट्यो के “ ते योग्य नहीं, जानुकुमारनेन परणयो, ” आ प्रकारनो तेनो उदार आशय जोइन अनेक विद्याधरोए तथा राजाश्चोए प्रयुम्नने पोतपोतानी कन्याओ आपी.

एकदा सत्यनामाने अति कृष्ण अने छुःसिन जोइन कृष्णे तेने पूर्खुं के “ केम तने शुं छुःख हे ? ” त्यारे ते वोट्यो के “ प्रयुम्न जेया पुन्हेन हुं इच्छुं बुं.” कृष्णे कर्णुं के “ तारी चिता हुं दूर करीश, ” पछी कृष्णे चरुर्व तप करीन हस्तिंगमेपि देवतुं आराधन कर्णुं, एव्वेतेणे प्रगट घडने इच्छित पुन्हेन आपनारो हार तेने आप्यो अने अदृश्य थयो, ते हारभासितुं स्वस्य प्रयुम्नना जाणयापां आव्युं, एव्वेतेणे मायाधी जांबूती माताने सत्यनामा जेवी करीने कृष्ण पासे मोक्षी, हरिए तेना कंठमां ते हार नोखने तेनी साये क्रीमा करी, ते वसते देवयोगे स्वर्गमांधी च्यवीन कोइ देवता जांबूतीनी कुक्किमां अवतर्यो, पछी हर्षपाद-ती जांबूती पोताना महेद्वमां गइ, घोर्नीवारे सत्यभाषा ज्ञेयने पाटे कृष्ण पासे आवी, त्यारे कृष्णे विचार्युं के “ अहो ! आ स्त्री हजु वृप्ति पामी नयी, तेथी फरीने आवी जणाय ठे. खीओने कामनी शांति होती नयी ते वात सत्य हे. ” एम विचारीने तेनी साये पण तेणे क्रीमा करी, ते समय जोइन प्रयुम्ने भंजा क-गाढी, जेथी कृष्ण कोञ्ज पाम्या, पछी तेणे सत्यनामाने कर्णुं के “ तारे पुत्र घंये. ” प्रातःकाळे जांबूतीना कंठमां पेक्षो हार जोइने कृष्णे विचार्युं के “ खेरसर गइ रात्रे प्रयुम्नेन आ पर्वं च रच्यो होय एम जणाय ठे. ” एम विचारी कृष्णे मौनज रात्रा, अनुक्रमे समय आवतां जांबूतीए सांव नामना पुन्हेन जन्म आप्यो, अने सत्यनामाए जीरक नामना पुन्हेन जन्म आप्यो, वद्वे कुमारो अनुक्रमे दृष्टि पामी वाळक्कीडा करवा द्वाग्या, तेपां सांव जीरकने हंमेशां व्हीवरादत्तो, तेथी एकदा सत्यनामाए कृष्णने कर्णुं के “ मारा पुत्र निरंतर सांव व्हीवरावे ठे. ” कृष्णे ते वात जांबूतीने कही के “ तारो पुत्र अन्यायी संजलाय ठे. ” जांबूती वोट्यो के “ ना, मारो पुत्र तो न्यायी ठे. ” कृष्णे कर्णुं के “ आपणे तेनी खाली कर्णुं. ” पछी कृष्णे आजीसुं ( जस्तामनुं ) रूप व्हीर्णुं, अने जांबूतीने आजीरीरुं रूप द्वेवराव्युं, पछी दहीं वेचवाना मिष्ठी चाहाता चाहाता वे घने पुन्हा दरवाजा पासे आव्या, त्यां साये तेमने जोया, एव्वेतेणे आजीरीने कर्णुं के “ अहीं आव, मारे दहीं द्वेव्युं ठे. ” एम कहीने देने एक शून्य परमांबद्ध जडने सांव कांक्ष कहेवा द्वाग्यो,

त्यारे ते घड़ेए पोतानुं स्वरूप अकस्मात् प्रगट कर्युं, ते जोइने सांब द्वजा पामी जतो रहो, पड़ी कृष्णे जांचुतीने कर्युं के “तारा पुत्रनो चण्ठा तें प्रत्यक्ष जोइ?” ते घोड़ी के “मारो पुत्र तो जोडो हे, आ तो तेनी वालकीना हे.” कृष्णे कर्युं के “खंरी वात डे, सिंहण पोताना वाल्कने भद्र ने सौन्धन माने हे.” पड़ी वीजे दिवसे सांब हाथमां एक खीझी राखीने चैंटामां जतां कृष्ण तथा सर्व द्वोक्तो सांजदे तेम वोध्यो के “गङ्ग काढ़नी मारी वात जे प्रगट करशे तेना मुखमां आ खीझी मारवी हे.” ते सांजलीने कृष्णे तेने गाम वहार जता रहेवानो हुकम कर्यो. त्यारे सांब प्रद्युम्न पासेथी केटड्वीक विद्या शीखीने नीकली गयो. पड़ी जीरुकने प्रद्युम्न हंमेशां पीमा करवा द्वाख्यो. एटड्वे तेने सत्यनामाए कर्युं के “हे शत ! तुं पण सांबनी जेप केम गामपांयी जतो नयी ?” प्रद्युम्न वोध्यो के “हे माता ! क्यां जाउं ?” ते वोध्यो के “स्मशानमां.” फरीथी तेणे पूर्युं के “हे माता ! हुं पाडो क्यारे आवूं ?” ते वोध्यो के “ज्यारे हुं सांबने हाथ पकड़ने गाममां द्वावूं त्यारे तारे आवूं.” ते वोध्यो के “दहु सालं आपनी आङ्गा मारे प्रमाण हे.” एम कही प्रद्युम्न सांबनी पासे गयो. पड़ी सत्यभामा अलंत हर्ष पामी, अने पोताना पुत्रने योग्य एवी नयाएु कन्याओ तेहे एकडी करी (मेलडी); सो कन्याओ पुरी करवाना विचारी ते एकने माटे शोध करवा द्वागी, पण क्यांइ मली नहीं. आ वात प्रद्युम्नना जाणवामां आवी. तेथी ते मायावदे जितशतु नामनो राजा कन्यो, सांबने पोतानी कन्या वनावी, अने मायावी सैन्य वनावूं. एवी रीते ते द्वारकानी वहार आवी पकाव नांखीने रहो. ते वात सत्यभामाए सांभली, एटड्वे तेणे ते कन्यानी मागणी करी. त्यारे जितशतु राजाए कर्युं के “जो मारी पुत्रीने सत्यनामा पोते हाथे पकड़ने गाममां द्वृ जाय, अने विवाह वरते मारी कन्यानो हाथ जीरुकना हाथ उपर रखावे तो हुं मारी कन्या आवुं.” ते वात सत्यनामाए करुल करी. पड़ी ते कन्याने हाथे पकड़ीने सत्यभामा गाममां द्वृ जवा द्वागी; ते वरते सर्व पौरजनों सांब अने प्रद्युम्नने<sup>१</sup> जोइने कहेवा द्वाख्या के “अहो ! पोताना पुत्रनो विवाहोत्सव होवायी सत्यनामा रांव प्रद्युम्नने मनावीने वेर लङ जाय हे.” पड़ी सत्यनामाने वेर जड़ने चतुर दुखियाला सांबे जीरुकनो जमणे हाथ पोताना दावा हाथ उपर राखीने

१ सत्यभामा जितशतु राजा ने तनी कन्यातु दृप देखती हृतो अने नगरजनो तेने शाव प्रद्युम्नने स्वे देखता हृता, ते तेनो दिग्गजो चमत्कार हृतो.

पक्षयो, अनेनवाणु कन्याओना जमणा हाथने पोतानां जमणा हाथधी पक्षया, एवी रीते युक्तिवी एष कन्या साथे फेरा फरीने सर्व कन्याओने सर्व परएयो. पड़ी ते कन्याओ ताथे सर्व वासगृहमां गयो. तेनी पाडल जीरक आव्यो, एट्ट्वे सर्व तेनी पासे पण पोतातुं मूळ स्वरूप प्रगट करी भुक्टी चकावीने जोयुं, तेथी भय पामीने जीरक जाप्यो अने माता पासे जड्ने ते वात करी. एट्ट्वे गाजरी वनेव्ही सत्यजामा वासगृहमां गइ. तेने पण सर्व मूळ रूप घताव्युं; एट्ट्वे ते क्रोध-यी वोझी के “ अरे धृष्ट ! तने अर्हीं कोणे आएयो ? ” त्यारे सर्व वोझो के “ हे माता ! तमेज मने गाममां द्वाव्या ठो, अने आ नवाणु कन्याओ साथे पण तमेज मने परणाव्यो ठो. ते वावतमां आ सर्व पौरजनो साझी ठो. ” ते सांजलीने भामाए पौरजनोने पूज्युं, त्यारे तेऽप्पोए सांवतुं वचन सत्य कर्युं. आवी सांवनी अ-कलित माया जोइने अत्यंत रोपातुर घयेझी जाया द्वाचार घड्ने निश्चास मूळी पोताना गृहमां गइ. आवी रोते उल्लना वल्ली सांव नवाणु खीओनो पति घयो. सर्वे याद्यो सांव तथा प्रवृत्तनने सर्वोत्कृष्ट मानवा द्वाग्या.

एकदा कोइ राजाए श्रीकृष्णने एक जातिमान अभ्य जेट तरीके मोक्षयो. ते वस्त्रे सांव अने पालक ए वे पुत्रोए आवीने पिता पासे ते अभ्यनी मागणी करी. एट्ट्वे कृष्णे कर्युं के “ काङ्गे तमारा वेमांधी जे श्रीनेमीनाथने प्रथम वंदना करये तेने आ अभ्य हुं आपीश. ” पडी पालक कुमारे तो रात्रिना पात्रद्वे पहोरे उठीने मोटेथी शळ करीने पोताना भृत्योने उउड्या, अने तेमने तैयार करी साथे छाइने प्रातःकाळ यतां सौधी प्रथम जड्ने प्रज्ञुने वंदना करी. पछी त्यांधी पाढ्यो आवीने पिताने ते वात करीने अभ्य माग्यो. त्यारे कृष्णे कर्युं के “ प्रज्ञुने पूज्यीने पडी आपीश. ” अर्हीं मध्य रात्रि गया पडी सांव जाय्यो हतो; पण ते पापनीरु द्वाव्याधी पोताने स्थानेज रहीने जगवान्तुं ध्यान करी तेने नम्यो. प्रातः काळे समय यतां सर्वे प्रज्ञुना समवसरणमां गया. प्रज्ञुने वंदना करीने कृष्णे पूज्युं के “ हे स्वामी ! आजे आपने प्रथम कोणे वंदना करी ? ” प्रज्ञु वोस्या के आजे जब्यवंदनयी पालक कुमारे प्रथम अमने वांद्या हतो अने सांवकुमारे जाव वंदनयी प्रथम यांद्या हता. ” ते सांजलीने कृष्णे. सांव कुमारे जाव अन्यदा प्रज्ञुनी देशनाधी प्रतिवेष पामी-

व्याख्यान ३५४ मुं. जब्य प्राणी प्रयत्नवदे प्रतिवोध पासे डे ते विषे. ( ३६४ )

अने अनुक्रमे गिरनार पर्वत उपरे<sup>१</sup> सुक्ति पास्या.

“सावे पञ्चनुं आंतर ध्यान कर्यु तेयी ते वंदनतुं फळ पास्यो, अने पाद्मके साक्षात् पञ्जने वांद्या उतां पण ते फळ पास्यो नहीं; माटे पंडित पुरुषो वाह विधि करतां आन्यंतर विधिने वल्लान माने डे.”

इत्यद्विनपरिमितोपदेशमासादवचो चतुर्विंशतितमस्तंजस्य  
त्रिपंचाशदधिकविशततमः प्रवंधः ॥ ३५३ ॥

## व्याख्यान ३५४ मुं.

जब्यप्राणी प्रयत्नवडे प्रतिवोध पासे डे ते विषे.

चिढ्ठण्या वहूपायैः, स्वस्वामी प्रतिवोधितः ।

समानधर्मश्रद्धान्निर्दपतित्वं च शोन्नते ॥ १ ॥

नावार्थ—“ चेक्षणा राणीए यणा उपायथी पोताना स्वामीने प्रतिवोध पास्यो हतो, केमके समान धर्मनी अस्थाथीज दंपतिपाण शोने डे. ”

थ्रेणिक राजानी कथा,

राजगृह नगरमां थ्रेणिक राजा राज्य करतो हतो. ते वौंधर्धमनो रागी हो-वाथी वौंध साखुओनी निरंतर उपासना करतो, हंमरां वौथाद्वयमां जड्ने अद्वापूर्व-क तेनो धर्मोपदेश सांजलो, अने पत्री घेर आवीने पोतानी चेक्षणा राणी पासे वौंध धर्यनी नित्य प्रशंसा करतो. वौंध गुरुए पोताना शिष्यवर्गने एवुं समजावी रास्तुं ढतुं के “ ज्यारे हुं प्रजातसमये प्रच्छन्न चूमियृह ( ज्ञायरा )मां जड्ने वेसुं,

१ सिद्धाचक उपर भाड्वा ढुगरे साईं आठ कोड मुनि साथे परगण शुद्धि १३ शे सिद्धिपद पास्यालो श्रद्धेजय महात्मादिक्षा उक्षेत्र डे.

त्यारे तमारे मारा दर्शन माटे आवेद्धा राजादिक प्रत्ये कहेहुं के—गुरु तो हमेशा हैं—  
न्यादिकने उपदेश करवा माटे स्वर्गमां जाय दे, अने पात्रा त्यांथी अहीं आवे दे.”  
एकदा थ्रेणिक राजा त्यां आव्या, त्यारे तेणे गुरुने देखया नहीं, एटद्वे तेना शिष्यों  
ने पूछुं के “ गुरु क्यां छे ? ” तेओ बोद्ध्या के “ गुरु तो आकाशमार्गे इन्द्रनी  
पासे गया दे. ” ते वार्ता राजाए चेद्वणा पासे आवीने तेने कही, पण आवककुळ-  
मां चत्पन्न थयेद्वी चेद्वणा जन्मधीज जैनधर्मी होवाथी गजाना वचनपर तेने वीक्ष-  
कुल थद्वा आवी नहीं, एक दिवस राजा आग्रहथी चेद्वणाने पण साथे लाइने  
बौध गुरुना मकाने गयो, त्यां जती बखते चेद्वणाए पोताना सेवकोने डानी रीते  
शीखवी राख्युं के “ ज्यारे अमे बौद्धाद्वयमां वेसीए त्यारे राजा न जाए तेम  
तमारे ते बौद्धाद्वयमां पाउळना ज्ञान्यी अग्नि सलगाववो. ” अहीं राजा  
तथा राणी शिष्यना मुखथी गुरुनुं स्वर्गमां गमन आगमन सांजळीने  
थोकीवार त्यां वेत्रा, त्यारे राणीए राजाने कहुं के “ हे स्वामी ! आजे तो आपणे  
थोकीवार वधारे अहींज वेसीए, अने स्वर्गथी उत्तरता गुरुने जोइने पड़ी जड़ए. ”  
ते वात अंगीकार करीने राजा राणी सहित त्यां वेत्रो, तेवामां तो ते मकानमां अ-  
ग्नि द्वागवाथी जपञ्चांत थयेद्वा ते बौद्धाचार्य एकदम भूमिग्रहमांथी नीकळीने  
बहार आव्या, त्यां राजा तथा राणीने जोइने नीचुं मुख राखी लज्जित थंया,  
एटद्वे राजाए पूछुं के “ हे गुरु ! आजे तेम स्वर्गमां गया हता के नहीं ? ”  
गुरु बोद्ध्या के “ ना, आजे तो हुं स्वर्गे गयो नथी, पण हमेशना अन्यासथी शि-  
ष्योए तमने स्वर्गे गयानुं कहुं हजो. ” पड़ी राजा राणी सहित पोताना महेद्वमां  
आव्यो, पण राजाना मनमां अनेक तर्कचिर्तक थवा द्वाग्या; तेथी राजाए राणीने  
पूछुं के “ आजे थयुं कुं ? अकस्मात अग्नि क्यांथी प्राणी नीकळ्यो ? मने तो ते  
अग्नि मूकाव्यो होय एम जणाय दे. ” त्यारे चेद्वणा बोद्धी के हे स्वामी ! एक  
वार्ता कहुं ते सांजळो—

“ कोइ एक गाममां वे वाणीया रहेता हता, ते वनेनी स्त्रीओ एक साथे  
गर्जिणी थइ, त्यारे तेमणे परस्पर निश्चय कर्यो के “ आपणी स्त्रीओमां एकने पुत्र  
अने एकने पुत्री थाय तो ते वनेनो विवाह करवो. आ प्रमाणे निश्चय करीने  
परस्पर ते सरत लाखी दीधी, पड़ी समय आवतां एक स्त्रीने पुत्री थइ अने दी-  
जीने सर्प अवतर्यो, ते वने अतुक्रमे युवावस्था पास्या, त्यारं सर्पना पिताए राजानी  
समक्ष पोतानो ल्लेख चढावी न्याय करावीने ते सर्प साथे पेक्षानी कन्यानो विवाह

व्याख्यान ३५६ अं. जब्त माणी प्रयत्नमें प्रतिवौध पोषे दे ते विषे। ( ३७१ )

कराव्यों, रात्रे ते दंपती शयनगृहमां गया, त्या जूदा जूदा पदांगपरे मुता, तेवामां ते सर्पना शरीरमांथी एक दिव्य कांतिमान पुरुष नीकल्यो, तेणे ते कन्या साथे क्रीडा करी, पडी ते पांगे तेज सर्पना शरीरमां समाइ गयो, ए प्रमाणे हमेशां थवा द्वाग्युं, ते बात ते खीए पोताना स्वजनोने कही, त्यारे एक लभ्यदक्ष ( त्रुदिमान ) पुरुषे कह्युं के “ ज्यारे ते सर्पना कद्देवरने मूकीने कन्यानी साथे क्रीडा करवा जाय त्यारे ते सर्पना कद्देवरने तत्काळ अग्रिधी वाळी मूकवृं. एट्ट्वे ते सर्पना कद्देवर विना शेंमां प्रवेश करशे ? पडी ते तेज दिव्य स्वरूपे रहेशे. ” ते सांजळीने कन्याना आसुननोए ते प्रमाणे कर्युं; तेथी ते देवकुमार तेज स्वरूपे रह्या. ” आ प्रमाणे हे स्वामी ! ज्यारे तमारा गुरु हमेशां स्वर्गे जता हशे, त्यारे ते दिव्य अने मझादिक रहित एवं देवना जेवुं नवीन शरीर करीने जता हशे अने मूळ देहने, शवसूपे अहीं मूळी जता हशे, ते विना जवाय नहीं; तेथी में एवा हेतुयी अग्नि मूकाव्यो हतो के जो तेनुं मूळ शरीर सर्पना कद्देवरनी जेम जस्म यइ जाय, तो तेना दिव्य स्वरूपनुं ज हमेशां सर्वने दर्शन थाय, एट्ट्वे वहु श्रेष्ठ थाय, केमके ढोकोत्तर स्वप्ननुं दर्शन अति फुर्झन्न डे. पण ते मारो अज्ञिप्राय पार पड्यो नहीं, अने अग्निनी ज्वालायी पराज्ञव पामेज्ञा ते तो घरमांथीज चिह्न वचन अने वदनवाला वहार नीकल्या, माटे हे राजा ! स्वर्गे गमनागमननी सर्व बात असत्यज मानवा योग्य डे. ” आ प्रमाणे राणीए कहेल युक्ति सांजळ्या डतां पण धूतना वचनथी व्युद्ग्राहित यथेका चित्तवालानी जेम राजाए जरा पण वौच्छगुरुपरना दृष्टिरागनो त्याग कर्यो नहीं कह्युं डे के—

### कामरागस्नेहरागावीपत्करनिवारणी ।

दृष्टिरागस्तु पापीयान्, उरुच्छेदः सतामपि ॥ १ ॥

“ कामराग अने स्नेहराग ए बेने निवारण करवामां वहु थोकी महेनत पके डे, तेनुं निवारण सहेजे यइ शके डे; पण पापिष्ठ एवो दृष्टिराग तो संतुरुपोथी पण फुःखे तजी शकाय तेवो-डेदाय तेवो डे. ”

अन्यदा राजाए वौच्छगुरुने जोजन माटे निमंत्रण कर्युं. ते जमवा आव्या त्यारे राणीए तेनां उपानह ( पगरखां ) पोताना सेवक पासे गुप्त रीते मंगावी तेना सूक्ष्म कक्षा करी तेनुं चूर्ण शाक चिंगरेमां खवर न पके तेम जेळवी दीधुं, जोजन

करती बखते गुरुए ज्ञोजनना स्वादने द्वीधि कांइ पण जाएयुं नहीं। ज्ञोजन करी रखा पर्डी पोताने स्थाने जती बखते गुरुए चेतरफ पोतानां उपानहूँ शोध्यां, पण हाथ क्षाण्या नहीं, त्यारे चेष्टणाए राजाने कस्तुं के “हे स्वामी ! तमारा गुरु इन्हानी डे के नहीं ? जो इन्हानी होय तो उपानहूनी शोध जामाट करे डे ? इन्हीज जाणी द्वे के क्यां डे ? अने जो अङ्गानी डे, तो हमणां जेमेज्ञा ज्ञोजनने-तेना नामने पण चूल्ही जशे, माटे हे राजा ! आ दांनिक माणसो झुं जाणी शके ? समग्र विचारमां निपुण तो जैन मुनिअओज होय डे.” पर्डी गुरु तो खेद पामी पोताने स्थाने गया, घेर पहोंच्या के तरत कंड मुधी ज्ञोजन करेल्हुं होवाथी तेमने बमन थयुं, तेमां चर्मना सूख ककमाओ नीकव्या, एटक्के गुरुए राजाने बोझाधीने ते वात कही। राजाए कस्तुं के “अमारा ज्ञोजनमां पवो कोइ जातनो दोप धारजो नहीं。” पर्डी ते वात राजाए राणी पासे आवीने कही, एटक्के राणी बोझी के “तमारा गुरु इन्हानीना नामयो पूजाय डे, तो एटक्कुं पण जाणी शक्या नहीं के मारां उपानहूँ मारा उदरमांज डे.” ते सांचलीने राजा भैन रखो.

द्वे राजाए चेष्टणाने पोताना धर्मनी द्वेषिणी जाणीने तेनो गर्व दूर करता माटे एकदा पोताना सेवकोने कस्तुं के “तमे भक्षानमां जड्नेत्यांथी कोइ तर-तरुं मरेल्हुं वाळकरुं शब ज्ञावीने रसोइयाने आपो.” सेवकोए ते प्रमाणे कर्यु, एटक्के राजाए ते शबना मांसादिक युक्त क्षीर विंगेरे ज्ञोजननी सामग्री तैयार करावी। पर्डी अनुचरोने जैन मुनिने आमंत्रण करता माटे मोक्ष्या, चेष्टणाए अनुमानधी कांइक हृकीकत जाणीने राजाने पूछयुं के “हे स्वामी ! आजे तमे चंचल चित्तवाळा अने उत्सुक केम जाणाओ गो ?” राजाए कस्तुं के, “राज्यादिकनी चित्ताधी, बीजुं कांइ नथी.” पर्डी राजा रसोक्षामां जड्ने बेठो, अने राणी साधुने आववाना मार्गे गोखर्मा बेठी, घोर्नीवारे राजाना सेवके बतावेज्ञा मार्गे एक मुनिने आवता जोया, ते बखते राणीए विचार कर्यो के “आ निःसृहू मुनि मारी सामुं पण जोये नहीं, केमके ते इर्या समिति शोधवा माटे नीजुं जोइनेज चाक्षे डे, तेथी कांइक युक्ति कहं के जेथी ते मारा सामुं जुप.” एम विचारीने ज्यारे मुनि ते गोखर्नी नीचे आव्या, त्यारे राणीए उंचा हाथ करीने वारीनां वारणां एकदम खखमाव्यां, एटक्के मुनिए उंचुं जोयुं, तेने तत्काळ नमन करीने चेष्टणाए प्रथम वे अंगठीओ अने पर्डी त्रण अंगठीओ देखावी, ते जोइने मुनिए एक अंगठी देखाकी, आ

व्याख्यान ३५८. मुं. जन्य माणी प्रयत्नवके प्रतिवोध पामे डे ते विषे. ( ३७३ )

संकेततुं तात्पर्य ए डे के—राणीए आंगढ़ीनी संज्ञायी गुरुने पूछ्युं के ‘तमारे वे ज्ञान छे के ब्रण ? ’ तेना जवाबमां मुनिए एक आंगढ़ी वतावी, एट्टेवे ‘ब्रण उपरांत एक ज्ञान वथारे डे अर्थात् चार ज्ञान डे.’ एम साधुए वताव्युं तेवी राणीए हर्ष पामिने फरीयी फीटा वंदन कर्युं. पड़ी मुनि राजानी पाकशालामां गया. राजा बहु-मानवी मुनिने ते बाल्कना मांसवालुं जोजन वहोराववा लाग्यो, एट्टेवे मुनिए ज्ञान-दृष्टिं ते जोजन अनद्य अने अयोग्य जाणीने राजाने कर्युं के “हे राजा ! आ जोजन अमारे योग्य नथी. अमे मुनिओ निर्दोष आहार ग्रहण करीए डीए.” राजाए कर्युं के “हे पूज्य ! आ आहार शी रीते दूषित डे ? राजाने घेर निष-जेझो होवायी ते शुद्धज डे; जो कदाच दूषित होय तो तेनो दोप प्रगट करो.” त्यारे मुनि बोध्या के “हे राजा ! तमे करावेलुं काम तमे पोते प्रत्यक्ष जाणो डो, डतां शामाटे कपट करो डो ? तमने ए योग्य नथी. मुनिओने तो अचित्त आहार पण जो दोपवाळो होय तो ते कद्यपतो नथी; तो पड़ी निरंतर जेमां जीवो उत्पन्न थाय तेवो बाल्कना मांसथी बनेझो आहार तो तेने शी रीते कद्ये ? ” आ प्रमाणे मुनिनां बचन सांजलीने संपूर्ण विश्वास आवायी राजाए ते ज्ञानी मुनिने वं-दना करीने कर्युं के “हे पूज्य ! तमारं ज्ञान, तमारो धर्म अने तमारी सर्व क्रिया-ओ सत्य डे.” इत्यादि जैनधर्मनी प्रशंसा करीने हर्षथी सम्प्रकृत्य सन्मुख थेझो राजा चेक्षणा पासे आवीने बोध्यो के “हे प्रिया ! तारा गुरु परम ज्ञानी डे. मैं आजे तेनी परीक्षा करी.” एम कहीने चेक्षणाना पूज्यायी राजाए सर्व उत्तांत कही संजलायो. ते सांजलीने चेक्षणा बोझी के “हे स्वामी ! एवा निःस्पृह ज्ञानीनो अंत न लेवो. केमेके ते मुनिओ बौद्धना साधु जेवा नथी. बौद्धाचार्य तो जोजनमां आवेजा सूक्ष्म चर्मना खंडोने खाती वेळाए मुखादिकना सर्वशी पण जाणी शक्या नहीं.” पड़ी राजाए ते वखततुं स्वरूप पूछ्युं. त्यारे राणीए वधी वात खरेखरी कही दीधी.

आ रीते अनेक गुक्कियी राणीए बोध करीने राजाने जैनधर्ममां रसिक बनायो, पड़ी अनुक्रमे श्री महावीर स्वामीनी देजना विग्रेथी श्रेणिक राजा जैन धर्ममां स्थिर थयो.

आ दृष्टां जेवुं सांजल्यामां आव्युं तेवंज द्विधी दीधुं डे.

“ आ श्रेणिक राजानी कया संज्ञलीने जैनर्धमना तखने जाएनार माणसोए वीच, शाक्य, वेदांति अने कणादादिक एकांतवादीना कुर्घर्मनो त्याग कर्वो । ”

इत्यद्विनपरिमितोपदेशप्रासादवृत्ती चतुर्विंशतिमस्तंभस्य  
चतुर्पंचाशादधिकत्रिशततमः प्रवंथः ॥ ३५४ ॥

## व्याख्यान ३५५ सुं.

तीर्थस्तवना विषे.

शत्रुंजयादितीर्थानां, प्रत्यूषे समयेऽनिशम् ।

विद्यात् स्तवनां जन्तुः, सर्वाघोषप्रणाशिनीम् ॥ १ ॥

नावार्थ—“ हंमेशां प्रांतःकाळे दरेक शाणीए सर्व पापना समूहने नाश करनारी शत्रुंजयादिक तीर्थोंनी सुन्ति कर्वी । ”

पूर्वचार्यों नीचे प्रमाणे शत्रुंजयादि तीर्थोंनी सुन्ति करेही देए—

## तीर्थराजस्तवना.

रांजादनाथस्तनन्नूमिज्ञागे, युगादिदेवांग्रिसरोजपीडम् ।

देवेन्द्रवन्द्यं नरराजपूज्यं, सिद्धाचब्बाग्रस्थितपर्वयामि ॥ २ ॥

आदिप्रज्ञोर्दक्षिणदिग्विज्ञागे, सहस्रकूटे जिनराजमूर्तीः ।

सौम्याकृतीः सिद्धतीनिजाथ, शत्रुंजयस्थाः परिपूज्यामि ॥ ३ ॥

आदिप्रज्ञोर्बृक्षसरोरुद्धाच, विनिर्गतां श्रीत्रिपदीमवाप्य ।

यो छादशार्णीं विद्धे गणेशाः, स पुंमरीको जयताच्चिवाद्रौ ॥ ४ ॥

चउद्दिसाणं सयसंखगाणं, वावन्न सहियाणगणाहिवाणं ।

सुपाउआ जत्थ विराजमाणा, सञ्जुंजयं तं पणमामि निवं ॥ ५ ॥

श्रीसूर्यदेवेन विनिर्मितस्य, श्रीसूर्यकुमस्य जडप्रज्ञावात् ।  
 कुष्ठादिरोगाथ समे हानशयन, नरो जघेत् कुर्कुटतां विहाय ॥ ५ ॥  
 विभवयोद्योतकरा गुणाद्वया, महार्घ्यमाणिक्यसुकुक्षिधारिका ।  
 मतंगजस्था मरुदेविमातृका, विराजते यत्र गिरौ विशेषतः ॥ ६ ॥  
 यत्रैव शैले खद्वु पञ्च पांचवा, युधिष्ठिराद्या विजितेन्द्रियाथ ।  
 कुन्तासमं विशतिकोटिसाधुनिः, सार्थं शिवर्द्धि च सपाससादिरे ॥ ७ ॥  
 नमिविनभिमुनीन्द्रावादिसेवापरौ यौ, गगनचरपती तौ प्रापतुर्मेषद्वद्वमीम् ।  
 विमद्वगिरिक्वरे वं कोटियुग्मपिनिश्च, सह हि विमद्वयोधिमासिपुष्टयेकहेतू ॥ ८ ॥  
 विमद्वगुणसमूहैः संभृतथान्तरात्मा, स्वपदरमणजोक्ता दर्शनझानर्थता ।  
 निखिलशमधनानां तिष्ठनिः कोटिनिथ, सप्तममृतपदर्द्धि श्राप्तुयादत्र रामः॥ ९ ॥  
 सौराप्लदेशे खद्वु रत्नतुड्यं, सत्तीर्थयुग्मं परिवर्तते च ।  
 शशुद्धयाख्यं गिरिनारसंदं, नपाम्बदं तदवहुमानन्नकत्या ॥ १० ॥  
 अण्टतनाणीण अनंतदंसिणे, अण्टतमुखाण अण्टतवीरिणे ।  
 वीसं जिणा जत्य शिवं पवना, समेयसेद्वं तमहं युणामि ॥ ११ ॥  
 प्रगेऽहनिंशं संस्तुतं वासवाद्य—जिनं नानिन्नपादवंशावतंसम् ।  
 श्रेयऽष्टपदे प्राप्तपूर्णात्मतत्त्वं, सुसौजाग्न्यद्वद्वमीप्रदं द्योतिमंतम् ॥ १२ ॥  
 कद्याणकन्दोङ्गवनैकमेयं, सप्तस्तजीवोद्धरणे कुमं तम् ।  
 स्फुरत्पतापं महनीयमूर्तिं, श्रीमालदेव्यं वृपनं च वन्दे ॥ १३ ॥

### । इति तीर्थराजस्तवना ।

“जे सिद्धाचल उपर रायणना वृक्ष नीचे देवेन्द्रोए वंदन करेद्वुं तथा चक्रवर्तीए पूजेद्वुं एवं युगादिदेव श्री आदीश्वरनुं चरणकमळरूपपीउ रहेद्वुं वे, तेतुं हुं अर्चन करुं दुं. १. जे शशुंजय गिरिपर आदीश्वर प्रज्ञुनी दक्षिण दिशायां सहस्रकूटनी अंदर सौम्य आकृतिवाली १०७४ तीर्थकरोनी मूर्तिंओ रहेद्वी वे, तेतुं हुं पूजन करुं दुं. २. श्री कृष्णन स्वामीना मुखकमळी नीकलेद्वी त्रिपदीने पामीने जैमणे धादशांगीनी रचना करी एवा शशुंजयपर रहेद्वा श्री पुंमरीक गणधर जयने पामो. ३. ज्यां ( प्रज्ञुनी जावी वाजुए ) चौद हजार ने वावन गणधरोनी पांचका-ओ विराजमान वे ते शशुंजयगिरिने हुं नित्य प्रणाम करुं दुं. ४. जे गिरिपर

सुर्य देवे निर्माण केद्वा सूर्यकुरुना जळना प्रजावधी कुष्टादिक व्याधिओनो समूह नाजा पामे छे, तेपज कुक्रापाणि पामेद्वो जीव पालो मनुष्यपणाने पामे छे, ( चंद-राजानी जेम ) ते शशुंजय गिरिने हुं प्रणाम करुं दुं. ५. जे गिरि उपर व्रण विश्वमां उद्योतने करनारा, गुणोना स्थानरूप अने अमृत्यु रत्न ( कृष्णभद्रेव ) ने कु-क्षिमां धारण करनारा एवा हाथीपर वेदेद्वा मरुदेवी माता विराजे छे ते गिरिने हुं नमन करुं दुं. ६. जे पर्वतपर जितेच्छिय एवा युधिष्ठिर विग्रे पांचे पांडवो कुं-ता मातानी साथे वीशा करोम सायुओ सहित मुक्तिपदने पाम्या छे ते पर्वतने हुं नमुं दुं. ७. जे गिरिलिपर नमि अने विनमि नामना मुनीन्द्रो के जेओ विद्याध-रना राजाओ हता तथा श्री आदिनायनी सेवा करनारा हता, तेओ वे करोम सायुओ सहित मोक्षनी लक्ष्मीने पाम्या, ते विमलगिरि अमने विमल ( निर्मल ) वोधनी प्राप्ति अने पुष्टीना हेतुरूप थाओ. ८. जे गिरिपर निर्मल गुणोना समूहथी जेनो आत्मा परिपूर्ण थयो छे, अने जे निरंतर आत्मिक सुखमां रमण करनारा अने तेना भोक्ता छे, झानदर्शनने धारण करनारा छे तथा समतारूप धनवाला ते एवा रामचंद्र व्रण करोम मुनिश्चानी साथे मोक्षस्थाननी समृच्छने पाम्या छे ते अद्विने हुं वंदना करुं दुं. ९. सौराष्ट्र देशमां शशुंजय अने गिरिनार ए वे तीर्थ अमृत्यु रत्न तुर्व्य वर्ते छे, तेने हुं वहुमान पूर्वकञ्जक्तियी प्रणाम करुं दुं. १० ज्यां अनंत झानवाला, अनंत दर्शनवाला, अनंत सुखवाला अने अनंत वीर्यवाला वीश तीर्थ-करो शिवपदने पाम्या छे ते संपेतगिरिनी हुं सुति करुं दुं. ११. निरंतर प्रातः-काळ देवेन्द्रोए सुति करेद्वा, श्रीनान्निराजाना वैशना अब्लंकार रूप श्रीकृष्णदेव जे पर्वते पर सौनाम्य द्वादशीने आपनारा धोतिमान् पूर्ण आत्मतत्त्वने [सिद्धिपदने] पाम्या छे ते अष्टापद पर्वतनो हुं आत्रय करुं दुं. १२. कल्याण रूप कंदने उत्पन्न करवामां अद्वितीय भेव समान, समस्त जीवोनो उच्चार करवामां समर्थ, स्फु-रणायमान भ्रतापवाला अने पूज्य मूर्तिवाला मरुदेवीना पुत्र श्री कृष्ण स्वामीने हुं वंदना करुं दुं. १३.”

शशुंजय तीर्थना प्रजाव संवंधी एक कथा डें ते नीचे प्रमाणे—

क्षितिप्रतिष्ठ नामना नगरमां सांतु नामे भंत्री हुतो. ते एकदा वेसाने रथवार्हाए गयो हुतो. त्यांवा पांग वळतां पोसे करावेला सांतुवस

चैत्यमां देवने वांदवा माटे हाथी परथी नीचे उत्तरीने प्रवेश करतां तेणे ते चैत्यमां रहेनारा एक भेतांवर साखुने कोइ वेश्याना स्कन्ध उपर हाथ राखीने उचेज्वादीउ, तेम डतां पण मंत्रीए उच्चरासंग करीने गाँतम गणधरनी जेम पंचांग नमस्कार पूर्वक तेने वंदना करी, पत्री एक क्लणवार रहीने फरीदी नमन करी मंत्री पोताना घर तरफ गयो.

तेमना गया पछी ते साधु पोताना छुराचरण्यी बज्जा पामीने जाणे पातासमां पेसवानी इच्छा करता होय तेम अस्त्यंत खिन्ह थङ् गया. पछी तेज वखते सर्व बस्तु विगेरेनो त्याग करीने थ्री हेमचंकसूरि पासे जङ्ग तेमणे फरीदी दीक्षा कीधी. पछी वैराग्यनावथी पूर्ण थयेद्वा ते साधुए थ्री शशुंजय गिरि ऊपर जङ्गने बार वर्ष मुधी तप कर्यु. एकद्वाते मंत्री शशुंजयनी यात्रा करवा माटे गयो. त्यां ते साधुने जोइने 'आपने मे पूर्वे कोइ वखत जोयेद्वा ते' एम कहीने वंदना करी. पत्री तेमना पवित्र चारिथी प्रसन्न थयेला मंत्रीए ते मुनिने तेमना गुरु कुळ विगेरे पूर्वु. एट्वेतेमणे मंत्रीने कर्यु के "तत्त्वथी तो तमेज मारा गुरु छो." ते सांजलीने अजाएयो मंत्री कान आमा हाथ राखीने वोद्धो के 'अरे पूज्य ! एवु न बोझो.' मुनि वोद्धा के-

जो जेण सुखधम्ममिं, ठाविओ संजएण गिहिणा वा ।

सो चेव तस्स जायङ्, धम्मगुरु धम्मदाणाओ ॥

"मुनिए अथवा गृहस्थीए जेणे जेने शुद्ध धर्ममां स्वापन कर्यो होय तेज तेने धर्मदान आपचाथी तेनो धर्मगुरु जाणवो." एम कहीने ते मुनिए पोतानु मूळ उच्चांत कही तेने धर्ममां दृढ कर्यो.

चैत्यनो नंग करनारे शुं करवुं ? ते विषे.

चैत्यन्नंगाच्च यद्भुःखं, द्वव्यं तस्य द्वयः कथम् ।

नूयश्चैत्यविधानेन, तत्पापं विद्वयं व्रजेत् ॥ १ ॥

जावार्य—“चैत्यनो एट्वे जिनपतिपानो अथवा जिनमंदीरनो नंग करवाथी जे छुःख ( पाप ) प्राप्त थाय ते श्री रीते क्रुय पामे ? आ प्रक्षनो

जवाब ए डे के ते पाप फरीने चैत्य करावबाधी नाश पामे छे. ” ते उपर दृष्टान्त थे ते नीचे प्रमाणे—

महादनपुर ( पालनपुर )मां महादन नामे राजा हतो. ते एकदा अर्दुदाचल ( आशुर्पर्वत ) जोवा गयो. त्यां तेणे कुमारपाल राजाए करावेदो श्रीपार्वनाथ स्थापीनो प्रासाद जोयो. ते प्रासादमां श्रीपार्वनाथ स्थापीनी रूपानी प्रतिमा जोइने राजाए तेने जांगी महादेवनो पोउरीयो करावीने शिवाज्ञयमां स्थापन कर्यो. त्यांधी राजा पोताने घेर आव्यो के तरतज राजाना शरीरमां गङ्गाकूण ( ऊसा कोड )नो व्याधि उत्पन्न थयो. ते व्याधिधी राजाना देहमां घणी बेदना घबा लागी. राजाने गंगा विगेरेना तीर्थजलयी स्नान करावृद्ध तीपण व्याधि शांत थयो नहीं. तेथी ते अत्यंत व्याकुल थयो. एकदा राजाए कोइ मुनिने रोगनी जांतिनो उपाय पूछयो, त्यारे मुनिए कृष्ण के—

स्वतिश्रीयांशाम गुणान्निराम, शुचामसंताननवांहिष्ठ ।

जाग्रत्प्रतापं जगतितदेवत्र, श्रीपार्वदेवं सततं थ्रय त्वं ॥ ? ॥

यदीयमूर्तिर्जविनो समस्तं, निहंत्यवं दृष्टिपथावतीर्ण ।

शैद्वेऽर्दुदेस्यापिततीर्थनाथं, श्रीपार्वदेवो वितनोति सौख्यं ॥ २ ॥

“हे राजा! कल्याण अने संपत्तिना स्थानज्ञन, सकल गुणोथी विराजमान, अने जेना चरणकमळने इन्द्रोनो समूह पण प्रणाम करे डे, तथा जेनो प्रताप जगतमां निरंतर जागृत डे एवा श्री पार्वनाथ प्रज्ञातुं तमे निरंतर सेवन करो, जेनी मूर्ति मात्र दृष्टिमार्गमां आवबाधी पण जब्य माणीओना सम्प्र पापने हणे डे, एवा आशु पर्वतपर स्थापन करेदा श्री पार्वनाथ प्रज्ञ सर्व माणीओने सुखना आपनारा डे. ” हे राजा ! तमे आ पुरमांज एक नवीन चैत्य करावीने तेमां श्री पार्वनाथनी मूर्ति स्थापन करी हुमेशां दंन रहित निर्पल नक्षिथी तेनी पूजा करो, तेथी तपारा रोगनी जांति थगे. वढी हे राजा ! प्रतिमादिकना नंगतुं भायश्चित्त सांच्छो—

मोटी प्रतिमा बढ़ी गङ्ग होय, नाश पापी होय अथवा तेनी कोइए चोरी करी होय, तो मूळ मंत्रनो एक द्वाष जाप करीने वीजी प्रतिमा स्थापन करावायी ते पापनी शुद्धि थाय थे. एक द्वाष उच्चर्षी विव पर्मे तो मूळ मंत्रनो दश हजार जाप करीने पड़ी पूजा करवी. वे हाथ उच्चर्षी पडे

थयो होय तो एक द्वाख जाप करीने फरीधी संस्कार करवायी गुण्ड थाय. पुरुष-प्रमाण उचाइयी प्रतिमा पमी होय अने शब्दाका सर्वथा विशीर्ण थइ होय तो तेनुं प्रायश्चित्त नयी, एव्वेके शब्दाकानो जेद थाय तो नवीज प्रतिमा कराववी पदे. स्वंमित्रादिकमां पण देवोनुं आवाहन कर्या पत्री पूजानुं कार्य विसर्जन कर्यु न होय त्यां सुधीमां जो प्रमादधी विवने उपयात थाय, तो पूजादिवके मंत्रने संहरीने मूल मंत्रनो पांच हजार जाप करी पात्रदान आपी फरीधी सर्व अर्चा-पूजा करवी. देवना उपकरणने पगवमे स्पर्श थयो होय तो पांचसो बार मंत्रजाप करवो. प्रतिक्रमणनी क्रियानो द्वोप थयो होय तो व्याधि विनानाए उपवास करीने मूल मंत्रनो सोबार जाप करवो, अने व्याधिवाळाए मात्र सो बार जापन करवो. एक दिवस देवपूजा न थइ होय, तो त्रण उपवास करीने त्रणे दिवस त्रणसो त्रणसो बार जाप करवो. अजाणतां निर्मात्र्यनुं नक्षण थइ गयुं होय तो दश हजार जाप करी विशेषे पूजा करवी, अने जाणीने निर्मात्र्यनुं नक्षण कर्यु होय तो एक दक्ष नवकारनो जाप करीने पांच उपवास करवा.

निर्मात्र्यना पांच जेद ठे. देवस्य, देवद्वय, नैवेद्य, निवेदित अने निर्मात्र्य. तेमां देवने माटे आपेक्ष ग्रामादिक देवस्य कहेवाय छे. देव संवंधी अद्विकारादिक देवद्वय कहेवाय छे. देवने माटे कव्येक्ष पदार्थ नैवेद्य कहेवाय छे. देवने माटे कव्यीने तेमनी पासे घोखुं निवेदित कहेवाय छे, अने प्रज्ञ पासे धर्या पछी वहार नांखी दीधेखुं-रपानो लीधेखुं निर्मात्र्य कहेवाय छे. ते पांचे प्रकारना निर्मात्र्यने सुंपत्तुं नहीं, ओळंगतुं नहीं, कोइने आपत्तुं नहीं तेमज वेचतुं नहीं.<sup>१</sup> केमके कोइने आपवायी राक्षसजातिमां जन्म थाय छे, खावायी चांमाळ जातिमां जन्म थाय छे, ओळंगवायी कर्यसिद्धिमां हानि थाय छे, सुंववायी वनस्पतिकायमां जन्म थाय छे, स्पर्श कस्त्वायी त्वीपणुं प्राप्त थाय छे, अने वेचवायी जिद्वयोनिमां जन्म थाय छे. पूजामां दीपतुं अवद्वेकन करतां तथा धूप अन्नादिक धरतां तेनो गंध आवे तेनो दोप नयी, तेमज नदीना प्रवाहमां नांखेद्वा पुष्पादिक निर्मात्र्यना गंधथी पण दोप द्वागतो नयी. -

मरणना तथा जन्मना सूतकयाळाने घेर जमयुं नहीं. अजाणतां खवायुं

<sup>१</sup> योताना संवंधने आपत्तुं नहीं अने योंत इत्र मेलववा वेचतुं नहीं. एम समजड़; देरासरना माये लोज़कने आपवायामां तेमज देवद्वयनो वृद्धि माटे वेचवायामां वाय समजवो नहीं.

होय तो एक उपवास करीने मूळ मंत्रनो एक हजार जाप करवो, जाणीने जोजन कयु  
होय तो तण उपवास करीनि त्रण हजार जाप करवो, पोतानेज धेर सूतक आब्यु  
होय तो सूतकी माणसनो स्वर्ण तजी देवो अने जूदी रसोइ करावीने जम्हुं; नहीं  
तो प्रतिक्रमण देवपूजा विंगे नित्यकर्मनी हानि थाय डे, धर्मां स्थित रहेझा, क्रियार्मा  
आसक्त, झानचाला अने व्रतचालाए सूतकमां पण नित्यकर्मनी हानि करवी नहीं,  
अर्थात् प्रतिक्रमण देवपूजादि कर्या विना रहेहुं नहीं, कोइ माणस नित्यकर्म क-  
रतो न होय अने प्रमादथी (अजाणता) सूतकीनो स्वर्ण करे, अथवा समुदाय  
माटे रांधेझा अनाजनुं जोजन करे तो एक उपवास अने हजार जापयी ते शुभ  
थाय डे; पण जो जाणीने स्पर्शादिक कर्यु होय तो तेथी लणगणुं प्रायश्चित्त करवुं.  
एक दिवसनी पूजानो दोप थयो होय तो मूळ मंत्रनो दश हजार जाप करवो अ-  
थवा उपवास करीने सोवार जाप करवो। ”

आ प्रमाणे मुनिए कहेझो प्रायश्चित्तनो विधि सांजळीने राजाए तत्त्वज  
श्री पार्खनाथनुं चैत्य करावी तेषां श्री पार्खनाथ स्वामीनी कांचनमय मूर्ति स्थापन  
करी अने हंमेशां तेनी जक्ति पूर्वक पूजा करवा मांझी, तेना प्रजावधी अनुक्रमे राजानो  
सर्व व्याधि नष्ट थयो.

“ पावणपुरना प्रद्वाद नामना राजाए जक्तिवके जे पार्खनाथनी मूर्तिनुं  
निर्माण कर्यु ते मूर्तिना स्नाननुं जल अन्य राजाने पण पर्या (खस) व्याधिनो नाश  
करनार थयुं, प्रद्वादनपुरमां प्रद्वादन नामना चैत्ययो विराजेझा प्रद्वादन नामना  
पार्खनाथ स्वामी चंडनी जेम प्राणीओने प्रद्वाद (हर्ष) करनारा थनाथी जगतमां  
सार्थक नामचाला थया, ”

इत्यद्विनपरिमितोपदेशप्राप्तादवृत्ती चतुर्विंशतितमस्तंभस्य

## व्याख्यान ३५६ सुं.

धर्मना माहात्म्य विषे.

जिनधर्मं समाराध्य, चूत्वा विभवन्नाजनम् ।

प्राप्ताः सिद्धिसुखं ये ते, श्लाध्या मंगलकुञ्जवत् ॥१॥

नावार्थ—“ जिनधर्मनुं आराधन करीने सर्व संपत्तिनुं स्थान घड़ जेओ सिद्धिसुखने पाम्या डे तेओ मंगलकल्पनी जैम प्रशंसा करवाने योग्य डे. ”

मंगलकुञ्जनुं दृष्टांत.

उज्जयिनी नगरीमां वैरासिंह नामे राजा हतो. ते नगरीमां धनदत्त नामे धर्मनी रुचिवाळो एक शेठ हतो. तेने पुत्ररहित सत्यनामा नामनी खी हती. एकदा पुत्रनी चिंताथी म्लान मुखवाला शेठने जोझने सत्यनामाए तेने पूछयुं के “ हे नाथ ! तपोर चिंतातुर थवानुं शुं कारण डे ते कहो. ” त्यारे शेठ पुत्र-चिंतानी चात कही. ते सांजलीने ते बोझी के “ हे स्वामी ! सुखने इच्छनार माणसे एवी चिंता शामटे करवी ? तेणे तो आ बोकमां तथा परद्वोकमां सुखने आपनार धर्मनीज सेवा करवी. ” आ प्रमाणेनो प्रियानो उपदेश सांजलीने तेने सत्य मानीने हर्ष पामेझो श्रेष्ठी पुष्पादिकवडे देवपूजा करवा विगेरे अनेक धर्म-कार्ये करवा द्वाग्यो. धर्मना प्रजावधी तुष्टमान थयेझी शासनेदद्वीए तेने इच्छित वरदान आप्युं; तेथी सत्यनामाए गर्ज धारण कर्यो. अनुक्रमे समय पूर्ण थतां तेणे एक पुत्रने जन्म आप्यो. ते पुत्रनुं स्वप्नने अनुसारे मंगलकुञ्ज एवुं नाम पाक्षुं. ते पुत्र अनुक्रमे दृच्छि पामी कद्वान्यास करवामां तत्पर थयो. तेना पिता हंमेशां देवपूजाने माटे पुष्पादिक लेवा उद्यानमां जतां तेनो निषेध करीने मंगलकुञ्ज हं-मेशां पुष्पो द्वावीने पिताने आपवा द्वाग्यो. ते पुष्पोथी पिता अने पुत्र बने पूजा करता हता. आ प्रमाणे धर्मान्यास करे डे तेवामां जे बन्युं ते सांभळो—

चंपापुरीमां महावाहु नामे राजा हतो. तेने गुणावली नामे राणी हती. ते राणीथी उत्पन्न थयेझी द्वावण्यना रसनी जाणे पेटी होय तेवी स्वरूपदान-

बैद्योक्षयसुंदरी नामे तेने पुत्री हत्ती. ते युवावस्था पामी त्यारे राजाए विचार्यु के “मारी पुत्रीने योग्य वर कोण मळशे ? ” पड़ी राजाए पोताना सुखुदि नामना प्रधानने बोद्धावीने कहुं के “में तारा पुत्रने मारी बैद्योक्षयसुंदरी आपी भे तेमां तारे कांइ पण बोद्धवुं नहीं.” ते सांजली प्रधाने घेर जड़विचार कर्यो के “राजानी पुत्री तो साक्षात् रति जेवी भे, अने मारो पुत्र तो कुष्ठना व्याधिवालो भे. ते जाण-तां उतां हुं ते बचेनो योग जी रीते कर्ह ? ” पड़ी पोतानी बुच्छियीज उपाय शोधीने प्रधाने गोत्रेदेवीनी आराधना करी. त्यारे देवी पण प्रत्यक्ष धड़ने बोद्धी के “हे प्रधान ! तास पुत्रने कर्मना विषाकथी कुष्ठ रोग थयो भे, तेथी ते मटी जाके तेम नयी; केमके जोग्य कर्म अवश्य ज्ञोगवृंज पर्फे भे. तोपण तारा कार्यनी सिद्धि माटे तारी जक्किथी प्रसन्न थयेद्दी हुं आ पुरीने दस्वाजे रहेनार अश्वर-कुकनी पसे टाढ़धी पीका पामतो अने असिनी इच्छावालो कोइक वाल्क द्वा-दीने मूकीजा. ते वाल्कने तारे ग्रहण करवो.” एम कहीने देवी अन्तर्धान यइ. पड़ी मंत्रीए विवाहनी सामग्री तैयार करवा मांडी, अने ते अश्वरकुकने बोद्धावीने कहुं के “अमुक दिवसे जे वाल्क तारो पासे आवे तेने गुप्त रीते मारी पासे द्वावजे.” एम कहीने अश्वरकुकने रजा आपी.

हवे ते गोत्रेदेवीए पण उज्जिनी नगरीमां जड़ने पुष्पो लाइने घर तरफ जता ते मंगलकुंजने उद्देशीने आकाशवाणीथी कहुं के “आ वाल्क राजानी कन्याने जामे परणारे.” ते सांजलीने मंगलकुंज विस्मय पामी घेर आब्यो. वीजे दिवसे पण तेज प्रमाणे सांजलधुं, त्यारे तेणे विचार कर्यो के “आजे घेर जड़ने आ आकाशवाणीनी बात पिताने कहीजा.” आप विचार करे भे तेऽद्वामां तो तेने ते देवीए चंपापुरीनी पासेना बनमां मूर्ख्यो, एट्डे ते जमतो जमतो अश्वपालनी पासे गयो. अश्वपाले तेने गुप्त रीते लाइ जड़ने मंत्रीने सौंप्यो. मंत्रीए तेने देवकु-मार जेवो सूपवान जोइने हर्ष पामी एकांतमां राख्यो. एकदा मंगलकुंजे सचिवने पूछ्यु के “हे पिता ! मने परदेवीने शामाटे गुप्त स्वाने राख्यो भे ? ” मंत्रीए तेने कपटथी कहुं के “तने राजानी पुत्री बैद्योक्षयसुंदरी साथे परणावयो भे, तेने परणीने पड़ी तुं मारा कुष्ठना व्याधिवाला पुत्रने ते राजपुत्री आपजे. आ कार्य पार्ट तने अहीं द्वाववामां आब्यो भे.” ते सांजलीने मंगलकुंज बोद्धयो के “कुलने कदंक लगा मनारुं अकृत्य हुं जी रीते कर्ह ? मुग्ध जनने कूवामां उतां-

रीने दोरखु काषी नाखवा जेवु ए अकार्य हुं तो नहीं करं।” मंत्रीए कहुं के “ रे मूर्ख ! जो आ काम तुं नहीं कर तो हुं मारा हाथयीज तने मारी नाखीश। ” ते सांजलीने ते वाल्क बुच्छिरूप नेत्रयी विचारीने वोद्यो के “ हुं तमारा कहेवा प्रपाणे करं, पण राजा हस्तमेलाप वखते जे वस्तु आपे ते वधी तमारे मने आपत्ति। ” मंत्रीए ते बात कबूल राखी। पत्री ब्रह्मदिवसे शुज समये मोटा आमंत्रयी मंगलकुंज राजपुत्री साथे परएयो। तेना हस्तमेलाप वखते राजाए जातिवंत पांच अभ्यो विगेरे पहेरामणीमां तेने आप्या।

विवाह थइ रहा पत्री मंत्री राजपुत्रीने तथा मंगलकुंजने पोताने घेर दइ गयो। थोड़ीवारे मंगलकुंज देहचित्ताए जवानुं मिप करीने शयनगृहयी वहार नीकल्यो। तेनुं चपल चित्त जाणीने राजपुत्री पण जळपात्र दृश्ने तेनी पाड़ल गइ। देहचित्ताथी आव्या पत्री मंगलकुंजने आमण्टुमणो—चलचित्त जोइने राजपुत्रीए पूछहुं के “ हे नाय ! शुं तमने हुधा वाधा करे दे ? ” तेणे हा कही। एट्डे राजपुत्रीए दासी पासे पोताने वेरथी मोदक अणावीने तेने आप्या। ते खार्ता खार्ता पोतानुं स्थान जणाववा माटे मंगलकलश वोद्यो के “ उज्जिनी नगरीना जंल विना आ मोदक स्वादिष्ट द्वागता नथी। ” ते सांजलीने राजपुत्रीए आर्थर्य पामी-ने विचार्यु के “ अहो ! आ अध्ययमान ( असंगत ) वाक्य केम बोझे दे ? ” एम विचारीने तेणे पतिने सुगंधी तांबूल आप्युं। पत्री फरीथी ते देहचित्ताना मिपे वहार नीकलीने अभ्यो विगेरे झइ अवंती तरफ चाल्यो। अनुक्रमे अवंती पहोच्यो। तेना मात्राप तेने आवेद्यो जोइ शोकरहित थया। पत्री तेणे पोताना मातपिताने पोतानुं दृचांत कही संजलाव्युं।

आहीं मंत्रीए मंगलकलशनो वेष पहेरावीने पोताना पुत्रने राजपुत्री पासे मोकद्यो। ते कोढ़ीयो आवासन्नुवनर्मां जड़ने शय्या पर चमी राजपुत्रीने स्पर्श करवा द्वाग्यो। तेने जोइने तत्काळ ते राजपुत्री शयनगृहमांयी वहार नीकलीने दासीओ पासे बेवी, अने आखी रात्रि सेदयुक्त चित्ते त्यांन निर्गमन करी। प्रातःकाळे मंत्रीए राजा पासे जड़ने कहुं के “ हे स्वामी ! मारो पुत्र आपनी पुत्रीना स्पर्शयी कुष्ठी थयो होय एम जणाय डे। हवे शुं कस्युं ? ” ते सांजलीने राजा वोद्यो के कर्मनी गति विचित्र डे। कहुं डे के—

चिन्तयत्यन्यथा जीवो, हर्षपूरितमानसः ।

विधिस्त्वेष महावेरी, कुरुते कार्यमन्यथा ॥९॥

जावार्थ—“हर्षथी पूर्ण मनवालो धृत्यं जीव जे कार्य करवानुं चित्ये भेते आ महाशब्दु रूप विधि अन्यथा करे छे.”

हे मंत्री ! आमां मारी पुत्रीनोज दोप छे, तारा पुत्रीनो दोप नथी.” एवी रीते राजाए आश्वासन आपेक्षो मंत्री पोताने घेर गयो. राजाए पुत्रीना दोपने छीधे कोपथी तेने पोतानी पासे आववानो निपेथ कर्यो.

एकदा पितानो क्रोध ज्ञांत थयो, त्यरि ते पितानी पासे जड्ने बोझी के “ हे पिता ! मने पुरुषनो वेप आपो, हुं उज्जयिनी गयेहा मारा पतिने मळीने मारुं कदंक दूर करीजा.” राजाए तेने अनुमति आपी, एट्ड्वे ते केटलाक संख्य सहित सिंह नामना सापंतनी साथे उज्जयिनी गढ. उज्जयिनीना राजाए चंपापुरीनो राजपुत्र आध्याना समाधार जाणी तेने रहेवा माटे महेह विगेरे आपी तेनो संकार कर्या. एकदा पोताना उतारा पासेथी जता पोताना पिताना नामांकित अथो जोइने तेणे पोताना सेवकोने तेनी पाहङ्ग मोकझी ते अभ्यना स्वामीनुं नाम उप विगेरे पूड्याव्युं, ते माणसोना मुख्यी तेने हजु झाननो अन्यासी जालीने तेले सर्व ग्रामी सहित तेना अध्यापकोने जमवालुं निमंत्रण कर्युं, एट्ड्वे अध्यापक सर्व ग्रामोने बद्धने जमवा आव्या. तेनी ओंदर पोताना नर्तारने जोइने ते राजपुत्री घहुं हर्ष पामी. पर्ही सर्वतुं अशन वसनादिवर्म सम्मान करीने ते कुमाररूप राजपुत्रीए अध्यापकोने कर्युं के “ आ ग्रामांधी कोइ पण मारुं दृचांत जाणतो होय ते तमारी आङ्गाधी कही चतावे तेम करो.” ते सांजळीने अध्यापको तेसुं दृचांत जे जाणतो होय तेने कहेहानी आङ्गा आपी. एट्ड्वे मंगङ्गकुञ्जे ते पुरुषवेपने धारण करनार पोतानी पिया छे, एम ओळखीने सिंहसामंत विगेरे सर्वना सांजळता पोताना विवाह विगेरेतुं पूर्व दृचांत कर्युं. ते सांजळीने राजपुत्रीए सिंहसामंतने कर्युं के “आज मारो पति छे, अने तेने झोधवा माटेज हुं पुरुषनो वेप धारण करीने अर्ही आपो हुं.” सिंह साम्पते कर्युं के “ जो तेज तारो पति होय तो तुं निःशंकपणे तेनी सेवा कर.” पर्ही ए वात राजाने जाणावीने तेनी आङ्गाधी विद्वोक्तुंदरी खीनो वेप धारण करी पोताने सासरे गढ, अने तेनी साथे मंगङ्गकुञ्ज विज्ञास करवा द्यायो.

एकदा विद्वोकसुंदरीनी प्रेरणार्थी मंगलकलश राजानी आङ्गा लक्ष्मने चं-  
पा नागरीए गयो. त्यांनो राजा पण पोतानी पुत्रीना मुखथी तेनुं सर्व वृचांत . सां-  
जलीने हार्षित थड वोद्यो के 'हे पुत्री ! तें तारुं कलंक दूर कर्युं' पर्याप्त राजाए पेढा  
हुए कार्य करनार मंत्रीने मारखानो हुकम कर्यो. ते वखते मंगलकलशो विनंति करीने  
तेणे गोकाव्यो. पर्याप्त पुत्ररहित एवा ते राजाए मंगलकलशने राज्यपर वेसामी पोते  
यशोनंद्र सूरि पासे दीक्षा ग्रहण करी.

मंगलकलशने राज्यनुं प्रतिपालन करतां जयशेखर नामनो पुत्र थयो. एकदा  
जयसिंह नामना आचार्यने उद्यानमां आवेद्या सांजलीने मंगलकलशे प्रिया सहित  
गुरु पासे जइ तेमने वंदना करी, तेमनी देशना सांजल्या पर्याप्ति मंगलकलशे पूर्वुं  
के "गुरु ! हुं क्या कर्मयी आवा प्रकारनी विवाहविमंवना पाम्यो ? तथा क्या  
कर्मयी मारी प्रियाने दूषण प्राप्त थयुं ?" सूरिए कहुं के "पूर्वे क्रितिप्रतिष्ठपुरमां  
सोमचंद्र नामे एक कुलपुत्र रहेतो हतो. तेने श्रीदेवी नामनी पत्नी हती, अने  
जिनदेव नामनो एक श्रावक मित्र हतो. एकदा धनकांक्षी जिनदेव धन उपार्जन  
करवाना हेतुथी देशांतर जवा तैयार थयो; ते वखते तेणे पोताना मित्र सोमचंद्रने  
पोतानुं धन सात क्षेत्रमां वापरवा माटे आप्युं. तेना गया पर्याप्ति सोमचंद्रे मित्रना  
कहेवा प्रमाणे तेनुं इच्छ्य सात क्षेत्रमां खरच्युं. तेज पुरमां श्रीदेवीनी एक वहेनपणी  
जज्ञा नामनी हती. तेनो पति कोइक कर्मयी कुष्टी थयो. ते वात जज्ञाए एक वखत  
पोतानी सखी श्रीदेवीने कही. त्यारे श्रीदेवीए हास्य करीने कहुं के "हे सखी !  
वारा संगथी. तारो पति कुष्टी थयो." ते सांजलीने जज्ञा पोताना मनमां अति  
छुळ्खी थइ. ते जाणीने थोक्की वारे श्रीदेवी वोद्धी के "हे सखी ! खेद न करीश,  
मैं तो तेने मदकरीमां कहुं डे." एम कहीने तेणे जज्ञाने आनंदित करी. पर्याप्ति  
साधुना संगथी तमे दंपती आप्यर्धम पामी तेनुं पाळन करी समाधिवर्मे. काळ  
करीने सौधर्मे देवद्वोकमां उत्पन्न थया. त्यांथी आयुष्य पूर्ण थतां चवीने सोमचंद्रनो  
जोव हुं राजा थयो, अने श्रीदेवीनो जीव विद्वोकसुंदरी थयो. ते पूर्व जवे परद-  
व्ययी पुण्य उपार्जन कर्युं हहुं; तेथी आ जवमां जामावके हुं राजपुत्रीने परण्यो;  
अने आ तैद्वोक्यसुंदरीए हास्यथी पण सखीने कक्षक आप्युं हहुं, तेथी आ जवे  
कक्षक प्राप्त थयुं.

आ प्रमाणे गुरुना मुख्यी पोतानो पूर्वजय सांतळीने विरक्त ध्येया ते  
दंपतीए पोताना पुनरे राज्य सौपीने गुरु पासे दीक्षा दीधी। पत्री अतिचार र-  
हित चास्त्रिनुं पाक्षन करीने अंते ते वने काळ करीने त्रिल देवकोक्तमां देववा थ-  
या. त्यांधी चरीने अनुक्रमे अव्यय, अनर, अजय अने समग्र आत्मसंपत्तिना  
आविर्जावर्णप्रति शोकपदने पामदो।

॥३५६॥

इत्यद्विनपरिमितोपदेशप्राप्तादृच्छा चंतुर्विशतितमस्तंजस्य  
पद्पंचाशदधिकत्रिशततमः प्रवंधः ॥ ३५६ ॥

## व्याख्यान ३५७ मुं.

—  
—

युह पट्टावल्ली.

पद्विंशद्युणरल्लाढ्यः, सोधर्मादिपरंपरः ।

युहुपट्टकमो ध्येयः, सुरासुरनरेः स्तुतः ॥ १ ॥

जावार्ष—“ मुर, अमुर अने मनुष्योए स्तुति करेद्दो तथा उत्रीश गुण-  
रूपी रत्नोद्यी आड्य एवो श्री सुधर्मादिक गणपतेनी परंपरावालो गुरुपट्टनो ऋम-  
ध्यान करवा योग्य डे. ”

गुरु ( आचार्य ) परंपरानो क्रम हीरसौजाग्य काव्यमां कहेद्दो डे. ते प्र-  
माणे अहीं वसीए डीए.

श्री वीरजिनेश्वरने इन्द्रजूति विंगेरे अगियार उचम गणभरो हुता. ते-  
ओ जाणे प्रथम शिवे दग्ध करेद्दो कामदेव पर्वतीना लग्नमां फरीवाँ। प्रगट धयो  
तेने हण्डानी। इच्छा राखनार अगियार रुज ( शिव ) प्रगट धया होय  
देवा शोनवा हुता. ते गणधरोमां श्री वर्धमान स्थापीना, पट्टने थाण करवामां धुर्य  
एवा श्री शुधर्मा स्वामी थया. ‘ जगतमां दृपम विना वीजो कोण धूसरीना स्था-

नने अवश्यं चन् आपे ? ' ते सुधर्मा स्वामीना पट्ट उपर यशद्वद्धमीवडे कुंदपुष्पने तथा शंखने पण तिरस्कार करनार जंबूस्वामी थया. बाल्क एवा पण जेनाधी पराज्ञव पामेद्वां कामदेव जाणे वज्जा पाम्यो होय तेम अदृश्य यइ गयो. ते जंबूस्वामीना पट्टनी द्वाद्धमीने चंद्रमुखी खीने जेम तिक्षक शोजावे तेम प्रजवस्त्वामीए शोभावी, के जे प्रजवस्त्वामीए चोररूप यइने पण सार्थवाहनी जेम, माणीओने कव्याणकारी एवी मोक्षद्वद्धमी प्राप्त करावी, ते अति आश्रय डे. त्यारपछी ते प्रजवस्त्वामीना पट्टने विताना सिंहासनने जेम राजा शोजावे तेम शश्यंजव स्मामी शोजावता हवा, जेमना कंठपीठमां मुक्तामणिनी मालानी जेम सर्व विद्याओ स्फुरणायपान थइने शोजी रही हती. त्यार पडी सिंह जेम पर्वतना शिखरने शोजावे तेम तेमना पट्टने कीर्तिरूपी आकाशगंगावरे दिवाओने पूर्ण करता एवा श्री यशोज्ञसूरि शोजावता हवा. त्यार पडी जेम श्रावण मासनो भेघ जळटृष्टियी कदंव, जंबू अने कुट्ठ वृक्षोना वनने पद्मवित करे तेम श्री यशोज्ञद स्वामीना पट्टने श्री संजूतिविजय आचार्यं पोतानी शोजाथी अलंकृत कर्यु. त्यार पडी ते संजूतिविजयना सतीर्थ्य ( गुरुज्ञाइ ) ज्ञज्वाहु आचार्यं समग्र आगमना पारदर्शी थया, जेमणे वज्ररत्ननी खाणमांथी वज्ररत्ननी जेम दशाशुतस्कन्धमांथी कद्यमूत्र उप्तर्यु. त्यार पछी ते संभूतिविजय तथा भद्रवाहु स्वामीनी पद्मद्वद्धमीने पोताना वंशरूपी उमुद्धमां कौस्तुज्जमणि जेवा श्री स्यूद्वज्ञद स्वामीए यशाथी त्रण द्वोक्तनी जेम शोभावी. त्यार पडी सारथिना रथने वहन करवामां वे वृपन होय तेम ते स्थूलज्ञदना पट्ट उपर अतुक्रमे धर्मवुराने धारण करनारा आर्यमहागिरि तथा आर्यसुहस्ति थया. त्यारपडी ते आर्यसुहस्ति मुनीन्द्रना पट्टने विष्णुना पादकमरूप आकाशने सूर्यन्दुनी जेम श्री सुस्थितसूरि तथा सुप्रतिवद सूरि नामना तेमना वे शिष्योप सुशोन्नित कर्यु.

पूर्वे सुधर्मास्वामीने आरंजीने सुहस्तिसूरि थया त्यां सुधी साहुओनुं निग्रंव नाम हतुं, एट्डे निग्रंथगच्छ कहेवातो, अने आ वे सुस्थित तथा सुप्रतिवद्द्व सूर्खिना वशतयी वीजुं कोटिकण्ठ एवुं नाम थयुं. तेनो हेतु ए डे के ते सूरिप्रसूरि मंत्रनो एक करोन वार जाप कर्यो हतो.

त्यार पडी ते सुस्थित अने सुप्रतिवद सूर्खिनी पद्मद्वद्धमीना तिक्षकरूप मुनिओमां चक्रवर्तीं समान श्रीइन्द्रदिन्न आचार्य थया. तेमणे वलरामे यमुनानो पराज्ञव कर्यो

तेम दान्तिकण्ठानो परान्तव कर्यो हहतो. त्यार पडी अंगिरा तापसथी वृहस्पतिनी जेम ते इन्द्रदिन्न आचार्यवी घणा गुणवान थी दिन्नसूरि थया. तेमणे जेम नारायणे काङ्क्षनेमि असुरनो नाश कर्यो तेम रागनो नाश कर्यो हहतो. त्यार पडी क्रमे करीने जिनेश्वरना पादने "मस्तकवरे सर्पं करती एवी ते दिन्नसूरिनी पट्टवृक्षमीने ध्वजानो सपूह जेम प्रासादसपूहने शोजावे तेम सिंहगिरि नामना सूरीवरे शोजावी. त्यार पडी तेमना पट्टने मस्तकले माणिक्यनो मुकुट शोजावे तेम अङ्गान तथा पापना सपूहरूप पर्वतरुं दद्धन करवामा इन्द्रना वज्र जेवा थी वज्रमनु उल्लङ्घ शोजा पमारुता हया. त्यार पडी श्रीवज्रमनुना पट्टरूपी उदयाचल पर्वतनो चूलिका उपर सूर्य समान थीवज्रसेनसूरि थया. त्यार पडी चंद्रकुलना मूळ कारणभूत श्रीचंद्रसूरि थया. अर्द्धांधी चंद्रगच्छ एवुं त्रीजुं नाम थयुं. त्यार पडी जेम सरोवरना मध्य जागने प्रफुल्लित कमळ शोजावे तेम तरंगित करुणा रस-वाळा ते चंद्रसूरिना पट्टने सामन्तज्ञद सूरिए शोजाव्युं. आ सूरि प्राये बनमां रहेता हहता, तेथी तेमनाथी आ गच्छरुं वनवासीगच्छ एवुं चोरुं नाम थयुं. त्यार पडी सामन्त सूरिना पट्ट उपर वृष्टदेव सूरि थया, तेमणे कोरंटक नामना नगरमा नव्य प्राणीओना नेत्ररूपी पांधनी आजीविका ( विश्रामस्थान ) समान तथा पुण्यना पाक ( उदय )ने करनारी जाणे सत्रशाळा ( दानशाळा ) होय तेवी. श्री महावीर स्वामीनी मूर्ति स्थापन करी हहती. त्यार पडी औरस पुत्रवने जेम पितानो वेश उल्लङ्घ शोजा पामे तेम ते वृष्टदेव सूरिणे पट्ट त्रैक्षेत्रियनी लक्ष्मीना तिक्षक समान थी प्रदोतन नामना सूरिविके उल्लङ्घ शोजा पाम्युं. त्यार पडी गंगाना तरंग जेवो जेमनो वाभिक्षास डे एवा अने त्रुच्छिधी वृहस्पतिने पण नीतनारा श्रीमान्देव सूरिए सज्जामंस्पने सन्दर्य जननी जेम ते प्रदोतन सूरिना स्थानने अद्विकृत कर्युं. आ श्रीमान्देव सूरिने आचार्यपद आपती वखते तेमना स्कन्धपर साक्षात् सरस्वती तथा लक्ष्मीदेवीने जोइने " अहो ! अन्यायादिक प्रमादने सेवनार राजानो जेम - राज्यवी त्रिंश थाय डे तेम आ मानदेव राजादिकनो सत्कार पामीने चारित्रियी ज्ञाए - थझो. " एवी जांकाधी जेमनुं मन खेद पामनुं हहतुं एवा पोताना गुरु श्री प्रदोतन सूरिने जोइने नरेन्द्र, नागेन्द्र अने देवेन्द्रो पण जेमनी कीर्तिनुं गान करता हहता

१ जिनेश्वरां आदिषु द्वेशां परंपरावडे आ पट जिनेश्वरना पाद रूप थयो, अने आ पंडितमी आदि होगवी तहु मस्तक थयुं.



बालो कामदेव फरीथी युन्द करवानी इच्छावरे तीक्ष्ण आयुधवालो थयो. त्यार पडी तेमना पट्टस्त्री कमलमां हंस समान श्रीमान् जयानंद सूरि थया, जेमना हृदय-मां आगस्त्य मुनिनो अंजलीमां समुद्धनी जेम समग्र सिष्ठान्त समाइ गया हता. त्यार पडी तेमना स्थान पर रविप्रज्ञ नामना मुनीन्द्र थया, तेमनुं गुख चंद्रसमान आचरण करतुं हतुं, तेमना दांतनी कांति चंद्रनी ज्योत्स्नातुं आचरण करती हती, तेमनी भृकुटीनी बक्रता चंद्रमां रहेकी बक्रतातुं आचरण करती हती, अने वाणीनो विद्वास अवृत श्रवणातुं आचरण करतो हतो. त्यार पडी ते रविप्रज्ञ सूर्स्त्रा पट उपर श्री यशोदेव सूरि थया, तेमना वृद्धि पापता कीर्ति रूपी कीर्तिसागरे करीने जग-तुमां अर्द्धतना महिमाए करीने इतिओ ( उपदेवो ) नी जेम कृष्ण नीक्षादिक असित पदार्थां ऐ पोताना नामनो पण द्वोप कर्या हतो. अर्थात् आ आचर्यनी कीर्तिथी सर्व विश्व भेत थयुं हतुं, तेथी कृष्ण नीक्षादिक वर्णो जोवामां पण आवता नहोता. त्यार पडी तेमना पट उपर अद्वौकिक प्रद्युम्नदेव ( कामदेव ) समान प्रद्युम्न देव नामे आचार्य थया. कारणके ते आचार्य ज्ञवने ( संसारने ) जेदी नांख्यो हतो, अने कामदेव तो ज्ञवयी ( शिवयी ) जेदायो हतो. वली ते आचार्ये रति ( त्री विगेरे-नी प्रीति )नो त्याग ( नाश ) कर्या हतो, अने कामदेव तो रतिनो पति होवायी तेनो स्वीकारनार हतो; ते आचार्य मधु ( मध अथवा पद्म )यी दूर रहेका हता, अने कामदेव तो मधु ( वसंत )ना सहायनो इच्छक हतो, तेमन ते आचार्य-नी शूर्ति समग्र विश्वने आदर करवा योग्य मनोहर हती, अने कामदेव तो अनंग होवायी शूर्तिरहित हतो. माटे ते आचार्य नवीन कामदेवरूप थया हता. त्यार पडी पोतानी कीर्तिरूप चंद्रज्योत्स्नाकडे जेमणे त्रिलोकने धवलित कर्युं छे एवा श्री माननंदव सूरिए पञ्च, मंत्र अने उत्साह ए व्रष्ट प्रकारनी शक्तिवने राजानी द्वाष्टी-नी जेम ते प्रद्युम्न सूर्स्त्रा पट्टनी द्वाष्टीने शोज्ञा पमानी. ( आ त्रीजा मानदेव सूरि जाणवा ). त्यारपडी जेमना चरणकमलमां इन्जो तथा चंद्रो ब्रह्मर रूप थया छे एवा विमलचंद्र नामना सूरीधरयी शवुने ताप पमाननार प्रतापयी राजानी जेम ते मानदेव सूरिनुं पट द्वाष्टीने भोगवतुं थयुं. त्यारपडी तेमना पट उपर कामदेव समान प्रशस्त रूपवान अने आचार्योंने विषे चंद्र समान उद्योतन नामना सूरि विराजमान थया, के जेना पट्टने पारण ऋनारा दिग्जोनी जेवा आठ सूरीन्द्रो थया, आ सूरिए पोटा वट वृक्षनी नीचे आठ मुनिओंने सूरिपद आप्युं हतुं, तेथी तेमना वर्खतयी आ गच्छनुं वक्षगच्छ

अथवा वृहद्दगच्छ एवं पांचमुं नाम पमशुं, त्यारपत्री तेमना पट्ठ उपरजेमणे पोताना माहा-  
स्त्वके सर्वदेवोने नम्र करेद्वा वे एवा सर्वदेव नामना आचार्य वया, केजे तारानी  
थ्रेणीवर्म चंडनी जेम गुणोनी थ्रेणीवडे आश्रय करायेद्वा हता. त्यारपत्री तेना  
पट्ठ उपर गोने विषे निवास करनार, गौरखवर्म शोजावाला, वाणीना अधि-  
पति अने विशुद्धेए सेवाता एवा देवसूरि (वृहस्पति) ना जेवा श्रीदेव सूरि नामना  
आचार्य वया. त्यारपत्री मंदिरने दीवो शोजावे तेम तेना पट्ठने दोपोना उदयर्थी प्रगट  
ययेद्वा तम (अङ्गान अथवा पाप) ना विस्तारनो नाश करवा रूप व्यापारमांज त-  
त्पर ययेद्वा एवा श्री सर्वदेव सूरिए शोजाव्यु. ( आ वीजा सर्वदेव सूरि जाणवा ).  
त्यारपत्री तेमना पट्ठरूप आम्रवृक्षने सेवनारा पोषट अने कोयद्वनी जेवा श्रीमान् य-  
शोजद्र सूरि तथा मुनिअओने विषे थ्रेषु एवा श्रीनेमिचंद्र सूरि वया. त्यारपत्री ते वने  
सूरिना पट्ठ उपर अनेक शास्त्रोना रचनारा श्री मुनिचंद्र नामना सूरि वया.  
वायुनी अस्त्रवित गतिनी जेम तेमनी बुद्धि कोइ पण शास्त्रमां स्त्वद्वना पामती  
नहोती. चारित्र द्वेवाने इच्छता चक्रवर्ती जेम उ खंम पृथ्वीनो त्याग करे तेम आ  
सूरिए उ विगयनो त्याग कर्यो हतो. ते सूरि कोइ पण वखत पोताना शरीर उपर  
पण ममता करता नहीं, अने हमेशां एकज्ञाव ब्राह्मणी परावा मात्रनो आहार कर-  
ता हता. त्यार पत्री तेमना पट्ठ उपर देवोए उपर्सग कर्या उतां पण आ कोइ वखत  
जिताय तेवा नयी, ए हेतुथीज जाणे तेवा नामथी पृथ्वी पर प्रसिद्ध वया होय  
एम अजितदेव नामना सूरि वया. त्यार पत्री जगत्तेन पवित्र करनार देवनदी  
( गंगा )नो प्रवाह चंडमीलिं ( शिव )नी जगानो आश्रय करे, तेम ते अजितदेव  
सूरिना पट्ठने तपस्त्विअोने विषे सिंह समान अने जगत्तेन पवित्र करनार एवा श्री  
विजयसिंह सूरिए आश्रय कर्यो. त्यार पत्री इद्वाकु वंशने श्री ऋषन्तस्वामी-  
ना पुत्रो भरत अने वाहुवलिए जेम शोजाव्यो, तेम ते विजयसिंह सूरिना पट्ठने श्री  
सौम्यपञ्च तथा श्री मणिरत्न सूरिए शोजा पमानी. त्यारपत्री श्री मजगच्चंद्र सूरि  
वया, तेमणे ते वने सूरिना पट्ठरूपी द्वादशीना तिद्वकनी द्विद्वाने विस्तारी. ते सू-  
रिए जेम राजहंस मेवयी मद्विन ययेद्वा तळावनो त्याग करे, तेम कल्पिकाळना प-  
रिए जेम राजहंस मेवयी मद्विन ययेद्वा तळावनो त्याग करो. ते आचार्य वाद करवा

वृहस्पतिना विषे पणमां रूपी २ सूरिना पद्मां गारुद

एद्वे माहात्म्ये, यीजा पक्षमां इन्द्रादिक देवोने भण्यवदापी मुश्टुं ३ पहला रक्षनां पांडितो, यीजामां देवो.

४ रूद्धाना पक्षनां दोपा एद्वे रात्रि अने तम एद्वे धैर्यवार.

आवेदा वतीश दिगंबराचार्यों साथे वाद करवामां हीरकमणि (वन्नमणि) ने जेम अज्ञेय थया हुता, तेथी आधाट नगरना राजाए तेपनुं हीरदाजगच्छं सूरि एवं नाम प्रसिद्ध कर्युं हतुं. वळी जेम कोइ राजा मोटा युद्धोए करीने शतुओनो पराजय कर्या पडी जितकाशीनी संझा पामे, तेम ते आचार्य वार वर्ष सुधी अधिक्षनो तप करीने तपासुं विल्द पाम्या हुता. त्यार्यी आरंजीने जेम अत्रि फलिना नेत्रधी चंद्रबोरखा प्रगट थइ, तेम आ आचार्यधी तपागच्छ एवं वहुं नाम प्रगट थयुं; अने जेम बसंत मासधी मूर्यनी कांति अधिक देदीप्यमान थाय तेम आ आचार्यधी मुमुक्षु पुरुषोनी लक्ष्मी अधिक दीप थइ.

इत्यद्विनपरिमितोपदेशमासाददृच्छा चतुर्विशतितमस्तंजस्य  
सप्तपञ्चाशदधिकत्रिशततमः प्रवर्धः ॥ ३५७ ॥

व्याख्यान ३५८ मं.

तपागच्छ नाम पड्या पठीना आचार्येनी पट्टावली.

त्यारपछी श्री जगन्नाथ सूरिना पट्ट उपर विष्णुना बक्षःस्थल उपर कौ-  
सुन्नमणिनी जेम देवेन्द्रना कणोंमां आजरण रूप थतां यशोवदे त्रिजगतने उद्द-  
नासन करनार देवेन्द्र नामना सूरि शोन्तता हता, (आ सूरि कर्मयंथादिकला कर्ता  
जाणया), त्यारपछी तेना पट्ट उपर धर्मधोष मूरि थया, ते जाणे नागणीओए गा-  
यन करेझी ते आचार्यनी कीतिने सांजल्यामां रसिक थयेज्ञा नागाधिराजे ( शेष-  
नागे ) ते माटेज वे हजार चक्षुओ<sup>३</sup> धारण कर्या होय नहीं एवा थया, ते आ-  
चार्यना उपदेशयी बादशाहना भंत्री पुर्खीधेर जाणे पोतानी चोराशी ह्यातिग्रोनो  
उच्चार करवा माटेज होय नहीं एम तीर्थीकरेना चोराशी प्रासादो कराव्या, त्या-

१ संघं विभुवंडग सांभळे छ-तेसने कान जुदा होता नसी, तेथी अहो सांभळा माटे चप्पा कर्यातुं समजावे.

व्याख्यान ३५७ मुं. तपागच्छ नाम पड्या पडीना आचार्यनी पटावली। ( ३९३ )

सठी तेमना पट उपर पहुँच्योनी उष्टि रूप चकोरीने आहूदाद करवामां चंद्रनो कांति समान सोमपञ्च नामना सूरि थया, ते सूरिना संगथी शरद क्षतुना संगथी चंद्रज्योत्सनानी जेम चारित्रिक्षमी शोजती हती, त्यारपठी ते सोमपञ्च सूरिए पोताना पट उपर मुनिअओनी द्वाष्मीना देवीप्यमान तिक्षक समान सोमतिक्षक नामना सूरि-ने स्थापन कर्या, ते सूरिए बादमां अन्य वादीअोना समूहना मुखमां प्रतिपदा तिधिनी जेम अनध्ययता मूकी दीधी हती, आर्यत् तेमने वोद्वता वंथ कर्या हता, त्यारपठी ते सोमतिक्षक गुरुए पोताना स्थान उपर देव समान सुंदर शोजनावाळा श्री देवसुंदर सूरिने स्थापन कर्या, ते आचार्ये प्रातःकाळ जेम अंधकार सहित रात्रिनो नाश करे तेम आठ मद सहित मायानो नाश कर्या हतो, त्यार पठी तेमना पटने श्री-मान् सोमसुंदर गुरुए सेवन कर्यु, कोइ एक पुरुप के जेने आ आचार्यनुं माहात्म्य सांजळीने सूर्यने घुबरनी जेम अन्य धर्माओए देष्यी ते आचार्यने मारवा माटे मोक्ष्यो हतो ते पुरुप आचार्यने मारवा माटे तेना उयाश्ये गयो, त्यां चंद्रनी कांतिवर्ण विद्रमांथी तेणे जोखुं तो सुरि सुता सुता पण जीव्यातादिक प्रगाढथी रहित ठे एम दीहुं, एट्ट्वे के पाताना संयाराने तया तेनी आसपास रजोहरणवर्मे पूँजता जोया; ते जोझ्ने ते पुरुपे पश्चात्ताप करता सता गुरु पासे प्रगट थइ तेमने खमावीने पोतारुं दृत्यांत करुं; अने पठी गुरुना उपदेशयी प्रतियोध पामी दीक्षा दीधी, त्यार पठी जेम उत्पद्ध कमळनो विकास करवामां चतुर एवा शरदक्षतुना चंद्रविं-धमां प्राप्त थयेझी सूर्यनी कांतिवर्ण द्वोकोनां नेत्रोने अत्यंत भीति उत्पद्ध थाय ठे, तेप पृथ्वीवद्धयने प्रतियोध करवामां चतुर एवा मुनिसुंदर नामना सूरीन्द्रने थिए प्राप्त थयेझी सोमसुंदरसूरिनी पट्टवद्धमीए जब्य जनोना नेत्रोने अत्यंत भीति उत्पद्ध करी, आ सूरिए संतिकरं विगेरे स्तोत्रो वनावीने व्यंतरीनो उपद्रव शांत कर्या हतो, त्यारपठी कृपभदेव थकी जेम श्री पुंकरीक गणभर थया, तेम ते मुनिसुंदर सूरि थकी रत्नशेखरसूरि थया, ते सूरिने खंजातमां कोइ वावी नामना श्रेष्ठ ब्राह्मणे वाड्वसरस्वती कहीने वोद्वाव्या त्यारथी तेमने वाड्वसरस्वती-तुं विल्द मच्युं हतुं, थाळविधि सूत्रवृत्ति विगेरे अनेक ग्रंथोना रचनार ए रत्न-शेखर मूरिना पट्टने द्वाष्मीसागरसूरिए अदंडकृत कर्यु, तेमना पट उपर मोटा गुणवान मुमतिसाहु सूरि थया, तेमना पट उपर श्री हेमविमङ्गसूरि थया, आ मूरिना व-खतमां छुःप्या काळना दोष्यी थणा मुनिअओ प्राये भमादी, भमतावाळा अने चा-

स्त्रिनुं पाद्मन करवामां शिथित थवा लग्या. ते जोड़ने समग्र पापने दूर करनार ते हेमविमद्व सूरिए सूरिना गुणोथी विराजमान, सैंजाग्य ने जाग्यथी पूर्ण. अने संवेग रूप तरंगना समुद्र समान एवा आनंदविमद्व सूरिने योग्य जाणीने तरतन धर्मना अन्युदयनी सिच्छने माटे पोताना पट्टपर स्थापन कर्या. ते सूरिए विक्रम संबत १५८२ मां संवेगना वेगवाला मुनिओने शरणचूत एवो चाहित्रक्रियाने उष्ठार कर्यो. शरीर उपर पण ममत्व विनाना एवा तेमणे पोताना पापनी आखो-चना करीने जे छुप्कर तप कर्यु ते आ प्रमाणे-अरिहंतादिकबीश स्थानकोतुं ध्यान करतां ते निविकार सूरिए चारसो उपवासवदे बीश स्थानक तप कर्यो. पड़ी वरिष्ठ ( श्रेष्ठ ) एवा चारसो उद्घवे तेतुं आराधन कर्यु. विहरमान जिननो आथथय करीने बीश उहु कर्यो, पछी वसो ने औरेणबीश उहु श्री वीरमनुने आथीनि कर्यो, तथा पाखी विगेरे पर्वमां पण बीजा घणा उहु कर्यो. पछी झानावरणी कर्मना नाश माटे पांच छादशम ( पांच पांच उपवास ) कर्यो, अने तेष्वाज छादशम अंतराय कर्मना नाश माटे कर्यो. दर्शनावरणी कर्मना नाश माटे नव दशम ( चार चार उपवास ) कर्यो. मोहनीय कर्मना नाश माटे अट्टाबीश अद्भुत कर्यो. तेज प्रमाणे वेद-नीय, गोव्र अने आयुष्य कर्मना नाश माटे पण घणा अद्भुत तथा दशम कर्यो. मात्र एक नाम कर्म संबंधी तप ते आचार्य करी शक्या नहीं. प्राते आयुष्य पूर्ण थतां अनशन ग्रहण करीने ते आनंदविमद्व सूरि चित्तमां चतुःशरणतुं स्परण करतां स्वर्गसुखने पाम्या. त्यार पड़ी ते सूरिना पट्ट उपर सर्वत्र विजयमान, नयवान ( न्यायी ) अने समयवान ( सिद्धांतोना जाणनार ) श्री विजयदान सूरि थया. त्यार पड़ी तेमना पट्ट उपर अखंद विजयवाला श्री हीरविजय सूरि थया. आ वर्तमान कालमां पण ते सूरिना महिमाने देवसमुदाये गयो हतो. आ सूरिना उपेदशाथी प्रतिवेष पामेज्ञा अक्षवर वादशाहे दयातुं ध्यान धरतां आखी पृथ्वीने जंतर्धर्षय करी दीधी हतो. त्यार पड़ी तेमना पट्टने उदयाचल पर्वतना शिखरने शरदक्रनुना प्रदीपी सूर्यनी जेम विजयसेन सूरिए शोजाव्यु. त्यार पड़ी तेमना पट्टने अङ्गान रूप अन्यकारनो नाश करनार, द्वोकोना मन रूपी पद्मनो विकास करनार, कुतक रूपी होपनो नाश करनार, महा दोष रूपी राजिनुं उच्चेदन करनार अने झान रूप दिवसनी उद्धवीनो उदय करनार एवा विजयतित्वक नामना सूरिए आकाशने सूर्य अङ्गकृत करे तेम अलंकृत कर्यु. त्यार पछी तेमना पट्ट उपर चंद्रकिर-

व्याख्यान ३५७ मुँ. तपागच्छ नाम पड्या पडीना आचार्यनी पटावली ( ३४६ )

एना समूह जेवा उज्ज्वल अर्थवादनो प्रचार करनार, राजसनाओंमां विजयद्वाद्यमीने  
श्राप करनार, जाणे गौतम स्वामीना प्रतिनिधि होय एवा हीरविजय सूरिना शिष्य  
विजयानंद सूरि थया, ते वोधिना निधि समान सूरि पोताना गच्छमां मोटी स्वा-  
निने पास्या, तेमना पट्ठ उपर श्री विजयराज सूरि थया, तेमना चास्त्रि रूपी महा-  
सागरमे झाननो निधि दृष्टि पास्यो अने तेथी शासन रूपी यृहनो उद्योत कर-  
वामां तेओ दीप समान थया, त्यार पडी त्रिलोकनेभर प्रज्ञुरुं ध्यान करवाना झाड्डु  
श्री विजयपान सूरि थया, तेमनी वाणीनी मीठाशाथी पराज्ञव पामेही इच्छ  
जाणे लज्जाथी संकोच पापी होय एम द्वागतुं हतुं, त्यार पडी तेमना पट्ठ उच्च  
सिद्धान्त वाणी वोद्विवामां चतुर अने भारी<sup>१</sup> जेवाने प्रथम आगमनो उपदेश इ-  
नार एवा विजयइच्छि नामे आचार्य थया, तेमणे द्वोकोने न्याय मार्गं चक्राव्य इच्छ  
त्यार पडी तेमना पट्ठ उपर अपारा गुरु श्री विजयसौनाम्य सूरि कदा उच्च  
प्रज्ञावधी गुणरत्नना पात्र समान स्याद्वाद तत्त्व अपारी समीपे आल्युं अस्तु  
अपने स्याद्वाद तत्त्वनी प्राप्ति थइ, ते विजयसौनाम्य गुरुना पट्ठ पर श्री  
द्वाद्यमी सूरि थया, तेमणे आ मुखने आपनारी गुरु पटावली हर्षमी उच्च  
भासा गुरुना शिष्य गुणवान अने धैर्यवान एवा जयवंत श्री प्रेमविक्रम नम्न उच्च  
गुरु नाड्ने भाटे आ उद्यम में कोद्दो डे.

इत्यद्विदिनपरिमितोपदेशप्रासादवृत्तौ चतुर्विशतितप्रसंग्न  
अष्टपंचाशदधिकत्रिशतमः प्रवैधः ॥ ३५७ ॥

# વ्याख्यान ३५९ सु.

थ्री हीरविजय सूरिनुं संक्षिप्त चरित्र.

वैराग्यपूर्णहृदयास्त्वक्तमूर्छा जगृहुश्चारित्रं ।

सुविहितसाधुप्रज्ञवः, थ्रीहीरविजयसूरीन्द्राः ॥ १ ॥

ज्ञावार्थ—“वैराग्यवी पूर्ण हृदयवाला सुविहित मुनिना गुरु थ्री हीरविजय सूरिए मूर्छानो त्याग करीने दीक्षा ग्रहण करी हत्ती.”

थ्री गुर्जर देशमां तारंगगिरि विंगे तीव्री छे. तेमां केडास पर्वत जेवा उंचा तारंगगिरि उपर कोटिशिळा डे. ते शिळा जाणे मुक्तिरूपी स्त्रीना पाणिग्रहमां करोनो मुनिओने माटे रचेल्ली स्वयंवरनी चूपि होय तेवी शोजे छे. वळी ते देशमां जाणे विधाताए जगतना द्वोकोनो मनोरथ सिद्ध करवा माटे मेह पर्वत उपरथी कल्पवृक्षने द्वावीने स्थापन करेद्वा होय तेम नागेन्द्रथी सेवाता थ्री शंखेश्वर पार्वनाथ विराजे डे. आ पार्वनाथना विवर्तुं प्रथम नमि अने विनमि नामना विद्यापर राजाए अर्चन कर्युं हत्तुं; त्यारपत्री जाणे पोताना स्थाननी स्थिरता माटे ज होय तेम स्वर्गमां इन्द्रे पूजा करी हत्ती. पत्री इन्द्रे ते विवने उज्ज्यपंत (गिरनार) गिरि पर मूर्खुं हत्तुं. त्यांयी दृझने सूर्ये तथा चंद्रे पोताना स्थानमां राखीने अर्चन कर्युं हत्तुं. तेमणे पाहुं गिरिनारना गृंग उपर स्थापन कर्युं हत्तुं. त्यांयी धरण्ड्र पोताना धाममां दृश गया हत्ता. त्यारपत्री थ्री नेमिनाथना वचनधी थ्रीकृष्ण ते विवने द्वाव्या हत्ता. वळी ते देशमां खंजात नगरमां जेनो अर्पूर्व महिमा डे अने जे विवना प्रजावयी धन्वन्तरीनी जेम थ्री अञ्जयदेव सूरिनो डुष्ट रोग नाश पाम्यो हत्तो एवा स्वर्जन पार्वनाथ वीराजे डे. आ प्रमाणे अनेक पुण्यनां स्थानो जेमां रहेद्वां डे एवा ते गुजरात देशमां थ्री प्रह्लादनपुर [ पावणपुर ] नामे नगर डे तेमां ओसवालबंशी कुराशाह नामे जेऽहतो. तेणे नाथी नामनी पत्नी हत्ती. तेणे संवत् १५४३ना मार्गशीर्ष मासनी शुक्ल नवमीने दिवसे गजना स्वमर्थी सूचित हीरकुमार नामना पुत्रेने जन्म आप्यो हत्तो. ते कुमार क्रमे करीने दृच्छ पामतां युवावस्था पाम्यो. एकदा ते कुमारे थ्री

विजयदान सूरिना मुख्यी देशना सांजली के “ जीवित संव्याना रंग जेवुं चपल ठे, नदीना वेग जेवुं यौवन अस्थिर ठे, अने छाड़मी विश्वतना जेबी कृष्णिक ठे, पाटे हे जब्य प्राणीओ ! निरंतर जिनर्धमतुं सेवन करवामां त्वरा करो. ” आ प्रमाणेनी देशना सांजलीने हीरुमार हर्ष पामी पोताने वेर नयो. पछी अलुक्ले पोताना माता पिता स्थांग गया, त्यारे कुमारे विमङ्गा नामनी पोतानी बेन पासे दीक्षानी रजा मानी, ते सांजलीने बेन बोड्डी के “ हे जाइ ! तुं उद्घादस्यामां दीक्षा लेंगे. हाज तो तारी स्त्रीना मुख्यामृततुं पान करवावसे पारा नेत्रहस्य चकोर पक्षीने आहद्वाद आपवा माटे चंद्र जेवो थइने चपलता तजी तुं गृहस्थ्याश्रयमां चिरकाळ रहे. ” ते सांजलीने कुमारे कथुं के “ हे घ्वेन ! आ जीवित दर्जना अग्र जाग पर रहेला जझविंदु समान ठे, लक्ष्मी पण कुबटा स्त्री जेबी ठे, इहुना अग्र जाग जेवुं यौवन पण नीरस ठे, अने नाटकना समय जेवो आ स्वजननो संवंध पण कृष्णिक ठे. ‘ पारी वाढ्यावस्था जाहो, अने यौवन वास्त्री मारा जारीरने शोजावजो, अने पछी अमात्यनी जेम वृच्छावस्था प्राप्त थडो । एवुं (चोक्स) कोण जाणो शके ठे ? ” आ प्रमाणे अनेक युक्तियी उत्तर प्रत्युत्तर करवा वने धांत थेब्बा स्वजनोए तेमने दीक्षा लेवानी रजा आपी. एव्वो संवत १५५६ ना कार्तिक छृण्ण द्वितीयाने दि- वसे गुरु पासे तेमणे दीक्षा ग्रहण करी. गुरुए तेतुं हीरहर्ष एवुं नाम पास थुं.

गुरु पासे अन्यास करीने तेओ जिनर्धम संवंधी सर्व ज्ञात्यमां निपुण थया. पछी परदेशनी जापा तथा पर्थमना शास्त्रो जाणवानी इच्छावी तेओ दक्षिण देशमां गया. ते देशमां श्री माणिक्यनाथ अपनदेव विराजे ठे, तथा त्यां अन्तर्स्थिक पार्श्वदेव पण ठे. ते अन्तर्स्थिक नामना पार्श्वदेव जमीनवी उंचा रहेब्बा होवायी जाणे जब्य प्राणीओनो महा उदय करवाना देहुपीज उंचा रथा होय नहीं एम जणावता हता. वळी करहेटक गाममां मोटा मन्त्राववाला करहेटक नामना पार्श्वनाथ स्वामी विराजे ठे. जे दिशामां तेओ रहेब्बा ठे ते स्यामने ते प्रज्ञुनीज वांगाधी<sup>१</sup> जाणे होय नहीं तेम शेपनाम कदापि तजतो नहीं. तेमज जाणे आ पार्श्वनाथ देवोना पण देव छे एम कहेवाने योट्न आवती होय तेम यसन्त चिगेरे असुओ वैनव सहित प्रति वर्ष आवीने ते प्रज्ञुनी रेना करती हती. वळी ते

<sup>१</sup> हुं प्रभुना पद्मे (मोक्षने) पासु एवं उच्चाधी.

देशमां सोपारक नामना पुरमां जाए जरतचक्रीना पुण्यनिधि होय तेवो जीवत्स्वामी श्री आदीश्वर प्रज्ञुनी प्रतिपा विराजमान डे. ए देशमां देवगिरि नामना किंद्मामा ( शहेरमा ) कोइ ब्राह्मण पासे तर्कशास्त्रादिको अन्यास करीने श्री हीरमुनि गुरु पासे आव्या, गुरुए तत्काळ तेमने वाचक ( उपाध्याय ) पद आयुं, पडी गुरुए सूर्यिन्द्रना अधिष्ठायक देवतानी आज्ञाथी संवत् ? ६ ? ८ ना पोप शुक्र पंचपीते दिवसे हीरहर्ष मुनिने सूर्यिन्द्रे स्थापन कर्या, पडी गुरु अन्यत्र विहार करवा लाग्या.

अहीं अक्कवर वादशाहनी सजार्मा अनेक जातिना लोको आवीने वैरल्ला हता, ते वखते सौए पोतपोताना धर्मनुं वर्णन कर्युं, तेमां एक विद्वान पुरुषे श्री हीरसूर्यनी प्रशंसा करी के “ हे वादशाह ! जेम सर्व राजाओमां आप मुकुट समान डे, तेम सर्व दर्शनोमां अद्वितीय विद्वान अने सर्व धार्मिकोमां मुकुट समान एक हीरविजय सूरिज डे, आ प्रमाणेनी तेमनी प्रशंसा सांजळीने वादशाहे वे दूतोने विज्ञप्तियुक्त फरमान आपाने हायदेशमां गंधार नामना वंदे ज्यां हीरसूरि विराजमान हता त्यां तेमने वोक्तावचा माटे मोक्ष्या, ते दूतोए त्यां जड्जे जेना चरणक्षम्भनी सेवा सर्व संघ करी रहेला हता एवा हीरगुरुना चरणक्षम्भमां ते फरमान मूर्ख्युं, ते दूत करेली विज्ञप्ति सांजळीने शावकोए पण विनंति पूर्वक कर्युं के “ हे गुरु महाराज ! जेम केशी गणधरे प्रदेशी राजाने वोध पमाड्यो हतो, तेम आप पण अक्कवर वादशाहने वोध पमान्जो, आपनी जेवा महात्मा पुरुषो विश्वाना उपकारने पाटेज यत्न केर डे, शुंभेष सर्व जगतने जीवाकृतो नथी ? लळी जेम पारधी बनमाहेना अनेक प्राणीओने हाणीने बनने निःसत्त्व ( प्राणी रहित ) करी नाखनार श्री हेमचंद्रसूरिए जेम कुमारपाल राजाने वोध पमान्धो हतो, तेम आप अक्कवर राजनि वोध पमान्जो, ” आ प्रमाणेनी श्री संघनी विनंति सांजळीने गुरु ल्यांथी विहार करी राजनगर ( अपदावाद ) सपीप आव्या, एउटे त्यांना अधिकारी साहिवताने अत्यंत आदर अने नक्कि पूर्वक गुरुने पोतानी राजधानीमां कड्डे जड्जे तेमनी पासे यणा योमाओ, हस्तीओ, रथो, म्यानाओ, पाल-खीओ विंगेर जेट करी, पडी विनंति करी के “ हे स्वामी ! अक्कवर वादशाहना हुक्मयी आ जेट हुं आपने करुं लुं माटे ते ग्रहण करो, वादशाहे

मने कहेवराव्युं छे के सूरीभर श्रीहीरविजय गुरुने धन, रथ, अश्व, हस्ती विग्रेरे आपीने तेमना मनोरथ पूर्ण करी तेमने मारा तरफ मोकलवा. माटे हे स्वामी ! आ आपने माटे आवेद्धी यापणनी जेम माराथी अपातुं ग्रहण करो. ” ते संज्ञळीने मुरि वेद्या के “ अमे निष्पत्तिही छीए, अमे हमेशां उपानह पण पहेर्या विना पण चाढ़वानेज योग्य ठीए, तेथी ए सर्वे अमारे कांइ कामनुं नव्ही. ” एम कही मुरि विहार करता आयुगिरि आव्या.

त्यां गुरुए विमङ्ग मंत्रीए करावेद्धी विमङ्गसही जोइ. ते वसही ( निन्वत्त ) आस पत्यरनी होवाथी श्वेत हती, तेमां अनेक श्वेत हाथीओ अने अन अर्धो हता. तथा मुधा सरखी शोज्ञायमान हती, अने ते वसहीनो मध्य जाग श्री जिनेश्वरे पवित्र करेद्वो हतो. तेथी ते वसति जाणे कीरसमुद्धनी सखी होय तेवी जणाती हती. केमके कीरसागर दूधनो होवाथी श्वेत रे, श्वेत औराचन हाथी, श्वेत उच्चःथवा अश्व अने मुधा ( अमृत ) तेमांथी नीकल्यां रे एम कहेवाय रे, तथा जिन एट्ट्वे विष्णुए तेनो मध्य जाग पवित्र करेद्वो कहेवाय रे. त्यारपत्री ते यत्तीन्द्वे वस्तुपाळे करावेद्धी वसतिना चैत्यने जोयुं. त्यां गिरावर पर्वतनी जेम आयु पर्वतने पण पवित्र करवानी इच्छाथीज जाणे आव्या होय एवा नेयनने आनंद करनारा शिवा राणीना पुत्र श्री नेमिनाथने वंदना करी. त्यांथी चाढतां मार्गां जाणे धर्मतुं प्रपास्यान ( परव ) होय तेवा अने जेणे अमृत ( मोक्ष ) नी लङ्घी धारण करी रे एवा कुमारपाळ राजाए करावेद्धा चैत्यने नव्हीने ते मुनीन्द्वे अचक्षगढमां आवी चतुर्मुख श्री क्षेत्रज्ञ स्वामीने वंदना करी. त्यांथी राणकपुर आवीने नद्विनीगुद्ध विमानना आकारवाला धनाशाहे करावेद्धा चैत्यने वंदना करी. ते चैत्यमां जाणे प्राणीओने चारगतिनी पीडारूप मोदी अंष कूवामांथी उद्धार करवानी इच्छाथीज होय नहीं एम चार मूर्तिने धारण करता श्री युगादिदेवना दर्शन कर्या. त्यांथी मेनता नगर समीपे आवीने श्री फलविधि पार्वनाथने वंदना करी. आ प्रतिमा विषे एवुं संज्ञळाय रे के आ विज्ञी पासे वीजी कोइ जिनप्रतिमा रही शकती नव्ही, तेथी ते प्रतिमा एकद्वीज रे. ते प्रज्ञ जाणे एम धारता होय के हुं एकद्वोज—वीजानी अपेक्षा राख्या तिना त्रण नगतना जीवोना मनोरथ परिपूर्ण करूं एवो तुं, तेथी वीजानी जसर नव्ही. एवी रीते पोताना मनमां अहंकार द्वावीने ते प्रज्ञ एकद्वाज रहेद्वा होय .

व्याख्यान ३६० मुं.

श्री हीरसूरितुं चरित्र. (चादु)

जगद्गुरुरिदं राजा, विहूदं प्रददे तदा ।

तद्धवन्यदेशोपु, विजहार गुरु कमात् ॥ १ ॥

‘भार्या—“त्यारे आ जगद्गुरु ते एं वादशाहे विल्द आण्यु. पठी वादशाहे आपेक्षा नगद्गुरु विल्दने वहन करता सूरिए अन्यत्र विहार कयो.” आ शेकमां कहेद्दा अर्थात् समर्थन करवा माटे तेमनुं चरित्र विशेषे कहेवामां आवे ले.

अन्य देशोंमां विहार करतां करतां श्रीहीणुरु मधुरापुरीमां आव्या. त्यां  
पोद्य उत्सवधी संघजनोदी पस्थिरेद्वा सूर्णि चारण मुनिनी जेम पार्खनाय अने  
सुपार्खनाय पञ्जुनी यात्रा करी, तथा जंगूस्वामी, प्रज्ञवस्त्वामी विगेरे पांचसो ने स-  
चावीश मुनिओंना स्लूपोने वंदना करी. पड़ी गोपाल गिरि उपर क्रपनदेवने वं-  
दना करी. ते गिरि उपर शङ्कुजयनी जेम बावन गजना प्रमाणवाळी श्री आदीश्वर-  
नी प्रतिमा डे, तथा वीजी पण जिनप्रतिमाओ डे, तेने सूरीखेरे वंदना करी.  
त्यांदी वरकाणक नगरसां आवीने साक्षात् पार्खयक्कनी जेम वरकाणक नामता पा-  
र्खनायने नम्या, त्यांदी अतुक्तमे सिन्धाचल आवी त्यां दर्शन तथा स्तुति विंगेरे  
करीने गुरु अजयपुरमां आव्या.

त्यां श्री संघनी समीपे सूरिए श्री अजय पार्खेनाथतुं किंचित् चरित्र कहुं के  
कोइ श्रेष्ठी जलवट वेपार माटे समुद्रस्ते जतो हतो, देवयोगे अचानक वृष्टिनो  
उत्पात थयो, तेयी कव्यांत काळनी जेम पोताना वहाणना दोकोनो संहार थवो  
एम धारीने ते छुँख जोवाने असमर्थ एवो ते श्रेष्ठी प्रथमधीज मृत्यु पापमा माटे  
समुद्रमां कंपापात करवा जाय बे, तेइवामां पदाचती देवीए आकाशवाणीयी क-  
हुं के 'आ समुद्रनी मध्ये समय छुँखरूपी सागरतुं मंयनं करवामां मंदराचङ व-  
र्षत समान प्रजाववाळी अने समुद्रनी मेसवाना निधि समान श्री पार्खेनाथनी प्र-  
तिमा छे, माटे हे श्रेष्ठी ! नाविधि से तेने उँ : १ वहार कढावीने ते-  
नी पूजा करी वहाणमां राखीरूपी विद्यु : २ पण हे श्रेष्ठी !

ते कल्पद्रुक्ना पर्णनी करेकी पेटीने तुं उघानीश नहीं, तेने तेवी ने तेवी स्थितिमां  
द्वीप (दीव) घंदरे बळ जगे, त्यां दीण्यात्राने माटे आवेदा अजय नामना राजाने ते  
पेटी आपजे, ते मूर्तिना स्नावजल्यी ते राजाने थयेदा एकसो ने सात रोगो नाश  
पामजो, 'आ प्रमाणे देवीनी वाणी सांचलीने ते श्रेष्ठीए पोताना माणसो पासे  
ते पेटी बहार कढावी अने बहाणमां स्थापन करी, तेघी सर्व उपद्रवो नाश पाम्या.  
अत्यारे पण समुद्रमां प्रतिकूल वायुने दीधे कांइ उपज्ज्व थयो होय ते बखते जा  
अजय पार्वनाथनुं ध्यान कर्हु होय तो ते बहाणनी जेम मनुष्योने निर्विघ्न रीते  
सुखेयी समुद्रने किनारे पहोचाडे रे.

पर्वी ते श्रेष्ठीए दीव बंदरे जझेत्यां अवेद्धा अजय राजाने पेटी संवंधी  
सर्व वृचांत कहो ते पेटी तेनी पासे मूकी, एव्वेत्य राजाए त्यां अजय नामतुं नगर व-  
सावी विनय पूर्वक ते विवेने पेटीमांथी वहार काढी ते पुरमां मोडं चैत्य करावीने  
तेमां ते स्थापन कर्यु, अनेतेना स्नात्रजल्यी ते राजा व्याधिमुक्त थयो. पूर्व तेनुं-  
अजय पार्खनाथ एवं नाम हुं. हात्यमां त्यां अज्जार नामे ग्राम वसवाथी अज्जार  
पार्खनाथ एवं नाम थयुं डे. आहकीकतनो विस्तार श्रुंजय माहात्म्यमांथी जाणयो.

श्री हीरविजयसूरिए दीक्षार्थी आरंजीने जे तप कर्यु ते आ प्रमाणे—  
न्यायने न तजे, तेम सूरिए जीवन पर्यंत एकासाणु बोक्खु नहोतुँ

पांचे वाणो तज्यां होय तेम तेमणे पांचे किण्ठति (विगळ) ना  
तेमणे के जवसागरने पार पमामनारी बार जावनाओने विशे-  
षणे तेम हंमेशां जोजनसप्ये नाम ग्रहण पूर्वक अन,  
योग (पदार्थ) वापरता हता. पोताना पापनी  
जाने सवाबसो उड्ड कर्या, त्रण चोवी-

**१५८-१५९** कोट चीश आंविज्ञ कर्या, वे हजार नीची पात्रमां एकज बखते जेट्टुं अब जळ अविच्छिन्न परे एकज दाणो स्थावो ते एकसिध कहेवांय छे, इत्यादि त्रण हजार ने उसो उपवास कर्या, पडी प्रथम उपर आंविज्ञ, ते उपर पात्रो उपवास एवी रीते तेर

मास सुधी विजयदान गुरु संवंधी तप कर्यु. पत्री वावीश मास सुधी योग वहन करीने तीव्र तप कर्यु. पत्री व्रण मास सुधी सूर्यमित्रनी विधिपूर्वक आराधना करीने चार करोम श्लोक भगवाण सङ्कायध्यान कर्यु. ते सूरिए पांचसो जिनविंशनी प्रतिपूर्णा करी. इत्यादि वहु प्रकारनां धर्मकार्यों करीने ते सूरि उनाया (उना) नगरमां संबत १६५४ ना जादपद शुद्धि ? ? ने द्विसे महामंत्र (नवकार)तुं सरण करता सता स्वर्गद्वाकने पाम्या.

“ ए प्रमाणे अमृतना ओघ सरखा उज्ज्वल ध्यानने धारण करता सता सूरिए जगवंते कहेक्षा महानंदपुरे जवाना मार्गने त्यां जवानी इच्छाधी जाते जो-वाने माटे देवक्षोकनो आथ्रय कर्यों । ”

॥३६०॥

इत्यद्विनपरिमितोपदेशप्रासादहृत्तो चतुर्विशतितपस्तंजस्य  
पष्ठुत्तरविशततमः प्रवंधः ॥ ३६० ॥

### व्याख्यान ३६१ मुं.

—  
सिद्धाचलपर रहेक्षा प्रासादनुं वर्णन.

श्रीसिद्धाचलप्रासादं, सोपानादिस्फुरत्यज्ञम् ।

कुञ्जशृंगध्वजायुक्तमार्हन्तं तं स्तवाम्यहम् ॥ १ ॥

नाराय—“ सोपान ( पगधीर्यों ) विग्रेषी जेनी प्रजा स्फुरणायमान डे अने जेमनो शृंग विजाग ( शिखर ) कुञ्ज तथा ध्वजाधी युक्त डे एवा सिद्धाचल-पर रहेक्षा श्री अर्हतना प्रासादनी हुं सुति कर्ह दुं । ”

आ श्लोकमां श्री सिद्धाचल, प्रासाद, सोपान विग्रे, कुञ्ज, शृंग अने ध्वजा आदेक्षा शब्दो कहा डे. ते दरेकनी नीवे प्रमाणे जावना करवी.

श्री सिद्धाचल समान पवित्र वीजो कोइ पर्वत नथी. कशुं डे के—

तावद्वीक्षाविकासं कलयति मलयो विन्ध्यशैद्वोऽपि ताव-  
द्वते मत्तेज्जगर्वं तुहिनधरणिभूत्तावदेवान्निरामः ।  
तावन्मेरुमहत्वं वहति हरिगिरिगाहते तावदानां  
यावत्तीर्थाधिराजो न नयनपुटे: पीयते पर्वतेन्दः॥१॥

ज्ञावार्थ—“ज्यां सुधी सर्व तीर्थोना अधिराज श्री सिद्धाचल नामना  
निरीन्द्रनुं नेत्रपुटवमे पान कर्यु नवी, त्यां सुधी मद्याचल पर्वत द्वीक्षानो विकास  
विस्तारे दे, त्यां सुधीज विन्ध्याचल पर्वत मदोन्मत्त हाथीनी जेम गर्वने धारण करे  
दे, त्यां सुधीज हिमाद्रिय पर्वत सुंदर द्वागे दे, त्यां सुधीज मेरुगिरि महत्वने वहन  
करे दे, अने त्यां सुधीज शक्रशैद्व ( हरिगिरि ) तेजने पारण करे दे.

ते सिद्धाचल उपर जरतचक्रीए करावेद्वो प्रासाद अद्वौकिक महिमावालो  
दे. ताराओवमे जेम चंद्र शोजे दे, ग्रहोवमे जेम ग्रहपति ( सूर्य ) शोजे दे, अ-  
मुरोवमे जेम असुरेन्द्र शोजे दे, मुरोवमे ( देवोवमे ) जेम मुरेन्द्र शोजे दे, अने  
मनुष्योवमे जेम नरेन्द्र शोजे दे, तेम वीजां नानां नानां जिनचैत्योवमे चोतरफथी  
अद्वृकृत थयेद्वुं श्री कृपनदेव स्वामीनुं चैत्य शोजे दे.

ते प्रासाद सोपानादिकथी दीप्तिमान दे, तेमां आदि शब्दना ग्रहणयी  
तोरण, मन्त्र, स्तंञ्ज, गर्जागार विग्रेधी पण सुशोन्नित दे एम जाणवुं. ते आ  
प्रमाणे—ते चैत्यना अग्र जाणे मोक्षद्वामीनुं कामण होय तेवुं अत्यंत सृदम  
नक्सोकामवाढुं सुवर्णमणिनुं तोरण वांधेलुं शोजे दे. अपर्वगपुरे पहोचयाने इच्छा-  
ता मुनिओने पोटे ते आथयस्थान जेवुं दे, अने तेनी नीचे जवाथी अमे आमुक्तिगृ-  
हमां प्रवेश करीए ठीए के शुं ? एम जास थाय दे. ते चैत्यना पव्य जागमां अति  
सुशोन्नित महामन्त्र दे, ते पोतानी मुक्तिरूपी कन्याने कोइ पण योग्य वरने आ-  
पवा माटे मनमां इच्छा राखनारा धर्मराजाए जाणे मणि सुवर्णमय चित्रोथी शोजा-  
यमान स्वयंवरमन्त्र रच्यो होय नहीं एवो शोजे दे. वढी ते श्री कृपनस्वामीना  
प्रासादमां वर्णन करवा द्वायक एवा घणा स्तंञ्जो शोजी रखा दे. ते स्तंञ्जोने मिपे  
सर्व राजाओ जाणे “हे जिनेन्द्र ! इन्द्र आपनो सेवक दे, ते अमारो शत्रु दे,  
माटे तेनी साये अमने मैत्री करावो.” एम कहेवाने माटे आव्या होय नहीं तेम  
मनुनी उपासना करी रखा दे. ते युगादीश जिनेश्वरना मंदिर उपर आकाशने

अद्विकृत करतुं शिखर पोताना वैजवयी सूर्यनां किरणोना मंकळने विमंवना पमा-  
ने डे तथा जाए पोतानी कापी नालेद्वी पांखो फरीथी मेलवताने माटे इच्छतो  
अमराचल त्रण ज्ञुवनना मनोरथ पूर्ण करवामां कल्पटक्क समान ते जिनेश्वरनी ज-  
क्कि करवा आब्यो होय तेवुं शोज्जे डे. वळी 'हे पञ्जु ! जगतना धनादिक मनो-  
रथ पूरवाने तो हुं समर्थ दुं, पण तमारी जेप मोक्षद्वास्त्री आपी शकवा माटे मने  
तेना आकरमां द्वाजा जाओ.' एप जगदीश्वरने कहेवा माटे उत्सुक थयेद्वाकाम-  
कुन्ज आवीने जाए पञ्जुने सेवतो होय नहीं तेम ते शिखरपर रहेद्वासुवर्ण कल्प  
शोज्जे छे. वळी त्रण ज्ञुवनमां पोतानी जेवा विजववालाना समूहने जाए जीतवानी  
इच्छा थाह होय एवा आ जिनेश्वरना प्रासादे शनुना समूहरूप सागरने मधन करवा-  
मां मन्दराचल समान शिखरपर स्फुरणायमान थतो मजबूत दंसरत्न धारण कर्यो  
डे; तेमज जप मेलवनार विनृतिविक्ष वास्त्वार स्पर्श करता वैजयंतादिक्कने जीतीने  
आ आदिनायना चैले जाए जगतमाहेना शनुमात्रना विजयने जणावनारी वैजय-  
तिका मस्तकपर धारण करी होय एम हुं मातुं दुं.

अनेक निर्जीरी, मनुष्यो अने उरगोना पुरंदरोए ( देवेंद्र, नरेंद्र ने अमु-  
रेंद्रोए ) सेवित एवो विमलाचलरूप राजा अपन्नदेवनी प्रतिमाथी अद्विकृत थयेद्वा  
एवा अने उपर जणावेद्वा सुंदर मंकपनी अंदर रहेद्वा तेमज तोरणोना विकथी  
विचित्र लागता गर्नावयने धारण करी रहो डे, ते गर्जयृहनी अंदर युगना आदि  
समयमां जेम मैं संसारथी प्राणीओनो उच्चार कर्यो हृतो, तेवीज रीते आ मद्विन  
कल्पिकालमां पण फरीथी हुं उच्चार कर्ह, एवो हृदयमां विचार करीने श्री  
आदीश्वर पञ्जु पोतामा स्वरूपे त्यां उत्तरीने प्रतिमाना मिपथी स्थिर रहा छे,  
एम जणाय डे.

मोक्षद्वास्त्रीने जगनारा अने मेथसमान गंजीर धनिवाला एवा हे पञ्जु !  
तमे निरंजनपणाथी कमळनी जेवा विशुद्ध आशयवाला कहेवाओ डो, संसारसा-  
गरमाथी नव्य प्राणीओने तमे नीकानी जेप पार उतारो डो. वळी अ-  
मृत रसनी जेप तमे जगतना समग्र प्राणीओनुं जीवन छो, एवा हे पञ्जु ! तमे  
जयवंता बतों.

। इति प्रासादादिवर्णनम् ।

व्याख्यान ३६? मुं. उपदेशरूप प्रासादना अवयवोतुं वर्णन. ( ४७४ )

## उपदेशरूप प्रासादना अवयवोतुं वर्णन.

आ उपदेश प्रासाद ग्रंथमां बुद्धिना आठ गुणोतुं वर्णन करेद्दुं डे. ते आउने शास्त्रमार्गने देखामनारा ते प्रासादना सोपान ( पगधीयां ) जाणवा. विकाना प्रकार सहित तेने निरंतर त्याग करवानुं वर्णन करेद्दुं छे, ते आ उपदेश प्रासादनां सुखे प्रवेश करी शकाय तेवां चार द्वार जाणवां. चार प्रकारना अनुयोगनुं वर्णन कर्यु डे ते आ ग्रंथरूप प्रासादमां विचित्र रचनावालां चार तोरण जाणवां. द्रव्य जावरूप व्ये जेदवाला वार व्रतोतुं वर्णन कर्यु डे, तेथी ते चोबीशने आ प्रासादना स्तंज जाणवा. मन, वचन अने कायाना योगनी बुद्धि कहेद्दी डे, ते आ प्रासादनो असत्यवृत्तिथी निवारण करनार मन्दप जाणवो. अन्य मंदिरोमां गच्छ किंगे वसुओ होय डे तेने स्थाने अहां अतिचार रहित व्रतो जाणवां. सातसो नयथी युक्त स्थानादने घोतन करनार वचनने आ प्रासादनुं निर्मल सुतिवालुं शिखर जाएनुं. रत्नवृथनी सुतिना आरंजने अहां मोटा कुंज समान जाणवो. अनन्त अने अव्यय संपत्तिवाला मोक्षनी सुतिने धनारूप जाणवी. शुद्र अन्तःकरणने गर्जयृह ( गजारा ) रूप जाएनुं. ते गर्जयृहमां प्रतिष्ठित येद्दी चिदूर जे मूर्ति डे ते स्वर्यन् विज्ञुवनना नाथ डे एम जाएनुं. ते प्रज्ञ निरंतर प्राणीओने संजाम द्वाक्षमी ओपे डे.

चोसउ इन्हो, सोऽ विद्यादेवीओ अने चोबीश तीर्थकरोना शासननी अधिष्ठायक देवीओ तथा चोबीश यक्षो आ मुनद नामना प्रासादनी रक्षा करो.

श्री जांतिनाथने नमस्कार करवो ए प्रथम मंगल छे, सहस्रकूटना प्रज्ञुतं वंदन एवीजुं पथ्य मंगल छे, अने शासनदेवीतुं ध्यान ए अंतिम मंगल छे. ते सर्व हमेशां आ ग्रंथ वांचनार तथा सांचलनारना कव्याण माटे थाओ.

इत्यद्विनपरिमितोपदेशप्रासादवृत्तो चतुर्विशतिप्रस्तुभस्य  
एकपष्टयधिकविशततमः प्रवंधः ॥ ३६? ॥

### प्रशस्ति.

जेना प्रज्ञायथी शुच साध्यने साथी आपनार आ प्रासादतुं निविघ्नपणे  
निर्मापण करी शकायुं ते अनंत कश्याणना स्वानस्य चित्तामणि पार्खनावने हुं वं-  
दना करं हुं. स्तंभतीर्थमां सूर्यिन्द्र आराधनना उद्यमयी जेपने सूर्यिन्द्रना अ-  
धिष्ठायक देवनो आदेश प्राप्त थयो ते गुरुर्तुं हुं सरण करं हुं. यणा गुणवाला  
अने एकाग्र चित्ते नमस्कारमत्ततुं ध्यान करनारा श्रीमान् विजयसौनामय सूरि  
नामना गुरुनी हुं स्तुति करं हुं. ते गुरुना शिष्य श्री विजयद्वाद्मी नामना सूरि  
आ उपदेश प्रासाद ग्रंथ शास्त्रोमां दीठेद्वा अक्षरोने अनुसारे रचेद्वा भे, अने श्री  
प्रेमविजयादिक मुनिओने अच्छास करवा गाटे तेनी उपदेशसंग्रहा नामनी दृत्ति  
पण करेही भे. आ ग्रंथ संक्ष १८४३ ना कातिक शुद्धि पूर्णिमाने दिवसे संपूर्ण  
थयो भे. ज्यां मुखी जगतमां मेरु पर्वत रहेद्वा भे, ज्यां मुखी जगतमां जेनशासन ग-  
वत्ते भे, ज्यां मुखी ज्योतिषचक्र आकाशमां विराजमान भे, अने ज्यां मुखी मुरनदी  
(गंगा)नो प्रवाह जगतमां प्रवर्ते छे, त्यां मुखी मानसरोवरना हंस जेवा विज्ञानो-  
धी वंचाती सलो आ ग्रंथ विजयने पामो.

आ ग्रंथमां कांइक अङ्गानताथी, कांइक बुद्धिना विकट्य रूप दोपथी, कांइ-  
क उत्सुकताना वशयी अने कांइक अस्मृतिना दोपथी जे कांइ रजसवृत्तिवसे उत्सुक  
प्रस्तुता थइ होय तेनी पंचितजनोए क्रमा करवी.

आ शास्त्रमां मतिनी भंदताने द्वीषी कांइक शास्त्र विशद्व दृष्टांतादिक कहे-  
वायुं होय तो इर्प्पा नहीं राखतां मारापर करणा द्वायीने शुद्ध चित्तवाला पंचि-  
तोए तेने शुद्ध करवुं (मुधारवुं). आ ग्रंथ रचवाना प्रयत्नस्थी जे कांइ मुकुत थयुं  
होय ते मुकुतथी आ ग्रंथना वांचनार, उद्धरनार तथा संचलनारने जेन धर्मनी  
प्राप्ति आओ.

सर्व कद्याणकारणं, सर्वश्रेयस्कसाधनम् ।

प्रशस्तं पुण्यकृत्यानां, जयत्यार्हतशासनम् ॥ १ ॥

जावार्थ—“सर्व कद्याणनुं कारण, सर्व श्रेयनुं साधन, अने पुण्यकृ-  
त्योद्देशे प्रशंसा करवा लायक एवुं श्री जेनशासन (जगतमां) जय पामे भे.”

॥ शुपुण्यकृत्यानां ॥

# મોટી અનુકરમણિકાની પ્રસ્તાવના.

આ આંશા ગ્રંથના ૩૬૧ વ્યાખ્યાનોમાં જે કથાઓ આવેલી છે તે તેનો સર્વે કથાઓની અક્ષરના અનુકરમણી આ અનુકરમણિકા કરવામાં આવી છે. તેનો હેતુ જે કથા શોધવી હોય તે તરત શોધી શકાય તે છે. અક્ષરોની અંદર સ્વરનો અનુક્રમ એટલામાટે રાખવામાં આવ્યો નથી કે તેથી સ્થંભ ને વ્યાખ્યાનનો અનુક્રમ દરેક અક્ષરમાં પણ રહી શકતો નથી. કોઇપણ કથા શોધવા ઇચ્છાનારે વ્યાખ્યાનના બંક સાથે જણાવેલા સ્થંભમાં જોડે લેલું. તેમાં પાંચ વિભાગની બંદર ૧ થી ૪, ૫ થી ૯, ૧૦ થી ૧૪, ૧૫ થી ૧૯ અને ૨૦ થી ૨૪ એ પ્રમાણે સ્થંભો આવેલા હોવાથી તે વે વિભાગમાં જોડું. આ ગ્રંથમાં આવેલાં પર્વતિયિનાં વ્યાખ્યાનોની અનુકરમણિકા પ્રાંતે સ્વાસ જુર્ઝી આપવામાં આવી છે. તેની આવશ્યકતાવાક્યાઓ એ તેનો લાભ લેવો.

## અ

					સ્થંભ.	વ્યાખ્યાન.
અમયકુમાર	....	....	....	....	૧	૫
અનાધી મુનિ	....	....	....	....	૩	૪૨
અચ્છેકારી ભટ્ટા	....	....	....	....	૪	૯૦
અગ્રિમૂતિ ( વીજા ગણધર )	....	....	....	....	૪	૯૬
અદ્ધાર નાતરા ( કુવેરદત્ત ને કુવેરદત્તા )	....	....	....	....	૭	૯૫
અંશ બ્રહ્મચર્ય	....	....	....	....	૯	૧૨૯
અહમ્મદ બાદશાહ	....	....	....	....	૧૧	૧૫૮
અતિમુક્ત મુનિ	....	....	....	....	૧૯	૨૧૬
અમૃપદાન ઉપર દૃષ્ટાંતો	....	....	....	....	૨૭	૨૪૧
અમરદત્ત ને મિત્રાનંદ	....	....	....	....	૨૭	૨૪૩
આપાદમૂત્રિ મુનિ	....	....	....	....	૨૭	૨૫૨
અપાદાચાર્ય	....	....	....	....	૧૮	૨૫૭
અકાશે સ્વાધ્યાય ન કરવા ઉપર દૃષ્ટાંતો	....	....	....	....	૧૮	૨૬૨
અવ્યક્ત્વાદી ( ત્રીજો નિન્હવ )	....	....	....	....	૧૮	૨૬૪
અશોક રાજા	....	....	....	....	૧૮	૨૬૪

अभयदेव सूरिने स्थंभन पार्खनाथ उत्पत्ति	....	१८	२६६
अन्वित्र मुनि ( चोथा निन्हव )	....	१८	२६९
अर्हचक मुनि	....	२०	२९३
अर्हदत्त	....	२१	३०५
अर्हनिमित्र	....	२२	३१९

### आ

आणेंद श्रावक	....	३	१६
आरोग्य विभ्र	....	४	९१
आर्द्रकुमार	....	५	७२
आम्रबृहस्पदक	....	१६	२२७
आर्यरत्नित सूरि	....	२२	३२८
आभिरिवंचक वणिक	....	२२	३३०

### इ

इलाची कुमार	....	७	१००
-------------	------	---	-----

### उ

उदायि राजा ( कोणिक पुत्र ) ने विनपरस्तन	....	३	३८
उदायि राजा ( छेला राजायि ) विस्तृत	....	१०	१४९
उपदेशनी अपोग्यतापर हष्टातो	....	१६	२३७
उशिकुर मुनि	....	२३	३३१

### अ

अंगारमदेकाचार्य	....	४	६०
अंजना सति	....	७	९२
अंबदना ७०० शिष्यो ( संक्षिप्त )	....	८	११४
अंचिका श्राविका ( वारमा व्रत उपर )	....	११	१६३

### ए

एक ब्राह्मण	....	१८	२६४
एक विद्याधर	....	१८	२६४
एक मुनिनी आश्रपेकारक कथा	....	१९	२७७
एक मुनि ( काप गुसि उपर )	....	१९	२८२
एक मुनि ( त्रणे गुसि उपर )	....	१९	२८२

एक वणकर	....	....	....	....	२०	३९९
एक आचार्य	....	....	....	....	२२	३२२
एक पोपट	....	....	....	....	२३	३३८

## क

कृषिकल	....	....	....	....	१	३
कुलबालुक	....	....	....	....	१	१४
कालिकाचाये (दत्तना मामा)	....	....	....	....	२	१७
काष मुनि	....	....	....	....	३	३१
कासी थीओ	....	....	....	....	३	३९
झुगाहु मुनि	....	....	....	....	३	४१
कातिंक शेठ	....	....	....	....	४	४८
कोशा गणिका	....	....	....	....	४	४८
कृष्ण वासुदेव	....	....	....	....	४	५८
काकजंघ ने कोकास	....	....	....	....	४	५९

कुमारपाल (व्याख्यान)-६२--६३--६४--८१--१११--१२९--१६९--१८३--१८५  
२५९--२६४--२७४--२७६

क्षत्रिय	....	....	....	....	९	७३
कौशिक तापस	....	....	....	....	६	७७
कुमार अने देवचंद्र ( वे राजपुत्र )	....	....	....	....	६	८६
कव्यवती	....	....	....	....	७	९८
कुचीकर्ण ( संक्षिप्त )	....	....	....	....	९	१०८
कुछड उक्कुछड मुनि ( रौद्र ध्यान उपर )	....	....	....	....	९	१३१
केशरी चोर ( नवमा व्रत उपर )	....	....	....	....	१०	१४४
कृतपुण्य ( कथवन्ना शेठ )	....	....	....	....	१२	१६७
कूमोपुत्र	....	....	....	....	१२	१८०
कपिल मुनि ( केवदी )	....	....	....	....	१९	२२०
कंदरिक ने पुंडरीक	....	....	....	....	१९	२२१
झुँझुक कुमार	....	....	....	....	१६	२३२
कोधीपंडना अग्राध्यपणापरं हृष्टांत	....	....	....	....	१७	२४६
कुंडलिक थावक ने रत्नाकर सूरि	....	....	....	....	१८	२६९
झुँझुक मुनि	....	....	....	....	१८	२६७

धुम्लक शिष्य	....	....	....	....	१८	२६९.
कामदेव भ्रावक	....	....	....	....	१९	२७२
सेमपि ( विचित्र अभिग्रह धारक )	....	....	....	....	१९	२८३
काळवैशिक मुनि	....	....	....	....	२१	३१९
कुरुदत्त	....	....	....	....	२२	३१६
कदंब विष.	....	....	....	....	२२	३२४
क्षपक मुनि	....	....	....	....	२३	३३४
फरकंडु मुनि ( पेला प्रत्येकबुद्ध )	....	....	....	....	२४	३४८

## ग

गौतमस्वामी	....	....	....	....	१	८
”	....	....	....	....	४	९९
गुणसुंदर ( वासी अनन्त्याग उपर )	....	....	....	....	८	११९
गुणमंजरी ने वरदत्त	....	....	....	....	१५	२१५
ज्ञानविज्ञानयुक्त क्रियापर दृष्टितो.	....	....	....	....	१६	२३६
गोष्ठामाहिल ( सातमो निन्द्व )	....	....	....	....	१६	२३८
गोशालक	....	....	....	....	१७	२५४-९९
गंगाचार्य ( पांचमो निन्द्व )	....	....	....	....	१८	२६८
गुणसुंदरी	....	....	....	....	२१	३१३
गुरुपट्टावधी ( सुधर्मो स्वामीयी )	....	....	....	....	२४	३५७-९८

## घ

घृत ने चर्मना व्यापारी	....	....	....	....	१	१२३
------------------------	------	------	------	------	---	-----

## च

चिलातिपुत्र	....	....	....	....	१	१०
चंदाळ ( श्रेणिक राजाने विद्या शीखवनार )	....	....	....	....	१	१३
चंदकौशिक	....	....	....	....	३	४४
चंद्रा ने सर्ग	....	....	....	....	५	६९
चंदन ने मल्यागिरी	....	....	....	....	७	९९
चारुदत्त	....	....	....	....	८	११२
चित्र गुप्तकुमार ( अनर्थ दंड त्याग उपर )	....	....	....	....	१०	१३७
” चोर ( सामायिक ब्रत उपर )	....	....	....	....	१०	१४०

नंदावदेस राजा	....	....	....	....	१०	१४१
बंक श्रेष्ठी	....	....	....	....	११	१६९
विविकार	....	....	....	....	१३	१९१
बंदरुद्र आचार्य	....	....	....	....	१८	२५८
जांया पांचमा चारित्रिचारपर दृष्टातो	....	....	....	....	१९	२८२
वाणाक्ष्य ( मनुष्यभवनी दुर्लभता उपर पाशानु दृष्टात )	....	....	....	....	२३	३४०

छ	....	....	....	२४	३४७
छ मुनिओ	....	....	....	....	....

ज	....	....	....	....	....	....
गमालि ( प्रथम निन्दय )	....	....	....	....	१	७
उपसेना	....	....	....	....	१	१९
जीर्ण श्रेष्ठी	....	....	....	....	३	३९
जिनदास आवक	....	....	....	....	५	६४
जिनपाल ने जिनरक्षित	....	....	....	....	६	८८
जटिलनो मूर्ख शिष्य	....	....	....	....	१०	१४२
जिनदास श्रेष्ठी	....	....	....	....	१३	१९०
जिनदास ने सीमाग्यदेवी ( शीघ्रधर्म उपर )	....	....	....	....	१५	२१९
जिनदास श्रेष्ठी ( मनोगुणि उपर )	....	....	....	....	१९	२८२
जयधोप द्विज	....	....	....	....	२१	३०१
जंबू स्वामी	....	....	....	....	२४	३५२

ठ	....	....	....	....	....	....
हुङ्कमतोत्पत्ति-त्वंगभूतिका उपरथी	....	....	....	....	१६	२४०
हुङ्कणत्रिपि ( कृष्ण पुत्र )	....	....	....	....	२२	३२५

त	....	....	....	....	....	....
तिस्रगुप्त ( बीजो निन्दय )	....	....	....	....	२	१९
तुंबडी	....	....	....	....	३	४०
जिविकम	....	....	....	....	३	४०
कृ शेठ ( संक्षिप्त )	....	....	....	....	८	१०८
( रात्रिभोजन उपर )	....	....	....	....	८	११७
	....	....	....	....	९	१२४

तेतली पुन्र ( वायात्कारे पण व्रत आपत्तु )	....	१२	१७७
तीर्थंकरनां पांच कल्याणकोनुं वर्णन	....	१४	१९६८०५
तामली तापस	....	१६	२३६

## द

दुमधा ( श्रेणिक राजानी छाँ पई ते )	....	२	२१
देवपाल	....	३	३७
दासीपुन्र	....	५	६७
दशार्णभद्र	....	१३	१८१
देवदीपक संवंधी कथा	....	१३	१९२
दमघंती	....	१९	२१२
दान उपर दृष्टांतो ( जगदुशा, कुमारपाल्यादि )	....	१६	२१६-१७
द्राविड ने वालिसिल्ल	....	१९	२२९
दामनक	....	१७	२४९
दृढ प्रहारी	....	१९	२८९
दुध्यांननां द३ स्थानो ( दृष्टांतोनां नामो मात्र )	....	२३	३३९
द्विषुस मुनि ( त्रीजा प्रत्येकदुद्ध )	....	२४	३४९

## ध

धनपाल पंडित	....	२	२३
धर्महचि ( अनंतकाय स्याग उपर )	....	९	१२१
धर्मराजा ( सावर्मा व्रत उपर )	....	९	१२२
धूते वणिक	....	९	१२४
धर्मबुद्धि पापबुद्धि	....	९	१२८
धनदत्त शेठ	....	९	१२९
धनाद्य गृहस्थ ने बृद्ध श्राविका ( सामायिक उपर )	....	१०	१३८
धनावह श्रेष्ठी	....	१२	१६८
धनो वणिक	....	१९	२१३
धनो ( शाळ्मिद्रनो चनेवी )	....	१९	२१८
धनशर्मा साधु ( एपणा समिति उपर )	....	१९	२८०
धन्य मुनि ( अनशन तप उपर )	....	१९	२८४
धनेभर सूरि ( तप करवानी अशक्तिवाला )	....	२०	२९०
धनेभर वणिक	....	२२	३३३

## न

नंदिषेण ( वसुदेव धया ते )	....	....	१	११
नंदिषेण ( दश दशना प्रतिवेधक )	....	....	२	२६
नमी राजपि ( वीजा प्रत्येकदुद्ध )	....	....	२	५२
नागिल	....	....	६	८९
नुपूर पंडिता	....	....	७	१०३
नव नंद ( संक्षिप्त )	....	....	८	१०८
नंद मणिकार	....	....	९	१५९
नागथ्री ( कढवी तुंवडीनुं शाक वहोरावनार )	....	....	१२	१७२
नवकारना जाप उपर कथा	....	....	१३	१९९
नंदन ऋषि ( महावरि स्वामीनो जीव )	....	....	२३	३३६
नगगति मुनि ( चोथा प्रत्येकदुद्ध )	....	....	२४	३५०

## प

पुष्पनूबा	....	....	१	६
पादलिपाचार्य	....	....	३	३३
पांच राणीओ	....	....	३	४४
पचशेसर राजा	....	....	३	४९
प्रभास गणधर	....	....	४	९७
पुष्पसार	....	....	८	१०७
पेथड आवक	....	....	८	१५३थी१५५
प्रतिक्रमणना आठ पर्यायपर आठ कथा	....	....	११	१६४
पृथ्वीपाल राजा	....	....	१२	१७१
पौष्पदशाळा कराववा उपर ढुङ्का प्रवंधो	....	....	१२	१७९
परदेशी राजा	....	....	४५	२२२
प्रभाकर विष्णु ( सत्संग उपर )	....	....	१६	२३६
प्रियंकर राजा	....	....	१६	२३८
पक्षीने मारनार राजा	....	....	१७	२४८
पचखसाणना फळपर दृष्टितो	....	....	१७	२५३
पालक ( अभव्य ) ५००	....	....	१९	३
पतिनुं वात्सल्य करनारी	....	....		

पंचाल्य भारताहक	....	....	....	....	२०	२९२
प्रलहादन राजा	....	....	....	....	२४	३५९
<b>व</b>						
वप्पभट्टी सूरि	....	....	....	....	३	३९
ब्रह्मदत्त चक्री	....	....	....	....	६	७१
वे सर्प	....	....	....	....	६	७८
वे भाई	....	....	....	....	८	१०९
वाहुवलि	....	....	....	....	१७	२४२
वे निमित्तिपा	....	....	....	....	१८	२९९
वे काचवा	....	....	....	....	२१	३०८
शुद्धिसुंदरी	....	....	....	....	२१	३१२
वे प्रकारना आयुष्य ( सोपकमी आयुष्यपर वृष्टांतो )	....	....	....	....	२३	३४३

**भ**

भुवनतिलक मुनि	....	....	....	....	१	१२
भद्रवाहु स्वामी ने वराहमिहर	....	....	....	....	२	३०
भर्तृहरी राजा ( ब्रण शतकनो कर्त्तुं )	....	....	....	....	६	९०
भावह श्रेष्ठी	....	....	....	....	९	१२६
भाविनी ने कर्मरेखा	....	....	....	....	१६	२३१
भरडो ( वाराक्षरी भण्णनार )	....	....	....	....	१८	२६९
भेरीतुं वृष्टांत	....	....	....	....	१८	२६७
भोगसार श्रेष्ठी	....	....	....	....	१८	२७०
भूमिपाळ राजा	....	....	....	....	२२	३२३
भवदेव ( जंबूस्वामीनो जीव )	....	....	....	....	२४	३९१

**म**

महावल कुमार	....	....	....	....	१	२
मानतुंग सूरि	....	....	....	....	३	३९
मृगापुत्र ( लोढीओ )	....	....	....	....	५	६६
मुनिसुव्रत स्वामी	....	....	....	....	५	७०
मच्छीपार चोर	....	....	....	....	५	७३
मयुरिन्दु	....	....	....	....	७	९६
मल्लीनाथजी	....	....	....	....	८	१८

मुनि राजा	....	....	....	....	7	१०५
मध्य शेठ	....	....	....	....	7	१०८
गहनद कुमार	....	....	....	....	८	११३
मुग्ध भ्रष्टपुत्र	....	....	....	....	९	१२६
महारिह ( भाषा कपठ न फरवा उपर ) संक्षिप्त	....	....	....	....	९	१२८
महमुदरी ( चंद्रुआ वांधवा उपर )	....	....	....	....	१०	१३४
महासिंह ( प्रतिक्रमण अवश्य करवा उपर )	....	....	....	....	११	१६१
महाशतक श्रावक	....	....	....	....	१२	१७३
मुग्ध वज्रेश्वर ने रथकारक	....	....	....	....	१२	१७४
मुनिदानमां विंदुपात	....	....	....	....	१२	१७५
मृदंग	....	....	....	....	१३	१८७
मुचिपूजा उपर दुष्टक मवंधो	....	....	....	....	१७	२४६
मानविंदना अग्राहपणापर दृष्टांत	....	....	....	....	१७	२५०
मतस्योदर	....	....	....	....	१८	२६१
मासतुस मुनि	....	....	....	....	२०	२८६
मंग सूरि	....	....	....	....	२०	२८८
मातंगपुत्र	....	....	....	....	२१	३०७
मृगापुत्र	....	....	....	....	२२	३२१
मरीचिकुमार ( भरत चक्रीना पुज )	....	....	....	....	२४	३९६
मंगलकुम्भ ( मंगलकलश )	....	....	....	....		

## य

यासा सासा	....	....	....	....	७	९१
यशोवर्म राजा ( नीति न वजवा उपर )	....	....	....	....	९	१२९
यशोधर राजा	....	....	....	....	१३	१८८
यव राजीव	....	....	....	....	१५	२१४
यशोभद्र सूरि	....	....	....	....	२४	३४६

## र

रोहिणी चोर	....	....	....	....	६	८०
रोहिणी सती	....	....	....	....	६	८७
रोहिणी ( विक्रया उपर )	....	....	....	....	९	१३३

३

लोहसुर चोर	....	....	....	....	६	८३
लक्ष्मीपुंज	....	....	....	....	६	८४
लोहजंघ	....	....	....	....	१०	१४६
लोभार्पिण्डना अग्राहपणापर दृष्टांत	....	....	....	....	१७	२४७
लेप श्रेष्ठी	....	....	....	....	१९	२७१

३

वस्त्रकण्ठ....	...	...	...	...	...	३	१८
वस्त्र सूरि	...	...	...	...	...	२	३४
वार्द्धिदिव सूरि	...	...	...	...	...	२	२७
शुद्धवादी सूरि अने सिद्धसेन दीवाकर	...	...	...	...	...	२	२९
विक्रम नूप ( बीजो )	...	...	...	...	...	४	९४
वसुराजा....	...	...	...	...	...	६	७५
वेगवती ....	...	...	...	...	...	६	७७
वंचक श्रेष्ठी	...	...	...	...	...	६	८२
विजय शेठ ने विजया राणी	...	...	...	...	...	६	८९
वल्कलचीरी	...	...	...	...	...	६	९४
विद्यापति	...	...	...	...	...	७	१०६
वंकचूळ ....	...	...	...	...	...	८	१०८
वसेमिरा	...	...	...	...	...	९	१२०

विष्णुकुमार मुनि	....	....	....	१५	२१९
ददत्त ऋषि ( ईर्या समिति उपर )	....	....	....	१९	२७८
ददनगुप्तिपर दृष्टांत	....	....	....	१९	२८२
विवृद्धसिंह सूरि	....	....	....	२०	२८९
विष्णुब्रह्मति	....	....	....	२०	२९४
रम्भूति	....	....	....	२०	२९६

## श

श्रेणिक राजा	....	....	....	१	४
"	....	....	....	२४	३९४
श्रीधर शेठ	....	....	....	२	२०
शेखना छ पुत्र	....	....	....	५	६२
शाविनाथजी	....	....	....	५	७०
श्रीकात श्रेष्ठी	....	....	....	६	७६
शीलवती	....	....	....	६	८६
" ( बीजी )	....	....	....	७	९७
शूरसेन महिसेन ( अनर्थ दंड उपर )	....	....	....	१०	१३६
शंख शावक ( पौपध व्रत उपर )	....	....	....	१०	१५०
शान्तिमद्वा	....	....	....	११	१६४
शुभंकर शेठ ( देवद्रव्य उपर )	....	....	....	१३	१९२
शाकिना पांच कण	....	....	....	१४	२०४
शालिवाहन राजा ने कालिकाचार्य	....	....	....	१६	२३३
शिवलाचार्य	....	....	....	१६	२३४
श्रवणमात्रग्राही तापस	....	....	....	२०	२८७
शास्त्राटाल मंत्री	....	....	....	२१	३१४
श्रमणभद्र	....	....	....	२३	३१६
श्वेत द्योष मासाव	....	....	....	२२	३२७
श्रीदत्त श्रेष्ठी ( माता ने पुत्रीनो इच्छक )	....	....	....	२३	३४४



ददरसेन शेठ ने अर्जुन माली ....  
रम्भति ने नागिल ....

१ ९  
२ २३

सर्वेज सूरि ( श्रेष्ठिपुत्र कमलना प्रतिवोधक )	....	२	२५
सुलसा....	....	३	३६
संश्रामशूर राजा	....	४	४६
सकदाक्षपुत्र ( आवक )	....	४	४७
सवर्ण राजा	....	४	४९
शुलस ( काळ सौकर्तिकनो पुत्र )	....	४	५१
शुदर्शन शेठ ने अभया राणी	....	४	५३
सुदुर्द्वि प्रधान	....	४	६१
शुर ने चंद्र कुमार	....	५	७४
शुंदर शेठ ने एक ब्राह्मणी	....	६	७७
सुकुमालिका ( बीजी )	....	६	९३
सत्यकी ने सुज्येष्ठा	....	७	१०२
सिंह थेष्ठी	....	८	११०
स्त्यानिंद्रि निद्रापर हृष्टातो	....	९	१३२
सुभित्र ( दशमा व्रत उपर )	....	१०	१४५
दूर्योगशा....	....	११	१५२
सागरचंद्र ( पौष्टि व्रत उपर )	....	११	१६०
स्वामीवात्सल्य करवा उपर त्रण प्रबंध	....	१२	१७०
संश्वति राजा	....	१३	१८६
सत्यभव सूरि	....	१३	१८९
सागर शेठ ( देवद्रव्य उपर )	....	१३	१९३
सावधाचार्य	....	१३	१९४
सेलगाचार्य	....	१३	२२४
सदस्यमल ( आठ्यो निन्द्रा ) दिगंबर मतोत्पत्ति	....	१६	२३९
सागर शेठ ( लोभ उपर )	....	१७	२४४
सुभूम चक्री	....	१७	२४९
सुन्त शेठ	....	१७	२५१
सागराचार्य	....	१७	२५६
स्थूलभद्र	....	१८	२६८
खीचत्रिपर हृष्टात	....	१८	२७४

संसक साधु ( वीर मधुना शिष्य )	....	....	२०	२८७
मुजसिरि ( छपी साध्वी ने लक्षणा साध्वीना वृत्तात् युक्त )	....	२०	२९१	
मध्रा साध्वी ( वहुपुत्रिका देवी यह ते )	....	२०	२९५	
मृस्थित मुनि ( चार मुनिओनी पूर्वकथायुक्त )	....	२०	२९७-८	
मुर्यं श्रेष्ठी	....	....	२०	३००
मोमवसु	....	....	२१	३०२
तनतकुमार चक्री	....	....	२१	३०४
ताल ने महासाल	....	....	२१	३०६
मुभद्र	....	....	२१	३०८
हुकुमारिका साध्वी ( ससक भसक मुनिनी ज्वेन )	....	२१	३०९	
मुभानु कुमार	....	....	२१	३१०
मुमुद्रपाल	....	....	२२	३१७
संसक मुनि ( पांचसो शिष्यवाला )	....	....	२२	३२०
इकोशल मुनि	....	....	२२	३२६
संयत मुनि	....	....	२३	३३९
सूखभद्र मुनि	....	....	२३	३४३
तगर घक्रीना पुत्रो	....	....	२४	३५३
तांब कुमार ( कृष्णपुत्र )	....	....	२४	३५५
तांतु मंत्री ने एक साधु	....	....	२४	३५६

## ह

ईमचंद्राचार्य	....	....	३	३२
"	....	....	१८	२६९
"	....	....	१९	२७३
राधिभद्र सूरि	....	....	३	३४
रात्तिवाहन	....	....	३	४३
रात्तिवळ माढी	....	....	५	६५
रंस राजा	....	....	६	७९
रीरविजय सूरि	....	....	१०	१४७
रीरिकेशी मुनि	....	....	२०	२९९
इत्याशनी ( होलिका )	....	....	२३	३४९
रीरविजय सूरिनुं चरित्र	....	....	२४	३५९-६८

## पर्वतिथिनां व्याख्यान.

चौमासी व्याख्यान....	....	....	....	७	१०४
अष्टाइ व्याख्यान ( पर्युपणपर्वीराधन )	....	....	....	१०	१४७
वार्षिक कृत्यो संवंधी व्याख्यान	....	....	....	१०	१४८
पर्वीराधन अवश्य करवा विषे	....	....	....	११	१९१-१२
दुष्प्रोत्तसवी पर्व	....	....	....	१४	२१०
चेसतुं वर्ष	....	....	....	१५	२११
ज्ञान पंचमीनी कथा....	....	....	....	१६	२१६
कार्तिकी पुणिमातुं माहात्म्य	....	....	....	१६	२२५
मौन एकादशीनी कथा	....	....	....	१७	२२६
रोहिणीव्रतनी कथा	....	....	....	२३	३३७
इताशीनी पर्वपर कथा	....	....	....	२३	३४९







